Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

35

1960–61

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

[illegible]

[illegible]

7-३०
7-१३
२९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री बघाटमहीमहेन्द्र "धर्ममार्तण्ड"

पंवारकुलभूषण श्रीमद्राजर्षि
श्री १०५ दुर्गासिंह जी बहादुर,
C. I. E. सोलन।

॥ ॐ ॥

श्रीगणेशाय नमः

हृदन्तरज्ञानतमोवितान-निवारणं पण्डितमण्डलीडयम्।
त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्डपञ्चाङ्ग' मिदं चकास्तु॥

श्रीलक्ष्म्यै नमः

सार्वदेशिक सर्वोत्तम सर्वाङ्गशुद्ध पञ्चाङ्ग

मार्त्तण्ड के उदय से जगमग हुआ आकाश।
क्या तारा क्या चन्द्रमा सबका छुपे प्रकाश॥

राजा चन्द्रः

मन्त्री बुधः

बघाटमहीमहेन्द्रधर्ममार्तण्ड श्री १०५ मद्दुर्गासिंहवर्मभिः संरक्षितम्

वृहज्ज्योतिष सम्मेलन के अध्यक्ष
पञ्चाङ्ग प्रवर्त्तक

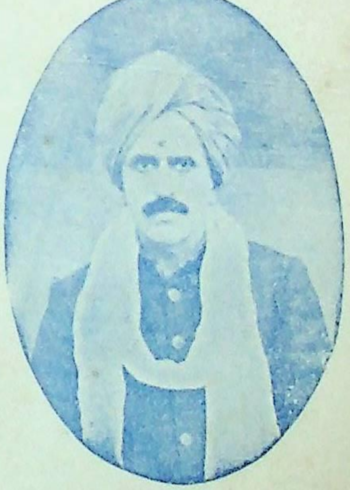

दैवज्ञरत्नराजज्योतिषी
श्री पं० मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचा...
कुराली (पंजाब)

रूपगढीया (रूपड़) क्षवृत्तीयं दृग्गणितैक्यविषयैः

—::o::—

अलंकृतम्, धर्मशास्त्रसम्मतं च

BAGHAT # श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्गम् PANCHAN...

श्री विक्रमार्कीय सं० २०१७ शाक १८८२, सन् १९६०-६१ ई०, जय हिन्द सं० १३ (१५ अगस्त से १४)

पञ्चाङ्गप्रवर्त्तकाः—स्व०, गणकचक्रचूडामणि श्री गोविन्द सदाशिव 'आप्टे', श्री पं० केदारनाथ 'सिद्धान्तपञ्चानन' शिष्याः पं० श्री मुकुन्दवल्लभशर्माणो ...चार्याः ...च

पञ्चाङ्गकर्त्तारः—प्रवर्त्तकतनयाः—श्री सत्यव्रत शर्मा शास्त्री, साहित्याचार्यः, श्री प्रियव्रत शर्मा शास्त्री, साहित्य-ज्योतिषाचार्यः, श्री शक्तिधर शर्मा

बांकीपुर पटना ▪ मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-६ ▪ पो० बा० ७५ वाराणसी

वि० सं० २०१८ का श्रीमार्तण्ड पञ्चाङ्ग हिन्दी, उर्दू व पञ्जाबी में एक साथ भाद्रपद में प्रकाशित हो जावेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गृहादि निर्माण में आय आदि का विचार। गृहारम्भ एवं नवगृह प्रवेश मुहूर्त्त। ... ९५
सूर्यराशिवशखातज्ञान। कूप-तडाग चक्र आदि ९६
हलप्रवहण आदि मुहूर्त्त। दिक्शूल विचार। ९७
योगिनीवास चक्र। चन्द्रवासचक्र। यात्रा में चन्द्र का फल। सर्वाङ्क सिद्धियोग
दिन - रात में चतुर्घटिका मुहूर्त्त। आवश्यकता में यात्रा मुहूर्त्त। ९८
नौका यात्रा मुहूर्त्त। यात्रा से लौट कर प्रवेश का मुहूर्त्त। घात चन्द्रवारादि चक्र।
पल्ली पतन विचार। छींक का फल। तीर्थ में मुण्डन। ९९
अंग स्फुरण फल। उत्पात फल। तैलाभ्यंग विचार। काक स्पर्श, काक वचन
एवं कपोत स्पर्शादि का विचार। मुष्टि चक्र। स्वप्न विचार। आयु निर्णय १००–१०१
विंशोत्तरी महादशादि ज्ञान चक्र। योगिनी दशा। दशा भुक्तभोग्य कालानयन।
वर्ष कुण्डली में ग्रह फल। १०२
केरल मते प्रश्न विचार: रोगोत्पत्ति–सन्तान प्रतिबन्ध में देव दोष ज्ञान। ... १०३
मूक प्रश्न का अनुभूत प्रकार १०४
कार्याकार्य प्रश्न विचार। रोगी की मृत्यु का ज्ञान १०५
सुगम प्रश्न विचार १०६–१०७
तेजी-मन्दी निकालने का ध्रुवा १०८
स्वर शास्त्र का चमत्कार। भूकम्प फल। व्रतोद्यापन मुहूर्त्त। इष्ट बनाना आदि। ... १०९
लग्न सारिणी प्रयोगविधि सहित। ११०
दशमलग्न सारिणी प्रयोग विधिसहित। १११
वर्ष प्रवेश सारिणी, त्रिपताकी चक्र। वर्षेशनिर्णय। ... ११२
सं. २०१७ में ग्रह नक्षत्र राशिचार ११३
सं. २०१७ में ग्रहयुति, चन्द्र दर्शन, ग्रहोदयास्त।वक्रमार्ग काल। ... ११४
विश्व के सूर्योदयास्त काल ११५-११८
सूक्ष्म लग्न स्पष्टीकरण ११९-१२४
अक्षांशादि सारिणी १२५-१२६
लघ्वारब्ध कोष्ठक १२७
शुद्ध विवाह मुहूर्त्त। उपनयन आदि अन्य मुहूर्त्त } ... १२८-१३०
अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त ... ...

इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त किये गये ज्ञातव्य कुछ सांकेतिक शब्द

अ.–अस्त, अश्विनी या अतिगण्ड
अं.–अंग्रेजी (तारीख)।
उ.–उपरान्त, उदित या उत्तर
क.–करण या कर्क
कृ.–कृष्ण पक्ष।
घ.–घडी।
तिथि।
द.–दक्षिण।
दा.–दान-पूजन।
दि. मा.–दिनमान।
न.–नक्षत्र।
नि.–निम्बार्कों के लिये
प.–पल या परिघ
प्र.–प्रविष्ट
भ.–भद्रा या भरिणी।
मा.–मार्गी या माघ
मु.–मुहूर्त्ती या मुसलमानी तारीख।
या.–यावत् (=तक)
रा.–राष्ट्रीय (तारीख व मास भारत सरकार द्वारा संचालित नई तारीखें मास) अथवा रात्रि
ल.–लग्न।
व.–वक्री, वणिक् वज्र, वरीयान् योग
वा.–वार
वि. ...
वै.–वैष्णवों के लिये।
व्र.–व्रत।
व्र. स.–व्रत सब के लिये।
शु.–शुक्ल पक्ष, शुक्रवार या शुक्रग्रह अथवा शुभ शुक्ल योग।
स.–समाप्त।
सं.–संक्रान्ति (सौर)
सा.–सायन
स्मा.–स्मार्तों के लिये।

इस पञ्चाङ्ग की तिथ्यादि गणित का प्रयोग करने के लिये आवश्यक निर्देशन

(१) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण ग्रीनविच से पूर्व रेखांश ७६°।३०′ एवं उत्तर अक्षांश ३१ के आधार पर किया है। अतः यहां "सूर्योदय" से सी स्थान का सूर्योदय जानें।

(२) तिथि, नक्षत्र, योग, एवं करणों के सम्मुख दिये गए घड़ीपल उनके समाप्तिकाल को बतलाते हैं। जैसे—चैत्र शुक्ल ३ बुधवार (सं.२०१७) के आगे १८।५६ लिखा है। इसका अभिप्राय है–यह तिथि तृतीया बुधवार को सूर्योदय के १८ घड़ी ५६ पल बाद समाप्त होगी, और उसी समय चतुर्थी प्रारम्भ होगी।

(३) इस पञ्चाङ्ग में केवल सूर्योदय व्यापी ही करण लिखे गये हैं, दूसरे नहीं।

(४) "चन्द्रसंचार" वाले कालम में राशियों के साथ दिये गये घड़ीपल चन्द्रमा के राशि प्रवेश का काल बतलाते हैं। जैसे–चैत्र शु. ३ बुधवार को ही चन्द्र-सञ्चार में वृष ५५।५० लिखा है। इसका अभिप्राय यह है कि चन्द्रमा इस दिन सूर्योदय के ५५ घड़ी ५० पल बाद वृष में प्रविष्ट हो जायेगा और इससे पूर्व वह मेष में ही था।

(५) चन्द्र-सञ्चार से आगेवाले कालमों में सूर्य के उदयास्त, जो कि भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में हैं, उपरोक्त रेखांश एवं अक्षांश स्थल के ही हैं। ये काल सूर्यचन्द्र के उदयास्त को बतलाते हैं।

(६) सूर्योदयास्त वाले कालमों के आगे अन्तिम कालम में दिया गया दैनिक स्पष्ट सूर्य सूर्योदय-कालिक एवं सूर्यसिद्धान्तीय है।

(७) लस्टर में पञ्चक एवं भद्रा की समाप्ति तथा प्रारम्भ, ग्रहों के उदय-अस्त, वक्र-मार्गी तथा राशि-नक्षत्र पाद प्रवेश आदि के सभी काल (जहां विशेष निर्देश नहीं किया गया) घटीपल में हैं, जो सूर्योदय के बाद का काल बतलाते हैं। जैसे–चैत्र शु. ३ बुधवार को लस्टर में भ. ५०।४६ उ. लिखा है। इसका अर्थ है कि इस दिन भद्रा सूर्योदय के ५० घड़ी ४६ पल बाद प्रारम्भ होगी। इसी प्रकार चैत्र शुक्ल ७ रविवार को "मीन में शुक्र ५६।३१" लिखा है। इसका अभिप्राय है कि शुक्र इस दिन सूर्योदय के बाद ५६ घड़ी ३१ पल पर मीन राशि में प्रविष्ट होगा।

(८) पंक्तियों में दिये गए (अष्टमी, पूर्णिमा एवं अमावस्या के) स्पष्ट ग्रहों के नीचे गति, उससे नीचे मार्गी या वक्री, फिर उदित या अस्त, फिर चरण सहित नक्षत्र, (जिसमें ग्रह है), और फिर ग्रह जिस नाडी में हैं उसका निर्देश किया गया है। पंक्तियों की सभी कुण्डलिएं सूर्योदय कालिक हैं। दैनिक स्पष्ट ग्रहों के साथ दिया गया साम्पातिक काल उक्त रेखांश एवं अक्षांश सम्बन्धी स्थल के स्थानीय काल ० घं. ० मि. का है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विषयसूची

विषय	पृष्ठाङ्क
विषय सूची । शब्दों के संक्षिप्त रूप । आवश्यक निर्देशन	१
आकाशी कौंसिल का विचार । साढ़ेसाती-ढैया-ग्रहण	२–७
यन्त्र-मन्त्रों का चमत्कार ...	८
अशौच निर्णय	९–१०
दैनिक लग्न सारिणी (भारतीय स्टै. टा. में)	११–१६
दैनिक लग्न सारिणी देखन की रीति । नवांश प्रारम्भ-समाप्तिकाल ज्ञान । स्थूल चन्द्रोदयास्त ज्ञान । प्रसूतिलग्न विचार ।	१७
प्रसूति स्थान से पाकशालादि विचार ।	१८
प्रसूति काल में शय्या, सिर व पाद का विचार । बालारिष्ट । काण-मूकादिकारक योग । मृत्युकाल विचार । प्रसवकष्ट दूर ।	१९
अमावस्या की नन्दादि संज्ञा । तीस का यन्त्र । भावस्थ ग्रह फल । माता एवं सन्तान नाशक योग । जातक के माता पिता को अरिष्ट ।	२०
स्त्री जातकफल । विकल जन्म फल । अशुभ-प्रसव मास । बालक की दन्तोत्पत्ति का फल।	
एकनक्षत्र जन्म फल । मूल में कन्या जन्म त फल । तिथि गण्डान्त । गण्डमूल नक्षत्र ।	२१
मूल. आश्लेषा में जन्म का फल । मूलजनने वृक्ष-विभागफलम् । मूलपुरुष चक्र । मूल निवास चक्र। अभुक्त मूल विचार । अश्विनी आदि नक्षत्रों में जन्म का फल ।	२२
बालकष्टावली	२३
नक्षत्रकष्टावली	२४–२६
रोगोत्पादक योग। रोग त्रिनाडी चक्र। काल मुख दंष्ट्रा ज्ञान। ज्वर यन्त्र। तिथिकष्टावली यन्त्र। वारकष्टावली यंत्र। कालाङ्ग विभाग।	२७
ग्रहानिष्टफल शान्ति के लिये मन्त्रौषध आदि ।	

आशीराशंसना

जयन्ति श्री महाविद्यापादपङ्कजरेणवः ।
यत्कृपालेशमात्रेण रङ्को राजति सत्वरम् ॥ १ ॥
श्रीदुर्गासिंहवर्माख्यो राजा राजगुणैर्युतः ।
सनातनीं धर्मधुरं वहन् भागवतोत्तमः ॥ २ ॥
बघाटेशः सोलनाख्य* राजधान्यामुदारधीः ।
राजते धर्ममार्तण्डो गोविप्रगणपूजकः ॥ ३ ॥
निर्देशात्तस्य राजर्षेरिदं पंचाङ्गमुत्तमम् ।
प्रसृत्य मार्त०ऽसममज्ञानान्ध्यं व्यपोहतु ॥ ४ ॥

*पुरान ग्पलान्यस्ति रेखातः सोलनं पुरम् ।
यत्र रुद्रव्यङ्गुलाद्रि (७।११) मितांगलपलप्रभा ॥

श्री १००८ आनन्दमयी माँ

मात्रे भवार्तिघनपा॰॰वमुक्तिदायै ।
श्रद्धावनम्रमनसां शरणागतानाम् ॥
ज्ञानञ्च भक्तिममितां सततं ददत्यै ।
आनन्दसान्द्ररुचिराकृतये नमस्ते ॥

विषय	पृष्ठाङ्क
से दशानिर्णय । कार्य सिद्धि प्रश्न । कथा प्रारम्भ मुहूर्त ।	२८
१२ भावों में ग्रहों के फल । ग्रहमैत्री चक्र । शनि-यन्त्र-स्तोत्रादि । ग्रहाणामेकगे भोग फल ज्ञानम् ग्रहशान्त्यर्थं मणिएं । नवग्रहमुद्रिका ।	२९
ग्रह दृष्ट्यादि चक्र	३०
पुत्रोत्पत्ति, विवाह एवं पिता की मृत्यु का ज्ञान । प्राणपद से जन्मेष्ट शुद्ध करना । भाविवर्षा-विचार । नष्ट द्रव्य न मिलने का योग ।	३१
वर्षाविज्ञान । वर्षाज्ञान सारिणी । अनावृष्टि-शान्ति प्रयोग । मृत संजीवनी मंत्र ।	३२
राशिज्ञान में विशेष । नक्षत्र राशिज्ञान चक्र । अभिजित् निर्णयः । नक्षत्र विषयघटी ज्ञान । जन्म-कुण्डली से विशेष विचार और इष्टशुद्धि ।	३३
द्वादश राशियों का मासिक फलादेश ।	३४–३५
वर्षफलश्रवणादि । सृष्टिक्रम वर्णन ।	३६
वर्षराजादि फल विचार । ...	३७
रोहिणी वास । वर्षादिक विश्वामान आदि २ ।	३८
२४ पक्ष तिथि-वारादि एवं पाक्षिक भविष्य । (सं. २०१७)	३९–६२
साम्पातिक काल एवं दैनिक स्पष्ट ग्रह (सं २०१७), किसी नगर का सूर्योदयास्त जानना	६३–७५
१०–१० घटी के अन्तर पर स्पष्ट चन्द्र (सं.२०१७)	७६–८३
शुभकार्यों मेंवर्जित काल आदि । भद्रा में कार्या-कार्य निर्णय । गुर्वादित्य विचार । तारा-बल । शुभाशुभ ताराज्ञान । ...	८४
आवश्यक मुहूर्त । ...	८५–८६
योनिनाड्यादि चक्र । मेलापक सारिणी देखने की विधि ।	८७
मेलापक सारिणी ।	८८–८९
मंगली आदि विचार । मन्त्र दीक्षा मुहूर्त । अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त । लग्न गण्डान्त ।	९०
विवाह मास । विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्त । विवाह में दस दोषों का विचार आदि	९१–९२
ग्रहों के रेखाप्रद स्थान । गोधूलि विचार ।	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गृहादि निर्माण में आय आदि का विचार । गृहारम्भ एवं नवगृह प्रवेश मुहूर्त्त । ... ९५
सूर्यराशिवशखातज्ञान । कूप-तडाग चक्र आदि ९६
हलप्रवहण आदि मुहूर्त्त । दिक्शूल विचार । ९७
योगिनीवास चक्र । चन्द्रवासचक्र । यात्रा में चन्द्र का फल । सर्वाङ्क सिद्धियोग
दिन - रात में चतुर्घटिका मुहूर्त्त । आवश्यकता में यात्रा मुहूर्त्त । ९८
नौका यात्रा मुहूर्त्त । यात्रा से लौट कर प्रवेश का मुहूर्त्त । घात चन्द्रवारादि चक्र ।
पल्ली पतन विचार । छींक का फल । तीर्थ में मुण्डन । ९९
अंग स्फुरण फल । उत्पात फल । तैलाभ्यंग विचार । काक स्पर्श, काक वचन
एव कपोत स्पर्शादि का विचार । मुष्टि चक्र । स्वप्न विचार । आयु निर्णय १००–१०१
विंशोत्तरी महादशादि ज्ञान चक्र । योगिनी दशा । दशा भुक्तभोग्य कालानयन ।
वर्ष कुण्डली में ग्रह फल । १०२
केरल मते प्रश्न विचार: रोगोत्पत्ति–सन्तान प्रतिबन्ध में देव दोष ज्ञान । ... १०३
मूक प्रश्न का अनुभूत प्रकार १०४
कार्याकार्य प्रश्न विचार । रोगी की मृत्यु का ज्ञान १०५
सुगम प्रश्न विचार १०६–१०७
तेजी-मन्दी निकालने का ध्रुवा १०८
स्वर शास्त्र का चमत्कार । भूकम्प फल । व्रतोद्यापन मुहूर्त्त । इष्ट बनाना आदि । ... १०९
लग्न सारिणी प्रयोगविधि सहित । ११०
दशमलग्न सारिणी प्रयोग विधिसहित । १११
वर्ष प्रवेश सारिणी, त्रिपताकी चक्र । वर्षेशनिर्णय । ... ११२
सं. २०१७ में ग्रह नक्षत्र राशिचार ११३
सं. २०१७ में ग्रहयुति, चन्द्र दर्शन, ग्रहोदयास्त।वक्रमार्ग काल । ... ११४
विश्व के सूर्योदयास्त काल ११५-११८
सूक्ष्म लग्न स्पष्टीकरण ११९-१२४
अक्षांशादि सारिणी १२५-१२६
लघुरिक्थ कोष्ठक १२७
शुद्ध विवाह मुहूर्त्त । उपनयन आदि अन्य मुहूर्त्त
अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त ... ... } ... १२८-१३०

इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त किये गये ज्ञातव्य कुछ सांकेतिक शब्द

अ.–अस्त, अश्विनी या अतिगण्ड
अं.–अंग्रेजी (तारीख) ।
उ.–उपरान्त, उदित या उत्तर
क.–करण या कर्क
कृ.–कृष्ण पक्ष ।
घ.–घड़ी ।
ति.–तिथि ।
द.–दक्षिण ।
दा.–दान-पूजन ।
दि. मा.–दिनमान ।
न.–नक्षत्र ।
नि.–निम्बार्कों के लिये
प.–पल या परिघ
प्र.–प्रविष्ट
भ.–भद्रा या भरिणी ।
मा.–मार्गी या माघ
मु.–मुहूर्त्ती या मुसलमानी तारीख ।
या.–यावत् (=तक)
रा.–राष्ट्रीय (तारीख व मास भारत सरकार द्वारा संचालित नई तारीखें मास) अथवा रात्रि
ल.–लग्न ।
व.–वक्री, वणिक् वज्र, वरीयान् योग
वा.–वार
वि. ...
वै.–वैष्णवों के लिये ।
व्र.–व्रत ।
व्र. स.–व्रत सब के लिये ।
शु.–शुक्ल पक्ष, शुक्रवार या शुक्रग्रह अथवा शुभ शुक्ल योग ।
स.–समाप्त ।
सं.–संक्रान्ति (सौर)
सा.–सायन
स्मा.–स्मार्तों के लिये ।

इस पञ्चाङ्ग की तिथ्यादि गणित का प्रयोग करने के लिये आवश्यक निर्देशन

(१) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण ग्रीनविच से पूर्व रेखांश ७६°।३०′ एवं उत्तर अक्षांश ३१ के आधार पर किया है । अतः यहां "सूर्योदय" से सी स्थान का सूर्योदय जानें ।

(२) तिथि, नक्षत्र, योग, एवं करणों के सम्मुख दिये गए घड़ीपल उनके समाप्तिकाल को बतलाते हैं । जैसे—चैत्र शुक्ल ३ बुधवार (सं.२०१७) के आगे १८।५६ लिखा है । इसका अभिप्राय है–यह तिथि तृतीया बुधवार को सूर्योदय के १८ घड़ी ५६ पल बाद समाप्त होगी, और उसी समय चतुर्थी प्रारम्भ होगी ।

(३) इस पञ्चाङ्ग में केवल सूर्योदय व्यापी ही करण लिखे गये हैं, दूसरे नहीं ।

(४) "चन्द्रसंचार"वाले कालम में राशियों के साथ दिये गये घड़ीपल चन्द्रमा के राशि प्रवेश का काल बतलाते हैं । जैसे–चैत्र शु. ३ बुधवार को ही चन्द्र-सञ्चार में वृष ५५।५० लिखा है । इसका अभिप्राय यह है कि चन्द्रमा इस दिन सूर्योदय के ५५ घड़ी ५० पल बाद वृष में प्रविष्ट हो जायेगा और इससे पूर्व वह मेष में ही था ।

(५) चन्द्र-सञ्चार से आगेवाले कालमों में सूर्य के उदयास्त, जो कि भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में हैं, उपरोक्त रेखांश एवं अक्षांश स्थल के ही हैं । ये काल सूर्यचन्द्र के उदयास्त को बतलाते हैं ।

(६) सूर्योदयास्त वाले कालमों के आगे अन्तिम कालम में दिया गया दैनिक स्पष्ट सूर्य सूर्योदय-कालिक एवं सूर्यसिद्धान्तीय है ।

(७) लस्टर में पञ्चक एवं भद्रा की समाप्ति तथा प्रारम्भ, ग्रहों के उदय-अस्त, वक्र-मार्गी तथा राशि-नक्षत्र पाद प्रवेश आदि के सभी काल (जहां विशेष निर्देश नहीं किया गया) घटीपल में हैं, जो सूर्योदय के बाद का काल बतलाते हैं । जैसे–चैत्र शु. ३ बुधवार को लस्टर में भ. ५०।४६ उ. लिखा है । इसका अर्थ है कि इस दिन भद्रा सूर्योदय के ५० घड़ी ४६ पल बाद प्रारम्भ होगी । इसी प्रकार चैत्र शुक्ल ७ रविवार को "मीन में शुक्र ५६।३१" लिखा है । इसका अभिप्राय है कि शुक्र इस दिन सूर्योदय के बाद ५६ घड़ी ३१ पल पर मीन राशि में प्रविष्ट होगा ।

(८) पंक्तियों में दिये गए (अष्टमी, पूर्णिमा एवं अमावस्या के) स्पष्ट ग्रहों के नीचे गति, उसके नीचे मार्गी या वक्री, फिर उदित या अस्त, फिर चरण सहित नक्षत्र, (जिसमें ग्रह है), और फिर ग्रह जिस नाड़ी में हैं उसका निर्देश किया गया है । पंक्तियों की सभी कुण्डलिएं सूर्योदय कालिक हैं । दैनिक स्पष्ट ग्रहों के साथ दिया गया साम्पातिक काल उक्त रेखांश एवं अक्षांश सम्बन्धी स्थल के स्थानीय काल ० घं. ० मि. का है ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आकाशी कौंसिल का विचार सं० २०१७

स्वतन्त्र भारत का जन्मलग्न

ता. १५ अगस्त शुक्रवार सन् १९४७ इष्ट ४५।२०

विमृश्य ग्रहसंस्थितिं मुनिवचः सिद्धान्तयित्वा स्फुटम् ।
शास्त्रं शाकुनकं विचार्य नितरामालोच्य सत्संहिताः ॥
राष्ट्रे राजसमाजधर्मविषये ह्युद्भाविनी या स्थितिः ।
सा शम्भोः कृपया यथामति मया प्रागेव निर्णीयते ॥

स्वतन्त्र भारत के जन्म की चलित कुण्डली

ग्रह भावस्पष्टानुसार यह सू. शु. गु. श. चल गये हैं

स्वतन्त्र भारत के १४ वें वर्ष प्रवेश की कुण्डली

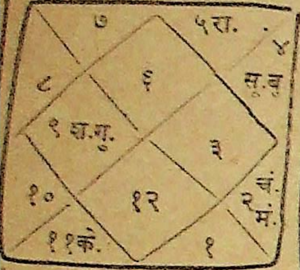

वर्षप्रवेश इष्ट वा.घ.प. २।७।९

मुस्लिम राष्ट्रों के नववर्ष प्रवेश की कुण्डली

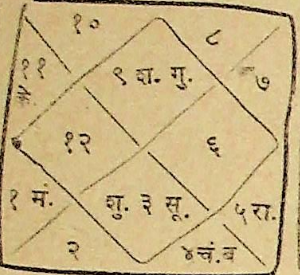

…रोपीय राष्ट्रों के नव वर्ष प्रवेश की कुण्डली ।

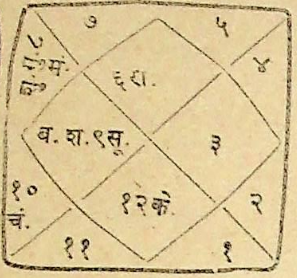

इस वर्ष की आकाशीय कौंसिल से ज्ञात होता है कि विश्व के राष्ट्रों की नीति में कोई विशेष परिवर्तन होगा, साथ ही शासकों के सम्मुख टेढ़ी उलझनें उपस्थित होंगी, आन्तरिक वैमनस्य रहेगा । विज्ञानपति गुरु ग्रह के भ्रमण से वैज्ञानिक प्रगति विस्मयावह, अचिन्तित आविष्कारों का अनावरण करेगी । भयङ्कर संहारकारी गुह्य वैज्ञानिक उपकरण अभी विशेष ग्रहयोग काल की प्रतीक्षा में भस्मावृत अग्नि की तरह दबे ही रहेंगे । राहु, शनि एवं मंगल की स्थिति तथा योगों को देखते हुए ज्ञात होता है कि—भयावह अणु एवं उदजन बम आदि के अतिरिक्त भी कई अन्य महाविध्वंसक रासायनिक अस्त्र प्रस्तुत किए जाएंगे । परन्तु जगदीश्वर की आकांक्षा से उनका प्रयोगकाल अभी दूर ही है,—ग्रहगति से ऐसा ज्ञात किया गया है । सं० २०१८ का अष्टग्रही—योग अवश्य भयानक है । इस योग का विशेष विवेचन, शान्त्यादि सहित आगामी वर्ष (सं० २०१८) के पञ्चाङ्ग में ही लिखा जाएगा ।

भारत—गतवर्ष (सं० २०१६) के पञ्चाङ्ग में भारत के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों एवं सीमा सम्बन्धी समस्याओं के विषय में की गई हमारी भविष्यवाणिएं शत प्रतिशत यथार्थ सिद्ध हुई हैं । देखिए—हमने पृष्ठ ५ पर प्रथम कालम की ३३वीं पंक्ति पर स्पष्ट लिखा है—"श्रावण के बाद आश्विन तक भारत के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध नाजुक स्थिति में होंगे ।" ठीक इसी तरह, इसी कालावधि में प्रतिवेशी राष्ट्र चीन के साथ युगों से चला आ रहा सौहार्द कटुता में परिणत हो गया एवं लद्दाख आदि भारतीय सीमा प्रदेशों की सुरक्षा संशयित हो गई, जिसके कारण भारतीय नेताओं की स्थिति सांप-छुछुन्दर की सी दीख पड़ने लगी । भाद्रपद शुक्ल के पाक्षिक फलादेश में भी यही बात हमने और भी स्पष्ट रूप में इस प्रकार लिख दी थी:—"भारत के पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्त में भी अशान्त वातावरण दृष्टिगोचर हो । यह तेरह दिन का पक्ष है, जो कहीं क्रान्ति का सूचक है । राष्ट्रों में एक ओर जहां शान्ति स्थापना के प्रयत्न होंगे, वहां दूसरी ओर आन्तरिक रूप से अशान्ति का बीजारोपण होगा ।"

इस वर्ष स्वतन्त्र भारत की वर्ष कुण्डली देखते हुए ज्ञात होता है कि विश्व में भारत की प्रतिष्ठा पूर्ववत् अक्षुण्ण रहेगी । यहां बड़े पुरुषों की नीति में कुछ परिवर्तन भी होगा । तृतीय पञ्चवर्षीय योजना नियत समय तक सम्पन्न न हो सकेगी । अनेक बाधाएं उपस्थित होंगी । कई प्रदेशीय राज्यों में आर्थिक एवं राजनैतिक संकट उत्पन्न होगा । अनुशासन भङ्ग की कार्रवाइयां अधिक होंगी । कई राज्यों के मंत्रिमंडलों में पारस्परिक मतभेद, एवं बढ़ते हुए विरोध के कारण उच्चाधिकारी त्यागपत्र देने को बाध्य हो जाएं । प्रजा में अग्नि एवं चौरभय बना रहेगा । इस वर्ष के बाद दो वर्ष के भीतर भारत पर प्राकृतिक विपत्तियां आने के योग बन रहे हैं, जिनका भारतीयों के राजकीय, सामाजिक एवं कौटुम्बिक जीवन पर विशेष प्रभाव पड़ेगा । नर्मदा तटवर्ती प्रदेश महँगाई से विशेष कष्ट पाएंगे । शासकों को भारतीय सीमा की समस्याओं का सरदर्द भी कुछ न कुछ बना रहेगा । इस वर्ष भारत सरकार पर व्यय का भार अधिक पड़ेगा । शत्रु देशों के गुप्तचरों की धरपकड़ भी इस वर्ष अधिक रहेगी ।

कांग्रेस की कुण्डली

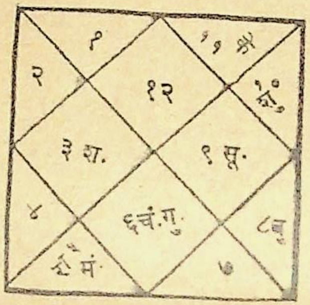

कांग्रेस—कांग्रेस की जन्मकुण्डली को देखने से ज्ञात होता है, कि अब कांग्रेस पर जनता का विश्वास पूर्ववत् नहीं रहेगा । इसके प्रतिद्वन्द्वी अन्य दलों का वर्चस्व बढ़ेगा । सन् १९६५ ई० के अनन्तर कांग्रेस का अस्तित्व खतरे में है ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विश्व के प्रधान राष्ट्रों का भविष्य

रूस—इस वर्ष की ग्रहस्थिति समस्त जगत् में इसके प्रभाव को और भी पुष्ट करेगी। यहां की मूल-भूत नीति में कोई विशेष परिवर्तन के भी योग हैं। प्रधान मंत्री श्री ख्रुश्चेव के स्वास्थ्य में कुछ बिगाड़ होने का योग है।

ब्रिटेन—इस वर्ष इसका भारत से साधारणतः अच्छा सम्बन्ध रहेगा। राज्यतन्त्र में कुछ फेरफार के योग हैं। बेकारी बढ़ेगी। व्यापार पक्ष शिथिल हो। मजदूर पक्ष की प्रबलता रहे।

अमेरिका—इस वर्ष रूस के साथ वैज्ञानिक होड़ में पीछे रहेगा, और नए नए वैज्ञानिक आविष्कार गुप्त रूप से करता रहेगा। यहां की विदेश नीति में किसी प्रकार का विशेष परिवर्तन होगा। यहां किसी महापुरुष की असामयिक, आकस्मिक मृत्यु का भय है।

पाकिस्तान—इस वर्ष पाक सरकार के सम्मुख काश्मीर के अतिरिक्त किसी अन्य अपने प्रदेश के विषय में भी कोई नवीन समस्या उपस्थित होगी। सैनिक शासन की कठोरता कुछ मृदु रूप में उपस्थित होगी। यहां की जनता को कई कठिनाइयों एवं रोगपीड़ा का सामना करना पड़ेगा। भौमगतिवश संभव है—कोई प्रभावशाली नया व्यक्ति जनता के हित हेतु उठ खड़ा हो, और कहीं बलवा जैसी स्थिति उत्पन्न हो। शनि-भौम के प्रभाव से युद्ध जैसा वातावरण उपस्थित हो जाने पर भी गुरुस्थितिवश युद्ध की परिस्थिति टलती रहेगी। सीमाओं का सरदर्द कुछ बना रहेगा। पूर्वी पाकिस्तान की स्थानीय प्रजा अपने विधर्मियों से मैत्री का भाव बनाएगी।

काश्मीर—इस वर्ष काश्मीर में श्रावण तक उग्र वातावरण से भय व्याप्त हो। कहीं प्राकृतिक प्रकोप से जनता को हानि उठानी पड़े।

नेपाल—इस वर्ष यह देश ऋणग्रस्त होता हुआ भी आन्तरिक उन्नति की ओर अग्रसर होता रहेगा। यहां की राजसत्ता एवं प्रजा में एकबार भयचिन्ता बने। प्रजा शासन का साथ देकर उत्साह बढ़ाएगी। आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहेगी।

चीन—इस वर्ष यहां की प्रजा में नए नए विचार उत्पन्न हों। कहीं कोई असन्तुष्ट पार्टी उपद्रव करे। वर्ष के उत्तरार्ध में भारत से बिगड़े सम्बन्ध सुधरेंगे। गत वर्ष हमने चीन के विषय में लिखा था कि—"कहीं युद्ध या युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न होगी", तदनुसार तिब्बत एवं भारत के साथ वही स्थिति बनी। चीन की महत्त्वाकांक्षा से अनुप्राणित बढ़ते साम्यवाद के बलादारोपित प्रसार एवं उससे उत्पन्न होने वाली अशान्ति की ओर स्पष्ट संकेत हमने पहिले ही कर दिया था। सं० २०१६ के पञ्चाङ्ग के पृष्ठ ३ पर दूसरे कालम का दूसरा प्रघट्टक (Paragraph) देखें—"धर्म का ह्रास तथा बढ़ते साम्यवाद की वृद्धि होगी। कई बार भयप्रद स्थिति बनते रहने पर भी महायुद्ध नहीं होगा"—आदि आदि।

अन्य जापानादि देश एवं द्वीप समूह पर आकाशी कौंसिल का प्रभाव।

इस वर्ष आस्ट्रेलिया की सरकार जनता के बदलते नए विचारों से विशेष चिन्तित एवं चीन से सतर्क रहेगी। आत्मरक्षा के हेतु विशेष खर्च करना पड़ेगा। जापान का भारत से सम्बन्ध रहेगा एवं व्यापार भी बढ़ेगा। अपनी स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्धात्मक स्थितियों से उकताकर प्रतिबन्धकों के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए शनैः २ उन्मुख होता दीखेगा। जर्मनी वर्ष के अन्त में अपना ध्येय प्राप्त करने में सफल होगा। बर्मी का वातावरण अस्थिर एवं अशान्त रहेगा। सरकार को सीमा के उपद्रवों से हानि होगी, और प्रजा में लुटेरों से आतङ्क फैलेगा, जिससे कई बार यातायात ठप सा हो जायगा। तस्कर-व्यापार का बाजार गर्म रहेगा। काबुल एवं अफगानिस्तान औद्योगिक प्रगति करेंगे एवं वहां राज्य सत्ता में कोई भय व्याप्त होगा। भारत से सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। फ्रांस के भी भारत से अच्छे सम्बन्ध रहेंगे और किसी स्वाधीन देश को स्वतन्त्र करके यशस्वी बनेगा। यहां के मंत्रिमंडल में कुछ परिवर्तन के योग हैं। तिब्बत की प्रजा में भय अशान्ति बनी रहेगी। ज्येष्ठ मास के बाद प्रजा में कुछ शान्ति होगी। व्यापार की स्थिति भी कुछ सुधरेगी। श्री दलाई लामा के भारत से इतर देशों की यात्रा के योग बन रहे हैं। मई मास से श्री लामा को कुछ शुभ समय दिखाई देने लगेगा।

भारत की वर्षा वायु—इस वर्ष आषाढ़ शुदी सप्तमी के आसन्न से ही कहीं न कहीं वर्षा का प्रारम्भ हो जाएगा। आषाढ़ शुदी १४ तक वृष्टि प्रायः सर्वत्र हो जाएगी। तदनन्तर श्रावण में व्यापक वर्षा होगी। कृषक प्रसन्न रहेंगे। श्रावण शुक्ल १० से बहुत जगह भारी वर्षा और कई दिन की झड़ी लगगी। भाद्रपद में समय पर उपयुक्त वर्षा होती रहेगी। वायु का जोर भी ज्यादा रहेगा। वर्षा ऋतु से पूर्व गर्मी भी अच्छी पड़ेगी। फसल को कहीं टिड्डी व अन्य कीड़ों से नुकसान पहुँचे।

भारत का व्यापार—इस वर्ष व्यापारेश बुध व अन्य ग्रहों की स्थिति को देखते हुए ज्ञात होता है कि—मकई, सरसों, मूंगफली, गेहूँ, तूवर, खांड, गुड़ आदि की उत्पत्ति अच्छी रहेगी। चावल की उपज मध्यम रहे। पूर्वी भारत में कहीं प्राकृतिक प्रकोप से फसल को हानि भी पहुँचे। गत वर्ष की अपेक्षा घी का भाव कुछ नीचे रहेगा। नीचे गिरता हुआ तेल का भाव सरकारी नीति से रुकेगा। मशाले की वस्तुएं इस वर्ष तेज रहेंगी—इसमें सन्देह न। व्यापारी वर्ग को पैसे की तंगी का अधिकतर अनुभव होगा। वैशाख शुदी सप्तमी से गेहूं चना आदि अनाज सस्ते होंगे। तब खरीद कर मार्गशीर्ष में बेचने से लाभ मिलेगा। आश्विन से माघ तक शनि-भौम की स्थिति अन्न में तेजीकारक है। इस वर्ष गुड़, खांड, शक्कर के व्यापारियों को हमसे सलाह लेकर एक मौके पर काम करने से लाभ हो सकेगा। अन्यथा हो सकता है—भारी हानि उठाकर पश्चात्ताप करना पड़े। चैत्र शुदी में ही जौं, पीपल (मघ) घास व लकड़ी का संग्रह करने से आठ मास के भीतर २ उत्तम लाभ मिलेगा। वैशाख तक तांबा, पीतल, टीन में मन्दी आकर बाद में तेजी रहेगी। कार्तिक मास में घी का संग्रह कर आगे चैत्र में बेचने से लाभ मिलेगा।

सरसों आदि—२६ मई (ज्येष्ठ शु. १) से २१ जून (आषाढ़ कृ. १३) तक सरसों आदि तिलहन के भाव में मन्दी आएगी। यहां मन्दी में खरीद करने वालों को पौने दो मास के भीतर २ तेजी से लाभ मिलेगा। अगस्त १२ (भाद्र कृ. ६) के लगभग सरसों, तिलहन का वायदा बेचने से ३१ दिन के अंदर २ मौका देखकर सौदा छोड़ने से अच्छा लाभ मिले।

सोना चान्दी—१ अप्रैल (चै. शु. ५) से एक मास के भीतर चांदी हरघटे भाव में लेकर तेजी में छोड़ते रहने से लाभ रहे। वैशाख सुदी ५ से एक मास के अन्दर (मई में) हर बढ़े भावों में सोना चांदी बेचकर मौके पर नफा लेते रहने से लाभ रहे। जुलाई और अक्तूबर में हर घटे भाव पर सोना चांदी खरीद कर तेजी में छोड़ते रहने वाले लाभ में रहेंगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

रुई—इस वर्ष कई जगह कपास की फसल को किसी प्रकार हानि पहुँचने के योग हैं। चैत्र शुदी १ से चैत्र शुदी ११ तक रुई में मन्दी रहेगी। बाद में वैशाख शुदी ६ तक तेजी का ध्यान रख कर लाभ उठाएं। वैशाख शुदी ७ से श्राव. वदी ८ तक न्यूनाधिक रूप में मंदी की लाईन रहेगी। श्राव. वदी ९ से आश्विन वदी १० तक तेजी का ध्यान रखते हुए हर घटे भावों में खरीद कर मौका देख नफा उठाते रहने से अच्छा लाभ रहेगा। आश्वि. वदी ११ से आश्वि. शुदी १ तक रुई में एक म [illegible] की लाईन आएगी। आश्वि. शुदी २ से मार्गशीर्ष शुदी १ तक फिर तेजी का ध्यान रखकर पूर्ववत् लाभ उठाएं। मार्गशीर्ष शुदी १३ (१ दिसम्बर) शाम को वायदा रुई बेचने से लाभ मिलेगा। पौष कृ. ३० (१८ दिस.) के लगभग रुई में भारी तेजी आ जाए तो वायदा बेचने से शीघ्र लाभ मिले। इस वर्ष वस्त्रों का उत्पादन वृद्धि पर होते हुए भी कई मिलों की आन्तरिक स्थिति खराब रहेगी।

शेयर—२७ अप्रैल (वैशा. शु. २) से १४ सितम्बर (आश्वि. कृष्ण ९) तक लोहा व लोहे की मशीन आदि के शेअर तेजी में रहेंगे। बाद में २४ अक्तूबर (कार्ति. शु. ४) तक रुख मन्दा रहेगा।

भय रोग उपद्रव—इस वर्ष आषाढ़, श्रावण मास में कहीं भयंकर दवो उत्पात व विस्फोट से जन धन की हानि हो। अमरीका के लिए भी ये मास अशुभ हैं। वहां कहीं-कहीं आमोद-प्रमोद का समय रुदन महादुःख में परिणत हो। भारत के अतिरिक्त अन्य देशों के लिए आषाढ़ शुदी ११ से श्राव. वदी १३ तक के दिन विशेष अशुभ हैं। इस वर्ष कहीं युद्ध-भय तो बना रहेगा और कहीं युद्धाग्नि सुलगती भी रहेगी, परन्तु संहारक विश्व युद्ध का कोई विशेष योग नहीं। भाद्र कृ. ७ (१३ अगस्त) से भाद्र. कृ. १४ (२१ अग.) तक कहीं कारखानों में अग्नि प्रकोप आदि से हानि या हड़ताल आदि हो। १२ सितम्बर के बाद किसी देश में कहीं ज्वालामुखी या अन्य किसी विस्फोट से हानि और कहीं परचक्र से भय उत्पन्न हो। पौष कृ. ३० (१८ दिसं.) से एक मास के भीतर कहीं आकाशीय विद्युत् या अन्य विद्युत्-यन्त्रों से हानि हो। इसी मास में कहीं सम्मानित व्यक्तियों की मृत्यु या उनको खतरा हो। कहीं प्राकृतिक प्रकोप व जनता में उपद्रव होने के भी योग हैं। दक्षिण भारत में किसी समस्या को लेकर शासक-वर्ग एवं प्रजा में वैमनस्य व संघर्ष होने के योग हैं। धनु में गुरु-शनि का योग कहीं अनावृष्टि अन्नकष्ट एवं कहीं रोगमारी आदि का कारण है। लिखा है—

यदा जीवयुतो मन्दो जीवाद्वा सप्तमे स्थितः।
तदा प्रजा विनश्यन्ति भूयश्चान्नपरिक्षयः॥

रोग प्रकोप से देश में कहीं भारी मौतें होंगी।

तृतीय विश्व युद्ध कब होगा ?

आगामी सं० २०१८ विक्रमी (सन् १९६२) में आने वाले अष्टग्रही योग को देख कर कई विद्वान् ज्योतिर्विद् सज्जन इसी योग के समय में तृतीय महासंहारकारी विश्वयुद्ध का होना मानते हैं। परन्तु मैंने इस विषय में गम्भीरतापूर्वक ग्रन्थावलोकन एवं ग्रहस्थिति-युत्यादि का अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला है कि—अष्टग्रही (कालकूट) योग के कारण दैवी (प्राकृतिक) प्रकंप से विश्व में महासंकट तो उपस्थित होगा, परन्तु तृतीय विश्वयुद्ध नहीं होगा। [illegible] युद्धनायक एवं शनि को मृत्युनायक (यम) माना है। युद्ध के लिए इनका विचार मुख्यतः किया जाता है। मैंने सूक्ष्म ग्रहगणित द्वारा सन् १९७१ ई० तक तो परीक्षण कर लिया है। इस अवधि में विश्वयुद्ध का पूरा योग दृष्टिगोचर नहीं हुआ। हां, छोटे-मोटे एकदैशिक युद्ध सम्भावित हैं। तृतीय विश्व युद्ध कब होगा—यह आगामी वर्ष स्पष्ट करेंगे। इस युग में हुए दो विश्व युद्धों के समय की ग्रहस्थितियों में सप्त या अष्टग्रही योग नहीं बने। सन् १९१४ ई० की २८ जून को आस्ट्रिया के राजा तथा रानी के वध के कारण प्रथम विश्वयुद्ध का सूत्रपात हुआ था। द्वितीय विश्व महायुद्ध सन् १९३९ ई०, ३१ अगस्त की रात को पोलैण्ड में शुरू हुआ था। देखिए, इन दोनों महायुद्धों के उपक्रम काल की ग्रह स्थिति इस प्रकार है :—

प्रथम विश्व महायुद्ध प्रारम्भ

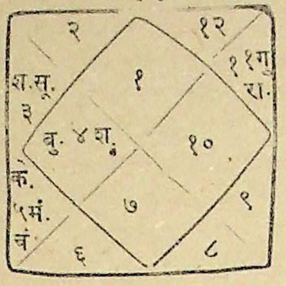

द्वितीय विश्व महायुद्ध प्रारम्भ

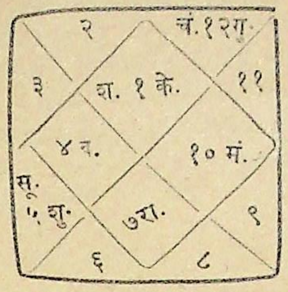

जब भौम का आकाशस्थ बिम्ब विवर्ण (श्याम सा) ज्वाला सदृश क्रुद्ध शिखा वाला, किंच शनि रूक्ष पीला सा देखने में आए एवं उनके साथ अन्य ग्रहों की विशेष भयप्रद युति आदि हों तो महायुद्ध से विश्व आतंकित होता है। प्रथम महायुद्ध के समय मिथुन में सूर्य, शनि, कुम्भ में राहु, गुरु एवं सिंह में केतु, भौम, चन्द्र का होना महर्षि नारद के वचनानुसार (पश्चिमायां नृपक्षयः) युद्ध के योग थे। दूसरे विश्व महायुद्ध के समय केतु के साथ बैठे नीच-राशिस्थ मृत्युनायक शनि और युद्धनायक उच्चराशि-मकरस्थ भौम दोनों का परस्पर स्थान दृष्टि सम्बन्ध था। तथा उत्पात (रात्रि में इन्द्र धनुष, दिन में उल्का आदि) भी देखने में आए थे। यही द्वितीय महायुद्ध के कारण बने थे। इन्हीं योगों को देखते हुए हमने अपने सं० १९९६ के "श्री मार्तण्ड पञ्चांग" में आकाशी कौंसिल के विचार में पृ. २८ पर एक वर्ष पूर्व ही इस महायुद्ध के आरम्भ की सूचना इस प्रकार दी थी—"शनि मेष राशि में केतु के पास आ रहे हैं और नौ दिन बाद मंगल देवता भी अपनी उच्चराशि मकर में आकर नीच-राशिस्थ शनि के साथ अन्योन्य स्थान तथा पूर्ण दृष्टि सम्बन्ध स्थापित करेंगे। ये दोनों परस्पर कट्टर शत्रु हैं। लड़ाई के मुख्य बलवान् तामसी वृत्ति के ग्रह हैं। ये शासक-वर्ग को युद्धादि भयंकर उपद्रव के लिए उत्सुक करेंगे। सो ध्यान रहे"—(देखें—श्री मार्तण्डपञ्चांग सं० १९९६ पृ. २८) ठीक हमारी इस भविष्यवाणी के अनुसार इसी शनि भौम के सम्बन्ध के समय द्वितीय विश्व महायुद्ध प्रारम्भ हुआ—यह हमारे पञ्चाङ्ग के प्रेमी पाठक भली प्रकार जानते हैं।

विज्ञमहोदयो! इस वर्ष में घटित होने वाली राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संसार से सम्बन्धित घटनाओं का ज्योतिर्विज्ञानदृष्ट्या और प्रभु कृपावशात् जो शुभाशुभ दीख पड़ा वह मैंने अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार लिख दिया है। आगे कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं समर्थ,

[illegible] मन्त्रों का चमत्कार

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भविष्य के निर्माता सर्वान्तर्यामी श्री प्रभु ही हैं। उनकी प्रबल माया के सन्मुख अल्पज्ञ व्यक्ति भविष्य लेखन की क्या क्षमता रख सकता है। "तत्त्वं चात्रश्वरो वेत्ति नाहं वेद्मि कदाचन ।"

श्रीमार्त्तण्ड भवन
मु० पो० कुराली,
श्रावण शुक्ल, पूर्णिमा
(सं० २०१६)

शुभेच्छु :—
श्री बघाटनरेशाश्रित
मुकुन्दवल्लभ

शनैश्चर की लघुकल्याणी बृहत्कल्याणी (ढैया, साढसाती) का बिचार

बृहत्कल्याणी (साढेसाती) साढे सात वर्ष की होती है, जो जन्मराशि से बारहवीं राशि में शनि के आने पर २॥ वर्ष तक सिरपर (चढती), जन्मराशि में आने पर २॥ वर्ष हृदय पर एवं जन्मराशि से दूसरी राशि में आने पर पैरों पर (उतरती) मानी जाती है।

लघुकल्याणी (ढैया) अढाई वर्ष की होती है, जो जन्म राशि से चौथी एवं आठवीं राशि में शनि के आने पर मानी जाती है।

जिसकी जन्म कुण्डली में चन्द्र शनैश्चर का शुभ ग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा वा अन्तर शुभ चल रहा हो तो उसे शनि की साढ़ेसाती व ढैया का अशुभ फल कम होता है। यदि चन्द्र शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढ़साती व ढया महा अशुभ, चिन्ता, धनहानि, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग आदि का कारण बनती हैं। शान्त्यर्थ इष्टदेव के मन्त्र का जप और शनिवार के दिन सप्तधान्य (सतनाजा) को तेल का हाथ लगाकर पक्षियों को डालना चाहिए। महावीर जी पर सिन्दूर तेल चढ़ाना भी अच्छा है।

इस वर्ष वर्षारम्भ से फाल्गुन कृष्ण १ तक शनि धनु राशि में रहेगा। इस अवधि के लिए साढ़ेसाती, ढैया का विचार इस प्रकार है—

— वर्षारम्भ से फाल्गुन कृ. १ तक के लिए —

	साढेसाती			ढैया	
जन्मराशि	वृश्चिक	धनु	मकर	वृष	कन्या
पाद (पाए)	सुवर्ण	ताम्बा	चान्दी	चान्दी	सुवर्ण
स्थान	पैर	हृदय	मस्तक	×	×
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ

फाल्गुन कृष्ण २ से शनि मकर राशि में भ्रमण करेगा। अतः फाल्गुन कृष्ण २ से वर्षान्त तक के लिए शनि की साढ़ेसाती, ढैया का विचार नीचे लिखे कोष्ठक में दिया गया है—

— फाल्गुन कृ. २ से वर्षान्त तक के लिए —

	साढेसाती			ढैया	
जन्मराशि	धनु	मकर	कुम्भ	मिथुन	तुला
पाद (पाए)	चान्दी	लोहा	ताम्बा	ताम्बा	सुवर्ण
स्थान	पैर	हृदय	मस्तक	×	×
	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ

नजर झाड़ने का मन्त्र

मन्त्र—"ओं नमो सत्यनाम आदेश गुरु को—ओं नमो नजर जहां पर पीर न जानी बोले छल सों अमृतबानी कहो नजर कहां ते आई, यहां की ठौर तोहि कौन बताई, कौन जात तेरो, कहां ठाम, किसकी बेटी, कहा तेरो नाम, कहां से उड़ी, कहां को जाय, अब ही बस कर ले, तेरी माया मेरी बात सुनो चितलाय, जसी होय सुनाऊं आय तेलन तमोलन चहड़ी चमारी कायथनी खतरानी कुम्हारी महतरानी, राजा की रानी जाको दोष ताही के सिर पड़े जाहर पीर नजर से रक्षा करे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा॥" जिसे नजर लगी हो उसे इस मन्त्र द्वारा मोर के पंख से छाड़ देने से नजर का दोष दूर हो।

दुकान की बिक्री (बिक्रय) बढ़ाने का यन्त्र एवं मन्त्र

यन्त्र

८२४	८२७	८३०	८१६
८२९	८१७	८२३	८२८
८१८	८२३	८२५	८२२
८२६	८२१	८१९	८३१

मन्त्रः—"या अववार्विरिज्कु लफतह दूकान फलां (अपना नाम बोलें) की बसतन फलां (अपना नाम बोलें) की जारी गद्दी व क्वयाफ़ता हो यावासितो॥"

बिधानः—शुक्लपक्ष के पहिले गुरुवार को इस यन्त्र को सात बार अनार की कलम से चन्दन के साथ लिख कर उसका पञ्चोपचार पूजन करे और लोबान को धूप दे। साथ ही ऊपर लिखे मन्त्र को एक सौ आठ बार पढ़े। बाद में लिखे हुए इन सात यन्त्रों को बत्ती बनाकर एक एक करके प्रतिदिन मीठ तेल के साथ लगातार सत दिन दुकान में जलाए। एसा करने स बन्द हुई बिक्री सात ही दिन के भीतर २ जारी हो जाएगा इसमें सन्देह नहीं।

सर्पविषनाशक गारुडास्त्र मन्त्र

ॐ सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रिवृते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोम आत्माच्छन्दांस्यङ्गानि यजूंषि नाम। साम ते तनुर्वामदेव्यं यज्ञा यज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्याऽशफा सुपर्णोसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत ॐ। विधि—यह यजुर्वेद का गारुडास्त्र मंत्र है इस मन्त्र को सूर्य ग्रहण के समय स्पर्श से मोक्ष तक किसी पवित्र नदी के किनारे कम्बल के आसन पर बैठकर सूर्याभिमुख होकर रुद्राक्ष की माला द्वारा जप करे। जप के समय गरुड़ के साथ श्री चतुर्भुजी नारायण का ध्यान करता रहे बस ग्रहण के अनन्तर मंत्र सिद्ध है। तदनन्तर रोजाना सन्ध्या पूजा के समय इस मन्त्र को सात बार जप लिया करे फिर जब किसी को सर्प काटे तो नीम की लकड़ी या पुठकंडा (अपामार्ग) की जड़ से शनैः शनः झाड़े विष दूर होगा।

अथ गारुडोपनिषत्

"ॐ ब्रह्मविद्यां प्रवक्ष्यामि ब्रह्मा नारदाय नारदो बृहत्सेनाय बृहत्सेनो बृहस्पतये बृहस्पतिरिन्द्राय इन्द्रो भरद्वाजाय भरद्वाजो जीवितुकामेभ्यः स्वशिष्येभ्यः प्रायच्छत्, ॐ तत्तंकारी मर्तकारी बिषहारिणी विषदूषिणी विषर्सापिणी विषनाशिनी हतं विषं नष्टं विषं प्रणष्टं विषं हतं ते ब्रह्मणा विषं हतमिन्द्रस्य वज्रेण स्वाहा।"

(शेष पृ० ८ पर)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

—ग्रहण निर्णय (सं. [illegible])—

सं २०१७ में भूमण्डल पर चार ग्रहण (दो चन्द्रमा के एवं दो सूर्य के) होंगे, जिनमें से आश्विन कृ. ३० मं. (२०-२१ सितम्बर) को होने वाला सूर्यग्रहण भारत में नहीं दीखेगा। शेष ग्रहणों का विवरण इस प्रकार है—

(१) खग्रास चूड़ामणि चन्द्रग्रहण, भाद्र. शु. १५ चं. (५ सितम्बर १९६०)– इस ग्रहण के स्पर्श मोक्ष आदि इस प्रकार हैं—

	घं.मि.		
स्पर्श	३।६	दिन	भा. स्टे. टा.
सम्मीलन	४।८		
ग्रहणमध्य	४।५१	,,	
उन्मीलन्	५।३५	सायं	
मोक्ष	६।३७	,,	
पर्वकाल	३।३१		

इस ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ). सम्मीलन एवं मध्य भारत में कहीं भी नहीं दीखेगा। भारत में चन्द्रमा सर्वत्र (जहां ग्रहण दीखेगा वहां) ग्रस्त ही उदित होगा। चित्र नं. (१) देखिए— इसमें दी गई 'क ख' रेखा के बाईं ओर के प्रदेशों में, यह ग्रहण बिल्कुल नहीं दीखेगा। इस रेखा से दाईं ओर 'च छ' रेखा तक के प्रदेशों में खण्ड ग्रास के रूप में एवं 'च छ' रेखा से दाईं ओर के प्रदेशों में खग्रास के रूप में यह ग्रहण देखा जा सकेगा। समस्त पञ्जाब एवं दिल्ली में यह ग्रहण नहीं दीखेगा। चन्द्रवार को होने के कारण यह चन्द्रग्रहण दान जप आदि की दृष्टि से विशेष महत्त्वशाली है।

सूतक—ग्रहण का सूतक इस दिन प्रातःकाल से ही लग जाएगा।

ग्रहण का राशियों पर प्रभाव—कुम्भ राशि पर होने से यह ग्रहण कुम्भराशि वालों के लिए विशेष अशुभ है। भिन्न-भिन्न राशि वालों के लिए इसका फल इस भान्ति है—

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
ग्रहणफल	लाभ	सफलता	अपमान	रोग	स्त्रीकष्ट	सुख	चिन्ता	नाश	लाभ	हानि	कष्ट	हानि

अन्य फल—पश्चिम देश एवं पर्वतों के निवासियों को कष्ट हो। कलिङ्ग-बंगाल प्रान्त एवं मुस्लिम राष्ट्रों पर आपत्ति आए। उपज अच्छी हो।

(२) **चन्द्रग्रहण**, फाल्गु. शुक्ल १५ गुरुवार (२ मार्च १९६१ ई.)—यह ग्रहण बंगाल, नेपाल, उ. प्र., मध्यभारत, पंजाब, राजस्थान गुजरात एवं दक्षिण भारत में ग्रस्तोदय दिखाई देगा। चित्र नं. (१) में खींची गई 'ट ठ' रेखा से बाईं ओर के प्रदेशों में यह ग्रस्तोदित होगा और इससे दाईं ओर के प्रदेशों में इसका स्पर्श चन्द्रोदय होने के बाद होगा। यह ग्रहण सर्वत्र खण्डग्रास के रूप में ही दिखाई देगा। इसके स्पर्श आदि काल ये हैं—

	घं. मि.		
स्पर्श	५।२०	सायं	भा. स्टे. टा.
मध्य	६।५९	,,	
मोक्ष	८।३८	रात्रि	
पर्वकाल	३।१८		

ग्रहणफल—यह ग्रहण सिंह राशि पर हो रहा है अतः यह सिंह राशि वालों के लिए विशेष अशुभ है। भिन्न-भिन्न राशियों पर इसका फल इस प्रकार है—

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
ग्रहणफल	चिन्ता	[illegible]	[illegible]	हानि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अपमान	रोग	स्त्रीकष्ट	[illegible]

अन्यफल—काश्मीर एवं सिन्ध प्रदेश के निवासियों को कष्ट हो। अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं विकट हों। सुगन्धित पदार्थ एवं चावल, चना, तेल का संग्रह करने से आगे लाभ मिले॥

(३) **खण्डग्रास सूर्यग्रहण**, फाल्गु. कृ. ३० बु. (१५ फर. १९६१)—

यह सूर्य ग्रहण दक्षिणी एवं पूर्वी भारत के बहुत से भाग को छोड़कर शेष समस्त भारत में खण्डग्रास के रूप में दीखेगा। चित्र नं. (२) द्वारा किसी भी भारतीय नगर में इस ग्रहण के स्पर्श एवं मोक्ष काल ज्ञात किये जा सकते हैं इस चित्र में दिए गए सभी काल भारतीय स्टे. टा. को बतलाते हैं। चित्र में जहां स्पर्श एवं मोक्ष की रेखाएं नहीं खींची गई हैं, वहां ग्रहण नहीं होगा। चित्र में नीचे दाएं कोने में चित्रित लघु चित्र द्वारा भारत के किसी भी नगर में इस ग्रहण का परमग्रास जाना जा सकता है। ध्यान रहे-ग्रास ज्ञान के लिए यहां रविबिम्ब के व्यास को एक मानना चाहिए।

यहां भारत एवं प्रतिवेशी राष्ट्रों के प्रसिद्ध कुछ नगरों में इस ग्रहण के स्पर्श एवं मोक्ष काल भा. स्टे. टा. में दिए जा रहे हैं—

नगर	स्पर्श	मोक्ष	नगर	स्पर्श	मोक्ष
	घं. मि.	घं. मि.		घं. मि.	घं. मि.
अजमेर	१।४८	३।३२	दिल्ली	१।५३	३।३८
अमृतसर	१।४०	३।४४	नैनीताल	१।५९	३।४०
अम्बाला	१।४८	३।४२	पटना	२।३३	३।२३
अलीगढ़	१।५८	३।३६	पटियाला	१।४६	३।४२
आगरा	२।०	३।३४	प्रयाग	२।२०	३।२६
इन्दौर	२।३	३।१८			
उदयपुर	१।४९	३।२५	बम्बई	२।६	२।५७
कराची	१।२४	३।२६	बीकानेर	१।३९	३।३६
काठमांडू	२।२४	३।३२	भोपाल	२।१०	३।१८
काशी	२।२६	३।२४	मथुरा	१।५६	३।३६
कुरुक्षेत्र	१।४९	३।४१	राजकोट	१।४२	३।१८
ग्वालियर	२।२	३।३२	लखनऊ	२।१०	३।३३
जम्मू	१।३९	३।४५	शिमला	१।४८	३।४४
जयपुर	१।५१	३।३४	श्रीनगर	१।३८	३।४८
जोधपुर	१।४१	३।३२	हरिद्वार	१।५४	३।४२
झांसी	२।७	३।२८			

ग्रहण का राशियों पर प्रभाव—यह ग्रहण भी कुम्भ राशि पर हो रहा है अतः इसका भिन्न-भिन्न राशियों के लिए वही फल है जो भाद्र. शु. १५ चं. (५ सितं. १९६०) को होने वाले चन्द्रग्रहण का है।

अन्यफल—प्रजा में अशान्ति व्याप्त हो। राष्ट्रों में वैमनस्य बढ़े। अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण कलुषित बने॥

सूतक—इस ग्रहण का सूतक प्रातःकाल से ही माना जाएगा।

इस ग्रहण की खग्रासरेखा भारत से पश्चिम एवं उत्तर में से निकल रही है। भारत में परमाधिक ग्रास .५० होगा एवं सूर्यबिम्ब [illegible] ही ग्रस्त दीख पड़ेगा

चित्र नं. (१)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चित्र नं० (१)

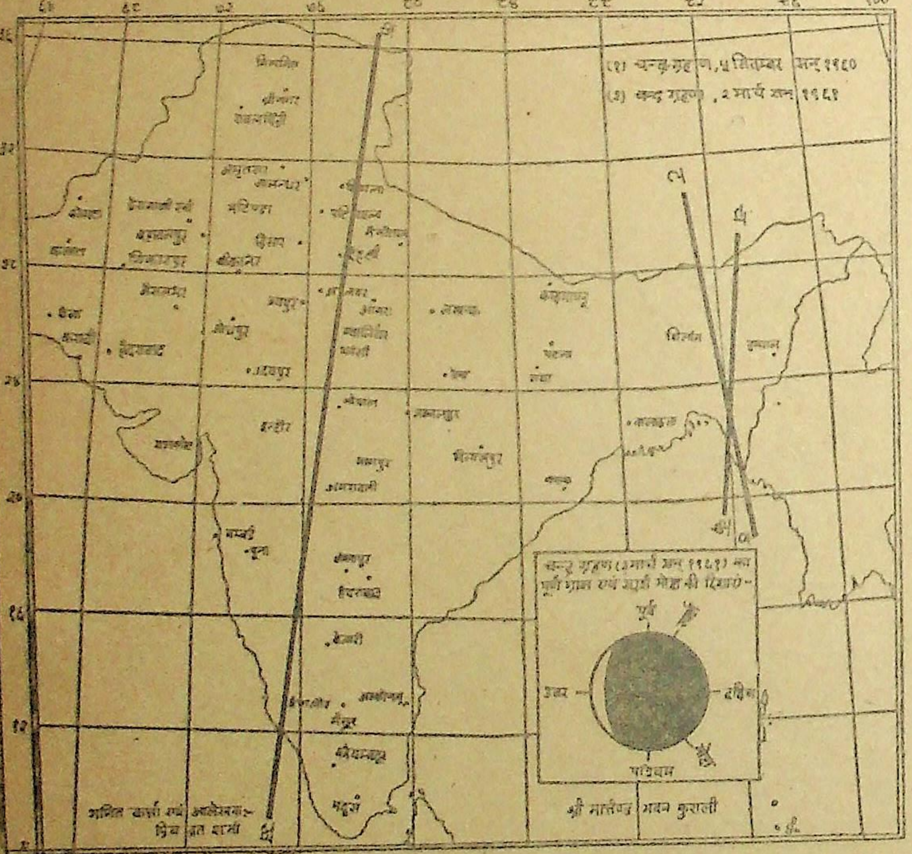

अमरीकी मेला

११ दिसम्बर १९५९ से १४ फरवरी १९६० तक होने वाले अमरीकी मेले का मुख्य उद्देश्य भारतीय किसानों को अपने यहां के कृषि के संबंध में मुख्यत: यही बताना है कि वहां के किसान भी शहर वालों की तरह आराम तथा सुख की जिन्दगी क्यों व्यतीत करते हैं। कम मेहनत में आधुनिक वैज्ञानिक उपायों तथा सहकारिता से वे अधिक से अधिक अन्न का उत्पादन करते हैं। नय लोगों के खोज तथा आविष्कारों तथा बजुर्गों के अनुभवों का पूर्ण सदुपयोग करते हैं। वहां की गायें वर्ष में ३०० मन दूध तथा मुर्गियां २५० अण्डे देती हैं। इन सारी वस्तुओं का प्रदर्शन यहां के कुशल व्यक्तियों द्वारा किया जायगा।

वहां के आणविक विभाग में भी परमाणु खेती के लिए कितना उपयोगी यह प्रदर्शित किया जायगा।

अंगविज्जा

मुनि श्री पुण्यविजय जी द्वारा संपादित

डा० मोतीचन्द्र कृत

अंग्रेजी भूमिका और

डा० वासुदेवशरण अग्रवाल कृत

हिन्दी भूमिका सहित— मूल्य २१-००

प्राकृत भाषा के इस प्राचीन ग्रन्थ म शरीर के विविध अंगों के लक्षणों के आधार पर भविष्य कहने की प्रक्रिया का वर्णन है। ग्रन्थ भाषा के अध्येताओं एवं भारतीय सांस्कृतिक अध्ययन की सामग्री की दृष्टि से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कुषाण कालीन प्राकृत भाषा का रूप जो व्याकरण के बंधनों से मुक्त थी—वह इस ग्रन्थ में प्रस्तुत है। सांस्कृतिक अध्ययन के लिये बौद्ध ग्रन्थ महाव्युत्पत्ति के समान इसम नाना विषयों की सूचियां दी गई हैं। परिशिष्टों में विविध सूचियों का संग्रह तथा विस्तृत शब्दसूचि दी गई है।

काव्यतत्त्वसमीक्षा

इस अद्भुत ग्रन्थ में मम्मट आदि अनेक अलंकार-शास्त्र के आचार्यों के मतों का वैज्ञानिक ढंग से विवेचन किया गया है। ग्रन्थ सुललित, रोचक तथा सुबोध संस्कृत भाषा में लिखा गया है जिसमें प्राचीन आचार्यों की शैली का लालित्य आभासित होता है। लेखक ने (भगीरथ प्रयत्न करके) प्राचीन अलङ्कार शास्त्र के मूलतत्वों और आधुनिक आलोचना सिद्धान्तों का मौलिक रूप से तुलनात्मक अध्ययन किया है। साथ-साथ पारिभाषिक शब्दों के आंग्ल भाषा में पर्याय भेद भी दे दिये हैं।

बढ़िया कपड़े की जिल्द सहित। मूल्य २०)

मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चित्र नं. (२)

खण्डग्रास सूर्यग्रहण-फाल्गु. कृ. ३० बुधवार (१५ फर. १९६१ ई.)

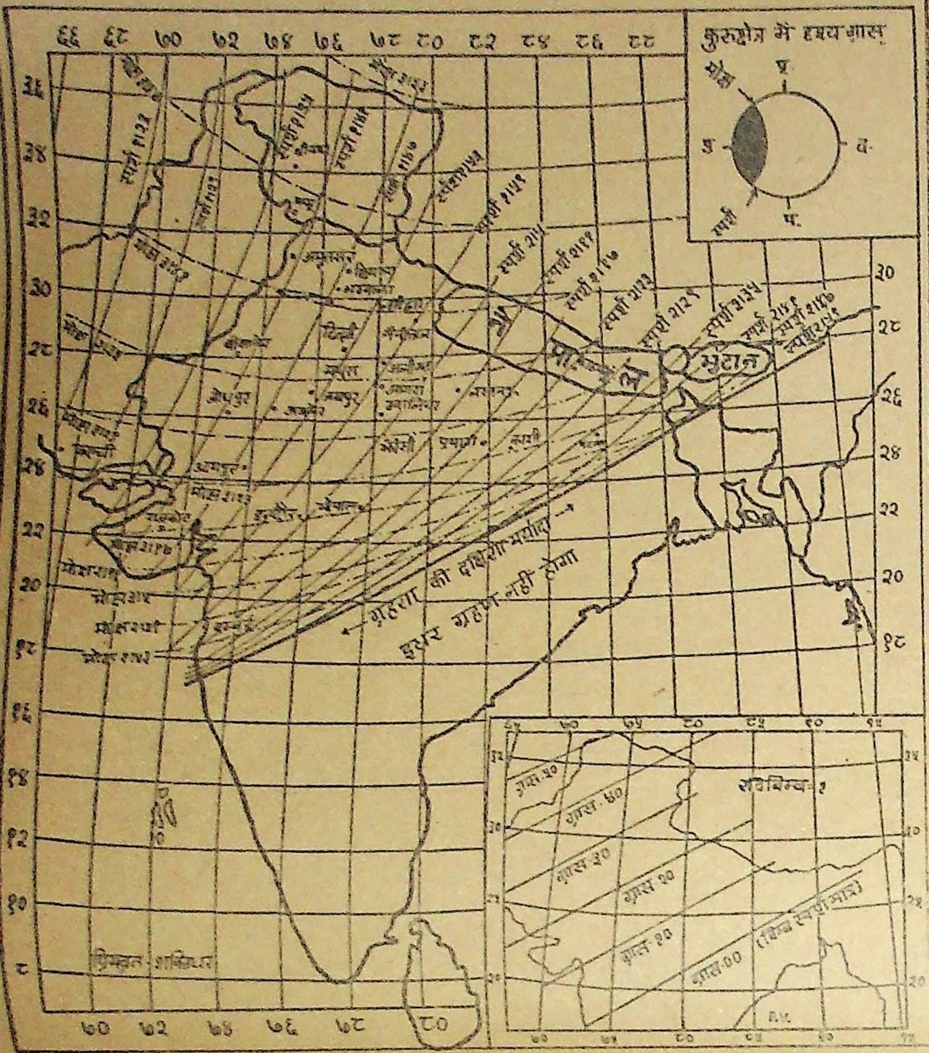

(शेषांश पृ० ५ का)

नागानां सर्पाणां वृश्चिकानां लूतानां प्रलूतानां गोधानां गृहगोधानां मूषकाणां स्थावराणां जङ्गमानां यद्यनन्तकदूतस्त्वं यदि वानन्तकः स्वयं यदि वासुकिदूतस्त्वं यदि वा वासुकिः स्वयं यदि तक्षकदूतस्त्वं यदि वा तक्षकः स्वयं यदि कर्कोटकदूतस्त्वं यदि वा कर्कोटकः स्वयं यदि शंखपुलकदूतस्त्वं यदि वा शंखपुलकः स्वयं यदि पद्मकदूतस्त्वं यदि वा पद्मकः स्वयं यदि महापद्मकदूतस्त्वं यदि वा महापद्मकः स्वयं यद्येलापत्रकदूतस्त्वं यदि वा एलापत्रकः स्वयं यदि महेलापत्रकदूतस्त्वं यदि वा महेलापत्रकः स्वयं यदि कम्बलाश्वतरदूतस्त्वं यदि वा कम्बलाश्वतरः स्वयं यदि कालिकदूतस्त्वं यदि वा कालिकः स्वयं यदि कुलिकदूतस्त्वं यदि वा कुलिकः स्वयं । य इमां महाविद्याममावस्यायां शृणुयाद् द्वादशवर्षं न तं दशन्ति सर्पा य इमां महाविद्याममावस्यायामधीयानो धारयेद् यावज्जीवं न तं दशन्ति सर्पा अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा तृणेन मोक्षयति भस्मना मोक्षयति शतं ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा चक्षुषा मोक्षयति सहस्रं ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा मनसा मोक्षयति इत्याह भगवान् ब्रह्मा आह भगवन्ब्रह्मेत्यथर्वणवेदे गारुडोपनिषत् समाप्ता । ओं शान्तिः ३ ॥

इस गारुड़ोपनिषद् को जो मनुष्य अमावस्या को पढ़ता है या श्रवण करता है उसे सर्प भय नहीं होता । जिसे सर्प का भय रहता हो तो उसे चाहिए कि इस उपनिषद् को पवित्र होकर अनार की कलम और लालचन्दन से भूर्जपत्र पर लिख कर त्रिलोह (सुवर्ण चांदी तांबा) के ताबीज में रख कर धारण करे और स्वयं दैनिक स्नानादि से शुद्ध रहे फिर सर्पभय कदापि न होगा ।

शत्रु का किया प्रयोग उल्टा उसी पर पड़ जाए

मन्त्रः—"एक ठों सरसों सोला राई मोरो पटवल को रोजाई खाय खाय पड़े भार जे करे ते मरे उलट विद्या ता ही पर परे शब्द साचा पिंड काचा तो हनूमान का मन्त्र साचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा ॥" इस मन्त्र से राई और नमक को अभिमन्त्रित कर आग में डाल देने से शत्रु का प्रयोग उसी पर ही उल्टा पड़ जाएगा ।

सन्तान सुखदाता यंत्र

नीचे लिखे यन्त्र को शुभ नक्षत्र शुभ मुहुर्त में गोरोचन से भोजपत्र पर लिखे, गुग्गल की धूप देकर सोना या चान्दी में मढ़ा वांझ के गले में बांधे तो सन्तान हो । मृतवत्सा के बांधे तो पुत्र चिरंजीव हो

शंकर मातु शंकर पितु

४०	४२	४	५
१	३	४८	४३
४६	४७	५	४
२	७	४७	४४

शंकर राखैं चारों दीपा

पाप के नाश होय

कीर्ति करन लक्ष्मीपति ॥

इस यंत्र को दीपमाला वा शिवरात्रिको १०८वार भोजपत्र पर लिखे पश्चात् धूपदी नैवेद्य से पूजन कर चलते जल म प्रवाह कर दे तब सिद्ध होने पर ठीक तजर्बा लगेगा ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

समृद्धि के लिए आयोजन

हमारे देश में आयोजन का उद्देश्य लोगों का जीवनस्तर ऊंचा करना और सभी उपलब्ध साधनों के समन्वित विकास के द्वारा इस प्रकार जन-कल्याण करना है ताकि अधिक रोज़गार बढ़ें, उत्पादन-क्षमता में वृद्धि हो और लोगों को अधिकाधिक सामाजिक न्याय प्राप्त हो सके। आर्थिक विकास के मार्ग से केवल भौतिक कल्याण में ही वृद्धि नहीं होगी अपितु इससे श्रेष्ठतर बौद्धिक व सांस्कृतिक जीवन के लिए आवश्यक सुख-सुविधायें और वातावरण तैयार किया जाएगा। राष्ट्रीय-आय और रोजगार में वृद्धि करने और आय व धन की विषमता कम करने के उद्देश्यों को मिला कर एक नाम दिया गया है—'समाजवादी ढांचे के समाज की रचना'।

प्रथम पंचवर्षीय योजना (१९५१–५२से १९५५–५६) के द्वारा खाद्य व माल के उत्पादन में वृद्धि हुई, सामाजिक सेवायें श्रेष्ठतर हुई और रोजगार की सुविधाओं में वृद्धि हुई है। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह हुई कि इससे और विकास करने के लिए उचित पृष्ठभूमि तैयार हो गयी। द्वितीय पंचवर्षीय योजना (१९५६–५७ से १९६०–६१) के मुख्य उद्देश्य ये हैं:—

१–राष्ट्रीय आय के स्तर में इतनी वृद्धि करना जिससे देश के रहन-सहन का मानदण्ड ऊंचा हो।

२–मूल और भारी उद्योगों के विकास पर विशेष जोर देते हुए देश का तेजी से औद्योगीकरण।

३–रोजगार सम्बन्धी सुविधाओं का अधिक विस्तार और

४–आय और सम्पत्ति की विषमताओं में कमी और आर्थिक शक्ति का पहले से अधिक समान वितरण।

दूसरी योजना में मूलभूत उद्योगों जैसे कि लौह व इस्पात, भारी मशीनें बनाने के उद्योग, कोयला खनन, बिजली और परिवहन के विकास को अधिक महत्त्व दिया जा रहा है। आशा है कृषि में उन्नत ढंग अपनाने से और देहाती व कुटीर उद्योगों का विकास करने से ग्रामीण क्षेत्रों में और अधिक समृद्धि फैलेगी। खाद्य उत्पादन में और अधिक वृद्धि करने के लिए रबी और खरीफ अभियानों द्वारा प्रेरित किया जा रहा है।

योजना की प्रगति

दूसरी योजना के आरंभिक वर्षों में विकास की गति में काफी वृद्धि हुई है औद्योगिक क्षेत्र में, विशेषकर पूंजीगत और उत्पादक माल के उद्योगों में, उल्लेखनीय प्रगति हुई। मशीनों–औजारों व भारी रसायनों आदि का उत्पादन काफी बढ़ा है। कई उपभोग्य और उत्पादक माल तो हमारे देश में प्रथम बार बनाये गये थे।

सरकारी क्षेत्र में जो इस्पात के तीन नये कारखाने बनाये जा रहे हैं उनमें राउड़केला और भिलाई के कारखानों की प्रथम धमन भट्टियों ने कार्य शुरू कर दिया है। दुर्गापुर के कारखाने की प्रथम धमन भट्टी के १९५९ की समाप्ति के पूर्व ही शुरू हो जाने की आशा है।

कृषि क्षेत्र में यद्यपि १९५७–५८ में कृषि उत्पादन अपेक्षाकृत कम रहा, फिर भी सामान्य प्रवृत्ति उत्पादन में निरन्तर वृद्धि की ही ओर रही। १९५८–५९ की उपज ७३० लाख टन् तक पहुंच जाने की आशा है उपज की यह सीमा अब तक के वर्षों में सबसे ऊंची होगी।

इन विभिन्न क्षेत्रों में विकास होने का अर्थ होगा कि अधिक लोगों के लिए रोजगार। अनुमान लगाया गया है कि दूसरी योजना के पहले तीन वर्षों में कृषि के अलावा ३० लाख रोजगारों की और वृद्धि होगी।

उपभोग या खपत के ढांचे में भी परिवर्तन हुए हैं। अब लोग ज्वार–बाजरे जैसे मोटे अनाज की अपेक्षा गेहूं और चावल जैसे अच्छे अनाजों का प्रयोग करने लगे हैं, यह इस बात का सूचक है कि लोगों का जीवन-स्तर उन्नत हो रहा है। सीने की मशीनें, बिजली के लैम्प व पंखे, रेडियोग्राम और साइकिलों जैसी सुविधाजनक वस्तुओं की मांग में भी काफी वृद्धि हुई है।

योजना की सिद्धि—आपकी समृद्धि

इन सब उत्साहवर्धक परिणामों के अतिरिक्त एक और विशेष बात है कि दूसरी पंचवर्षीय योजना के अन्दर 'अपनी सहायता आप करो' और स्वावलम्बन की भावना से प्रगति की समुचित व्यवस्था है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हरेक व्यक्ति योजना की सफलता में रचनात्मक सहयोग दे सकता है और इस प्रकार के प्रयत्नों से उसका निजी लाभ भी होता है। उदाहरण के रूप में दफ्तर का एक कर्मचारी अपना काम तुरन्त निपटा कर और पूरे ध्यान से कार्य करके न केवल अपनी पदोन्नति के अवसरों में वृद्धि करता है, अपितु योजना की सफलता में भी हाथ बटाता है। वह अपने फुरसत के समय को कल्याणकारी क्रिया-कलापों में लगा सकता है। भारत सेवक समाज और टैरीटोरियल आर्मी जैसी संस्थाएं उसके लिए अनेक अवसर प्रदान करती हैं।

विद्यार्थी अपने अध्ययन में पूरा मन लगा कर और फिर पाठ्यक्रम के अतिरिक्त क्रिया-कलापों जैसे कि योजना गोष्ठियों, आक्सिलियरी कैडिट कोर या नेशनल कैडिट कोर में भाग ले कर योजना की पूर्ति में सहयोग दे सकता है। विद्यार्थियों को अपनी छुट्टियां राष्ट्रनिर्माणकारी क्रिया-कलापों में बितानी चाहिएं।

राष्ट्र निर्माण के इस महायज्ञ में गृहिणी के योगदान का भी कम महत्त्व नहीं है। वह अपने घर की व्यवस्था सुचारु रूप से कर के और वस्तुओं की, खास तौर से खाद्य पदार्थों

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

को, बरबादी रोक कर, सुखी परिवार बना सकती हैं। घर के पास एक सब्जियों का बगीचा लगा लेने से भी उसे काफी किफायत होगी। फालतू समय में सिलाई या बुनाई का काम करके परिवार की आय बढ़ाने में सहायता कर सकती है। बच्चों को योग्य नागरिक बनाने का प्रशिक्षण देने की बड़ी जिम्मेदारी उसी की है।

योजना की सफलता में किसानों और औद्योगिक मजदूरों का योग भी इतने ही महत्त्व का है। योजना की पूर्ति के लिए खाद्य उत्पादन और माल उत्पादन में वृद्धि अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। किसान, कृषि के उन्नत तरीके अपना कर और अच्छी खेती के लिए उपलब्ध सभी साधनों का प्रयोग करके अधिक और अच्छी फसल उपजा सकता है। धरती से अधिक उपज होने का अर्थ होगा उसके लिए अधिक आमदनी और राष्ट्र के लिए ज्यादा फायदा।

इसी प्रकार औद्योगिक मज़दूर भी उत्पादन बढ़ाने के लिए भरपूर कोशिश करके अपनी तरक्की के अवसर बढ़ा सकता है। इससे मालिकों की नज़र में वह ऊंचा भी उठेगा।

बचत की आवश्यकता

योजना की सफलता के लिए केवल उत्पादन में वृद्धि ही काफी नहीं है, अपितु सिक्यूरिटियों में अधिकाधिक धन लगाना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। अधिकाधिक धन लगाने के प्रयत्न में दफ्तर के कर्मचारी, विद्यार्थी, गृहिणी, किसान और औद्योगिक मज़दूर सभी कोई सहायता कर सकते हैं। उन्हें केवल उत्पादन बढ़ाने में ही मदद नहीं करनी चाहिए बल्कि अधिकाधिक धन बचा कर उसे भारत सरकार की अल्प बचत सिक्यूरिटियों में लगाकर भी सहयोग देना चाहिए। निसन्देह इससे समृद्धि को निकटतर लाने में सहायता मिलेगी।

अल्प बचत की विभिन्न सिक्यूरिटियां, उन पर लगाये जाने वाली रकम और उन पर मिलने वाला लाभ नीचे दिया गया है।

१२-वर्षीय राष्ट्रीय योजना बचत पत्र

(नेशनल प्लान सेविंग्स सर्टिफिकेट)

लगाने की रकम रुपये	पूर्णावधि पर मिलने वाला मूल्य रुपये नये पैसे
५	८.२५
१०	१६.५०
५०	८२.५०
१००	१६५.००
५००	८२५.००
१,०००	१,६५०.००
५,०००	८,२५०.००

दशवर्षीय राजकोष बचत जमा पत्र

(ट्रेजरी सेविंग्स डिपाजिट सर्टिफिकेट)

इस मद के अन्तर्गत एक व्यक्ति ५० रुपये से लेकर उसकी गुणित राशि जो २५,००० रुपये तक की हो, जमा करवा सकता है। इस पर प्रतिवर्ष ४ प्रतिशत ब्याज मिलता है।

बढ़ने वाली सावधिक जमा योजना

(क्यूम्यूलेटिव टाइम डिपाज़िट स्कीम)

इस योजना के अन्तर्गत आप अपने बच्चों की शिक्षा के लिए या उनके विवाह के लिए या उन्हें जीवन में अच्छे रूप से समारम्भ करवाने के लिए, अपने बुढ़ापे के सुख के लिए, अथवा मकान बनवाने के लिए रुपया इकट्ठा कर सकते हैं। इसके लिए ५ वर्षीय या दश-वर्षीय खाते में ५, १०, २०, ५०, १००, या २०० रुपये प्रति मास नियमित रूप से जमा करवा कर धन इकट्ठा किया जा सकता है। यदि आप १० रुपये प्रति मास जमा करवायें तो पांच वर्ष बाद आपको ६५० रुपये मिलेंगे और १० वर्ष बाद १४५० रुपये मिलेंगे एक व्यक्ति के लिए जमा की सीमा १२,००० रुपये (पंचवर्षीय खाते में २०० रुपये प्रति मास और दश-वर्षीय खाते में १०० रुपये प्रति मास) और दो वयस्कों के संयुक्त खाते के लिए जमा सीमा २४,००० रुपये (पंचवर्षीय खाते के लिए ४०० रुपये प्रति मास और दश-वर्षीय खाते के लिए २०० रुपये प्रति मास) है। इस योजना की विस्तृत जानकारी, बचत बैंक का काम करने वाले किसी डाक-घर से या नागपुर स्थित राष्ट्रीय बचत संगठन से अथवा अपने राज्य के रीजनल नेशनल सेविंग्स अफसर से प्राप्त की जा सकती है।

डाक-घर बचत बैंक खाता

एक व्यक्ति के खाते में १०,००० रुपये और दो व्यक्तियों के संयुक्त खाते म रुपये के बैलेन्स पर २½ प्रतिशत प्रति वर्ष ब्याज जोड़ा जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

क्या एक किसान २४ व्यक्तियों के लिए खुराक पैदा कर सकता है ?

उत्तर है .... जी हाँ

अमरीका का प्रत्येक किसान वैज्ञानिक तरीकों, स्वेच्छा सहकार के लाभों और कड़ी मेहनत के द्वारा अपने लिये और २३ दूसरे व्यक्तियों के लिये खुराक पैदा करता है, इनमें से ४ व्यक्ति ऐसे है जो अन्य देशों में रहते है !

अमरीकी खेती बाड़ी को गौरव अपनी बहुतायत पर नहीं है बल्कि इस बात पर है कि इस बहुतायत में बहुत से व्यक्ति हिस्सा बटाते हैं !

हिस्सा बटाने का मतलब ज्ञान और अनाज दोनों में हिस्सा बटाना है ।

नई दिल्ली में ११ दिसम्बर १९५९ से १४ फरवरी १९६० तक होने वाली विश्व कृषि प्रदर्शनी में अमरीकी मेला यानी अमरीकी प्रदर्शनी में पधार कर आप भी हमारे अनुभव से लाभ उठा सकते हैं ।

अमरीका वाले खेती-बाड़ी की अपनी प्राप्तियों को अमरीकी मेले में क्यों दिखाना चाहते है ?

इसलिए कि भारत की तरह अमरीका वाले भी इस बात में विश्वास रखते है कि खाद्य, परिवार, मैत्री और स्वतन्त्रता के चार स्तम्भों पर ही उन्नत जीवन स्तर निर्माण किया जा सकता है ।

अमरीकी मेला अमरीकी कृषि प्रदर्शनी, भारत कृषक समाज की ओर से आयोजित की गई विश्व कृषि प्रदर्शनी में मथुरा रोड, नई दिल्ली (११ दिसम्बर १९५९ से १४ फरवरी १९६० तक)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नाप तौल की मैट्रिक प्रणाली

मैट्रिक प्रणाली अपना कर नाप तौल का प्रमाणीकरण करने के लिए हमारी संसद ने १९५६ में एक कानून बनाया था। अक्तूबर, १९५८ में केन्द्रीय सरकार ने इस कानून को लागू कर कुछ चुने हुए क्षेत्रों जिन में मद्रास, बम्बई, कलकत्ता और दिल्ली के महत्वपूर्ण शहरी क्षेत्र सम्मिलित हैं, मैट्रिक प्रणाली के व्यापारिक बाटों का प्रयोग शुरु किया। पुराने बाटों पर तुरन्त ही पाबन्दी नहीं लगाई गयी। दो वर्ष की अवधि तक उनके चलते रहने की अनुमति दी गयी है। यह अवधि सितम्बर, १९६० में समाप्त हो जाएगी। उस तारीख के बाद इन क्षेत्रों में सभी लेन-देन मैट्रिक बाटों में होना चाहिए। मैट्रिक बाटों के प्रयोग को धीरे धीरे देश के अन्य भागों में भी विस्तृत किया जाएगा। धारिता और लम्बाई के मैट्रिक पैमानों को भी उचित अवधि में लागू किया जाएगा।

मैट्रिक बाटों और पैमानों का प्रयोग कुछ बड़े बड़े उद्योगों में शुरू हो गया है। पटसन उद्योग में जुलाई, १९५८ से, सूती कपड़े, लौह व इस्पात, सीमेंट, रसायन व इंजीनियरी के उद्योगों में अक्तूबर, १९५८ से, चीनी उद्योग में नवम्बर, १९५८ से यह प्रणाली अपना ली गयी है। शेष उद्योगों और रेल व परिवहन, जहाज रानी, डाक-तार इत्यादि में भी मैट्रिक प्रणाली शीघ्र ही शुरु की जाएगी। संसद द्वारा स्वीकृत कानून के अनुसार यह परिवर्तन १९६६ तक पूरा हो जाना चाहिए। पर आशा है उस तारीख के पहले ही आम लेन-देन में मैट्रिक बाटों और पैमानों का प्रयोग शुरू हो जाएगा। देश के विभिन्न भागों में, लेन-देन में काम आने वाले मैट्रिक बाटों का निर्माण हो रहा है। हरेक बाट को सरकारी इन्सपैक्टर पहले सावधानीपूर्वक जांचता है और फिर उस पर मुहर लगाई जाती है। उसके बाद ही वह बाट व्यापारिक प्रयोग में आता है। इस प्रकार देश में नाप-तौल की एक प्रणाली ही लागू नहीं हो जाएगी बल्कि हरेक बाट और पैमाने के प्रमाणित रूप से सही होने की पक्की व्यवस्था भी हो जाएगी। वास्तविक प्रयोग में आने वाले मैट्रिक बाट नीचे दिये गये हैं:—

ढलवां लोहे के बाट			पीतल / कांसे के बाट					
किलोग्राम		ग्राम	केवल सोने चांदी के लिए		सोने चांदी व अन्य वस्तुओं के लिए			
			किलोग्राम		किलोग्राम	ग्राम		
५०	५	५००	२०	५	१	५००	५०	५
२०	२	२००	१०	२		२००	२०	२
१०	१	१००				१००	१०	१

१ किलोग्राम = १,००० ग्राम = ८६ तोले

मैट्रिक बाट : परिवर्तन तालिका

छटांक (१ छटांक = ५ तोले)	ग्राम (निकटतम ग्राम तक)
१	५८
२	११७
३	१७५
४	२३३
५	२९२
६	३५०
७	४०८
८	४६७
९	५२५
१०	५८३
११	६४२
१२	७००
१३	७५८
१४	८१६
१५	८७५

सेर (१ सेर = ८० तोले)	किलोग्राम	ग्राम (निकटतम १० ग्राम तक)
१	—	९३०
२	१	८७०
३	२	८००
४	३	७३०
५	४	६७०
६	५	६००
७	६	५३०
८	७	४६०
९	८	४००
१०	९	३३०
११	१०	२६०
१२	११	२००
१३	१२	१३०
१४	१३	६०
१५	१४	—
१७	१५	८६०
१८	१६	८००
१९	१७	७३०
२०	१८	६६०
२१	१९	६००
२२	२०	५३०
२३	२१	४६०
२४	२२	३९०
२५	२३	३३०
२६	२४	२६०
२७	२५	१९०
२८	२६	१३०
२९	२७	६०
३०	२७	९९०
३१	२८	९३०
३२	२९	८६०
३३	३०	७९०
३४	३१	७३०
३५	३२	६६०
३६	३३	५९०
३७	३४	५२०
३८	३५	४६०
३९	३६	३९०

मन (१ मन = ४० सेर)	किलोग्राम (निकटतम किलोग्राम तक)	मन (१ मन = ४० सेर)	किलोग्राम (निकटतम किलो॰ तक
१	३७	११	४११
२	७५	१२	४४८
३	११२	१३	४८५
४	१४९	१४	५२३
५	१८७	१५	५६०
६	२२४	१६	५९७
७	२६१	१७	६३५
८	२९९	१८	६७२
९	३३६	१९	७०९
१०	३७३	२०	७४६

अथ अशौचनिर्णयः

...माता को एक दिन का सूतक होता है। पति के घर (ससुराल)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ अशौचनिर्णयः

अशौच दो प्रकार का होता है (१) जननाशौच जिसको हिन्दी में 'सौरी' और पंजाबी में "सूतक" कहते हैं। (२) मरणाशौच जिसको हिन्दी में 'सूथक' और पंजाबी में 'पातक' (दीवे का सूतक) कहते हैं।

अथ जननाशौचनिर्णयः

तत्रादौ सपिंडादिविचारः—एक वंश के मूल पुरुष से सातवें तक सात पुरुष सपिण्ड कहलाते हैं। उनके सात पीढ़ी (८ से १४) तक सोदक कहलाते हैं। १५ से २२ तक सगोत्र कहलाते हैं। अशौच निर्णय करते समय उपरोक्त सपिण्डादि का विचार ध्यान में रखें।

प्रथम दिननिर्णय :—रात्रि में जन्म मरण अथवा रजोदर्शन हो तो रात्रि के तीन विभाग करने चाहिए। यदि प्रथम और द्वितीय विभाग में ये हुए हों तो गत दिवस का ग्रहण करना चाहिए और तृतीय भाग में हों तो आगामी दिन का ग्रहण करना उचित है।

गर्भस्रावादिक में अशौच निर्णय

४ मास का गर्भ गिरने पर गर्भस्राव कहलाता है। यदि ४ मास तक का गर्भ गिरे तो गर्भवती को ४ दिन अशौच होता है। ३ मास तक गर्भ गिरे तो तीन दिन का और सब सपिण्डों को स्नानमात्र से ही शुद्धि हो जाती है। ५।६ मास तक का गर्भ गिरने पर गर्भपात कहलाता है, इनमें क्रमशः ५।६ दिन अशौच लगता है, सपिण्डों को तीन दिन। यह सब वर्णों के लिए एक जैसा ही है। इसके उपरान्त यह क्रम जानना—ब्राह्मण १० दिन में, क्षत्रिय १२ दिनों में, वैश्य १५ दिनों में, और शूद्र एक मास में शुद्ध होते हैं। शातातप ऋषि के मत से सब वर्णों की शुद्धि १० दिनों में हो जाती है।

सर्वेषामेव वर्णानां सूतके मृतके तथा। दशाहाच्छुद्धिरेतेषामिति शातातपोऽब्रवीत् ॥

जन्म तथा मृतकाशौच में—चौथे पुरुष तक की १० रात्रि से शुद्धि होती है, पंचम पुरुष छः रात्रि से, छठा चार दिवस से, सातवां तीन दिन से, अष्टम एक दिन से, नवम दो पहर में और दसवां स्नान मात्र से शुद्ध होता है।

सौतेली मां को—सब सूतक पातक में पिता के समान अशौच लगता है।

जननाशौचे दानभोजननिर्णयः—जननाशौच में पहले, छठे तथा दसवें दिन दान प्रतिग्रह का दोष नहीं है, केवल अन्न भोजन का ही निषेध है।

अस्पृश्यता विचारः

सूतक में मां को १० दिन तक की अस्पृश्यता रहती है, पिता को और सौतेली मां को सचैलस्नान तक अस्पृश्यता रहती है, बाद नहीं। सब सूतकों में सपिण्डों को केवल देवता और पितरों का काम करना वर्जित है, उसमें भी स्नानानन्तर नाल छेदन से पहिले पिता को जातकर्म तथा छठी के दिन जन्मास्थदेवता पूजन का अधिकार है। लड़का पैदा होने के १० दिन बाद २० दिन तक और लड़की पैदा होने के १० दिन बाद १ महीना तक माता को, देवता और पितरों का कार्य करना वर्जित है।

दौहित्र जन्म में अशौच—यदि पिता के घर (पेके) में लड़का पैदा हो तो माता पिता को तीन दिन, चाचा और भ्राता को एक दिन का सूतक होता है। पति के घर (ससुराल) में लड़का पैदा हो तो पितादि को सूतक नहीं लगता।

अथ मृताशौचनिर्णयः—पातक में देवकर्म ओर पितृकर्म का अधिकार नहीं रहता और अस्पृश्यता भी रहती है। मरा हुआ लड़का या लड़की पैदा हो तो सपिण्डों को १० दिन का सूतक लगता है, पातक नहीं।

मृतक बालक के जन्म होने पर—दस दिन तक जननाशौच होगा मरणाशौच नहीं।

नाल छेदन के पहिले—यदि नाल छेदन के पहिले बालक की मृत्यु हो जाय तो माता को १० दिन और पित्रादि सपिण्डों के लिए ३ दिन जननाशौच लगेगा, मरणाशौच नहीं।

नाल छेदन के बाद—यदि बालक की मृत्यु हो तो पितादि सपिण्डों के लिये १० दिन तक जननाशौच होगा, मरणाशौच नहीं।

पुत्र का अशौच—दस दिन के अनन्तर और नामकरण से पूर्व यदि पुत्र की मृत्यु हो तो सपिण्डों को स्नान, माता पिता और सापत्न्यमाता को तीन दिन अशौच। बारहवें दिन के बाद छः महीने से पूर्व यदि मृत्यु होकर दहन हुआ हो तो सपिण्डों को १ दिन, और माता पिता सापत्न्यमाता को ३ दिन। सात मास से तीन वर्ष तक सपिण्डों को १ दिन तीन वर्ष के बाद उपनयन तक पित्रादि सपिण्डों को तीन दिन अशौच होगा। अनुपनीत और जननाशौच का अतिक्रांताशौच नहीं होता, परन्तु औरस पुत्र की मृत्युवार्त्ता दस दिन के बाद भी जब सुनाई दे तब तीन दिन का अशौच होगा।

कन्या का अशौच—दस दिन के बाद तीन वर्ष तक मृत हो तो सपिण्डों को स्नान माता पिता और सापत्न्य माता को छः मास तक १ दिन, तब से तीन वर्ष तक तीन दिन अशौच होगा। तीन वर्ष के बाद विवाह तक सपिण्डों को एक दिन और माता आदि को तीन दिवस अशौच होगा।

विवाहित कन्या का—कन्या का यदि पितृगृह में देहान्त हो तो माता पिता और सापत्न्यमाता को ३ दिन, पितृव्य आदि को १ दिन और अन्य ग्राम में देहान्त हुआ हो तो माता पिता को डेढ़ दिन और पितृव्य आदि को १ दिन अशौच होगा।

माता पिता का—अनुपनीत पुत्र और अविवाहिता कन्या को १० दिन, अन्य किसी का उन्हें अशौच नहीं। विवाहिता कन्या को १० दिन के भीतर मृतवार्ता ज्ञात हो तो उस दिन से तीन दिन, १० दिन के बाद ज्ञात हो तो १॥ दिन; परन्तु पुत्र को जब मृतवार्त्ता सुनाई दे तब १० दिन तक अशौच होगा।

सापत्न्य माता का—विवाहिता कन्या को १० दिन के भीतर तीन दिवस, बाद १॥ दिवस। पुत्र को दस दिन के बाद त्रिरात्रि अशौच होगा।

विवाहिता भगिनी का—भ्राता के घर में मृत्यु हो तो, भ्राता और सापत्न्य भ्राता को त्रिरात्रि, गृहान्तर में मृत्यु हो तो एक रात, और ग्रामान्तर में हो तो १ दिन अशौच होगा।

भाई का—बहिन के घर मृत्यु हो तो बहिन को तीन दिन; गृहान्तर में १ दिन अशौच होगा।

पितामह और पितृव्य का—पौत्री और भ्रातृपुत्री को स्नान से शुद्धि होती है।

मामा का—भानजा और भानजी को डेढ़ दिन। अपने घर में मृत्यु हो तो तीन दिन, ग्रामान्तर में अथवा अनुपनीत हो तो १ दिन अशौच रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मामी का—भानजा और भानजी को डेढ़ दिन। सापत्न्य मामी का अशौच नहीं होता।
पति का—१० दिन। पत्नी का भी १० दिन।
भानजे का—उपनयन हुआ हो तो मामा और मामी को तीन दिन, अनुपनीत हो तो डेढ़ दिन।
मातामह और मातामही का—दौहित्र को तीन दिन, ग्रामान्तर में डेढ़ दिन।
दौहित्र का—मातामह और मतामही को ३ दिन, अनुपनीत का १॥ दिन। दौहित्री का अशौच नहीं होता।

सास ससुर का—दामाद के घर मृत्यु हो तो दामाद को त्रिरात्रि, गृहान्तर में डेढ़ दिन, ग्रामान्तर में एक दिन अशौच होगा।
दामाद का—ससुर के गृह में मृत्यु हो तो त्रिरात्रि, अन्यत्र स्नान से शुद्धि।
साले का—उपनीत हो तो १ दिन, अनुपनीत हो तो स्नान से शुद्धि।
साली का—घर में मृत्यु हो तो एक दिन, ग्रामान्तर में स्नान से शुद्धि।
मौसी का—घर में मृत्यु हो तो तीन दिन, अन्यत्र १॥ दिन।
फफी का—घर में मृत्यु हो तो तीन दिन, अन्यत्र स्नान से शुद्धि।
फुफरे, ममेरे, मौसेरे भाई—अपने घर में मृत्यु हो तो त्रिरात्रि, अन्यत्र डेढ़ दिन, अनुपनीत हो तो १ दिन।

फुफेरी, ममेरी, मौसेरी बहिन—विवाहिता मृत हो तो १ दिन, अविवाहिता हो तो स्नानमात्र।
दत्तक का—परगोत्रोत्पन्न दत्तक के जनक और पालक माता पिताओं को तीन दिन, सपिण्डों को १ दिन।

गुरु का—त्रिरात्र, ग्रामान्तर में एकरात्रि
यती संन्यासी का—सब सपिण्डों को स्नान
सपिण्डों का—१० दिन।
समानोदकों का—३ दिन।
सगोत्रों का—१ दिन अथवा स्नानमात्र
सजातीय मित्र का—१ दिन।
अन्य जातीय मित्र का—स्नानमात्र।
सहपाठी का—१ दिन, ग्रामान्तर में स्नान।
राजा का—रात्रि में मरने पर दिन में स्नान से, और दिन में मरने पर रात्रि में स्नान से शुद्धि होती है।

अथातिक्रान्ताशौचनिर्णयः—जिसका जिसको जितने दिन पातक लगता है उतने दिन बाद उसके मरने का हाल मालूम होने पर जितना अशौच लगे उसको "अतिक्रान्ताशौच" कहते हैं। सूतक का अतिक्रान्तशौच नहीं लगता, परन्तु पिताको बाद में भी पुत्र का जन्म सुन कर सचैलस्नान करना चाहिए। यदि सूतक के बीच में ही पता लग जाय तो जितना शेष हो तब तक ही सूतक रहता है। अतिक्रान्ताशौच केवल १० दिन के पातक वालों को ही लगता है, औरों को स्नान मात्र ही से शुद्धि होती है। १० दिन के भीतर यदि दूसरा सूतक या पातक आजाय तो लड़का आदि सब सपिण्डों की शुद्धि उस पहिले अशौच की समाप्ति से निवृत्त होती है। क्रियाकर्म पुत्तलविधानादि भी सब उसी १० दिनके बाकी दिनों में समाप्त करे। अपने माता पिता और सौत (सौकन) का मरना दूर देश में वर्ष दिन के बाद भी सुने तो उसी दिन जाति के अनुसार पूरा (अथवा १० दिनका) पातक माने। माता पिता को खास पुत्रका और लड़के को अपनी सौतेली मां का अतिक्रांताशौच केवल ३ दिन का ही लगता है। समानोदक और मामा आदि को, [illegible]

भीतर वैसा ही कोई दूसरा पातक आजाने से उतने ही में शुद्धि हो जाती है। यदि ३ दिन के बाद १० दिन के भीतर भी आजाय तो पातक नहीं लगता, केवल स्नान शुद्धि कही है। १० दिन के बाद एक देश म (ऊपर कहे हुए लोगों के सिवाय) किसी सपिण्ड का मरना ३ मास तक सुने तो ३दिन का, ६ मास तक सुने तो १॥ दिन का, ९ मास तक सुने तो एक दिन का पातक लगता है; ९ मास के बाद सुने तो केवल स्नानमात्र से शुद्धि होती है। १० दिन के बाद देशांतर में सपिण्ड का मरना ४५ दिन तक सुने तो सायंकाल तारा देखने तक और रात को सुने तो तीन दिन का पातक लगता है, उसके बाद ६ महीने तक एक दिन का और उसके बाद वर्ष दिन तक यदि दिन को सुने तो सूर्योदय तक पातक रहता है; साल भर के बाद सुने तो खाली स्नानमात्र से शुद्धि होती है। यह सब अतिक्रांताशौच चारों जातियों के लिए समान है, एक गोत्र का जो जन्म मरण सम्बन्धी अतिक्रान्ताशौच है वह पति और पत्नी दोनों को बराबर लगता है। जो दूसरे गोत्र के मामा और बहिन आदि हैं उनका अशौच पत्नी की तरफ का हो तो पत्नी और पति की तरफ का हो तो पति माने।

देशान्तरनिर्णय:—ब्राह्मण के लिए २० योजन से ऊपर, क्षत्रिय के लिए २४ योजन के ऊपर, वैश्य और सच्छूद्र के लिए तीस योजन के ऊपर और असच्छूद्र के लिए ६० योजन के ऊपर देशान्तर समझना चाहिए।

अथाशौचसम्पातेनिर्णय:—यदि १० दिन के अशौच के भीतर पांच दिन का या उससे कम का दूसरा अशौच पड़ जाय तो पहिले ही अशौच के साथ यह भी छूट जाता है, १। दिन ३ दिन आदि के जो छोटे सूतक या पातक हैं उनमें दूसरा १० दिनका सूतक या पातक आ जाय तो पहिले सूतक या पातक के बाकी दिन से दूसरे सूतक या पातक की शुद्धि नहीं होती। यदि अशौचदिन की अन्तिम रात्रि में १० दिन का दूसरा अशौच आ जावे तो २ दिन और अशौच बढ़ जाता है। पहिले अशौच में पड़ा हुआ दूसरा अशौच यदि पहिला अशौच बीतने के बाद मालूम हो तो यह अशौच भी पूरा मानना। दसवें दिन की रात के चौथे पहर में यदि १० दिन का दूसरा अशौच आ जावे तो ३ दिन और अशौच बढ़ जाता है। १० दिन से कम के जो अशौच हैं उनकी रात के अन्त में यदि उसी तरह के दूसरे अशौच आ जायें तो पहले के साथ इनकी भी शुद्धि हो जाती है, २ या ३ दिन नहीं बढ़ते। बढ़ा हुआ जो २ या ३ दिन का अशौच है, उसमें यदि बड़ा दूसरा अशौच आ पड़े तो उसकी शुद्धि इससे नहीं होती, बराबर का या छोटा आ जावे तो हो जाती है। सपिण्ड के अशौच से माता पिता और पति का अशौच नहीं मिटता। माता के पातक में यदि पिता का पातक आ जावे तो पहले पातक के साथ दूसरे पातक की शुद्धि हो जाती है। पिता के पातक में दसवीं रात से पहले यदि मा मर जाय तो पिता के पातक के बाद १॥ दिन और पातक माने, यदि दसवीं रात को मरे तो २ दिन का और यदि उस रात के चौथे पहर में मरे तो ३ दिन का और पातक लगता है। मां के मरने में जो १॥ दिन का ज्यादा पातक होता है उसमें पिता का एकादशाह श्राद्ध करे। यदि बाप के साथ मां सती हो जाय तो १॥ दिन का ज्यादा पातक नहीं लगता। सूतक में पातक आ जाय तो पिण्डदान करे, परन्तु पातक में सूतक पड़ जाय तो जातकर्मादि शुभकर्म पातक छूटने पर ही करें। जननाशौच में मृताशौच या मृताशौच में जननाशौच हो जाय, तो मृताशौच से ही शुद्धि होती है। जिसने अपने जीते जी जीवित क्रिया करली है वह वानप्रस्थ, संन्यासी, पतित (जो जाति से निकाला गया है) इनको कोई पातक नहीं लगता और न इनका किसी को।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(१) वैशाख मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१	७।३४	९।२९	११।४३	१४।५	१६।२५	१८।४५	२१।७	२३।२७	१।३१	३।१३	४।३९	६।१
२	७।३०	९।२५	११।३९	१४।१	१६।२१	१८।४१	२१।३	२३।२३	१।२७	३।९	४।३५	५।५७
३	७।२६	९।२१	११।३५	१३।५७	१६।१७	१८।३७	२०।५९	२३।१९	१।२३	३।५	४।३१	५।५३
४	७।२२	९।१७	११।३१	१३।५३	१६।१३	१८।३३	२०।५५	२३।१५	१।१९	३।१	४।२७	५।४९
५	७।१८	९।१३	११।२७	१३।४९	१६।९	१८।२९	२०।५१	२३।११	१।१५	२।५७	४।२३	५।४५
६	७।१४	९।९	११।२३	१३।४५	१६।५	१८।२५	२०।४७	२३।७	१।११	२।५३	४।१९	५।४१
७	७।१०	९।५	११।१९	१३।४१	१६।१	१८।२१	२०।४३	२३।३	१।७	२।४९	४।१५	५।३७
८	७।६	९।१	११।१५	१३।३७	१५।५७	१८।१७	२०।३९	२२।५९	१।३	२।४५	४।११	५।३३
९	७।२	८।५७	११।११	१३।३३	१५।५३	१८।१३	२०।३५	२२।५५	०।५९	२।४१	४।७	५।२९
१०	६।५८	८।५३	११।७	१३।२९	१५।४९	१८।९	२०।३१	२२।५१	०।५५	२।३७	४।३	५।२५
११	६।५४	८।४९	११।३	१३।२५	१५।४५	१८।५	२०।२७	२२।४७	०।५१	२।३३	३।५९	५।२१
१२	६।५०	८।४५	१०।५९	१३।२१	१५।४१	१८।१	२०।२३	२२।४३	०।४७	२।२९	३।५५	५।१७
१३	६।४६	८।४१	१०।५५	१३।१७	१५।३७	१७।५७	२०।१९	२२।३९	०।४३	२।२५	३।५१	५।१३
१४	६।४२	८।३७	१०।५१	१३।१३	१५।३३	१७।५३	२०।१५	२२।३५	०।३९	२।२१	३।४७	५।९
१५	६।३८	८।३३	१०।४७	१३।९	१५।२९	१७।४९	२०।११	२२।३१	०।३५	२।१७	३।४३	५।५
१६	६।३४	८।२९	१०।४३	१३।५	१५।२५	१७।४५	२०।७	२२।२७	०।३१	२।१३	३।३९	५।१
१७	६।३०	८।२५	१०।३९	१३।१	१५।२१	१७।४१	२०।३	२२।२३	०।२७	२।९	३।३५	४।५७
१८	६।२६	८।२१	१०।३५	१२।५७	१५।१७	१७।३७	१९।५९	२२।१९	०।२३	२।५	३।३१	४।५३
१९	६।२२	८।१७	१०।३१	१२।५३	१५।१३	१७।३३	१९।५५	२२।१५	०।१९	२।१	३।२७	४।४९
२०	६।१८	८।१३	१०।२७	१२।४९	१५।९	१७।२९	१९।५१	२२।११	०।१५	१।५७	३।२३	४।४५
२१	६।१४	८।९	१०।२३	१२।४५	१५।५	१७।२५	१९।४७	२२।७	०।११	१।५३	३।१९	४।४१
२२	६।१०	८।५	१०।१९	१२।४१	१५।१	१७।२१	१९।४३	२२।३	०।७	१।४९	३।१५	४।३७
२३	६।६	८।१	१०।१५	१२।३७	१४।५७	१७।१७	१९।३९	२१।५९	०।३	१।४५	३।११	४।३३
२४	६।२	७।५७	१०।११	१२।३३	१४।५३	१७।१३	१९।३५	२१।५५	२३।५९	१।४१	३।७	४।२९
२५	५।५८	७।५३	१०।७	१२।२९	१४।४९	१७।९	१९।३१	२१।५१	२३।५५	१।३७	३।३	४।२५
२६	५।५४	७।४९	१०।३	१२।२५	१४।४५	१७।५	१९।२७	२१।४७	२३।५१	१।३३	२।५९	४।२१
२७	५।५०	७।४५	९।५९	१२।२१	१४।४१	१७।१	१९।२३	२१।४३	२३।४७	१।२९	२।५५	४।१७
२८	५।४६	७।४१	९।५५	१२।१७	१४।३७	१६।५७	१९।१९	२१।३९	२३।४३	१।२५	२।५१	४।१३
२९	५।४२	७।३७	९।५१	१२।१३	१४।३३	१६।५३	१९।१५	२१।३५	२३।३९	१।२१	२।४७	४।९
३०	५।३८	७।३३	९।४७	१२।९	१४।२९	१६।४९	१९।११	२१।३१	२३।३५	१।१७	२।४३	४।५
३१	५।३४	७।२९	९।४३	१२।५	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२७	२३।३१	१।१३	२।३९	४।१

(२) ज्येष्ठ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	७।२८	९।४३	१२।४	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२६	२३।३०	१।१२	२।३८	४।१	५।३४
२	७।२४	९।३९	१२।०	१४।२१	१६।४१	१९।३	२१।२२	२३।२६	१।८	२।३४	३।५७	५।३०
३	७।२०	९।३५	११।५६	१४।१७	१६।३७	१८।५९	२१।१८	२३।२२	१।४	२।३०	३।५३	५।२६
४	७।१६	९।३१	११।५२	१४।१३	१६।३३	१८।५५	२१।१४	२३।१८	१।०	२।२६	३।४९	५।२२
५	७।१२	९।२७	११।४८	१४।९	१६।२९	१८।५१	२१।१०	२३।१४	०।५६	२।२२	३।४५	५।१८
६	७।८	९।२३	११।४४	१४।५	१६।२५	१८।४७	२१।६	२३।१०	०।५२	२।१८	३।४१	५।१४
७	७।४	९।१९	११।४०	१४।१	१६।२१	१८।४३	२१।२	२३।६	०।४८	२।१४	३।३७	५।१०
८	७।०	९।१५	११।३६	१३।५७	१६।१७	१८।३९	२०।५८	२३।२	०।४४	२।१०	३।३३	५।६
९	६।५६	९।११	११।३२	१३।५३	१६।१३	१८।३५	२०।५४	२२।५८	०।४०	२।६	३।२९	५।२
१०	६।५२	९।७	११।२८	१३।४९	१६।९	१८।३१	२०।५०	२२।५४	०।३६	२।२	३।२५	४।५८
११	६।४७	९।२	११।२३	१३।४४	१६।४	१८।२६	२०।४५	२२।४९	०।३१	१।५७	३।२०	४।५३
१२	६।४३	८।५८	११।१९	१३।४०	१६।०	१८।२२	२०।४१	२२।४५	०।२७	१।५३	३।१६	४।४९
१३	६।३९	८।५४	११।१५	१३।३६	१५।५६	१८।१८	२०।३७	२२।४१	०।२३	१।४९	३।१२	४।४५
१४	६।३५	८।५०	११।११	१३।३२	१५।५२	१८।१४	२०।३३	२२।३७	०।१९	१।४५	३।८	४।४१
१५	६।३१	८।४६	११।७	१३।२८	१५।४८	१८।१०	२०।२९	२२।३३	०।१५	१।४१	३।४	४।३७
१६	६।२७	८।४२	११।३	१३।२४	१५।४४	१८।६	२०।२५	२२।२९	०।११	१।३७	३।०	४।३३
१७	६।२३	८।३८	१०।५९	१३।२०	१५।४०	१८।२	२०।२१	२२।२५	०।७	१।३३	२।५६	४।२९
१८	६।१९	८।३४	१०।५५	१३।१६	१५।३६	१७।५८	२०।१७	२२।२१	०।३	१।२९	२।५२	४।२५
१९	६।१५	८।३०	१०।५१	१३।१२	१५।३२	१७।५४	२०।१३	२२।१७	२३।५९	१।२५	२।४८	४।२१
२०	६।११	८।२६	१०।४७	१३।८	१५।२८	१७।५०	२०।९	२२।१३	२३।५५	१।२१	२।४४	४।१७
२१	६।६	८।२१	१०।४२	१३।३	१५।२३	१७।४५	२०।४	२२।८	२३।५०	१।१६	२।३९	४।१२
२२	६।२	८।१७	१०।३८	१२।५९	१५।१९	१७।४१	२०।०	२२।४	२३।४६	१।१२	२।३५	४।८
२३	५।५८	८।१३	१०।३४	१२।५५	१५।१५	१७।३७	१९।५६	२२।०	२३।४२	१।८	२।३१	४।४
२४	५।५४	८।९	१०।३०	१२।५१	१५।११	१७।३३	१९।५२	२१।५६	२३।३८	१।४	२।२७	४।०
२५	५।५०	८।५	१०।२६	१२।४७	१५।७	१७।२९	१९।४८	२१।५२	२३।३४	१।०	२।२३	३।५६
२६	५।४६	८।१	१०।२२	१२।४३	१५।३	१७।२५	१९।४४	२१।४८	२३।३०	०।५६	२।१९	३।५२
२७	५।४२	७।५७	१०।१८	१२।३९	१४।५९	१७।२१	१९।४०	२१।४४	२३।२६	०।५२	२।१५	३।४८
२८	५।३८	७।५३	१०।१४	१२।३५	१४।५५	१७।१७	१९।३६	२१।४०	२३।२२	०।४८	२।११	३।४४
२९	५।३४	७।४९	१०।१०	१२।३१	१४।५१	१७।१३	१९।३२	२१।३६	२३।१८	०।४४	२।७	३।४०
३०	५।३०	७।४५	१०।६	१२।२७	१४।४७	१७।९	१९।२८	२१।३२	२३।१४	०।४०	२।३	३।३६
३१	५।२६	७।४१	१०।२	१२।२३	१४।४३	१७।५	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५९	३।३२

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(३) आषाढ़ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्र्योत्तर घं० मि०

तारीख	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	७।४०	१०।२	१२।२२	१४।४२	१७।४	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५८	३।३२	५।२६
२	७।३६	९।५८	१२।१८	१४।३८	१७।०	१९।२०	२१।२४	२३।६	०।३२	१।५४	३।२८	५।२२
३	७।३२	९।५४	१२।१४	१४।३४	१६।५६	१९।१६	२१।२०	२३।२	०।२८	१।५०	३।२४	५।१८
४	७।२८	९।५०	१२।१०	१४।३०	१६।५२	१९।१२	२१।१६	२२।५८	०।२४	१।४६	३।२०	५।१४
५	७।२४	९।४६	१२।६	१४।२६	१६।४८	१९।८	२१।१२	२२।५४	०।२०	१।४२	३।१६	५।१०
६	७।२०	९।४२	१२।२	१४।२२	१६।४४	१९।४	२१।८	२२।५०	०।१६	१।३८	३।१२	५।६
७	७।१६	९।३८	११।५८	१४।१८	१६।४०	१९।०	२१।४	२२।४६	०।१२	१।३४	३।८	५।२
८	७।१२	९।३४	११।५४	१४।१४	१६।३६	१८।५६	२१।०	२२।४२	०।८	१।३०	३।४	४।५८
९	७।८	९।३०	११।५०	१४।१०	१६।३२	१८।५२	२०।५६	२२।३८	०।४	१।२६	३।०	४।५४
१०	७।४	९।२६	११।४६	१४।६	१६।२८	१८।४८	२०।५२	२२।३४	०।०	१।२२	२।५६	४।५०
११	७।०	९।२२	११।४२	१४।२	१६।२४	१८।४४	२०।४८	२२।३०	२३।५६	१।१८	२।५२	४।४६
१२	६।५७	९।१८	११।३९	१३।५९	१६।२१	१८।४१	२०।४५	२२।२७	२३।५३	१।१५	२।४९	४।४३
१३	६।५३	९।१५	११।३५	१३।५५	१६।१७	१८।३७	२०।४१	२२।२३	२३।४९	१।११	२।४५	४।३९
१४	६।४९	९।११	११।३१	१३।५१	१६।१३	१८।३३	२०।३७	२२।१९	२३।४५	१।७	२।४१	४।३५
१५	६।४५	९।७	११।२७	१३।४७	१६।९	१८।२९	२०।३३	२२।१५	२३।४१	१।३	२।३७	४।३१
१६	६।४१	९।३	११।२३	१३।४३	१६।५	१८।२५	२०।२९	२२।११	२३।३७	०।५९	२।३३	४।२७
१७	६।३७	८।५९	११।१९	१३।३९	१६।१	१८।२१	२०।२५	२२।७	२३।३३	०।५५	२।२९	४।२३
१८	६।३३	८।५५	११।१५	१३।३५	१५।५७	१८।१७	२०।२१	२२।३	२३।२९	०।५१	२।२५	४।१९
१९	६।२९	८।५१	११।११	१३।३१	१५।५३	१८।१३	२०।१७	२१।५९	२३।२५	०।४७	२।२१	४।१५
२०	६।२५	८।४७	११।७	१३।२७	१५।४९	१८।९	२०।१३	२१।५५	२३।२१	०।४३	२।१७	४।११
२१	६।२१	८।४३	११।३	१३।२३	१५।४५	१८।५	२०।९	२१।५१	२३।१७	०।३९	२।१३	४।७
२२	६।१८	८।४०	११।०	१३।२०	१५।४२	१८।२	२०।६	२१।४८	२३।१४	०।३६	२।१०	४।४
२३	६।१४	८।३६	१०।५६	१३।१६	१५।३८	१७।५८	२०।२	२१।४४	२३।१०	०।३२	२।६	४।०
२४	६।१०	८।३२	१०।५२	१३।१२	१५।३४	१७।५४	१९।५८	२१।४०	२३।६	०।२८	२।२	३।५६
२५	६।६	८।२८	१०।४८	१३।८	१५।३०	१७।५०	१९।५४	२१।३६	२३।२	०।२४	१।५८	३।५२
२६	६।२	८।२४	१०।४४	१३।४	१५।२६	१७।४६	१९।५०	२१।३२	२२।५८	०।२०	१।५४	३।४८
२७	५।५८	८।२०	१०।४०	१३।०	१५।२२	१७।४२	१९।४६	२१।२८	२२।५४	०।१६	१।५०	३।४४
२८	५।५४	८।१६	१०।३६	१२।५६	१५।१८	१७।३८	१९।४२	२१।२४	२२।५०	०।१२	१।४६	३।४०
२९	५।५०	८।१२	१०।३२	१२।५२	१५।१४	१७।३४	१९।३८	२१।२०	२२।४६	०।८	१।४२	३।३६
३०	५।४६	८।८	१०।२८	१२।४८	१५।१०	१७।३०	१९।३४	२१।१६	२२।४२	०।४	१।३८	३।३२
३१	५।४२	८।४	१०।२४	१२।४४	१५।६	१७।२६	१९।३०	२१।१२	२२।३८	०।०	१।३४	३।२८
३२	५।३८	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।३०	३।२४

(४) श्रावण मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्र्योत्तर घं० मि०

तारीख	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।२९	३।२४	५।३८
२	७।५५	१०।१५	१२।३५	१४।५७	१७।१७	१९।२१	२१।३	२२।२९	२३।५१	१।२४	३।१९	५।३३
३	७।५१	१०।११	१२।३१	१४।५३	१७।१३	१९।१७	२०।५९	२२।२५	२३।४७	१।२०	३।१५	५।२९
४	७।४७	१०।७	१२।२७	१४।४९	१७।९	१९।१३	२०।५५	२२।२१	२३।४३	१।१६	३।११	५।२५
५	७।४३	१०।३	१२।२३	१४।४५	१७।५	१९।९	२०।५१	२२।१७	२३।३९	१।१२	३।७	५।२१
६	७।३९	९।५९	१२।१९	१४।४१	१७।१	१९।५	२०।४७	२२।१३	२३।३५	१।८	३।३	५।१७
७	७।३५	९।५५	१२।१५	१४।३७	१६।५७	१९।१	२०।४३	२२।९	२३।३१	१।४	२।५९	५।१३
८	७।३०	९।५०	१२।१०	१४।३२	१६।५२	१८।५६	२०।३८	२२।४	२३।२६	०।५९	२।५४	५।८
९	७।२६	९।४६	१२।६	१४।२८	१६।४८	१८।५२	२०।३४	२२।०	२३।२२	०।५५	२।५०	५।४
१०	७।२२	९।४२	१२।२	१४।२४	१६।४४	१८।४८	२०।३०	२१।५६	२३।१८	०।५१	२।४६	५।०
११	७।१८	९।३८	११।५८	१४।२०	१६।४०	१८।४४	२०।२६	२१।५२	२३।१४	०।४७	२।४२	४।५६
१२	७।१४	९।३४	११।५४	१४।१६	१६।३६	१८।४०	२०।२२	२१।४८	२३।१०	०।४३	२।३८	४।५२
१३	७।१०	९।३०	११।५०	१४।१२	१६।३२	१८।३६	२०।१८	२१।४४	२३।६	०।३९	२।३४	४।४८
१४	७।६	९।२६	११।४६	१४।८	१६।२८	१८।३२	२०।१४	२१।४०	२३।२	०।३५	२।३०	४।४४
१५	७।२	९।२२	११।४२	१४।४	१६।२४	१८।२८	२०।१०	२१।३६	२२।५८	०।३१	२।२६	४।४०
१६	६।५७	९।१७	११।३७	१३।५९	१६।१९	१८।२३	२०।५	२१।३१	२२।५३	०।२६	२।२१	४।३५
१७	६।५३	९।१३	११।३३	१३।५५	१६।१५	१८।१९	२०।१	२१।२७	२२।४९	०।२२	२।१७	४।३१
१८	६।४९	९।९	११।२९	१३।५१	१६।११	१८।१५	१९।५७	२१।२३	२२।४५	०।१८	२।१३	४।२७
१९	६।४५	९।५	११।२५	१३।४७	१६।७	१८।११	१९।५३	२१।१९	२२।४१	०।१४	२।९	४।२३
२०	६।४१	९।१	११।२१	१३।४३	१६।३	१८।७	१९।४९	२१।१५	२२।३७	०।१०	२।५	४।१९
२१	६।३७	८।५७	११।१७	१३।३९	१५।५९	१८।३	१९।४५	२१।११	२२।३३	०।६	२।१	४।१५
२२	६।३३	८।५३	११।१३	१३।३५	१५।५५	१७।५९	१९।४१	२१।७	२२।२९	०।२	१।५७	४।११
२३	६।२९	८।४९	११।९	१३।३१	१५।५१	१७।५५	१९।३७	२१।३	२२।२५	२३।५८	१।५३	४।७
२४	६।२४	८।४४	११।४	१३।२६	१५।४६	१७।५०	१९।३२	२०।५८	२२।२०	२३।५३	१।४८	४।२
२५	६।२०	८।४०	११।०	१३।२२	१५।४२	१७।४६	१९।२८	२०।५४	२२।१६	२३।४९	१।४४	३।५८
२६	६।१६	८।३६	१०।५६	१३।१८	१५।३८	१७।४२	१९।२४	२०।५०	२२।१२	२३।४५	१।४०	३।५४
२७	६।१२	८।३२	१०।५२	१३।१४	१५।३४	१७।३८	१९।२०	२०।४६	२२।८	२३।४१	१।३६	३।५०
२८	६।८	८।२८	१०।४८	१३।१०	१५।३०	१७।३४	१९।१६	२०।४२	२२।४	२३।३७	१।३२	३।४६
२९	६।४	८।२४	१०।४४	१३।६	१५।२६	१७।३०	१९।१२	२०।३८	२२।०	२३।३३	१।२८	३।४२
३०	६।०	८।२०	१०।४०	१३।२	१५।२२	१७।२६	१९।८	२०।३४	२१।५६	२३।२९	१।२४	३।३८
३१	५।५६	८।१६	१०।३६	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२५	१।२०	३।३४

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(५) भाद्रपद मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथु.	कर्क
१	८।१७	१०।३७	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२६	१।२०	३।३४	५।५६
२	८।१३	१०।३३	१२।५४	१५।१४	१७।१८	१९।०	२०।२६	२१।४८	२३।२२	१।१६	३।३०	५।५२
३	८।९	१०।२९	१२।५०	१५।१०	१७।१४	१८।५६	२०।२२	२१।४४	२३।१८	१।१२	३।२६	५।४८
४	८।५	१०।२५	१२।४६	१५।६	१७।१०	१८।५२	२०।१८	२१।४०	२३।१४	१।८	३।२२	५।४४
५	८।१	१०।२१	१२।४२	१५।२	१७।६	१८।४८	२०।१४	२१।३६	२३।१०	१।४	३।१८	५।४०
६	७।५७	१०।१७	१२।३८	१४।५८	१७।२	१८।४४	२०।१०	२१।३२	२३।६	१।०	३।१४	५।३६
७	७।५३	१०।१३	१२।३४	१४।५४	१६।५८	१८।४०	२०।६	२१।२८	२३।२	०।५६	३।१०	५।३२
८	७।४८	१०।८	१२।२९	१४।४९	१६।५३	१८।३५	२०।१	२१।२३	२२।५७	०।५१	३।५	५।२७
९	७।४४	१०।४	१२।२५	१४।४५	१६।४९	१८।३१	१९।५७	२१।१९	२२।५३	०।४७	३।१	५।२३
१०	७।४०	१०।०	१२।२१	१४।४१	१६।४५	१८।२७	१९।५३	२१।१५	२२।४९	०।४३	२।५७	५।१९
११	७।३६	९।५६	१२।१७	१४।३७	१६।४१	१८।२३	१९।४९	२१।११	२२।४५	०।३९	२।५३	५।१५
१२	७।३२	९।५२	१२।१३	१४।३३	१६।३७	१८।१९	१९।४५	२१।७	२२।४१	०।३५	२।४९	५।११
१३	७।२८	९।४८	१२।९	१४।२९	१६।३३	१८।१५	१९।४१	२१।३	२२।३७	०।३१	२।४५	५।७
१४	७।२४	९।४४	१२।५	१४।२५	१६।२९	१८।११	१९।३७	२०।५९	२२।३३	०।२७	२।४१	५।३
१५	७।१९	९।३९	१२।०	१४।२०	१६।२५	१८।६	१९।३२	२०।५४	२२।२८	०।२२	२।३६	४।५८
१६	७।१५	९।३५	११।५६	१४।१६	१६।२०	१८।२	१९।२८	२०।५०	२२।२४	०।१८	२।३२	४।५४
१७	७।११	९।३१	११।५२	१४।१२	१६।१६	१७।५८	१९।२४	२०।४६	२२।२०	०।१४	२।२८	४।५०
१८	७।७	९।२७	११।४८	१४।८	१६।१२	१७।५४	१९।२०	२०।४२	२२।१६	०।१०	२।२४	४।४६
१९	७।३	९।२३	११।४४	१४।४	१६।८	१७।५०	१९।१६	२०।३८	२२।१२	०।६	२।२०	४।४२
२०	६।५९	९।१९	११।४०	१४।०	१६।४	१७।४६	१९।१२	२०।३४	२२।८	०।२	२।१६	४।३८
२१	६।५५	९।१५	११।३६	१३।५६	१६।०	१७।४२	१९।८	२०।३०	२२।४	२३।५८	२।१२	४।३४
२२	६।५०	९।१०	११।३१	१३।५१	१५।५५	१७।३७	१९।३	२०।२५	२१।५९	२३।५३	२।७	४।२९
२३	६।४६	९।६	११।२७	१३।४७	१५।५१	१७।३३	१८।५९	२०।२१	२१।५५	२३।४९	२।३	४।२५
२४	६।४२	९।२	११।२३	१३।४३	१५।४७	१७।२९	१८।५५	२०।१७	२१।५१	२३।४५	१।५९	४।२१
२५	६।३८	८।५८	११।१९	१३।३९	१५।४३	१७।२५	१८।५१	२०।१३	२१।४७	२३।४१	१।५५	४।१७
२६	६।३४	८।५४	११।१५	१३।३५	१५।३९	१७।२१	१८।४७	२०।९	२१।४३	२३।३७	१।५१	४।१३
२७	६।३०	८।५०	११।११	१३।३१	१५।३५	१७।१७	१८।४३	२०।५	२१।३९	२३।३३	१।४७	४।९
२८	६।२६	८।४६	११।७	१३।२७	१५।३१	१७।१३	१८।३९	२०।१	२१।३५	२३।२९	१।४३	४।५
२९	६।२२	८।४२	११।३	१३।२३	१५।२७	१७।९	१८।३५	१९।५७	२१।३१	२३।२५	१।३९	४।१
३०	६।१८	८।३८	१०।५९	१३।१९	१५।२३	१७।५	१८।३१	१९।५३	२१।२७	२३।२१	१।३५	३।५७
३१	६।१४	८।३४	१०।५५	१३।१५	१५।१९	१७।१	१८।२७	१९।४९	२१।२३	२३।१७	१।३१	३।५३

(६) आश्विन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	८।३४	१०।५६	१३।१५	१५।२०	१७।२	१८।२७	१९।५०	२१।२३	२३।१८	१।३२	३।५३	६।१४
२	८।३०	१०।५२	१३।११	१५।१६	१६।५८	१८।२३	१९।४६	२१।१९	२३।१४	१।२८	३।४९	६।१०
३	८।२६	१०।४८	१३।७	१५।१२	१६।५४	१८।१९	१९।४२	२१।१५	२३।१०	१।२४	३।४५	६।६
४	८।२२	१०।४४	१३।३	१५।८	१६।५०	१८।१५	१९।३८	२१।११	२३।६	१।२०	३।४१	६।२
५	८।१८	१०।४०	१२।५९	१५।४	१६।४६	१८।११	१९।३४	२१।७	२३।२	१।१६	३।३७	५।५८
६	८।१४	१०।३६	१२।५५	१५।०	१६।४२	१८।७	१९।३०	२१।३	२२।५८	१।१२	३।३३	५।५४
७	८।१०	१०।३२	१२।५१	१४।५६	१६।३८	१८।३	१९।२६	२०।५९	२२।५४	१।८	३।२९	५।५०
८	८।६	१०।२८	१२।४७	१४।५२	१६।३४	१७।५९	१९।२२	२०।५५	२२।५०	१।४	३।२५	५।४६
९	८।२	१०।२४	१२।४३	१४।४८	१६।३०	१७।५५	१९।१८	२०।५१	२२।४६	१।०	३।२१	५।४२
१०	७।५८	१०।२०	१२।३९	१४।४४	१६।२६	१७।५१	१९।१४	२०।४७	२२।४२	०।५६	३।१७	५।३८
११	७।५४	१०।१६	१२।३५	१४।४०	१६।२२	१७।४७	१९।१०	२०।४३	२२।३८	०।५२	३।१३	५।३४
१२	७।५०	१०।१२	१२।३१	१४।३६	१६।१८	१७।४३	१९।६	२०।३९	२२।३४	०।४८	३।९	५।३०
१३	७।४६	१०।८	१२।२७	१४।३२	१६।१४	१७।३९	१९।२	२०।३५	२२।३०	०।४४	३।५	५।२६
१४	७।४२	१०।४	१२।२३	१४।२८	१६।१०	१७।३५	१८।५८	२०।३१	२२।२६	०।४०	३।१	५।२२
१५	७।३८	१०।०	१२।१९	१४।२४	१६।६	१७।३१	१८।५४	२०।२७	२२।२२	०।३६	२।५७	५।१८
१६	७।३३	९।५५	१२।१४	१४।१९	१६।१	१७।२६	१८।४९	२०।२२	२२।१७	०।३१	२।५२	५।१३
१७	७।२९	९।५१	१२।१०	१४।१५	१५।५७	१७।२२	१८।४५	२०।१८	२२।१३	०।२७	२।४८	५।९
१८	७।२५	९।४७	१२।६	१४।११	१५।५३	१७।१८	१८।४१	२०।१४	२२।९	०।२३	२।४४	५।५
१९	७।२१	९।४३	१२।२	१४।७	१५।४९	१७।१४	१८।३७	२०।१०	२२।५	०।१९	२।४०	५।१
२०	७।१७	९।३९	११।५८	१४।३	१५।४५	१७।१०	१८।३३	२०।६	२२।१	०।१५	२।३६	४।५७
२१	७।१३	९।३५	११।५४	१३।५९	१५।४१	१७।६	१८।२९	२०।२	२१।५७	०।११	२।३२	४।५३
२२	७।९	९।३१	११।५०	१३।५५	१५।३७	१७।२	१८।२५	१९।५८	२१।५३	०।७	२।२८	४।४९
२३	७।५	९।२७	११।४६	१३।५१	१५।३३	१६।५८	१८।२१	१९।५४	२१।४९	०।३	२।२४	४।४५
२४	७।१	९।२३	११।४२	१३।४७	१५।२९	१६।५४	१८।१७	१९।५०	२१।४५	२३।५९	२।२०	४।४१
२५	६।५७	९।१९	११।३८	१३।४३	१५।२५	१६।५०	१८।१३	१९।४६	२१।४१	२३।५५	२।१६	४।३७
२६	६।५३	९।१५	११।३४	१३।३९	१५।२१	१६।४६	१८।९	१९।४२	२१।३७	२३।५१	२।१२	४।३३
२७	६।४९	९।११	११।३०	१३।३५	१५।१७	१६।४२	१८।५	१९।३८	२१।३३	२३।४७	२।८	४।२९
२८	६।४५	९।७	११।२६	१३।३१	१५।१३	१६।३८	१८।१	१९।३४	२१।२९	२३।४३	२।४	४।२५
२९	६।४१	९।३	११।२२	१३।२७	१५।९	१६।३४	१७।५७	१९।३०	२१।२५	२३।३९	२।०	४।२१
३०	६।३७	८।५९	११।१८	१३।२३	१५।५	१६।३०	१७।५३	१९।२६	२१।२१	२३।३५	१।५६	४।१७
३१	६।३३	८।५५	११।१४	१३।१९	१५।१	१६।२६	१७।४९	१९।२२	२१।१७	२३।३१	१।५२	४।१३

 सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(७) कार्तिक मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	८।५६	११।१५	१३।२०	१५।२	१६।२७	१७।५०	१९।२३	२१।१८	२३।३२	१।५३	४।१४	६।३४
२	८।५२	११।११	१३।१६	१४।५८	१६।२३	१७।४६	१९।१९	२१।१४	२३।२८	१।४९	४।१०	६।३०
३	८।४८	११।७	१३।१२	१४।५४	१६।१९	१७।४२	१९।१५	२१।१०	२३।२४	१।४५	४।६	६।२६
४	८।४४	११।३	१३।८	१४।५०	१६।१५	१७।३८	१९।११	२१।६	२३।२०	१।४१	४।२	६।२२
५	८।४०	१०।५९	१३।४	१४।४६	१६।११	१७।३४	१९।७	२१।२	२३।१६	१।३७	३।५८	६।१८
६	८।३५	१०।५४	१२।५९	१४।४१	१६।६	१७।२९	१९।२	२०।५७	२३।११	१।३२	३।५३	६।१३
७	८।३१	१०।५०	१२।५५	१४।३७	१६।२	१७।२५	१८।५८	२०।५३	२३।७	१।२८	३।४९	६।९
८	८।२७	१०।४६	१२।५१	१४।३३	१५।५८	१७।२१	१८।५४	२०।४९	२३।३	१।२४	३।४५	६।५
९	८।२३	१०।४२	१२।४७	१४।२९	१५।५४	१७।१७	१८।५०	२०।४५	२२।५९	१।२०	३।४१	६।१
१०	८।१९	१०।३८	१२।४३	१४।२५	१५।५०	१७।१३	१८।४६	२०।४१	२२।५५	१।१६	३।३७	५।५७
११	८।१५	१०।३४	१२।३९	१४।२१	१५।४६	१७।९	१८।४२	२०।३७	२२।५१	१।१२	३।३३	५।५३
१२	८।१०	१०।२९	१२।३४	१४।१६	१५।४१	१७।४	१८।३७	२०।३२	२२।४६	१।७	३।२८	५।४८
१३	८।६	१०।२५	१२।३०	१४।१२	१५।३७	१७।०	१८।३३	२०।२८	२२।४२	१।३	३।२४	५।४४
१४	८।२	१०।२१	१२।२६	१४।८	१५।३३	१६।५६	१८।२९	२०।२४	२२।३८	०।५९	३।२०	५।४०
१५	७।५८	१०।१७	१२।२२	१४।४	१५।२९	१६।५२	१८।२५	२०।२०	२२।३४	०।५५	३।१६	५।३६
१६	७।५४	१०।१३	१२।१८	१४।०	१५।२५	१६।४८	१८।२१	२०।१६	२२।३०	०।५१	३।१२	५।३२
१७	७।५०	१०।९	१२।१४	१३।५६	१५।२१	१६।४४	१८।१७	२०।१२	२२।२६	०।४७	३।८	५।२८
१८	७।४५	१०।४	१२।९	१३।५१	१५।१६	१६।३९	१८।१२	२०।७	२२।२१	०।४२	३।३	५।२३
१९	७।४१	१०।०	१२।५	१३।४७	१५।१२	१६।३५	१८।८	२०।३	२२।१७	०।३८	२।५९	५।१९
२०	७।३७	९।५६	१२।१	१३।४३	१५।८	१६।३१	१८।४	१९।५९	२२।१३	०।३४	२।५५	५।१५
२१	७।३३	९।५२	११।५७	१३।३९	१५।४	१६।२७	१८।०	१९।५५	२२।९	०।३०	२।५१	५।११
२२	७।२९	९।४८	११।५३	१३।३५	१५।०	१६।२३	१७।५६	१९।५१	२२।५	०।२६	२।४७	५।७
२३	७।२५	९।४४	११।४९	१३।३१	१४।५६	१६।१९	१७।५२	१९।४७	२२।१	०।२२	२।४३	५।३
२४	७।२०	९।३९	११।४४	१३।२६	१४।५१	१६।१४	१७।४७	१९।४२	२१।५६	०।१७	२।३८	४।५८
२५	७।१६	९।३५	११।४०	१३।२२	१४।४७	१६।१०	१७।४३	१९।३८	२१।५२	०।१३	२।३४	४।५४
२६	७।१२	९।३१	११।३६	१३।१८	१४।४३	१६।६	१७।३९	१९।३४	२१।४८	०।९	२।३०	४।५०
२७	७।८	९।२७	११।३२	१३।१४	१४।३९	१६।२	१७।३५	१९।३०	२१।४४	०।५	२।२६	४।४६
२८	७।४	९।२३	११।२८	१३।१०	१४।३५	१५।५८	१७।३१	१९।२६	२१।४०	०।१	२।२२	४।४२
२९	७।०	९।१९	११।२४	१३।६	१४।३१	१५।५४	१७।२७	१९।२२	२१।३६	२३।५७	२।१८	४।३८
३०	६।५६	९।१५	११।२०	१३।२	१४।२७	१५।५०	१७।२३	१९।१८	२१।३२	२३।५३	२।१४	४।३४

(८) मार्गशीर्ष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	९।१८	११।२२	१३।४	१४।३०	१५।५२	१७।२५	१९।२०	२१।३४	२३।५६	२।१६	४।३६	६।५८
२	९।१४	११।१८	१३।०	१४।२६	१५।४८	१७।२१	१९।१६	२१।३०	२३।५२	२।१२	४।३२	६।५४
३	९।१०	११।१४	१२।५६	१४।२२	१५।४४	१७।१७	१९।१२	२१।२६	२३।४८	२।८	४।२८	६।५०
४	९।६	११।१०	१२।५२	१४।१८	१५।४०	१७।१३	१९।८	२१।२२	२३।४४	२।४	४।२४	६।४६
५	९।१	११।५	१२।४७	१४।१३	१५।३५	१७।८	१९।३	२१।१७	२३।३९	१।५९	४।१९	६।४१
६	८।५७	११।१	१२।४३	१४।९	१५।३१	१७।४	१८।५९	२१।१३	२३।३५	१।५५	४।१५	६।३७
७	८।५३	१०।५७	१२।३९	१४।५	१५।२७	१७।०	१८।५५	२१।९	२३।३१	१।५१	४।११	६।३३
८	८।४८	१०।५२	१२।३४	१४।०	१५।२२	१६।५५	१८।५०	२१।४	२३।२६	१।४६	४।६	६।२८
९	८।४४	१०।४८	१२।३०	१३।५६	१५।१८	१६।५१	१८।४६	२१।०	२३।२२	१।४२	४।२	६।२४
१०	८।४०	१०।४४	१२।२६	१३।५२	१५।१४	१६।४७	१८।४२	२०।५६	२३।१८	१।३८	३।५८	६।२०
११	८।३५	१०।३९	१२।२१	१३।४७	१५।९	१६।४२	१८।३७	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।५३	६।१५
१२	८।३१	१०।३५	१२।१७	१३।४३	१५।५	१६।३८	१८।३३	२०।४७	२३।९	१।२९	३।४९	६।११
१३	८।२७	१०।३१	१२।१३	१३।३९	१५।१	१६।३४	१८।२९	२०।४३	२३।५	१।२५	३।४५	६।७
१४	८।२२	१०।२६	१२।८	१३।३४	१४।५६	१६।२९	१८।२४	२०।३८	२३।०	१।२०	३।४०	६।२
१५	८।१८	१०।२२	१२।४	१३।३०	१४।५२	१६।२५	१८।२०	२०।३४	२२।५६	१।१६	३।३६	५।५८
१६	८।१४	१०।१८	१२।०	१३।२६	१४।४८	१६।२१	१८।१६	२०।३०	२२।५२	१।१२	३।३२	५।५४
१७	८।९	१०।१३	११।५५	१३।२१	१४।४३	१६।१६	१८।११	२०।२५	२२।४७	१।७	३।२७	५।४९
१८	८।५	१०।९	११।५१	१३।१७	१४।३९	१६।१२	१८।७	२०।२१	२२।४३	१।३	३।२३	५।४५
१९	८।१	१०।५	११।४७	१३।१३	१४।३५	१६।८	१८।३	२०।१७	२२।३९	०।५९	३।१९	५।४१
२०	७।५७	१०।१	११।४३	१३।९	१४।३१	१६।४	१७।५९	२०।१३	२२।३५	०।५५	३।१५	५।३७
२१	७।५२	९।५६	११।३८	१३।४	१४।२६	१५।५९	१७।५४	२०।८	२२।३०	०।५०	३।१०	५।३२
२२	७।४८	९।५२	११।३४	१३।०	१४।२२	१५।५५	१७।५०	२०।४	२२।२६	०।४६	३।६	५।२८
२३	७।४४	९।४८	११।३०	१२।५६	१४।१८	१५।५१	१७।४६	२०।०	२२।२२	०।४२	३।२	५।२४
२४	७।३९	९।४३	११।२५	१२।५१	१४।१३	१५।४६	१७।४१	१९।५५	२२।१७	०।३७	२।५७	५।१९
२५	७।३५	९।३९	११।२१	१२।४७	१४।९	१५।४२	१७।३७	१९।५१	२२।१३	०।३३	२।५३	५।१५
२६	७।३१	९।३५	११।१७	१२।४३	१४।५	१५।३८	१७।३३	१९।४७	२२।९	०।२९	२।४९	५।११
२७	७।२६	९।३०	११।१२	१२।३८	१४।०	१५।३३	१७।२८	१९।४२	२२।४	०।२४	२।४४	५।६
२८	७।२२	९।२६	११।८	१२।३४	१३।५६	१५।२९	१७।२४	१९।३८	२२।०	०।२०	२।४०	५।२
२९	७।१८	९।२२	११।४	१२।३०	१३।५२	१५।२५	१७।२०	१९।३४	२१।५६	०।१६	२।३६	४।५८

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(९) पौष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चि.
१	९।२३	११।१५	१२।३१	१३।५३	१५।२७	१७।२१	१९।३५	२१।५७	०।१८	२।३८	४।५९	७।१९
२	९।१८	११।१०	१२।२६	१३।४८	१५।२२	१७।१६	१९।३०	२१।५२	०।१३	२।३३	४।५४	७।१४
३	९।१४	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१८	१७।१२	१९।२६	२१।४८	०।९	२।२९	४।५०	७।१०
४	९।१०	१०।५२	१२।१८	१३।४०	१५।१४	१७।८	१९।२२	२१।४४	०।५	२।२५	४।४६	७।६
५	९।६	१०।४८	१२।१४	१३।३६	१५।१०	१७।४	१९।१८	२१।४०	०।१	२।२१	४।४२	७।२
६	९।२	१०।४४	१२।१०	१३।३२	१५।६	१७।०	१९।१४	२१।३६	२३।५७	२।१७	४।३८	६।५८
७	८।५८	१०।४०	१२।६	१३।२८	१५।२	१६।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५३	२।१३	४।३४	६।५४
८	८।५४	१०।३६	१२।२	१३।२४	१४।५८	१६।५२	१९।६	२१।२८	२३।४९	२।९	४।३०	६।५०
९	८।५०	१०।३२	११।५८	१३।२०	१४।५४	१६।४८	१९।२	२१।२४	२३।४५	२।५	४।२६	६।४६
१०	८।४५	१०।२७	११।५३	१३।१५	१४।४९	१६।४३	१८।५७	२१।१९	२३।४०	२।०	४।२१	६।४१
११	८।४१	१०।२३	११।४९	१३।११	१४।४५	१६।३९	१८।५३	२१।१५	२३।३६	१।५६	४।१७	६।३७
१२	८।३७	१०।१९	११।४५	१३।७	१४।४१	१६।३५	१८।४९	२१।११	२३।३२	१।५२	४।१३	६।३३
१३	८।३३	१०।१५	११।४१	१३।३	१४।३७	१६।३१	१८।४५	२१।७	२३।२८	१।४८	४।९	६।२९
१४	८।२९	१०।११	११।३७	१२।५९	१४।३३	१६।२७	१८।४१	२१।३	२३।२४	१।४४	४।५	६।२५
१५	८।२५	१०।७	११।३३	१२।५५	१४।२९	१६।२३	१८।३७	२०।५९	२३।२०	१।४०	४।१	६।२१
१६	८।२१	१०।३	११।२९	१२।५१	१४।२५	१६।१९	१८।३३	२०।५५	२३।१६	१।३६	३।५७	६।१७
१७	८।१७	९।५९	११।२५	१२।४७	१४।२१	१६।१५	१८।२९	२०।५१	२३।१२	१।३२	३।५३	६।१३
१८	८।१३	९।५५	११।२१	१२।४३	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४७	२३।८	१।२८	३।४९	६।९
१९	८।९	९।५१	११।१७	१२।३९	१४।१३	१६।७	१८।२१	२०।४३	२३।४	१।२४	३।४५	६।५
२०	८।४	९।४६	११।१२	१२।३४	१४।८	१६।२	१८।१६	२०।३८	२२।५९	१।१९	३।४०	६।०
२१	८।०	९।४२	११।८	१२।३०	१४।४	१५।५८	१८।१२	२०।३४	२२।५५	१।१५	३।३६	५।५६
२२	७।५६	९।३८	११।४	१२।२६	१४।०	१५।५४	१८।८	२०।३०	२२।५१	१।११	३।३२	५।५२
२३	७।५२	९।३४	११।०	१२।२२	१३।५६	१५।५०	१८।४	२०।२६	२२।४७	१।७	३।२८	५।४८
२४	७।४८	९।३०	१०।५६	१२।१८	१३।५२	१५।४६	१८।०	२०।२२	२२।४३	१।३	३।२४	५।४४
२५	७।४४	९।२६	१०।५२	१२।१४	१३।४८	१५।४२	१७।५६	२०।१८	२२।३९	०।५९	३।२०	५।४०
२६	७।४०	९।२२	१०।४८	१२।१०	१३।४४	१५।३८	१७।५२	२०।१४	२२।३५	०।५५	३।१६	५।३६
२७	७।३६	९।१८	१०।४४	१२।६	१३।४०	१५।३४	१७।४८	२०।१०	२२।३१	०।५१	३।१२	५।३२
२८	७।३२	९।१४	१०।४०	१२।२	१३।३६	१५।३०	१७।४४	२०।६	२२।२७	०।४७	३।८	५।२८
२९	७।२८	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२३	०।४३	३।४	५।२४

(१०) माघ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु
१	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२२	०।४२	३।४	५।२४	७।२८
२	९।६	१०।३२	११।५४	१३।२८	१५।२२	१७।३६	१९।५८	२२।१८	०।३८	३।०	५।२०	७।२४
३	९।२	१०।२८	११।५०	१३।२४	१५।१८	१७।३२	१९।५४	२२।१४	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
४	८।५८	१०।२४	११।४६	१३।२०	१५।१४	१७।२८	१९।५०	२२।१०	०।३०	२।५२	५।१२	७।१६
५	८।५४	१०।२०	११।४२	१३।१६	१५।१०	१७।२४	१९।४६	२२।६	०।२६	२।४८	५।८	७।१२
६	८।५०	१०।१६	११।३८	१३।१२	१५।६	१७।२०	१९।४२	२२।२	०।२२	२।४४	५।४	७।८
७	८।४६	१०।१२	११।३४	१३।८	१५।२	१७।१६	१९।३८	२१।५८	०।१८	२।४०	५।०	७।४
८	८।४२	१०।८	११।३०	१३।४	१४।५८	१७।१२	१९।३४	२१।५४	०।१४	२।३६	४।५६	७।०
९	८।३८	१०।४	११।२६	१३।०	१४।५४	१७।८	१९।३०	२१।५०	०।१०	२।३२	४।५२	६।५६
१०	८।३४	१०।०	११।२२	१२।५६	१४।५०	१७।४	१९।२६	२१।४६	०।६	२।२८	४।४८	६।५२
११	८।३०	९।५६	११।१८	१२।५२	१४।४६	१७।०	१९।२२	२१।४२	०।२	२।२४	४।४४	६।४८
१२	८।२६	९।५२	११।१४	१२।४८	१४।४२	१६।५६	१९।१८	२१।३८	२३।५८	२।२०	४।४०	६।४४
१३	८।२२	९।४८	११।१०	१२।४४	१४।३८	१६।५२	१९।१४	२१।३४	२३।५४	२।१६	४।३६	६।४०
१४	८।१८	९।४४	११।६	१२।४०	१४।३४	१६।४८	१९।१०	२१।३०	२३।५०	२।१२	४।३२	६।३६
१५	८।१३	९।३९	११।१	१२।३५	१४।२९	१६।४३	१९।५	२१।२५	२३।४६	२।७	४।२७	६।३१
१६	८।९	९।३५	१०।५७	१२।३१	१४।२५	१६।३९	१९।१	२१।२१	२३।४२	२।३	४।२३	६।२७
१७	८।५	९।३१	१०।५३	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५७	२१।१७	२३।३७	१।५९	४।१९	६।२३
१८	८।१	९।२७	१०।४९	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५३	२१।१३	२३।३३	१।५५	४।१५	६।१९
१९	७।५७	९।२३	१०।४५	१२।१९	१४।१३	१६।२७	१८।४९	२१।९	२३।२९	१।५१	४।११	६।१५
२०	७।५३	९।१९	१०।४१	१२।१५	१४।९	१६।२३	१८।४५	२१।५	२३।२५	१।४७	४।७	६।११
२१	७।४९	९।१५	१०।३७	१२।११	१४।५	१६।१९	१८।४१	२१।१	२३।२१	१।४३	४।३	६।७
२२	७।४५	९।११	१०।३३	१२।७	१४।१	१६।१५	१८।३७	२०।५७	२३।१७	१।३९	३।५९	६।३
२३	७।४१	९।७	१०।२९	१२।३	१३।५७	१६।११	१८।३३	२०।५३	२३।१३	१।३५	३।५५	५।५९
२४	७।३७	९।३	१०।२५	११।५९	१३।५३	१६।७	१८।२९	२०।४९	२३।९	१।३१	३।५१	५।५५
२५	७।३३	८।५९	१०।२१	११।५५	१३।४९	१६।३	१८।२५	२०।४५	२३।५	१।२७	३।४७	५।५१
२६	७।२९	८।५५	१०।१७	११।५१	१३।४५	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२३।१	१।२३	३।४३	५।४७
२७	७।२५	८।५१	१०।१३	११।४७	१३।४१	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।५७	१।१९	३।३९	५।४३
२८	७।२१	८।४७	१०।९	११।४३	१३।३७	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।५३	१।१५	३।३५	५।३९
२९	७।१७	८।४३	१०।५	११।३९	१३।३३	१५।४७	१८।९	२०।२९	२२।४९	१।११	३।३१	५।३५
३०	७।१३	८।३९	१०।१	११।३५	१३।२९	१५।४३	१८।५	२०।२५	२२।४५	१।७	३।२७	५।३१

सूचना--मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, इस से पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(११) फाल्गुन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर
१	८।३८	१०।०	११।३४	१३।२८	१५।४२	१८।४	२०।२४	२२।४४	१।६	३।२६	५।३०	७।१२
२	८।३४	९।५६	११।३०	१३।२४	१५।३८	१८।०	२०।२०	२२।४०	१।२	३।२२	५।२६	७।८
३	८।३०	९।५२	११।२६	१३।२०	१५।३४	१७।५६	२०।१६	२२।३६	०।५८	३।१८	५।२२	७।४
४	८।२६	९।४८	११।२२	१३।१६	१५।३०	१७।५२	२०।१२	२२।३२	०।५४	३।१४	५।१८	७।०
५	८।२२	९।४४	११।१८	१३।१२	१५।२६	१७।४८	२०।८	२२।२८	०।५०	३।१०	५।१४	६।५६
६	८।१८	९।४०	११।१४	१३।८	१५।२२	१७।४४	२०।४	२२।२४	०।४६	३।६	५।१०	६।५२
७	८।१४	९।३६	११।१०	१३।४	१५।१८	१७।४०	२०।०	२२।२०	०।४२	३।२	५।६	६।४८
८	८।१०	९।३२	११।६	१३।०	१५।१४	१७।३६	१९।५६	२२।१६	०।३८	२।५८	५।२	६।४४
९	८।६	९।२८	११।२	१२।५६	१५।१०	१७।३२	१९।५२	२२।१२	०।३४	२।५४	४।५८	६।४०
१०	८।२	९।२४	१०।५८	१२।५२	१५।६	१७।२८	१९।४८	२२।८	०।३०	२।५०	४।५४	६।३६
११	७।५८	९।२०	१०।५४	१२।४८	१५।२	१७।२४	१९।४४	२२।४	०।२६	२।४६	४।५०	६।३२
१२	७।५४	९।१६	१०।५०	१२।४४	१४।५८	१७।२०	१९।४०	२२।०	०।२२	२।४२	४।४६	६।२८
१३	७।५०	९।१२	१०।४६	१२।४०	१४।५४	१७।१६	१९।३६	२१।५६	०।१८	२।३८	४।४२	६।२४
१४	७।४६	९।८	१०।४२	१२।३६	१४।५०	१७।१२	१९।३२	२१।५२	०।१४	२।३४	४।३८	६।२०
१५	७।४१	९।३	१०।३७	१२।३१	१४।४५	१७।७	१९।२७	२१।४७	०।९	२।२९	४।३३	६।१५
१६	७।३७	८।५९	१०।३३	१२।२७	१४।४१	१७।३	१९।२३	२१।४३	०।५	२।२५	४।२९	६।११
१७	७।३३	८।५५	१०।२९	१२।२३	१४।३७	१६।५९	१९।१९	२१।३९	०।१	२।२१	४।२५	६।७
१८	७।२९	८।५१	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५५	१९।१५	२१।३५	२३।५७	२।१७	४।२१	६।३
१९	७।२५	८।४७	१०।२१	१२।१५	१४।२९	१६।५१	१९।११	२१।३१	२३।५३	२।१३	४।१७	५।५९
२०	७।२१	८।४३	१०।१७	१२।११	१४।२५	१६।४७	१९।७	२१।२७	२३।४९	२।९	४।१३	५।५५
२१	७।१७	८।३९	१०।१३	१२।७	१४।२१	१६।४३	१९।३	२१।२३	२३।४५	२।५	४।९	५।५१
२२	७।१३	८।३५	१०।९	१२।३	१४।१७	१६।३९	१८।५९	२१।१९	२३।४१	२।१	४।५	५।४७
२३	७।९	८।३१	१०।५	११।५९	१४।१३	१६।३५	१८।५५	२१।१५	२३।३७	१।५७	४।१	५।४३
२४	७।५	८।२७	१०।१	११।५५	१४।९	१६।३१	१८।५१	२१।११	२३।३३	१।५३	३।५७	५।३९
२५	७।१	८।२३	९।५७	११।५१	१४।५	१६।२७	१८।४७	२१।७	२३।२९	१।४९	३।५३	५।३५
२६	६।५७	८।१९	९।५३	११।४७	१४।१	१६।२३	१८।४३	२१।३	२३।२५	१।४५	३।४९	५।३१
२७	६।५३	८।१५	९।४९	११।४३	१३।५७	१६।१९	१८।३९	२०।५९	२३।२१	१।४१	३।४५	५।२७
२८	६।४९	८।११	९।४५	११।३९	१३।५३	१६।१५	१८।३५	२०।५५	२३।१७	१।३७	३।४१	५।२३
२९	६।४५	८।७	९।४१	११।३५	१३।४९	१६।११	१८।३१	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।३७	५।१९
३०	६।४१	८।३	९।३७	११।३१	१३।४५	१६।७	१८।२७	२०।४७	२३।९	१।२९	३।३३	५।१५

(१२) चैत्र मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
१	८।२	९।३६	११।३०	१३।४४	१६।६	१८।२७	२०।४७	२३।८	१।२८	३।३२	५।१४	६।४०
२	७।५८	९।३२	११।२६	१३।४०	१६।२	१८।२३	२०।४३	२३।४	१।२४	३।२८	५।१०	६।३६
३	७।५४	९।२८	११।२२	१३।३६	१५।५८	१८।१९	२०।३९	२३।०	१।२०	३।२४	५।६	६।३२
४	७।५०	९।२४	११।१८	१३।३२	१५।५४	१८।१५	२०।३५	२२।५६	१।१६	३।२०	५।२	६।२८
५	७।४६	९।२०	११।१४	१३।२८	१५।५०	१८।११	२०।३१	२२।५२	१।१२	३।१६	४।५८	६।२४
६	७।४२	९।१६	११।१०	१३।२४	१५।४६	१८।७	२०।२७	२२।४८	१।८	३।१२	४।५४	६।२०
७	७।३८	९।१२	११।६	१३।२०	१५।४२	१८।३	२०।२३	२२।४४	१।४	३।८	४।५०	६।१६
८	७।३४	९।८	११।२	१३।१६	१५।३८	१७।५९	२०।१९	२२।४०	१।०	३।४	४।४६	६।१२
९	७।३०	९।४	१०।५८	१३।१२	१५।३४	१७।५५	२०।१५	२२।३६	०।५६	३।०	४।४२	६।८
१०	७।२५	८।५९	१०।५३	१३।७	१५।२९	१७।५०	२०।१०	२२।३१	०।५१	२।५५	४।३७	६।३
११	७।२१	८।५५	१०।४९	१३।३	१५।२५	१७।४६	२०।६	२२।२७	०।४७	२।५१	४।३३	५।५९
१२	७।१७	८।५१	१०।४५	१२।५९	१५।२१	१७।४२	२०।२	२२।२३	०।४३	२।४७	४।२९	५।५५
१३	७।१३	८।४७	१०।४१	१२।५५	१५।१७	१७।३८	१९।५८	२२।१९	०।३९	२।४३	४।२५	५।५१
१४	७।९	८।४३	१०।३७	१२।५१	१५।१३	१७।३४	१९।५४	२२।१५	०।३५	२।३९	४।२१	५।४७
१५	७।५	८।३९	१०।३३	१२।४७	१५।९	१७।३०	१९।५०	२२।११	०।३१	२।३५	४।१७	५।४३
१६	७।१	८।३५	१०।२९	१२।४३	१५।५	१७।२६	१९।४६	२२।७	०।२७	२।३१	४।१३	५।३९
१७	६।५७	८।३१	१०।२५	१२।३९	१५।१	१७।२२	१९।४२	२२।३	०।२३	२।२७	४।९	५।३५
१८	६।५३	८।२७	१०।२१	१२।३५	१४।५७	१७।१८	१९।३८	२१।५९	०।१९	२।२३	४।५	५।३१
१९	६।४९	८।२३	१०।१७	१२।३१	१४।५३	१७।१४	१९।३४	२१।५५	०।१५	२।१९	४।१	५।२७
२०	६।४४	८।१८	१०।१२	१२।२६	१४।४८	१७।९	१९।२९	२१।५०	०।१०	२।१४	३।५६	५।२२
२१	६।४०	८।१४	१०।८	१२।२२	१४।४४	१७।५	१९।२५	२१।४६	०।६	२।१०	३।५२	५।१८
२२	६।३६	८।१०	१०।४	१२।१८	१४।४०	१७।१	१९।२१	२१।४२	०।२	२।६	३।४८	५।१४
२३	६।३२	८।६	१०।०	१२।१४	१४।३६	१६।५७	१९।१७	२१।३८	२३।५८	२।२	३।४४	५।१०
२४	६।२८	८।२	९।५६	१२।१०	१४।३२	१६।५३	१९।१३	२१।३४	२३।५४	१।५८	३।४०	५।६
२५	६।२४	७।५८	९।५२	१२।६	१४।२८	१६।४९	१९।९	२१।३०	२३।५०	१।५४	३।३६	५।२
२६	६।२०	७।५४	९।४८	१२।२	१४।२४	१६।४५	१९।५	२१।२६	२३।४६	१।५०	३।३२	४।५८
२७	६।१६	७।५०	९।४४	११।५८	१४।२०	१६।४१	१९।१	२१।२२	२३।४२	१।४६	३।२८	४।५४
२८	६।१२	७।४६	९।४०	११।५४	१४।१६	१६।३७	१८।५७	२१।१८	२३।३८	१।४२	३।२४	४।५०
२९	६।८	७।४२	९।३६	११।५०	१४।१२	१६।३३	१८।५३	२१।१४	२३।३४	१।३८	३।२०	४।४६
३०	६।४	७।३८	९।३२	११।४६	१४।८	१६।२९	१८।४९	२१।१०	२३।३०	१।३४	३।१६	४।४२

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, अतः पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्नसारणी में जो घण्टे मिनट लिखे हैं वे रेलवे व्यावहारिक ढंग से लिखे गये हैं जैसे रात के १ को १ लिखा गया है और दिन के १ को १३, तथा २ को १४ एवं ३ को १५, रात के १२ को २४ (०) लिखा है। जैसे—वैशाख प्रविष्टे १० को ५ बजे शाम का लग्न देखना है तो वैशाख मास की सारणी में उस दिन १५।४९ सिंह है याने मध्याह्नोत्तर ३।४९ बजे तक सिंह लग्न खत्म होकर कन्या लग्न शुरू हो गया जिसका समाप्तिकाल १८।९ अर्थात् शाम के ६ बजकर ९ मिनट पर है। अतः मध्याह्नोत्तर ५ बजे कन्या लग्न की सन्धि में एक आध मिनट का कहीं कहीं अन्तर रहेगा।

नवांश का प्रारम्भ एवं समाप्ति लाने की विधि

जिस लग्न म नवांश काल जानना हो, उस काल का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल दोनों लग्नसारणी द्वारा निकालें। फिर लग्न के समाप्ति काल में से लग्न के प्रारम्भ काल को घटा देवें, शेष घण्टा मिनट बचेंगे। घंटा को ६० से गुणा कर उसमें मिनट भी मिला दें। इस प्रकार वह सम्पूर्ण लग्नमान के मिनट हो जावेंगे। उन मिनटों में ९ का भाग देवें, लब्धि १ नवांश के मिनट जानें। ९ का भाग देने से जो शेष बचा हो, उसको ६० से गुणा करके दुबारा फिर ९ का भाग देने पर सैकेण्ड आवेंगे। यह मिनट और सेकेंड एक नवांश का मान होगा। तुम्हें जो नवांश लेना हो, उससे गत नवांश तक की संख्या से उस एक नवांश के मान को गुणा कर जो मिनट प्राप्त हों, उन मिनटों को लग्न के प्रारम्भ काल में जोड़ने से अभीष्ट नवांश का प्रारम्भ काल आ जावेगा और इस नवांश के प्रारम्भ काल में एक नवांश का मान जोड़ देने से नवांश का समाप्ति काल आ जावेगा। निम्नलिखित उदाहरण से इसका अच्छी तरह स्पष्टीकरण हो जावेगा।

उदाहरण—वैशाख प्रविष्टे १ को मेष लग्न में सिंह के नवांश का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल निकालना है। अब ऊपर कहे हुए के अनुसार मेषारम्भकाल ६ घंटा १ मिनट को मेष समाप्तिकाल ७ घंटा ३४ मिनट में से घटाया तो १ घंटा ३३ मिनट शेष बचे। १ घंटा को ६० से गुणा किया और उसमें ३३ मिनट जोड़े तो ९३ मिनट हुए। अर्थात् मेष लग्न का कुल मान ९३ मिनट है। अब इन ९३ मिनटों को ९ का भाग देने पर १० मिनट २० सेकेण्ड एक नवांश का मान प्राप्त हुआ। अब हमें मेष लग्न में सिंह नवांश के प्रारंभकाल का ज्ञान करना है। यहाँ मेष से लेकर कर्क तक अर्थात् ४ नवांश गत हुए, अतः इस एक नवांश के मान (१० मिनट २० सैकेण्ड) को ४ से गुणा किया, तो ४१ मिनट २० सेकेण्ड हुआ। इस (४१ मिनट २० सेकेण्ड) को मेष लग्न के प्रारम्भकाल ६ घंटा १ मिनट में जोड़ा तो ६ घंटा ४२ मिनट २० सैकेण्ड मेष लग्न के सिंह नवांश का प्रारम्भकाल हुआ। इसी प्रारम्भकाल ६ घंटा ४२ मिनट २० सेकेण्ड में एक नवांश का मान १० मिनट २० सेकेण्ड (जो कि अभी पीछे ही निकाला है) जोड़ देने से मेष लग्न के सिंह नवांश का समाप्ति (अन्त) काल ६ घंटा ५२ मिनट ४० सेकेण्ड हुआ। इसी प्रकार अन्य नवांशों को भी निकालें।

विधि से सिद्ध किये गये नवांशों का प्रयोग में लाने से शास्त्रोक्त शुभफल की प्राप्ति हो सकती है। अथ चन्द्रोदयास्तज्ञानम्—तिथिप्रमाणेन हतं निशायाः प्रमाणमानं च युतं भुजाभ्याम्॥ कृष्णे सिते यास्तिथिभक्तनाड्यश्चन्द्रोदये चास्तमये च ताः स्युः ॥१॥ भावार्थ—जिस तिथि का चन्द्रोदयास्त मालूम करना हो उस तिथि की संख्या से उस दिन के रात्रिमान की घट्यादि को गुणें, शुक्लपक्ष की तिथि हो, तो उनमें २ घटी जोड़ना, यदि कृष्णपक्ष की हो तो गुणन की हुई अंक संख्या में से दो घटी निकाल देना, तदनन्तर उनमें १५ का भाग देकर दो फल घटीपलात्मक लाना, यदि शुक्लपक्ष की तिथि हो तो लब्ध घट्यादि के समय सूर्यास्त के अनन्तर चन्द्रास्त होगा, यदि कृष्ण पक्ष हो तो लब्ध पलात्मक फल को दिनमान में युक्त करने से जो जो घट्यादि होवें उतनी घटी सूर्योदय के पीछे चन्द्रोदय होगा। इस रीति से चन्द्रोदय स्थूलमान से आता है, सूक्ष्म चन्द्रोदयास्त "सर्वानन्द करण" से जानें।

अथ प्रसूतिलग्नविचारः

मेष—जन्म समय मेष लग्न हो तो माता का पूर्व या पश्चिम में शिर, उपसूतिका २ या तीन प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलीन। ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों में बचे तो १०० वर्ष जीवे।

वृष—माता का दक्षिण म शिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो अंश आई, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया, १।२८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन—माता का सिर पश्चिम में उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्रालय भोजन किया, दूध कम उतरे, ४।१०।१४।-३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवावें। यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में शिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल, छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिणभाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव के पहले मधुर एवं शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसन आदि का चिह्न, देर से रोया, ५।२५।४०।५८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों में प्रवेशसमय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह—माता का पश्चिम या पूर्व में शिर, मलीन-सा लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, ५।१३।२८।३६।४८ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन से बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्य-नारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में शिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्ध शब्द किया। घर के नैर्ऋत कोण में सूतिका स्थान, ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक है, यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी, जन्म समय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्म समय कुछ ठहर कर अर्द्ध शब्द करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका स्थान, ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में शिर, रक्त वा दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक, अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया छींक भी किया, दीर्घकेश, घरके पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक दीर्घवर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, पीत वा रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्म समय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया, और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान, २।१०।१८।३१।३८।४२।६७ इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर—माता का शिर दक्षिण में, ऊपर काला वा जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध, कसैला, भोजन, ठण्डा जल पान किया था, जन्म समय स्त्रियां २, पीछे से १ आई, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्टकारक वर्षों से बचे तो ९५ वर्ष जीवे।

कुम्भ—माता का शिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४, २ स्त्री पीछे से आईं। उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका गृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन—माता का शिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र सा अल्प भोजन, जन्म

के हाथ उनको आधी करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या को [illegible]

शान्तिहवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे।

स्मरण रहे कि अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें वही बालक का जन्मलग्न जानना, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

यथादौ पितृपरोक्षज्ञानम्—१ जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे, २ बुध शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, ३ लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो, ४ भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो, इन चार योगों में से एक योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जहां राहु शय्या तहां भंग जहां कुज होय
रविस्थान में दीप कहो शनी लोह कहि सोय॥

जन्मकुण्डली में दिशा ज्ञान—पूर्व, द्वितीय तृतीय ईशान। चतुर्थ—उत्तर। पञ्चम षष्ठ वायव्य। सप्तम पश्चिम। अष्टम नवम नैर्ऋत। दशम दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

अथ प्रसूतिस्थानात् पाकशालादिविचार:

जन्म कुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ (मैला) स्थान जानना चाहिए। दो०—लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्नप दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार॥ केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली (स्वराशिमित्रोच्च व मूल त्रिकोण राशि का) केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है। ग्रहों की दिशा—सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैर्ऋत।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्—चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तेल ज्यादा कहना यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तेल कहना, यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो, तो बहुत ही कम तेल कहना। सो०—तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्मे तब आई, तब कहि दीपक तैल नहिं। सित शनिदशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्मे तब बाम, दीपक तैल सों युक्त कहि।

लग्नाद्दीपवर्तिज्ञानम्—जन्म लग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिका—यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों, तो उसकी गणना करें अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार [illegible] लग्न के अधिक [illegible] की संख्या जोड़ें अन्यथा

[illegible] तो जानो भव सग॥ जन्म लग्न में उच्च ग्रह जो कोई के होय। [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

—माता को सिर उत्तर में, पात या मलिन वस्त्र, विचित्र सा अल्प भोजन, जन्म

के होवे उनको आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इस में भी विशेष यह ध्यान में रहने योग्य है कि यह लग्न चन्द्रान्तर्गत ग्रहलग्न के भोग्यांश से सप्तम भाव पर्यन्त होवे तो सूतिका ग्रह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो शुभग्रह हों वहां धर्मशील सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों में विधवा व दुश्चरित्रा कहे।

अथ शय्या शिर वा पाद विचार

लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिभाऽन्त्येषु पादाः। लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४।५ में दक्षिण, ६ में नैर्ऋत्य, ७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्य कोण, १०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशानकोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवा, बारहवां स्थान पाये जानना। इन स्थानों में से जिस स्थान में पाप ग्रह युक्त हो तो वहां सूतिका के पलंग का पावा फटा टूटा समझना।

अथ चिह्नज्ञानम्—षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भावे धरि ध्यान। बामें कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण॥ भानु तथा सौरी तन धन कुज कण्टक चन्द। बालक के पट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वाम कर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाहु॥ सुहृद भाव में कवि तम भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न॥ नौमें पाव भृगु बसे तनु वा चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।

बालारिष्ट

दो०-द्यूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशीजो क्षीन। कण्टकशुभखग ना वसे, वेगि ताहि यम लीन

बसे चन्द्रमा द्वादसे अष्ट भवन में पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥

लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥

लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव।

अथ काणयोगाः—तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसे त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। मार्कण्डेय तनुनाथयुत भवन बसे त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिय घर नाथ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हानि॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान॥

मूकयोगः—पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिक हि मूक कहि सोय॥ शुक्र त्रिके गुरुसिंह अज, दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।

दुःखदयोगाः—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश। जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तन मुख विस्वाबीस। पापग्रहयुत लग्न पति, परे लग्न में आय। वीर्य्य हीन नर होय सो अधिक व्याधि रुजताय॥

बन्धनयोगाः—क्रूर रहै धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसे कारागार।

उसके अंश चन्द्रमा में कम हों, तो उसकी गणना कर अन्यथा उसे नहीं जोड़े। इस प्रकार

तो जानो सुख संग॥ जन्म लग्न में उच्च ग्रह जो काहू के होय। मित्र दृष्टि तापर परे सर्व सुखी नर होय॥

क्लीव (नपुंसक) योगाः—दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीव योग तब जान। शुक्र भवन ते रिष्क षट बस क्लिव भानु॥

कुष्ठयोगाः—लग्नप बुध कुज शशि युते राहु युक्त या केतु। श्वेत कुष्ठ को योग यह बरणत गुणी सचेतु।॥ भौम भास्कर मन्दयुत रक्तकृष्ण कह कुष्ट। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट॥ जलजगंडयुत चन्द जो ग्रन्थिगंड कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो, बुध त्रिकयुत तनु नाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयी रोग भगतून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।

केमद्रुमः—आगे पीछे चन्द्र के जो न परे ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय। उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय॥

सर्पवेष्टित योगाः—यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है।

यमलजन्मयोगाः—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धन के उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हो तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिनका लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे—शनि मंगल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु समय विचार—जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब कहना। अथवा जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा लग्न राशि में आता है तब मरण कहना। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योग युक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पाप ग्रहों करके देखा जाता हो तब मरण कहना चाहिए किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इस वास्ते आयु का प्रथम विचार कर फिर मृत्यु कहे।

प्रसवकष्ट दूर—प्रसवकाल में पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातःसूर्योदय से पहिले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ॐमुक्ताः पाशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भस्थहि मांचिर मांचिर स्वाहा॥" इस मंत्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीस का यन्त्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवे तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे,। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मन्त्र तथा तन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जप करके तथा यन्त्र को लिख लिख कर चलता कर लेवे तब कष्ट को मिटाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अमावस्या की नन्दादि संज्ञा—दशांस्व घटिकाषष्टया भानुभानुप्रकीर्तिता । नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णा च तिथयः क्रमात् ।

भावार्थ—अमावस्या की साठ घड़ियों में क्रमशः बारह घड़ियां नन्दा, भद्रा जया, रिक्ता, पूर्णा संज्ञक होती हैं । यदि अमावस्या का स्पष्ट घट्यादि मान ६० घड़ी से न्यूनाधिक हो तो ५ का भाग देकर १२ घड़ियों स न्यूनाधिक जाने ।

तीस का यन्त्र

१६	५	८
२	१०	१८
१२	१४	४

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	१	क्रूरअंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन	२	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज	३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत्	४	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहा	दुःखी
सुत	५	सुतहानि	धनीपुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु	६	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री	७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहा
मृत्यु	८	अल्पायु	रोगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नाचस्व	नीच	नत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म	९	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म	१०	शूर	तेजयुत	तेजवान्	कीर्तिवान्	संपत्तिमान्	संपत्ति०	पराक्रमी	मानी	पितृहानि
ला	११	धनी	धनी	धनी	धनी	सलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय	१२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदारहा	दरिद्री	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	१	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	वन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन	२	दरिद्रा	बहुधन	वन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्त्ता
सहज	३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत	४	सपीड़ा	दुर्भगा	दुखार्त्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत	५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु	६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गणज्ञा	सधना	धनयुत
पति	७	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु	८	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म	९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोकार्त्ता
कर्म	१०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
[illegible]	११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]					

अथमातृसुखनाशयोगः—(१) पापग्रह से युक्त चन्द्रमा सातव भाव में होवे (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे, (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हों, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होव और लग्न में मंगल होवे, (५) चौथे भाव म शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो ; इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिए।

पितृनाशयोगः—(१) सूर्य मंगल दशवें वा नवमें गये हों (२) दशमेश रवि मंगल स युक्त हो (३) शत्रु राशि का मंगल १० वें हो (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें पड़ा हो, इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो ।

भ्रातृनाशयोगाः— भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संगत्रिक होय ।
जाके ऐसो योग है भ्रातृ हीन नर होय ॥

सन्तानसुखनाशयोगः

गुरु ने पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव । ऐसा योग जो लखि पर, ताके पुत्र अभाव । पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे त्रिक थान । जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोगा :—शुक्र और सूर्य सप्तम पंचम और नवम में हों तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है ।

नीचयोगाः—सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बस खग आई । भवन पाचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई ॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल । म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल । जिनके बुध भृगु राहु संग सप्तम भाव विराज । लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्याबाज ।

जारजयोग :—भानु चन्द्र तनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न । सो शिशु है परपुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न ॥ रवि कुल गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार । तीन उत्तरा जन्म में तब शिशु कहो परार ॥

अथ मातापित्रोः अरिष्टफलम्

जिस बालक की जन्म कुण्डली में सूर्य के साथ पापी ग्रह बैठे हों अथवा देखते हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ा हो तो उस बालक क जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिए । इसी प्रकार सूर्य से ४।५।८ स्थान में क्रूर ग्रह हो, शुभ कोई भी न हो तो भी पिता को कष्ट जानना । इसी प्रकार यदि चन्द्र के साथ २।१२।४।६।८ स्थान में क्रूर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ स्त्री जातक—क्रूरलग्नयुत क्रूर जो, स्वामि दृष्टि नहिं होय। सो कन्या कुल गरल है भूलि न ब्याहेउ कोय॥ जाके कुज दशवें बसे ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवें नहीं जासु॥ क्रूरयुक्त लग्नेश जो पाप ग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहैं कुज नीच॥ राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर॥ लग्न नीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज रण्डा कहें पति को तजें तमारि॥ छठे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्क। भौम आठवें भवन में सो पति करि है भंग॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सों हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दोय या तीन॥ द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसे त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम। पाप ग्रहों के बीच में लग्न होई या चन्द। सो त्रिय नाशें कुल दुवो भाषत कविकुल वृन्द॥ सप्तम भृगु जाके बसे सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृगु बसे बुध जन कहत विचारि॥

वैधव्यविषकन्यायोगा :—चौ० रविवार द्वितीया, जो होय। श्लेषा ताहि दिन में जोय॥१॥ कृतिका होय शनिश्चर वार॥ साते तिथि का करो विचार॥२॥ होय शतभिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार॥३॥ इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जानो सोय॥४॥ जन्म लग्न द्वैशुभ ग्रह होय। एक पापग्रह नभ १० में जोय॥५॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो। ता कन्या को विधवा जानो॥६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय। मन्दवार युत लीजो जोय॥७॥ परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार॥८॥ रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय॥१०॥ एसो योग लखि जो परे। तो कन्या को विधवा करे॥१०॥ दो०—धर्म सदन में भूमिसुत जन्म मदन शनि जान। सूर्य होय सुत सदन में कन्या विधवा मान॥११॥

वैधव्यविषकन्याभंगयोगा :—जन्म लग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्न पति सुभगा कन्या होय॥

काकवन्ध्यादियोगा :—ज अष्टमे काकवन्ध्या। मन्दार्कावष्टमे वन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या॥

स्त्रीणां राजयोगा :—चौपाई-केन्द्रधाम नभगा शुभ होई। नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके। मन प्रसन्न होई है सुत वाके—चन्द्रज तुंग बसें तनु जाई लाभ धन गुरु आवें धाई॥ सो तिय होय नृपति की नारी। जन विख्यात होय सुकुमारी॥ जो षट्वर्ग शुद्ध गुरु होई। शशि दृग केन्द्र भवन में होई। ऐस योग जन्म सुकुमारी॥ रानी होय सदन धनभारी॥ दोहा—कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूर युत ताको पति नृप शूर। लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौन। सुरगुरु परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन॥

स्त्रीणां पुत्रभावविचार :—पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत॥

स्त्री आदि के लिए अशुभ प्रसव मास—कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथिनी, श्रावण में गधी वा घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊंटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चे जन्में तो ६ मास में पिता वा घर वाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन को घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे कि यहां सर्वत्र सौरमास का ग्रहण है प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर व्याहृति मन्त्रों से घृताक्त श्वेत सरसों का हवन करे, बच्चा जनमें तो कार्तिक शांति करे, तो शुभ रहे।

त्रिखलजन्मफल—यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लड़का पिता को भय, धनहानि आदि कष्ट होते हैं, कृपणता छोड़कर त्रिखल शान्ति करे तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (चाँदी, सोना, ताँबा) दान करे।

बालक की दन्तोत्पत्ति फल.

बालक के जन्मते ही दांत निकले हों तो माता पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से जन्में तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकल तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शांति करे। एक मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवे में ज्येष्ठ बन्धु नष्ट, छठे में बहु भोग, ७वें में पितृसुख, ८वें में पुष्टि, ९ में धनी, १० वें में सुख, ११ वें में सुख, १२ वें में धनी।

अथैकनक्षत्रजननफलम्—वृद्ध गर्ग जी कहते है कि यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जान्वोः	पादे	स्थान
४	६		५	५	४	९	४	४	१०	घटी
पशुना	धनना	धनना	कुटिला	धनला	दयाव	कामिनी	मातृना	भ्रातृना	वैधव्यं	फलम्

कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठा	विशाखा (४ चं०)
फलम्	(१।२।३ चं०) श्वसुरहानि	२।३।४ चं०) सास नाश	ज्येष्ठनाश	देवरनाश

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथा श्लेषाद्यपादजः॥

तिथिगण्डान्त—पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की आदि की दो दो घड़ी तिथिगण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म यात्रा विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी । आश्लेषा । मघा । ज्येष्ठा । मूल । रेवती

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं. इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक माता पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाय तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र के ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए, त्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरण जन्मफल

मूल पाद फल			आश्लेषा पाद फल		
चरण		फल	चरण		फल
१	म	पितृनाश	४	म	पितृनाश
२	"	मातृनाश	३	"	मातृनाश
३	"	धननाश	२	"	धननाश
४	"	शान्ति से सुख	१	"	शान्ति से शुभ

मूलजनने वृक्षविभागफलम्

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्पे	फलम्	शिव	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पदम्	मन्त्री पदम्	विपुल लाभ	अल्प जीव	फल

अथ मूलपुरुषचक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जान्वोः	पादे	स्थान
५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६	घटी
राजा	पि म.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा	मतिमा	फलम्

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा, आ. माघ. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूलनिवासस्थानम्	पताले	भूमौ	स्वर्ग
फलम्	शुभम्	कुशलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है एक प्रकार से स्वल्प भय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातं संहरते कुलम् ॥ यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवत्। शुभग्रहसंयोगे ईषच्छुभकरं भवेत्। दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गंडातिगंडे च परिघे यमघण्टके ॥ ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्।

यथा सर्पविषश्चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते ॥
रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि ॥
बालकस्यापितृस्नाने विधैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मांगलम् ध्रुवम् ॥
विरुद्धाववबे मूले विधि रेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेमप्राप्तुभिः ॥

अथाभुक्तमूलविचारः—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र आदि की चार घटी विशेष पापी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग कर दे या आठ वर्ष, असमर्थ हो तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शांति कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः ॥

अश्विनीजातस्य फलम् —अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, तीय में सुखश्वर्य, तृतीय में मन्त्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	समय
मू० ज्ये०	मू० श्ले०	० अश्वि०	फल
पिता को भय	माता को भय	शरीर भय	

मघा फलम्—मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन विद्या लाभ होवे।

ज्येष्ठापाद फलम्—प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने आप का नाश होता है। ज्येष्ठाद्यपादजो ज्येष्ठे हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा।

रेवती पादफलम्—रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मन्त्री या मुक्त

ं ा क क ः

...था चतुर्दशी जन्मफलम्

	२	३	४	५	६	भाग
शुभ	पितृहानि	मातृहानि	मातुलहानि	कुलनष्ट	धनहानि	फल

चतुर्दशी की घड़ियों के छः भाग कर देखें कि जन्म किस भाग में है। तदनुसार फल जाने, अशुभ हो तो शान्ति करे। अमावस्याजन्मफलम्—जिसके घर सिनीवाली अमावस्या के दिन स्त्री, पशु, गौ, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूति होवे तो उसे धनहानि अपयश आदि भय होता है। कुहू अमावस्या में प्रसूति हो तो विशेष अशुभ होवे। सिनीवाली—जिस अमावस्या में चन्द्र की कलांश शेष हों, कुहू—जिसमें चन्द्र की पूर्णकला नष्ट हों।

ग्रहण व्यतिपातादि जन्मफल—व्यतिपात में जन्म हो तो अंगहानि; वैधृति में पितृ कष्ट वा दारिद्रय, सूर्य ग्रहण में जन्म हो तो व्याधि, पीड़ा, कलह, धनहानि, हो, जप, होम शान्ति कराने से कल्याण हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बालकष्टावली

प्रत्येक मंत्र को २१ बार पढ़े और बलि को ७ बार शिर पर घुमा कर यथोक्त स्थान पर मौन होकर रख आवे।

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है?	ग्रसित लक्षण	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	पूजनद्रव्य	बलिविधान व समय	स्नान पूजामार्जनमन्त्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, खेद, मन्दस्वर, कम्पन, अरुचि. अंगशोष ।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, श्वेतभात,५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ४ आटे के सतिये,	५ पूर्णपोली (सुहाली) १ पहर दिन चढ़ें पूर्व दिशा में चौरस्ते पर रखना ।	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्चरुद्रश्च स्कन्दो वैश्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥	राई,खस,आक के फल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्ब पत्र, गोघृत ।
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथपैर अकड़ना, संकोच, दांतचबाना, नेत्रखुले, नेत्ररोग, भय, कृशता ।	एक सेर चावल का आटा	कपूर लोबान, १० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलके आटे के सतिये १०, रक्तचन्दन, रक्त-पुष्प, श्वेतध्वजादीपक १०, गेहूँ के आटे के सतिये १० ।	भात, १ सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय पश्चिम म चौरास्ते पर रखना	ॐ नमश्चामुण्डाय विच्चे ह्रां ह्रीं ह्रीं हूं हूं दुष्टा ग्रहां गछन्त्वत स्थानदु दाज्ञाया स्वाहा ।	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हड़फूटन, खांसी, शिरझुकाना, श्वास, नेत्रमीलन श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा ।	एक सेर चावलका आटा		१ सेर लालभात, आधसेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा म किसी वृक्ष के नीचे रखना ।	सुनन्दनाविधानोक्त	
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्रभंग, शिरझुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा. श्यामता ।	तिलचूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेत ध्वजा ५ दीपक मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प ।	भात १सेर आटे के पूड़े आधसेर, पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना ।	सुनन्दनाविधानोक्त	लसुन, गो शृंग सांप की कांचली, नीम के पत्र, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत ।
पंचम दिन मास वर्ष में बिडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी तेज ।	एक सेर चावल का आटा	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा५, गेहूं के आटे के सतिये ।	श्वेतभात, ७ पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना ।	ॐभगवती ह्रीं ह्रीं हं हूं सुचरक्षां कुरु कुरु बलि गृह्ण गृह्ण अस्त्रं ठः ठः चामुण्ड सर्वारिचण्डिके ठः ठः स्वाहा	
षष्ठ दिन मास वर्ष में शटकारिका	ज्वर, हड़फूटन, हंसना, कभी२ रोना, मोह, मूर्छा ।	नदी के दोनों किनारों कीमिट्टी	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५ श्वेतध्वजा ।	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां, एक पहर दिन चढ़े पूर्व में चौरस्ते पर रखना ।	योगिनीविधानोक्त	कूट गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत ।
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीरकम्पन ।	चावलों का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा ।	भात, ७ पूड़ियाँ, सायंकाल पश्चिम में चौरस्ते पर मौन होकर रखना ।	बिडालिकाविधानोक्त	
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप।	जलकेदोनोंकिनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, ५ रंग की झन्डी, ५ दीपक ।	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग, छागमांस, संध्या म चौरास्ते पर रखना ।	बिडालिकाविधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, अफारा, घृणा ।	एक सेर गेहूँ का आटा	चन्दन, पुष्प ५, दीपक५, रंग की झण्डी ५ ।	भात, मत्स्य,मांस, पापड़ी,सुहाली, उत्तर में प्रातः चौरस्ते पर रखना	ॐनमो भगवते वासदेवाय कृष्णाय मंडलबलि मादाय हन्हन्हुं फट्स्वाहा	गोशृंग,लसन, सांप की कांचली, निम्बपत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल,राई, गोघृत ।
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हड़फूटन,शूल, अरुचि. वमन, खांसी, श्वास ।	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये ।	गुड़ के घी भर्ने चावल, गोघृत, सायंकाल दक्षिण चौरस्ते पर रखना	ॐनमो भगवते वैरवदेवाय हन् हुं फट् स्वाहा ।	
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर, हड़फूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता ।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत पुष्प २५, दीपक २५, सफेद झण्डी २५, आटे के सतिये ।	श्वेतभात, ७पूड़े, सुहाली ७ सायं को प्रातः दक्षिण में चौरस्ते पर रखना ।	ॐनमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्रहस्ताय ज्वल २ दुष्टग्राहान्दोन् ॐह्रीं फट् स्वाहा ।	
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांतचबाना, रोमांच, बहुरोदन, नखपीड़ा, संताप ।	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, झंडी, १३ सतिये आटे के ।	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियां ७, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण म चौरस्ते पर रखना ।	ॐनमोनारायणाय ज्वलद्धस्ताय हनहनलोपय २ मर्दय२ शोषय २ हुं२ हन २ दुष्टानां हुं हुं फट स्वाहा ।	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ नक्षत्र कष्टावली चक्रम्

यस्मिन्नृक्षे यदा नृणां रोगः संजायते तदा। तद्विष्णुपूजा कर्तव्या तत्तदीश्वरतुष्टये ॥ ऋक्षेशरूपं कनकेन कृत्वा तल्लिंगमंत्रैश्च सुगन्धपुष्पैः।
वस्त्राक्षतैर्गुग्गुलधूपदीपै नैवेद्यताम्बूलफलैश्च सम्यक्। पूजां च कृत्वा भयनाशनाय द्विजाय दद्यादतुलं धनञ्च ॥

सस्वामिक नक्षत्राणि	कष्टदिनानि चरण १	२	३	४	करे धारणम्	कष्टलक्षणानि	गन्धादिकम्	बलिद्रव्यम	होमद्रव्यम्	दानभोजनम्	जपनीयमन्त्राः	जपसंख्या
अश्विनी (दस्त्रौ)	९	११	१०	२०	अपामार्ग-मूलम्	वातज्वरअर्द्ध-भङ्ग गात्रपीडानिद्रा-बुद्धिभ्रम	श्वेतचन्दन गन्ध. कमलपुष्प क्षीर गुग्गुलधूपघृतदीप मोदक गुड़ नैवेद्य	घृत-गुडौदन	खण्ड यवाज्य	सुवर्णघृतकुम्भ ब्राह्मणभोजन	ॐअश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् वाचेन्द्रो बलेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्। ॐअश्विनीकुमाराभ्यां नमः ॥१॥	५ हजार
भरणी (यमः)	०	८०	४०	११	अगस्त-मूलम्	अनेक रोग ज्वर आलस्य छर्दिरोग।	तीव्र-अगरगंध धूप घृतदीप करवीरपुष्प गडौदन नैवेद्य	घृतगुग्गुल (खिचड़ी)	कृसरान्न तिलाक्षत	घृतमधु शर्करा गोमहिषीघृत छायापा ब्राह्मणभोजन	ॐयमायत्वामखायत्वासूर्यस्यत्वातपसे देवस्त्वा-सवितामध्वानक्तु। पृथिव्याः संस्पृशस्पाहि अर्चिरसिशोचिरसितपोऽसि ॐ यमाय नमः।	१० हजा
कृत्तिका (अग्निः)	९	११	१६	२८	कार्पासि-मूलम्.	उरुशूल अतिदाह नेत्रपीड़ा अनिद्रा	श्वेतचन्दनगंध जुहीपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीपतिलमाषान्नबडाखीकानैवेद्य	पायस	तिल यव घृत	स्वर्ण गोदान ब्राह्मणभोजन	ॐ अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पति पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसिजिन्वति। ॐअग्नये नमः ॥३॥	१० हजार
रोहिणी (ब्रह्मा)	७	९	१८	३०	अपामार्ग-मूलम्	ज्वरपीड़ाकुक्षि शूरशिर पीड़ा प्रलाप	श्वेतचंदनगंधकमलपुष्प धूप घृतदीपपायस नैवेद्य	दशांग-मध्वाज्यक्षौद्र शाल्यान्न क्षीर	तिलाज्य यव	सप्तधान्य कृष्णगोदान ५ कुमारीभोजन	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमपुरस्ताद्विसीमितः सुरुचोवे-नआवः। सुबुध्न्या उपमाअस्य विष्ठाः सतश्च-योनिमसतश्च विवः। ॐब्रह्मणे नमः ॥४॥	५ हजार
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	९	५	७	१०	जयन्ती-मूलम	अर्द्धगात्रपीड़ा, महाकष्टत्रिदोष	श्वेतचन्दन गन्ध. कमलपुष्प धूप घृतदीपपायस अपूपमध्वोदन नैवेद्य	दशांग दधि शर्करा शाल्य	दधिपायस	दधितण्डुल सवत्सगोदान ब्राह्मणभोजन	ॐइमं देवाअसपत्नं सुवध्वं महते क्षत्रायमह-तेज्यैष्ठ्यायमहतेजानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममनुष्यपुत्रमुष्यैपुत्रमस्यविशएषवोऽमीराजा-सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा। ॐचन्द्रमसे नमः ॥	१० हजार
आर्द्रा (शिवः)	०	१८	०	०	सचंदनाश्व-त्थमूलम्	ज्वरसर्वांगपीड़ा त्रिदोषअनिद्रा	श्वेत चंदनगंध सौरभपुष्पदशांग धूपघृतदीप पायसौदन नैवेद्य	दध्योदन मध्वाज्य	घृतमधु	कृष्णवृषभकृष्ण-वस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः ॥ ॐरुद्रायनमः ॥६॥	१ हजार
पुनर्वसु (अदितिः)	७	१४	२	२१	अर्क—मूलम्	ज्वरशिरपीड़ा कटिपीड़ा	हरिद्राकुंकुमगन्धसेवन्तिकापुष्प अष्टगन्धधूपघृतदीप पीतवर्णान्न	साज्य-घृताक्त पीततण्डुल नैवेद्य	घृत तण्डुल	वस्त्र स्वर्ण कमल ५ कन्या ५ भोजन	ॐअदितिरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता सपिता सपुत्रः। विश्वदेवा अदितिः पंचजना अदिति र्जातमदितिजनित्वम्। ॐअदितये नमः ॥७॥	१० हजार
पुष्य (गुरुः)	७	७	१०	२१	तुषार मूलम्	ज्वर शूल महाकष्ट	कुंकुमगन्ध कमलपुष्प धूपघृतदीपघृतपायसशर्करा	घृतगुग्गुल- नैवेद्य	समण्डक घृत	सुवर्ण गौ पीतवस्त्र मोदक पायस ब्राह्मणभोजन	ॐबृहस्पतेअदितियोंअर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुम-ज्जनेषु। यद्दीदयच्छ वस ऋतप्रजातदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। ॐबृहस्पतये नमः ॥८॥	१० हजार

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आश्लेषा (सर्पः)	० ० ४१ ०	पटोल- मूलम्	सर्वाङ्गपीड़ा पा. मृत्युसम कष्ट	कुंकुम अगरगन्ध अगस्त पुष्प घृत गुग्गुलधूपघृतदीप घृतक्षीर नैवेद्य	हवि दध्योदन	शर्करा घृत	सवत्साकृष्णागौ छायापात्रब्राह्मणभो.	ॐनमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये केच पृथिवीमनु येअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः। ॐ सर्पेभ्यो नमः ॥९॥ १० हजार
मघा (पितरः)	१५ ७ १७ २०	भृङ्गराज मूलम्	अर्द्धगात्र पीड़ा तथा शिर पीड़ा	श्वेतचन्दनगन्ध चम्पकपुष्प घृत गुग्गुलधूप घृतदीप घृतमिष्टान्न	सतिलाज्य दुग्धान्न	तिलाज्य तण्डुल	सवस्त्रतिलमाष दान ब्राह्मणभोजन	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यःस्वधायिभ्यः स्वधानमः अन्नक्षपितरोमोमदन्तपितरोऽतीतृपन्तपितरः पितरःसुन्धध्वम्। ॐपितृभ्योनमः। १०ह०
पू. भा. (भागः)	० १५ ० ३०	कण्टकारि मूलम्	ज्वर शिरपीड़ा गात्रव्यथा	श्वेतचन्दनगन्ध मालती पुष्प घृत बिल्व धूप घृतदीप अपूपोदन मोदक नैवेद्य	घृतौदन पायस	प्रियंगु कंगनी तिल	पित्तलयवमाषान्न स्वर्णगोदान भोजन	ॐभगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाददन्न० भगप्रणोजनगो भगिरश्वर्भगप्रनृभिर्नृवंतः स्याम॥ ॐ भगायनमः ॥११॥ १० हजार
उ. फा. (अर्यमा)	७ १४ ७ ६०	पटोल- मूलम्	कुक्षिशूल शिरशूल ज्वर अतिकष्ट	कर्पूरकेसर गन्ध अर्कपुष्प घृत गुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	घृतशर्करा शाल्यन्न	तिलाज्य	सुवस्त्ररजतस्वर्णान्न गोदान ब्रा० भोजन	ॐ देव्यावध्वर्यू आगतं रथेन सूर्यत्वचा। मध्वायज्ञं समञ्जाये तं प्रत्नथा यं वेनश्चित्रम्। ॐ अर्यम्णे नमः ॥१२॥ १० हजार
हस्त (सविता)	१५ १७ १५ ०	जाति- मूलम्	अफारा उरु शूल सर्वाङ्ग पीड़ा प्रस्वेद	रक्तचन्दन केसरगन्ध कमलपुष्प घृत गुग्गुलधूप घृतदीप घृत नैवेद्य	मिष्टान्न	दधि घृत	सुवर्णपयस्विनीगोदान ब्रा० भोजन	ॐविभ्राड्बृहत्पिबतु सौम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपता बविह्रुतम्। वात जूतो यो अभिरक्षतित्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा विराजति। ॐसवित्रे नमः॥ हजार
चित्रा (विश्वकर्मा)	११ ९ ९ १६	मखव- मूलम्	विचित्रानेक- रोग, अतिकष्ट	केसर अगरगन्ध विचित्रवर्ण पुष्प घृत गुग्गुलधूपघृतदीप विचित्रान्न मोदक नैवेद्य	विचित्रान्न घृत	तिलाज्यतिलगुड़ तण्डुल	विचित्र वृ. प. छा. पा. ब्रा. भो.	ॐत्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धना द्विपदाच्छन्दऽइंद्रयमक्षागौनवियोदधुः॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः ॥१४॥ १०० हजार
स्वाती. (वायुः)	६० १७ ३० ०	जाति- मूलम्	नानाकष्ट	चन्दनगन्धदमनकपुष्पअगरगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	घृत पायस	तिलाज्यस्वर्ण यव	रक्तधेनुदान पक्वान्न ब्रा. भोजन	ॐवायोयेते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि नियुत्वान सोमपीतये॥ ॐवायवे नमः ॥१५॥ १० हजार
विशाखा (इन्द्राग्नी)	१५ ० ४ १३	गुञ्जा मूलम्	कुक्षिशूल सर्वाङ्गपीड़ा	चन्दनकेसरगंध कमलपुष्प देवदारु घृत धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	सहवि चित्रान्न	आज्य पायस	रक्तपीतवस्त्र कृ. वृ. छायापा. दा. ब्रा. भो.	ॐइन्द्राग्नी आगतं सुतं गीर्भिर्नमो वरेण्यम् अस्यपात धियाषिता॥ ॐइन्द्राग्निभ्यां नमः॥ १० हजार
अनराधा (मित्रः)	६० १२ ३६ ०	सुपुष्प मूलम्	तीव्र ज्वर शिरपीड़ा	केसरगन्ध कमलपुष्प चन्दन धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	मध्वाज्य माषान्न	गुड़ यवाज्य	स्वर्णगोछाया पात्र दान ब्रा० भोजन	ॐनमोमित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महादेवाय तदृतं सपर्यत दूरंदृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शंसत॥ ॐमित्राय नमः ॥१७॥ १० हजार
ज्येष्ठा (इन्द्रः)	५५ ९ ६ ४	अपामार्ग मूलम्	व्याकुलता पित्त रोगकम्पन	श्वेतचन्दन गंध चम्पकादिसुपुष्प कर्पूर धूप घृतदीप मनोहर चित्रान्न नैवेद्य	दध्योदन सुगुप्प	तण्डुलतिल घृत	स्वर्णतिलनीलवस्त्र ब्रा० भोजन	ॐत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवंशूरमिन्द्रम ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः। ॐ शक्राय नमः ॥१८॥ १० हजार

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मूलम् (राक्षसः)	०	९	१५	६	मन्दरा मूलम्	उदरतथामस्त रोगसन्नि-भय	कृष्णअगरगन्धनं.लोत्पलपुष्पघृत-सहवि कृष्णागुरुधप माषमिश्रान्न-नैवेद्य	माषान्न घृत कन्दमूल	स्वर्ण व. कु. गौछा पात्र दा. कु. पू. वि	ॐ मातेव पुत्रं पृथ्वीपुरीष्यमग्निं स्वेयोनाव भारुखा। ताविश्वदेवऋतुभिः संवदानः प्रजा-पतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु। ॐनिर्ऋतये नमः॥१९॥	५ हजार
पू. षा. (जलम्)	०	१५	२४	१०	कार्पासि मूलम्	शिरपीड़ाकम्पन महाकष्ट	श्वेतचंदन गंधकमलपुष्प घृतगुग्गुल धूप दीप घृत पायस नैवेद्य	घृतपायस तिलतण्डुल मिष्ठान्न घृत	स्वर्णाव. ति.त.ज. कु. गो. दा. ब्रा. भो.	ॐअपाघमप किल्बिषमपकृत्यामपोरपः। अपामार्गत्वमस्मदपदुःष्वप्न्यं सुव॥ ॐअद्भ्योनमः ॥२०॥	५ हजार
उ. षा. (विश्वेदेवाः)	३०	२४	२६	१६	कार्पासि मूलम्	उरुशल कटि-पीड़ा प्रलाप	श्वेतचन्दन गन्धकमलपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायसान्न नैवेद्य	सहविषा. तिलाज्य तिलाज्य यव	आमान्नस्वर्णदान ब्राह्मण भोजन	ॐविश्वेदेवाः शृणुतम हवंयम अन्तरिक्षे य उपद्यविष्ठाय अग्निजिह्वा उतवाय जत्राआसद्यास्मिन्बर्हिषिमादयध्वम्। ॐविश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥२१॥	१० हजार
श्रवणः (विष्णुः)	६०	२४	६	९	अपामार्ग मूलम्	अतिसार सर्वाङ्ग पीड़ानि. भय	श्वेतचन्दनगन्धमालतीपुष्पकर्पूरगु. धप घृतदीपषड्रस शाल्यन्न नैवेद्य	सहवि तिलाज्य पायस यवं	स्वर्णगोछायापा. ब्राह्मण भोजन	ॐविष्णो रराटमसि विष्णो श्नप्त्रेस्थो विष्णोःस्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा। ॐविष्णवे नमः॥२२॥	१० हजार
धनिष्ठा (वसवः)	१५	२	२०	२१	भृङ्गराज मूलम्	मूत्रकच्छ ज्वर रक्तातिसार	श्वेतचन्दन गन्ध कमलपुष्प गुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	पायसमो. तिलाज्य पूपतिपि पायस	छत्रोपानद्अश्वस्व गो. दा. ब्रा. भो.	ॐवसोःपवित्रमसि शतधारं वसोःपवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोःपवित्रेणशतधारेणसुप्वाकामधुक्षः ॥वसुभ्योनमः	१० हजार
शतभिषा (वरुणः)	०	४५	३	२२	कमल मूलम्	सन्निपातभय वातज्वर कष्ट	केसर अगरगन्ध कमलपुष्प कर्पूर चं. घृत. धप घतदीप घृतपोलिका नैवेद्य	आज्य चित्रान्न	स्वर्णतिलान्नघट दध्योदन छायापात्र गोदान कु. पू. ब्रा. भो.	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसियसिवरुणस्यस्कम्भ-सर्जनीस्थो वरुणस्यऋतऽसदन्यसि वरुणस्य-ऋतसदनमसि वरुणस्यऋतसदनमासीद ॐवरुणाय नमः ॥२४॥	१० हजार
पू. भा. (अजकपाः)	०	१२	२१	११	भृङ्गराज मूलम्	शरीरपीड़ार्ति व्याकुलतावमन	केसरचन्दनगन्ध श्वेतार्कपुष्प शतौष. मिश्रितधप घृतदीप्र दधिपायस नैवेद्य	दध्योदन क्षीराज्य शर्करा	स्वर्णरजतअश्वश्वेत छ. पात्र. दान ब्रा. भोजन	ॐउतनो हिर्बुध्न्यः शृणोत्वज एकपात्पृथिवी-समुद्रः। विश्वेदेवाः ऋतावधीनहुवानः स्तुतामंत्रा कविशस्ताअवन्तु। ॐअजैकपदे नमः।	१० हजार
उ. भा. (अहिर्बुध्न्यः)	१०	२	९	१५	अश्वत्थ मूलम्	शूल ज्वर वात व्याधि अतिसार कामला रोग	चन्दनकर्पूरगन्ध कमलपुष्प विल्व गुग्गुल धूप घतदीप घृतपायस नैवेद्य	तिलाज्य मुद्गमाष	तिलाज्य स्वर्ण रजत तिल यव कृष्णवस्त्र दान ब्रा. भोजन	ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पितानमस्ते अस्तु मामा हिंसीः। निवर्तयाम्यायुषे ऽन्नाद्याय प्रजननायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वा- यसुवीर्याय। ॐअहिर्बुध्न्याय नमः ॥२६॥	१० हजार
रेवती (पूषा)	१८	१०	९	२०	अश्वत्थ [illegible]	चित्तभ्रम उग [illegible]	रक्तचन्दनगंधमन्दारपुष्प घृतगुग्गुल [illegible]	सहवि [illegible]	तिलाज्य रजतवस्त्रपतल [illegible] भो.	ॐपूषन् तवव्रते वयंन रिष्येम कदाचन [illegible] ॥ [illegible] नमः।	५ हजार

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१) जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र वा यमघंट कुयोग हो।

(२) सूर्यवार को मघा द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो।

(३) सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११) हो।

(५) बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा (२।७।१२) आश्ले. हो।

(६) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (३।८।१३) व मघा हस्त हो।

(७) शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा व श्रवण या रिक्ता (४।९।१४) आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पूषा. या हस्त व पूभा. या पूर्णा (५।१०।१५) व भरणी हो।

(९) सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।।९।१२।१४।३० तिथि भरणी कृत्ति. आर्द्रा आश्ले. पर्वा ३ विशा. ३ ज्ये. धनि. शत. नक्षत्र हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना। क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं, हाँ, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान, तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है।

अथ रोगत्रिनाड़ीचक्रम्

आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	उ. फा.	ज्य.	धान.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमा:
पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल.	श्रवण	भा.	अश्वि	रो.	मध्या:
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वा	पूषा	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.	अन्त्या:

सूर्य नक्षत्र, दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र 'रोगत्रिनाड़ीचक्र' में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है, मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन निःसंदेह रोगी की मृत्यु कहे। यह रोगत्रिनाड़ीचक्र यात्रा तथा रण के समय भी वर्जित करना।

कालस्य मुखदंष्ट्राज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३ संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०–१८ वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़ें) होती हैं। काल के मुख दाड़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु पर्यन्त हालत होती है। रोग पर सर्पादि दर्शन पर, विग्रह-युद्ध में जाने पर काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

ज्वरयंत्र

ॐ

प	व	क	०
३	४९	८	३३
३५	८७	५	३९
५१	७	३	२५

ज्वर आने से पहले यह यन्त्र लिख कर अपनी कलाई पर धूप देकर बांधे तो बारी का बुखार दूर हो। पहले यन्त्र सिद्ध कर लेवे फिर लिखकर देना शुरू करे। विधि–सफेद कागज पर अनार की कलम और लाल चन्दन से २१ सौ लिखकर आटे की गोलियाँ बनाकर मछलियों को डाल देवे।

तिथिकष्टावलीयन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदि.	बलि व दान
१	अग्नि	१२	शर्कराज्यबलि घृतदान
२	ब्रह्मा	५	पायसबलि भोजनदान
३	काम	७	घृतान्न बलि रक्तवस्त्रदान
४	गणेश	१६	मोदकान्न बलि मूंगादान
५	सर्प	२१	पायसबलि दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलि चित्रवस्त्रदान
७	सूर्य	८	पायसबलि ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलिपीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिष्ठान्नबलिरक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलि पीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलि श्वेतवस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्कराबलिसुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि क्षौद्रशाकभो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि रौप्यदान
३०	पितर	१८	पूपकान्नबलि उत्तमान्नभो.

बारकष्टावलीयन्त्रम्

वा.	वारेश	क. दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायसबलि सूर्यदान
चं.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलिचन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि बुधदान
वृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलपत्राज्यमधुबलिशुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि शनिदान

कालांगविभाग

कालपुरुष के सिर में मेषराशि का स्थान है, मुख में वृष राशि का, दोनों भुजाओं में मिथुन राशिका, हृदय में कर्क राशि का, उदर में सिंह राशि का, कमर में कन्या राशि का, बस्ति (मूत्राशय) में तुला राशि का, गुप्तेन्द्रिय में वृश्चिक राशि का, ऊरु (दोनों जंघाओं) में धनु राशि का, दोनों जानु (घुटनों) में मकर राशि का, पिण्डलियों में कुम्भ राशि का और दोनों पादों में मीन राशि का स्थान है। कई एक आचार्य द्वादश भावों में भी इन अंगों की कल्पना करते हैं जैसे प्रथम भाव में शिर, द्वितीय भाव में मुख, तृतीय भाव में भुजा, चतुर्थ भाव में हृदय, पंचम भाव में उदर, छठे भाव में कमर, सप्तम भाव में बस्ति, अष्टम भाव में गुप्तेन्द्रिय, नवम भाव में ऊरु, दशम भाव में जानु, एकादश भाव में जंघा और द्वादश भाव में पादों को जानना। उपरोक्त मेषादि १२ राशि अथवा लग्नादि द्वादश भाव शुभ ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हों तो वह अंग पुष्ट और सुन्दर होता है और पापग्रह से युक्त वा दृष्ट हो तो वह अंग रोगादि से युक्त होता है अंगों का विचार करके फलादेश कहना युक्तियुक्त होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहगोचराद्यैर्दशाक्रमाद्वै ग्रहकलानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः | जपनीय मन्त्राः | समय-समिधः

सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केसर	मूंगा	रक्तगौ	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर	श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केशर	कस्तूरी	रक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि	श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णांग	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	सध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तैल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारेल	कंबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मसरी	श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुंथशवत्	ॐ मुन्थेशमंत्रः	मुन्थेशकाले	

सूर्यादिग्रहपीडासु स्नानार्थमौषधानि—(यथा सिद्धौषधै रोगा नश्येयुर्मन्त्रतो भयम् । तथा स्नानविधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति ॥)

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनशिला	पञ्चगव्य	बिल्वछाल	गोबर	मालतीपुष्प	इलायची	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्तचंदन	अक्षत	श्वेतसरसों	मनशिला	सुरमा	तिलपत्र	तिलपत्र
देवदारु	शंख	धमनी	फल	मुलहठी	सुवृक्षला	लोबान	मुस्थरां	मुस्थरां
केशर	सिप्पी	रक्तपुष्प	गोरोचन	मधु	केशर	धमनी	गजदन्त	गजदन्त
खस	श्वेतचंदन	सगरफ	मधु	मालती		सौंफ	कस्तूरी	छागमूत्र
मुलठी	स्फटिक	मालकंगनी	मोती			मुस्थरां		
रक्तपुष्प		मौलसिरी	सुवर्ण			खिल्लौ		
रक्तकनेर								

शनिविचार:—अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्—कल्याणी प्रददाति वै रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिं बन्धुविरोधदेशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम् ॥ मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्नेर्भयं लोहं शस्त्रभयं सदैवमसुखं कुर्यादसौ सर्वदा ॥१॥ अथ बृहत्-कल्याणी (साढ़ेसाती) फलम्—राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिः नानाक्लेशकरोऽतिदुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत् । हानिः स्थानमरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम् रामाऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाथवा ॥२॥

सप्तधान्य—उदड़ १. मुंगी २. कणक (गेहूं) ३. छोले (चने) ४. जौ ५. धान्य (तंदुल) ६. कंकनी ७

अष्टागन्ध–अगर, तगर, कस्तूरी, दोनों कुंकुम, कर्पूर, दोनों चन्दन ।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्त्यै सामान्यमौषधिस्नानम्

लाजवती (छुई-मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जव, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि, लोध इन औषधियों के जल से सर्वौषधिक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नाश होती है, तथा [illegible]

को वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम, तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः) ॥

॥ देश-भेद से दशा निर्णय ॥

शुक्लगेऽर्के होरायां दिवा विंशोत्तरी दशा । कृष्ण चन्द्रस्य होरायां
रात्रावष्टोत्तरी मता ॥ अन्यथा योगिनी कार्या सदा कार्या महादशा ॥१॥

अर्थ—देश भेद से दक्षिण गुजरात में अष्टोत्तरी, दिल्ली, राजस्थान, मध्यभारत, पंजाब, युक्तप्रान्तों में विंशोत्तरी करना लिखा है, किन्तु विशेष निर्णय में तथा समय के फल विकास कार्य के लिए शुक्ल पक्ष में दिन का जन्म सूर्य की होरा ये तीनों एक साथ जन्मकाल में हों तो विंशोत्तरी उत्तम फलकारक सिद्ध होगी । कृष्ण पक्ष, रात्रि का जन्म, चन्द्र की होरा में जन्म लेने वालों को अष्टोत्तरी से फल कहना । अन्यथा योगिनी दशा में विचार करना ।

अथ कार्यसिद्धि-प्रश्न

प्रश्नकर्ता श्री देवी जी का स्मरण करके पंचदशी यंत्र पर अंगुली धरे । यदि १।५।९ पर धरे तो शीघ्र कार्य सिद्ध हो । ३।७ पर धरे तो सहारे से कार्य सिद्ध होवे । ४।६ पर धरे तो भी कार्य सिद्ध होवे । २।८ अंक पर अंगुली धरे तो कार्य सिद्ध नहीं होता है ।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

॥ श्रीरामायणादि कथा प्रारम्भ करने का मुहूर्त ॥

गुरु के नक्षत्र से दिननक्षत्र १६ तक अर्थलाभ सिद्धि लाभप्रद, २४ तक मृत्यु, राजभयप्रद, २७ तक मोक्षप्रद होता है ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गोचरग्रहाणां द्वादशभावफलबोधचक्रम्

ग्रहः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानना.	भयं	श्रीः	मानभंग	दैन्यं	विजयः	मार्गः	पीड़ा	मुक्तना.	सिद्धिः	धनलाभ	द्रव्यना.
चन्द्रः	अन्नला.	धननाश	सुखं	रोगः	कार्यनाश	धनला.	स्त्रीला.	रोगः	धर्मला.	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
भौमः	शत्रुभी.	धननाश	धनलाभ	शत्रुभीः	धननाश	धनला.	द्रव्यना.	शत्रुभी.	शत्रुभी.	शोकः	धनलाभ	धनना.
बुधः	बन्धनं	धनलाभ	शत्रुभीः	पशुलाभ	सुखं	स्थानला.	पीड़ा	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनला.
गुरुः	भयं	धनलाभ	क्लेशः	धननाश	सुखं	शोकः	राजमा.	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुना.	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभी.	शोकः	धनला.	वस्त्रला.	दुःखं	धनलाभ	धनला.
शनिः	भयं	धननाश	ऐश्वर्यं	शत्रुभी.	पुत्रनाशः	धनला.	दोषः	पीड़ा	धर्मना.	दौर्मन.	धनलाभ	धनना.
राहुः	हानिः	धननाश	धनलाभ	वैर	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्यु	दुःखं	वैर	सुखं	शोकः
केतुः	रोगः	वैर	सुख	भयं	सुखं	धनला.	कलहः	रोगः	पापं	शोकः	कीर्तिः	शत्रुभी.

उपरोक्त गोचर फल जन्म राशि या जन्मलग्न के अंश से आदि लेकर अग्रिम राशि के उतने अंश तक प्रथम भाव एवं द्वादश भावों की अंशों पर कल्पना करने से अधिक मिलता है। केवल राशि से फल में अधिक अन्तर रहता है ।

ग्रहमैत्रीचक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
चं. मं. बृ.	सू. बु.	सू. चं. बृ.	सू. शु.	सू. म. चं	बु. श.	शु. बु.	मित्राणि
बु.	म. बृ. शु. श.	शु. श.	मं. बृ. श.	श.	मं. बृ.	बृ.	समाः
शु. श.	० ०	बु.	चं	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं.	शत्रवः

शनि यन्त्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

यह यन्त्र शनिवार को भोजपत्र पर लिख कर धारण करने से शनिकृत अरिष्ट निवृत्त करता है।

अथग्रहाणामेकर्क्षभोगफलसमयादिज्ञानम्

सू.	चं.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.के.	ग्रहाः
मा. १	दि. २।	मा १॥	मा १	मा. १२	मा. १	मा ३०	मा. १८	एकर्क्षभोग
आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्त	फलसमय
दि. ५	घ. ३	दि. ८	दि. ७	मा. १	दि. ७	मा.	मा. ६	गंतव्यराशं प्राक्फलम

अथ ग्रहतुष्टयर्थं धारणाय मणयः

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यं	मुक्ताफलम्	प्रवाल	पन्ना	पुष्पराग:	हीरा	नीलम	गोमेदम्	वैदूर्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	रौप्यम्	लोहम्	अजवर्त०	राजवर्त

अथ शनैश्चरस्तोत्रम्—पिप्लाद उवाच—ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते । नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च । नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो । नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते । प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च ॥ इस स्तोत्र को प्रातः पढने से साढेसाती व ढैयाकी दुःखद पीडा नहीं होती । अथ शनैश्चरपादविचारः—ग्रहगोचर फल विचार में प्रायः शनैश्चर के राशि बदलने पर सुवर्णादिपाद विचार इस प्रकार देखा जाता है कि शनैश्चर जिस दिन जिस समय राश्यन्तर में जावे उस समय अपनी जन्मराशि से चन्द्रमा (जन्मनि रसे रुद्रसुवर्णहानिः) १।६।११ वें स्थान में हो तो सुवर्ण पाद जानना, फल-हानि ॥ यदि २।५।९वें हो तो चांदी के पाद आया जानना, फल—शुभ (द्विपञ्चनन्दा रजतं शुभं च) यदि ४।८।१२ वें हो तो लोह के पाद आया जानना, फल-कष्ट (चतुरष्टमद्वादशलोहकष्टम्) यदि ३।७।१० वें हो तो ताम्रपाद आया जानना, फल-शुभ (त्रिसप्तदशमे ताम्र शुभञ्च) अथ सुवर्णपादफलम्—कुटुम्बरोधं बहुरोगयुक्तं क्लेशोदयं चैव करोति नित्यम् । द्रव्यार्थनाशं बहुलं करोति सवर्णपादे स्वजने विरोधम् ॥ अथ रजतपादफलं—व्यापारमुग्रं धनधान्यसम्पत्महत्प्रतापः खलु राजमान्यम् । तद्वर्षमध्ये सुखसम्पदाप्तिः स्यान्मङ्गलं वै यदि रौप्यपादे ॥२॥ अथ ताम्रपादफलं—अनन्तलक्ष्मी प्रकरोति लाभं कलत्रपुत्रैः सुखसम्पदाप्तिम् । लाभोदयं चैव करोति सौख्यं शरीरसौख्यं खलु ताम्रपादे ॥३॥ अथ लोहपादफलं—शरीरपीडां रुधिरप्रकोपं कलत्रपीडां पशुपुत्रपीडां । व्यापारनाशं नृपजभयञ्च लोहस्य पादे खलु निर्धनत्वम् ॥४॥

ग्रह पीड़ा नाशकारी नवग्रह मुद्रिका

ई. बुध पन्ना	प. शुक्र हीरा	आ. चन्द्र मोती
उ. बृ. पुखराज	मध्येसू मणि	दे. भौम मूँगा
वा. केतु वैडूर्य	प शनि नीलम	नै. रा गोमेद

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

ग्रहाणां दृष्ट्यादिचक्रम्

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एकपाद दृष्टिः
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९.	५।९	द्विपाददृष्टिः
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४२	ग्रहाणां वर्षाणि
हरिवंश श्रवण	त्रिपुर जप	रुद्री जप	कांस्य दान	अमावस्या व्रत	गोरक्षा	मृत्युञ्जय जप	ध्वजा दान	ध्वजा दान	नेष्टग्रहस्य वर्षे दानोपायसाधनानि
कृ. उ. फा. उ.षा.	रो. ह. श्र.	मृ. चि. ध.	आश्लेषा ज्ये. रे.	पुन. वि. पू. भा.	भ. पू.फा. पू. षा.	पुष्य. अ. उ. भा.	आर्द्रा स्वा. श.	म. म. अश्वि.	विंशोत्तरीनक्षत्राणि
६	१०	७	१७	१६	२०	१९	१८	७	विंशोत्तरीवर्षाणि
चं. मं. बृ.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बु.	मित्र-ग्रहाः
बु.	मं. श. बृ. शु.	शु. श.	मं. श. गु.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	सम-ग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रु-ग्रहाः
मेष १०	वृषभ. ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशयः परमोच्चांशाः
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २	धनु १५ -	मिथुन १५	नीचराशयः नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे. वृश्चि.	मि. क.	ध. मी.	वृष. तु.	म. कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु.	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पं. स्त्री. नपुंसक
चतुरस्र	व. स्थूल	चतुष्को.	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ	आकार
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपरा.	अपरा.	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्त्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षिस्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पथ	जलभू.	दग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफश्लेष.	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
[illegible]	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थान

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना—(१) जन्मलग्नेश ... के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब सन्तान उत्पन्न होती है।

(२) चं० ल० गु० इन तीनों से पंचमस्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है।

विवाह स्त्रीसुख होने का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़ कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

चन्द्र राश्यांश और अष्टमेश को जोड़ उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में गुरु चन्द्र होते हैं तब विवाह होता है।

(४) श० चं० सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय जानना—गुलिकस्पष्ट से सूर्यस्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में गोचर का शनि जब हो तब पिता रोगग्रस्त होता है और उक्त शेष राश्यादि के समय जब गोचर का गुरु होता है तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो तो उसकी दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

पाराशरोक्त प्राणपद से जन्मेष्टकाल शुद्ध करना—जहां अटे-सटे से लग्न बनाया गया हो, या जन्मपत्री के लग्न की अपेक्षा लग्न अधिक शुद्ध देखना हो तो इष्टकाल की घड़ियों को ४ से गुणा करे। पल १४५ से अधिक हों तो १५ का भाग देकर जो लब्धि आवे वह चार गुणी की हुई इष्ट घड़ी के अंक में मिला दें। १५ का भाग देने से जो शेष फल रहे उनको दुगने कर चतुर्गुणित इष्ट घड़ी के नीचे रखना। पश्चात् १२ का भाग देना, शेष राशि अंश बचे उन में स्पष्ट सूर्य यदि चरराशि में हो तो ज्यों के त्यों, स्थिर में हो तो ८ राशि मिलाकर, द्विस्वभाव में हो तो ४ राशि मिला देने से राश्यादि प्राणपद बन जाता है प्राणपद मनुष्यों की कुण्डली में प्रायः १।५।९ स्थान में, पशुओं की कुण्डली में २।६।१० स्थान में, पक्षियों की कुण्डली में ३।७।११ स्थान में और कीट सर्प जलचर जन्तुओं की कुण्डली में ४।८।१२ स्थान में रहता है। लग्न के व प्राणपद के अंश सदा एक समान रहते हैं।

भावी विचार

(१) पौष मास में मूल नक्षत्र से लेकर भरणी नक्षत्र तक के ११ नक्षत्रों को ध्यान पूर्वक देखकर कापी में लिख रक्खें, यदि इन दोनों में बादल हों तो आगे वर्षाकाल में सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र से लेकर विशाखा तक ११ नक्षत्र में वर्षा होवे। अर्थात् मूल नक्षत्र में बादल हो तो आगे वर्षाकाल में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र वर्षता निकले। ऐसे ही पूर्वाषाढ़ा से पुनर्वसु, उत्तराषाढ़ा से पुष्य, श्रवण से आश्लेषा, धनिष्ठा से मघा, शतभिषा से पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद से उ. फा., उ. भा. से हस्त, रेवती से चित्रा, अश्विनी से स्वाती और भरणी से विशाखा नक्षत्र में वर्षा होवे॥ सज्ञ जनों को चाहिये कि इन दिनों को अवश्य देखें और विचार पूर्वक अपने पास नोट कर लें जिससे वर्षा का अन्दाज ध्यान में रहें॥

... उत्तर का वायु चले, आकाश बादल से ढका रहे ... बिजली चमके तो आगामी वर्ष अच्छा होता है, इस दिन आकाश निर्मल हो तो दुर्भिक्ष पड़ता है, निश्चय है।

(३) माघशुक्लनवमी को बादल या वर्षा आदि हो तो भाद्रपद में वर्षा अच्छी होती है।

(४) चैत्रकृष्ण में आकाश का निर्मल रहना अच्छा है, यदि यहां मूल से भरणी नक्षत्र तक बादल व वर्षा हो तो अनावृष्टि होती है। पौष में तो इन नक्षत्रों में बादल होना अच्छा है और इधर इस मास का निर्मल रहना अच्छा है॥

(५) चैत्रशुक्लप्रतिपदा को वर्षा बिजली या मेघगर्जन हो तो श्रावण भाद्रपद में वर्षा की खेंच जरूरी होती है।

(६) अश्विनी भरणी नक्षत्र पर सूर्य रहते यदि वायु-शास्त्र सम्बन्धी कोई वर्षानाशक अपयोग बना हो, परन्तु कृतिका सूर्य में बिजली छींटे आदि हो जायें तो अशुभ फल नहीं होता। रोहिणी में तपे, कृतिका में छींटें बिजली वा वर्षा हो और मृगशिरा में वायु चले तो वर्षाकाल में अच्छी वर्षा होती है, परन्तु रोहिणी में मेघ गर्जें, थोड़ी वर्षा हो या वायु चले, कृत्तिका में तपे पर मेघ गर्जन बिजली के छींटे न हों, मृगशीर्ष तपता हो तो वर्षा काल में खेंच होती है और दुर्भिक्ष पड़ता है।

(७) कृतिका में यदि वर्षा बूंदा-बांदी हो जाय तो वायुमण्डल में पहले कुछ अशुभ योग भी हुए हों तो उनका बुरा फल नहीं होता, वर्षा काल में अच्छा पानी वर्षता है अतः कृत्तिका में सूर्य में बूँदा-बांदी बिजली बादल का होना अच्छा है॥

(८) रोहिणी पर सूर्य को अच्छा तपना चाहिए, गर्मी अधिक हो तो वर्षा श्रेष्ठ, वायु अधिक हो तो वर्षा की खेंच और वर्षा हो तो पहिले वर्षा की खेंच होकर पीछे वर्षा होती है, इन १५ दिनों में वायु बादल बिजली वर्षा होना हितकर नहीं, स्वच्छ धूप पड़नी चाहिए, रोहिणी में बूंदा-बांदी होने पर वर्षा की खेंच जरूरी होती है यह अनुभवसिद्ध है, आषाढ़ी पूर्णिमा को वायु अच्छी होने पर भी इसके खेंच का अवसर तो पहिले होता ही है।

(९) मृगशिरा नक्षत्र पर सूर्य रहे तब तक जोर का पवन चलना अच्छा है, यदि वायु न चले तो वर्षा देर में आती है और कम भी होती है॥

यात्रा में अशुभ शकुन

गवन समय जो स्वान। फरफराय दे कान।
एक सूद्र दो वैस असार। तीनि विप्र औ छत्री चार।
सनमुख आवें जो नौ नार। कहै भड्डरी अशुभ बिचार॥
स्वान धुनै जो अंग, अथवा लोटै भूमि पर॥
तौ निज कारज भंग, अतिहि कुसगुन जानिये॥
बैस पाँच षट् स्वान, एक बैल यक बकरा जान॥
तीनि धेनु गज सात प्रमान, चलत मिलै मति करौ पयान।
सगुन सुभासुभ निकट हो, अथवा होवे दूर।
दूरि ते दूरि निकट ते निकट, समझौ फल भरपूर॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

ग्रहाणां दृष्ट्यादिचक्रम्

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एकपाद दृष्टिः
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९.	५।९	द्विपाददृष्टिः
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४२	ग्रहाणां वर्षाणि
हरिवंश श्रवण	त्रिपुर जप	रुद्री जप	कांस्य दान	अमावस्या व्रत	गोरक्षा	मृत्युञ्जय जप	ध्वजा दान	ध्वजा दान	नेष्टग्रहस्य वर्षे दानोपायसाधनानि
कृ. उ. फा. उ.षा.	रो. ह. श्र.	मृ. चि. ध.	आश्लेषा ज्ये. रे.	पुन. वि. पू. भा.	भ. पू.फा. पू. षा.	पुष्य. अ. उ. भा.	आर्द्रा स्वा. श.	म. म. अश्वि.	विंशोत्तरीनक्षत्राणि
६	१०	७	१७	१६	२०	१९	१८	७	विंशोत्तरीवर्षाणि
चं. मं. बृ.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बु.	मित्र-ग्रहाः
बु.	मं. श. बु. शु.	शु. श.	मं. श. गु.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	सम-ग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रु-ग्रहाः
मेष १०	वृषभ. ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशयः परमोच्चांशाः
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २	धनु १५ -	मिथुन १५	नीचराशयः नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे. वृश्चि.	मि. क.	ध. मी.	वृष. तु.	म. कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु.	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पं. स्त्री. नपुंसक
चतुरस्र	व. स्थूल	चतुष्को.	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ	आकार
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपरा.	अपरा.	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षिस्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पद्म	जलभू.	दग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊपर	ऊपर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफयुक.	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थान

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना—(१) जन्मलग्न [illegible] के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब सन्तान उत्पन्न होती है।

(२) चं० ल० गु० इन तीनों से पंचमस्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है।

विवाह स्त्रीसुख होने का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़ कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़ उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में गुरु चन्द्र होते हैं तब विवाह होता है।

(४) श० चं० सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय जानना—गुलिकस्पष्ट से सूर्यस्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में गोचर का शनि जब हो तब पिता रोगग्रस्त होता है और उक्त शेष राश्यादि के समय जब गोचर का गुरु होता है तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो तो उसकी दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

पाराशरोक्त प्राणपद से जन्मेष्टकाल शुद्ध करना—जहां अटे-सटे से लग्न बनाया गया हो, या जन्मपत्री के लग्न की अपेक्षा लग्न अधिक शुद्ध देखना हो तो इष्टकाल की घड़ियों को ४ से गुणा करे। पल १४५ से अधिक हों तो १५ का भाग देकर जो लब्धि आवे वह चार गुणी की हुई इष्ट घड़ी के अंक में मिला दें। १५ का भाग देने से जो शेष फल रहे उनको दुगने कर चतुर्गुणित इष्ट घड़ी के नीचे रखना। पश्चात् १२ का भाग देना, शेष राशि अंश बचे उन में स्पष्ट सूर्य यदि चरराशि में हो तो ज्यों के त्यों, स्थिर में हो तो ८ राशि मिलाकर, द्विस्वभाव में हो तो ४ राशि मिला देने से राश्यादि प्राणपद बन जाता है प्राणपद मनुष्यों की कुण्डली में प्रायः १।५।९ स्थान में, पशुओं की कुण्डली में २।६।१० स्थान में, पक्षियों की कुण्डली में ३।७।११ स्थान में और कीट सर्प जलचर जन्तुओं की कुण्डली में ४।८।१२ स्थान में रहता है। लग्न के व प्राणपद के अंश सदा एक समान रहते हैं।

भावी विचार

(१) पौष मास में मूल नक्षत्र से लेकर भरणी नक्षत्र तक के ११ नक्षत्रों को ध्यान पूर्वक देखकर कापी में लिख रक्खें, यदि इन दोनों में बादल हों तो आगे वर्षाकाल में सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र से लेकर विशाखा तक ११ नक्षत्र में वर्षा होवे। अर्थात् मूल नक्षत्र में बादल हों तो आगे वर्षाकाल में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र बर्षता निकले। ऐसे ही पूर्वाषाढ़ा से पुनर्वसु, उत्तराषाढ़ा से पुष्य, श्रवण से आश्लेषा, धनिष्ठा से मघा, शतभिषा से पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद से उ. फा., उ. भा. से हस्त, रेवती से चित्रा, अश्विनी से स्वाती और भरणी से विशाखा नक्षत्र में वर्षा होवे॥ सुज्ञ जनों को चाहिये कि इन दिनों को अवश्य देखें और विचार पूर्वक अपने पास नोट कर लें जिससे वर्षा का अन्दाज ध्यान में रहे॥

(२) [illegible] उत्तर का वायु चले, आकाश बादल से [illegible] बिजली चमके तो आगामी वर्ष अच्छा होता है, इस दिन आकाश निर्मल हो तो दुर्भिक्ष पड़ता है, निश्चय है।

(३) माघशुक्लनवमी को बादल या वर्षा आदि हो तो भाद्रपद में वर्षा अच्छी होती है।

(४) चैत्रकृष्ण में आकाश का निर्मल रहना अच्छा है, यदि यहां मूल से भरणी नक्षत्र तक बादल व वर्षा हो तो अनावृष्टि होती है। पौष में तो इन नक्षत्रों में बादल होना अच्छा है और इधर इस मास का निर्मल रहना अच्छा है॥

(५) चैत्रशुक्लप्रतिपदा को वर्षा बिजली या मेघगर्जन हो तो श्रावण भाद्रपद में वर्षा की खेंच जरूरी होती है।

(६) अश्विनी भरणी नक्षत्र पर सूर्य रहते यदि वायु-शास्त्र सम्बन्धी कोई वर्षानाशक अपयोग बना हो, परन्तु कृतिका सूर्य में बिजली छींटे आदि हो जायें तो अशुभ फल नहीं होता। रोहिणी में तपे, कृतिका में छींटें बिजली वा वर्षा हो और मृगशिरा में वायु चले तो वर्षाकाल में अच्छी वर्षा होती है, परन्तु रोहिणी में मेघ गर्जे, थोड़ी वर्षा हो या वायु चले, कृतिका में तपे पर मेघ गर्जन बिजली के छींटे न हों, मृगशीर्ष तपता हो तो वर्षा काल में खेंच होती है और दुर्भिक्ष पड़ता है।

(७) कृतिका में यदि वर्षा बूंदा-बांदी हो जाय तो वायुमण्डल में पहले कुछ अशुभ योग भी हुए हों तो उनका बुरा फल नहीं होता, वर्षा काल में अच्छा पानी बर्षता है अतः कृत्तिका में सूर्य में बूंदा-बांदी बिजली बादल का होना अच्छा है॥

(८) रोहिणी पर सूर्य को अच्छा तपना चाहिए, गर्मी अधिक हो तो वर्षा श्रेष्ठ, वायु अधिक हो तो वर्षा की खेंच और वर्षा हो तो पहिले वर्षा की खेंच होकर पीछे वर्षा होती है, इन १५ दिनों में वायु बादल बिजली वर्षा होना हितकर नहीं, स्वच्छ धूप पड़नी चाहिए, रोहिणी में बूंदा-बांदी होने पर वर्षा की खेंच जरूरी होती है यह अनुभवसिद्ध है, आषाढ़ी पूर्णिमा को वायु अच्छी होने पर भी इसके खेंच का अवसर तो पहिले होता ही है।

(९) मृगशिरा नक्षत्र पर सूर्य रहे तब तक जोर का पवन चलना अच्छा है, यदि वायु न चले तो वर्षा देर में आती है और कम भी होती है॥

यात्रा में अशुभ शकुन

गवन समय जो स्वान। फरफराय दे कान।
एक सूद्र दो वैस असार। तीनि बिप्र औ छत्री चार।
सनमुख आवें जो नौ नार। कहैं भड्डरी अशुभ विचार॥
स्वान धुनै जो अंग, अथवा लोटै भूमि पर॥
तौ निज कारज भंग, अतिहि कुसगुन जानिये॥
बैल पॅाच षट् स्वान, एक बैल यक बकरा जान॥
तीनि धेनु गज सात प्रमान, चलत मिलैं मति करौ पयान।
सगुन सुभासुभ निकट हो, अथवा होवैं दूर।
दूरि ते दूरि निकट ते निकट, समझौ फल भरपूर॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर्षा विज्ञान

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते नीचे लिखे दिनों में जहाँ कहीं थोड़ी सी वर्षा हो तो इतने दिनों तक वहाँ वर्षा न होवे। जैसे

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
७२	५०	४५	४२	३९	३४	२१	३०	२८	२४	२१	१६	१२

रोहिणी में सूर्य के प्रवेश के प्रथम दिन थोड़ी वर्षा हो तो उस दिन से ७२ दिन तक वर्षा की खैंच रहती है। सूर्य रोहिणी पर रहे उन दिनों में गर्मी ज्यादा पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ। वायु से राजाओं में विग्रह। थोड़ी वर्षा से संवत् नष्ट, दैवात् यदि वर्षा अधिक हो जावे और नदियों में वर्षा का जल भी चल पड़े तो अशुभ फल नष्ट होकर वर्षा अच्छी होती है। उन दिनों में बिजली से वर्षा की कमी। अधिक दिन की बिजली से शुभ, बादल की दशा में वर्षा की कमी। निर्मल दिशा में वर्षा अधिक होती है।

वर्षा ज्ञानसारिणी

दिसम्बर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जून जुलाई	जू. १४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	जु. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
जनवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जुलाई अगस्त	जु. १५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	अ. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
फरवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	—	—	—
अगस्त सितम्बर	अ. १५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	सि. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मार्च	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
सितम्बर अक्टूबर	सि. १२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	अ. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अप्रैल	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	—
अक्टूबर नवम्बर	अ. १३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	न. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

वर्षाज्ञानसारिणी से वर्षा जानने की रीति—दिसम्बर, जनवरी, फरवरी व मार्च इन चारों मासों की तारीखों में जिन-जिन तारीख में जहाँ वर्षा होती है उसके हिसाब से ही ऋतु में जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर इन चारों मासों में वहाँ वर्षा प्रायः हुआ करती है। प्राचीन ज्योतिष के वृष्टि विज्ञान के सिद्धान्त से आधुनिक समय के अनुसार भारत में १२ दिसम्बर के बाद ही शीतकाल में वर्षा साधारण रूप से होने का नियम है। जैसे मान लो कि शीतकाल में लुधियाना में १९ दिसम्बर को वर्षा हुई है तो वर्षाऋतु में वहाँ २ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार मान लिया कि शीतकाल में १५ जनवरी को देहली में वर्षा हुई है तो ऊपर की वर्षा ज्ञानसारिणी यह बता देगी कि वर्षाऋतु में वहाँ २९ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार जैसे कि २२ फरवरी को शीतकाल में कहीं वर्षा हुई हो तो वहां ५ सितम्बर को वर्षा होगी। इसमें ज्योतिषशास्त्र के विज्ञान का नियम यह भी है कि जिन २ तारीखों में शतभिषा, श्लेषा, मघा, स्वाती, आर्द्रा नक्षत्र पड़ जायें और इन तारीखों में वर्षा हो जाय तो आगे वर्षाऋतु में जो तारीखें सारिणी में आकर पड़ेंगी उन तारीखों में वर्षा अवश्य होगी और अधिक भी होगी, क्योंकि यह नक्षत्र बहुत जल वाले माने जाते हैं। इसी प्रकार शीतकाल में जिन २ तारीखों में पू. भा. उ. भा. पू. फा. उ. फा. रोहिणी ये पाँच नक्षत्र पड़ जायें और उन तारीखों में वर्षा हो तो आगे वर्षाऋतु में जिन महीनों की जो तारीख सारिणी में पड़ेगी उनमें कई दिनों की वर्षा की झड़ी लगगी। वर्षाज्ञान के लिए शीतकाल में होने वाली वर्षा को तारीखवार टाइम सहित नोट करके देखते से

अथ अनावृष्टिशान्तिप्रयोग

गंगा, यमना आदि महानदी को छोड़कर अन्य किसी नदी के तट पर वा तालाब, वन वा शिव-मन्दिर में जाकर वहाँ मेघों का आवाहन करे। कमल के आकार का अष्टदल का यन्त्र बनाकर उसम पर्जन्य सहित सातों मेघों को स्थापन करके कनेर के पीले लाल तथा श्वेत पुष्प, धूप, दीप नैवेद्य आदि से पूजा करे। (मेघों के नाम और आवाहन मन्त्र) ॐ ह्रीं मेघदूतायनमः आगच्छ२ स्वाहा॥१॥ ओं ह्रीं मेघदूती कमलोद्भवाय नमः आगच्छ २ स्वाहा ॥२॥ ॐ ह्रींमहानीलराजाय हिमवद्वासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा॥३॥ ॐ ह्रीं नन्दकेश्वराय जठरनिवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥४॥ ॐ ह्रीं सिंहराजाय कैलाशनिवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥५॥ ॐ ह्रीं कुम्भराजाय वामश्रृंगमेरुनिवासाय मेघराजाय आगच्छ२ स्वाहा ॥६॥ ॐ ह्रीं नन्दराजाय दक्षिणश्रृंगमेरुनिवासाय मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥७॥ फिर नाभि मात्र जलमें खड़ा होवे ऊपर लिखे प्रत्येक मन्त्र को १०००-१००० बार जपे पश्चात् गुगल, श्वेत चन्दन, अगर, कनेर के पुष्प और बहुत-सी शहद तथा घृत की १०८-१०८ आहुति प्रत्येक मन्त्र से दे तो निश्चय ही वर्षा होवे। अतिवृष्टि शान्ति प्रयोग—"ॐनमो हनवन्तवीर अंजनी पवन देवता की आण जट्ट ऐसी मेघ मण्डली बर्षसी इत उत फूट सतखण्ड जापसी"। अति वर्षा के समय इस मन्त्र का ७—७बार जाप करके तीन बार ताली बजाकर आकाश की ओर मुख करके फूंक मारने से अतिवर्षा करते हुए मेघ भी तत्काल फट जावे इसी मन्त्र को जपता हुआ बरसते हुए पानी को झाड़ू से दूर करके उस झाड़ू को सीधा खड़ा करदे तो वर्षा बन्द हो जावे। मन्त्र को पहले दीपमाला में जपकर सिद्ध करले॥

शुक्रोपासित मृतसञ्जीवनी मन्त्र—ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे भर्गोदेवस्य धीमहि

राशिज्ञानं विशेषः

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राशिज्ञानं विशेषः

नक्षत्र वा राशि में श और स में ब और व में कोई भेद नहीं होता, तथा जिस के नाम का पहिला अक्षर संयुक्त हो वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोगजाक्षरे नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्)

अथ नक्षत्रराशिज्ञानचक्रम्

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.
प्रथमचरण	चू	ली	आ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे
द्वितीय च०	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डु	मी	टा	०
तृतीय च०	चो	ले	०	उ	वी	०	का	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०
चतुर्थ च०	ला	लो	०	ए	वु	०	की		०	हि	डा	डो	मे	टू	०

राशयः	कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	उ. फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गा	स	०	दू	दे
द्वितीय च०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या	यो	ध	०	भो	जे	खू	गो	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	च
चतुर्थ च०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

नाम्नि ऋलृक् अनुस्वारमात्रायां न भवन्ति ते । चेद्भवन्ति तदा ज्ञेया इ उ ए च यथाक्रमम् ॥१॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन । ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदैः ॥२॥ प्रसुप्तो भाषिते येन येनागच्छति शब्दितः । तस्य नामाद्यवर्णे या मात्रा स्वरः स एव हि ॥३॥ अथ जन्मराशिः—नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते–विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे । जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्॥४॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥५॥ काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये । मन्त्रे पुनर्भू वरणे नामराशेः प्रधानता ॥६॥ कुर्यात्षोडश[3] कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते । सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥७॥ विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम् । नामभाक्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥८॥

अभिजित्-निर्णयः— वैश्यप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५ वाँ भाग जोड़कर उसके चार भाग करो, उसको अभिजित् का एक चरण मान कर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़ कर जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण का १–१ चरण मानो। इस प्रकार को प्रायः सामान्यगणक नहीं जानते एतदर्थ यहां लिखा गया है। (अपने बच्चों का सुन्दर व शुद्ध नाम रखना चाहते हो तो "राश्यभिधानकल्पलता" मोतीलाल बनारसीदास, नेपाली खपरा, पो० ब० ७५ बनारस से मंगाइये। १) रु०।

नक्षत्रविषघटीज्ञानम्—अब विषघटी के स्पष्ट करने की क्रिया समझ लीजिए। क्योंकि 'नक्षत्रगुणज्ञानचक्र' में नक्षत्रों की विषघटी के मध्यम ध्रुवांक लिखे हैं, इनको स्पष्ट ऐसे करना, यथा—जिस दिन विषघटी देखना है उस दिनके सर्वर्क्ष से उसी नक्षत्रके ध्रुवांक को गुणा कर ६० का भाग देने से जो लब्धि मिले वही विषघटी के प्रवेश का समय है और विषघटी ४ घटी की होती है। इनको भी स्पष्ट करना जरूरी है। उदाहरण—मघा के सर्वर्क्ष ५५ को मघा के ध्रुवांक ३० से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्धि २७।३० मिले, बस इसी समय से विषघटी का प्रारम्भ हुआ, विषघटी ४ को ५५ से गुणा कर ६० का भाग देनेसे लब्ध ३।४० मिले, बस इतने समय तक अर्थात् २७।३०से ३१।१० तक शुभ कार्य नहीं करना।

टिप्पणी—(१) जन्मर्क्षः यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकरराशिः। कपलयांग क्षः, यथा क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशिः। एवं धाव्लारामस्य कुम्भराशिः। (२) यथा-ऋषभदेवः ऋतकरामः लतरामः। (३) गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोन्नयनं ततः। जातकर्माभिधेयं च निष्क्रमप्राशने क्रमात्। चूडोपनयनं वेद-व्रतानां च चतुष्टयम्। गोदान-मखलोम्भोको विवाहः षोडशी क्रिया॥

जन्मकुण्डली से विशेष विचार और इष्टशुद्धि

लघुभ्राता का जन्म समय जानना—(१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़े जो राशि हो, उसपर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है।

(२) तृतीयेश तृतीयस्थग्रह, तृतीयेशस्य राशि की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है यदि भ्रातृ प्रतिबन्धक योग न हो तो।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावे, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे, शेष म दशमेश स्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटावे (यथा—ल० तृ० शे। द×मं.=यो. शे.—यो.=शे.) शेष राशि में से जब गोचर का शनि आता है तब भ्रातृ कष्ट होता है।

(३) लग्नेश तृतीयेश, दशमेश, भौम इन चारों स्पष्टों को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर शनि होता है उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृ कष्ट जानिये।

माता की मृत्यु का समय जानना—(१) जन्म के सूर्य स्पष्ट में से चंन्द्रस्पष्ट को घटावे तो शेष के उस राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि वा गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना।

(२) सुखेश, चन्द्रमा या इसके साथ वाला ग्रह, सुखस्थ ग्रह, चतुर्थ भाव पूर्णदर्शी ग्रह, इनमें जो माता के लिए विशेष अरिष्टकारी ग्रह हो उस ग्रह की दशान्तर्दशा में माता को कष्ट जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राशयः	बैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन
मेष	शुभ में व्यय, उत्साह वृद्धि, लाभ से खर्च विशेष, प्रिय-व्यक्ति से कष्ट, कहीं यात्रा हो।	यात्रा में कष्ट, स्वास्थ्य मध्यम, धर्मकृत्य में अरुचि, कारोबार ठीक, वृथा विवाद।	माङ्गलिक कार्यों की योजनाएं, सन्तति चिन्ता, रक्त-विकार, अकस्मात् यात्रा।	आर्थिक एवं व्यवसाय की दृष्टि से मास शुभ है। शत्रु-नाश, प्रतिष्ठा वृद्धि।	शुभ में व्यय, बन्धु सुख, जीव वृद्धि, प्रिय व्यक्ति से कष्ट, रोजगार मध्यम।	कारोबार ठीक, जमीन जायदाद की चिन्ता, शुभ कार्यों की योजना, वायु पीड़ा।
वृष	बन्धु द्वारा सहायता, कारोबार की चिन्ता, स्थानान्तर का विचार, अकस्मात् लाभ।	उदर विकार, कोष में कमी, उन्नति में बाधा, बन्धुओं के कारण खर्च, हैरानी।	स्वास्थ्य मध्यम, पशुपीड़ा, कारोबार कुछ ठीक, मकानादि की चिन्ता, राज्य से भय।	सिर पीड़ा, मित्र मिलाप, घरेलू झंझटों से हैरानी, वायु विकार, लाभ कम।	सन्तति चिन्ता, पित्त पीड़ा, हैरानी, मासान्त में लाभ अच्छा, बन्धुवर्ग द्वारा खर्च।	शुभ कृत्यों की ओर झुकाव, लाभ कम, ठगी का भय, भाग्य चिन्ता, वस्त्र लाभ।
मिथुन	गृह-कलह, धर्मकृत्य में बाधा, कोष में कमी, स्त्री वा पुत्र की चिन्ता, लाभ मध्यम।	किसी से वृथा विगाड़, इच्छित सफ़लता न मिलने से उदासी, नीच से भय।	कोष-वृद्धि, लाभ अच्छा, वृथा भ्रम, चोर भय, शुभ में व्यय, पित्त पीड़ा, दुःस्वप्न।	स्वास्थ्य में गड़बड़ी, सन्तति तथा गृहादि विषयक खर्च, कारोबार ठीक।	लाभ श्रेष्ठ, मान वृद्धि, बन्धु-चिन्ता, मित्र से संतोष, अचानक खर्च की वृद्धि।	अचिन्तित श्रेष्ठ लाभ, धर्म में रुचि, सुखद यात्रा, स्त्री चिन्ता, वायु विकार।
कर्क	पुराना विचारा हुआ कार्य बने, खर्च ज्यादह, शत्रु भय, अचानक अच्छा लाभ।	शत्रु भय, स्वास्थ्य में गड़बड़ी, मित्र मिलाप, कारोबार ठीक, गुप्त चिन्ता।	सिर-पीड़ा, कारोबार मध्यम, शत्रु हानि, धर्मकृत्य में बाधा, विवाद का भय।	विवाद में जय, मकान व स्त्री चिन्ता, लाभ में रुकावट, वायु विकार, जल भय।	कारोबार वृद्धि के लक्षण, स्वास्थ्य ठीक, गृह कलह, शत्रु नाश, राजपक्ष शुभ।	स्वास्थ्य मध्यम, अचानक यात्रा, असफल नये विचार, कारोबार ठीक।
सिंह	मित्र मिलाप, वायु विकार, सन्तति कष्ट, घरेलू कार्यों से हैरानी, पशु-भय।	सिर में पीड़ा, व्यर्थ की दौड़-धूप, स्त्री चिन्ता, औषधियों पर खर्च, लाभ मध्यम।	कार्य सफल, घरेलू जीवन सन्तोषजनक, अपरिचित व्यक्ति से भय।	लाभ होते हुए भी धन की चिन्ता, जीव जन्तु से भय, सन्त-समागम, सन्तति सुख।	कार्य सफल, कारोबार ठीक, पित्त पीड़ा, महापुरुष दर्शन, किसी जीव से भय।	बन्धु चिन्ता, धर्म कार्य में खर्च, जल व अग्नि से भय, प्रियमिलाप, लाभ मध्यम।
कन्या	धर्म-कृत्य में बाधा, लाभ से खर्च ज्यादह, बन्धु विरोध, दुःस्वप्न, मानभय।	व्यापारादि का परिणाम हानि, गृह कलह, स्त्री की चिन्ता, कार्यान्तर का विचार।	किसी की सहायता से कुछ लाभ, विवाद से हानि, राज-भय, तरक्की में बाधा।	उद्योग करते हुए भी लाभ कम, दुष्ट संग, नये नये विचार, वायु पीड़ा।	कार्य-सिद्धि में रुकावट, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार, मित्र द्वारा लाभ।	उचित खर्च करते हुए भी तंगी, लाभ कम, पारिवारिक समस्याएं बढ़ें।
तुला	मित्र प्रियजनों से विवाद, कारोबार में उन्नति, शत्रु-हानि, स्त्री से खुशी।	परिश्रम करते हुए भी लाभ कम, मित्र मिलाप, स्वास्थ्य अच्छा, नये खर्च बढ़ें।	लाभ अच्छा होकर तुरन्त खर्च, व्यर्थ कलह, मित्र वियोग, सन्तति से हैरानी।	बन्धु पीड़ा, मित्र मिलाप, मान वृद्धि, लाभ श्रेष्ठ, मकानादि की चिन्ता।	अचानक लाभ, नये उद्योग सफल, सन्तति द्वारा खर्च, जन्तु भय।	अच्छे लाभ का प्रसङ्ग बने, अपमान भय, बड़ों से मतभेद, सन्तति सुख।
वृश्चि.	शत्रु पीड़ा, बन्धु मिलाप, नये उद्योग में प्रवृत्ति, ऋण भय, खर्च ज्यादह।	सन्तति कष्ट, स्थान हानि, स्वास्थ्य में बिगाड़, कारोबार की चिन्ता, धर्म में रुचि।	स्त्री पुत्र चिन्ता, वस्त्र लाभ, स्थानान्तर का विचार, लाभ से खर्च विशेष, पशु पीड़ा।	सेवक वा पड़ोसी से मन खिन्न, उदर व सिर में कष्ट, लाभ की चिन्ता।	व्यर्थ विवाद, मान-हानि-भय, किसी की सहायता से कुछ लाभ, शुभ मति।	चारों ओर से हैरानी, रोग व शत्रु भय, पैसे की तंगी, दुःस्वप्न, खर्च विशेष।
धनु	व्यर्थ कलह, राजभय, कारोबारकी चिन्ता, स्वास्थ्य खराब, खर्च से हैरानी।	गत मास की अपेक्षा लाभ अच्छा, मानसिक कष्ट, घरेलू झंझटों से हैरानी।	स्वास्थ्य में गड़बड़ी, कोई नया झगड़ा आ पड़े, शत्रु, भय, बन्धु सुख, लाभ कम।	लाभ की आशा में यात्रा, तरक्की में विघ्न, अभीष्ट कार्य सिद्धि में देरी, चोट भय।	गत मास की अपेक्षा लाभ अच्छा, खर्च विशेष, चित्त अशान्त, वाहनभय।	कारोबार में गड़बड़, शरीर पीड़ा, मासान्त में कुछ लाभ, राज भय।
मकर	पुत्र वा स्त्री की चिन्ता, सुख कम, उद्योग निष्फल, कारोबार मध्यम, वायु पीड़ा।	व्यर्थ की दौड़धूप, स्वास्थ्य में खराबी, मासान्त में लाभ, मित्र चिन्ता, कष्टप्रद यात्रा।	शुभ विचार, प्रिय व्यक्ति से कष्ट, अचानक यात्रा, किसी के सहयोग से हानि।	शत्रु भय, अर्थ व मान की चिन्ता, रोग-भय, धर्म में रुचि, बन्धु कष्ट।	उदर विकार, कोई नई चिन्ता, पुत्र स्त्री द्वारा खर्च, हैरानी, लाभ कम।	गत मास की अपेक्षा कुछ शान्ति, किसी सत्पुरुष के विचार से लाभ, पशु भय।
कुम्भ	लाभ अच्छा होते हुए भी कारोबार की चिन्ता, नये कार्य का विचार, मान वृद्धि।	व्यावसायिक जीवन में उथल पुथल, बन्धु सुख, बड़े जनों से मिलाप।	रोग भय, कारोबार ढीला, प्रिय वस्तु लाभ, सुखद यात्रा, नई योजना की सूझ।	कारोबार मध्यम, शुभ विचार, वायु विकार, अग्नि व जल भय, पशु लाभ।	लाभ अच्छा, उत्साह-वृद्धि, रोग-भय, राज्य में जय, भाग्य वृद्धि, बन्धु कष्ट।	शत्रु नाश, बड़े व्यक्तियों से लाभ, भूम्यादि की चिन्ता, मिष्ट भोजन, बन्धु मिलाप।
मीन	स्वास्थ्य ठीक, कारोबार अच्छा, यात्रा सुख, किसी आत्मीय व्यक्ति से खुशी, चोट भय।	खर्च ज्यादह, ज्वर वा मस्तिष्क पीड़ा, वृथा विवाद, कारोबार में लाभ, जीव वृद्धि।	मास के पूर्वार्द्ध में लाभ, दुष्ट से भय, गुप्त चिन्ता, राजपक्ष शुभ, सिर पीड़ा।	उत्साह वृद्धि, प्रियजनों से सन्तोष, कारोबार ठीक, शुभ में खर्च, सन्तति चिन्ता।	शत्रु नाश, नये कार्य का विचार, सन्तति से खुशी, राज्य में विजय, दुःस्वप्न।	लाभार्थ भ्रमण, वृथा खर्च, वायु विकार, मानसिक चिन्ता मित्र लाभ।

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश सं० २०१७ वि०

मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश सं० २०१७ वि०

राशयः	कार्त्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
मेष	मित्र बन्धुओं से प्रसन्नता, लाभ मध्यम, दुष्टभय, परोपकार के विचार।	बिगड़े कार्य सुधरें, स्त्री व मित्र की ओर से सुख, शुभ यात्रा।	मित्र द्वारा वचन भंग, उचित समय लाभ, शुभ कार्यार्थ यात्रा, बन्धु कष्ट।	स्वास्थ्य ठीक, गृह सम्बन्धी चिन्ता, कोई शुभ सन्देश, विवाद में जय, लाभ मध्यम।	चित्त अशान्त, कोष में कमी, स्वास्थ्य में बिगाड़, मासान्त में अच्छा लाभ।	स्वास्थ्य में साधारण विकार, कार्यवश यात्रा, मित्रबन्धु की सहायता से लाभ।
वृष	कारोबार गिरे, राजपक्ष भय, स्वास्थ्य खराब, सफर, अकारण शत्रु बनें।	यात्रा चिन्ता, सन्तति सुख, रोग भय, कार्यान्तर का विचार, मित्रों से सहायता।	मानसिक कष्ट, नवीनोद्योग का आयोजन, आशा से कम लाभ।	गत मास से आर्थिक लाभ अच्छा, सिर व छाती में पीड़ा, किसी हितैषी से चित्त खिन्न।	नये कार्य का विचार, निजी व्यवसाय की चिन्ता, घरेलू जीवन में सन्तोष।	धन हानि, रोग भय, अचानक लाभ, धर्म में रुचि, महापुरुष समागम।
मिथुन	चित्त भ्रम, सन्तति चिन्ता, लाभ मध्यम, वृथा व्यय, अभीष्ट कार्यसिद्धि में देरी।	खर्च ज्यादह, पुण्योपार्जन, उत्साह-वृद्धि, नई लाभ योजना, स्त्री सुख।	विचार अस्थिर, घरेलू झंझट, कार्य सफलता की आशा, राजपक्ष शुभ।	यात्रा में कष्ट, लाभ में रुकावट, शुभ में खर्च, वृथा चिन्ता, पैर घुटनों में कष्ट।	मान वृद्धि, कारोबार ठीक, स्त्री पुत्र से सन्तोष, राजपक्ष शुभ, विवाद में जय।	शत्रुभय, निजी व्यवसाय की चिन्ता, स्वास्थ्य में खराबी, धर्म में रुचि, उदास वृत्ति।
कर्क	गुप्त चिन्ता, प्रिय वियोग, गृह कलह, कारोबार मध्यम, वाहन भय।	धन हानि, स्वास्थ्य अच्छा, शत्रु नाश, वृथा कलंक भय, कारोबार साधारण।	मस्तक वा पैर में कष्ट, शुभ यात्रा वृथा विवाद, यथेष्ट लाभ, आलस्य वृद्धि।	लाभ होते हुए भी परेशानी, रोग भय, स्त्री चिन्ता, धर्म कार्य में प्रवृत्ति।	शुभ विचार, लाभ कम, खर्च ज्यादा, शत्रु चिन्ता, सहकर्मी से बिगाड़।	कुसङ्गति से हानि, वृथा यात्रा, कारोबार कुछ ठीक, कुटुम्ब में जीव-वृद्धि।
सिंह	कारोबार ठीक, मान वृद्धि, खर्च अधिक, व्यवसाय-वृद्धि की योजना।	सन्तति सुख, शुभ में खर्च, मित्रों द्वारा उत्साह, लाभ मध्यम, सिर पीड़ा।	किसी आत्मीय जन द्वारा अपमान, कारोबार साधारण, जुकामादि से कष्ट।	लाभ मध्यम, स्त्री पुत्र चिन्ता, मित्र मिलाप, मिष्टान्न लाभ, कुल वृद्धि।	सन्तति की ओर से खुशी, वायु विकार, शत्रु नाश, अचानक लाभ, यश प्राप्ति।	स्वास्थ्य में बिगाड़, गुप्त चिन्ता, धर्म कार्य में प्रवृत्ति, कारोबार ठीक।
कन्या	नई योजना की सूझ, विवाद भय, जिम्मेदारी के काम में कष्ट, कोष में कमी।	चित्त में शोक, धन हानि, मास के तृतीयांश में लाभ, वायु विकार।	शुभ विचार, व्यवसाय की चिन्ता, मित्रों से सहायता घरेलू कष्ट, वृथा विवाद।	व्यय अधिक, लाभ में विघ्न, वायु पीड़ा, गुप्त शत्रु भय, अकारण झगड़ा।	परिस्थिति में सुधार, चित्त में सन्तोष, व्यय विशेष से चिन्ता, विवाद भय।	रोग भय, व्यवसाय वृद्धि की योजना, मित्र-मिलाप, दुःस्वप्न, समीप की यात्रा।
तुला	आर्थिक सुधार, सन्तति सुख, बन्धुओं से अनबन, रोग भय, पशुलाभ।	नये कार्य का विचार, राजपक्ष से विजय, कारोबार ठीक, मित्र से खुशी।	मिष्ट भोजन, बन्धुओं से खुशी, अकस्मात् लाभ, वायु पीड़ा, मान वृद्धि।	लाभ अच्छा, बन्धु चिन्ता, मित्र मिलाप, राज कार्यकर्ताओं से मेल, सिर पीड़ा।	बन्धु सुख, कारोबार में गड़बड़ी के आसार, शत्रुभय, लाभ मध्यम।	झगड़े का भय, लाभ मध्यम, वृथा यात्रा, दुःस्वप्न, नई चिन्ता, स्त्री से सन्तोष।
वृश्चिक	व्यवसाय विषयक उलझन, जीव वृद्धि, मित्रों से सन्तोष, पशु कष्ट।	शत्रु भय, सिर व मस्तक में पीड़ा, लाभ में रुकावट, कमरतोड़ खर्च।	लाभ होकर भी न मिले, अकारण क्रोध, लेन देन के संकट, मासान्त में शान्ति।	सामान्य स्थिति पूर्ववत्, चिन्ता कष्ट, निजी जनों से वैमनस्य, कफ वायु पीड़ा।	उत्साह ठीक, कारोबार में सुधार, चिन्ता में कमी, अचानक लाभ, पुत्र सुख।	स्वास्थ्य में बिगाड़, पशु-लाभ, कारोबार में शनैः शनैः तरक्की, दुष्ट भय।
धनु	खर्च अधिक, धन, चिन्ता, निर्मूल झगड़ा, किसी के सहयोग से कुछ लाभ।	निजी व्यवसाय में उलझन, पुत्रादि द्वारा विशेष खर्च, मासान्त में कुछ लाभ।	लाभ कम, खर्च ज्यादह, रोग भय, धर्म में बुद्धि, चिन्ता, नये कार्य का विचार।	अपरिचित व्यक्ति से हानि-भय, कमरतोड़ खर्च, कारोबार कमजोर।	लाभ खर्च ज्यादह, स्वास्थ्य ठीक, कारोबार मध्यम, जमीन जायदाद की चिन्ता।	सन्तति सुख, मित्र मिलाप, मिथ्या कलंक, उदर विकार, लाभ कम।
मकर	लेन देन की कठिनाई, गृह कलह, वृथा यात्रा, कारोबार चिन्ता।	लाभ का काम बने, व्यवसाय की चिन्ता, मान भय, धर्म में रुचि, वृथा विवाद।	वृथा कलह, सिर वा छाती में पीड़ा, आत्मीय जनकष्ट, तरक्की में बाधा।	कारोबार चिन्ता, झगड़े से धन हानि, किसी के सहयोग से लाभ, दुष्ट भय।	मान वृद्धि, शुभ में खर्च, कारोबार कुछ ठीक, चित्त में खुशी, शत्रु नाश।	वायु विकार, अकस्मात् लाभ, वृथा विवाद, स्थानान्तर का विचार।
कुम्भ	आशा से अधिक लाभ, रोग-भय, नये घरेलू झंझट, स्थायी कामों में खर्च।	शुभ कृत्यों की ओर झुकाव, मित्र मिलाप, आर्थिक दशा ठीक, पुत्र स्त्री चिन्ता।	शत्रु पराजित, स्वास्थ्य मध्यम अचिन्तित लाभ, कार्य सिद्धि, घर में शान्ति।	पुत्र स्त्री चिन्ता, नये मित्रों से मिलाप, कारोबार ठीक, परोपकार के विचार।	निजी व्यवसाय में कमजोरी, नौकर से बिगाड़, सन्तति कष्ट, वायु विकार।	खर्च विशेष, नये कार्य में असफलता, प्रिय व्यक्ति से मन खिन्न, रोग भय।
मीन	किसी के परामर्श से लाभ, कर्मी भय, महापुरुषों के दर्शन, वृथा यात्रा।	शत्रु भय, लाभ अच्छा, पशु लाभ, पैर में कष्ट, गुप्त चिन्ता, नये कार्य में प्रवृत्ति।	जल वा अग्नि भय, कारोबार ठीक, कुटुम्बियों से सुख, सम्पत्ति की वृद्धि।	शुभ खर्च, लाभ अच्छा, इच्छित कार्य सिद्धि, धर्म में रुचि, जमीन जायदाद की चिन्ता।	स्वास्थ्य ठीक, कारोबार अच्छा, पशु लाभ, राजपक्ष से विजय, शत्रुनाश।	लाभ उत्तम, नये कामका सफल विचार, वायु विकार, मानवृद्धि, एवं मानसिक प्रसन्नता हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र शुक्ल १ को वर्षफल श्रवण

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥ विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम्। संवत्सरफलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया ॥२॥ सम्यग् विचार्य गणितं दैवज्ञजनतुष्टिदम्। मकुन्दवल्लभेनेदं तिथिपत्रं विनिर्मितम् ॥३॥ अनेन धार्मिकजनः कालज्ञानसहायिना। तिथिपत्रेण सन्तुष्टो भवत्विस्यव याच्यते ॥४॥ तिथिर्वारञ्च नक्षत्रं योगः करणमेव च। पञ्चांगस्य फलं श्रुत्वा गंगास्नानफलं लभेत् ॥५॥

चैत्र शुक्ल १ को नूतन संवत्सर प्रारंभ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वज लगावें। तोरण आदि से गृह सुशोभित करें, मंगल स्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा कर, स्त्रियाँ शिशु आदि वस्त्र-आभूषण परिधान कर उत्सव मनावें। ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे नूतन संवत्सर फल श्रवण करें। प्रातःकाल कटुनिम्ब के कोमल पत्र और पुष्प लावें, उसमें कालीमिर्च, हींग, नमक (सेंधा), अजवायन, जीरा और खांड मिला कर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शांति होती है (वर्ष पर्यन्त ज्वरादि बिमारी नहीं होती)।

पञ्चांगस्थ गणेश और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को यथाशक्ति दानादि से प्रसन्न करें, मिष्ठान्न आदि भोजन करावें, गीत (गायन) वाद्य कथा श्रवण आदि कर सम्पूर्ण दिन आनन्द से व्यतीत करें। गृहस्थियों को विलासयुक्त आनन्दपूर्वक वर्षारम्भ दिन व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष आनन्दमय जाता है।

वर्षफल श्रवण का माहात्म्य

ये चैत्रशुक्लप्रतिपत्तिथौ फलं शृण्वन्ति भक्त्या प्रतिवार्षिकं नराः। ते दुःखदारिद्र्यरुगा-दिवर्जिता नन्दन्ति लोके धनधान्यसंकुलाः ॥१॥ शाकस्य श्रवणात्सुपुण्यजननं संवत्सरस्याद्‍यतां राज्ञां राजकुलं जयो विजयते मन्त्रीफलं बुद्धिदम्। धान्यं धान्यपते रसं रसपतेः क्षेत्रेषु वृद्धिस्तथा, सस्यं सर्वसुखञ्च वत्सरफलं संशृण्वतां सिद्धिदम् ॥२॥ इतिसंवत्सरादिफलश्रुतिः।

सृष्टिक्रमवर्णन

अथवा सृष्टि के संक्षिप्त इतिहास की अवतरणिका—समस्त जगत् की उत्पत्ति स्थिति और लय कारणरूप ब्रह्मा की आयु अपने ही दिनों के मान से सौ वर्ष की होती है। अब ब्रह्मा की आयु के ५० वर्ष व्यतीत होकर, ५१ वें वर्ष के प्रथम दिन का उदय है। इस दिन की १३ घड़ी, ४२ पल, ३ विपल, ४३ प्रतिविपल व्यतीत हो चुके हैं। मनुष्यमान से ब्रह्मा की आयु का विस्तार इस प्रकार है—एक चतुर्युगी का एक महायुग होता है, उसकी सौर मान से वर्ष संख्या ४३२०००० है। इस प्रकार के एक हजार युगों का ब्रह्मा का एक दिन होता है ऐसे ब्रह्मा के हजार युगों की विष्णु की एक घड़ी होती है. विष्णु के १२ लाख युगों का रौद्रकलार्ध होता है। रुद्र के अर्बुद संख्यक युगों का अक्षरात्मक ब्रह्म होता है। ब्रह्मा के इस एक दिन में जो १४ मन्वन्तर होते हैं, उनमें से १ स्वायम्भुव, २ स्वारोचिष, ३ उत्तम, ४ तामस, ५ रैवत, ६ चाक्षुष ये छः मनु व्यतीत हो गये हैं, अब सातवां वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है, उसमें भी २७ चतुर्युगी गत होकर अठाइसवीं चतुर्युगी के ३ युग व्यतीत हो गये हैं, और यह २८ वां कलियुग है।

अब युगकाल व्यवस्था—सतयुग—कार्तिक शुक्ल नवमी बुधवार के प्रथम प्रहर श्रवण नक्षत्र वृद्धियोग में सतयुग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु १७२८००० वर्ष की थी, इसमें [illegible] चार शंखासुर को मारकर ब्रह्मा को वेद लाकर दिये, भगवान कच्छप ने पृथ्वी के रक्षार्थ मन्दराचल को पीठ पर धारणकर शेषनाग की डोर से देवदैत्यों द्वारा समुद्र-मन्थन कराकर चौदह रत्न प्रकट किये। श्री वराह जी ने हिरण्याक्ष का वध करके रसातल में गई हुई पृथ्वी का उद्धार किया। श्रीनृसिंहावतार ने हिरण्यकशिपु का वध करके भक्त प्रह्लाद की रक्षा की। इस युग में धर्म अपने चारों पद पर कायम था, गौएं कामधनु के समान होती थीं, प्रायः स्वर्ण के पात्र और सिक्के के स्थान में रत्न का परस्पर व्यवहार था। इच्छित वर्षा होती थी, एक बार बीज बोकर २१ बार काटते थे। ब्राह्मण चारों वेदों के जानकर तथा सत्यभाषी पर-द्रव्य-परस्त्री-पराङ्मुख और त्यागी होते थे। शाप देने और वरदान प्रदान करने में भी समर्थ थे। स्त्रियां पद्मिनी और पतिव्रता होती थीं। शासक (राजवंश) वर्ग न्यायपरायणान्तःकरण से प्रजा को स्वपुत्रवत् समझते हुए राज्य करते थे। वैश्य लोग सत्यवक्ता धर्मात्मा व्यापारी और शूद्र लोग सेवाधर्म में रहते हुए जीवन व्यतीत करते थ। इस युग में तीर्थ पुष्कर प्रधान था।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया चंद्रवार के द्वितीय प्रहर रोहिणी नक्षत्र शोभन योग में त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२९६००० वर्ष की थी, इसमें भगवान् के श्रीवामन, श्री परशुराम और श्रीरामचंद्र ये तीन अवतार हुए। श्री वामन जी ने राजा बलि से ३ पैर पृथ्वी दान लेकर समग्र पृथ्वी को ३ पैर में नाप बलि को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने कर्तव्य विमुख एवं अन्यायी विलासिता प्रेम में प्रमत्त अभिमानी क्षत्रियों का २१ बार नाश करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्र जी ने महाभिमानी राक्षसराज रावण का वध करके देवता और ऋषियों को निर्भय किया था। इस युग में धर्म तीन पैर का रह गया था। गौएं त्रिकाल दूध देने वाली होती थीं, प्रायः चांदी के पात्र और स्वर्ण के सिक्के का व्यवहार था, वर्षा मौके पर होती थी, एक बार बोकर सात बार काटते थे। ब्राह्मण तीन वेदों के वक्ता और किञ्चिन्न्यून तपोनिष्ठ परस्त्री परद्रव्य से पराङ्मुख होते थे, वर शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां चित्रिणी पतिव्रता होती थीं। इस युग में सूर्यवंशी धर्मात्मा क्षत्रियों का राज्य था। विचित्र विमानों द्वारा वह इन्द्र लोक पर्यन्त भी जाते थे। वैश्य लोग सत्यवादी और सत्य की तुला पर तोलते थे। शूद्र स्वधर्मानुसार सेवा में तत्पर रहते थे। इस युग में तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था। द्वापर—माघ कृष्ण ३० शुक्रवार तृतीय प्रहर धनिष्ठा-नक्षत्र वरीयान् योग में द्वापर युग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु ८६४००० वर्ष की थी। इसमें पूर्ण ब्रह्म के श्रीकृष्ण, श्रीबलदेव य दो अवतार हुए। भगवान् श्रीकृष्ण ने दैत्यराज कंसादि दुष्टों का वध किया, तथा संसारार्णवमग्न जीवों के उद्धारार्थ अर्जुन को लक्ष्य करके गीता ज्ञान का उपदेश दिया। श्रीबलदेवजी ने सामयिक लीला करते हुए दुष्टों का नाश करके धर्म का उद्धार किया। इस युग में धर्म दो पैर वाला रह गया था, गौवें दो वक्त घटपूर्ण दुग्ध देने वाली होती थीं। प्रायः ताम्र, पित्तल के पात्र और स्वर्ण तथा रौप्यमयी मुद्राओं का व्यवहार होने लगा था। वर्षा समय पर हो जाती थी, एक बार अन्न का बीज बोकर ३ बार काटते थे। ब्राह्मण लोग दो वेदोंके पारंगत होते थे और कुछ असत्य विशेषतया सत्यवक्ता तथा तप यज्ञ देव-पूजनादि करने वाले किञ्चित् लोभयुक्त वाक्यसिद्धि वाले अर्थात् वर और शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां शंखिनी जाति की सुशीला धर्मयुक्ता होती थीं। इस युग में धर्मप्राण चंद्र-वंशी राजा हुए। प्रायः चारों वर्ण अपने २ वर्णाश्रम धर्म पर कायम थे, परस्त्री, परद्रव्य से लोग डरते थे। इस युग में तीर्थ कुरुक्षेत्र प्रधान था। कलियुग—भाद्रपद कृष्ण [illegible]

आयु ४३२००० वर्ष की है। इसमें भगवान् के अवतार श्री बुद्ध [illegible] ... अर्घ्य मासे [illegible] भाद्रपदे महामेघः, अन्नं समम्, आश्विनादिपञ्चमासेषु सुभिक्षम्, सर्वरसकसमता लोकः सुखी गऊणां पूजा महिमवृद्धिः राजा धर्मी। अथास्मिन् वर्षे राजा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आयु ४३२००० वर्ष की है। इसमें भगवान् के अवतार ... जिनमें अहिंसा धर्म का उद्धारक श्री बुद्धावतार तो हो चुका, और कल्कि अवतार जब कलियुग के ८२१ वर्ष रहेंगे तब संभल ग्राम में विष्णुयश ब्राह्मण के घर होगा। इस अवतार द्वारा दुष्टों का नाश होकर पृथ्वी पर लुप्तधर्म की स्थापना के साथ २ न्यायपरायण क्षत्रिय राज्य भी कायम होगा। इस युग में एक पैर वाला धर्म रह जायेगा। गौएँ दूध कम देंगी। मृण्मय पात्र और ताम्रपात्र तथा कागज मुद्रा प्रायः चलेंगी। अतिवृष्टि और अनावृष्टि से देशों में भय का संचार होगा। ब्राह्मण लोग वेद ज्ञान से शून्य तथा स्नान संध्या तपश्चर्या से भी हीन होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को तिलांजलि दे देंगे। वैश्य लोग व्यापार में असत्य व्यवहार विशेषरूप से उपयोग में लाने लगेंगे। शास्त्र निन्दित मृतचर्म (जूता आदि) के व्यापार से भी लाभ उठायेंगे। शूद्र लोग पाखण्डी होकर बहुधा उच्चवर्णवालों के उपदेष्टा होंगे। प्रजा में वर्णसंकरत्व बढ़ जायेगा, धूर्तों की पूजा होगी, अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। स्त्रियां ज्यादा हस्तिनी पैदा होंगी. व्यभिचारिणी स्त्री अपने को सती कहेंगी। पतिव्रता कहीं-कहीं देखने में आयेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में होकर चलेंगे। स्त्रियों के छोटी आयु में गर्भ होने लगेगा। पिता कन्या विक्रय करेगा। गौ ब्राह्मण की हत्या से भय न करेंगे। पुत्रों का माता पिता के साथ कारण प्रेम रहेगा। राजव्यवस्था में धर्म का स्थान शून्य के बराबर होगा। धर्म-कर्म और तीर्थ पर लोगों की श्रद्धा कम होगी। प्रधान तीर्थ गंगा हरिद्वार होगा।

अथ कलिरूपं चोक्तं चिरन्तनैः—पिशाचवदनः क्रूरः कलिश्च कलहप्रियः। धृत्वा वामे करे शिश्नं दक्षे जिह्वाञ्च नृत्यति ।' अथ कलिमाहात्म्यम्—धर्मः प्रव्रजितस्तपः प्रचलितं सत्यं च दूरं गतं, पृथ्वी मन्दफला नराः कपटिनश्चित्तञ्च शाठ्योजितम् । राजानोऽर्थपरा अरक्षणपराः पुत्राः पितुर्द्वेषिणः, साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ दुर्युगे ॥ निर्बीजा पृथिवी निरौषधिरसा नीचा महत्त्वं गताः, भूपाला निजधर्मकर्मरहिता विप्राः कुमार्गं गताः । भार्या भर्तृविरोधिनी पररता पुत्राः पितुर्द्वेषिणो हा ! कष्टं खलु वर्तते कलियुगे धन्या मृता ये नराः ॥ न देवे देवत्वं कपटपटवस्तापसजनाः, जनो मिथ्यावादी विरलतरवृष्टिर्जलधरः । प्रसन्ना नीचाश्च अवनिपतयो दुष्टमतयो, जनाः शिष्टा नष्टा अहह ! कलिकालो विलसति ॥ कलौ गंगायाः स्थितिः—पृथिवी गंगया हीना भविष्यत्यन्तिमे कलौ तदैव विष्णुस्त्यजति मेदनीं नरपुंगवः ॥ भगीरथं प्रति गंगावाक्यञ्च—यावद्धरण्यां तुलसी प्रपूज्यते गुरुर्नभस्थो दिवि कल्पपादपः । यावत्समुद्रं वड़वानलश्च वसामि तावत्तव चक्रखाते ॥ इति ॥ कलौ दशसहस्राणीति वाक्यमन्तिमकलौ ज्ञेयम्, नान्येषु कलिष्विति ॥

अथ वर्षराजादिफलविचारः सं० २०१७

अथ श्रीमन्नृपति-धर्ममूर्त्तिविक्रमादित्यानां राज्यसिंहासनाध्यासनादतीताब्दानि तत्संवत्सराभिधानि २०१७, श्रीमन्नृपतिचक्रचूड़ामणिशकजातियवननिर्बीजक-शालिवाहन-राज्यादुगतहायनानि तच्छकाभिधानि १८८२, श्रीकृष्णजन्म सं. ५१९६, श्रीमहावीर जैन निर्वाण-संवत्सरः २४८६–८७, ईस्वी सन् १९६०–६१, हिजरी सन् १३७९–८०, फसली सन् १३६७-६८, वर्षादौ गुरुमानेन प्रभवादिषष्टयब्दानां मध्ये रुद्रविंशत्यां 'प्रमादी' संवत्सरः, तस्य फलम्—'प्रमादिवत्सरे तत्र मध्यसस्यार्धवृष्टयः । प्रजाः कथंचिज्जीवन्ति समात्सर्याः क्षितीश्वराः ॥" अर्थात् प्रमादी वर्ष में जल अन्न मध्यम हों, प्रजा में रोगपीड़ा हो और राजाओं में मत्सरता हो। तथा च—प्रमादिनि वत्सरे बुधः स्वामी, कंकणे दुर्भिक्षं विग्रहः, चैत्रे धान्य-मन्दता, वैशाख–ज्येष्ठयोर्धान्यसंग्रहः, आषाढे नवीनमुद्रा, परमल्पमेघः, श्रावणस्यार्द्धे मेघवर्षा,

... महामेघः, अन्नं समम्, आश्विनादिषण्मासेषु सुभिक्षम्, सर्वरसकससमर्घता, लोकः सुखी, गुरूणां पूजा, महिमवृद्धिः, राजा धर्मी। अथास्मिन् वर्षे राजा चन्द्रः, मंत्री बुधः, सस्येशः शनिः, धान्येशो गुरुः, मेघेशो भौमः, रसेशश्चन्द्रः, नीरसेशः शुक्रः, फलेशो भौमः, धनेशः शुक्रः, दुर्गेशो भौमः।

राजा चन्द्रस्तस्य फलम्—"चन्द्रे नृपे मंगलशोभनानि प्रभूतवृष्टिः प्रचुरं च धान्यम् । सौख्यं जनानामुदयो नृपाणां प्रशाम्यति व्याधिजरा नृपाणाम् ॥" इस वर्ष राजा चन्द्र होने से लोगों में शुभ मंगल हो, वर्षा बहुत हो खेतियां अच्छी हों। मनुष्यों में सुख रहे, राजाओं का उदय हो, और लोगों की सब व्याधियां दूर हों। मन्त्री बुधस्तस्य फलम्—"शशिसुते शुभमंत्रिसमागते स्वपतिना रमते मदनक्रियाम् । बहु धनं बहुवादिसमन्वितं यवमसूरचणान्नमहर्घताम् ॥" बुध के मन्त्री होने से विलास अधिक, धन बहुत एवं मसूर चने महंगे हों। सस्येशः शनिस्तस्य फलम्—"रविसुतो यदि धान्यपतिर्जना नृपतिभिः परिपीडितविग्रहाः गदभयं तुषधान्यहरं सदा दुरितवाद-विवाद-युताः नराः ॥" शनि के सस्येश होने से लोग राजभय से पीड़ित हों। रोग बढ़े, गेहूं आदि की खेती खराब हो। मनुष्य खोटे वाद-विवाद में लगे रहें। धान्येशो गुरुस्तस्य फलम्—"गुरौ धान्यपतौ याते यवगोधूमशालयः। पच्यन्ते सर्वदेशेषु यज्वानो ब्राह्मणादयः ॥" गुरु के धान्याधिप होने से इस वर्ष गेहूं, चावल अधिक हो। ब्राह्मण लोग यजन-याजन में लगे रहें। मेघेशो भौमस्तस्य फलम्—"अवनिजे जलदस्य पतौ भुवि श्रुति-विचार-विहीन-धरामराः। क्वचिदपि प्रचुरं जलमल्पकं क्वचिदपि प्रशमं बहुतापदम्॥" मंगल के मेघेश होने से ब्राह्मण लोग वेदविचार से हीन हों। कहीं वर्षा कम हो कहीं अधिक। रसेशश्चन्द्रस्तस्य फलम्–"यदि विधूरसपो भुवि मानवो नवनवां युवतिं बुभुजे प्रियाम्। जलधरा बहुवारिधि–धायका रसवती धन-धान्यवती मही ।" चन्द्र के रसेश होने से मनुष्यों को अधिक विलास प्राप्त हो, वर्षा अच्छी एवं पृथ्वी धन धान्य से भरपूर रहे। नीरसेशः शुक्रस्तस्य फलम्–"कर्पूरागुरुगन्धानां हेममौक्तिक-वाससाम्। अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो भृगुर्यदा ॥" नीरसेश शुक्र कपूर, अगर, गन्ध, सुवर्ण, मोती और कपड़े को सस्ता करे। फलेशो भौमस्तस्य फलम्—फलपतिर्यदि भतनयो भवेन्न बहुपुष्प-फलान्वितपादपाः। गदभयान्वित-देशजनाः सदा नृपतयो बहुविग्रहकारकाः ॥" मंगल के फलेश होने से इस वर्ष फल कम, रोग भय एवं युद्ध हों। धनेशः शुक्रस्तस्य फलम्—"द्रविणपो भृगुजो द्रविणैर्युता समधनाः सकला ननु मानवाः। समसुखाः क्रयविक्रयजीविनो नृपतयो जनपालनतत्पराः ॥" सब मनुष्य समान धन, एवं सुख वाले हों, क्रय विक्रय में लाभ रहे। राजा लोग प्रजा का पालन करें। दुर्गेशो भौमस्तस्य फलम्—"अवनिजो गढनायकतां गतो विविधदुःखवियोगसमन्विताः। जनपदेषु जनाः क्रयविक्रये भयविशेषतया न फलं क्वचित् ॥" मंगल के दुर्गेश होने से जन सुखी हो। खरीदने बेचने में अधिक भय होने से लाभ कुछ न हाथ लगे।

नव मेघों में वायु नामक मेघ का फल—वर्षा का अभाव एवं धान्य नाश हो। द्वादश नागों में वृष नाग का फल—अन्न कम एवं ईति का भय हो।

रोहिणी वास—इस वर्ष रोहिणी का वास सन्धि में है। और समय का वास वैश्य के घर में है। अतः वर्षा खण्डशः हो। समय का वाहन—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को चंद्रवार होने से समय का वाहन मृग है। शनि की दृष्टि फाल्गुन शुक्ल २ तक पश्चिम में एवं उसके बाद उत्तर में है। फल—इन दिशाओं के प्रदेशों में उपद्रव एवं रोगभय से कष्ट हो। इस वर्ष सोमवती अमावस्यायें तीन हैं, वैशाख, भाद्रपद एवं माघ में। बुधाष्टमी भी ३ हैं। वैशाख शुक्ल, आश्विन शुक्ल एवं फाल्गुन शुक्ल में।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

अथ वर्षादीनां विश्वामानम्—वर्षा विश्वे १३, धान्य ११, तृण १७, शीत ९, तेज ९, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ९, तृषा ७, निद्रा १५, आलस्य ३, उद्यम ७, शान्ति ५, क्रोध ५, दम्भ ५, पाखण्ड ३, लोभ १५, मैथुन ९, रस १३, फल ११. उत्साह ३, उग्रता १७, पाप १३, पुण्य ९, व्याधि ९, व्याधिनाश १७, आचार १, अनाचार १५, मृत्यु ११, जन्म ७, देशोपद्रव ५, देशस्वास्थ्य ७, चौर १५, चौरनाश १३, अग्नि १, अग्निशान्ति १५, उद्भिज्ज ७, जरायुज (मनुष्य एवं गौ पशु आदि) ३, अण्डज (पक्षी तथा सर्प आदि) १३, स्वेदज (पसीने से उत्पन्न होने वाली जूं आदि) ९, टिड्डी १७, तोता १९, मूषक ९, सोना १३, ताम्बा ९, स्वचक्र ९, परचक्र १७, वृष्टि ११, वृष्टिनाश ११, संवत् विश्वा ५;

अथ वर्षस्तम्भचतुष्टय-विचारः—इस वर्ष जलस्तम्भ रुपये में १२ आने हैं। फल—वर्षा अच्छी हो। तृणस्तम्भ १५ आने हैं। फल—घास अच्छी हो। वायुस्तम्भ १ आना है। फल—वायु अधिक न बहे। अन्नस्तम्भ रुपये में ३ आना हैं। फल—अन्नोत्पत्ति कम हो।

अथ आर्षमानम् (वर्ष रक्षा के ४ किले)—पहिला आर्ष गतवर्ष पौष की अमावस्या को मूलनक्षत्र १९ विश्वा है। दूसरा आर्ष अक्षय ३ को रोहिणी नक्षत्र १७ विश्वे है। तीसरा आर्ष श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को श्रवण १७ विश्वे है। चौथा आर्ष कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को कृत्तिका का अभाव है। अतः यह वर्ष आर्षमान के विचार से मध्यम है

"अखै तीज रोहिणी नहीं होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणों हीन विचारौ, कार्तिक पुण्यों कृत्तिका टारौ।
महीमांह खलबली प्रकाशै, कहै भड्डली साख विनाशै॥"

अथ नववर्षप्रवेशः—गत सं० २०१६ वि. चैत्रकृष्ण ३० रविवार को इष्टघट्यादि १५।४ पर मिथुनलग्न के २५ अंश पर नववर्ष प्रवेश होगा। युद्ध बहुत हों, पूर्व में खेती बिगड़े, उत्तर एवं दक्षिण में वर्षा और धान्य बहुत हो। पश्चिम में कम वर्षा तथा छत्र भंग हो। मध्य देश में आधी उत्पत्ति और पशुओं में रोग हो। **वर्षेशलग्नम्**—सं. २०१७ वि. वैशाख कृष्ण २ बुधवार को ९।४६ इष्ट पर मिथुन के ७ अंश पर श्रीसूर्यदेव मेषराशि में प्रवेश करेंगे। राजा तथा प्रजा को हानि पहुँचे। **आर्द्राप्रवेशकालिकफल-विचारः**—श्री सं. २०१७ वि. आषाढ़ कृष्ण १३ मंगलवार को इष्ट ३४।४ धनु लग्न के १ अंश पर श्री सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। वार मंगल का फल—युद्ध आदि का भय हो। नेताओं का अशुभ हो। नक्षत्र कृत्तिका का फल—अग्नि भय एवं वृष्टि अधिक हो। योग धृति का फल—सुभिक्ष हो। समय सायंकाल का फल—सुभिक्ष हो।

सूचना—राजा का फल काश्मीर व अफगानिस्तान में विशेष होगा, मन्त्री का वाल्हीक और मालव में, सस्येश का पश्चिम विदेश में, धान्येश का नर्मदा किनारे तथा मध्य प्रदेश में, मेघेश का मगध देश में, रसेश का कोंकण, मगध में, नीरसेश का मालवादेश में, फलेश, धनेश और दुर्गेश का फल सब जगह विशेष होता है।

"इतीदं वत्सरफलं वत्सरादितिथौ शुभम्। यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्॥"

अथ लाभव्ययचक्रम्

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
लाभः	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
व्ययः	१४	८	५	२	१४	५	८	१४	५	८	८	५

लाभ व्यय देखने की रीति—लाभ व्यय के अंकों को जोड़ कर एक घटावे और ८ का भाग दे। १।२।६।७ बचे तो वर्ष में लाभ उत्तम होवे और शेष ३।४।५।० बचे तो लाभ बहुत कम होवे और चिन्ता भी रहे।

वर्षलग्नम्

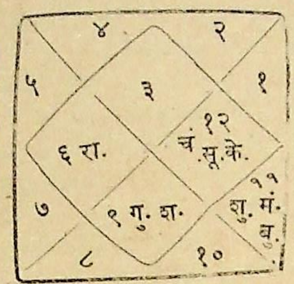

वर्षेश (जगत्) लग्नम्

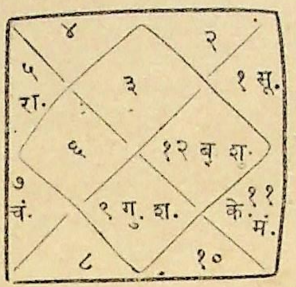

आर्द्रा प्रवेश लग्नम्

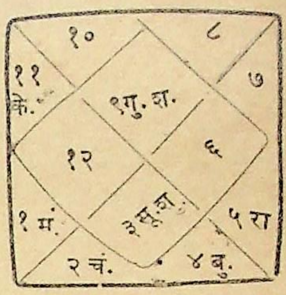

जगल्लग्न से व्यक्तिगत फल विचार—अपने जन्म लग्न से जगल्लग्न जिस स्थान में आवे वह यदि शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो और बलवान् हो तब वर्ष में उस भाव की वृद्धि होगी। यदि पापी ग्रह की दृष्टि अथवा योग होवे तो उस भाव की हानि होगी और जन्मलग्न, जन्मराशि और वर्ष लग्न से यदि वर्षेश (जगल्लग्न) ८वें, १२ वें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होता।

जन्मलग्नाज्जगल्लग्न फलम्—१. देहसुखम् २. धनलाभः ३. कुटुम्बवृद्धिः ४. मित्र-सौख्यम् ५. पुत्रसौख्यम् ६. शत्रुजयः ७. स्त्रीसुखम् ८. रोगभयम् ९. धर्मलाभः १०. धन-लाभः ११. लाभसुखम् १२. व्ययदुःखम्।

सर्पयुग्मदर्शनशान्तिः—सर्पयुग्मं यदा पश्येत्तदा हानिः प्रजायते। अर्थहानिर्भवेत्तस्य शरीरे व्याधिपीडनम्॥ तत्र चाष्टोत्तरशतं जुहुयादाज्यसंयुतम्। नमोऽस्तु सर्पेभ्य इति गद्ग्नीं च यथाविधि। मृत्युञ्जयस्य प्रतिमामग्निकेति प्रपूजयेत्॥

श्री वि० संवत् २०१७ शाक १८८२ चैत्र शुक्लपक्ष १ | तारीख | चन्द्र | भा. स्टै. टा. उदय कालिक | (२८मार्च से ११अप्र.तक स.१९६०ई.) अयन एवं गोल उत्तर। वसन्त ऋ

प्र. अ. रा. घ. | सू. उ. | ग्रहदर्शन—श. ब. मं. सूर्योदय से पहिले पूर्व-क्षितिज से उत्तरोत्तर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि० संवत् २०१७ शाक १८८२ चैत्र शुक्लपक्ष १

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	तारीख प्र.	अं.	रा.	मु.	चन्द्र सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सायन सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रहदर्शन—शु. बु. मं. सूर्योदय से पहिले पूर्व-क्षितिज से उत्तरोत्तर ऊपर की ओर उठे एवं गु. श. याम्योत्तर वृत्तासन्न दीखेंगे। 🕉ऋतु
३०	३२	१	चं.	१५	५	रे.	३२	७	ऐं.	४१	३	ब.	२५	५	१६	२८	८	२९	मे. ३२।७	६	२३	६	३६	११	१४	६	४०	चन्द्रदर्शन, उ. शृं. उन्नत, पञ्चक स. ३२।७, चान्द्रसंवत्सर 🕉
३०	३७	२	मं.	१६	२४	अ.	३५	११	वै.	३९	५०	को	१६	२४	१७	२९	९	श१	मेष	६	२२	६	३७	११	१५	५	५५	शव्वाल मु. १०, पू. भा. में बुध २।३४, इदुलफितर,
३०	४२	३	बु.	१८	५६	भ.	३९	२७	वि	३९	२३	त.	१८	५६	१८	३०	१०	२	वृ. ५५।५०	६	२०	६	३७	११	१६	५	९	भ. ५०।४६ उ., रेव. में सूर्य ३५।२१, गणगौरीपूजा,
३०	४६	४	गु.	२२	३७	कृ.	४५	१	प्री.	३९	५१	वि	२२	३७	१९	३१	११	३	वृष	६	१९	६	३७	११	१७	४	२०	भ. २२।३७ या., 🕉 नवरात्र-प्रारम्भ, वर्षफलश्रवण,
३०	५१	५	शु.	२७	१०	रो.	५१	७	आ.	४०	५४	बा	२७	१०	२०	अ१	१२	४	वृष	६	१८	६	३८	११	१८	३	२८	अप्रैल ४, ता. ३०
३०	५५	६	श.	३२	१७	मृ.	५७	४०	सौ.	४२	२०	तै.	३२	१७	२१	२	१३	५	मि. २४।२३	६	१७	६	३९	११	१९	२	३४	शत. में मंगल १६।२३, मेला माई सरखाना,
३१	०	७	र.	३७	३४	आ.	६०	०	शो.	४३	५०	ग.	४	५५	२२	३	१४	६	मिथुन	६	१६	६	४०	११	२०	१	३७	भ. ३७।३४ उ., मीन में शुक्र ५६।३१,
३१	५	८	चं	४२	३३	आ.	४	१२	अ.	४५	१०	वि.	१०	३	२३	४	१५	७	क. ५३।४७	६	१४	६	४०	११	२१	०	४०	भ. १०।३ या., श्रीदुर्गाष्टमी, मेला श्रीमनसादेवी,
३१	१०	९	मं.	४६	५२	पुन.	१०	१८	सु.	४६	१	बा	१४	४२	२४	५	१६	८	कर्क	६	१३	६	४१	११	२१	५९	३९	मू. ४ में गु. ३८।२, श्रीरामनवमी
३१	१४	१०	बु.	५०	१४	पु.	१५	४२	धृ.	४६	५	तै.	१८	३३	२५	६	१७	९	कर्क	६	११	६	४१	११	२२	५८	३६	उ. भा. में शुक्र ३९।१२,
३१	१९	११	गु.	५२	३१	आश्ले.	१९	५९	शू.	४५	१३	ब.	२१	२२	२६	७	१८	१०	सि १९।५९	६	१०	६	४२	११	२३	५७	३०	भ. २१।२२ उ. ५२।३१ या., कामदा ११ व्रत स्मा. वै.,
३१	२३	१२	शु.	५३	२६	म.	२३	९	गं.	४३	३१	ब.	२२	५८	२७	८	१९	११	सिंह	६	९	६	४३	११	२४	५६	२३	कामदा ११ व्र. नि.,
३१	२८	१३	श.	५३	४	पू.फा.	२५	२	वृ.	४०	४४	को	२३	१५	२८	९	२०	१२	कं. ४०।१२	६	८	६	४३	११	२५	५५	१५	शनिप्रदोषव्रत, श्रीजैन महावीर जयन्ती,
३१	३२	१४	र.	५१	३०	उ. फा.	२५	४१	ध्रु.	३६	५६	ग.	२२	१७	२९	१०	२१	१३	कन्या	६	७	६	४४	११	२६	५४	६	भ. ५१।३० उ., मीन में बुध ४२।५,
३१	३७	१५	चं.	४८	४५	ह.	२५	८	व्या	३२	११	वि.	२०	७	३०	११	२२	१४	तु. ५४।२१	६	६	६	४४	११	२७	५२	५४	भ. २०।७ या., सत्य. व्रत, वैशाख स्ना. प्रा.

चैत्र शुक्ल ८ चन्द्रवार इष्ट ४४।२५, के. अहर्गण २१९१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१०	१०	८	११	८	५	११
२१	८	२४	९	०	२४	०	०
४२	३३	१२	५७	५८	३९	२४	२६
१४	४२	०	२१	५०	०	४	४
५९	४६	५१	२	७३	२	३	३
३	८	२५	४९	५०	१२	११	११
उदय	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

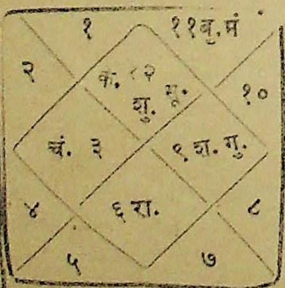

इस पक्ष में–भारतीयप्रजा में सुख शान्ति रहेगी। परन्तु शनि. गुरु स्थितिवशात् कहीं ट्रेन या वायुयान की दुर्घटना होगी। राष्ट्रों की अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं उलझेंगी। ति० ३ के बाद २४ दिन के भीतर कोई विदेशी उच्चाधिकारी या वैज्ञानिक भारत में आयेंगे। यहाँ रुई के भाव में २०-२५ टका की घटा-बढ़ी होकर अन्त में तेजी रहेगी। मूंग, मोठ, गेहूं, चावल में भी कुछ तेजी रहेगी। ति. ८ से चान्दी में काफी धमाके से तेजी आयगी और यहाँ से गेहूं, बिनोला में मन्दी का रुख होगा। गुड़, खांड आदि में साधारण मन्दी रहेगी। औद्योगिक मिल शेयरों में खास घटा बढ़ी होगी। हल्दी, राई, जीरा, कालीमिर्च और फौलाद-लोहे में तेजी के योग हैं। किसी टाटा-डिफई क्षेत्र में कहीं भारी दुर्घटना होगी।

चैत्र शुक्ल १५ चन्द्रवार इष्ट ४४।४५, के. अहर्गण २१९८

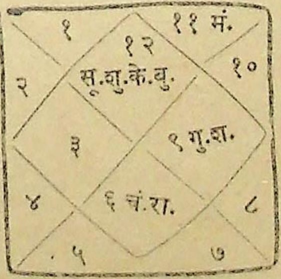

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१०	११	८	११	८	५	११
२८	१३	१	१०	९	२४	०	०
३४	५६	१०	१२	३५	५२	१	१
५८	२७	५२	५८	४०	२०	४९	४९
५८	४६	७०	१	७३	१	३	३
१०	५	५१	२६	५०	२९	११	११
उदय	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाशलक्षण–ति. ५,६ ति. १२से १५ तक कहीं२ बादलचाल बून्दाबान्दी हो। दक्षिण भारत में आंधी तूफान से कहीं हानि हो

"**शकुनविचार**–यदि द्वितीया को चंद्र श्यामरंग के बादलों से ढका हो और अस्त समय फिर दृष्टिगोचर होजाय, तो घृतादि वस्तु की कीमत बढ़े। "चैत्र शुदी जो पंचमी दक्षिण पूर्व वाय, वर्षा भी होवे कुछ भादों तेज बिकाय ॥"

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रहदर्शन—सूर्योदय से पहिले शु. बु. पूर्व क्षितिज से ऊपर परस्पर समीपस्थ एवं मं. उनसे कुछ ऊपर रहेगा। इसी समय गु. श. याम्योत्तर वृत्त से पश्चिम की ओर झुके दीखेंगे। + ग्रीष्मऋतु
३१	४१	१	सं.	४५	५	चि.	२३	३४	ह.	२६	३८	बा.	१६	५५	३१	१२	२३	१५	तुला	६	५	६	४५	११	२८	५१	४१	उ.फा. १ सिंह में राहु, पू.भा. ३ कुम्भ में केतु १९।०,
३१	४६	२	बु.	४०	२७	स्वा.	२१	१०	व.	२०	२५	तै.	१२	४६	वै१	१३	२४	१६	तुला	६	३	६	४५	११	२९	५०	२६	सं. अश्वि. मेषार्क ९।४६ मु. १५, पुण्य २५।४६ तक, उ.भा.म बुध*
३१	५०	३	गु.	३५	१२	वि.	१७	५९	सि.	१३	३२	व.	७	४९	२	१४	२५	१७	वृ. ३१।४७	६	२	६	४६	०	०	४९	९	भ. ७।४९ उ. ३५।१२ या., श्री गणेश ४ व्रत
३१	५४	४	शु.	२९	३०	अनु.	१४	१९	व्य.	५८	१५/४३	व.	२	२१	३	१५	२६	१८	वृश्चिक	६	१	६	४७	०	१	४७	५०	गुड फ्राइडे *३२।३३, मेला वैशाखी,
३१	५९	५	श.	२३	२९	ज्ये.	१०	१७	प.	५०	५९	तै.	२३	२९	४	१६	२७	१९	ध. १०।१७	६	०	६	४८	०	२	४६	२७	
३२	३	६	र.	१७	२४	मू.	६	७	शि.	४३	२१	व.	१७	२४	५	१७	२८	२०	धनु	५	५९	६	४८	०	३	४५	१	भ. १७।२४ उ. ४४।२६ या., रेव. में शुक्र २९।५०, ईस्टर सण्डे,
३२	८	७	चं.	११	२९	पू. षा.	२/१	१/१५	सि.	३५	५१	ब.	११	२९	६	१८	२९	२१	म. १६।१४	५	५८	६	४९	०	४	४३	३४	
३२	१२	८	मं.	५	५०	श्र.	५४	१८	सा.	२८	४१	कौ.	५	५०	७	१९	३०	२२	मकर	५	५७	६	४९	०	५	४२	५	पू. भा. में मंगल ३८।४९, गुरु वक्री ५५।८, अगस्त्य अस्त,
३२	१६	९	बु.	०	४२	ध.	५२	२२	शु.	२२	२	ग.	०	४२	८	२०	३१	२३	कुं. २३।४०	५	५६	६	५०	०	६	४०	३४	भ. २८।३१ उ. ५६।२० या., पञ्चक प्रा. २३।४०, सा. बुध म× ×सूर्य ३।३९, ग्रीष्म प्रा.
अवम		१०	बु.	५६	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	
३२	२१	११	गु.	५२	४८	श.	५०	३७	शु.	१६	२	ब.	२४	३४	९	२१	वै१	२४	कुम्भ	५	५५	६	५१	०	७	३९	०	रा. सौ. वैशा. प्रा., वरूथिनी ११ व्र. स्मा.,
३२	२५	१२	शु.	५०	१७	पू. भा.	४९	५२	ब्र.	१०	४६	कौ.	२१	३२	१०	२२	२	२५	मी. ३५।३	५	५३	६	५१	०	८	३७	२३	वरूथिनी ११ व्र. वै. नि.,
३२	२९	१३	श.	४८	५८	उ. भा	५०	१७	ऐं.	६	११	ग.	१९	३७	११	२३	३	२६	मीन	५	५२	६	५२	०	९	३५	४४	भ. ४८।५८ उ., रेव. में बुध ६।११, शनि प्रदोष व्रत,
३२	३४	१४	र.	४८	५६	रे.	५१	५७	वै.	२	५१	वि.	१८	५७	१२	२४	४	२७	मे. ५१।५७	५	५१	६	५३	०	१०	३४	३	भ. १८।५७ या., पञ्चक स. ५१।५७, वरुण मार्गी १५।१७,
३२	३८	३०	चं.	५०	११	अ.	५४	५३	वि.	०/५९	२४/१	च.	१९	३३	१३	२५	५	२८	मेष	५	५०	६	५३	०	११	३२	२०	सोमवती ३०

वैशाखकृष्ण ८ मंगलवार इष्ट ४५।८, के. अहर्गण २२०६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१०	११	८	११	८	४	१०
६	२०	११	१०	१९	२५	२९	२९
२४	४	३७	१९	२६	१	३६	३६
४१	४८	४४	४७	२०	२८	२३	२३
५८	४६	८७	०	७३	०	३	३
३४	१	४४	१	५०	४२	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

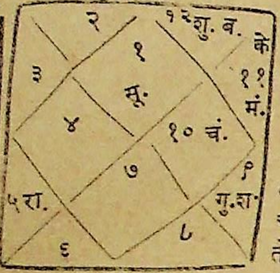

इस पक्ष में–प्रजा में मंगलकृत्य अधिक हों। कहीं मजदूर वर्ग एवं पूंजीपतियों में परस्पर वैमनस्य व उपद्रव का भय हो। पश्चिमी राष्ट्रों में मतभेद बढ़े। भारत में भी कहीं शासन-विरोधी तत्त्व परिस्थिति से लाभ उठाकर भावी कलह-उपद्रवों का बीजारोपण करेंगे। पाकिस्तान में भी आन्तरिक कलह का बीज अंकुरित होगा। प्रजा में चोर भय रहे और प्रबल वायु चले। यहां पहले अनाज, रूई, चान्दी में मन्दी और बिनौला में तेजी का असर रहेगा। ति. ७ से चांदी-सोना में तेजी रहेगी।

वैशाखकृष्ण ३० चन्द्रवार इष्ट ४५।२५, के. अहर्गण २२१२

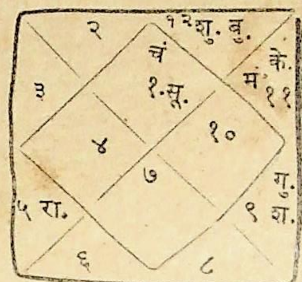

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१०	११	८	११	८	४	१०
१२	२४	२०	१०	२६	२५	२९	२९
१५	४०	५३	१७	४९	४	१७	१७
३४	३९	१०	१	१६	९	१८	१८
५८	४५	९८	१	७३	०	३	३
२२	५६	४१	८	४९	५	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

सब प्रकार के अनाज, गुड़, हींग, सेंधानमक, शहद, तेल, तिल, घी संग्रह करके तीसरे या छठे महीने या मार्गशीर्ष में बेचने से लाभ रहेगा। ति. १ को जहां सूर्य बादलों में उदय हो वहां अनाज की उपज अच्छी रहे।

आकाशलक्षण—ति० १ से ५ तक तथा ति० ११, १२ को कहीं २ बादल चाल बूंदाबांदी के योग हैं। पश्चिमी राजस्थान, मध्यप्रदेश और बंगाल में गर्मी बढ़ने लगेगी। उत्तर भारत, पंजाब आदि में दिन में गर्मी व रात को कुछ शीत हो।

शकुनविचार—वैशाखवदी आठ दिना बिजली गर्जन होय। संवत अच्छा जानिये संचय करो न कोय॥

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

वि. संवत् २०१७ शाक १८८२ वैशाख शुक्लपक्ष ३ | तारीख | चन्द्र | भा. स्टै. टाईम | उदयकालिक | (२६ अप्रैल से ११ मई तक सन १९६० ई०) अयन एवं गोल उत्तर |→

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०१७ शाक १८८२ वैशाख शुक्लपक्ष ३ | तारीख | चन्द्र | भा. स्टें. टाईम | उदयकालिक | (२६अप्रैल से ११मई तक सन्१९६०ई०) अयन एवं गोल उत्तर ।→

ता.मा. घ.प.	ति.	वा.	घ.प.	न.	घ.प.	यो.	घ.प.	क.	घ.प.	प्र. कैला.	अं. आफिस	रा. कैला.	मु. शकावा	संचार	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा. अं. क. वि.	ग्रहदर्शन–ति० १० को बुध पूर्व में अस्त होगा । प्रातः मं० शु० पूर्व क्षितिज में ऊपर नीचे होंगे । गु०श० इसी समय खमध्य से पश्चिम की ओर जाते दीखेंगे । ←ग्रीष्मऋतु ।
४२	१	मं.	५२ ३९	भ.	५८ ५६	आ.	५८ २७	कि.	२१ २५	१४	२६	६	२९	मेष	५ ४९	६ ५४	० १२ ३० ३४	भरि० में सूर्य ५०।५८
४६	२	बु.	५६ ११	कृ.	६० ०	सौ.	५८ ४९	बा	२४ २५	१५	२७	७	३०	वृ. १५।१४	५ ४८	६ ५४	० १३ २८ ४६	चन्द्रदर्शन, उत्तरशृंगोन्नति, शनि वक्री ११।८,
५१	३	गु.	६० ०	कृ.	४ ९	सौ.	१३ ५०	तै.	२८ २४	१६	२८	८	ज१	वृष	५ ४७	६ ५५	० १४ २६ ५५	जिल्काद मु. ११ , अश्वि. मेष में शुक्र २०।३२ अक्षय ३, श्री §
५५	३	शु.	० ३७	रो.	१० ७	अ.	६० ०	ग.	० ३७	१७	२९	९	२	मि४३।२२	५ ४६	६ ५६	० १५ २५ ३	भ. ३३।८ उ., § परशुराम जयन्ती
५९	४	श.	५ ३९	मृ.	१६ ३७	अ.	१ १७	वि	५ ३९	१८	३०	१०	३	मिथुन	५ ४५	६ ५७	० १६ २३ ८	भ. ५।३९ या., श्री सूर जयन्ती
३	५	र.	१० १	आ.	२२ १२	सु.	२ ५३	बा	१० ५१	१९	म१	११	४	मिथुन	५ ४४	६ ५७	० १७ २१ ११	मई ५ ता. ३१, अश्वि. मेष में बुध ५।३०,
७	६	चं.	१५ ४४	पुन.	२९ २७	धृ.	४ १८	तै.	१५ ४४	२०	२	१२	५	क. १४।५३	५ ४३	६ ५८	० १८ १९ १३	मीन में मंगल ४३।२५, श्री १००८आनन्दमयी मातृजन्मोत्सव प्रा.
११	७	मं.	२० ०	पु.	३४ ५७	शू.	५ १७	व.	२० ०	२१	३	१३	६	कर्क	५ ४३	६ ५९	० १९ १७ १३	भ. २०।० उ. ५१।३८ या., श्री गंगाजन्म ७,
१५	८	बु.	२३ १६	श्ले.	३९ ३०	गं.	५ ३५	व.	२३ १६	२२	४	१४	७	सि३९।३०	५ ४२	७ ०	० २० १५ १२	व. गुरु म. ३ में ४५।२०,
३ १९	९	गु.	२५ २६	म.	४२ ५८	वृ.	४ ५९	कौ.	२५ २६	२३	५	१५	८	सिंह	५ ४१	७ १	० २१ १३ ९	श्री जानकी जयन्ती (पूर्व विद्धा अग्राह्य है), [वि. मु. मघा]
३ २३	१०	शु.	२६ १९	पू. फा.	४५ ७	ध्रु.	३ २९	ग.	२६ १९	२४	६	१६	९	सिंह	५ ४०	७ १	० २२ ११ २	भ. ५६।५ उ.; बुध पूर्व में अस्त,
३ २७	११	श.	२५ ५२	उ. फा.	४६ ०	व्या	[illegible]	वि.	२५ ५२	२५	७	१७	१०	कं. ०।२०	५ ३९	७ २	० २३ ८ ५४	भ. २५।५२ या., उ. भा. में मंगल ५।२९, मोहिनी ११ व्र.स. ‡
३ ३१	१२	र.	२४ १४	ह.	४५ ४२	व.	५२ ५८	बा.	२४ १४	२६	८	१८	११	कन्या	५ ३८	७ २	० २४ ६ ४५	भरि. में बुध ८।११, प्रदोष व्रत, ‡ [वि. मु. उ. फा.]
३ ३४	१३	चं.	२१ २५	चि.	४४ १९	सि.	४७ ४१	तै.	२१ २५	२७	९	१९	१२	तु. १५।०	५ ३७	७ ३	० २५ ४ ३४	भरि. में शुक्र ११।८, श्री नृसिंह जयन्ती,
३ ३८	१४	मं.	१७ ३८	स्वा.	४२ ६	व्य.	४१ ३९	व.	१७ ३८	२८	१०	२०	१३	तुला	५ ३७	७ ४	० २६ २ २२	भ. १७।३८, उ. ४५।१८, या., कृत्ति. में सूर्य ३९।५, सत्य. व्र.†
३ ४१	१५	बु.	१२ ५९	वि.	३९ ४	व.	३५ ३	ब.	१२ ५९	२९	११	२१	१४	वृ. २४।५०	५ ३६	७ ४	० २७ ० ८	श्री बुद्ध जयन्ती, †कूर्म जयन्ती,

वैशाख शुक्ल ८ बुधवार इष्ट ४५।४५, के. अहर्गण २२२१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	०	८	०	८	४	१०
०	१	६	१०	७	२५	२८	२८
९	३३	४५	०	५३	१	४८	४८
८	२२	२१	१	३७	८	४१	४१
८	४५	[illegible]	२	७३	०	३	३
९	४९	[illegible]	४८	४९	३७	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	पू.भा. ४	अश्वि. ३	मृ. ४	अश्वि. ३	पू.फा. ४	उ.फा. २	पू.भा. ३
	वीर	वायु	[illegible]	वायु	[illegible]	वीर	वीर

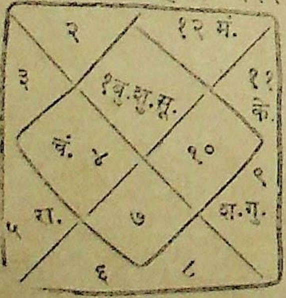

इस पक्ष में कलिङ्ग, वंग एवं मगध देश के शासकों को कष्ट हो। पूर्व एवं दक्षिण के देशों में पीड़ा, उत्तर में सुख शान्ति रहे। गेहूं, चना, चावल, उड़द तिल और जौ के भाव में तेजी हो। रुई में १५–२० टका और चांदी में २–३ टका की घटाबढ़ी होकर अन्त में तेजी रहे। शीशा, कलई, घी एवं अलसी के भावों में तेजी का रुख रहे। ऊन में तेजी हो। तिथि ५ से खाण्ड आदि रसकस तथा जवाहरात तेज होकर मन्दे हों। तिथि ७ से सोना, लकड़ी, लाल मिर्च, घास एवं चौपाए तेज हों। तिथि ११ से चन्दन कपूर आदि सुगन्धित पदार्थ तेज हों। तिथि ९ को बादल वर्षा हो जाए तो आगे भाद्रपद में अनाज का भाव तेज हो। यहां तिथि ३ गुरुवार को रोहिणी नक्षत्र का विशेष सम्पर्क है। अतः अनाज की उपज अच्छी हो।

तृतीयाया-मक्षयायां रोहिणी गुरुणा सह। सर्वधान्यस्य निष्पत्तिः भुवि मङ्गलकर्म च ॥

आकाशलक्षण—इस पक्ष में वायु का जोर रहेगा। ति० ४, ५, ६ और १० से ति० १५ तक कहीं कहीं बादल चाल एवं बूंदाबांदी के योग पाए जाते हैं।

वैशाख शुक्ल १५ बुधवार इष्ट ४६।१०, के. अहर्गण २२२८

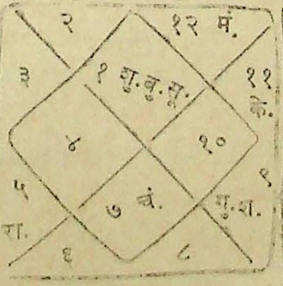

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	०	८	०	८	४	१०
२७	६	२०	९	१६	२४	२८	२८
४५	५३	४५	३६	३०	५५	२६	२६
४६	४६	४३	४०	१८	४९	२६	२६
५७	४५	[illegible]	४	७३	१	३	३
५९	४१	[illegible]	२	४८	२	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृ. २	उ.भा. ४	भर. ३	अश्वि. ३	भर. २	पू.भा. ४	उ.फा. २	पू.भा. ३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वीर	वीर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

इ.मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	प्र. वैशा.	अं. मई	रा. वैशा.	मु. जिल्हेज	सञ्चार	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा. अं. क. वि.
३३ ४४	१	गु.	७ ४५	अनु.	३५ २८	प.	२७ ५५	कौ.	७ ४५	३०	१२	२२	१५	वृश्चिक	५ ३५	७ ५	० २७ ५७ ५२
३३ ४८	२	शु.	१ ५६	ज्ये.	३१ २९	शि.	२० २९	ग.	१ ५६	३१	१३	२३	१६	ध. ३१।२९	५ ३५	७ ५	० २८ ५५ ३४
अवम	३	शु.	५५ ५२	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ० ० ०
३३ ५१	४	श.	४९ ४४	मू.	२७ १९	सि.	१२ ५३	व.	२२ ४८	जे १	१४	२४	१७	धनु	५ ३४	७ ६	० २९ ५३ १२
३३ ५४	५	र.	४३ ४३	पू. षा.	२३ १३	सा.	५७ १४	कौ.	१६ ४३	२	१५	२५	१८	म. ३७।१५	५ ३३	७ ७	१ ० ५० ५१
३३ ५७	६	चं.	३७ ५८	उ. षा.	१९ २२	शु.	५० ३३	ग.	१० ५०	३	१६	२६	१९	मकर	५ ३२	७ ७	१ १ ४८ २८
३४ ०	७	मं.	३२ ४७	श्र.	१५ ५६	ब्र.	४३ ४९	वि.	५ २२	४	१७	२७	२०	कुं. ४४।३३	५ ३२	७ ८	१ २ ४६ ४
३४ ३	८	बु.	२८ १८	ध.	१३ १०	ऐं.	३७ ४६	बा.	० ३२	५	१८	२८	२१	कुम्भ	५ ३२	७ ९	१ ३ ४३ ३८
३४ ५	९	गु.	२४ ४१	श.	११ १६	वै.	३२ २१	ग.	२४ ४१	६	१९	२९	२२	मी ५५।३१	५ ३१	७ ९	१ ४ ४१ १०
३४ ८	१०	शु.	२२ ३	पू. भा.	१० १५	वि.	२७ ४९	वि.	२२ ३	७	२०	३०	२३	मीन	५ ३१	७ १०	१ ५ ३८ ३९
३४ ११	११	श.	२० ३८	उ. भा.	१० २५	प्री.	२४ ११	बा.	२० ३८	८	२१	३१	२४	मीन	५ ३०	७ १०	१ ६ ३६ ७
३४ १३	१२	र.	२० २७	रे.	११ ४६	आ.	२१ ३६	तै.	२० २७	९	२२	जे १	२५	मे. ११।४६	५ ३०	७ ११	१ ७ ३३ ३३
३४ १६	१३	चं.	२१ ३७	अ.	१४ २६	सौ.	१९ ५९	व.	२१ ३७	१०	२३	२	२६	मेष	५ २९	७ ११	१ ८ ३० ५९
३४ १९	१४	मं.	२३ ५६	भ.	१८ १७	शो.	१९ २२	श.	२३ ५६	११	२४	३	२७	वृ. ३४।३२	५ २८	७ १२	१ ९ २८ २४
३४ २१	३०	बु.	२७ २६	कृ.	२३ १७	अ.	१९ ३७	ना.	२७ २६	१२	२५	४	२८	वृष	५ २८	७ १२	१ १० २५ ४८

ग्रहदर्शन—बुध अस्त है। शुक्र ति. १० को पूर्व में अस्त होगा। मं. सूर्योदय से पहले पूर्व क्षितिज से काफी ऊपर होगा। इसी समय गु. श. पश्चिम क्षितिज की ओर लटक रहे होंगे।

‡ग्रीष्म ऋतु।

भ. २८।५४ उ. ५५।५२ या., श्री आनन्दमयीमातृजन्मदिन π

π (प्रधानोत्सव) एवं उत्सव विसर्जन

सं. वृषार्क ७।५ सु. ३० पुण्य २३।५ तक, कृत्तिका में बुध ३२।१७§

§श्री गणेश ४ व्र.

भ. ३७।५८ उ. वृष में बुध ३।३८, [वि. मु. उ. षा., श्रव.]

भ. ५।२२ या., पंचक प्रा. ४४।३३, शुक्र वार्द्धक्य आरम्भ ७।१२

भ. ५३।२२ उ. [शु. अ.]

भ. २२।३ या., शुक्र पूर्व में अस्त ७।१२, रोहि. म बुध ३६।३९→

सा. मिथुन में सूर्य ३।२५, अपरा ११ व्रत स.,

पञ्चक स. ११।४६, राष्ट्रीय सौर ज्ये. प्रा., वृष में शुक्र☙

भ. २१।३७ उ. ५२।४६ या., ←कृत्ति. में शुक्र १।५७

रोहि. में सूर्य ३३।२, रेव. में मंगल ३९।१ ☙४४।३८ प्रदोष व्र.

भावुका ३०, वटसावित्रीव्रत,

ज्येष्ठ कृष्ण ८ बुधवार इष्ट ४६।१०. के. अहर्गण २२३५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	११	१	८	०	८	४	१०
४	१२	५	९	२५	२४	२८	२८
३०	१३	५६	४	६	४६	४	४
४०	१५	५६	५३	५१	५	११	११
५७	४५	[illegible]	५	७३	१	३	३
४५	३०	[illegible]	७	४७	५७	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

इस पक्ष में सोना, लकड़ी, चौपाए एवं गेहूं, जौ, चना, चावल, सरसों, सूत, घी, मजीठ तथा कपास को अन्य चीज तेज हों। रुई, गुड़ में कुछ मन्दी रहे। ति० ६ से रुई में मन्दी का रुख रहेगा और चांदी में विशेष घटाबढ़ी चल कर ति० ११ से खासी मन्दी आएगी। तांबा, पारा, जस्त, केसर तेज रहें। यहां शुक्रास्त राक्षसगण के नक्षत्र में हो रहा है, जो आगे किसी यवन (मुस्लिम) देश में दुर्भिक्ष का सूचक है। कहीं जल-जहाज बेड़े की दुर्घटना हो। कहीं मन्त्रिमण्डल में हेरफेर हो। ति० ५ को यदि दक्षिण की वायु चलती रहे तो आगे आश्विन मास में तिल, तेल, घी का संग्रह करने से आगे चल कर उत्तम लाभ मिले। ति० ६ के बाद अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण अशान्त रहे। इस पक्ष में नेत्ररोग, अतिसार, हैजा से कष्ट हो। किसी दुर्घटना से जनहानि हो।

आकाशलक्षण—ति० १, २, ८, ९ को कहीं बादल चाल व बूंदाबांदी हो। पक्षान्त में वायु का जोर रहे।

ज्येष्ठ कृष्ण ३० बुधवार इष्ट ४६।२०, के. अहर्गण २२४२

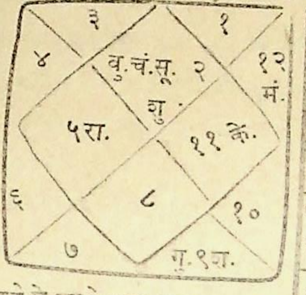

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	११	१	८	१	८	४	१०
११	१७	२१	८	३	२४	२७	२७
१४	३०	११	२६	४३	२८	४१	४१
२५	४२	५७	१४	२०	२०	५६	५६
५७	४५	[illegible]	६	७३	३	३	३
३५	१०	[illegible]	३	४७	७	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

वि. संवत् २०१७ शाक १८८२ ज्येष्ठशुक्लपक्ष ५

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०१७ शाक १८८२ ज्येष्ठशुक्लपक्ष ५ तारीख ; चन्द्र | भा. स्टैं. टाइम | उदय कालिक | (२६ मई से ९ जून तक, सन १९६० ई.) अयन एवं गोल उत्तर :

वि. मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	सञ्चार	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	रा.	अं.	क.	वि.
३४ २४	१	बु.	३१ ५०	रो.	२९ ५	सु.	२० ३५	व.	३१ ५०	१३	२६	५	२९	वृष	५ २८	७ १३	१	११	२३	१०
३४ २६	२	गु.	३६ ४३	मृ.	३५ २९	धृ.	२२ १	बा.	४ १६	१४	२७	६	३०	मि. २१।७	५ २७	७ १४	१	१२	२०	२९
३४ २९	३	शु.	४१ ४९	आ.	४२ ६	शू.	२३ ४२	तै.	९ १६	१५	२८	७	ज १	मिथुन	५ २७	७ १५	१	१३	१७	४७
३४ ३१	४	श.	४६ ३९	पुन.	४८ २९	गं.	२५ १५	व.	१४ १४	१६	२९	८	२	क. ३११५५	५ २७	७ १५	१	१४	१५	५
३४ ३३	५	चं.	५० ५०	पु.	५४ ८	वृ.	२६ २४	व.	१८ ४४	१७	३०	९	३	कर्क	५ २७	७ १६	१	१५	१२	२१
३४ ३६	६	मं.	५४ ६	श्ले.	५८ ५७	ध्रु.	२६ ५५	कौ.	२२ २८	१८	३१	१०	४	सिं. ५८।५७	५ २६	७ १६	१	१६	९	३५
३४ ३८	७	बु.	५६ १४	म.	६० ०	व्या.	२६ ३४	ग.	२५ १०	१९	जू. १	११	५	सिंह	५ २६	७ १७	१	१७	६	४८
३४ ४०	८	गु.	५७ ६	म.	२ ३८	ह.	२५ २१	वि.	२६ ४०	२०	२	१२	६	सिंह	५ २५	७ १७	१	१८	४	१
३४ ४२	९	शु.	५६ ३९	पू.फा.	५ ५	व.	२३ ३	बा.	२६ ५२	२१	३	१३	७	कं. २०।२२	५ २५	७ १८	१	१९	१	१२
३४ ४४	१०	श.	४५ ५८	उ.फा.	६ १२	सि.	१९ ५०	तै.	२५ ४८	२२	४	१४	८	कन्या	५ २५	७ १९	१	१९	५८	२२
३४ ४५	११	र.	५२ ७	ह.	६ १०	व्य.	१५ ३४	व.	२३ ३२	२३	५	१५	९	तु. ३५।३४	५ २५	७ १९	१	२०	५५	३१
३४ ४७	१२	चं.	४८ १७	चि.	४ ५९	व.	१० २९	ब.	२० १२	२४	६	१६	१०	तुला	५ २५	७ २०	१	२१	५२	३८
३४ ४९	१३	मं.	४३ ३७	स्वा.	२ ५८	प.	४/५८ ३/८	को.	१५ ५७	२५	७	१७	११	वृ. ४५।४८	५ २५	७ २१	१	२२	४९	४५
३४ ५०	१४	बु.	३८ ११	वि.	०/५६ ४/३०	सि.	५१ ६	ग.	१० ५८	२६	८	१८	१२	वृश्चिक	५ २५	७ २१	१	२३	४६	५०
३४ ५२	१५	गु.	३२ २९	ज्ये.	५२ ३३	सा.	४३ ४३	वि.	५ २४	२७	९	१९	१३	ध. ५२।३३	५ २५	७ २२	१	२४	४३	५५

ग्रहदर्शन—ति. ३ को बुध पश्चिम में उदित होगा। शुक्र अस्त है। सूर्योदय से पहले मं. पूर्व क्षितिज में होगा तथा शनि को साथ लिए गु. पश्चिम क्षितिज की ओर प्रयाण कर रहा होगा।

मृग. में बुध ४८।४८, करिदिन, ग्रीष्म ऋतु।
चन्द्रदर्शन, उ. शृं. उन्नत
जिल्हिज मु. १२, बुध पश्चिम म उदित, रम्भाव्रत, श्री प्रताप जयं.
भ. १४।१४ उ. ४६।३९ या., बलिदानदिवस, गुरु श्री अर्जुनदेवजी
मिथु. में बुध १०।१८, रोहि. म शुक्र ५२।४१,

भ. ५६।१४ उ., जून ६ ता ३०,
भ. २६।४० या., आर्द्रा म बुध ४६।७,

श्री गंगा दशहरा,
भ. २३।३२ उ. ५२।७ या. निर्जला ११ व्र. स्मा. वै.
निर्जला ११ व्र. नि., इद-उज्जुहा,
मृग. में सूर्य ३१।४९, भौम प्रदोष व्रत,
भ. ३८।१९ उ., सत्य. व्र.,
भ. ५।२४ या.,

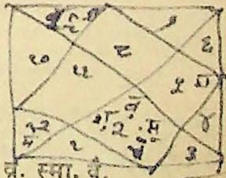

ज्येष्ठ शुक्ल ८ गुरुवार इष्ट ४६।२८, के. अहर्गण २२५०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	११	२	८	१	८	४	१०
१८	२३	६	७	१३	२४	२७	२७
५४	३०	४०	३४	३३	२	१६	१६
३३	४८	३३	१९	३६	४६	२९	२९
५७	४४		६	७३	३	३	३
२८	४९		५३	४७	१५	११	११
[illegible]	सा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
रो.	रो.	आर्द्रा	मृ.	रो.	पू.फा.	उ.फा.	पू.भा.
वायु	अग्नि	सौम्य	अग्नि	वायु	सौम्य	नीर	नीर

इस पक्ष में—पूर्वी एवं दक्षिणी देशों में जनता को पीड़ा एवं पाश्चात्य राष्ट्रों के शासकों में भय हो। लगभग सभी अनाजों में तेजी रहेगी। बिनौला, सरसों एवं तिल, तेल भी तेज रहें। चांदी में घटाबढ़ी चलकर मन्दी आएगी। ऊन में लगभग १५ टका की मन्दी आए। ति० ६ से सोना चांदी आदि धातु, अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, गुड़ सुपारी और शेयरों के भाव भी मन्दे रहें। ति० ८ से गेहूं, तिल, उड़द के भाव में नरमाई रहेगी। रुई में घटाबढ़ी चलकर करो। ३० टका की तेजी आएगी। साथ ही चांदी में भी २ टका की तेजी आएगी। ति० ३ को जहां वर्षा हो वहां खेती को नुकसान पहुंचे। ति० ५ को यदि दक्षिण की पवन चले, आकाश मेघाच्छन्न हो एवं मेघ भी गरजे तो व्यापारियों को अन्न संग्रह कर आश्विन में छोड़ने से लाभ होगा।

आकाशलक्षण—इस पक्ष में प्रायः वायु का जोर रहेगा। ति० ३ से ति० ७ तक कहीं २ बादल चाल, बूंदाबांदी के योग हैं। उत्तर प्रदेश, पंजाब, राजस्थान ए० मरुस्थलों में आंधी तूफान से हानि होगी।

ज्येष्ठ शुक्ल १५ गुरुवार इष्ट ४६।२८, के. अहर्गण २२५७

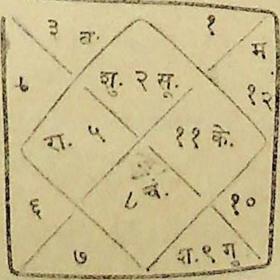

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	११	२	८	१	८	४	१०
२५	२८	१८	६	२२	२३	२६	२६
३६	४३	०	४४	१०	३९	५४	५४
२६	९	१३	४३	५	३६	१४	१४
५७	४४	८६	७	७३	३	३	३
२०	२२	०	२१	४७	३२	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
मृग.	रो.	आर्द्रा	मृ.	रो.	पू.फा.	उ.फा.	पू.भा.
अग्नि	अग्नि	[illegible]	अग्नि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	रा.	म.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	सार सूर्य स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.
३४	५३	१	शु.	२६	२३	मू.	४८	२६	शु.	३६	१०	कौ.	२६	३	२८	१०	२०	१४	धनु	५	२५	७	२२	१	२५	४०	५८
३४	५४	२	श.	२०	१२	पू. षा.	४४	१४	शु.	२८	३१	ग.	२०	१२	२९	११	२१	१५	म.५८।१६	५	२५	७	२३	१	२६	३८	१
३४	५५	३	र.	१४	५	उ. षा.	४०	१८	ब्र.	२०	५२	वि.	१४	५	३०	१२	२२	१६	मकर	५	२५	७	२३	१	२७	३५	२
३४	५६	४	चं.	८	२१	श्र.	३६	४५	ऐं.	१३	४५	बा.	८	२१	३१	१३	२३	१७	मकर	५	२५	७	२३	१	२८	३२	३
३४	५७	५	मं.	३	१	ध.	३३	४८	वै.	६	५७	तै.	३	१	अ१	१४	२४	१८	कुं. ५।१६	५	२५	७	२३	१	२९	२९	२
अव	म	६	मं.	५८	२६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३४	५८	७	बु.	५४	४२	श.	३१	४३	वि.	५५	१५	वि.	२६	३४	२	१५	२५	१९	कुम्भ	५	२५	७	२४	२	०	२६	०
३४	५९	८	गु.	५१	५६	पू. भा.	३०	२७	आ.	५०	३१	बा.	२३	१९	३	१६	२६	२०	मी१५।४६	५	२४	७	२४	२	१	२२	५८
३४	५९	९	शु.	५०	२३	उ. भा.	२०	१८	सौ.	४६	४४	तै.	२१	९	४	१७	२७	२१	मीन	५	२४	७	२४	२	२	१९	५६
३५	०	१०	श.	५०	५	रे.	३१	२१	शो.	४३	५७	व.	२०	१४	५	१८	२८	२२	मे.३१।२१	५	२५	७	२५	२	३	१६	५३
३५	१	११	र.	५१	५	अ.	३३	४२	अ.	४२	१०	व.	२०	३५	६	१९	२९	२३	मेष	५	२५	७	२५	२	४	१३	४९
३५	१	१२	चं.	५३	१७	भ.	३७	१६	सु.	४१	२३	कौ.	२२	११	७	२०	३०	२४	वृ.५३।२८	५	२५	७	२५	२	५	१०	४५
३५	२	१३	मं.	५६	४२	कृ.	४२	३	धृ.	४१	३१	ग.	२४	५९	८	२१	३१	२५	वृष	५	२५	७	२६	२	६	७	४१
३५	२	१४	बु.	६०	०	रो.	४७	३८	शू.	४२	२३	वि.	२८	४८	९	२२	अ१	२६	वृष	५	२५	७	२६	२	७	४	३६
३५	२	१४	गु.	०	५५	मृ.	५३	५५	गं.	४३	४८	श.	०	५५	१०	२३	२	२७	मि२०।४६	५	२६	७	२७	२	८	१	३०
३५	१	३०	शु.	५	४८	आ.	६०	०	वृ.	४५	३१	ना.	५	४८	११	२४	३	२८	मिथुन	५	२६	७	२७	२	८	५८	२३

ग्रहदर्शन—शुक्र अस्त है। सूर्योदय से पहले म. खमध्य की ओर आ रहा होगा एवं गु. श. उस वक्त पश्चिम क्षितिज में डूब रहे होंगे। सूर्यास्त बाद बु. पश्चिम क्षितिज लग्न होगा।

ब. गुरु मू. २ म २४।५५, मृग मे शुक्र ४३।१९,
भ. ४७।८ उ., अश्वि. मेष म मंगल ३०।२६, पुन. में बुध १०।५१,
भ. १४।५ या., श्रीगणेश ४ ब्र., §उत्तर गोल। ग्रीष्म-वर्षा ऋतु

भ. ५८।२६ उ., पंचक प्रा., ५।१६, हां. विनायक ३२।३७, ‡
‡पु. ३०, पुष्य सध्या होत्तर, व. शनि पू. षा ३ में ५६।३६, पू: फा.
भ. २६।३४ या., π४ में राहु, पू. भा. २ में केतु १५।३,
मिथुन में शुक्र ८।४५

भ. २०।१४ उ. ५०।५ या., पञ्चक स. ३१।२१,
कर्क में बुध ४२।०, योगिनी ११ व्र. स्मा. वै.,
व. इन्द्र स्वा. २ में ४२।५६, योगिनी ११ व्र. निं.,
भ. ५६।४२ उ., आर्द्रा में सूर्य ३४।४, सा. कर्क में सूर्य २४।७,*
भ. २८।४८ या., राष्ट्रीय सौर आषाढ़ प्रा.,
पुष्य में बुध ४८।१७,
*दक्षिण.अयन, वर्षाऋतु प्रा., आर्द्रा में शुक्र ३४।२, भौम-प्रदोष व्र,

आषाढ़ कृष्ण ८ गुरुवार इष्ट ४६।३०, के. अहगण २२६४

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	२	०	२	८	२	८	४	१०
	२	३	२७	५	०	२३	२६	२६
	१७	५३	०	५१	४६	१२	३१	३१
	३६	२३	४४	५५	२८	४३	५८	५८
	५७	४३	६४	७	७३	४	३	३
	१७	५२	४६	४३	४६	५	११	११
[illegible]		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

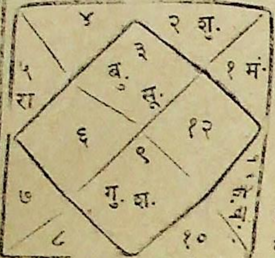

इस पक्ष म——व्यापार में ज्यादह घटाबढ़ी चले। आग्नेय कोण के देशों में भय व्याप्त हो। भारत की प्रजा में रोग चौर-भय एवं पशुओं को कष्ट हो। तिल, तेल, घी, गुड़, ज्वार, ऊन, कपास और जवाहरात में तेजी आवे। गेहूं चना, चावल, अलसी, खल आदि में मन्दा हो। चांदी में करीब २ टके की तेजी आए। नमक, सज्जी, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सूखा मेवा में तेजी आए। ति० ८ से अनाज के भाव में तेजी का झटका आएगा। रुई, सूत, श्वेत वस्त्र एवं शण मन्दे हों। ति० ११ से रुई में २० टका के लगभग मन्दी आवे और खाण्ड, गुड़ में घटाबढ़ी चले। शासक वर्ग को कहीं सैनिक कार्रवाई करनी पड़ेगी। कहीं अग्नि या वायु के प्रकोप से हानि हो।

आकाशलक्षण—ति० २ से ५ तक एवं ९ से १३ तक कहीं बादल चाल बूंदाबांदी के योग हैं। ति० १४,३० को कहीं वृष्टि हो, विशेषकर बम्बई एवं दक्षिण भारत में।

आषाढ़ कृष्ण ३० शुक्रवार इष्ट ४६।२५ के. अहर्गण २२७२

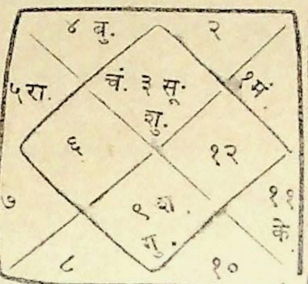

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	२	०	३	८	२	८	४	१०
	९	९	३	४	१०	२२	२६	२६
	५५	४१	५७	५०	३६	३९	६	६
	३८	५७	४७	४४	३६	३१	३२	३२
	५७	४३	३४	७	७३	४	३	३
	१३	२८	४०	३४	४६	१५	११	११
[illegible]		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
	आर्द्रा	अश्वि.	पुष्य	[illegible]	आर्द्रा	पू.षा.	पू.फा.	पू.भा.

ग्रहदर्शन—श. अस्त है। ति. १५ को ब. पश्चिम में अस्त होगा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. आषा.	अं. जून.	रा. आषा.	मु. जिल्हिज	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३५	१	१	शा.	१०	५३	आ.	०	३०	ध्रु.	४७	५	व.	१०	५३	१२	२५	४	२९	क.५०।१७	५	२६	७	२७	२	९	५५	१६
३५	०	२	र.	१५	४२	पुन.	६	५३	व्या	४८	२०	कौ.	१५	४२	१३	२६	५	मु१	कर्क	५	२७	७	२७	२	१०	५२	९
३५	०	३	चं.	१९	५४	पु.	१२	४६	ह.	४९	०	ग.	१९	५४	१४	२७	६	२	कर्क	५	२७	७	२७	२	११	४९	२
३४	५९	४	मं.	२३	१२	श्ले	१७	४६	व.	४८	५१	वि.	२३	१२	१५	२८	७	३	सिं१७।४६	५	२७	७	२७	२	१२	४५	५४
३४	५८	५	बु.	२५	२०	म.	२१	३८	सि.	४७	४८	बा.	२५	२०	१६	२९	८	४	सिंह	५	२७	७	२७	२	१३	४२	४६
३४	५७	६	गु.	२६	१५	पू. फा.	२४	२१	व्य.	४५	४४	तै.	२६	१५	१७	३०	९	५	कं.३१।४३	५	२८	७	२७	२	१४	३९	३८
३४	५७	७	शु.	२५	५१	उ. फा.	२५	४८	व.	४२	३८	व.	२५	५१	१८	जु१	१०	६	कन्या	५	२८	७	२७	२	१५	३६	३०
३४	५६	८	श.	२४	१२	ह.	२५	५९	प.	३८	३४	ब.	२४	१२	१९	२	११	७	तु.५५।३१	५	२९	७	२७	२	१६	३३	२१
३४	५५	९	र.	२१	२७	चि.	२५	४	शि.	३३	३६	कौ.	२१	२७	२०	३	१२	८	तुला	५	२९	७	२७	२	१७	३०	१२
३४	५४	१०	चं.	१७	३७	स्वा.	२३	११	सि.	२७	५३	ग.	१७	३७	२१	४	१३	९	तुला	५	२९	७	२७	२	१८	२७	३
३४	५३	११	मं.	१२	५६	वि.	२०	२६	सा.	२१	२९	वि.	१२	५६	२२	५	१४	१०	वृ. ६।७	५	३०	७	२७	२	१९	२३	५४
३४	५१	१२	बु.	७	३८	अनु.	१७	१	शु.	१४	३०	बा.	७	३८	२३	६	१५	११	वृश्चिक	५	३१	७	२७	२	२०	२०	४५
३४	५०	१३	गु.	१	५०	ज्ये.	१३	८	शु.	५१	१० ३७	तै.	१	५०	२४	७	१६	१२	ध.१३।८	५	३१	७	२७	२	२१	१७	३७
अवम		१४	गु.	५५	४१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३४	४८	१५	शु.	४९	२८	मू.	९	२	ऐं.	५१	५६	वि.	२२	३४	२५	८	१७	१३	धनु	५	३१	७	२६	२	२२	१४	३०

ग्रहदर्शन—शु. अस्त है। ति. १५ का बु. पश्चिम म अस्त होगा सूर्योदय से पहले मंगल खमध्य की ओर आ रहा होगा, एवं गु. श. पश्चिम क्षितिज में डूब रहे होंगे। →उत्तरगोल वर्षाऋतु।

दक्षिण भारत में चन्द्र दर्शन आज ही होगा।

चन्द्रदर्शन उ. शृं. उन्नत, मुहर्रम मु. १ हिज्री १३८० प्रा., ॐ

भ. ५१।३३ उ., ॐजगदीशरथोत्सव

भ. २३।१२ या., निर्वाण दिवस पंजाब केसरी महाराजा। भरि. में मंगल ४८।६, ।श्रीरणजीतसिंहजी

भ. २५।५१ उ., ५५।१ या., जुलाई ७ ता' ३१,

पुन. में शुक्र २४।३७,

बुध वक्री १५।२२,

भ. ४५।१६ उ.,

भ. १२।५६ या., पुन म सूर्य ३८।७, देवशयनी ११ व्र. स.,→

प्रदोष व्रत, →चातुर्मास्य व्रत नियमारम्भ, मुहर्रम (ताजिया)

भ. ५५।४१ उ., व. गुरु मू. १ में ६।२४,

§वायु परीक्षा ध्वजारोपण,

भ. २२।३४ या., बुध पश्चिम म अस्त, सत्य. व्र., गुरु व्यास पूजा§

आषाढ शुक्ल ८ शनिवार इष्ट ४६।१७, के. अहर्गण २२८०

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	०	३	८	२	८	४	१०
१७	१५	६	३	२०	२९	२५	२५
३३	२८	३४	५०	२६	४	४१	४१
१२	६	५३	४७	४१	५४	६	६
५७	४२	१	७	७३	४	३	३
११	५२	३	१६	४५	२३	११	११
दृश्य	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा ४	म. १	पुष्य १	मू. २	पुन. १	पू.षा. ३	पू.फा. ४	पू.भा. २
सौम्य	चण्ड	जल	अग्नि	नीर	सौम्य	जल	नीर

इस पक्ष म—रुई में काफी घटाबढ़ी होकर अन्त में तेजी रहे। ति० ५ से अनाज में कुछ तेजी का रुख रहेगा। ति० ८ से खाण्ड, गुड़, शक्कर, तिल, तेल, कपूर, अलसी, ऐरण्ड, सरसों, बिनौला का भाव एवं शेयर तेज रहें। अनाज के भाव में कुछ नरमाई रहे। ति० १० के बाद चांदी, सोना, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द एवं अलसी के भाव में तेजी रहेगी। ति० ५ को यदि मेघ गर्जन के साथ वर्षा वायु हो और साथ ही इन्द्रधनुष भी दिखाई दे तो अन्न का संग्रह कर कार्त्तिक में बेचने से लाभ मिले। यहां पूर्णमासी को ठीक सूर्यास्त के समय पूर्व, उत्तर, ईशान या पश्चिम की वायु चले तो फसल अच्छी हो, अनाज सस्ते हों। दक्षिण या नैर्ऋत की वायु चले तो भारी दुर्भिक्ष पड़े। यदि वायव्यकोण की चले तो चूहे, टिड्डी का भय, एवं फसल साधारण हो, आग्नेयकोण की हो तो कहीं फसल खराब हो।
आकाशलक्षण—इस पक्षमें हवा के साथ वर्षा प्रायः कहीं २ होती रहेगी। बरार, मध्यप्रदेश, उड़ीसा में अधिक वृष्टि हो।

आषाढ़ शुक्ल १५ शुक्रवार इष्ट ४६।१२, के. अहर्गण २२८६

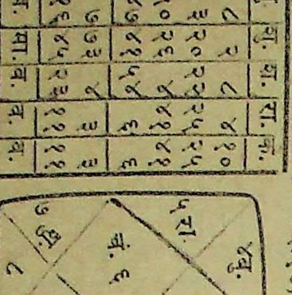

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	०	३	८	२	८	४	१०
२३	१९	५	३	२७	२१	२५	२५
१६	४३	३६	८	४९	३८	२२	२२
२१	४७	८	४०	२	४५	१	१
५७	४२	२४	६	७३	४	३	३
१२	१९	५८	४१	४२	१९	११	११
दृश्य	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पुन. १	भरि. २	पुष्य. १	मू. १	पुन. ३	पू.षा. ३	पू.फा. ४	पू.भा. २
नीर	चण्ड	जल	अग्नि	नीर	सौम्य	जल	नीर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

ति. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३४	४६	१	श.	४३	२१	पू. षा.	४	४९	वै.	४४	२५	बा.	१६	२४	२६	९	१८	१४	म.१८।४८	५	३२	७	२६	२	२३	११	२२
३४	४४	२	र.	३७	३१	उ. षा.	५७	४७	वि.	३७	७	तै.	१०	२६	२७	१०	१९	१५	मकर	५	३२	७	२६	२	२४	८	१४
३४	४२	३	चं.	३२	१०	श्र.	५४	०	प्री.	३०	१२	व.	४	५०	२८	११	२०	१६	कुं.२५।३३	५	३२	७	२५	२	२५	५	७
३४	४०	४	मं.	२७	२९	श.	५१	४२	आ.	२३	५०	बा.	२७	२९	२९	१२	२१	१७	कुम्भ	५	३३	७	२५	२	२६	२	१
३४	३८	५	बु.	२३	४१	पू. भा.	५०	१२	सौ.	१८	१०	तै.	२३	४१	३०	१३	२२	१८	मी३५।३५	५	३४	७	२५	२	२६	५८	५५
३४	३६	६	गु.	२०	५०	उ. भा.	४९	४५	शो.	१३	१९	व.	२०	५०	३१	१४	२३	१९	मीन	५	३४	७	२४	२	२७	५५	५१
३४	३३	७	शु.	१९	९	रे.	५०	३३	अ.	९	२०	ब.	१९	९	३२	१५	२४	२०	मे.५०।३३	५	३५	७	२४	२	२८	५२	४७
३४	३१	८	श.	१८	४४	अ.	५२	३४	सु.	६	१९	कौ.	१८	४४	श्र१	१६	२५	२१	मेष	५	३६	७	२४	२	२९	४९	४४
३४	२९	९	र.	१९	३४	भ.	५५	५४	धृ.	४	२१	ग.	१९	३४	२	१७	२६	२२	मेष	५	३६	७	२४	३	०	४६	४१
३४	२६	१०	चं.	२१	४२	कृ.	६०	०	शू.	३	२४	वि.	२१	४२	३	१८	२७	२३	वृ.१२।०	५	३७	७	२३	३	१	४३	३८
३४	२४	११	मं.	२४	५७	कृ.	०	२०	गं.	३	१८	बा.	२४	५७	४	१९	२८	२४	वृष	५	३७	७	२३	३	२	४०	३५
३४	२२	१२	बु.	२९	६	रो.	५	४७	वृ.	४	३	तै.	२९	६	५	२०	२९	२५	मि३८।५०	५	३८	७	२३	३	३	७	३४
३४	१९	१३	गु.	३३	५७	मृ.	११	५४	ध्रु.	५	२१	ग.	१	३१	६	२१	३०	२६	मिथुन	५	३८	७	२२	३	४	३४	३४
३४	१७	१४	शु.	३८	५९	आ.	१८	२६	व्या	६	५८	वि.	६	२८	७	२२	३१	२७	मिथुन	५	३९	७	२२	३	५	३१	३४
३४	१४	३०	श.	४३	५२	पुन.	२४	५३	ह.	८	३७	च.	११	२५	८	२३	श्र१	२८	क. ८।१६	५	३९	७	२१	३	६	२८	३६

हक्संग—शु. बु. अस्त हैं। सूर्योदय से पूर्व मं. ब्रमध्य की ओर प्रवृत एवं सूर्यास्त बाद श. गु. पूर्व क्षितिज से उठते दीखेंगे।

*उत्तरगोल। वर्षाऋतु।

कर्क में शुक्र ३२।४९,
भ. ४।५० उ. ३२।१० या., पंचक आ. २५।३३, श्रीगणेश ४ व्र.,

व. बुध पुन. म १९।४, पुष्य म शुक्र १५।३७,
भ. २०।५० उ., ४९।५९ या.,
पञ्चक स. ५०।३३,
सं. कर्कार्क १०।४९, मः ३० पुष्य २६।४९ तक,
भ. ५०।३८ उ.,
भ. २१।४२ या., कृत्ति. म मंगल ४१।४८ व. बुध मिथुन में +३२।५, इन्द्रमार्गी ४६।०,
पुष्य में सूर्य ४१।३१, कामिका ११ व्र. स.,
प्रदोष व्र.,
भ. ३३।५७ उ.
भ. ६।२८ या., सा. सिंह में सूर्य ५०।५९,
रा. सौर श्रावण प्रा. बृष में मंगल ३२।५४, हरियाली ३०,

श्रावणकृष्ण ८ शनिवार इष्ट ४६।०, क. अहर्गण २२९४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	३	८	३	८	४	१०
०	२५	१	२	७	२१	२४	२४
५४	१९	१२	१७	३८	४	५६	५६
५	४९	७	५१	२८	२९	३५	३५
५७	४१	४०	५	७३	४	३	३
१४	३७	४८	५५	४०	१५	११	११
[illegible]	मा.	व.	व.	मा.	व.	व	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

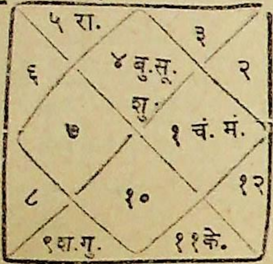

इस पक्ष में—गेहूं, चना आदि अनाज का भाव मन्दा रहे। रसकस में भी कुछ मन्दा रहे। ति० ५ से रुई चांदी में मन्दी और शेयरों में तेजी हो। अलसी, एरण्ड, घी, तेल का भाव भी कुछ तेजी की ओर रहेगा। ति० ७ के बाद प्रत्येक अनाज का भाव तेजी की ओर रहे एवं रुई में और भी मन्दी आवे। ति० ११ से सोना चांदी में घटावढ़ी होकर तेजी रहे। यहां चांदी में करीब २(दो) टका की तेजी आवेगी। यदि इस एकादशी को वर्षा हो जाए तो भावी वर्ष में फसल अच्छी हो।

श्रावणकृष्ण ३० शनिवार इष्ट ४५।५२ के. अहर्गण २३०१

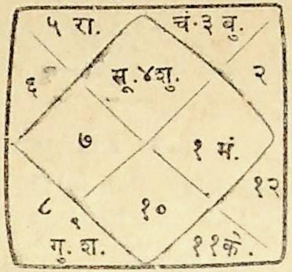

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	२	८	३	८	४	१०
७	०	२७	१	१६	२०	२४	२४
३४	८	१९	३९	१४	३४	३४	३४
५८	५३	२८	४८	८	५८	१९	१९
५७	४०	१९	४	७३	४	३	३
१८	५४	४१	४८	३९	३	११	११
[illegible]	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

"एकादश्यां नभः कृष्णे यदि वर्षति वासवः। तदा वर्षं शुभं भावि जायते नात्र संशयः॥"

आकाशलक्षण—ति० ४, ५ तथा ति० ११ से ३० तक वर्षा के योग पाए जाते हैं। इस वर्ष में कहीं वर्षा की कमी से एवं कहीं अधिकता से हानि हो।

श. वि.—श्रावण पहली पंचमी वर्षे कर निहाल। पवन चलै तो अति बुरी पड़े हलाहल काल॥
श्रावणवदी एकादशी, जो नभ वर्षा होय। अच्छा सम्वत होयगा, संशय करो न कोय॥

वि. संवत् २०१७ शाक १८८२ श्रावण शुक्लपक्ष ९ | तारीखें | भा. स्टै. टाइम | उदयकालिक | (२४ जुलाई से ७ अगस्त तक सन् १९६० ई.) दक्षिण अयन*

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

[illegible] ... का ब. एवं श. क्रमशः पूर्व तथा पश्चिम

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दि. मा. घ.	प.	ति. वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. (चा.)	अ. (हो.)	रा. (चा.)	मु. (हो.)	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३४	१२	१ र.	४८	७	पु.	३०	५६	ध्रु.	९	५८	कि.	१५	५९	९	२४	२	२९	कर्क	५	४०	७	२१	३	७	२५	३९
३४	९	२ चं.	५१	३१	श्ले.	३६	८	सि.	१०	४४	बा.	१९	४९	१०	२५	३	३०	सिं ३६।८	५	४०	७	२०	३	८	२२	४२
३४	६	३ मं.	५३	४६	म.	४०	५	व्य.	१०	४१	तै.	२२	३८	११	२६	४	३१	सिंह	५	४१	७	१९	३	९	१९	३९
३४	३	४ बु.	५४	४७	पू. फा.	४३	१५	व.	९	४८	व.	२४	१६	१२	२७	५	२	क. ५८।४०	५	४२	७	१९	३	१०	१६	५२
३४	०	५ गु.	५४	३१	उ. फा.	४४	५७	प.	७	५३	ब.	२४	३९	१३	२८	६	३	कन्या	५	४२	७	१८	३	११	१३	५९
३३	५७	६ शु.	५२	५९	ह.	४५	२६	शि.	४	५६	कौ.	२३	४५	१४	२९	७	४	कन्या	५	४३	७	१८	३	१२	११	६
३३	५४	७ श.	५०	१८	चि.	४४	४४	सि.	[illegible]	[illegible]	ग.	२१	३८	१५	३०	८	५	तु. १५।५	५	४४	७	१८	३	१३	८	१५
३३	५०	८ र.	४६	३४	स्वा.	४३	१	शु.	५०	३३	वि.	१८	२६	१६	३१	९	६	तुला	५	४५	७	१७	३	१४	५	२४
३३	४७	९ चं.	४२	०	वि.	४०	२८	शु.	४४	१४	बा.	१४	१७	१७	अ१	१०	७	वृ. २६।६	५	४५	७	१६	३	१५	२	३५
३३	४४	१० मं.	३६	४४	अनु.	३७	१०	ब्र.	३७	१९	तै.	९	२२	१८	२	११	८	वृश्चिक	५	४५	७	१६	३	१५	५९	४७
३३	४०	११ बु.	३०	५८	ज्ये.	३३	२२	ऐं.	३०	२	व.	३	५१	१९	३	१२	९	ध. ३३।२२	५	४६	७	१५	३	१६	५७	१
३३	३७	१२ गु.	२४	५१	मू.	२९	१७	वै.	२२	२८	बा.	२४	५१	२०	४	१३	१०	धनु.	५	४६	७	१३	३	१७	५४	१५
३३	३३	१३ शु.	१८	३८	पू. षा.	२५	२	वि.	१४	४५	तै.	१८	३८	२१	५	१४	११	म. ३९।०	५	४७	७	१२	३	१८	५१	३१
३३	२९	१४ श.	१२	३०	उ. षा.	२०	५६	प्री.	[illegible]	४७	व.	१२	३०	२२	६	१५	१२	मकर	५	४८	७	१२	३	१९	४८	४९
३३	२६	१५ र.	६	३८	श्र.	१७	९	सौ.	५२	४३	ब.	६	३८	२३	७	१६	१३	कुं. ४५।३१	५	४८	७	११	३	२०	४६	८

ग्रहदर्शन—ति. ३ व ८ का बु. एवं श. क्रमशः पूर्व तथा पश्चिम में उदित होंगे । सूर्योदय से पूर्व मंगल खमध्य की ओर प्रवृत्त एवं सूर्यास्त बाद गु. श. पूर्व क्षितिज से ऊपर उठ रहे होंगे ।

आश्ले. में शुक्र ७।०, आश्ले ४ में वरुण ५।२४, नक्तव्रत आरम्भ,
चन्द्रदर्शन, उत्तर श्रृंगोन्नति, *उत्तरगोल । वर्षा ऋतु ।
सफर मु. २, बुध पूर्व में उदित, संधारा ३,*
भ. २४।१६ उ., ५४।४७ या., बुध मार्गी ३९।४५,
नागपञ्चमी,
वर्णषष्ठी ( )नयनादेवी-चिन्तपूर्णी
भ. ५०।१८ उ., श्री तुलसी जयन्ती [शु. उ.]
भ. १८।२६ या., शुक्र पश्चिम में उदय ३।३६, श्री दुर्गा ८ मेला( )
अगस्त ८ ता. ३१, व. शनि पू. षा. २ में ४२।४२, श्री लो. मा.ⓘ
आश्ले. में सूर्य ४२।१०, ⓘतिलक जयन्ती,
भ. ३।५१ उ. ५०।३८ या., शुक्र बाल्य निवृत्ति ३।३६, मघा≠
कर्क में बुध ४७।५८ प्रदोष व्र.,
≠सिंह में शुक्र ५८।१६, पवित्रा ११ व्र. स.,
भ. ४९।३० उ. ३९।३४ या., सत्य.व्र., [वि. मु. श्रव.]
पंचकप्रा. ४५।३१, रोहि. में मंगल २७।३४, मेला श्रीअमरनाथजी+
+काश्मीर, रक्षाबंधन ६।३८ या., ऋषि तर्पण, [वि.मु.श्रव.]

श्रावण शुक्ल ८ रविवार इष्ट ४५।३७, के. अहर्गण २३०९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	२	८	३	८	४	१०
१५	५	२७	१	२६	२०	२४	२४
१३	३३	२६	५	३	३	८	८
४१	५४	४४	५३	२६	३३	५३	५३
५७	४०	२९	३	७३	३	३	३
२४	११	१७	३२	४०	४४	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	कृ. ३	पुन. ३	मू. २	आश्ले. ३	पू.षा. ३	पू.फा. ४	पू.भा. ३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

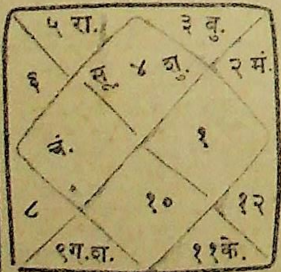

इस पक्ष में भारतीय औद्योगिक क्षेत्र में उन्नति हो । कहीं प्रजा में परस्पर विरोध लूटमार एवं कहीं पूर्वी राष्ट्रों में युद्ध जैसी स्थिति बने और वहां की प्रजा में अशान्ति रहे । यहां रुई के भाव में यकायक खासी मन्दी आएगी । चांदी, पाट, हैशियन भी मन्दे हों । अनाज, चन्दन, केसर, वस्त्र, कपास में तेजी आए । अलसी एरण्ड का भाव बढ़ेगा । घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर का रुख भी तेजी की ओर रहेगा । ति० ५ से ऊन के भाव में तेजी रहेगी । ति० ८ से रुई, सूत, शण, तिल, चावल, रंगीन वस्त्र, श्रीफल तेज होंगे । घी खांड के भाव में कुछ मंदा रहेगा । ति० १० के बाद सोना, चांदी के भाव में मंदी का झटका आएगा । ति० ७ को वर्षा हो तो आगे सुभिक्ष हो अतः अन्न का स्टाक करने से हानि रहे ।

आकाशलक्षण—ति० ३, ४ एवं तिथि ९ से १२ तक अच्छी वर्षा के योग हैं । अन्य तिथियों को भी कहीं न कहीं वर्षा होती ही रहेगी ।

श्रावण शुक्ल १५ रविवार इष्ट ४५।३०, के. अहर्गण २३१६

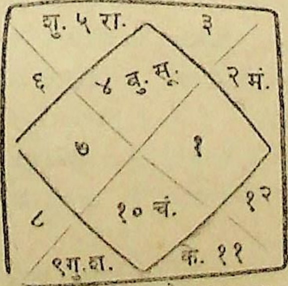

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	३	८	४	८	४	१०
२१	१०	२	०	४	१९	२३	२३
५५	११	४२	४४	३९	३८	४६	४६
४९	४३	१७	४१	४	३	३८	३८
५७	३९	६७	२	७३	३	३	३
३१	७	५३	१९	३९	२२	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. [illegible]	कृ. [illegible]	पुन. ४	मू. [illegible]	म. [illegible]	पू.षा. [illegible]	पू.फा. ४	पू.भा. [illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०१७ शाक १८८२ भाद्रपद कृष्णपक्ष १० | तारीख | चन्द्र | भा. स्टै. टाईम | उदयकालिक | (८ अगस्त से २२ अगस्त तक सन् १९६० ई.) दक्षिण अयन,§

ति. मा. घ.	प.	ति	वा.	घ.	प.	न.	घ	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. श्राव.	अं. अग.	रा. श्राव.	मु. सफ़.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३३	२२	१	चं.	१	१६	ध.	१३	५४	शो.	४६	१२	कौ.	१	१६	२४	८	१७	१४	कुम्भ	५	४९	७	१०	३	२१	४३	२८
अव	म	२	चं.	५६	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३३	१८	३	मं.	५२	४३	श.	११	१९	अ.	४०	२०	ब.	२४	३९	२५	९	१८	१५	मी५५।३	५	५०	७	९	३	२२	४०	४९
३३	१५	४	बु.	४९	५०	पू. भा.	९	३८	सु.	३५	१७	ब.	२१	१६	२६	१०	१९	१६	मीन	५	५०	७	८	३	२३	३८	१२
३३	११	५	गु.	४८	५	उ. भा.	८	४५	धृ.	३१	३	कौ.	१८	५७	२७	११	२०	१७	मीन	५	५१	७	७	३	२४	३५	३६
३३	७	६	शु.	४७	३३	रे.	९	२५	शू.	२७	५०	ग.	१७	४९	२८	१२	२१	१८	मे. ९।२५	५	५१	७	६	३	२५	३३	२
३३	३	७	श.	४८	२२	अ.	११	८	गं.	२५	३६	वि.	१७	५७	२९	१३	२२	१९	मेष	५	५२	७	५	३	२६	३०	३०
३३	०	८	र.	५०	२८	भ.	१४	९	वृ.	२४	२६	बा.	१९	२५	३०	१४	२३	२०	वृ.३०।११	५	५३	७	५	३	२७	२७	५९
३२	५६	९	चं.	५३	४०	कृ.	१८	१७	ध्रु.	२४	७	तै.	२२	४	३१	१५	२४	२१	वृष	५	५४	७	४	३	२८	२५	२९
३२	५२	१०	मं.	५७	५०	रो.	२३	३०	व्या	२४	३८	ब.	२५	४५	भ१	१६	२५	२२	मि५६।२७	५	५४	७	३	३	२९	२३	०
३२	४८	११	बु.	६०	०	मृ.	२९	२५	ह.	२५	४७	ब.	३०	४४	२	१७	२६	२३	मिथुन	५	५५	७	२	४	०	२०	३३
३२	४४	११	गु.	२	३८	आ.	३५	५५	व.	२७	२०	बा.	२	३८	३	१८	२७	२४	मिथुन	५	५५	७	१	४	१	१८	८
३२	४०	१२	शु.	७	४४	पुन.	४२	२७	सि.	२८	५२	तै.	७	४४	४	१९	२८	२५	क.२५।४९	५	५५	७	०	४	२	१५	४५
३२	३६	१३	श.	१२	४१	पु.	४८	३३	व्य.	३०	१२	व.	१२	४१	५	२०	२९	२६	कर्क	५	५६	६	५८	४	३	१३	२४
३२	३२	१४	र.	१७	१	श्ले.	५३	५८	व.	३१	४	श.	१७	१	६	२१	३०	२७	सिं५३।५८	५	५६	६	५७	४	४	११	६
३२	२८	३०	चं.	२०	३०	म.	५८	२१		३१	९	ना.	२०	३०	७	२२	३१	२८	सिंह	५	५७	६	५६	४	५	८	४९

ग्रहदर्शन—बु. ति. ११ को पूर्व में अस्त होगा। सूर्योदय से पहले मं. याम्योत्तर-वृत्तासन्न, सूर्यास्त बाद गु. श. खमध्य की ओर प्रवृत्त एवं शु. पश्चिम क्षितिज लग्न होगा।

§उत्तर गोल। वर्षा ऋतु।

पुष्य में बुध १८।५०,

भ. २४।३९ उ., ५२।४३ या.,

श्री गणेश ४ व्र., [वि. मु. उ. भा.]

[वि. मु. रेव.]

भ. ४७।३३ उ., पञ्चक स. ९।२५, चंन्द्रषष्ठी,

भ. १७।५७ या., चेल्हम

पू. फा. में शुक्र ४९।४१, स्वा ३ म इन्द्र १८।१७, श्रीकृष्णजन्मा-,‡

भारत स्वतन्त्रता दिवस, जयहिन्द सं. १४ प्रा.

भ. २५।४५ उ. ५७।५० या., सं. मघा सिंहार्क ३८।३५, मु ३० पुष्या।

[वि. मु. मृग.] ‡ष्टमी व्रत, (चन्द्रोदय रात्रि घं.मि१२।३)

बुध पूर्व में अस्त, अजा ११ व्र. स., ।मध्याह्नोत्तर, आश्ले. में बुध ∓

गुरु मार्गी ५५।१३, प्रदोष व्र., ∓५४।३४ पू.फा. ३ राहु. पू.भा.→

भ. १२।४१ उ. ४४।५१ या., ←१ केतु ७।५२,

कुशोत्पाटन ("ॐहूँफट्" मन्त्र से)

सोमवती ३०,

भाद्रपद कृष्ण ८ रविवार इष्ट ४५।१७, के. अहर्गण २३२३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	३	८	४	८	४	१०
२८	१४	१२	०	१३	१९	२३	२३
३८	४३	४७	३२	१४	१६	२४	२४
५३	१५	४७	१५	३७	१२	२३	२३
५७	३८	[illegible]	१	७३	२	३	३
४०	२०	[illegible]	३	३९	४७	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
[illegible]	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

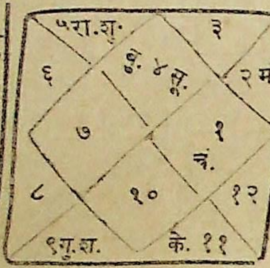

इस पक्ष में—मकई आदि मोटे अनाज की उपज अच्छी हो। रुई, सूत, वस्त्र, रसकश और शेयरों के भाव तेज हों। सोने में एकाध टके की मंदी आवे। चांदी में भी मंदी का रुख रहे। मणि, मोती, जवाहरात और ऊनी कपड़ों का भाव घटे। ति० ९ से गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा मंदे हों। ति० ११ से रुई में १०–१५ टका की मंदी आवे। धातुओं में घटावढ़ी के बाद तेजी रहे। ति० १२ से अन्नों के भाव में नर्मी का रुख रहेगा। अलसी, सरसों, गुड़ के भाव में तेजी रहेगी। यहां अमावस्या सोमवती है जो सुभिक्ष की सूचक है। यहां नेताओं द्वारा किसी देश की समस्या का हल करने का प्रयत्न हो। भारत के नेताओं को यश मिले। यदि ति० २ को चन्द्रमा मेघाच्छन्न रहे तो वर्षा एवं उपज अच्छी हो— भाद्रमासे द्वितीयायां यदि चन्द्रो न दृश्यते।

तदा सम्पूर्णवर्षा स्यादन्ननिष्पत्तिरुत्तमा ॥

आकाशलक्षण—ति० १,२ तथा ति० ९ से १२ तक वर्षा के योग पाए जाते हैं। तिथि ३० के करीब बिजली की

भाद्रपद कृष्ण ३० चन्द्रवार इष्ट ४५।१८, के. अहर्गण २३३१

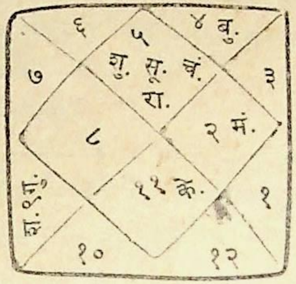

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	३	८	४	८	४	१०
६	१९	२७	०	२३	१८	२२	२२
२०	४५	५८	२९	३	५६	५८	५८
४२	५९	१६	२८	४९	०	५७	५७
५७	३७	[illegible]	०	७३	२	३	३
५०	४	[illegible]	३२	३९	११	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
[illegible]	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वि० संवत २०१७ शाके १८८२ भाद्रपद शुक्लपक्ष ११ | तारीख | चन्द्र | भा.स्टै. टाईम | उदयकालिक | (२३ अगस्त से ५ सितम्बर तक सन १९६०ई.) दक्षिण अयन,§

ग्रहदर्शन—बु. अस्त है। सूर्योदय से पूर्व मं. खमध्यासन्न, सूर्यास्त

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि० संवत २०१७ शाके १८८२ भाद्रपद शुक्लपक्ष ११ | तारीख | चन्द्र | भा. स्टै. टाइम | उदयकालिक | (२३ अगस्त से ५ सितम्बर तक सन १९६०ई.) दक्षिण अयन,§

दिनमान घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	प्र. भाद्र.	अ. अग.	रा. भाद्र.	मु. सफर.	चन्द्र सञ्चार	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा. अं. क. वि.	ग्रहदर्शन—बु. अस्त है। सूर्योदय से पूर्व मं. खमध्यासन्न, सूर्यास्त बाद गु. श. खमध्य की ओर प्रवृत्त एवं शुक्र पश्चिम क्षितिजासन्न होगा। §उत्तर गोल। शरदृतु।
३२ २३	१	मं.	२२ ५०	पू.फा.	६० ०	शि.	३० २०	ब.	२२ ५०	८	२३	१	२९	सिंह	५ ५८	६ ५५	४ ६ ६ ३३	रा. सौर भाद्र. प्रा., सा.कन्या में सूर्य ७।४४, शरद् प्रा.,मघासिंहा†
३२ १९	२	बु.	२४ १	पू.फा.	१ ३८	सि.	२८ ३७	कौ.	२४ १	९	२४	२	३०	कं. १७।८	५ ५८	६ ५४	४ ७ ४ १९	चन्द्रदर्शन, उत्तर शृंगोन्नति, मेला श्री बाबा गुसाईं आणां‡
३२ १५	३	गु.	२३ ५३	उ.फा.	३ ३८	सा.	२६ ५२	ग.	२३ ५३	१०	२५	३	२१	कन्या	५ ५९	६ ५३	४ ८ २ ६	भ.५३।११उ.,र.उलावल मु.३,उफा. में शुक्र४१।१३,हरितालिका=
३२ ११	४	शु.	२२ २९	ह.	४ २१	शु.	२२ ५	वि.	२२ २९	११	२६	४	२	तु. ३४।९	६ ०	६ ५२	४ ८ ५९ ५५	भ. २२।२९ या., †में बुध ४६।२८,
३२ ६	५	श.	१९ ५४	चि.	३ ५५	शु.	१७ २३	बा.	१९ ५४	१२	२७	५	३	तुला	६ ०	६ ५१	४ ९ ५७ ४६	ऋषि पंचमी, ‡कुराली, [वि. मु. उ. फा.]
३२ ३	६	र.	१६ १७	स्वा.	२ २४	ब्र.	११ ५१	तै.	१६ १७	१३	२८	६	४	वृ. ४५।३९	६ ०	६ ५०	४ १० ५५ ४०	मृग. में मंगल ३५।१७, कन्या में शुक्र २४।३, सूर्य षष्ठी व्र.,
३१ ५७	७	चं.	११ ५०	वि.	० ५६ ५२	ऐं.	५ ३७ ५८ ४८	व.	११ ५०	१४	२९	७	५	वृश्चिक	६ १	६ ४८	४ ११ ५३ ३६	भ. ११।५० उ. ३९।१४ या.,
३१ ५३	८	मं.	६ ३८	ज्ये.	५३ ११	वि.	५१ २९	ब.	६ ३८	१५	३०	८	६	ध. ५३।११	६ २	६ ४७	४ १२ ५१ ३२	पू. फा. में सूर्य २९।२८, पू. फा. में बुध २९।२०,
३१ ४८	९	बु.	० ५७	मू.	४९ १०	प्री.	४३ ५६	कौ.	० ५७	१६	३१	९	७	धनु	६ ३	६ ४६	४ १३ ४९ ३०	श्री चन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव) ʃस्मा., वै.,
अव म	१०	बु.	५४ ५४	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ०	=३ व., कलंक ४ चंद्रदर्शन निषिद्ध (चंद्रास्त रा.८ घं. ४४ मि.)=
३१ ४४	११	गु.	४८ ४२	पू. षा.	४४ ५३	आ.	३६ ११	ब.	२१ ४८	१७	सि.१	१०	८	म. ५८।५१	६ ३	६ ४५	४ १४ ४७ ३२	भ. २१।४८ उ.४८।४२ या., सितम्बर १ ता. ३०, पद्मा ११व्र.ʃ
३१ ३९	१२	शु.	४२ ३६	उ. षा.	४० ४५	सौ.	२८ ३०	ब.	१५ ३९	१८	२	११	९	मकर	६ ४	६ ४४	४ १५ ४५ ३६	पद्मा ११ व्र. नि., वामन १२, =[वि. मु. ह.]
३१ ३५	१३	श.	३६ ४९	श्र.	३६ ५०	शो.	२० ५९	कौ.	९ ४२	१९	३	१२	१०	मकर	६ ५	६ ४३	४ १६ ४३ ४२	अगस्त्य उदित ४४।३, शनि प्रदोष व्र. [वि गु. श्रव, शनि.]
३१ ३०	१४	र.	३१ २७	ध.	३३ २४	अ.	१३ ४७	ग.	४ ८	२०	४	१३	११	कुं. ५।७	६ ५	६ ४१	४ १७ ४१ ४९	भ. ३१।२७ उ.५९।४या., पंचक प्रा. ५।७, सत्य. व्र., अनन्त१४,×
३१ २६	१५	चं.	२६ ४२	श.	३० ३७	सु.	७ ४	ब.	२६ ४२	२१	५	१४	१२	कुम्भ	६ ६	६ ४०	४ १८ ३९ ५८	हस्त में शुक्र ३२।४०, प्रौष्ठपदी, ×मेला छपार,

भाद्रपद शुक्ल ८ मंगलवार इष्ट ४४।५५, क. अहर्गण २३३९

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	४	८	५	८	४	१०
१४	२४	१३	०	२	१८	२२	२२
४	३७	५०	३८	५३	४०	३३	३३
११	४६	२०	४९	१	५०	३०	३०
५८	३५	६०	१	७३	१	३	३
४	४१	५	५९	३९	३०	११	११
उदय	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा.४	मृग.१	पू.फा.१	मू.१	उ.फा.२	पू.षा.२	पू.फा.३	पू.भा.१
जल	अग्नि	जल	अग्नि	नीर	सौम्य	जल	नीर

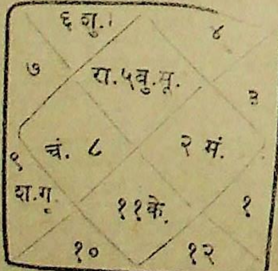

इस पक्ष में—रुई, सोना, चांदी तेज एवं शेअर मन्दे हों। सूत, कपड़ा, देवदारु और खट्टे पदार्थों में तेजी आवे। खांड, शक्कर, कपूर आदि श्वेत पदार्थ मन्दे हों। ति० ६ से रुई के भाव में मन्दे का असर हो और चांदी के भाव में घटाबढ़ी होकर तेजी हो। अनाज और घास का भाव बढ़े ति०८ से तेल, सरसों, घी, ऊनीवस्त्र तेज हों। इस पक्ष में वायदा का बाजार प्रायः मन्दा रहेगा। कपास और तिल की खेती को हानि पहुंचेगी। ति० ८ से २४ दिन के भीतर कहीं किसी बड़े ख्यातनामा पुरुष की मृत्यु हो। विदेशी राष्ट्रों से भारत के नये २ समझौते हों। कहीं वृष्टि विशेष हो। कहीं नदी, नालों से हानि हो। नदियें भरी चलेंगी। यदि ति० २ को कहीं मेघ बरसे तो अन्न संग्रह से छठे महीने में लाभ हो। यदि ति० ८ को दिन रात मेघ न दीखे और चन्द्र सूर्य निर्मल रहें तो ५ मास तक अन्न और सूत तेज रहें।

आकाशलक्षण—तिथि १ से ६ तक तथा ति० ११ से १४ तक खण्ड वृष्टि के योग पाये जाते

भाद्रपद शुक्ल १५ चन्द्रवार इष्ट ४४।४५, के. अहर्गण २३४५

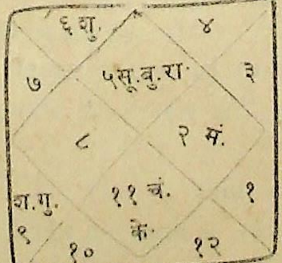

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	४	८	५	८	४	१०
१९	२८	२५	०	१०	१८	२२	२२
५२	९	१०	५३	१४	३३	१४	१४
५२	१७	६	२७	५३	२	२६	२६
५८	३४	४०	३	७३	०	३	३
१३	३४	[illegible]	४	५८	५५	११	११
उदय	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा.२	मृग.२	पू.फा.४	मू.१	उ.फा.१	पू.षा.१	पू.फा.३	पू.भा.१
जल	अग्नि	जल	अग्नि	सौम्य	सौम्य	जल	नीर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

वि० संवत् २०१७ शाक १८८२ आश्विन कृष्णपक्ष १२ । तारीख । चन्द्र । भा. स्टै. टाइम । उदयकालीन ...सितम्बर तक सन् १९६० ई.) दक्षिण अयन,

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३१	२१	१	मं.	२२	५०	पू. भा.	२८	४४	वृ.	५५ १	४४ ३	कौ.	२२	५०	२२	६	१५	१३	मो.१४।१२	६	७	६	३९	४	१९	३८	९
३१	१६	२	बु.	१९	५६	उ. भा.	२७	४४	गं.	५१	१५	ग.	१९	५६	२३	७	१६	१४	मीन	६	७	६	३७	४	२०	३६	२१
३१	१२	३	गु.	१८	१४	रे.	२७	५४	वृ.	४७	४३	वि.	१८	१४	२४	८	१७	१५	मे.२७।५४	६	७	६	३६	४	२१	३४	३६
३१	७	४	शु.	१७	४२	अ.	२९	१८	ध्रु.	४५	१२	बा.	१७	४२	२५	९	१८	१६	मेष	६	८	६	३५	४	२२	३२	५४
३१	३	५	श.	१८	३०	भ.	३१	५९	व्या	४३	४३	तै.	१८	३०	२६	१०	१९	१७	वृ.४७।५७	६	८	६	३३	४	२३	३१	१४
३०	५८	६	र.	२०	३६	कृ.	३५	५०	ह.	४३	७	व.	२०	३६	२७	११	२०	१८	वृष	६	९	६	३२	४	२४	२९	३६
३०	५४	७	चं.	२३	५०	रो.	४०	५०	व.	४३	२७	ब.	२३	५०	२८	१२	२१	१९	वृष	६	९	६	३१	४	२५	२८	१
३०	४९	८	मं.	२८	१	मृ.	४६	३९	सि.	४४	२१	कौ.	२८	१	२९	१३	२२	२०	मि.१३।४४	६	१०	६	३०	४	२६	२६	२८
३०	४४	९	बु.	३२	५४	आ.	५३	०	व्य.	४५	४१	तै.	००	२७	३०	१४	२३	२१	मिथुन	६	११	६	२९	४	२७	२४	५६
३०	४०	१०	गु.	३८	३	पुन.	५९	३२	ब.	४७	१०	व.	५	२८	३१	१५	२४	२२	क.४२।५४	६	१२	६	२८	४	२८	२३	२०
३०	३५	११	शु.	४३	४	पु.	६०	०	प.	४८	२९	ब.	१०	३३	अ१	१६	२५	२३	कर्क	६	१२	६	२६	४	२९	२१	५९
३०	३१	१२	श.	४७	३२	पु.	५	४६	शि.	४९	२४	कौ.	१५	१८	२	१७	२६	२४	कर्क	६	१३	६	२५	५	०	२०	३४
३०	२६	१३	र.	५१	९	आश्ले.	११	२०	सि.	४९	३९	ग.	१९	२०	३	१८	२७	२५	सिं ११।२०	६	१४	६	२४	५	१	१९	११
३०	२१	१४	चं.	५३	३५	म.	१५	५९	सा.	४८	५८	वि.	२२	२२	४	१९	२८	२६	सिंह	६	१४	६	२२	५	२	१७	५०
३०	१७	३०	मं.	५४	५१	पू. फा.	१९	३२	शु.	४७	२६	च.	२४	१३	५	२०	२९	२७	कं.३५।६	६	१४	६	२१	५	३	१६	३१

ग्रहदर्शन–गु. ति. १० को पश्चिम में उदित होगा। सूर्यास्त बाद गु. श. खमध्यासन्न एवं शुक्र क्षितिज से ऊपर होगा। मं. को प्रातः खमध्य से पूर्व की ओर कुछ झुका देखें।

उ.फा. में बुध ३४।२, पितृपक्ष महालय-आरम्भ,
†उत्तर गोल। शरद् ऋतु।
भ. ४९।५, उ.,
भ. १८।१४ या., पंचक स. २७।५४, मिथु. में मंगल ५८।१७,§
§कन्या में बुध २५।३, श्री गणेश ४ व्र.,

भ.२०।३६ उ. ५२।१३ या.,
*उदित. जन्म दिन श्री १०५ धर्ममार्तण्ड बघाट नरेश जी
उ.फा. में सूर्य १३।५३,
हस्त में बुध ११।१, सौभाग्यवती श्राद्ध,
भ.५।२८, उ. ३८।३ या., शनि मार्गी २४।३२, बुध पश्चिम में*
सं. कन्यार्क ३८।५६, मु. ३० पुण्य मध्याह्नोत्तर, चित्रा में शुक्र°
मघा १ सिंह में वरुण २२।२८, °२४।१५, इन्दिरा ११ व्र.
भ. ५१।९ उ., प्रदोष व्र.,
भ. २२।२२ या., शस्त्र विष आदि से मरे हुओं का श्राद्ध,
अज्ञात मृत तिथिवालों एवं समस्त पितरों का श्राद्ध,

आश्विन कृष्ण ८ मंगलवार इष्ट ४४।३५, के. अहर्गण २३५३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	२	५	८	५	८	४	१०
२७	२	९	१	२०	१८	२१	२१
३९	३९	१५	२२	३	२८	४९	४९
२७	३६	२९	५१	५७	२५	०	०
५८	३२	०°	४	७३	०	३	३
२८	४७	°°	२७	३८	८	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. १	मृग. ३	उ.फा. ४	म. २	हस्त ४	पू.षा. २	पू.भा. ३	पू.भा. १
तीर	अग्नि	तीर	अग्नि	सौम्य	सौम्य	जल	तीर

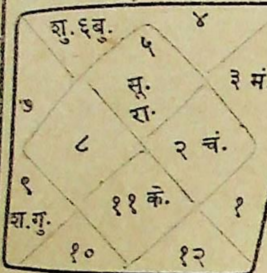

इस पक्ष में—ति० १ से ३ तक तिलहन और रुई में तेजी रह कर बाद में मंदी रहे। उड़द, मघ और लाल मिर्च आदि लाल चीजें तेज हों। ति० ४ से अनाज के भाव में कुछ मंदापन रहे। ति० ९ से ३० तक रुई में मंदी होकर तेजी हो। वायदा व्यापार में विशेष उथल पुथल मचेगी। यहां धनराशि में शनि मार्गी हो रहा है अतः वायदा बाजार में यहां जो वस्तु पहले से तेज चल रही हो वह ति० १० के बाद मंदी और जो मंदी चल रही हो वह तेज होगी। इन दिनों शासन में कोई स्थान रिक्त होगा। मजदूर लोगों को काम कम मिले। पूंजीपति एवं मजदूर वर्ग में वैमनस्य बढ़े। ति० ४ को प्रातः सूर्योदय के समय यदि बादल हों तो प्रजा में सुभिक्ष सुख समृद्धि हो।

आकाशलक्षण—ति० १ से १० तक कहीं कहीं वर्षा के योग पाये जाते हैं। आकाश में छोटे २ मेघ खण्ड अक्सर घूमते रहेंगे।

आश्विन कृष्ण ३० मंगलवार इष्ट ४४।२५, के. अहर्गण २३६०

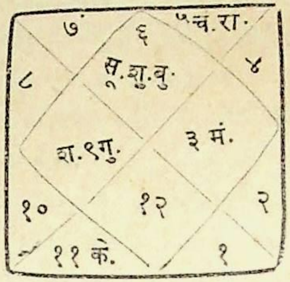

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	५	८	५	८	४	१०
४	६	२०	१	२८	१८	२१	२१
२९	२४	४२	५७	३९	२९	२६	२६
१५	३४	२०	३८	२०	३२	४४	४४
५८	३१	९४	५	७३	०	३	३
४१	२०	५८	३८	३७	३०	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ	अ.
उ.फा. ३	मृग. ४	हस्त ४	म. २	चित्रा २	पू.षा. २	पू.फा. ३	पू.भा. १
तीर	अग्नि	सौम्य	अग्नि	अग्नि	सौम्य	जल	तीर

वि० संवत् २०१७ शाक १८८२ आश्विन शुक्लपक्ष १३ । तारीख । चन्द्र । भा.स्टै. टाइम । उदयकालिक ।(२१ सितम्बर से ४ अक्तूबर तक सन् १९६० ई.) दक्षिणायन

वि.मा.

ग्रहदर्शन–सूर्योदय से पूर्व मं. याम्योत्तर वृत्त लग्न, सूर्यास्त बाद

CC-0 In Public Domain. Kirti Rani Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	आश्विन	सित.	भाद्र.	र.	सञ्चार	सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.
३०	१२	१	बु.	५४	४८	उ.फा.	२१	४९	शु.	४४	५१	कि.	२४	४९	६	२१	३०	२८	कन्या	६	१५	६	२०	५	४	१५	१४
३०	८	२	गु.	५३	३३	ह.	२२	४८	ब्र.	४१	१६	बा.	२४	१०	७	२२	३१	२९	तु.५२।४२	६	१६	६	१९	५	५	१३	५९
३०	३	३	शु.	५१	३	चि.	२२	३७	ऐं.	३६	४४	तै.	२२	१८	८	२३	आ१	र१	तुला	६	१६	६	१७	५	६	१२	४७
२९	५८	४	श.	४७	३१	स्वा.	२१	१८	वै.	३१	२१	व.	११	१७	९	२४	२	२	तुला	६	१७	६	१६	५	७	११	३९
२९	५३	५	र.	४३	१०	वि.	१९	१२	वि.	२५	१५	ब.	१५	२०	१०	२५	३	३	वृ. ४।४४	६	१८	६	१५	५	८	१०	३३
२९	४८	६	चं.	३८	६	अनु.	१६	९	प्री.	१८	२९	कौ.	१०	३८	११	२६	४	४	वृश्चिक	६	१९	६	१४	५	९	९	२८
२९	४४	७	मं.	३२	२९	ज्ये.	१२	३६	आ.	११	१४	ग.	५	१७	१२	२७	५	५	ध.१२।३६	६	१९	६	१३	५	१०	८	२५
२९	३९	८	बु.	२६	३२	मू.	८	३७	सौ.	३/५५	४०/५५	व.	२६	३२	१३	२८	६	६	धनु	६	१९	६	११	५	११	७	२४
२९	३४	९	गु.	२०	२५	पू.षा.	४	२७	अ.	४८	८	कौ.	२०	२५	१४	२९	७	७	म.१८।२४	६	२०	६	१०	५	१२	६	२४
२९	३०	१०	शु.	१४	२४	उ. षा.	[illegible]	१५/५५	सु.	४०	२९	ग.	१४	२४	१५	३०	८	८	मकर	६	२१	६	९	५	१३	५	२८
२९	२५	११	श.	८	३९	ध.	५२	४३	धृ.	३३	७	वि.	८	३९	१६	अ१	९	९	कुं.२४।२९	६	२१	६	७	५	१४	४	३४
२९	२०	१२	र.	३	२०	श.	४९	४७	शू.	२६	१२	बा.	३	२०	१७	२	१०	१०	कुम्भ	६	२२	६	६	५	१५	३	४२
अव	म	१३	र.	५८	४१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२९	१६	१४	चं.	५४	५०	पू. भा.	४७	४३	गं.	१९	५५	ग.	२६	४५	१८	३	११	११	मी३३।१४	६	२२	६	४	५	१६	२	५२
२९	११	१५	मं.	५१	५९	उ. भा.	४६	२८	वृ.	१४	१७	वि.	२३	२४	१९	४	१२	१२	मीन	६	२३	६	३	५	१७	२	४

ग्रहदर्शन—सर्योदय से पूर्व मं. याम्योत्तर वृत्त लग्न, सर्यास्त बाद गु. श. खमध्यासन्न एवं बु. शु. पश्चिम में निकट २ होंगे।

आर्द्रा में मंगल १३।५८, तुला में शुक्र ५०।७, मातामह श्राद्ध,†
चन्द्र-दर्शन उ.शृ. उन्नति, चित्रा में बुध २४।२७,
र. उलाखर मु. ४, रा. सौर आश्वि.प्रा., सा. तुला म सूर्य ०।२५‡
भ. १९।१७, उ. ४७।३१ या., †नवरात्र प्रा., घटस्थापन,
[वि. मु. अनु.] ≈अयन, उ. द. गोल। शरद् ऋतु।
हस्त में सूर्य ५१।२८, तुला म बुध ४८।२९, [वि. मु. अनु.]
भ. ३२।२९ उ. ५९।३० या., स्वा. में शुक्र १५।५८ सरस्वत्या-❀
सरस्वती पूजन, दुर्गाष्टमी, मेला ज्वालामुखी व तारादेवी, ∫
सरस्वती बलिदान, [वि. मु. उ. षा.] ‡दक्षि. गोल प्रा.,
भ. ४१।३१ उ. सरस्वती विसर्जन, विजयादशमी मेला दशहरा §
भ. ८।३९ या. पंचक प्रा. २४।२९, अक्तूबर १० ता. ३१, स्वा. ±
प्रदोष व्र.. श्री गांधी जयन्ती, ❀वाहन १२।३६ उ., §[वि.मु. श्रव.]
± में बुध २९।४५ पापांकुश ११ व्र. स. [वि. मु. धनि.]
भ. ५४।५० उ., मू. २ में गु २४।८ ∫[वि. मु. मू.]
भ. २३।२४ या., सत्य.व्र. कोजागरी व्रत, शरत्-पूर्णिमा, आकाश❀
❀दीप दान, कार्त्ति. स्ना. प्रा., म. वाल्मीकि जयन्ती

आश्विन शुक्ल ८ बुधवार इष्ट ४४।१३, के. अहर्गण २३६८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	६	८	६	८	४	१०
१२	१०	२	२	८	१८	२१	२१
१९	२६	४६	४६	२८	३६	१	१
३९	१६	१७	५२	१६	२९	१८	१८
५८	२८	८५	६	७३	१	३	३
५७	५०	१८	५०	३७	१९	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
हस्त १	आर्द्रा २	चित्रा ३	मूल १	स्वा. १	पू.षा. २	पू.फा. ३	पू.भा. १
सौम्य	सौम्य	अग्नि	अग्नि	वायु	सौम्य	क्रूर	नीर

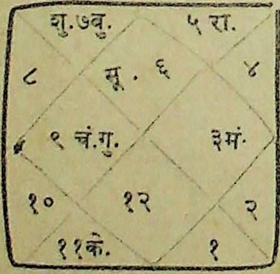

इस पक्ष म—पशुओं को पीड़ा एवं कहीं राजा प्रजा में परस्पर विरोध रहे। उत्पात हो। घी, तेल, रुई, सूत, रेशमी व ऊनी वस्त्र तथा एरण्ड, चना आदि अनाज तेज हों। रसकश में घटाबढ़ी चलकर कुछ मंदी हो। ति० ७ से सोना, चांदी, अलसी, सरसों, मूंगफली मंदी हों और गुड़, खाण्ड, अफीम, हल्दी, घास, लकड़ी तेज हों। तिथि १० को लाल रंग, मजीठ, चन्दन, लौंग व जावित्री, नारियल एवं जायफल का भाव तेज हो और जूट, शण का भाव सस्ता हो। यहां घी का संग्रह करने से कार्तिक मे अच्छा लाभ मिले। लिखा है—

आश्विने च बुधेऽष्टम्यां विधेयो घृतसंग्रहः। कार्तिके विक्रयस्तस्य सम्पदः स्युः पदे पदे ॥

यहां फसल से अन्न की प्राप्ति का अच्छा योग हो। कहीं किसी मुख्य सत्ताधिकारी व्यक्ति का मरण हो। किसी नगर पर विपत्ति आए।

आकाशलक्षण—ति० ८ से ति० ११ तक और ति० १५ को कहीं-कहीं बादल चाल बूंदाबांदी के योग हैं। कहीं ओले पड़ने की भी आशङ्का है।

आश्विन शुक्ल १५ मंगलवार इष्ट ४४।२, के. अहर्गण २३७४

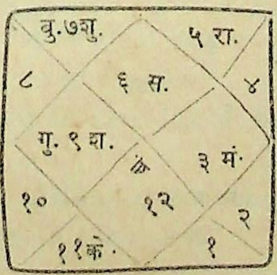

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	६	८	६	८	४	१०
१८	१३	११	३	१५	१८	२०	२०
१३	१४	३	३०	४९	४६	४२	४२
५३	२४	४६	३	५३	२	१३	१३
५९	२६	७८	७	७३	१	३	३
१०	५३	३७	४५	३६	५१	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
हस्त ३	आर्द्रा २	स्वा. १	मूल १	स्वा. ३	पू.षा. २	पू.फा. ३	पू.भा. १
सौम्य	सौम्य	वायु	अग्नि	वायु	सौम्य	क्रूर	नीर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बि० संवत् २०१७ शाक १८८२ कार्तिक कृष्णपक्ष १४ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टे. टाइम | उदयकालिक | (५ अक्तूबर से २० अक्तूबर सन् १९६० ई.) अयन एवं गोल ↑

दि.मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	प्र. कार्तिक	अं. अक्तू.	रा. कार्तिक	मु.	सञ्चार	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	स्पष्ट सार सूर्य रा. अं. क. वि.
२९ ६	१	बृ.	५० १७	रे.	४६ २२	ध्रु.	९ ३१	बा.	२१ ८	२०	५	१३	१३	मे.४६।२२	६ २३	६ २	५ १८ १ १९
२९ २	२	शु.	४९ ४९	अ.	४७ २६	व्या	५ ३८	तै.	२० ३	२१	६	१४	१४	मेष	६ २४	६ १	५ १९ ० ३६
२८ ५७	३	शु.	५० ४०	भ.	४९ ४८	ह.	२ ४८	व.	२० १४	२२	७	१५	१५	मेष	६ २४	५ ५९	५ १९ ५९ ५५
२८ ५२	४	श.	५२ ५२	कृ.	५३ २६	व.	० ५७	ब.	२१ ४६	२३	८	१६	१६	वृ. ५।४२	६ २५	५ ५८	५ २० ५९ १८
२८ ४८	५	र.	५६ १०	रो.	५८ ९	सि.	५९ ५७	कौ.	२४ ३१	२४	९	१७	१७	वृष	६ २६	५ ५७	५ २१ ५८ ४३
२८ ४३	६	चं.	६० ०	मृ.	६० ०	व.	६० ०	ग.	२८ १७	२५	१०	१८	१८	मि३०।५८	६ २६	५ ५६	५ २२ ५८ १०
२८ ३९	६	मं.	० २५	मृ.	३ ४७	व.	० ३८	व.	० २५	२६	११	१९	१९	मिथुन	६ २७	५ ५५	५ २३ ५७ ३८
२८ ३४	७	बु.	५ २५	आ.	१० ३	प.	१ ४७	ब.	५ २५	२७	१२	२०	२०	क.५९।५७	६ २७	५ ५४	५ २४ ५७ ९
२८ ३०	८	गु.	१० ४०	पुन.	१६ ३५	शि.	३ १२	कौ.	१० ४०	२८	१३	२१	२१	कर्क	६ २८	५ ५२	५ २५ ५६ ४३
२८ २५	९	शु.	१५ ४६	पु.	२२ ५७	सि.	४ ३३	ग.	१५ ४६	२९	१४	२२	२२	कर्क	६ २९	५ ५१	५ २६ ५६ २०
२८ २१	१०	श.	२० २०	आश्ले.	२८ ४४	सा.	५ ३०	वि.	२० २०	३०	१५	२३	२३	सिं२८।४४	६ ३०	५ ५०	५ २७ ५५ ५८
२८ १६	११	र.	२४ २	म.	३३ ३८	शु.	५ ५४	बा.	२४ २	३१	१६	२४	२४	सिंह	६ ३१	५ ४९	५ २८ ५५ ३८
२८ १२	१२	चं.	२६ ३४	पू. फा.	३७ २६	शु.	५ २४	तै.	२६ ३४	न१	१७	२५	२५	क.५३।५	६ ३१	५ ४८	५ २९ ५५ २०
२८ ७	१३	मं.	२७ ५७	उ. फा.	४० ४	ब्र.	४ ७	ब.	२७ ५७	२	१८	२६	२६	कन्या	६ ३२	५ ४७	६ ० ५५ ६
२८ ३	१४	बु.	२७ ५९	ह.	४१ २४	ऐं.	[illegible]	श.	२७ ५९	३	१९	२७	२७	कन्या	६ ३३	५ ४६	६ १ ५४ ५३
२७ ५८	३०	गु.	२६ ४७	चि.	४१ ३	वि.	२४ २	ना.	२६ ४७	४	२०	२८	२८	तु.११।२७	६ ३४	५ ४५	६ २ ५४ ४१

ग्रहदर्शन—सूर्योदय से पूर्व मं. खमध्य से कुछ पश्चिम की ओर झुका, सूर्यास्त बाद बु. शु. समीप २ पश्चिम क्षितिज से ऊपर एवं गु. श. खमध्य से पश्चिम की ओर उतरते दीखेंगे।

पञ्चक स. ४६।२२, दक्षिण। शरद् ऋतु।

भ. २०।१४ उ. ५०।४० या.,

विशा. में शुक्र ७।५४, करक चतुर्थी (करवा चौथ) (चन्द्रोदय, रा. ८. घं. ३३ मि.)

चित्रा में सूर्य २२।२, [वि. मु. मृग.]

भ. ०।२५ उ. ३२।५५ या.,

विशा. में बुध ०।३१, अहोई ८.

राहु शत. ४ केतु ०।१, यम को दीप दान, धन १३, हनुमज्जयन्ती,

भ. ४८।३ उ.,

भ. २०।२० या.,

वृश्चि. में शुक्र १६।५२, रमा एकादशी व्र.,

सं. तुलार्क ४।४१, मु. ३० पुण्य २०।४१ तक, सोम प्रदोष व्र.,

भ. २७।५७ उ. ५७।५८ या., अनु. में शुक्र ५९।५२, पू. फा. २

दीपमाला; महालक्ष्मी पूजा,

अन्न कूट, गोवर्धन पूजा,

कार्तिक कृष्ण ८ गुरुवार इष्ट ४३।५०, क. अहर्गण २३८३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	६	८	६	८	४	१०
२७	१७	२१	४	२६	१९	२०	२०
७	३	५५	४४	५२	६	१३	१३
२८	११	४८	४६	१३	१४	३६	३६
५९	२३	६२	८	७३	२	३	३
२७	४५	४०	५३	३५	४१	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

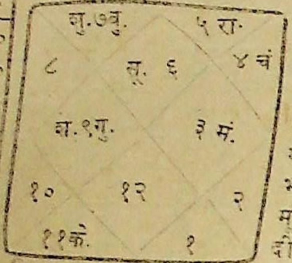

इस पक्ष में—कहीं वायुयान या जलयान की दुर्घटना के योग हैं। काश्मीर या ब्रह्मा के शासकों में चिन्ता व्याप्त हो। सूत, रुई, सोना, चांदी, मोती आदि रत्न, गुड़, खाण्ड, नारियल और तिल में तेजी हो। ति० १० से रुई, शेअर, चांदी में मंदी तथा तांबा, जस्त में घटा बढ़ी हो। गेहूं, मकई, बाजरा उड़द, मूंग के भाव में कुछ नरमाई हो। चौपाओं में ऊंट, बकरी का भाव मंदा हो। ति० १२ को बूंदाबांदी हो जाए तो तिल, तेल, मूंग, उड़द का संग्रह करने से पांचवें मास में लाभ मिले। यहां दीपावली बुधवार को है अतः आगे अनाज के स्टाक को जल्दी निकाल देना चाहिए। ति० १० शनिवार को है जो प्रजा में रोग, भय की सूचक है। लिखा है—"कार्तिके दशमी कृष्णा शनौ रोगकरी जने।" यदि इसी दिन आकाश मेघाच्छन्न रहे तो घी और सुपारी का संग्रह कर चौथे महीने बेचने से लाभ हो।

आकाशलक्षण—ति० १ से ४ तक तथा ति० ६, ७ को कहीं २ बादल चाल के योग हैं।

शकुनविचार—कार्तिक बदी एकादशी बर्षी बादल होय। आषाढ़ मास वर्षा अधिक संशय न करो कोय॥

कार्तिक कृष्ण ३० गुरुवार इष्ट ४३।३५, के. अहर्गण २३९०

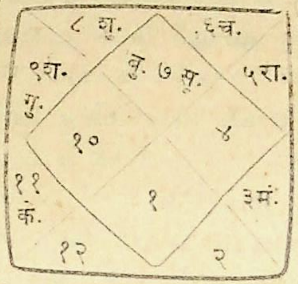

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	२	६	८	७	८	४	१०
४	१९	२८	५	५	१९	१९	१९
४	४२	१५	४९	२७	२७	५१	५१
२१	३२	४	२१	१८	२०	२१	२१
५९	२१	४१	९	७३	३	३	३
४२	२६	९	४१	३४	२७	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

वि० संवत् २०१७ शाक १८८२ कार्तिक शुक्लपक्ष १५ | ... (२१ अक्तूबर से ३ नवम्बर तक सन् १९६० ई.) अयन एवं गोल दक्षिण

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. सं. २०१७ शाका १८८२ कार्तिक शुक्लपक्ष | तारीख | चन्द्र | भा. स्ट. टाइम | उदयकालिक | (२१ अक्तूबर से ३ नवम्बर तक सन् १९६० ई.) अयन एवं गोल दक्षिण

घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	प्र. कालि.	अ. अनु.	रा. आश्वि	मु. र.उला	सञ्चारः	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा. अं. क. वि.
२७ ५४	१	गु.	२४ १९	स्वा.	४० २८	प्री.	४८ ५०	ब.	२४ १९	५	२१	२१	२१	तुला	६ ३४	५ ४४	६ ३ ५४ ३२
२७ ४९	२	शु.	२० ५२	वि.	३८ ३३	आ.	४२ ५१	कौ.	२० ५२	६	२२	३०	ज१	वृ. २४।२	६ ३५	५ ४३	६ ४ ५४ २६
२७ ४४	३	र.	१६ ३६	अनु.	३५ ४५	सौ.	३६ १३	ग.	१६ ३६	७	२३	क१	२	वृश्चिक	६ ३६	५ ४२	६ ५ ५४ २२
२७ ४०	४	चं.	११ ३६	ज्ये.	३२ १६	शो.	२९ ०	वि.	११ ३६	८	२४	२	३	ध. ३२।१६	६ ३६	५ ४०	६ ६ ५४ १९
२७ ३५	५	मं.	६ ५	मू.	२८ २२	अ.	२१ २८	बा.	६ ५	९	२५	३	४	धनु	६ ३७	५ ३९	६ ७ ५४ १८
२७ ३१	६	बु.	० १२	पू. षा.	२४ १४	सु.	१३ ४२	तै.	० १२	१०	२६	४	५	म. ३८।१०	६ ३८	५ ३८	६ ८ ५४ २०
अवम	७	बु.	५४ ९	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ० ०	० ०	० ०	० ० ० ०
२७ २६	८	गु.	४८ १३	उ. षा.	१९ ५८	धृ.	५८ ४६	वि.	२१ ११	११	२७	५	६	मकर	६ ३९	५ ३७	६ ९ ५४ २४
२७ २२	९	शु.	४२ ३३	श्र.	१५ ५५	गं.	५० ३३	बा.	१५ २३	१२	२८	६	७	कुं. ४४।५	६ ४०	५ ३७	६ १० ५४ ३०
२७ १८	१०	श.	३७ २०	ध.	१२ १५	वृ.	४३ २५	तै.	९ ५६	१३	२९	७	८	कुम्भ	६ ४०	५ ३५	६ ११ ५४ ३८
२७ १३	११	र.	३२ ४६	श.	९ ७	ध्रु.	३६ ५१	व.	५ ३	१४	३०	८	९	मी. ५२।२५	६ ४१	५ ३४	६ १२ ५४ ४९
२७ ९	१२	चं.	२९ २	पू. भा.	६ ५१	व्या.	३० ५८	व.	० ५४	१५	३१	९	१०	मीन	६ ४१	५ ३३	६ १३ ५५ २
२७ ५	१३	मं.	२६ १६	उ. भा.	५ २१	ह.	२५ ५४	तै.	२६ १६	१६	न१	१०	११	मीन	६ ४२	५ ३२	६ १४ ५५ १६
२७ १	१४	बु.	२४ ४०	रे.	४ ५२	व.	२१ ४१	व.	२४ ४०	१७	२	११	१२	मे. ४।५२	६ ४३	५ ३१	६ १५ ५५ ३१
२६ ५७	१५	गु.	२४ १६	अ.	५ ४२	सि.	१८ २२	ब.	२४ १६	१८	३	१२	१३	मेष	६ ४४	५ ३१	६ १६ ५५ ४८

ग्रहदर्शन—बु. ति. १३ का पश्चिम में अस्त होगा। सूर्योदय से पूर्व मं. नभमध्य से पश्चिम में कुछ लम्बित, सूर्यास्तबाद गु.शु.पश्चिम की ओर प्रवृत्त एवं शु.पश्चिमक्षितिज से काफी ऊपर चमकता दीखेगा।

सौराष्ट्र एवं दक्षिण भारत में चन्द्रदर्शन आज ही होगा, पुन. ∫
चंद्रदर्शन, उ. शृं. उन्नत, जमादि उलावल मु. ५, भाई दूज,
भ. ४४।६ उ., रा. सौर कार्तिक आरम्भ स्वा. में सूर्य ४५।४१†
भ. ११।३६ या. ∫ में मंगल ३२।३०,
मू. ३ में गुरु ४८।४८, † शरद् हेमन्त ऋतु।
भ. ५४।९ उ.,
सा. वृश्चि. में सूर्य २२।१३, हेमन्त प्रा., वृश्चि. में बुध ३६।५५
भ. २१।११ या., बुध वक्री १।१२, गोपाष्टमी, (सायं गायों का दीपजन एवं अलंकरण),
पंचक प्रा. ४४।५,
ज्य. में शुक्र ५२।५, पू. पा. ३ में शनि ३४।१८, [वि.मु.धनि.]
भ. ५।३ उ. ३२।४६ या., व.बुध तुला म ४३।२४, प्रबोधिनी ११ ╤
सोम प्रदोष व., ╤ व्र. स. तुलसीविवाह भीष्मपञ्चक प्रा.,
नवम्बर ११ ता. ३०, बुध पश्चिम म अस्त, वैकुण्ठ १४, [वि.मु.रेव.]
भ. २४।४० या. ५४।२८ या., पंचक स. ४।५२, सत्य. व्र.,
कार्तिक स्ना. स., मेला पुष्कर (अजमेर) व कपाल मोचन. x
x भीष्म पंचक स., श्री गुरुनानक जयन्ती

कार्तिक शुक्ल ८ गुरुवार इष्ट ४३।२३, के. अहर्गण २३९७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	२	७	८	७	८	४	१०
११	२२	०	६	१४	१९	१९	१९
३	९	५०	५९	२	५२	२९	२९
२	६	४९	४४	१२	४३	५	५
५९	१७	६	१०	७३	३	३	३
५६	३६	८	२८	३३	५४	११	११
दृश्य	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वा. २	पुन. १	वि. ४	मू. ३	अनु. ४	पू. षा. २	पू.फा. २	शत. ४
वायु	नीर	चण्ड	अग्नि	चण्ड	सौम्य	जल	जल

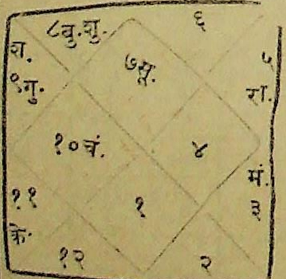

इस पक्ष में—विदेशी वस्तुएं तेज रहेंगी। गेहूं, मकई आदि अनाजों में भी कुछ तेजी का रुख रहेगा। मूंगफली, सरसों, अलसी, तिल, तेल, घी आदि मन्दे हों। चांदी रुई और पशुओं के भाव में प्रायः तेजी रहेगी। ति० १२ से शेयर, पाट, हैशियन में मन्दी आवे। रुई में भी १५–२० टका की मन्दी आवे। यहां ति० १५ को उदय काल में अश्विनी नक्षत्र है अतः प्रजा में रोगभय व्यापे। उत्तर और पश्चिम में घास का भाव तेज रहे। इस पक्ष में शासकों को कष्ट एवं भय रहे। यदि कार्तिक शुक्ल १ को सूर्य का परिवेश (चारों ओर चक्कर सा) दिखाई दे तो व्यापारियों को तिल, तेल के संग्रह से आगे लाभ मिलेगा।

कार्तिक शुक्ल १५ गुरुवार इष्ट ४३।१०, के अहर्गण २४०४

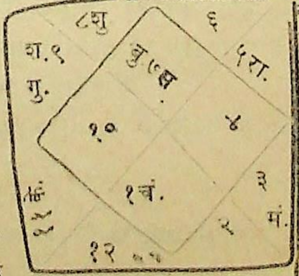

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	२	६	८	७	८	४	१०
१८	२३	२६	८	२२	२०	१९	१९
३	५१	५०	१५	३६	२१	६	६
१०	२९	४९	९	५१	३५	४९	४९
६०	१०	६६	११	७३	४	३	३
८	३१	२९	१२	२९	२५	११	११
दृश्य	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वा. ४	पुन. २	वि. ३	मू. ३	ज्ये. २	पू.षा. ३	पू.फा. २	शत. ४
वायु	नीर	चण्ड	अग्नि	वायु	सौम्य	जल	जल

आकाशलक्षण—ति० ५ से ९ तक और १२ से १५ तक भारत में कहीं-कहीं बादल चाल के योग हैं। दक्षिण में कहीं खण्ड वृष्टि भी हो। पञ्जाब, बंगाल उ० प्र० में शुष्क वायु चलती रहेगी और शनैः शीत का प्रकोप बढ़ने लगेगा और दुर्बलों को खुश्की से कष्ट होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०१७ शाक १८८२ मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष १६ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टै टाइम | उदयकालिक | (४नवम्बरसे १८नवम्बरतक सन्१९६०ई.) अयन एवं गोल दक्षिण?

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	रा.	सु.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२६	५३	१	शु.	२५	१३	भ.	७	४३	व्य.	१६	६	कौ.	२५	१३	१९	४	१३	१४	वृ.२३।३३	६	४५	५	३०	६	१७	५६	८
२६	४९	२	श.	२७	३०	कृ.	११	४	ह.	१४	१५	ग.	२७	३०	२०	५	१४	१५	वृष	६	४५	५	२९	६	१८	५६	३०
२६	४५	३	र.	३०	५६	रो.	१५	३०	प.	१४	२५	वि.	३०	५६	२१	६	१५	१६	मि.४८।१४	६	४६	५	२८	६	१९	५६	५४
२६	४१	४	चं.	३५	१९	मृ.	२०	५८	शि.	१४	४८	ब.	३	८	२२	७	१६	१७	मिथुन	६	४७	५	२७	६	२०	५७	२१
२६	३७	५	मं.	४०	२१	आ.	२७	४	सि.	१५	४९	कौ.	७	५०	२३	८	१७	१८	मिथुन	६	४८	५	२७	६	२१	५७	४९
२६	३३	६	बु.	४५	४२	पुन.	३३	३३	सा.	१७	८	ग.	१३	१	२४	९	१८	१९	क.१६।५६	६	४९	५	२६	६	२२	५८	२०
२६	३०	७	गु.	५०	५५	पु.	३९	५९	शु.	१८	२९	वि.	१८	१८	२५	१०	१९	२०	कर्क	६	५०	५	२६	६	२३	५८	५२
२६	२६	८	शु.	५५	२१	आश्ले.	४५	५६	शु.	१९	३३	बा.	२३	१३	२६	११	२०	२१	सिं४५।५६	६	५१	५	२५	६	२४	५९	२६
२६	२३	९	श.	५९	१८	म.	५१	७	ब्र.	२०	७	तै.	२७	२४	२७	१२	२१	२२	सिंह	६	५२	५	२५	६	२६	०	१
२६	१९	१०	र.	६०	०	पू. फा.	५५	१०	ऐं.	१९	५३	व.	३०	३४	२८	१३	२२	२३	सिंह	६	५२	५	२४	६	२७	०	३८
२६	१५	१०	चं.	१	५१	उ. फा.	५८	५	वै.	१८	४८	वि.	१	५१	२९	१४	२३	२४	कं.१०।५४	६	५३	५	२३	६	२८	१	१७
२६	१२	११	मं.	३	१७	ह.	५९	४३	वि.	१६	४१	बा.	३	१७	म१	१५	२४	२५	कन्या	६	५४	५	२३	६	२९	१	५९
२६	८	१२	बु.	३	२२	चि.	६०	०	प्री.	१३	३६	तै.	३	२२	२	१६	२५	२६	तु.२९।५६	६	५५	५	२२	७	०	२	४२
२६	५	१३	गु.	२	११	चि.	०२	२५	आ.	९	२९	व.	२	११	३	१७	२६	२७	तुला	६	५६	५	२२	७	१	३	२६
अवम		१४	गु.	५९	४७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२६	२	३०	शु.	५६	२२	वि.	२७	३९	सौ.	५८	४३	च.	२८	४	४	१८	२७	२८	वृ.४३।६	६	५६	५	२१	७	२	४	११

ग्रहदर्शन—बु.ति.१० चं. का पूर्व में उदित होगा। सूर्योदय से पूर्व मं.खमध्य से पश्चिम की ओर जाता, सूर्यास्त बाद गु.शु. एवं श. पास २ खमध्य एवं पश्चिम क्षितिज के मध्य में दृष्टिगोचर होंगे।

?हेमन्त ऋतु।

भ. ५९।१३ उ.,

भ. ३०।५६ या.,विशा.में सूर्य ३।५, श्री गणेश ४ व्र.[वि.मु.मृग.]

भ. ४५।४२उ., ब.बध स्वा.में ११।३७,मू.धनु. म शुक ४५।३,

भ. १८।१८ या.,

श्री महाकाल भैरवाष्टमी, [वि.मु. मघा]

मू. ४ में गुरु ४८।१३, [वि. मु. मघा]

भ.३०।३४उ.,

भ. १।५१ या., बुध पूर्व में उदित,

सं.वृश्चिकार्क५७।१९, मु.३०,पुण्य दूसरे दिन, उत्पन्ना११व्र.स.,

प्रदोष व्र.,मल्ल १२, जन्मदिन श्रीजवाहरलाल नेहरू(बालदिवस

भ. २।११ उ. ३०।५९ या., बुध मार्गी१८।४५, मेलापुरमण्डलां

†(देविका स्नान), निर्वाणदिवस ला. लाजपतराय,

मार्ग. कृष्ण ८ शुक्रवार इष्ट ४२।५३, क. अहगण २४१२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	२	६	८	८	८	४	१०
२६	२४	१७	९	२	२०	१८	१८
५	५७	२४	४७	२३	५९	४१	४१
१०	४८	५३	६	५३	३	२३	२३
६०	५	५०	११	७३	५	३	३
२२	२२	१६	५०	३	१	११	११
[illegible]	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

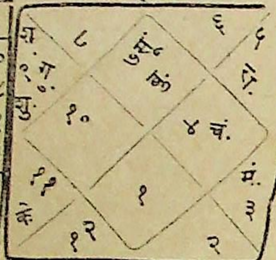

इस पक्ष में—कहीं रेल, वायुयान, मोटर दुर्घटना के योग पाए जाते हैं। कहीं किसी राजनैतिक घटना के कारण व्यापार में उथल पुथल मचेगी। व्यापारियों को इन दिनों सावधानी से काम करना चाहिए। यहां सोना, तांबा, लोहा आदि धातुओं में विशेष घटाबढ़ी होगी, परिणाम तेजी ही होगा। जौ, गेहूं, तिल, मसूर, चावलों का भाव तेजी की ओर रहेगा। अलसी, चांदी में घटावढ़ी चल कर अन्त में तेजी रहेगी। ति० ७ से अनाज और रुई चांदी का भाव मन्दे की ओर रहेगा। शेयरों में तेजी होगी। ति० ११ से पुनः जौ, चना, तिल, घी, लाल मिर्च, पाट, हैशियन में तेजी रहेगी। ति० ७ को दिन रात आकाश बिल्कुल निर्मल रहे तो आगे वैशाख में अन्न सस्ता रहे। यदि आकाश मेघों से ढका रहे तो आगे वैशाख में अन्न महंगा हो।

आकाशलक्षण—हिमाचल, पंजाब, सौराष्ट्र, दिल्ली प्रान्त में शीत वायु का प्रकोप शनैः शनैः बढ़ने लगेगा। केरलप्रदेश, पूना, वर्धा आदि में कहीं खण्ड वृष्टि हो। ति० १ तथा ति० ४ से ९ तक कहीं कहीं बादल चाल बूंदाबांदी के योग पाए जाते हैं।

मार्ग. कृष्ण३० शुक्रवार इष्ट ४२।४०, के. अहर्गण २४१९

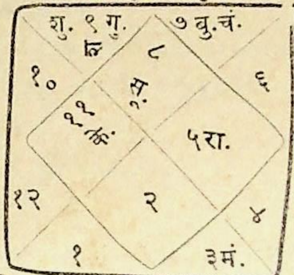

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	२	६	८	८	८	४	१०
३	२५	१४	११	१०	२१	१८	१८
८	१९	५५	११	५२	३५	१९	१९
२०	५८	३७	२१	५१	३१	८	८
६०	०	२१	१२	७२	५	३	३
३४	१४	१०	१९	२३	२९	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

वि. संवत् २०१७ शाक १८८२ मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष १७। तारीखें | चन्द्र | भा. स्टै टाइम | उदयकालिक | (१९ नवम्बर से ३ दिसम्बर तक सन १९६०ई.) अयन एवं

ग्रहदर्शन—सूर्योदय से पूर्व मं. पश्चिम को ओर जाता, एवं बुध

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न	घ.	प.	यो	घ.	प.	क	घ.	प.	प्र. मार्ग.	अं. तै.	रा. कार्ति.	मु.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	५९	१	श.	५२	५	अनु.	५५	३	अ.	५२	१५	कि.	२४	१३	५	१९	२८	२९	इचक	६	५७	५	२१	७	३	४	५७
२५	५६	२	र.	४७	८	ज्ये.	५१	४३	सु.	४५	९	बा.	११	३६	६	२०	२९	३०	ध.५१।४३	६	५८	५	२०	७	४	५	४६
२५	५३	३	चं.	४१	३८	मू.	४५	५८	धृ.	३७	३९	तै.	१४	२३	७	२१	३०	ज१	धनु	६	५९	५	२०	७	५	६	३७
२५	५०	४	मं.	३५	४९	पू. षा.	४३	४९	शू.	२९	५३	व.	८	४३	८	२२	म१	२	म.५७।४५	७	०	५	२०	७	६	७	३०
२५	४७	५	बु.	२९	५१	उ. षा.	३९	३३	गं.	२१	५९	व.	२	५०	९	२३	२	३	मकर	७	१	५	२०	७	७	८	२५
२५	४४	६	गु.	२३	५९	श्र.	३५	२८	वृ.	१४	९	तै.	२३	५९	१०	२४	३	४	मकर	७	१	५	१९	७	८	९	२०
२५	४२	७	शु.	१८	२३	ध.	३१	४१	ध्रु.	६ ५९	२९ १०	व.	१८	२३	११	२५	४	५	कुं.३।३४	७	२	५	१९	७	९	१०	१७
२५	३९	८	श.	१३	१९	श.	२८	२५	ह.	५२	२१	व.	१३	१९	१२	२६	५	६	कुम्भ	७	३	५	१९	७	१०	११	१६
२५	३७	९	र.	८	५०	पू. भा.	२५	५२	व.	४६	१३	कौ.	८	५०	१३	२७	६	७	मी.११।३०	७	४	५	१९	७	११	१२	१५
२५	३४	१०	चं.	५	१२	उ. भा.	२४	१०	सि.	४०	४६	ग.	५	१२	१४	२८	७	८	मीन	७	५	५	१९	७	१२	१३	१६
२५	३२	११	मं.	२	३६	रे.	२३	२८	व्य.	३६	१०	वि.	२	३६	१५	२९	८	९	मे.२३।२८	७	५	५	१८	७	१३	१४	१८
२५	२९	१२	बु.	१	७	अ.	२४	०	व.	३२	३१	बा.	१	७	१६	३०	९	१०	मेष	७	६	५	१८	७	१४	१५	२३
२५	२७	१३	गु.	०	५१	भ.	२५	४६	प.	२९	५४	तै.	०	५१	१७	वि१	१०	११	वृ.४१।२९	७	७	५	१८	७	१५	१६	२९
२५	२४	१४	शु.	१	५७	कृ.	२८	४६	शि.	२८	१७	व.	१	५७	१८	२	११	१२	वृष	७	८	५	१८	७	१६	१७	३५
२५	२२	१५	श.	४	२२	रो.	३२	५५	सि.	२७	३१	व.	४	२२	१९	३	१२	१३	वृष	७	९	५	१८	७	१७	१८	४४

ग्रहदर्शन—सूर्योदय से पूर्व मं. पश्चिम की ओर जाता, एवं बुध पूर्व क्षितिज से उठता होगा। सूर्यास्त बाद गु. शु. श. परस्पर कुछ कुछ अन्तर पर पश्चिम क्षितिज से ऊपर दीख पड़ेंगे।

अनु. में सूर्य १४।५१, मंगल वक्री २०।५१

चंद्रदर्शन, उ. शृं उन्नत, पू षा. में शुक्र ४४।३५,

जमादि उलाखर मु. ६ ।गोल दक्षिण। हेमन्त ऋतु।

भ.८।४३ उ. ३५।४९ या., रा. सौ. मार्ग प्रा., सा. धनु में सूर्य ✻

[वि. मु. उ. षा. श्रव.] ✻१४।२५, [वि. मु. उ. षा.]

चम्पा ६ [वि. मु. श्रव., धनि.]

भ. १८।२३ उ. ४५।५१ या. पंचक प्रा. ३।३४, विशा. ╤

╤ में बुध १९।१२,

[वि मु. उ. भा.]

भ. ३३।५४ उ., पू. षा. १ में गुरु ५३।१७, [वि. मु. रे व.]

भ. २।३६ या., पंचक स. २३।२८, स्वा. ४ में इन्द्र १३।१७, +

+ मोक्षदा ११ व्र. स., श्री गीताजयन्ती,

दिसम्बर १२ ता. ३१, उ. षा. में शुक्र ४९।४३, वरुण वक्री १८।१६

भ.१।५७ उ. ३३।१९ या., ज्ये. में सूर्य २१।५९, सत्य.व्र., पिशाच ( )

वृश्चि. म बुध ९।४२, [वि. मु. रो. मृग.]

( ) मोचन श्राद्ध, श्री दत्तजयन्ती. [वि. म. रो.]

मार्ग. शुक्ल ८ शनिवार इष्ट४२।२२, के. अहर्गण २४२७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	२	६	८	८	८	४	१०
११	२५	२१	१२	२०	२२	१७	१७
१३	१	३१	५१	३१	२१	५३	५३
३५	४१	४८	५४	१०	६	४२	४२
६०	६	६९	१२	७२	५	३	३
४६	१	४८	५१	७	५६	११	११
उदय	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	जल	जल

यहां धनु राशि में गुरु, शुक्र, शनि का राशि सम्बन्ध हो रहा है, अतः अन्तर्राष्ट्रीय राजकीय कारणों से कहीं कोई खास उथल पुथल मचेगी। कहीं पश्चिमी प्रदेशों एवं चीन, पाकिस्तान आदि यवन देशों में सैनिक हलचल होगी। कहीं आधिदैविक एवं कहीं आधिभौतिक उपद्रवों से जनता भयभीत होगी। उत्तर में भी भय व्याप्त रहेगा। यहां गर्दभों और उनके पालकों को पीड़ा हो। यहां पहिले रुई में मन्दी आकर पीछे तेजी रहेगी। चांदी के बाजार में घटाबढ़ी होकर तेजी रहे। गुड़, तेल, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली आदि मन्दे हों। अलसी, जौ, चना, गेहूं अनाज तथा सोना में तेजी आवे।

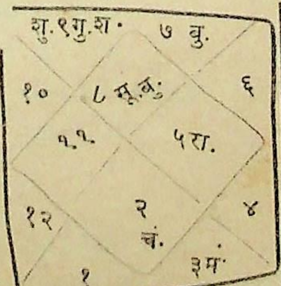

मार्ग. शुक्ल १५ शनिवार इष्ट ४२।७, के. अहर्गण२४३४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	२	७	८	८	८	४	१०
१८	२४	०	१४	२८	२३	१७	१७
१९	२	४८	२२	५४	३	३१	३१
११	३२	२९	४८	३०	३७	२७	२७
६०	११	८९	१३	७१	६	३	३
५१	५४	४९	११	३८	१६	११	११
उदय	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	जल	जल

आकाशलक्षण—उत्तर भारत में बादल चाल रहेगी। ति० ४ से ७ तक एवं ति० ९ से १३ तक कहीं कहीं खण्ड-वृष्टि के योग पाए जाते हैं।

शकुनविचार—काले वर्ण के बादला जिसमें बिजली जोय। उत्तर दिशि जो होय तो वर्षा अच्छी होय॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०१७ शाक १८८२ पौष कृष्णपक्ष १८ | तारीख | चन्द्र | भा. स्टै. टाईम | उदयकालिक | (४ दिसम्बर से १८ दिसम्बर तक, सन् १९६०) अयन पूर्व गोल †

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	२०	१	र.	७	५३	मू.	३८	९	सा.	२७	४०	कौ.	७	५३	२०	४	१३	१४	मि.५।३२	७	१०	५	१८	७	१८	१९	५४
२५	१७	२	चं.	१२	२५	आ.	४४	७	शु.	२८	२६	ग.	१२	२५	२१	५	१४	१५	मिथुन	७	११	५	१८	७	१९	२१	५
२५	१५	३	मं.	१७	३५	पुन.	५०	३४	शु.	२९	३९	वि.	१७	३५	२२	६	१५	१६	क.३३।५७	७	१२	५	१८	७	२०	२२	१६
२५	१३	४	बु.	२२	५८	पु.	५७	४	ब्र.	३१	०	बा	२२	५८	२३	७	१६	१७	कर्क	७	१३	५	१८	७	२१	२३	२८
२५	११	५	गु.	२८	१८	आश्ले.	६०	०	ऐं.	३२	१०	तै.	२८	१८	२४	८	१७	१८	कर्क	७	१४	५	१८	७	२२	२४	४२
२५	१०	६	शु.	३२	५८	आश्ले.	३	९	वै.	३२	५३	ग.	०	३८	२५	९	१८	१९	सिं. ३।९	७	१४	५	१८	७	२३	२५	५५
२५	८	७	श.	३६	४५	म.	८	३२	वि.	३२	५५	वि.	४	५१	२६	१०	१९	२०	सिंह	७	१५	५	१८	७	२४	२७	९
२५	७	८	र.	३९	२०	पू. फा.	१२	५३	प्री.	३२	३	बा.	८	२	२७	११	२०	२१	कं.२८।४२	७	१५	५	१८	७	२५	२८	२४
२५	६	९	चं.	४०	४४	उ. फा.	१६	८	आ.	३०	१८	तै.	१०	२	२८	१२	२१	२२	कन्या	७	१६	५	१८	७	२६	२९	४०
२५	४	१०	मं.	४०	४९	ह.	१८	५	सौ.	२७	३२	व.	१०	४६	२९	१३	२२	२३	तु.४८।२६	७	१७	५	१९	७	२७	३०	५९
२५	३	११	बु.	३९	३८	चि.	१८	४७	शो.	२३	४५	ब.	१०	१३	३०	१४	२३	२४	तुला	७	१८	५	१९	७	२८	३२	१८
२५	२	१२	गु.	३७	१३	स्वा.	१८	१९	अ.	१९	३	कौ.	८	२५	पौ१	१५	२४	२५	तुला	७	१८	५	१९	७	२९	३३	३८
२५	१	१३	शु.	३३	५०	वि.	१६	४७	सु.	१३	२९	ग.	५	३१	२	१६	२५	२६	वृ. २।१०	७	१९	५	१९	८	०	३५	०
२५	०	१४	श.	२९	३३	अनु.	१४	२८	धृ.	७	१४	वि.	१	४१	३	१७	२६	२७	वृश्चिक	७	२०	५	२०	८	१	३६	२२
२५	०	३०	र.	२४	३६	ज्ये.	११	१९	शू.	५२	५४	ना.	२४	३६	४	१८	२७	२८	ध ११।१९	७	२१	५	२१	८	२	३७	४४

ग्रहदर्शन—ति. १० को बु. पूर्व में अस्त होगा । सूर्योदय से पूर्व में पश्चिम क्षितिज में अवतीर्ण होता दीखेगा । सूर्यास्त बाद पश्चिम क्षितिज की ओर जा रहे गु. श. से ऊपर शुक्र होगा ।

मकर में शुक्र ३७।०, †दक्षिण । हेमन्त ऋतु ।

भ.४५।० उ., अनु में बुध २४।९,

भ. १७।३५ या., प. षा. ४ में शनि १८।१, श्रीगणेश ४ व्र.,

भ. ३२।५८ उ.,

भ. ४।५१ या., अभिजित् में शुक्र १३।६,

[वि. मु. उ. फा.]

[वि. मु. ह.]

भ. १०।४६ उ. ४०।४९ या., पू.षा. २ गुरु ५६।३६, श्रव में शुक्र ∓

ज्ये. में बुध १७।५८, सफला ११ व्र. स.,

सं./सू. धनुरर्क २५।४७, सु. ४५ पुण्य ९।४७ उ.,

भ. ३३।५० उ., प्रदोष व्र.,

भ. १।४१ या.,

व. मंगल आर्द्रा में १४।५,

∓ ०।४७, शुक्र अभि. से निवृत्त ४६।५६ बुध पूर्व में अस्त,

पौष कृष्ण ८ रविवार इष्ट ४१।५३ के. अहर्गण २४४२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	२	७	८	९	८	४	१०
२६	२२	१२	१६	८	२३	१७	१७
२६	४	४२	९	२५	५४	६	६
४४	९	४९	३४	२२	५४	०	०
६१	१७	९०	१३	७१	६	३	३
२	४१	५२	३२	०	३४	११	११
[illegible]	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
[illegible]	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

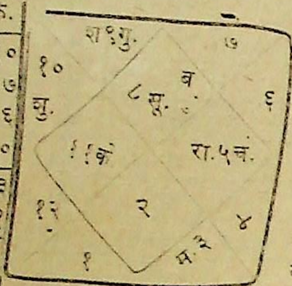

इस पक्ष में अलसी, गुड़, खाण्ड, घी, चावल, गेहूं, मकई, चना आदि में तेजी रहेगी । रुई में १५–२० टका और चांदी में करीब २ टका की तेजी होगी । ति० ९ से रुई के भाव में खासी घटाबढ़ी होगी । सुवर्ण के भाव में भी घटाबढ़ी चलकर अन्त में तेजी रहेगी । बारदाने का भाव ऊंचा चढ़ कर फिर मन्दा होगा । तांबा, लोहा, पीतल, सिक्के (शीशा) का भाव भी बढ़ेगा । ति० ११ से अनाज के भावों में संदापन रहेगा । आगे चलकर पशुओं का चारा घास भी तेज होगा । पौष की अमावस्या रविवार को है । अतः प्रजा में भय व्याप्त हो और आगे अन्न तेज हो । इस मास में पांच रविवार हैं जो उत्तर में गल्ले को ज्यादा तेज करेंगे । सौभाग्यवती स्त्रियों को कष्ट हो । यदि ति० ७ शनिवार की रात को १२ बजे बादल गर्जें तो आगे पशुओं के चारे के अभाव में कष्ट हो । सौराष्ट्र, पंजाब, उत्तर प्रदेश आदि में शीत से रोगभय एवं बाल, वृद्धों को कष्ट हो ।

आकाशलक्षण—ति०.२ से ६ तक एवं तिथि १४, ३० को बादल चाल एवं खण्ड वृष्टि के योग हैं ।

पौष कृष्ण ३० रविवार इष्ट ४१।३७, क. अहर्गण २४४९

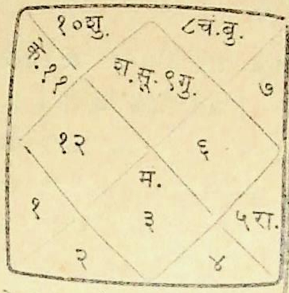

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	७	८	९	८	४	१०
३	१९	२३	१७	१६	२४	१६	१६
३४	५०	२५	४४	४०	४१	४३	४३
९	३६	०	४९	१०	२८	४५	४५
६१	२१	९२	१३	७०	६	३	३
६	२	५३	४३	१७	४५	११	११
[illegible]	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
[illegible]	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वि० संवत् २०१७ शाक १८८२ पौष शुक्लपक्ष १९ | तारीख | चन्द्र | भा.स्टै. टाईम | उदयकालिक | (१९ दिसम्बर सन् १९६० से १ जन. सन् १९६१ तक) दक्षिण

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	पौष	दिसं.	मार्ग.	जं.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२४	५९	१	चं.	११	७	मू.	७	३८	वृ.	४५	११	ब.	११	७	५	१९	२८	२९	धनु	७	२१	५	२१	८	३	३९	६
२४	५९	२	मं.	१३	१८	पू. षा.	[illegible]	[illegible]	ध्रु.	३७	१९	कौ.	१३	१८	६	२०	२९	२१	म. १७।३३	७	२२	५	२२	८	४	४०	२८
२४	५९	३	बु.	७	१९	श्र.	५५	१८	व्या.	२९	२३	ग.	७	१९	७	२१	३०	२	मकर	७	२२	५	२२	८	५	४१	५२
२४	५८	४	गु.	१	३४	ध.	५१	२७	ह.	२१	३८	वि.	१	३४	८	२२	पौ१	३	कुं. २३।२२	७	२३	५	२२	८	६	४३	१६
अव	म	५	शु.	५६	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२४	५८	६	शु.	५०	५९	श.	४८	४	व.	१४	८	कौ.	२३	३०	९	२३	२	४	कुम्भ	७	२४	५	२३	८	७	४४	४०
२४	५९	७	श.	४६	३८	पू. भा.	४५	२०	सि.	७	६	ग.	१८	४८	१०	२४	३	५	मी. ३।११	७	२४	५	२४	८	८	४६	४
२४	५९	८	र.	४३	९	उ. भा.	४३	२९	व्य.	[illegible]	४३	वि.	१४	५३	११	२५	४	६	मीन	७	२४	५	२४	८	९	४७	२९
२५	०	९	चं.	४०	३८	रे.	४२	३४	प.	५०	४	बा.	११	५२	१२	२६	५	७	मे. ४२।३४	७	२५	५	२५	८	१०	४८	५४
२५	१	१०	मं.	३९	१८	अ.	४२	४८	शि.	४६	४	तै.	९	५८	१३	२७	६	८	मेष	७	२५	५	२५	८	११	५०	१९
२५	२	११	बु.	३९	१३	भ.	४४	१८	सि.	४३	७	व.	९	१५	१४	२८	७	९	वृ. ५९।५९	७	२५	५	२६	८	१२	५१	४४
२५	२	१२	गु.	४०	२६	कृ.	४७	२	सा.	४१	७	व.	९	४९	१५	२९	८	१०	वृष	७	२६	५	२७	८	१३	५३	१०
२५	३	१३	शु.	४२	५९	रो.	५०	५७	शु.	४०	६	कौ.	११	४२	१६	३०	९	११	वृष	७	२६	५	२७	८	१४	५४	३७
२५	४	१४	श.	४६	३८	मृ.	५६	०	शु.	३९	५९	ग.	१४	४८	१७	३१	१०	१२	मि. २३।२८	७	२६	५	२८	८	१५	५६	३
२५	५	१५	र.	५१	११	आ.	६०	०	ब्र.	४०	३६	वि.	१८	५४	१८	ज१	११	१३	मिथुन	७	२७	५	२९	८	१६	५७	२९

ग्रह दर्शन—बु. अस्त है। शनि ति. ८ को एवं गु. ति. ७ को अस्त होंगे। सूर्योदय से पूर्व मं. पश्चिम में डूब रहा होगा। सूर्यास्त बाद शुक्र पश्चिम क्षितिज की ओर प्रकट होवेगा।

चन्द्रदर्शन उ. शृ. उन्नत, पू. फा. १. राहु, शत. ३ केतु ५२।१९ रज्जब मु. ७, । उत्तर अयन, द. गोल। हेमंत शिशर ऋतु।

म. ३४।२६ उ., गुरु वार्द्धक्य-आरम्भ ४७।२४, सा. मकर में ∫
म. १।३४ या., पंचक प्रा. २३।२२, रा. सौ. पौष प्रा., सू. धनु.की
∫ सूर्य ४६।१४, उ. अयन शिशिर प्रा.,
की में बुध ५५।४४
म. ४६।३८ उ., गुरु अस्त ४७।२४, धनि. में शुक्र २८।५, जन्म-×
म. १४।५३ या., शनि अस्त, क्रिस्मसडे,
पंचक स. ४२।३४,
मेला बाबा हरवल्लभ (जालंधर) × दिन श्री गु. गोबिन्दसिंह जी,
म. ९।१५ उ. ३९।१३ या., पू. षा. में सूर्य २७।३७, पू. षा. +
+ २ में गुरु २७।३०, पुत्रदा ११ व्र. स.,
कुम्भ में शुक्र १०।३६, प्रदोष व्र.,
म. ४६।३८ उ., पू. षा. में बुध २३।५, न्यू इयरईव,
म. १८।५४ या., जनवरी १ ता. ३१ सन् १९६१ इंग्लिश नव()
()वर्षारम्भ, सत्य. व्र., माघस्ना. प्रा.,

पौष शुक्ल ८ रविवार इष्ट ४१।२०, के. अहर्गण २४५६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	८	८	९	८	४	१०
१०	१७	४	११	२४	२५	१६	१६
४२	१४	१९	२१	४०	२९	२१	२१
१	२०	४१	२६	५१	२५	२९	२९
६१	२३	९४	१३	६१	६	३	३
९	१	१५	५६	२६	५७	११	११
उदय	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	अ.	उ.	अ.	अ.	अ.
मूल ४	आर्द्रा ४	मूल २	पू.षा. २	धनि. १	पू.षा. ४	पू.फा. १	शत. ३
अग्नि	सौम्य	अग्नि	सौम्य	अमृत	सौम्य	जल	जल

इस पक्ष में—ति० ३ के बाद १५ दिन के भीतर कहीं किसी बड़े पुरुष की मृत्यु हो। कहीं राष्ट्र विरोधी कार्य एवं उपद्रव भी हो। गेहूं, जौ, चना, मटर के भावों में घटाबढ़ी चल कर फल तेज रहेगा। अरहर मूंग, चावल, सरसों, अलसी और विदेशी औषधिएं तेज हों। चांदी में घटाबढ़ी चल कर मंदी आवे। रुई, सूत, श्वेत वस्तुएं तेज हों। विदेशी खबरों से व्यापार में उथल पुथल मचे। ति० ७ से सोना, अनाज में मन्दी आवे। ति० ११ से गुड़, ऊन, हल्दी, बिनौला, खाण्ड तेजी में रहें। ति० १३ के लगभग रुई चांदी के सौदे में मंदी का झटका आवे। यहां ति० १३ को मेघ गरज तो गेहूं संग्रह करने से आगे चल कर लाभ मिले। उ० प्र०, राजस्थान, पंजाब व पर्वतीय प्रदेशों में शीत से रोगभय हो।

आकाशलक्षण—ति० १ से ४ और ति० ८ से १० तक एवं ति० १४, १५ को कई स्थानों पर वर्षा हो।

शकुनविचार—पौष सुदी १४ दिना बिजली का घनघोर। शुभ वर्षा आषाढ़ में बोलें दादुर मोर ॥

पौष शुक्ल १५ रविवार इष्ट ४१।२३, के. अहर्गण २४६३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	८	८	१०	८	४	१०
१७	१४	१५	२०	२	२६	१५	१५
५०	३८	२५	५९	५२	१८	५९	५९
६	३७	११		२	११	१८	१४
६१	२१	९६	१३	६८	७	३	३
९	२४	४१	५७	१५	२	११	११
उदय	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	अ.	उ.	अ.	अ.	अ.
पू.षा. २	आर्द्रा ३	पू.षा. १	पू.षा. ३	धनि. ३	पू.षा. ४	पू.फा. १	शत. ३
सौम्य	सौम्य	सौम्य	सौम्य	अमृत	सौम्य	जल	जल

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि० संवत् २०१७ शाक १८८२ माघ कृष्णपक्ष ३०																तारीख				चन्द्र	भा. स्ट. टाइम				उदयकालिक			
दि. मा. घ.	प.	ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सायन सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	६	१	चं:	५६	२५	आ.	१	५३	ऐं	४१	३९	बा	२३	४८	१९	२	१२	१४	क. ५१।४२	७	२७	५	२९	८	१७	५८	५४
२५	७	२	मं.	६०	०	पुन.	८	१८	वै.	४३	१	तै.	२९	९	२०	३	१३	१५	कर्क	७	२७	५	३०	८	१९	०	१९
२५	९	२	बु.	१	५३	पु.	१४	५२	वि.	४४	१७	ग.	१	५३	२१	४	१४	१६	कर्क	७	२७	५	३१	८	२०	१	४४
२५	१०	३	गु.	७	९	आश्ले	२१	७	प्री	४५	९	वि.	७	९	२२	५	१५	१७	सि २१।७	७	२७	५	३१	८	२१	३	१०
२५	१२	४	शु.	११	४५	म.	२६	४३	आ	४५	२९	बा.	११	४५	२३	६	१६	१८	सिंह	७	२७	५	३२	८	२२	४	३५
२५	१४	५	श.	१५	२७	पू. फा.	३१	२२	सौ.	४४	५५	तै.	१५	२७	२४	७	१७	१९	कं. ४७।१५	७	२७	५	३३	८	२३	६	०
२५	१६	६	र.	१८	०	उ. फा	३४	५५	शो.	४३	३३	व.	१८	०	२५	८	१८	२०	कन्या	७	२८	५	३४	८	२४	७	२५
२५	१८	७	चं.	१९	१८	ह.	३७	१२	अ.	४१	६	ब.	१९	१८	२६	९	१९	२१	कन्या	७	२८	५	३५	८	२५	८	५०
२५	२१	८	मं.	१९	१६	चि.	३८	१२	सु.	३७	४१	कौ	१९	१६	२७	१०	२०	२२	तु. ७।४२	७	२८	५	३५	८	२६	१०	१५
२५	२३	९	बु.	१८	०	स्वा.	३७	५८	धृ.	३३	१६	ग.	१८	०	२८	११	२१	२३	तुला	७	२७	५	३६	८	२७	११	४२
२५	२६	१०	गु.	१५	३२	वि.	३६	४१	शू.	२८	०	वि.	१५	३२	२९	१२	२२	२४	वृ. २२।०	७	२७	५	३७	८	२८	१३	९
२५	२८	११	शु.	१२	५	अनु.	३४	३७	गं.	२१	५७	बा.	१२	५	म १	१३	२३	२५	वृश्चिक	७	२७	५	३८	८	२९	१४	३२
२५	३१	१२	श.	७	४४	ज्ये.	३१	३५	वृ.	१५	१५	तै.	७	४४	२	१४	२४	२६	ध. ३१।३५	७	२७	५	३९	९	०	१५	५३
२५	३३	१३	र.	२	४५	मू.	२८	२	ध्रु.	७	५९	व.	२	४५	३	१५	२५	२७	धनु	७	२७	५	४०	९	१	१७	१४
अवम		१४	र.	५७	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	३६	३०	चं.	५१	२७	पू. षा.	२४	४	व्या.	[illegible]	[illegible]	च.	२४	२१	४	१६	२६	२८	म. ३८।१	७	२७	५	४१	९	२	१८	३४

([illegible] जनवरी से [illegible] जनवरी तक सन् १९६१ ई.) उत्तर।

ग्रहदर्शन—बु. गु. श. अस्त है। सूर्यास्त बाद मं. पूर्व क्षितिज से उठ रहा दीखेगा एवं शुक्र पश्चिम क्षितिज से काफी ऊपर होगा।

†अयन द. गोल। शिशिर ऋतु।

भ. ३४।३१ उ., उ.षा. १ म शनि ४६।११,

भ. ७।९ या., शत. में शुक्र २।८, श्री गणेश ४ व्र. (संकटहारिणी)*

*[चन्द्रोदय, रा. ८ घं. ४१मि.]

भ. १८।० उ. ४८।३९ या., उ. षा. में बुध ३७।४,

जगद् गुरु श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती,

उ षा. में सूर्य २९।३, मकर में बुध ३८।२७,

भ. ४६।४६ उ., पू. षा. ४ में गुरु ४६।३६,

भ. १५।३२ या., लोहड़ी (पंजाब का उत्सव),

सं मकरार्क ४४।२९, मु. १५, पुण्य अगले दिन २४।२९ तक, §

अभि. में बुध ३९।२, शनि प्रदोष व्र., §षट्तिला ११ व. स.,

भ. २।४५ उ., ३०।० या.,

श्रव में बुध ३७।४२, मौनी ३०, सोमवती ३०,

माघ कृष्ण ८ मंगलवार इष्ट ४१।२०, के. अहर्गण २४७२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	९	८	१०	८	४	१०
२७	११	०	२३	१३	२७	१५	१५
०	३५	४	४	०	२२	३०	३०
३१	१५	४५	४७	३१	२	३७	३७
६१	१८	९८	१४	६६	७	३	३
८	३८	३१	०	३७	५	११	११
[illegible]	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	अ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

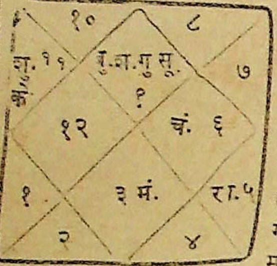

इस पक्ष में मकई, बाजरा आदि अनाज तथा तांबा, पीतल आदि धातु तेज हों। चौपाए पशुओं तथा रसकस, कपास का भाव मन्दा हो। ति० ९ से तिल, तेल, सोना, चांदी, हल्दी, चना, गेहूं, चावल, घी, बिनोला, खाण्ड, ऊन, मजीठ, हींग, मोती, सुपारी मूंगा, तेज हों। लोहा और कपड़े के भाव में काफी घटाबढ़ी चलकर रुख तेज रहेगा। काली, मिर्च मूंगफली, तोरिया में तेजी का झटका आवेगा। ति० ११ से पहिले रुई में २०–२५ टका की तेजी आकर बाद में करीब १५ टका की मन्दी आवे। प्रजा में किसी भयप्रद समाचार से आतङ्क फैले। ठगी चोरी की घटनाएं बहुत हों। समुद्र में कोई दुर्घटना हो। बंगाल, बिहार, पञ्जाब में शीत के कारण कई जगह फसल को हानि पहुंचे।

आकाशलक्षण—ति० १ एवं ति० ४ से १२ तक कहीं कहीं बादल चाल बूंदाबांदी के योग हैं। कहीं ओले गिरने से भी हानि की सम्भावना है।

माघ कृष्ण ३० चन्द्रवार इष्ट ४१।२३, के. अहर्गण २४७८

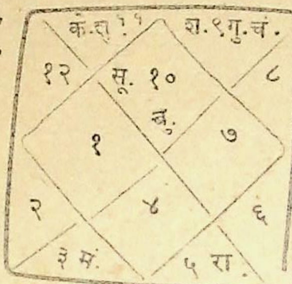

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	२	९	८	१०	८	४	१०
३	९	१०	२४	१९	२८	१५	१५
७	५४	६	२८	३५	४	११	११
१५	१२	१४	३२	४९	३१	३३	३३
६१	१४	[illegible]	१३	६४	७	३	३
६	१४	[illegible]	५३	५२	४	११	११
[illegible]	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	अ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वि. संवत् २०१७ शाक १८८२ माघ शुक्लपक्ष २१ तारीखें चन्द्र

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०१७ शाके १८८२ माघ शुक्लपक्ष २१ तारीखें [illegible] (१७ जनवरी से ३१ जनवरी तक सन् १९६१ ई.) उ. अयन, *

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. माघ	अं. जन.	रा. पौष	मु. रज्जब	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि
२५	३८	१	मं.	४५	३३	उ. षा.	१९	५४	व	४४	३६	कि	१८	३०	५	१७	२७	२९	मकर	७	२७	५	४२	९	३	१९	५३
२५	४०	२	बु.	३९	४५	श्र.	१५	४६	सि.	३६	५०	बा.	१२	३९	६	१८	२८	३०	कुं ४३।४८	७	२६	५	४२	९	४	२१	११
२५	४३	३	गु.	३४	१९	ध.	११	५१	व्य.	२९	१७	तै.	७	२	७	१९	२९	शा १	कुम्भ	७	२६	५	४३	९	५	२२	३०
२५	४६	४	शु.	२९	१८	श.	८	१९	व.	२२	७	व.	१	४८	८	२०	३०	२	मी ५।१९	७	२६	५	४४	९	६	२३	४८
२५	४८	५	श.	२५	४	पू. भा.	५	२६	प.	१५	३१	बा.	२५	४	९	२१	म १	३	मीन	७	२५	५	४४	९	७	२५	५
२५	५१	६	र.	२१	३९	उ. भा.	३	२८	शि.	९	३४	तै.	२१	३९	१०	२२	२	४	मीन	७	२५	५	४५	९	८	२६	२०
२५	५४	७	चं.	१९	१४	रे.	२	१८	सि.	४	२६	व.	१९	१४	११	२३	३	५	मे. २।१८	७	२५	५	४६	९	९	२७	३४
२५	५७	८	मं.	१८	२	अ.	२	१६	सा.	[illegible]	[illegible]	ब.	१८	२	१२	२४	४	६	मेष	७	२४	५	४७	९	१०	२८	४५
२६	०	९	बु.	१८	६	भ.	३	२६	शु.	५४	३४	कौ	१८	६	१३	२५	५	७	वृ १९।१३	७	२४	५	४८	९	११	२९	५६
२६	३	१०	गु.	१९	३०	कृ.	५	५४	ब्र.	५३	२०	ग.	१९	३०	१४	२६	६	८	वृष	७	२४	५	४९	९	१२	३१	६
२६	६	११	शु.	२२	७	रो.	९	३७	ऐं.	५२	५४	वि.	२२	७	१५	२७	७	९	मि. ४२।०	७	२४	५	५०	९	१३	३२	१४
२६	१०	१२	श.	२५	५३	मृ.	१४	२४	वै.	५३	१८	बा.	२५	५३	१६	२८	८	१०	मिथुन	७	२३	५	५१	९	१४	३३	२२
२६	१३	१३	र.	३०	३४	आ.	२०	७	वि.	५४	१८	तै.	३०	३४	१७	२९	९	११	मिथुन	७	२३	५	५२	९	१५	३४	२९
२६	१७	१४	चं.	३५	४९	पुन.	२६	३२	प्री	५५	३८	ग.	३	११	१८	३०	१०	१२	क. ९।५६	७	२२	५	५३	९	१६	३५	३५
२६	२०	१५	मं.	४१	१६	पु.	३३	३	आ.	५७	०	वि.	८	३२	१९	३१	११	१३	कर्क	७	२२	५	५४	९	१७	३६	४१

ग्रहदर्शन—बु. ति. ९ को पश्चिम में उदित होगा। ति. ५व११ को क्रमशः गु. श. उदित होंगे। सूर्यास्त बाद मंगल पूर्व में एवं शुक्र याम्योत्तर वृत्त तथा पश्चिम क्षितिज के मध्य दीखेगा।

बुध अभिजित् से निवृत्त ९।९, पू. भा. में शुक्र ३।४५,
चंद्रदर्शन उत्तरशृंगोन्नति, पंचक प्रा. ४३।४८
शाबान मु. ८. [गु. उ.] * द. गोल। शिशिर ऋतु।
भ. १।४८ उ. २९।१८ या., अभि. में सूर्य १५।५२, सा. कुम्भ में सूर्य ‡
रा. सौर माघ प्रा., गुरु उदय १९।४८, वसन्त (श्री) ५,
+३१।४९, रथ ७, जन्मदिन नेता जी सुभाष चन्द्र बोस,
भ. १९।१४ उ. ४८।३८ या., पंचक स. २।१८, श्र. में सूर्य +
अभिजित् से सूर्य निवृत्त २४। ७, धनि. में बुध २८।६, गुरु ()
बुध पश्चिम में उदित, ()बाल्य निवृत्ति १९।४८, भीष्म ८,
भ. ५०।४८ उ., उ. षा. १ में गुरु १३।३९, मीन में शुक्र ३०।८,†
भ. २२।७ या., शनि उदित, जया ११ व्र. स.,
कुम्भ में बुध २५।५५, शनि प्रदोष व्र., भीष्म १२,
उ. भा. में शुक्र ४४।४६, †भारतीय गणतंत्र दिवस,[वि. मु. रो.]
भ. ३५।४९ उ., ‡१२।२९ तिल ४
भ. ८।३२ या., सत्य. व्र., माघ स्ना. स.,

माघ शुक्ल ८ मंगलवार इष्ट ४१।३०, के. अहर्गण २४८६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	२	९	८	१०	८	४	१०
११	८	२३	२६	२८	२९	१४	१४
१५	२०	४२	१८	६	०	४६	४६
४७	३५	४४	५६	३८	४३	६	६
६१	८	[illegible]	१३	६२	७	३	३
१	२१	[illegible]	४३	४३	०	११	११
क्रान्ति	व	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

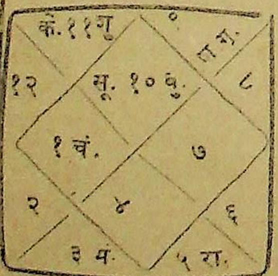

इस पक्ष में—मकई, ज्वार, बाजरा, सरसों, अलसी, तेल, ऊन और रेशम का भाव तेज हो। रुई में करीब १०–१५ टका की तेजी आवे। सोना चांदी में घटाबढ़ी चल कर ति० ४ के बाद सोने में खासी मंदी आवे। पीतल और रंग तेज होकर मंदे हों। गुड़, शक्कर, लाल मिर्च, चंदन एवं पशुओं में गाय, बकरी सस्ती हों। यहां चना, चावल खरीद कर आगे वैशाख के शुरू में बेचने से अच्छा लाभ हो। ति० ८ से रुई, शेअर, मंदे और चांदी, चावल, रस, घी, तेल, सरसों, एरण्ड, बिनौला, अलसी तेज रहें। गत पौष कृष्ण नवमी के लगभग जो वस्तुएं तेज हुई हों वे यहां मंदी होंगी और जो वस्तुएं वहां मंदी हुई होंगी वे यहां तेज होंगी। ति० ११ से चांदी में मंदी आकर फिर तेजी का झटका आएगा और घी, तेल, रसकस, अनाज और लोहा, जस्त, सीसा व काले पदार्थ घास, लकड़ी, गुड़, खांड तेज होंगे। और रुई में मंदी आवे। यहां ति० ७ को शनिवार है अतः कहीं शासकों में विग्रह हो और आगे अनाज की कमी से गरीब जनता को कष्ट हो।

आकाशलक्षण—ति० ३, ४ तथा ति० १० से १४ तक कहीं-कहीं वर्षा के योग पाए जाते हैं।

माघ शुक्ल १५ मंगलवार इष्ट ४१।३५. के. अहर्गण २४९३

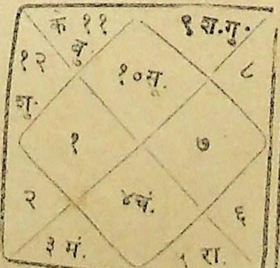

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	२	१०	८	११	८	४	१०
१८	७	५	२७	५	२९	१४	१४
२२	३६	६	५४	१७	४९	२३	२३
२६	२	७	२९	२३	३२	५१	५१
६०	३	८९	१३	५९	६	३	३
५३	३९	४	३१	३३	५२	११	११
क्रान्ति	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०१७ शाक १८८२ फाल्गुन कृष्णपक्ष २२ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्ट टाईम | उदयकालिक | (१ फर. से १५ फर्वरी. तक सन् १९६१ ई.) उ. अयन, द. गोल ।✓

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	ति.	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	फ.	अं.	रा.	मु.	सञ्चार	सू. उ. घं.	सू. उ. मि.	सू. अ. घं.	सू. अ. मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२६	२४	१	बु	४६	२८	आश्ले.	३९	२६	शो	५८	५	बा.	१३	५२	२०	१	१२	१४	सिं ३९।२६	७	२१	५	५५	९	१८	३७	४६
२६	२८	२	गु.	५०	५९	म.	४५	१३	शा.	५८	४०	तै.	१८	४३	२१	२	१३	१५	सिंह	७	२१	५	५६	९	१९	३८	५१
२६	३१	३	शु.	५४	३३	पू. फा.	५०	७	अ.	५८	२९	व.	२२	४६	२२	३	१४	१६	सिंह	७	२०	५	५६	९	२०	३९	५४
२६	३५	४	श.	५६	५९	उ. फा.	५३	५६	सु.	५९	२५	ब.	२५	४५	२३	४	१५	१७	कं. ६।४	७	१९	५	५७	९	२१	४०	५५
२६	३९	५	र.	५८	८	ह.	५६	३०	धृ.	५५	२१	कौ.	२७	३३	२४	५	१६	१८	कन्या	७	१८	५	५८	९	२२	४१	५४
२६	४३	६	चं.	५७	१७	चि.	५७	४८	शू.	५२	१७	ग.	२८	२	२५	६	१७	१९	तु २७।९	७	१८	५	५९	९	२३	४२	४८
२६	४७	७	मं.	५६	३२	स्वा.	५७	५६	गं.	४८	१३	वि.	२७	१४	२६	७	१८	२०	तुला	७	१७	६	०	९	२४	४३	४२
२६	५१	८	बु.	५३	२७	वि	५६	५२	वृ.	४३	१६	बा.	२५	१४	२७	८	१९	२१	वृ. ८।१८	७	१६	६	०	९	२५	४४	३५
२६	५५	९	गु.	५०	२३	अनु.	५४	१७	ध्रु.	३७	३०	तै.	२२	१०	२८	९	२०	२२	वृश्चिक	७	१५	६	१	९	२६	४५	२७
२७	०	१०	शु.	४५	१७	ज्ये.	५२	९	व्या	३१	३	व.	१८	१०	२९	१०	२१	२३	ध ५।२९	७	१४	६	२	९	२७	४६	१८
२७	४	११	श.	४०	५३	मू.	४८	४२	ह.	२४	०	ब.	१३	२५	३०	११	२२	२४	धन	७	१३	६	३	९	२८	४७	६
२७	८	१२	र.	३१	२०	पू. षा.	४४	५०	व.	१६	२१	कौ.	८	६	मा१	१२	२३	२५	म ५८।४८	०	१३	६	४	९	२९	४७	५४
२७	१३	१३	चं.	२९	२९	उ. षा.	४०	४३	सि.	८	४६	ग.	२	२८	२	१३	२४	२६	मकर	७	१२	६	५	१०	०	४८	३८
२७	१७	१४	मं.	२३	३५	श्र.	३६	३४	व्य	[illegible]	[illegible]	श	२३	३५	३	१४	२१	२७	मकर	७	११	६	६	१०	१	४९	२२
२७	२१	३०	बु	१७	४७	ध.	३२	३५	प.	४५	३३	ना	१७	४७	४	१५	२६	२८	कुं. ४।३४	७	१०	६	६	१०	२	५०	६

ग्रहदर्शन—ति. १४ को बुध पश्चिम में अस्त होगा। सूर्योदय से पहिले गु. श. साथ-साथ पूर्व क्षितिज से ऊपर उठ रहे होंगे। यद्यपि बाद मं. खमध्य की ओर आता एवं शुक्र पश्चिम की ओर आता + दीखेगा।

फर्वरी २ ता. २८, शत. में बुध ४४।५८,

उ. षा. २ मकर में शनि १३।१५, शब-ए-बरात,

भ. २२।४६ उ. ५४।३३ या., ✓शिशिर ऋतु ।

श्री गणेश ४ व्र., [वि. मु. उ. फा.]

धनि. में सूर्य ३७।२९, [वि. मु. ह.]

भ. ५७।५७ उ., मंगल मार्गी १५।१५,

भ. २७।१४ या.,

भ. १८।१० उ. ४५।५७ या., उ. षा. २ मकर में गु. ५।४८,

विजया ११ व्र. स्मा. वै., शीघ्र वक्री २१।५३,

सं. कुम्भार्क ११।५७, सु. ३०, पुण्य २७।५७ तक, बुध वक्री

भ. २९।२९ उ. ५६।३२ या., सोमप्रदोष व्र., श्री महाशिव रात्रि व्र.,

बुध पश्चिम में अस्त, २८।३४, रेव. में शुक्र ४४।२९, विजया ११ व्र. नि,

पञ्चकप्रा. ४।३४, सूर्यग्रहण.

फाल्गुन कृष्ण ८ बुधवार इष्ट ४१।५०, के. अहर्गण २५०१

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	२	१०	८	११	९	४	१०
२६	७	१४	२९	१२	०	१३	१३
२९	२७	२१	४१	५९	४३	५८	५८
१	३१	४०	३२	११	२९	२४	२४
६०	२	३५	१३	५५	६	३	३
४५	१०	४९	१३	२३	३५	११	११
कुंड.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

इस पक्ष में—कई अफवाहों के कारण वस्तुओं के भाव तेज हों। कहीं खड़ी फसल को भी किसी तरह हानि पहुंचे। सब प्रकार के अनाज, सोना, चांदी, मोती, मणि आदि जवाहरात तथा ताम्बा, कपास, सूत तेज हों। रुई में पहिले घटाबढ़ी होकर १० टका की तेजी हो। ति० ८ के बाद कहीं जनता में परस्पर उपद्रव व प्रकृति प्रकोप से जन-धन की हानि हो। नेपाल, चीन, काश्मीर व ब्रह्मा में रोग आदि से या हिंसक जीवों से हानि हो और प्रकृति प्रकोप से भी भय हो। ति० ९ से तिल, गेहूं, बाजरा, गुड़, अलसी, हल्दी, नारियल, काली मिर्च तेज रहेंगे। ति० १३ के बाद अमावस्या तक रुई में करीब २० टका की मन्दी का झटका आवेगा और जनता में आर्थिक संकट बढ़ेगा। गत मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदा के करीब जो २ वस्तुएं मंदी हुई हों वे यहां तेज और जो वहां तेज हुई हों वे यहां मन्दी होंगी। ति० ६ को यहां चित्रा नक्षत्र है जो आगे ३ मास के बाद सुभिक्ष का सूचक है।

आकाशलक्षण—ति० ३ से ११ तक कहीं कहीं बादल चाल बूंदाबांदी व वायु का प्रकोप हो। मध्यभारत, राजस्थान,

फाल्गुन कृष्ण ३० बुधवार इष्ट ४२।५, अहर्गण २५०८

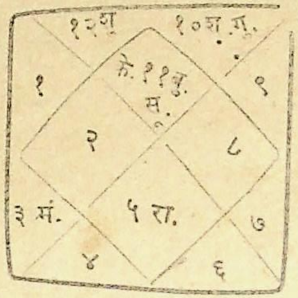

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	
१०	२	१०	९	११	९	४	१०
३	७	१५	१	१९	१	१३	१३
३३	५६	६	१३	१३	२८	३६	३६
४०	४३	१	२	४४	४८	९	९
६०	६	२९	१२	५०	६	३	३
३३	४१	२५	५१	१३	१९	११	११
कुंड.	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

वि. संवत् २०१७ शाक १८८२ फाल्गुन शुक्लपक्ष २३ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टैं टाईम | उदयकालिक | (१६ फर. से २ मार्च तक सन् १९६१ ई.) उ. अयन, द. गोल शिशिर †

दि. मा | प्र. अ. रा. मु. | ग्रहदर्शन—ति. १३ को ब. पूर्व में उदित होगा। सूर्योदय से पहिले

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

ग्रहदर्शन—ति. १३ को बु. पूर्व में उदित होगा। सूर्योदय से पहिले गु. श. साथ २ पूर्व क्षितिज से उपर रहे होंगे। सूर्यास्त बाद मं. खमध्य की ओर आता एवं शुक्र पश्चिम की ओर जाता दीखेगा।

दि.मा घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अ.	रा.	मु.	सञ्चार	सू. वं.		सू. अ.	वि	रा.	अ.	क.	वि.	
२७	२६	१	गु.	१०	१६	श.	२९	०	शि.	३१	१८	ब.	१२	१९	५	१६	२७	२९	कुम्भ	७		६		०	३	५०	४८	चन्द्रदर्शन, उ. शृं. उ., वसन्त ऋतु
२७	३०	२	शु.	७	२२	पू. भा.	२५	५९	सि.	३१	३४	को.	७	२२	६	१७	२८	२१	मी ११।४४	७	८	६	८	१०	४	५१	२९	रमजान मु. ९,
२७	३५	३	श.	३	९	उ. भा.	२३	४८	सा.	२५	२७	ग.	३	९	७	१८	२९	२	मीन	७	७	६	९	१०	५	५२	६	भ. ३१।२८ उ. ५९।४८ या., शत. में सूर्य ४७।२४, सा. मीन में*
अयम		४	श.	५९	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	*सूर्य ४८।५९, वसन्त प्रा., व. वरुण आश्ले. ४ कर्क में ४४।५४,
२७	३९	५	र.	५७	२७	रे.	२२	२५	शु.	२०	६	ब.	२८	३७	८	१९	३०	३	मे. २२।२५	७	६	६	१०	१०	६	५२	४१	पंचक स. २२।२५,
२७	४३	६	चं.	५६	२०	अ.	२२	८	शु.	१५	३५	को	२६	५३	९	२०	फ१	४	मेष	७	५	६	१०	१०	७	५३	१५	रा. सौर फाल्गुन प्रा., मघा ४ राहु शत. २ केतु ४७।२०,
२७	४८	७	मं.	५६	२७	भ.	२३	५	ब्र.	१२	१	ग.	२६	२३	१०	२१	२	५	वृ. ३८।३७	७	४	६	११	१०	८	५३	४६	भ. ५६।२७ उ.,
२७	५२	८	बु.	५७	५४	कृ.	२५	१५	ऐं.	९	२९	वि.	२	१०	११	२२	३	६	वृष	७	३	६	१२	१०	९	५४	१६	भ. २७।१० या., होलाष्टक प्रा.,
२७	५७	९	गु.	६०	०	रो.	२८	४५	वै.	७	५१	बा.	२१	१४	१२	२३	४	७	वृष	७	२	६	१३	१०	१०	५४	४३	
२८	२	९	शु.	०	३४	मृ.	३३	२०	वि.	७	१८	को.	०	३४	१३	२४	५	८	मि. १।२	७	१	६	१४	१०	११	५५	८	व. बुध धनि. में ५८।१,
२८	६	१०	श.	४	२१	आ.	३८	५४	प्री.	७	३५	ग.	४	२१	१४	२५	६	९	मिथुन	७	०	६	१४	१०	१२	५५	३२	भ. ३६।४२ उ., उ. ।. ३ में गुरु ४८।१३,
२८	११	११	र.	९	४	पुन.	४५	७	आ.	८	२६	वि.	९	४	१५	२६	७	१०	क. २८।३४	६	५९	६	१५	१०	१३	५५	५४	भ. ९।४ या., आमला ११ व्र. स.,
२८	१५	१२	चं.	१४	१८	पु.	११	४२	सौ.	९	४४	बा.	१४	१८	१६	२७	८	११	कर्क	६	५८	६	१६	१०	१४	५६	१५	सोमप्रदोष व्र., ×सत्य. व्र., चन्द्रग्रहण
२८	२०	१३	मं.	१९	४३	आश्ले.	५८	१०	शो.	११	१	तै.	१९	४३	१७	२८	९	१२	सिं २८।१०	६	५७	६	१७	१०	१५	५६	३५	बुध पूर्व में उदित,
२८	२५	१४	बु.	२४	५०	म.	६०	०	अ.	१२	२८	व.	२४	५०	१८	मा१	१०	१३	सिंह	६	५५	६	१७	१०	१६	५६	५४	भ. २४।५० उ. ५।१२ या., मार्च ३ ता. ३१,
२८	२९	१५	गु.	२९	१४	म	४	५	सु.	१३	१६	ब.	२९	१४	१९	२	११	१४	सिंह	६	५४	६	१८	१०	१७	५७	१०	अश्वि. मेष में शुक्र २३।२३. सर्यास्त काल में होलिकादहन,×

फाल्गुन शुक्ल ८ बुधवार इष्ट ४२।२३, के. अहर्गण २५१५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	२	१०	९	११	९	४	१०
१०	८	९	२	२४	२	१३	१३
३७	५६	०	४१	४६	१२	१३	१३
३	२०	४	४३	४९	१०	५४	५४
६०	११	६१	१२	४४	६	३	३
२३	०	५०	२६	४	२	११	११
इष्ट	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. २	आर्द्रा १	शत. २	उ.भा. २	रेव. ३	उ.भा. २	मघा. ४	शत. १
जल	सौम्य	जल	नीर	अग्नि	नीर	कमल	जल

इस पक्ष में शासकों में कहीं तनाव पैदा हो। घोड़ा आदि चौपाओं को कष्ट हो। गेहूं, चना, उड़द तथा चान्दी के भाव में तेजी रहेगी। सरसों अलसी तेज होकर मन्दी हो। गुड़ खाण्ड सूती वस्त्र, जस्त, लोहा, ताम्बा के भाव नरम रहेंगे। रुई पहले मन्दी होकर बाद में तेज हो। तिल, तेल, कुसुम्भा, मजीठ, हल्दी, कर्पास का भाव तेज रहेगा। ति० ९ के बाद गुड़ खाण्ड के भाव में कुछ तेजी रहेगी। फाल्गुन शु० १५ को होली दाह के समय पूर्व, उत्तर या ईशान की वायु चले तो राजा, प्रजा में सुख, अग्नि-कोण की चले तो अग्नि भय, दक्षिण की हो तो दुर्भिक्ष, नैऋत्य की हो तो टिड्डी, चूहे का उपद्रव, पश्चिम की हो तो मध्यम समय, वायव्य की हो तो वायु का जोर रहे।

आकाशलक्षण—ति० १ तथा ति० ५ से ७ तक एवं ति० १० से १३ तक कहीं कहीं वर्षा बूंदाबांदी के योग पाए जाते हैं। यहां रात में शीत एवं दिन में कुछ गर्मी का प्रभाव बढ़ता दीखेगा।

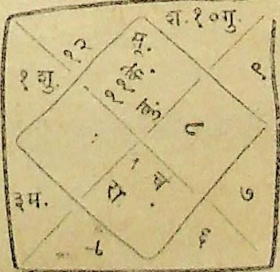

फाल्गुन शुक्ल १५ गुरुवार इष्ट ४२।४५, के. अहर्गण २५२३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	२	१०	९	०	९	४	१०
१८	१०	२	४	०	२	१२	१२
३९	३८	८	१९	११	५९	४८	४८
२४	५०	५२	२६	३५	०	२८	२८
६०	१४	२८	११	३४	५	३	३
९	४०	१०	५२	१५	३५	११	११
इष्ट	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. ४	आर्द्रा २	धनि. ३	उ.भा. ३	अश्वि. १	उ.भा. २	मघा. ४	शत. २
जल	सौम्य	अमृत	नीर	वायु	नीर	अमृत	नाश

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०१७ शाक १८८२ चैत्र कृष्णपक्ष २४ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टैं टाईम उदयकालिक । (३ मार्च से १९ मार्च तक म(२३।१६) उ. भा. द. भाग ।)

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प	क.	घ.	प.	ता.	अ.	रा.	मु.	सम्वार	सू.उ. घं.	सू.उ. मि.	सू.अ. घं.	सू.अ. मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२८	३४	१	शु.	३२	४१	पू.फा.	९	१७	धृ.	१३	२५	बा.	०	५७	२०	३	१२	१५	क.२५।१८	६	५३	६	१९	१०	१८	५७	२४	होला १ मेला श्रीआनन्दपुरसाहिब, आम्रपुष्पप्राशन, † वसन्तऋतु।
२८	३८	२	श.	३४	५९	उ.फा.	१३	२०	शू.	१२	३८	तै.	३	५०	२१	४	१३	१६	कन्या	६	५२	६	१९	१०	१९	५७	३५	पू. भा. म सूर्य २।२५,
२८	४३	३	र.	३५	५७	ह.	१६	१२	गं.	१०	५७	व.	५	२८	२२	५	१४	१७	तु.४७। ०	६	५१	६	२०	१०	२०	५७	४३	भ.५।२८ उ.३५।५७या.,
२८	४	४	चं.	३५	३५	चि.	१७	४९	वृ.	८	१७	ब.	५	४६	२३	६	१५	१८	तुल	६	५०	६	२१	१०	२१	५७	४९	बुध मार्गी १६।५, उ.पा. ३ म शनि ३।१९, श्री गणेश ४व्र.,
२८	५२	५	मं.	३४	१	स्वा	१८	१०	ध्रु.	५९	३५	कौ.	४	४८	२४	७	१६	१९	तुला	६	४९	६	२२	१०	२२	५७	५२	
२८	५७	६	बु.	३१	१८	वि.	१७	२४	.	५४	२७	ग.	२	३९	२५	८	१७	२०	वृ. २।३६	६	४८	६	२३	१०	२३	५७	५४	भ.३१।१८उ.५९।२७ या.,
२९	२	७	गु.	२७	३६	अनु.	१५	३९	व.	४८	१३	ब.	२७	३६	२६	९	१८	२१	वृश्चिक	६	४७	६	२४	१०	२४	५७	५३	शीतला मेला कुराली, [वि.मु.अनु.]
२९	६	८	शु.	२३	३	ज्ये.	१३	०	सि.	४१	२९	कौ.	२३	३	२७	१०	१९	२२	ध.१३। ०	६	४६	६	२४	१०	२५	५७	५१	
२९	११	९	श.	१७	५४	मू.	९	४१	व्य.	३४	१३	ग.	१७	५४	२८	११	२०	२३	धनु	६	४५	६	२५	१०	२६	५७	४९	भ.४५।१४ उ.,
२९	१६	१०	र.	१२	१४	पू.षा.	५	५५	व.	२६	३३	वि.	१२	१४	२९	१२	२१	२४	म.१९।५४	६	४३	६	२५	१०	२७	५७	४५	भ.१२।१४या.,
२९	२१	११	चं.	६	२०	उ.षा.	५७	४०	प.	१८	५५	बा.	६	२०	३०	१३	२२	२५	मकर	६	४२	६	२६	१०	२८	५७	३९	पापमोचिनी ११ व्र.स.,
२९	२६	१२	मं.	०	२२	श.	५३	३८	शि.	११	९	तै.	०	२२	३१	१४	२३	२६	कुं.२५।३९	६	४१	६	२७	१०	२९	५७	३१	भ. ५४।३१ उ., पञ्चक प्रा.२५।३९, सं. मीनार्क २।३०, (
[illegible]		१३	मं.	५४	३१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	(मु.३० पुण्य १८।३०तक, भौम प्रदोष व्र.,
२९	३०	१४	बु.	४९	०	श.	४९	५६	सि.	[illegible]	[illegible]	वि.	२१	४५	२	१५	२४	२७	कुम्भ	६	३९	६	२७	११	०	५७	२०	भ.२१।४५या, उ.पा.४ अभिजित् में गुरु ५।२, मेला पिहोवा,
२९	३५	३०	गु.	४४	०	पू.भा.	४६	४६	शु.	४९	२१	च.	१६	३०	३	१६	२५	२८	मी.३२।३४	६	३८	६	२८	११	१	५७	७	चान्द्रसंवत्सर समाप्त

ग्रहदर्शन—सूर्योदय से पहिले याम्योत्तर वृत्त एवं पूर्व क्षितिज के मध्य गु.श. पास २ में दीखेंगे। एवं बुध इन दोनों के नीचे होगा। सूर्यास्त बाद मं. खमध्य की ओर जाता एवं शुक्र पश्चिम को ☉ ओर जाता दीखेगा।

चैत्र कृष्ण ८ शुक्रवार इष्ट ४३।५, के. अहर्गण २५३१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	२	१०	९	०	९	४	१०
२६	१२	१	५	३	३	१२	१२
३९	४९	५३	५१	५८	४२	२३	२३
४४	५	५३	५५	५०	१४	१	१
५९	१८	२३	११	२०	५	३	३
५८	१८	२७	१०	५२	९	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा.२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मघा.४	[illegible]
नीर	सौम्य	अमृत	नीर	वायु	नीर	अमृत	जल

इस पक्ष में— जौ, गेहूं, चना, चावल के भाव में तेजी रहेगी। तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, शक्कर, मूंगफली, बिनौला में मन्दी आवे। रुई में पहिले १०–१२ टका की मन्दी आकर पीछे तेजी आवे। सुवर्ण का भाव भी तेज रहे। यहां पञ्चमी भौमवार को है, अतः आगे घी, गेहूं तेज रहेंगे लिखा है—

चैत्रस्य प्रथमे पक्षे पञ्चमी बुधवासरे।
भौमे वा कुरुते स्वर्वं गोधूमस्य घृतस्य च ॥

ग्रह स्थिति देखते हुए नैपाल व अफगानिस्तान में भय व्यापे, और कहीं प्रजा में रोग भय, धनाढ्यों को चिन्ता हो। पाकिस्तान में कहीं आन्तरिक विद्रोह के षड्यन्त्र होंगे और किसी बड़े पुरुष को खतरा हो।

आकाशलक्षण—इस पक्ष म अधिकतर वायु का जोर रहे। तिथि ९ से १२ तक कहीं कहीं बादल चाल बूंदाबांदी के योग पाये जाते हैं।

चैत्र कृष्ण १४ बुधवार इष्ट ४३।२३, के. अहर्गण २५३६

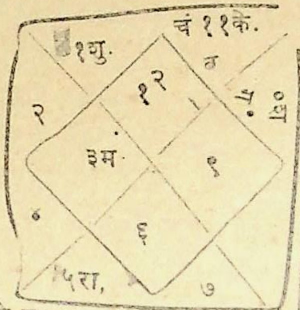

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	१०	९	०	९	४	१०
१	१४	४	६	५	४	१२	१२
३८	२५	४०	४६	२६	७	७	७
५५	१०	४८	५४	२२	२२	७	७
५९	२०	४८	१०	१२	४	३	३
४६	४४	१७	४६	८	४८	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा.४	आर्द्रा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उ.भा.	मघा	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दैनिक ग्रहों से इष्टकालिक ग्रह स्पष्ट करना

बहुत से व्यक्ति दैनिक ग्रहों के होते हुए भी पंक्तिस्थ ग्रहों से ही इष्टकालिक ग्रह स्पष्ट करते हैं, जिसमें परिश्रम भी अधिक होता है और सूक्ष्मता भी नहीं आती। दैनिक ग्रहों से इष्टकालिक ग्रह बनाने से परिश्रम भी कम होता है एवं सूक्ष्मता भी आती है। अतः दैनिक ग्रहों का ही सर्वत्र उपयोग करना चाहिए। इस पञ्चाङ्ग में रात्रि के १२ बजे (भा० स्टैं० टा० ०।०) के दैनिक दृश्य ग्रह दिये गये हैं। इनसे इष्टकालिक ग्रह बनाने में और भी सुविधा होती है। विधि इस प्रकार है—जिस तारीख को ग्रह इष्टकालिक बनाना हो उस तारीख की अभीष्ट ग्रह की गति निकाल कर (अभीष्ट तारीख के स्पष्ट ग्रह का आगामी तारीख के स्पष्ट ग्रह से अन्तर करने पर ग्रह की दैनिक गति प्राप्त होगी) उसका विकलात्मक पिण्ड बना लीजिए। तदनन्तर इष्टकालिक इण्डियन स्टैण्डर्ड टाईम के घण्टा मिनटों का मिनटात्मक पिण्ड बनाकर उसे ग्रह गति के विकलात्मक पिण्ड से गुणा करें और गुणनफल को १४४० से भाग देकर विकलात्मक लब्धि प्राप्त करें, शेष को छोड़ दें। इस लब्धि को हो सके तो अंशादि या कलादि बनाकर अभीष्ट तारीख के ग्रह में मार्गी हो तो जोड़ दें, वक्री हो तो घटा दें। इस प्रकार इष्टकालिक ग्रह स्पष्ट होगा। इस विधि में सूर्योदयादिष्ट बनाने की आवश्यकता नहीं। उदाहरणः—ता० २८ मार्च सन् १९६० को इण्डियन स्टैं० टा० के अनुसार दिन के ४ बज कर ३० मिनट (अर्थात् १६ घं० ३० मि०) पर गुरु स्पष्ट करना है। इस दिन के स्पष्ट गुरु ८।९।२७।४९ का दूसरे दिन के स्पष्ट गुरु ८।९।३२।१६ से अन्तर करने पर ४ कला २७ विकला गुरु की गति प्राप्त हुई। इसके विकलात्मक पिण्ड २६७ को इष्टकालिक इं० स्टैं० टा० के मिनटात्मक पिण्ड ९९० से गुणा कर १४४० से भाग देने पर १८४ विकला (अर्थात् ३ कला ४ विकला) प्राप्त हुई। इन्हें २८ मार्च (सन् १९६०) के स्पष्ट गुरु में जोड़ा तो ८।९।३०।५३ इष्टकालिक गुरु स्पष्ट हुआ। यदि इष्टकालिक ग्रह बनाने के लिए 'लघुरिक्थ कोष्ठक' (जो कि इस पञ्चाङ्ग में पृष्ठ १२७ पर दिया गया है) का उपयोग किया जाए तो कुछ भी परिश्रम नहीं करना पड़ता, केवल योगक्रियासे ही काम बन जाता है। 'लघुरिक्थ-कोष्ठक' के प्रयोग की विधि इस प्रकार है :—

बिना गुणा भाग किये इष्टकालिक ग्रह स्पष्ट करने की सरल विधि:—

लघुरिक्थ प्राप्त करना—अभीष्ट घण्टा मिनटों का लघुरिक्थ "लघुरिक्थ कोष्ठक" में अभीष्ट घण्टा के नीचे एवं अभीष्ट मिनट के आगे प्राप्त करें। जैसे—६ घंटा ४० मिनट का लघुरिक्थ ५५६३ है। इसी प्रकार कोष्ठक में दिये गए घण्टों को कला एवं मिनटों को विकला मान कर २४ कला से कम ग्रहगति का लघुरिक्थ प्राप्त किया जा सकता है। २४ कला या इससे अधिक ग्रहगति का लघुरिक्थ कोष्ठक में दिए गए घंटों को अंश एवं मिनटों को कला मान कर पूर्ववत् प्राप्त किया जा सकता है।

ग्रह स्पष्ट करने की विधि—इष्टकालिक इ० स्टैं० टा० एवं पञ्चाङ्ग में दिये गए स्पष्ट ग्रहों के इं० स्टैं० टा० के घण्टा मिनटात्मक अन्तर का लघुरिक्थ लेकर उसमें ग्रहगति का लघुरिक्थ जोड़ें और योगफल की संख्या को लघुरिक्थ कोष्ठक में ही ढूंढें। योगफल जिसका लघुरिक्थ हो उसे कलादि या अंशादि फल (यदि कलादि ग्रहगति का लघुरिक्थ जोड़ा गया हो तो यह फल कलादि होगा यदि अंशादि ग्रहगति का लघुरिक्थ जोड़ा गया हो तो यह फल अंशादि होगा) जानें। इस फल को अभीष्ट तारीख के स्पष्ट ग्रह में मार्गी हो तो जोड़ें, वक्री हो तो घटा दें। इस प्रकार इष्टकालिक ग्रह स्पष्ट होगा।

उदाहरण—२८ मार्च सन् १९६० इं० स्टैं० टा० के अनुसार दिन के ४ बज कर ३० मिनट (अर्थात १६ घं० ३० मि०) पर गुरु स्पष्ट करना है। इसकी गति ४ कला २७ विकला के लघुरिक्थ ७३१८ में १६ घं० ३० मि० का लघुरिक्थ १६२७ जोड़ने पर ८९४५ योगफल हुआ। कोष्ठक में देखने से मालूम हुआ यह ३ कला ४ विकला का लघुरिक्थ है। अतः २८ मार्च के स्पष्ट गुरु में इसे जोड़ देने से (क्योंकि गुरु मार्गी है) ८।९।३०।५३ इष्ट कालिक स्पष्ट गुरु हुआ।

जिस ग्रह की गति २४ कला से कम होगी उस ग्रह को इस 'लघुरिक्थ कोष्ठक' द्वारा विकलान्त सूक्ष्मता से एवं जिसकी गति २४ कला या इससे अधिक होगी उसे कलान्त सूक्ष्मता से स्पष्ट किया जा सकता है। इस वर्ष तो अन्य विषयों के परिवर्तन से पृष्ठ अपर्याप्त रहे हैं, अतः भविष्य में (सम्भवतः अग्रिम वर्ष में ही) अन्य लघुरिक्थ कोष्ठक भी, जिनके आधार पर सभी ग्रह विकलान्त सूक्ष्मता से स्पष्ट किये जा सकेंगे, इस पञ्चाङ्ग में प्रकाशित किये जाएंगे।

तारीख मार्च सन् १९६०	साम्पातिककाल स्थानीय समय घं. मि. ०।० घं. मि. से.	दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं. मि. ०।० भारतीय स्टैण्डड टाईम) (२८ मार्च को अयनांश २३°।१७'।११")								
		सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल (मार्गी) रा. अं. क. वि.	बुध (मार्गी) रा. अं. क. वि.	गुरु (मार्गी) रा. अं. क. वि.	शुक्र (मार्गी) रा. अं. क. वि.	शनि (मार्गी) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण (वक्री) रा. अं. क. वि.	इन्द्र (वक्री) रा. अं. क. वि.
२८	१२।२०।४८	११।१३।४८।३०	१०। २।२४।३१	१०।१९।२९।१०	८। ९।२७।४९	१०।२१। ८।१०	८।२४।१७।३५	५। ०।४९।३१	३।२३।४८।३८	६।१५।२२। ९
२९	१२।२४।४५	११।१४।४७।५०	१०। ३।१०।४१	१०।१९।५१।५३	८। ९।३२।१६	१०।२२।२२। ०	८।२४।२०।३८	५। ०।४६।२०	३।२३।४७। ८	६।१५।२०।४८
३०	१२।२८।४२	११।१५।४७। ८	१०। ३।५६।५१	१०।२०।१८।१२	८। ९।३६।२९	१०।२३।३५।५०	८।२४।२३।२४	५। ०।४३। ९	३।२३।४५।३९	६।१५।१९।२५
३१	१२।३२।३८	११।१६।४६।२४	१०। ४।४३। ०	१०।२०।४८। ९	८। ९।४०।२८	१०।२४।४९।४०	८।२४।२६।२३	५। ०।३९।५८	३।२३।४४।१५	६।१५।१८। ०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं. मि. ०।० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ अप्रैल को अयनांश २३°।१७'।१२")

तारीख अप्रैल सन् १९६०	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं. मि. ०।० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल (मार्गी) रा. अं. क. वि.	बुध (मार्गी) रा. अं. क. वि.	गुरु (मार्गी) रा. अं. क. वि.	शुक्र (मार्गी) रा. अं. क. वि.	शनि (मार्गी) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण (वक्री) रा. अं. क. वि.	इन्द्र (वक्री) रा. अं. क. वि.
१	१२।३६।३५	११।१७।४५।३८	१०। ५।२९। ९	१०।२१।२१।४०	८। ९।४४।१६	१०।२६। ३।३०	८।२४।२९। ७	५। ०।३६।४७	३।२३।४२।५५	६।१५।१६।३२
२	१२।४०।३१	११।१८।४४।५०	१०। ६।१५।१८	१०।२१।५८।५०	८। ९।४७।५२	१०।२७।१७।२०	८।२४।३१।४४	५। ०।३३।३६	३।२३।४१।३३	६।१५।१५। ५
३	१२।४४।२८	११।१९।४४। ०	१०। ७। १।२६	१०।२२।३९।३६	८। ९।५१।१६	१०।२८।३१।१०	८।२४।३४।१६	५। ०।३०।२५	३।२३।४०।२६	६।१५।१३।३६
४	१२।४८।२४	११।२०।४३। ८	१०। ७।४७।३४	१०।२३।२४। ०	८। ९।५४।२८	१०।२९।४५। ०	८।२४।३६।४१	५। ०।२७।१५	३।२३।३९।१६	६।१५।१२। ६
५	१२।५२।२१	११।२१।४२।१४	१०। ८।३३।४२	१०।२४।१२। ०	८। ९।५७।२९	११। ०।५८।५०	८।२४।३९। ०	५। ०।२४। ४	३।२३।३८।१०	६।१५।१०।३५
६	१२।५६।१७	११।२२।४१।१७	१०। ९।१९।५०	१०।२५। ३।२५	८।१०। ०।१८	११। २।१२।४०	८।२४।४१।१२	५। ०।२०।५३	३।२३।३७। ५	६।१५। ९। ४
७	१३। ०।१४	११।२३।४०।१९	१०।१०। ५।५७	१०।२५।५७।५७	८।१०। २।५४	११। ३।२६।३०	८।२४।४३।१९	५। ०।१७।४३	३।२३।३६। ४	६।१५। ७।३२
८	१३। ४।१०	११।२४।३९।१९	१०।१०।५२। ४	१०।२६।५५।५३	८।१०। ५।१८	११। ४।४०।२०	८।२४।४५।१९	५। ०।१४।३२	३।२३।३५।११	६।१५। ६। ०
९	१३। ८। ७	११।२५।३८।१७	१०।११।३८।१०	१०।२७।५४।५४	८।१०। ७।३०	११। ५।५४।१०	८।२४।४७।१४	५। ०।११।२१	३।२३।३४।२१	६।१५। ४।२७
१०	१३।१२। ३	११।२६।३७।१३	१०।१२।२४।१६	१०।२८।५७।२९	८।१०। ९।३१	११। ७। ८। ०	८।२४।४९। २	५। ०। ८।१०	३।२३।३३।३४	६।१५। २।५४
११	१३।१६। ०	११।२७।३६। ७	१०।१३।१०।२२	११। ०। २।४९	८।१०।११।२१	११। ८।२१।५०	८।२४।५०।४४	५। ०। ४।५९	३।२३।३२।४९	६।१५। १।२१
१२	१३।१९।५६	११।२८।३४।५८	१०।१३।५६।२७	११। १।१०।५२	८।१०।१२।५८	११। ९।३५।४०	८।२४।५२।२०	५। ०। १।४९	३।२३।३२। ८	६।१४।५९।४९
१३	१३।२३।५३	११।२९।३३।४८	१०।१४।४२।३२	११। २।२१।४३	८।१०।१४।२४	११।१०।४९।३०	८।२४।५३।४९	४।२९।५८।३८	३।२३।३१।३०	६।१४।५८।१६
१४	१३।२७।४९	०। ०।३२।३६	१०।१५।२८।३६	११। ३।३४।५६	८।१०।१५।४१	११।१२। ३।२०	८।२४।५५।१२	४।२९।५५।२७	३।२३।३०।५४	६।१४।५६।४३
१५	१३।३१।४६	०। १।३१।२२	१०।१६।१४।३९	११। ४।५०।१३	८।१०।१६।५०	११।१३।१७।१०	८।२४।५६।३०	४।२९।५२।१७	३।२३।३०।२१	६।१४।५५। ९
१६	१३।३५।४२	०। २।३०। ६	१०।१७। ०।४२	११। ६। ७।३४	८।१०।१७।५०	११।१४।३१। ०	८।२४।५७।४१	४।२९।४९। ६	३।२३।२९।५२	६।१४।५३।३५
१७	१३।३९।३९	०। ३।२८।४८	१०।१७।४६·४४	११। ७।२७। ०	८।१०।१८।३८	११।१५।४४।५०	८।२४।५८।४७	४।२९।४५।५६	३।२३।२९।२६	६।१४।५२। ०
१८	१३।४३।३५	०। ४।२७।२८	१०।१८।३२।४६	११। ८।४८।३०	८।१०।१९।१२	११।१६।५८।४०	८।२४।५९।४६	४।२९।४२।४५	३।२३।२९। ३	६।१४।५०।२४
१९	१३।४७।३२	०। ५।२६। ६	१०।१९।१८।४७	११।१०।१२। ५	८।१०।१९।३५	११।१८।१२।३०	८।२५। ०।४०	४।२९।३९।३४	३।२३।२८।४४	६।१४।४८।४८
२०	१३।५१।२८	०। ६।२४।४१	१०।२०। ४।४८	११।११।३७।४४	८।१०।१९।४७	११।१९।२६।२०	८।२५। १।२८	४।२९।३६।२३	३।२३।२८।२८	६।१४।४७।११
२१	१३।५५।२५	०। ७।२३।१५	१०।२०।५०।४९	११।१३। ५।२८	८।१०।१९।४८	११।२०।४०।१०	८।२५। २।१०	४।२९।३३।१२	३।२३।२८।१६	६।१४।४५।३४
२२	१३।५९।२१	०। ८।२१।४७	१०।२१।३६।४९	११।१४।३५।३५	८।१०।१९।३७	११।२१।५४। ०	८।२५। २।४५	४।२९।३०। २	३।२३।२८। ७	६।१४।४३।५७
२३	१४। ३।१८	०। ९।२०।१७	१०।२२।२२।४८	११।१६। ७।२५	८।१०।१९।१५	११।२३। ७।४९	८।२५। ३।१५	४।२९।२६।५१	३।२३।२८। १	६।१४।४२।१९
२४	१४। ७।१४	०।१०।१८।४५	१०।२३। ८।४६	११।१७।४०।५७	८।१०।१८।४१	११।२४।२१।३८	८।२५। ३।३९	४।२९।२३।४०	३।२३।२७।५८	६।१४।४०।४०
२५	१४।११।११	०।११।१७।११	१०।२३।५४।४३	११।१९।१६।१२	८।१०।१७।५७	११।२५।३५।२७	८।२५। ३।५७	४।२९।२०।२९	३।२३।२७।५९	६।१४।३९। ०
२६	१४।१५। ७	०।१२।१५।३४	१०।२४।४०।३९	११।२०।५३।१०	८।१०।१७। १	११।२६।४९।१६	८।२५। ४। ९	४।२९।१७।१८	३।२३।२८। २	६।१४।३७।२०
२७	१४।१९। ४	०।१३।१३।५६	१०।२५।२६।३५	११।२२।३१।५१	८।१०।१५।५३	११।२८। ३। ५	८।२५। ४।१४	४।२९।१४। ८	३।२३।२८। ९	६।१४।३५।४०
२८	१४।२३। ०	०।१४।१२।१५	१०।२६।१२।२९	११।२४।१२।१४	८।१०।१४।३४	११।२९।१६।५४	८।२५। ४।१२	४।२९।१०।५७	३।२३।२८।२०	६।१४।३४। ०
२९	१४।२६।५७	०।१५।१०।३३	१०।२६।५८।२२	११।२५।५४।२२	८।१०।१३। २	०। ०।३०।४३	८।२५। ४। ८	४।२९। ७।४६	३।२३।२८।३४	६।१४।३२।१९
३०	१४।३०।५४	०।१६। ८।४९	१०।२७।४४।१३	११।२७।३८।२६	८।१०।११।२१	०। १।४४।३२	८।२५। ३।५३	४।२९। ४।३५	३।२३।२९। ०	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ०।० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ मई को अयनांश २३।१७'।१६")

तारीख मई सन् १९६०	साम्पातिककाल स्थानीय समय घं० मि० ०।० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल (मार्गी) रा. अं. क. वि.	बुध (मार्गी) रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र (मार्गी) रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण (मार्गी) रा. अं. क. वि.	इन्द्र (वक्री) रा. अं. क. वि.
१	१४।३४।५१	०।१७।७।३	१०।२८।३०।४	११।२९।२४।१७	८।१०।९।२६	०।२।५८।२१	८।२५।३।२८	४।२९।१।२५	३।२३।२९।२९	६।१४।२८।५७
२	१४।३८।४७	०।१८।५।१५	१०।२९।१५।५४	०।१।११।५४	८।१०।७।२१	०।४।१२।१०	८।२५।२।५८	४।२८।५८।१४	३।२३।३०।१	६।१४।२७।१७
३	१४।४२।४४	०।१९।३।२५	११।०।१।४४	०।३।१।१६	८।१०।५।५	०।५।२५।५९	८।२५।२।२४	४।२८।५५।३	३।२३।३०।३४	६।१४।२५।३७
४	१४।४६।४०	०।२०।१।३२	११।०।४७।३३	०।४।५२।२५	८।१०।२।३८	०।६।३९।४८	८।२५।१।४६	४।२८।५१।५२	३।२३।३१।९	६।१४।२३।५७
५	१४।५०।३७	०।२०।५९।३८	११।१।३३।२२	०।६।४५।२१	८।१०।०।१	०।७।५३।३७	८।२५।१।८	४।२८।४८।४१	३।२३।३१।४८	६।१४।२२।१७
६	१४।५४।३३	०।२१।५७।४४	११।२।१९।११	०।८।४०।३	८।९।५७।१३	०।९।७।२६	८।२५।०।३१	४।२८।४५।३०	३।२३।३२।२९	६।१४।२०।३७
७	१४।५८।३०	०।२२।५५।४९	११।३।४।५९	०।१०।३६।३२	८।९।५४।१४	०।१०।२१।१५	८।२४।५९।४९	४।२८।४२।२०	३।२३।३३।११	६।१४।१८।५८
८	१५।२।२६	०।२३।५३।५२	११।३।५०।४६	०।१२।३५।१७	८।९।५१।५	०।११।३५।४	८।२४।५९।५	४।२८।३९।९	३।२३।३३।५७	६।१४।१७।२०
९	१५।६।२३	०।२४।५१।५३	११।४।३६।३३	०।१४।३५।३५	८।९।४७।४५	०।१२।४८।५३	८।२४।५८।२०	४।२८।३५।५८	३।२३।३४।४४	६।१४।१५।४२
१०	१५।१०।१९	०।२५।४९।५२	११।५।२२।१९	०।१६।३७।२५	८।९।४४।१४	०।१४।२।४२	८।२४।५७।३२	४।२८।३२।४७	३।२३।३५।३४	६।१४।१४।५
११	१५।१४।१६	०।२६।४७।५०	११।६।८।४	०।१८।४०।४८	८।९।४०।३२	०।१५।१६।३०	८।२४।५६।४३	४।२८।२९।३६	३।२३।३६।२६	६।१४।१२।२९
१२	१५।१८।१२	०।२७।४५।४६	११।६।५३।४६	०।२०।४५।४३	८।९।३६।४०	०।१६।३०।१८	८।२४।५५।४९	४।२८।२६।२६	३।२३।३७।२१	६।१४।१०।५३
१३	१५।२२।९	०।२८।४३।४१	११।७।३९।२७	०।२२।५२।११	८।९।३२।३८	०।१७।४४।६	८।२४।५४।४७	४।२८।२३।१५	३।२३।३८।१८	६।१४।९।१७
१४	१५।२६।५	०।२९।४१।३४	११।८।२५।७	०।२५।०।११	८।९।२८।२५	०।१८।५७।५४	८।२४।५३।३७	४।२८।२०।४	३।२३।३९।१८	६।१४।७।४२
१५	१५।३०।२	१।०।३९।२६	११।९।१०।४७	०।२७।९।४३	८।९।२४।०	०।२०।११।४२	८।२४।५२।१९	४।२८।१६।५३	३।२३।४०।१९	६।१४।६।७
१६	१५।३३।५८	१।१।३७।१६	११।९।५६।२६	०।२९।२१।२३	८।९।१९।२५	०।२१।२५।३०	८।२४।५०।५५	४।२८।१३।४३	३।२३।४१।२२	६।१४।४।३२
१७	१५।३७।५५	१।२।३५।५	११।१०।४२।४	१।१।३३।८	८।९।१४।४२	०।२२।३९।१७	८।२४।४९।२५	४।२८।१०।३२	३।२३।४२।२८	६।१४।२।५९
१८	१५।४१।५१	१।३।३२।५३	११।११।२७।४१	१।३।४४।५९	८।९।९।५२	०।२३।५३।४	८।२४।४७।५०	४।२८।७।२१	३।२३।४३।३८	६।१४।१।२८
१९	१५।४५।४८	१।४।३०।४०	११।१२।१३।१५	१।५।५६।५६	८।९।४।५३	०।२५।६।५१	८।२४।४६।५	४।२८।४।११	३।२३।४४।५२	६।१३।५९।५८
२०	१५।४९।४४	१।५।२८।२५	११।१२।५८।४५	१।८।९।०	८।८।५९।४६	०।२६।२०।३८	८।२४।४४।८	४।२८।१।०	३।२३।४६।८	६।१३।५८।२८
२१	१५।५३।४१	१।६।२६।९	११।१३।४४।१२	१।१०।२२।८	८।८।५४।३१	०।२७।३४।२५	८।२४।४१।५८	४।२७।५७।४९	३।२३।४७।२७	६।१३।५६।५८
२२	१५।५७।३७	१।७।२३।५१	११।१४।२९।३५	१।१२।३६।२३	८।८।४९।८	०।२८।४८।१२	८।२४।३९।३८	४।२७।५४।३९	३।२३।४८।५२	६।१३।५५।२९
२३	१६।१।३४	१।८।२१।३२	११।१५।१४।५६	१।१४।४५।२३	८।८।४३।३७	१।०।१।५९	८।२४।३७।३	४।२७।५१।२८	३।२३।५०।२०	६।१३।५४।१
२४	१६।५।३०	१।९।१९।११	११।१६।०।१४	१।१६।५६।४९	८।८।३७।५७	१।१।१५।४६	८।२४।३४।१९	४।२७।४८।१७	३।२३।५१।५१	६।१३।५२।३४
२५	१६।९।२७	१।१०।१६।४९	११।१६।४५।३०	१।१९।५।४९	८।८।३२।१०	१।२।२९।३३	८।२४।३१।२४	४।२७।४५।६	३।२३।५३।२५	६।१३।५१।८
२६	१६।१३।२३	१।११।१४।२५	११।१७।३०।४२	१।२१।११।५७	८।८।२६।१४	१।३।४३।२०	८।२४।२८।२०	४।२७।४१।५६	३।२३।५५।३	६।१३।४९।४४
२७	१६।१७।२०	१।१२।१२।०	११।१८।१५।५२	१।२३।१५।०	८।८।२०।११	१।४।५७।७	८।२४।२५।१३	४।२७।३८।४५	३।२३।५६।४३	६।१३।४८।२१
२८	१६।२१।१६	१।१३।९।३३	११।१९।०।५९	१।२५।१६।५३	८।८।१३।५९	१।६।१०।५४	८।२४।२२।३	४।२७।३५।३४	३।२३।५८।२७	६।१३।४६।५९
२९	१६।२५।१३	१।१४।७।५	११।१९।४६।३	१।२७।१६।३३	८।८।७।४०	१।७।२४।४१	८।२४।१८।५२	४।२७।३२।२३	३।२४।०।१५	६।१३।४५।३८
३०	१६।२९।१०	१।१५।४।३५	११।२०।३१।३	१।२९।१४।३	८।८।१।१२	१।८।३८।२८	८।२४।१५।४०	४।२७।२९।१२	३।२४।२।७	६।१३।४४।१८
३१	१६।३३।७	१।१६।२।५	११।२१।१६।२	२।१।९।२०	८।७।५४।३६	१।९।५२।१५	८।२४।१२।२७	४।२७।२६।१	३।२४।४।१	६।१३।४२।५८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ०।० भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम)

(१ जून को अयनांश २३°१७'२०")

तारीख जून सन् १९६०	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ०।० घं० मि० से०	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल (मार्गी) रा. अं. क. वि.	बुध (मार्गी) रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र (मार्गी) रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण (मार्गी) रा. अं. क. वि.	इन्द्र (वक्री) रा. अं. क. वि
१	१६।३७। ४	१।१६।५९।३५	११।२२। १। ०	२। ३। २।२५	८। ७।४७।५५	१।११। ६। २	८।२४। ९।१४	४।२७।२२।५१	३।२४। ५।५८	६।१३।४१।३९
२	१६।४१। ०	१।१७।५७। ४	११।२२।४५।५६	२। ४।५२।४९	८। ७।४१। ९	१।१२।१९।४९	८।२४। ६। ०	४।२७।१९।४०	३।२४। ७।५८	६।१३।४०।२२
३	१६।४४।५७	१।१८।५४।३३	११।२३।३०।४८	२। ६।४०।३३	८। ७।३४।१९	१।१३।३३।३६	८।२४। २।४६	४।२७।१६।२९	३।२४।१०। ०	६।१३।३९। ६
४	१६।४८।५३	१।१९।५२। १	११।२४।१५।३७	२। ८।२५।३७	८। ७।२७।२६	१।१४।४७।२३	८।२३।५९।३१	४।२७।१३।१८	३।२४।१२। ४	६।१३।३७।५१
५	१६।५२।५०	१।२०।४९।२८	११।२५। ०।२२	२।१०। ८। २	८। ७।२०।२९	१।१६। १।१०	८।२३।५६।१५	४।२७।१०। ८	३।२४।१४।१०	६।१३।३६।३७
६	१६।५६।४६	१।२१।४६।५४	११।२५।४५। ३	२।११।४७।४९	८। ७।१३।२८	१।१७।१४।५७	८।२३।५२।५८	४।२७। ६।५७	३।२४।१६।१८	६।१३।३५।२५
७	१७। ०।४३	१।२२।४४।१९	११।२६।२९।४०	२।१३।२४।५६	८। ७। ६।२२	१।१८।२८।४४	८।२३।४९।४१	४।२७। ३।४६	३।२४।१८।२९	६।१३।३४।१४
८	१७। ४।३९	१।२३।४१।४२	११।२७।१४।१३	२।१४।५९।२४	८। ६।५९।१३	१।१९।४२।३१	८।२३।४६।२२	४।२७। ०।३५	३।२४।२०।४२	६।१३।३३। ४
९	१७। ८।३६	१।२४।३९। ४	११।२७।५८।४३	२।१६।३१।१५	८। ६।५२। ०	१।२०।५६।१८	८।२३।४३। ०	४।२६।५७।२४	३।२४।२३। ०	६।१३।३१।५५
१०	१७।१२।३२	१।२५।३६।२६	११।२८।४३। ९	२।१८। ०।१३	८। ६।४४।४३	१।२२।१०। ५	८।२३।३९।३६	४।२६।५४।१४	३।२४।२५।२०	६।१३।३०।४८
११	१७।१६।२९	१।२६।३३।४६	११।२९।२७।३१	२।१९।२६।१३	८। ६।३७।२२	१।२३।२३।५२	८।२३।३६। ४	४।२६।५१। ३	३।२४।२७।४२	६।१३।२९।४२
१२	१७।२०।२५	१।२७।३१। ६	०। ०।११।५०	२।२०।४९।१९	८। ६।२९।५७	१।२४।३७।३८	८।२३।३२।२०	४।२६।४७।५२	३।२४।३०। ७	६।१३।२८।३७
१३	१७।२४।२२	१।२८।२८।२६	०। ०।५६। ५	२।२२। ९।२८	८। ६।२२।२८	१।२५।५१।२४	८।२३।२८।३०	४।२६।४४।४१	३।२४।३२।३४	६।१३।२७।३४
१४	१७।२८।१८	१।२९।२५।४४	०। १।४०।१६	२।२३।२६।४२	८। ६।१४।५५	१।२७। ५।१०	८।२३।२४।३६	४।२६।४१।३१	३।२४।३५। ३	६।१३।२६।३१
१५	१७।३२।१५	२। ०।२३। २	०। २।२४।२४	२।२४।४१। ०	८। ६। ७।१८	१।२८।१८।५६	८।२३।२०।४०	४।२६।३८।२०	३।२४।३७।३४	६।१३।२५।३०
१६	१७।३६।१२	२। १।२०।१९	०। ३। ८।२६	२।२५।५२।२३	८। ५।५९।३८	१।२९।३२।४२	८।२३।१६।४३	४।२६।३५। ९	३।२४।४०। ८	६।१३।२४।२९
१७	१७।४०। ९	२। २।१७।३६	०। ३।५२।२३	२।२७। ०।४४	८। ५।५१।५५	२। ०।४६।२८	८।२३।१२।४३	४।२६।३१।५८	३।२४।४२।४२	६।१३।२३।३१
१८	१७।४४। ५	२। ३।१४।५३	०। ४।३६।१५	२।२८। ५।३०	८। ५।४४।१२	२। २। ०।१४	८।२३। ८।३८	४।२६।२८।४८	३।२४।४५।१८	६।१३।२२।३५
१९	१७।४८। २	२। ४।१२।१०	०। ५।२०। ४	२।२९। ६।४४	८। ५।३६।३०	२। ३।१४। ०	८।२३। ४।३१	४।२६।२५।३७	३।२४।४७।५६	६।१३।२१।४१
२०	१७।५१।५८	२। ५। ९।२६	०। ६। ३।५१	३। ०। ४।१६	८। ५।२८।५०	२। ४।२७।४६	८।२३। ०।२२	४।२६।२२।२६	३।२४।५०।३५	६।१३।२०।४८
२१	१७।५५।५५	२। ६। ६।४१	०। ६।४७।३४	३। ०।५८।१०	८। ५।२१।११	२। ५।४१।३२	८।२२।५६।१३	४।२६।१९।१६	३।२४।५३।१७	६।१३।१९।५७
२२	१७।५९।५१	२। ७। ३।५६	०। ७।३१।१४	३। १।४८।४२	८। ५।१३।३३	२। ६।५५।१८	८।२२।५२। ४	४।२६।१६। ५	३।२४।५६। १	६।१३।१९। ८
२३	१८। ३।४८	२। ८। १।११	०। ८।१४।५२	३। २।३५।३८	८। ५। ५।५५	२। ८। ९। ४	८।२२।४७।५५	४।२६।१२।५४	३।२४।५८।४८	६।१३।१८।२१
२४	१८। ७।४४	२। ८।५८।२५	०। ८।५८।२६	३। ३।१८।४७	८। ४।५८।१९	२। ९।२२।५०	८।२२।४३।४४	४।२६। ९।४३	३।२५। १।३६	६।१३।१७।३५
२५	१८।११।४१	२। ९।५५।३८	०। ९।४१।५७	३। ३।५७।४७	८। ४।५०।४४	२।१०।३६।३६	८।२२।३९।३१	४।२६। ६।३२	३।२५। ४।२७	६।१३।१६।५१
२६	१८।१५।३७	२।१०।५२।५१	०।१०।२५।२५	३। ४।३२।२७	८। ४।४३।१०	२।११।५०।२२	८।२२।३५।१६	४।२६। ३।२२	३।२५। ७।१९	६।१३।१६। ९
२७	१८।१९।३४	२।११।५०। ४	०।११। ८।५०	३। ५। २।४७	८। ४।३५।३७	२।१३। ४। ८	८।२२।३१। ०	४।२६। ०।११	३।२५।१०।१४	६।१३।१५।२८
२८	१८।२३।३०	२।१२।४७।१६	०।११।५२।१२	३। ५।२८।४८	८। ४।२८। ५	२।१४।१७।५४	८।२२।२६।४२	४।२५।५७। ०	३।२५।१३।११	६।१३।१४।४९
२९	१८।२७।२७	२।१३।४४।२८	०।१२।३५।३१	३। ५।५०।२८	८। ४।२०।३४	२।१५।३१।४०	८।२२।२२।२३	४।२५।५३।४९	३।२५।१६।११	६।१३।१४।१२
३०	१८।३१।२४	२।१४।४१।३९	०।१३।१८।४७	३। ६। ७।४९	८। ४।१३। ४	२।१६।४५।२६	८।२२।१८। ३	४।२५।५०।३९	३।२५।१९।१३	६।१३।१३।३६

तारीख | साम्पातिक काल | दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक ... (... स्टैंडर्ड टाईम)

० । ०

(१ जुलाई को अयनांश २३°।१७'।२४")

तारीख जुलाई सन् (१९६०)	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ० । ० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल (मार्गी) रा. अं. क. वि.	बुध (मार्गी) रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र (मार्गी) रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण (मार्गी) रा. अं. क. वि.	इन्द्र (वक्री) रा. अं. क. वि.
१	१८।३५।२१	२।१५।३८।५०	०।१४। २। ०	३। ६।२०।५०	८। ४। ५।३६	२।१७।५९।११	८।२२।१३।४१	४।२५।४७।२८	३।२५।२२।१७	६।१३।१३। २
२	१८।३९।१७	२।१६।३६। १	०।१४।४५। ७	३। ६।२९।३१	८। ३।५८।१०	२।१९।१२।५६	८।२२। ९।१८	४।२५।४४।१७	३।२५।२५।२३	६।१३।१२।२९
३	१८।४३।१४	२।१७।३३।१२	०।१५।२८। ६	३। ६।३४।५३	८। ३।५०।४७	२।२०।२६।४१	८।२२। ४।५४	४।२५।४१। ६	३।२५।२८।३०	६।१३।११।५९
४	१८।४७।१०	२।१८।३०।२३	०।१६।१०।५८	३। ६।३५।५६	८। ३।४३।३१	२।२१।४०।२६	८।२२। ०।३१	४।२५।३७।५५	३।२५।३१।३९	६।१३।११।३१
५	१८।५१। ७	२।१९।२७।३५	०।१६।५३।४२	व३। ६।३२।३९	८। ३।३६।२१	२।२२।५४।१०	८।२१।५६। ९	४।२५।३४।४५	३।२५।३४।४९	६।१३।११। ५
६	१८।५५। ३	२।२०।२४।४६	०।१७।३६।२१	३। ६।२५। १	८। ३।२९।१८	२।२४। ७।५४	८।२१।५१।४७	४।२५।३१।३४	३।२५।३८। ०	६।१३।१०।४१
७	१८।५९। ०	२।२१।२१।५७	०।१८।१८।५४	३। ६।१३। ४	८। ३।२२।१९	२।२५।२१।३७	८।२१।४७।२६	४।२५।२८।२३	३।२५।४१।१२	६।१३।१०।१८
८	१९। २।५६	२।२२।१९। ९	०।१९। १।२३	३। ५।५६।४६	८। ३।१५।२७	२।२६।३५।२०	८।२१।४३। ५	४।२५।२५।१२	३।२५।४४।२५	६।१३। ९।५७
९	१९। ६।५३	२।२३।१६।२१	०।१९।४३।४७	३। ५।३६। ८	८। ३। ८।४०	२।२७।४९। २	८।२१।३८।४५	४।२५।२२। १	३।२५।४७।४०	६।१३। ९।३९
१०	१९।१०।४९	२।२४।१३।३३	०।२०।२६। ६	३। ५।११।१०	८। ३। १।५९	२।२९। २।४४	८।२१।३४।२६	४।२५।१८।५१	३।२५।५०।५६	६।१३। ९।२२
११	१९।१४।४६	२।२५।१०।४६	०।२१। ८।२०	३। ४।४२। १	८। २।५५।२४	३। ०।१६।२६	८।२१।३०। ८	४।२५।१५।४०	३।२५।५४।१३	६।१३। ९। ७
१२	१९।१८।४२	२।२६। ७।५९	०।२१।५०।२८	३। ४।११।१२	८। २।४८।५४	३। १।३०। ७	८।२१।२५।५०	४।२५।१२।२९	३।२५।५७।३१	६।१३। ८।५३
१३	१९।२२।३९	२।२७। ५।१२	०।२२।३२।३१	३। ३।३८।४३	८। २।४२।३०	३। २।४३।४८	८।२१।२१।३२	४।२५। ९।१८	३।२६। ०।५१	६।१३। ८।४१
१४	१९।२६।३६	२।२८। २।२५	०।२३।१४।२८	३। ३। ४।३४	८। २।३६।१२	३। ३।५७।२८	८।२१।१७।१५	४।२५। ६। ७	३।२६। ४।११	६।१३। ८।३२
१५	१९।३०।३३	२।२८।५९।३८	०।२३।५६।२०	३। २।२८।४५	८। २।२९।५९	३। ५।११। ८	८।२१।१२।५९	४।२५। २।५७	३।२६। ७।३३	६।१३। ८।२५
१६	१९।३४।२९	२।२९।५६।५१	०।२४।३८। ७	३। १।५१।१६	८। २।२३।५२	३। ६।२४।४८	८।२१। ८।४४	४।२४।५९।४६	३।२६।१०।५६	६।१३। ८।१९
१७	१९।३८।२६	३। ०।५४। ५	०।२५।१९।४९	३। १।१२। ७	८। २।१७।५१	३। ७।३८।२८	८।२१। ४।२९	४।२४।५६।३५	३।२६।१४।२०	६।१३। ८।१५
१८	१९।४२।२२	३। १।५१।१९	०।२६। १।२६	३। ०।३१।१९	८। २।११।५६	३। ८।५२। ८	८।२१। ०।१४	४।२४।५३।२४	३।२६।१७।४६	६।१३। ८।१३
१९	१९।४६।१९	३। २।४८।३४	०।२६।४२।५८	२।२९।५०।३२	७। २। ६।१०	३।१०। ५।४८	८।२०।५६।५९	४।२४।५०।१३	३।२६।२१।१४	६।१३। ८।१२
२०	१९।५०।१५	३। ३।४५।४९	०।२७।२४।२७	२।२९।१३।१८	८। २। ०।३५	३।११।१९।२८	८।२०।५१।४४	४।२४।४७। ३	३।२६।२४।४२	६।१३। ८।१३
२१	१९।५४।१२	३। ४।४३। ५	०।२८। ५।३५	२।२८।३९।३४	८। १।५५। ९	३।१२।३३। ८	८।२०।४७।३०	४।२४।४३।५२	३।२६।२८।११	६।१३। ८।१६
२२	१९।५८। ८	३। ५।४०।२२	०।२८।४६।४८	२।२८। ९।२२	८। १।४९।५२	३।१३।४६।४८	८।२०।४३।१७	४।२४।४०।४१	३।२६।३१।४२	६।१३। ८।२२
२३	२०। २। ५	३। ६।३७।४०	० २९।२७।५४	२।२७।४२।३९	८। १।४४।४५	३।१५। ०।२८	८।२०।३९। ६	४।२४।३७।३०	३।२६।३५।१५	६।१३। ८।३०
२४	२०। ६। १	३। ७।३४।५८	१। ०। ८।५३	२।२७।१९।२८	८। १।३९।४८	३।१६।१४। ८	८।२०।३४।५८	४।२४।३४।१९	३।२६।३८।५०	६।१३। ८।३९
२५	२०। ९।५८	३। ८।३२।१६	१। ०।४९।४७	२।२६।५९।४७	८। १।३५। ०	३।१७।२७।४७	८।२०।३०।५५	४।२४।३१। ८	३।२६।४२।२५	६।१३। ८।५१
२६	२०।१३।५४	३। ९।२९।३४	१। १।३०।३७	२।२६।४५।३७	८। १।३५।२२	३।१८।४१।२७	८।२०।२६।५३	४।२४।२७।५८	३।२६।४६। १	६।१३। ९। ४
२७	२०।१७।५१	३।१०।२६।५३	१। २।११।२४	२।२६।३६। १	८। १।२५।५३	३।१९।५५। ७	८।२०।२२।५४	४।२४।२४।४७	३।२६।४९।३८	६।१३। ९।२०
२८	२०।२१।४७	३।११।२४।१३	१। २।५२। ८	२।२६।३२।४४	८। १।२१।३४	३।२१। ८।४७	८।२०।१८।५६	४।२४।२१।३६	३।२६।५३।१५	६।१३। ९।३८
२९	२०।२५।४४	३।१२।२१।३४	१। ३।३२।४२	म२।२६।३६।४५	८। १।१७।२४	३।२२।२२।२७	८।२०।१५। २	४।२४।१८।२५	३।२६।५६।५३	६।१३। ९।५८
३०	२०।२९।४१	३।१३।१८।५६	१। ४।१३।१२	२।२६।४७। ६	८। १।१३।२४	३।२३।३६। ७	८।२०।११।१०	४।२४।१५।१४	३।२७। ०।३१	६।१३।१०।१९
३१	२०।३३।३८	३।१४।१६।१८	१। ४।५३।३५	२।२७। ३।४५	८। १। ९।३३	३।२४।४९।४६	८।२०। ७।२१	४।२४।१२। ४	३।२७। ४।११	६।१३।१०।४३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ० । ० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ अगस्त को अयनांश २३°।१७'।२८")

तारीख अगस्त सन् १९६०	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ० । ० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल (मार्गी) रा. अं. क. वि.	(बुध मार्गी) रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र (मार्गी) रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण (मार्गी) रा. अं. क. वि.	इन्द्र (मार्गी) रा. अं. क. वि.
१	२०।३७।३४	३।१५।१३।४१	१। ५।३३।५४	२।२७।२६।४४	८। १। ५।५३	३।२६। ३।२६	८।२०। ३।३३	४।२४। ८।५३	३।२७। ७।५१	६।१३।११। ९
२	२०।४१।३०	३।१६।११। ५	१। ६।१४। ५	२।२७।५६। १	८। १। २।२१	३।२७।१७। ६	८।१९।५९।४९	४।२४। ५।४२	३।२७।११।३२	६।१३।११।३७
३	२०।४५।२७	३।१७। ८।२९	१। ६।५४। ७	२।२८।३१।३७	८। ०।५८।५९	३।२८।३०।४६	८।१९।५६। ५	४।२४। २।३२	३।२७।१५।१४	६।१३।१२। ७
४	२०।४९।२३	३।१८। ५।५५	१। ७।३३।५९	२।२९।१२।३५	८। ०।५५।४६	३।२९।४४।२६	८।१९।५२।२२	४।२३।५९।२१	३।२७।१८।५६	६।१३।१२।३८
५	२०।५३।२०	३।१९। ३।२२	१। ८।१३।४२	२।२९।५८। २	८। ०।५२।४४	४। ०।५८। ६	८।१९।४८।४१	४।२३।५६।११	३।२७।२२।३८	६।१३।१३।१२
६	२०।५७।१६	३।२०। ०।५०	१। ८।५३।१४	३। ०।४७।२८	८। ०।४९।५२	४। २।११।४६	८।१९।४५। ३	४।२३।५३। ०	३।२७।२६।२०	६।१३।१३।४८
७	२१। १।१३	३।२०।५८।१९	१। ९।३२।३३	३। १।४१।४३	८। ०।४७।११	४। ३।२५।२५	८।१९।४१।३०	४।२३।४९।४९	३।२७।३०। २	६।१३।१४।२५
८	२१। ५। ९	३।२१।५५।४९	१।१०।११।४३	३। २।४२।१७	८। ०।४४।४१	४। ४।३९। ४	८।१९।३८। ३	४।२३।४६।३८	३।२७।३३।४४	६।१३।१५। ४
९	२१। ९। ६	३।२२।५३।२०	१।१०।५०।५०	३। ३।५०।१०	८। ०।४२।२२	४। ५।५२।४३	८।१९।३४।४१	४।२३।४३।२८	३।२७।३७।२६	६।१३।१५।४४
१०	२१।१३। २	३।२३।५०।५२	१।११।२९।५१	३। ५। ५।५२	८। ०।४०।१५	४। ७। ६।२२	८।१९।३१।२४	४।२३।४०।१७	३।२७।४१। ८	६।१३।१६।२६
११	२१।१६।५९	३।२४।४८।२६	१।१२। ८।४५	३। ६।२७।२३	८। ०।३८।१७	४। ८।२०। १	८।१९।२८।१२	४।२३।३७। ६	३।२७।४४।५०	६।१३।१७।१०
१२	२१।२०।५५	३।२५।४६। १	१।१२।४७।३५	३। ७।५४।५३	८। ०।३६।३०	४। ९।३३।४०	८।१९।२५। ४	४।२३।३३।५५	३।२७।४८।३२	६।१३।१७।५५
१३	२१।२४।५२	३।२६।४३।३७	१।१३।२६।१६	३। ९।२८।१२	८। ०।३४।५४	४।१०।४७।१९	८।१९।२२। २	४।२३।३०।४४	३।२७।५२।१५	६।१३।१८।४३
१४	२१।२८।४८	३।२७।४१।१४	१।१४। ४।४९	३।११। ५।५०	८। ०।३३।३०	४।१२। ०।५८	८।१९।१९। ४	४।२३।२७।३४	३।२७।५५।५९	६।१३।१९।३२
१५	२१।३२।४५	३।२८।३८।५३	१।१४।४३।१५	३।१२।४७।४७	८। ०।३२।१५	४।१३।१४।३७	८।१९।१६।१२	४।२३।२४।२३	३।२७।५९।४३	६।१३।२०।२३
१६	२१।३६।४२	३।२९।३६।३३	१।१५।२१।३५	३।१४।३३।४५	८। ०।३१।१२	४।१४।२८।१६	८।१९।१३।२५	४।२३।२१।१२	३।२८। ३।२७	६।१३।२१।१६
१७	२१।४०।३८	४। ०।३४।१५	१।१५।५९।४८	३।१६।२२।४३	८। ०।३०।१९	४।१५।४१।५५	८।१९।१०।४२	४।२३।१८। १	३।२८। ७।१०	६।१३।२२।१०
१८	२१।४४।३५	४। १।३१।५७	१।१६।३७।५४	३।१८।१४। ०	८। ०।२९।३८	४।१६।५५।३४	८।१९। ८। ४	४।२३।१४।५१	३।२८।१०।५५	६।१३।२३। ६
१९	२१।४८।३२	४। २।२९।३९	१।१७।१५।५४	३।२०। ८।२०	८। ०।२९।१०	४।१८। ९।१३	८।१९। ५।३१	४।२३।११।४०	३।२८।१४।४०	६।१३।२४। ४
२०	२१।५२।२८	४। ३।२७।२३	१।१७।५३।४३	३।२२। ४।५६	८। ०।२८।५६	४।१९।२२।५२	८।१९। ३। १	४।२३। ८।२९	३।२८।१८।२२	६।१३।२५। ५
२१	२१।५६।२५	४। ४।२५। ८	१।१८।३१।१७	३।२४। २। ७	८। ०।२८।५५	४।२०।३६।३१	८।१९। ०।३६	४।२३। ५।१८	३।२८।२२। ३	६।१३।२६। ८
२२	२२। ०।२१	४। ५।२२।५४	१।१९। ८।४३	३।२५।५९।५४	म८। ०।२९। ६	४।२१।५०।१०	८।१८।५८।१६	४।२३। २। ८	३।२८।२५।४२	६।१३।२७।१२
२३	२२। ४।१८	४। ६।२०।४२	१।१९।४५।५९	३।२७।५८।१६	८। ०।२९।२८	४।२३। ३।४९	८।१८।५६। ०	४।२२।५८।५७	३।२८।२९।२२	६।१३।२८।१९
२४	२२। ८।१४	४। ७।१८।३२	१।२०।२३। ३	३।२९।५७।१४	८। ०।३०। ०	४।२४।१७।२८	८।१८।५३।४९	४।२२।५५।४६	३।२८।३३। २	६।१३।२९।२७
२५	२२।१२।११	४। ८।१६।२४	१।२०।५९।५८	४। १।५६।४७	८। ०।३०।४३	४।२५।३१। ७	८।१८।५१।४३	४।२२।५२।३५	३।२८।३६।४१	६।१३।३०।३६
२६	२२।१६। ७	४। ९।१४।१८	१।२१।३६।४२	४। ३।५६।५६	८। ०।३१।३८	४।२६।४४।४६	८।१८।४९।४२	४।२२।४९।२४	३।२८।४०।२०	६।१३।३१।४७
२७	२२।२०। ४	४।१०।१२।१४	१।२२।१३।१६	४। ५।५७।४०	८। ०।३२।४२	४।२७।५८।२५	८।१८।४७।४६	४।२२।४६।१३	३।२८।४३।५९	६।१३।३३। ०
२८	२२।२४। ०	४।११।१०।११	१।२२।४९।३९	४। ७।५७।१५	८। ०।३३।५८	४।२९।१२। ४	८।१८।४५।४५	४।२२।४३। २	३।२८।४७।३८	६।१३।३४।१६
२९	२२।२७।५७	४।१२। ८। ९	१।२३।२५।५२	४। ९।५५।५३	८। ०।३५।२४	५। ०।२५।४३	८।१८।४४। ९	४।२२।३९।५१	३।२८।५१।१६	६।१३।३५।३३
३०	२२।३१।५४	४।१३। ६। ९	१।२४। १।५४	४।११।५३।३५	८। ०।३७। १	५। १।३९।२२	८।१८।४२।२७	४।२२।३६।४०	[illegible]	[illegible]
३१	२२।३५।५१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० भारतीय स्टण्डर्ड टाईम)
० । ०

(१ सितम्बर को अयनांश २३ ।१७'।३३'')

तारीख सितम्बर सन् १९६०	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ० । ० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल (मार्गी) रा. अं. क. वि.	बुध (मार्गी) रा. अं. क. वि.	गुरु (मार्गी) रा. अं. क. वि.	शुक्र (मार्गी) रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण (मार्गी) रा. अं. क. वि.	इन्द्र (मार्गी) रा. अं. क. वि.
१	२२।३९।४८	४।१५। २।१५	१।२५।१३।२७	४।१५।४६।१०	८। ०।४०।४८	५। ४। ६।४०	८।१८।३९।२०	४।२२।३०।१९	३।२९। २।१०	६।१३।३९।३३
२	२२।४३।४४	४।१६। ०।२०	१।२५।४८।५८	४।१७।४१। ३	८। ०।४२।५८	५। ५।२०।१९	८।१८।३७।५५	४।२२।२७। ८	३।२९। ५।४७	६।१३।४०।५४
३	२२।४७।४१	४।१६।५८।२६	१।२६।२४।१८	४।१९।३५। ०	८। ०।४५।१९	५। ६।३३।५८	८।१८।३६।३५	४।२२।२३।५७	३।२९। ९।२४	६।१३।४२।१७
४	२२।५१।३७	४।१७।५६।३४	१।२६।५९।२८	४।२१।२८। १	८। ०।४७।५१	५। ७।४७।३७	८।१८।३५।१७	४।२२।२०।४७	३।२९।१३। १	६।१३।४३।४१
५	२२।५५।३४	४।१८।५४।४२	१।२७।३४।३०	४।२३।१९।३६	८। ०।५०।३३	५। ९। १।१५	८।१८।३४। १	४।२२।१७।३७	३।२९।१६।३७	६।१३।४५। ८
६	२२।५९।३०	४।१९।५२।५२	१।२८। ९।१७	४।२५।१०। ६	८। ०।५३।२७	५।१०।१४।५३	८।१८।३३। २	४।२२।१४।२६	३।२९।२०।१२	६।१३।४६।३७
७	२३। ३।२७	४।२०।५१। ५	१।२८।४३।५१	४।२६।५९।३२	८। ०।५६।३१	५।११।२८।३१	८।१८।३२। ७	४।२२।११।१५	३।२९।२३।४५	६।१३।४८। ७
८	२३। ७।२३	४।२१।४९।१९	१।२९।१८।१२	४।२८।४७।५३	८। ०।५९।४६	५।१२।४२। ९	८।१८।३१।१७	४।२२। ८। ४	३।२९।२७।१७	६।१३।४९।३९
९	२३।११।२०	४।२२।४७।३६	१।२९।५२।२०	५। ०।३५।११	८। १। ३।११	५।१३।५५।४७	८।१८।३०।३३	४।२२। ४।५४	३।२९।३०।४७	६।१३।५१।१२
१०	२३।१५।१६	४।२३।४५।५४	२। ०।२६।१४	५। २।२१।२४	८। १। ६।४६	५।१५। ९।३१	८।१८।२९।५६	४।२२। १।४३	३।२९।३४।१६	६।१३।५२।४६
११	२३।१९।१३	४।२४।४४।१४	२। ०।५९।५५	५। ४। ६।३३	८। १।१०।३२	५।१६।२३। ३	८।१८।२९।२५	४।२१।५८।३२	३।२९।३७।४४	६।१३।५४।२२
१२	२३।२३। ९	४।२५।४२।३७	२। १।३३।२२	५। ५।५०।३८	८। १।१४।२८	५।१७।३७।४१	८।१८।२८।५९	४।२१।५५।२१	३।२९।४१।१०	६।१३।५५।५९
१३	२३।२७। ६	४।२६।४१। १	२। २। ६।३६	५। ७।३३।२८	८। १।१८।३४	५।१८।५०।१९	८।१८।२८।३९	४।२१।५२।११	३।२९।४४।३४	६।१३।५७।३७
१४	२३।३१। २	४।२७।३९।२७	२। २।३९।३६	५। ९।१५।२९	८। १।२२।५१	५।२०। ३।५७	८।१८।२८।२५	४।२१।४९। ०	३।२९।४७।५७	६।१३।५९।१७
१५	२३।३४।५९	४।२८।३७।५५	२। ३।१२।२३	५।१०।५६।३१	८। १।२७।१८	५।२१।१७।३५	८।१८।२८।१७	४।२१।४५।४९	३।२९।५१।१८	६।१४। ०।५८
१६	२३।३८।५६	४।२९।३६।२४	२। ३।४४।५७	५।१२।३६।३४	८। १।३१।५५	५।२२।३१।१३	८।१८।२८।१५	४।२१।४२।३८	३।२९।५४।३८	६।१४। २।४१
१७	२३।४२।५३	५। ०।३४।५५	२। ४।१७।१८	५।१४।१५।३५	८। १।३६।४३	५।२३।४४।५१	८।१८।२८।१९	४।२१।३९।२७	३।२९।५७।५६	६।१४। ४।२५
१८	२३।४६।४९	५। १।३३।२७	२। ४।४९।२५	५।१५।५३।३५	८। १।४१।४१	५।२४।५८।२९	८।१८।२८।२९	४।२१।३६।१७	४। ०। १।१२	६।१४। ६।१०
१९	२३।५०।४६	५। २।३२। १	२। ५।२१।२९	५।१७।३०।३६	८। १।४६।४९	५।२६।१२। ६	८।१८।२८।४५	४।२१।३३। ६	४। ०। ४।२७	६।१४। ७।५६
२०	२३।५४।४२	५। ३।३०।३७	२। ५।५२। २	५।१९। ६।३६	८। १।५२। ८	५।२७।२५।४३	८।१८।२९। ६	४।२१।२९।५५	४। ०। ७।४१	६।१४। ९।४३
२१	२३।५८।३९	५। ४।२९।१५	२। ६।२४।३४	५।२०।४२।२०	८। १।५७।३८	५।२८।३९।२०	८।१८।२९।३२	४।२१।२६।४४	४। ०।१०।५६	६।१४।११।३१
२२	०। २।३५	५। ५।२७।५६	२। ६।५५।५४	५।२२।१७।१८	८। २। ३।१६	५।२९।५२।५७	८।१८।३०। २	४।२१।२३।३३	४। ०।१४।१०	६।१४।१३।२१
२३	०। ६।३२	५। ६।२६।३९	२। ७।२६।२४	५।२३।५२।१२	८। २। ९। ३	६। १। ६।३४	८।१८।३०।३९	४।२१।२०।२२	४। ०।१७।२२	६।१४।१५।१३
२४	०।१०।२८	५। ७।२५।२४	२। ७।५७।३५	५।२५।२५। ०	८। २।१४।५९	६। २।२०।११	८।१८।३१।२३	४।२१।१७।१२	४। ०।२०।३२	६।१४।१७। ५
२५	०।१४।२५	५। ८।२४।११	२। ८।२७।५५	५।२६।५७।४९	८। २।२१। ४	६। ३।३३।४८	८।१८।३२।१३	४।२१।१४। १	४। ०।२३।४०	६।१४।१८।५८
२६	०।१८।२१	५। ९।२३। ०	२। ८।५७।५७	५।२८।२६।४२	८। २।२७।१८	६। ४।४७।२५	८।१८।३३। ८	४।२१।१०।५०	४। ०।२६।४६	६।१४।२०।५३
२७	०।२२।१८	५।१०।२२।५१	२। ९।२७।४२	५।२९।५९।५१	८। २।३३।४१	६। ६। १। २	८।१८।३४।१०	४।२१। ७।४०	४। ०।२९।५०	६।१४।२२।४९
२८	०।२६।१४	५।११।२१।४४	२। ९।५७। ७	६। १।२०।२६	८। २।४०।१२	६। ७।१४।३९	८।१८।३५।१७	४।२१। ४।२९	४। ०।३२।५३	६।१४।२४।४७
२९	०।३०।११	५।१२।१९।३९	२।१०।२६।१६	६। २।४६।१७	८। २।४६।५२	६। ८।२८।१६	८।१८।३६।२९	४।२१। १।१८	४। ०।३५।५३	६।१४।२६।४६
३०	०।३४। ८	५।१३।१८।३६	२।१०।५५। ६	६। ४।११।३५	८। २।५३।४२	६। ९।४१।५३	८।१८।३७।४८	४।२०।५८। ७	४। ०।३८।५२	६।१४।२८।४६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ०।० भारतीय स्टैंडर्ड टाइम)

(१ अक्तूबर को अयनांश २३°।१७'।३७")

तारीख अक्तूबर सन् १९६०	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ०।० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल (मार्गी) रा. अं. क. वि.	बुध (मार्गी) रा. अं. क. वि.	गुरु (मार्गी) रा. अं. क. वि.	शुक्र (मार्गी) रा. अं. क. वि.	शनि (मार्गी) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण (मार्गी) रा. अं. क. वि.	इन्द्र (मार्गी) रा. अं. क. वि.
१	०।३८। ४	५।१४।१७।३५	२।११।२३।३८	६। ५।३६।३५	८। ३। ०।४०	६।१०।५५।२९	८।१८।३९।१५	४।२०।५४।५७	४। ०।४१।४९	६।१४।३०।४६
२	०।४२। ०	५।१५।१६।३७	२।११।५१।५१	६। ७। ०। ०	८। ३। ७।४७	६।१२। ९। ५	८।१८।४०।५०	४।२०।५१।४६	४। ०।४४।४४	६।१४।३२।४७
३	०।४५।५७	५।१६।१५।४१	२।१२।१९।४१	६। ८।२२।१८	८। ३।१५। ३	६।१३।२२।४१	८।१८।४२।३०	४।२०।४८।३५	४। ०।४७।३७	६।१४।३४।४९
४	०।४९।५३	५।१७।१४।४६	२।१२।४८।११	६। ९।४३।२८	८। ३।२२।२८	६।१४।३६।१७	८।१८।४४।१४	४।२०।४५।२४	४। ०।५०।२९	६।१४।३६।५१
५	०।५३।५०	५।१८।१३।५३	२।१३।१४।२४	६।११। ३।४६	८। ३।३०। ३	६।१५।४९।५३	८।१८।४६। २	४।२०।४२।१३	४। ०।५३।१८	६।१४।३८।५४
६	०।५७।४६	५।१९।१३। ३	२।१३।४१।१७	६।१२।२२।२३	८। ३।३७।४८	६।१७। ३।२९	८।१८।४७।५३	४।२०।३९। २	४। ०।५६। ६	६।१४।४०।५९
७	१। १।४३	५।२०।१२।१५	२।१४। ७।४१	६।१३।४०।२३	८। ३।४५।४३	६।१८।१७। ५	८।१८।४९।५०	४।२०।३५।५१	४। ०।५८।५२	६।१४।४३। ४
८	१। ५।३९	५।२१।११।२९	२।१४।३३।४४	६।१४।५७।३०	८। ३।५३।४९	६।१९।३०।४१	८।१८।५१।५३	४।२०।३२।४१	४। १। १।३६	६।१४।४५। ९
९	१। ९।३६	५।२२।१०।४३	२।१४।५९।२८	६।१६।११।३०	८। ४। २। १	६।२०।४४।१७	८।१८।५४। २	४।२०।२९।३०	४। १। ४।१८	६।१४।४७।१४
१०	१।१३।३२	५।२३। ९।५९	२।१५।२४।५२	६।१७।२३। ६	८। ४।१०।२१	६।२१।५७।५३	८।१८।५६।१७	४।२०।२६।१९	४। १। ६।५८	६।१४।४९।१९
११	१।१७।२९	५।२४। ९।१९	२।१५।४९।५६	६।१८।३३। ८	८। ४।१८।४७	६।२३।११।२८	८।१८।५८।३७	४।२०।२३। ८	४। १। ९।३५	६।१४।५१।२४
१२	१।२१।२५	५।२५। ८।४१	२।१६।१४।४१	६।१९।४१।१२	८। ४।२७।२०	६।२४।२५। ३	८।१९। १। ४	४।२०।१९।५७	४। १।१२।१०	६।१४।५३।२९
१३	१।२५।२२	५।२६। ८। ४	२।१६।३९। १	६।२०।४९। ०	८। ४।३६। ०	६।२५।३८।३८	८।१९। ३।३६	४।२०।१६।४६	४। १।१४।४२	६।१४।५५।३६
१४	१।२९।१९	५।२७। ७।२८	२।१७। ३।११	६।२१।५५।४८	८। ४।४४।४६	६।२६।५२।१३	८।१९। ६।१४	४।२०।१३।३६	४। १।१७।१२	६।१४।५७।४३
१५	१।३३।१६	५।२८। ६।५५	२।१७।२६।५६	६।२२।५९।२८	८। ४।५३।३९	६।२८। ५।४८	८।१९। ८।५५	४।२०।१०।२५	४। १।१९।४०	६।१४।५९।५१
१६	१।३७।१२	५।२९। ६।२४	२।१७।५०।२१	६।२४। ०।२८	८। ५। २।४०	६।२९।१९।२३	८।१९।११।४२	४।२०। ७।१४	४। १।२२। ६	६।१५। २। १
१७	१।४१। ९	६। ०। ५।५५	२।१८।१३।२७	६।२४।५७।५४	८। ५।११।४७	७। ०।३२।५८	८।१९।१४।३५	४।२०। ४। ३	४। १।२४।२९	६।१५। ४।१२
१८	१।४५। ५	६। १। ५।२९	२।१८।३६।१३	६।२५।५२। ५	८। ५।२१। ०	७। १।४६।३३	८।१९।१७।३४	४।२०। ०।५२	४। १।२६।५१	६।१५। ६।२३
१९	१।४९। २	६। २। ५। ५	२।१८।५८।३९	६।२६।४३। ०	८। ५।३०।२०	७। ३। ०। ८	८।१९।२०।४४	४।१९।५७।४२	४। १।२९। ९	६।१५। ८।३५
२०	१।५२।५८	६। ३। ४।४२	२।१९।२०।४५	६।२७।३०।४०	८। ५।३९।४७	७। ४।१३।४३	८।१९।२३।५९	४।१९।५४।३१	४। १।३१।२६	६।१५।१०।४८
२१	१।५६।५५	६। ४। ४।२१	२।१९।४२।३२	६।२८।१५। ४	८। ५।४९।२१	७। ५।२७।१८	८।१९।२७।२०	४।१९।५१।२१	४। १।३३।४०	६।१५।१३। ३
२२	२। ०।५१	६। ५। ४। ३	२।२०। ३।५८	६।२८।५६।१३	८। ५।५९। २	७। ६।४०।५२	८।१९।३०।४७	४।१९।४८।१०	४। १।३५।५३	६।१५।१५।१८
२३	२। ४।४८	६। ६। ३।४८	२।२०।२४।५०	६।२९।३३।२२	८। ६। ८।५४	७। ७।५४।२६	८।१९।३४।१६	४।१९।४४।५९	४। १।३७।५६	६।१५।१७।३२
२४	२। ८।४४	६। ७। ३।३५	२।२०।४५।१५	७। ०। ३।१७	८। ६।१८।५१	७। ९। ८। ०	८।१९।३७।४८	४।१९।४१।४९	४। १।३९।५४	६।१५।१९।४७
२५	२।१२।४१	६। ८। ३।२४	२।२१। ४।५५	७। ०।२६। ०	८। ६।२८।५५	७।१०।२१।३३	८।१९।४१।२५	४।१९।३८।३८	४। १।४१।४९	६।१५।२२। १
२६	२।१६।३७	६। ९। ३।१५	२।२१।२३।५५	७। ०।४१।२८	८। ६।३९। ५	७।११।३५। ६	८।१९।४५। ७	४।१९।३५।२७	४। १।४३।४३	६।१५।२४।१६
२७	२।२०।३४	६।१०। ३। ८	२।२१।४२।२५	७। ०।४९।४५	८। ६।४९।२१	७।१२।४८।३९	८।१९।४८।५३	४।१९।३२।१६	४। १।४५।३४	६।१५।२६।३०
२८	२।२४।३०	६।११। ३। २	२।२२। ९। ६	७। ०।५०।४९	८। ६।५९।४४	७।१४। २।१२	८।१९।५२।४३	४।१९।२९। ५	४। १।४७।२३	६।१५।२८।४५
२९	२।२८।२७	६।१२। २।५८	२।२२।२६।४२	व७। ०।४४।४१	८। ७।१०।१२	७।१५।१५।४५	८।१९।५६।३७	४।१९।२५।५४	४। १।४९। ९	६।१५।३०।५९
३०	२।३२।२४	६।१३। २।५५	२।२२।४३।५९	७। ०।२७।१९	८। ७।२०।४६	७।१६।२९।१७	८।२०। ०।३६	४।१९।२२।४४	४। १।५०।५३	६।१५।३३।१४
३१	२।३६।२१	६।१४। २।५५	[illegible]	७। ०। ०। ८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० भारतीय स्टैंडर्ड टाइम)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय [illegible] भारतीय स्टैंडर्ड टाईम)

०।०

(१ नवम्बर को अयनांश २३°।१७'।४१")

तारीख नवम्बर सन् १९६०	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ०।० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल (मार्गी) रा. अं. क. वि.	बुध (वक्री) रा. अं. क. वि.	गुरु (मार्गी) रा. अं. क. वि.	शुक्र (मार्गी) रा. अं. क. वि.	शनि (मार्गी) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण (मार्गी) रा. अं. क. वि.	इन्द्र (मार्गी) रा. अं. क. वि.
१	२।४०।१७	६।१५। २।५६	२।२३।१३।५९	६।२९।२५।३०	८। ७।४२।१३	७।१८।५६।२०	८।२०। ८।४६	४।१९।१६।२२	४। १।५४।१२	६।१५।३७।४३
२	२।४४।१३	६।१६। २।५९	२।२३।२७।२९	६।२८।४१।२४	८। ७।५३। ६	७।२०। ९।५१	८।२०।१२।५८	४।१९।१३।११	४। १।५५।४८	६।१५।३९।५८
३	२।४८।१०	६।१७। ३। ३	२।२३।३९।५९	६।२७।४९।५२	८। ८। ४। ४	७।२१।२३।२१	८।२०।१७।१४	४।१९।१०। ०	४। १।५७।२२	६।१५।४२।१३
४	२।५२। ६	६।१८। ३।१०	२।२३।५१।२९	६।२६।५०।४९	८। ८।१५। ९	७।२२।३६।५१	८।२०।२१।३५	४।१९। ६।४९	४। १।५८।५२	६।१५।४४।२८
५	२।५६। ३	६।१९। ३।१८	२।२४। २। ०	६।२५।४४।२०	८। ८।२६।२१	७।२३।५०।२०	८।२०।२६। ०	४।१९। ३।३८	४। २। ०।२१	६।१५।४६।४३
६	२।५९।५९	६।२०। ३।२९	२।२४।११।४०	६।२४।३०।२३	८। ८।३७।३८	७।२५। ३।४९	८।२०।३०।२९	४।१९। ०।२७	४। २। १।४७	६।१५।४८।५९
७	३। ३।५६	६।२१। ३।४१	२।२४।२१। १	६।२३। ९। ०	८। ८।४९। १	७।२६।१७।१७	८।२०।३५। २	४।१८।५७।१६	४। २। ३।११	६।१५।५१।१४
८	३। ७।५२	६।२२। ३।५६	२।२४।२९।३१	६।२१।४७।४८	८। ९। ०।३०	७।२७।३०।४३	८।२०।३९।४२	४।१८।५४। ६	४। २। ४।३१	६।१५।५३।२८
९	३।११।४९	६।२३। ४।१०	२।२४।३७।१९	६।२०।३२।४९	८। ९।१२। ३	७।२८।४४। ७	८।२०।४४।२६	४।१८।५०।५५	४। २। ५।४८	६।१५।५५।४१
१०	३।१५।४५	६।२४। ४।३०	२।२४।४४।५३	६।१९।२४। ०	८। ९।२३।४०	७।२९।५७।२७	८।२०।४९।१५	४।१८।४७।४५	४। २। ७। ०	६।१५।५७।५३
११	३।१९।४२	६।२५। ४।४९	२।२४।५१।४१	६।१८।२१।२२	८। ९।३५।२१	८। १।१०।४३	८।२०।५४। ७	४।१८।४४।३४	४। २। ८।१०	६।१६। ०। ६
१२	३।२३।३८	६।२६। ५।१०	२।२४।५७।४८	६।१७।२४।५३	८। ९।४७। ६	८। २।२३।५३	८।२०।५९। ३	४।१८।४१।२३	४। २। ९।१४	६।१६। २।१९
१३	३।२७।३५	६।२७। ५।३२	२।२५। ३।१०	६।१६।३४।३७	८। ९।५८।५६	८। ३।३६।५६	८।२१। ४। ४	४।१८।३८।१३	४। २।१०।१६	६।१६। ४।३३
१४	३।३१।३१	६।२८। ५।५६	२।२५। ७।४८	६।१५।५०।३१	८।१०।१०।५०	८। ४।४९।५२	८।२१। ९। ८	४।१८।३५। २	४। २।११।१५	६।१६। ६।४६
१५	३।३५।२८	६।२९। ६।२२	२।२५।११।४२	६।१५।१२।३६	८।१०।२२।४८	८। ६। २।४१	८।२१।१४।१७	४।१८।३१।५१	४। २।१२।१२	६।१६। ८।५९
१६	३।३९।२५	७। ०। ६।४९	२।२५।१४।५२	६।१४।५०। ७	८।१०।३४।५०	८। ७।१५।२१	८।२१।१९।२९	४।१८।२८।४०	४। २।१३। ६	६।१६।११।१२
१७	३।४३।२२	७। १। ७।१८	२।२५।१७।१८	६।१४।४२।४७	८।१०।४६।५६	८। ८।२७।५५	८।२१।२४।४६	४।१८।२५।२९	४। २।१३।५६	६।१६।१३।२४
१८	३।४७।१८	७। २। ७।४८	२।२५।१९। ०	६।१४।४४।३७	८।१०।५९। ७	८। ९।४०।२५	८।२१।३०। ६	४।१८।२२।१८	४। २।१४।४१	६।१६।१५।३५
१९	३।५१।१५	७। ३। ८।२०	२।२५।१९।५८	६।१४।५५।३७	८।११।११।२१	८।१०।५२।५१	८।२१।३५।३१	४।१८।१९। ८	४। २।१५।२३	६।१६।१७।४६
२०	३।५५।११	७। ४। ८।५४	२।२५।२०।१२	६।१५।१६।४७	८।११।२३।४०	८।१२। ५।१४	८।२१।४१। ०	४।१८।१५।५७	४। २।१६। १	६।१६।१९।५६
२१	३।५९। ८	७। ५। ९।२९	व२।२५।१९।४२	६।१५।४८। ७	८।११।३६। ३	८।१३।१७।३५	८।२१।४६।३२	४।१८।१२।४६	४। २।१६।३७	६।१६।२२। ६
२२	४। ३। ४	७। ६।१०। ४	२।२५।१८।२८	६।१६।२९।३७	८।११।४८।३१	८।१४।२९।५४	८।२१।५२। ९	४।१८। ९।३५	४। २।१७। ८	६।१६।२४।१५
२३	४। ७। १	७। ७।१०।४२	२।२५।१६।३०	६।१७।२१।१८	८।१२। १। ३	८।१५।४२।१२	८।२१।५७।५०	४।१८। ६।२५	४। २।१७।३८	६।१६।२६।२४
२४	४।१०।५७	७। ८।११।२२	२।२५।१४। ५	६।१८।१९।३७	८।१२।१३।४०	८।१६।५४।२९	८।२२। ३।३५	४।१८। ३।१४	४। २।१८। ५	६।१६।२८।३२
२५	४।१४।५४	७। ९।१२। ४	२।२५।१०।४९	६।१९।२०।४८	८।१२।२६।२२	८।१८। ६।४५	८।२२। ९।२३	४।१८। ०। ३	४। २।१८।३०	६।१६।३०।३९
२६	४।१८।५०	७।१०।१२।४९	२।२५। ६।४१	६।२०।२४।५१	८।१२।३९। ७	८।१९।१८।५९	८।२२।१५।१३	४।१७।५६।५३	४। २।१८।५४	६।१६।३२।४५
२७	४।२२।४७	७।११।१३।३५	२।२५। १।४१	६।२१।३१।४८	८।१२।५१।५४	८।२०।३१।१०	८।२२।२१। ६	४।१७।५३।४२	४। २।१९।१४	६।१६।३४।५०
२८	४।२६।४३	७।१२।१४।२१	२।२४।५५।४०	६।२२।४१।३६	८।१३। ४।४५	८।२१।४३।१७	८।२२।२७। २	४।१७।५०।३१	४। २।१९।३१	६।१६।३६।५४
२९	४।३०।४०	७।१३।१५। ७	२।२४।४९। ६	६।२३।५४।१८	८।१३।१७।३८	८।२२।५५।१९	८।२२।३३। १	४।१७।४७।२१	४। २।१९।५३	६।१६।३८।५७
३०	४।३४।३७	७।१४।१५।५४	२।२४।४१।३१	६।२५। ९।५२	८।१३।३०।३४	८।२४। ७।१७	८।२२।३९। २	४।१७।४४।१०	४। २।१९।५२	६।१६।४०।५९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम) ०।०

(१ दिसम्बर को अयनांश २३°।१७'।४५")

तारीख दिसम्बर सन् १९६०	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ०।० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल (वक्री) रा. अं. क. वि.	बुध (मार्गी) रा. अं. क. वि.	गुरु (मार्गी) रा. अं. क. वि.	शुक्र (मार्गी) रा. अं. क. वि.	शनि (मार्गी) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण (वक्री) रा. अं. क. वि.	इन्द्र (मार्गी) रा. अं. क. वि.
१	४।३८।३४	७।१५।१६।४१	२।२४।३३। ४	६।२६।२८।१९	८।१३।४३।३४	८।२५।१९।११	८।२२।४५। ७	४।१७।४१। ०	४। २।१९।५६	६।१६।४३। १
२	४।४२।३०	७।१६।१७।३०	२।२४।२३।१५	६।२७।५१।२९	८।१३।५६।३६	८।२६।३१। १	८।२२।५१।१४	४।१७।३७।४९	४। २।१९।५५	६।१६।४५। २
३	४।४६।२७	७।१७।१८।२०	२।२४।१३।१४	६।२९।१८।५२	८।१४। ९।४१	८।२७।४२।४७	८।२२।५७।२४	४।१७।३४।३८	४। २।१९।५२	६।१६।४७। २
४	४।५०।२३	७।१८।१९।११	२।२४। २।३२	७। ०।४८।२९	८।१४।२२।४८	८।२८।५४।३०	८।२३। ३।३७	४।१७।३१।२७	४। २।१९।४६	६।१६।४९। ०
५	४।५४।२०	७।१९।२०। २	२।२३।५०।३८	७। २।१८।१८	८।१४।३५।५९	९। ०। ६। ८	८।२३। ९।५३	४।१७।२८।१६	४। २।१९।३६	६।१६।५०।५८
६	४।५८।१६	७।२०।२०।५५	२।२३।३७।५२	७। ३।४६।२१	८।१४।४९।१३	९। १।१७।४०	८।२३।१६।११	४।१७।२५। ५	४। २।१९।२२	६।१६।५२।५५
७	५। २।१३	७।२१।२१।५०	२।२३।२४।१५	७। ५।१४।३८	८।१५। २।२९	९। २।२९। ८	८।२३।२२।३३	४।१७।२१।५५	४। २।१९। ४	६।१६।५४।५०
८	५। ६। ९	७।२२।२२।४६	२।२३। ९।४६	७। ६।४३। ९	८।१५।१५।४८	९। ३।४०।२९	८।२३।२८।५७	४।१७।१८।४४	४। २।१८।४३	६।१६।५६।४४
९	५।१०। ६	७।२३।२३।४४	२।२२।५४।२५	७। ८।११।५३	८।१५।२९।१०	९। ४।५१।४५	८।२३।३५।२४	४।१७।१५।३३	४। २।१८।१७	६।१६।५८।३७
१०	५।१४। २	७।२४।२४।४२	२।२२।३८।१५	७। ९।४१।५५	८।१५।४२।३५	९। ६। ३। ०	८।२३।४१।५२	४।१७।१२।२२	४। २।१७।४६	६।१७। ०।२९
११	५।१७।५९	७।२५।२५।४३	२।२२।२१।२२	७।११।१२।१४	८।१५।५६। ४	९। ७।१४।१४	८।२३।४८।२३	४।१७। ९।११	४। २।१७।१२	६।१७। २।१९
१२	५।२१।५५	७।२६।२६।४४	२।२२। ४। ९	७।१२।४२।४९	८।१६। ९।३४	९। ८।२५।२२	८।२३।५४।५४	४।१७। ६। ०	४। २।१६।३४	६।१७। ४। ८
१३	५।२५।५२	७।२७।२७।४६	२।२१।४६।२८	७।१४।१३।४१	८।१६।२३। ६	९। ९।३६।२२	८।२४। १।२८	४।१७। २।५०	४। २।१५।५४	६।१७। ५।५७
१४	५।२९।४८	७।२८।२८।४८	२।२१।२८।१८	७।१५।४४।५०	८।१६।३६।३९	९।१०।४७।१७	८।२४। ८। ३	४।१६।५९।३९	४। २।१५।११	६।१७। ७।४४
१५	५।३३।४५	७।२९।२९।५१	२।२१। ९।४१	७।१७।१६।१५	८।१६।५०।१४	९।११।५८। ३	८।२४।१४।४१	४।१६।५६।२८	४। २।१४।२५	६।१७। ९।३१
१६	५।३७।४२	८। ०।३०।५५	२।२०।५०।३५	७।१८।४७।५६	८।१७। ३।५०	९।१३। ८।४३	८।२४।२१।२०	४।१६।५३।१७	४। २।१३।३५	६।१७।११।१६
१७	५।४१।३९	८। १।३१।५९	२।२०।३१। १	७।२०।१९।५५	८।१७।१७।२८	९।१४।१९।१९	८।२४।२८। १	४।१६।५०। ७	४। २।१२।४३	६।१७।१३। १
१८	५।४५।३५	८। २।३३। ४	२।२०।११। २	७।२१।५२।२१	८।१७।३१। ८	९।१५।२९।४८	८।२४।३४।४३	४।१६।४६।५६	४। २।११।४८	६।१७।१४।४४
१९	५।४९।३२	८। ३।३४। ९	२।१९।५०।३६	७।२३।२५। ०	८।१७।४४।४९	९।१६।४०।१०	८।२४।४१।२८	४।१६।४३।४५	४। २।१०।५०	६।१७।१६।२७
२०	५।५३।२८	८। ४।३५।१५	२।१९।२९।३४	७।२४।५७।५३	८।१७।५८।३२	९।१७।५०।२७	८।२४।४८।१३	४।१६।४०।३४	४। २। ९।४९	६।१७।१८। ८
२१	५।५७।२५	८। ५।३६।२१	२।१९। ८। ४	७।२६।३०।५८	८।१८।१२।१६	९।१९। ०।३७	८।२४।५५। १	४।१६।३७।२३	४। २। ८।४५	६।१७।१९।४९
२२	६। १।२१	८। ६।३७।२८	२।१८।४६। ९	७।२८। ४।१८	८।१८।२६। २	९।२०।१०।४१	८।२५। १।५०	४।१६।३४।१२	४। २। ७।३८	६।१७।२१।२८
२३	६। ५।१८	८। ७।३८।३५	२।१८।२३।४७	७।२९।३७।५०	८।१८।३९।५०	९।२१।२०।३९	८।२५। ८।४२	४।१६।३१। २	४। २। ६।२९	६।१७।२३। ६
२४	६। ९।१४	८। ८।३९।४३	२।१८। ०।५९	८। १।११।३६	८।१८।५३।४०	९।२२।३०।२८	८।२५।१५।३५	४।१६।२७।५१	४। २। ५।१६	६।१७।२४।४३
२५	६।१३।११	८। ९।४०।५२	२।१७।३७।३७	८। २।४५।३६	८।१९। ७।३२	९।२३।४०।१६	८।२५।२२।३०	४।१६।२४।४०	४। २। ४। १	६।१७।२६।१८
२६	६।१७। ७	८।१०।४२। १	२।१७।१४।२०	८। ४।१९।४१	८।१९।२१।२६	९।२४।४९।५१	८।२५।२९।२५	४।१६।२१।२९	४। २। २।४६	६।१७।२७।५२
२७	६।२१। ४	८।११।४३।१०	२।१६।५१।१९	८। ५।५३।५६	८।१९।३५।२२	९।२५।५९।१७	८।२५।३६।२२	४।१६।१८।१८	४। २। १।२९	६।१७।२९।२२
२८	६।२५। ०	८।१२।४४।१९	२।१६।२८।३१	८। ७।२८।२५	८।१९।४९।१८	९।२७। ८।३२	८।२५।४३।२०	४।१६।१५। ८	४। २। ०। ८	६।१७।३०।५०
२९	६।२८।५७	८।१३।४५।२८	२।१६। ६। ०	८। ९। ३। ०	८।२०। ३।१५	९।२८।१७।३८	८।२५।५०।१८	४।१६।११।५७	४। १।५८।४४	[illegible]
३०	६।३२।५४	८।१४।४६।३८	२।१५।४३।४७	८।१०।३८। ७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम) ०।०

तारीख | साम्पातिक काल

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक ... स्पष्ट ... (स्थान ... भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)
० । ०

(१ जनवरी को अयनांश २३°।१७'।४९")

तारीख जनवरी सन् १९६१	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं. मि. ०।० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल (वक्री) रा. अं. क. वि.	बुध (मार्गी) रा. अं. क. वि.	गुरु (मार्गी) रा. अं. क. वि.	शुक्र (मार्गी) रा. अं. क. वि.	शनि (मार्गी) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण (वक्री) रा. अं. क. वि.	इन्द्र (मार्गी) रा. अं. क. वि.
१	६।४०।४७	८।१६।४८।५७	२।१५। ०। ५	८।१३।४९।१७	८।२०।४५। ५	१०। १।४३।५३	८।२६।११।१६	४।१६। २।२५	४। १।५४।११	६।१७।३६।२४
२	६।४४।४३	८।१७।५०। ६	२।१४।३८।३७	८।१५।२५।१९	८।२०।५९। २	१०। २।५२।१९	८।२६।१८।१८	४।१५।५९।१४	४। १।५२।३४	६।१७।३७।४३
३	६।४८।४०	८।१८।५१।१५	२।१४।१७।१३	८।१७। २। ०	८।२१।१२।५९	१०। ४। ०।३४	८।२६।२५।२०	४।१५।५६। ३	४। १।५०।५३	६।१७।३९। १
४	६।५२।३६	८।१९।५२।२४	२।१३।५६। ६	८।१८।३८। ५	८।२१।२६।५६	१०। ५। ८।३९	८।२६।३२।२३	४।१५।५२।५२	४। १।४९। ९	६।१७।४०।१७
५	६।५६।३३	८।२०।५३।३३	२।१३।३५।१२	८।२०।१५।२५	८।२१।४०।५४	१०। ६।१६।३४	८।२६।३९।२६	४।१५।४९।४१	४। १।४७।२१	६।१७।४१।३१
६	७। ०।२९	८।२१।५४।४२	२।१३।१४।३३	८।२१।५२।५५	८।२१।५४।५२	१०। ७।२४।१९	८।२६।४६।३१	४।१५।४६।३०	४। १।४५।३१	६।१७।४२।४३
७	७। ४।२६	८।२२।५५।५२	२।१२।५४।१२	८।२३।३०।४५	८।२२। ८।५०	१०। ८।३१।५३	८।२६।५३।३६	४।१५।४३।१९	४। १।४३।३७	६।१७।४३।५३
८	७। ८।२२	८।२३।५७। २	२।१२।३४। ८	८।२५। ८।४५	८।२२।२२।४८	१०। ९।३९।१८	८।२७। ०।४२	४।१५।४०। ९	४। १।४१।४०	६।१७।४५। १
९	७।१२।१९	८।२४।५८।११	२।१२।१४।१७	८।२६।४७। ५	८।२२।३६।४७	१०।१०।४६।३३	८।२७। ७।४९	४।१५।३६।५८	४। १।३९।४०	६।१७।४६। ८
१०	७।१६।१५	८।२५।५९।२१	२।११।५४।४३	८।२८।२५।४५	८।२२।५०।४७	१०।११।५३।३८	८।२७।१४।५६	४।१५।३३।४८	४। १।३७।३९	६।१७।४७।१४
११	७।२०।१२	८।२७। ०।३१	२।११।३५।१५	९। ०। ४।४५	८।२३। ४।४७	१०।१३। ०।३१	८।२७।२२। २	४।१५।३०।३७	४। १।३५।३८	६।१७।४८।१९
१२	७।२४। ८	८।२८। १।३९	२।११।१६।३७	९। १।४३।१६	८।२३।१८।४७	१०।१४। ७। ८	८।२७।२९। ७	४।१५।२७।२७	४। १।३३।३७	६।१७।४९।२४
१३	७।२८। ५	८।२९। २।४७	२।१०।५८।३८	९। ३।२३। ८	८।२३।३२।४७	१०।१५।१३।२६	८।२७।३६।१३	४।१५।२४।१६	४। १।३१।३६	६।१७।५०।२७
१४	७।३२। १	९। ०। ३।५५	२।१०।४१।२८	९। ५। ३।११	८।२३।४६।४६	१०।१६।१९।२८	८।२७।४३।१९	४।१५।२१। ५	४। १।२९।३३	६।१७।५१।२८
१५	७।३५।५८	९। १। ५। २	२।१०।२४।५७	९। ६।४३।५६	८।२४। ०।४३	१०।१७।२५।१२	८।२७।५०।२३	४।१५।१७।५४	४। १।२७।२६	६।१७।५२।२६
१६	७।३९।५५	९। २। ६। ९	२।१०। ९।१५	९। ८।२४।५४	८।२४।१४।३८	१०।१८।३०।४०	८।२७।५७।२७	४।१५।१४।४४	४। १।२५।१८	६।१७।५३।२१
१७	७।४३।५२	९। ३। ७।१५	२। ९।५४।१२	९।१०। ६।१४	८।२४।२८।३२	१०।१९।३५।४९	८।२८। ४।३१	४।१५।११।३३	४। १।२३। ८	६।१७।५४।१४
१८	७।४७।४८	९। ४। ८।२१	२। ९।३९।५८	९।११।४७।५६	८।२४।४२।२५	१०।२०।४०।४१	८।२८।११।३५	४।१५। ८।२२	४। १।२०।५६	६।१७।५५। ५
१९	७।५१।४५	९। ५। ९।२६	२। ९।२६।२३	९।१३।२९।५५	८।२४।५६।१६	१०।२१।४५।१५	८।२८।१८।३७	४।१५। ५।११	४। १।१८।४१	६।१७।५५।५३
२०	७।५५।४१	९। ६।१०।३१	२। ९।१३।३७	९।१५।१२। ४	८।२५।१०। ६	१०।२२।४९।३३	८।२८।२५।३९	४।१५। २। ०	४। १।१६।२५	६।१७।५६।३९
२१	७।५९।३८	९। ७।११।३५	२। ९। १।२६	९।१६।५४।१३	८।२५।२३।५५	१०।२३।५३।३२	८।२८।३२।४१	४।१४।५८।५०	४। १।१४। ७	६।१७।५७।२३
२२	८। ३।३४	९। ८।१२।३९	२। ८।५०।१३	९।१८।३६।२२	८।२५।३७।४२	१०।२४।५७।१५	८।२८।३९।४२	४।१४।५५।३९	४। १।११।४७	६।१७।५८। ५
२३	८। ७।३१	९। ९।१३।४२	२। ८।३९।३५	९।२०।१८।३०	८।२५।५१।२७	१०।२६। ०।४०	८।२८।४६।४३	४।१४।५२।२८	४। १। ९।२४	६।१७।५८।४४
२४	८।११।२७	९।१०।१४।४५	२। ८।२९।४६	९।२२। ०।३७	८।२६। ५।१२	१०।२७। ३।४८	८।२८।५३।४३	४।१४।४९।१७	४। १। ७। ०	६।१७।५९।२१
२५	८।१५।२४	९।११।१५।४७	२। ८।२०।३५	९।२३।४२।४४	८।२६।१८।५६	१०।२८। ६।३८	८।२९। ०।४३	४।१४।४६। ६	४। १। ४।३४	६।१७।५९।५६
२६	८।१९।२०	९।१२।१६।४८	२। ८।१२।१४	९।२५।२४।५०	८।२६।३२।३९	१०।२९। ९।११	८।२९। ७।४३	४।१४।४२।५६	४। १। २। ८	६।१८। ०।३०
२७	८।२३।१७	९।१३।१७।४९	२। ८। ४।३३	९।२७। ६।१८	८।२६।४६।२२	११। ०।११।५१	८।२९।१४।४३	४।१४।३९।४५	४। ०।५९।४१	६।१८। १। ४
२८	८।२७।१३	९।१४।१८।४७	२। ७।५७।३२	९।२८।४७।२१	८।२७। ०। ४	११। १।१४। ०	८।२९।२१।४३	४।१४।३६।३४	४। ०।५७।१४	६।१८। १।३७
२९	८।३१।१०	९।१५।१९।४३	२। ७।५१। ६	१०। ०।२५।३०	८।२७।१३।४३	११। २।१५।३७	८।२९।२८।४२	४।१४।३३।२३	४। ०।५४।४७	६।१८। २। ७
३०	८।३५। ७	९।१६।२०।३८	२। ७।४५।२१	१०। २। १।१६	८।२७।२७।२१	११। ३।१६।४४	८।२९।३५।४०	४।१४।३०।१३	४। ०।५२।१७	६।१८। २।३६
३१	८।३९। ४	९।१७।२१।३२	२। ७।४०।२२	१०। ३।३४।४९	८।२७।४०।५६	११। ४।१७।१९	८।२९।४२।३७	४।१४।२७। २	४। ०।४९।४७	६।१८। ३। २

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तारीख फरवरी सन् १९६१	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं. मि. ०।०	दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ०।० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम) (१ फरवरी को अयनांश २३°।१७'।५३")								
		सूर्य	मंगल (वक्री)	बुध (मार्गी)	गुरु (मार्गी)	शुक्र (मार्गी)	शनि (मार्गी)	राहु	वरुण (वक्री)	इन्द्र (मार्गी)
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	८।४३।०	९।१८।२२।२६	२।७।३६।२	१०।५।६।७	८।२७।५४।२९	११।५।१७।२३	८।२९।४९।३२	४।१४।२३।५१	४।०।४७।१७	६।१८।३।२५
२	८।४६।५६	९।१९।२३।१९	२।७।३२।२३	१०।६।३५।११	८।२८।८।०	११।६।१६।५६	८।२९।५६।२४	४।१४।२०।४०	४।०।४४।४७	६।१८।३।४६
३	८।५०।५३	९।२०।२४।११	२।७।२९।२४	१०।८।२।२	८।२८।२१।२९	११।७।१५।५८	९।०।३।१४	४।१४।१७।२९	४।०।४२।१४	६।१८।४।५
४	८।५४।४९	९।२१।२५।२	२।७।२७।२५	१०।९।२५।१	८।२८।३४।५५	११।८।१४।२८	९।०।१०।१	४।१४।१४।१८	४।०।३९।४२	६।१८।४।२१
५	८।५८।४६	९।२२।२५।५१	२।७।२६।१९	१०।१०।३९।५८	८।२८।४८।१९	११।९।१२।२७	९।०।१६।४७	४।१४।११।७	४।०।३७।७	६।१८।४।३५
६	९।२।४२	९।२३।२६।४०	२।७।२५।४६	१०।११।४७।१५	८।२९।१।४१	११।१०।९।५५	९।०।२३।३०	४।१४।७।५७	४।०।३४।३३	६।१८।४।४७
७	९।६।३९	९।२४।२७।२८	२।७।२५।३६	१०।१२।४६।३०	८।२९।१५।०	११।११।६।५२	९।०।३०।१२	४।१४।४।४६	४।०।३१।५८	६।१८।४।५७
८	९।१०।३५	९।२५।२८।१५	२।७।२६।२	१०।१३।३८।१	८।२९।२८।१७	११।१२।३।१७	९।०।३६।५१	४।१४।१।३५	४।०।२९।२२	६।१८।५।४
९	९।१४।३२	९।२६।२९।१	२।७।२७।३१	१०।१४।२१।४०	८।२९।४१।३२	११।१२।५९।११	९।०।४३।२९	४।१३।५८।२४	४।०।२६।४४	६।१८।५।९
१०	९।१८।२८	९।२७।२९।४६	२।७।२९।४१	१०।१४।५७।२९	८।२९।५४।४५	११।१३।५४।३४	९।०।५०।४	४।१३।५५।१३	४।०।२४।५	६।१८।५।१२
११	९।२२।२५	९।२८।३०।३०	२।७।३२।३१	१०।१५।२५।२६	९।०।७।५५	११।१४।४९।२६	९।०।५६।३८	४।१३।५२।३	४।०।२१।२४	६।१८।५।१३
१२	९।२६।२१	९।२९।३१।११	२।७।३६।७	१०।१५।४१।२२	९।०।२१।३	११।१५।४४।३	९।१।३।९	४।१३।४८।५२	४।०।१८।४२	व६।१८।५।११
१३	९।३०।१८	१०।०।३१।५१	२।७।४०।२१	१०।१५।४५।१५	९।०।३४।८	११।१६।३७।४७	९।१।९।३७	४।१३।४५।४१	४।०।१६।१	६।१८।५।७
१४	९।३४।१४	१०।१।३२।२९	२।७।४५।११	व१०।१५।३९।८	९।०।४७।१०	११।१७।३०।३९	९।१।१६।३	४।१३।४२।३०	४।०।१३।२१	६।१८।५।२
१५	९।३८।११	१०।२।३३।६	२।७।५०।३९	१०।१५।२६।१६	९।१।०।८	११।१८।२२।३८	९।१।२२।२७	४।१३।३९।२०	४।०।१०।४०	६।१८।४।५५
१६	९।४२।८	१०।३।३३।४०	२।७।५६।४३	१०।१५।६।१	९।१।१३।२	११।१९।१३।४४	९।१।२८।४८	४।१३।३६।९	४।०।८।१	६।१८।४।४६
१७	९।४६।५	१०।४।३४।१३	२।८।३।२४	१०।१४।३६।३६	९।१।२५।५३	११।२०।३।५७	९।१।३५।७	४।१३।३२।५९	४।०।५।२३	६।१८।४।३५
१८	९।५०।१	१०।५।३४।४५	२।८।१०।४१	१०।१३।५४।०	९।१।३८।४१	११।२०।५३।१८	९।१।४१।२३	४।१३।२९।४८	४।०।२।४५	६।१८।४।२२
१९	९।५३।५८	१०।६।३५।१५	२।८।१८।३६	१०।१३।३।१२	९।१।५१।२५	११।२१।४१।४६	९।१।४७।३७	४।१३।२६।३७	४।०।०।७	६।१८।४।८
२०	९।५७।५४	१०।७।३५।४४	२।८।२७।६	१०।१२।३।३७	९।२।४।६	११।२२।२९।२१	९।१।५३।४९	४।१३।२३।२६	३।२९।५७।३०	६।१८।३।५१
२१	१०।१।५१	१०।८।३६।१२	२।८।३६।१४	१०।११।२।४६	९।२।१६।४२	११।२३।१६।३	९।१।५९।५९	४।१३।२०।१६	३।२९।५४।५४	६।१८।३।३३
२२	१०।५।४७	१०।९।३६।३८	२।८।४५।५८	१०।१०।१।३४	९।२।२९।१४	११।२४।१।५२	९।२।६।६	४।१३।१७।५	३।२९।५२।१८	६।१८।३।१३
२३	१०।९।४४	१०।१०।३७।३	२।८।५६।२०	१०।९।०।४	९।२।४१।४३	११।२४।४६।४९	९।२।१२।१०	४।१३।१३।५४	३।२९।४९।४३	६।१८।२।५१
२४	१०।१३।४०	१०।११।३७।२६	२।९।७।२०	१०।७।५८।१४	९।२।५४।९	११।२५।३०।५३	९।२।१८।१२	४।१३।१०।४३	३।२९।४७।९	६।१८।२।२७
२५	१०।१७।३७	१०।१२।३७।४८	२।९।१८।५७	१०।६।५६।६	९।३।६।३१	११।२६।१४।४	९।२।२४।१२	४।१३।७।३२	३।२९।४४।३५	६।१८।२।१
२६	१०।२१।३३	१०।१३।३८।८	२।९।३१।६	१०।५।५३।५८	९।३।१८।५०	११।२६।५६।११	९।२।३०।९	४।१३।४।२१	३।२९।४२।१	६।१८।१।३४
२७	१०।२५।३०	१०।१४।३८।२७	२।९।४३।५२	१०।४।५५।५३	९।३।३१।५	११।२७।३७।४८	९।२।३६।४	४।१३।१।११	३।२९।३९।४७	६।१८।१।५
२८	१०।२९।२७	१०।१५।३८।४४	२।९।५७।८	१०।३।५९।५८	९।३।४३।१७	११।२८।१८।४५	९।२।४१।५३	४।१२।५८।०	३।२९।३६।५३	६।१८।०।३३

तारीख मार्च	स्थानीय समय घं. मि.	दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ०।० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(१ मार्च को अयनांश २३।१७।५७)

तारीख मार्च सन् १९६१	स्थानीय समय घं. मि. ०।०	सूर्य	मंगल (मार्गी)	बुध (वक्री)	गुरु (मार्गी)	शुक्र (मार्गी)	शनि (मार्गी)	राहु	वरुण (वक्री)	इन्द्र (वक्री)
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	१०।३३।२४	१०।१६।३९। ०	२।१०।१०।३६	१०। ३।२२। ०	९। ३।५५।२९	११।२८।५८। २	९। २।४७।३९	४।१२।५४।४९	३।२९।३४।११	६।१७।५९।५८
२	१०।३७।२०	१०।१७।३९।१३	२।१०।२४।३४	१०। २।४२।५८	९। ४। ७।३०	११।२९।३५।३८	९। २।५३।२१	४।१२।५१।३८	३।२९।३१।४७	६।१७।५९।२२
३	१०।४१।१७	१०।१८।३९।२४	२।१०।३८।५०	१०। २। ८।५२	९। ४।१९।२६	०। ०।११।३५	९। २।५९। ०	४।१२।४८।२८	३।२९।२९।१५	६।१७।५८।४४
४	१०।४५।१३	१०।१९।३९।३३	२।१०।५३।३०	१०। १।४०।४२	९। ४।३१।१८	०। ०।४५।५०	९। ३। ४।३५	४।१२।४५।१७	३।२९।२६।४४	६।१७।५८। ४
५	१०।४९।१०	१०।२०।३९।४०	२।११। ८।३१	१०। १।२१।२८	९। ४।४३। ४	०। १।१८।२६	९। ३।१०। ८	४।१२।४२। ६	३।२९।२४।१६	६।१७।५७।२३
६	१०।५३। ६	१०।२१।३९।४५	२।११।२४।१०	१०। १।११। ९	९। ४।५४।४५	०। १।४९।२१	९। ३।१५।३७	४।१२।३८।५५	३।२९।२१।५३	६।१७।५६।४०
७	१०।५७। ३	१०।२२।३९।४९	२।११।४०।१६	१०। १। ९।४७	९। ५। ६।२२	०। २।१८।३६	९। ३।२१। ४	४।१२।३५।४४	३।२९।१९।३४	६।१७।५५।५५
८	११। ०।५९	१०।२३।३९।५०	२।११।५६।४८	म१०। १।१३।२१	९। ५।१७।५३	०। २।४६। ९	९। ३।२६।२६	४।१२।३२।३४	३।२९।१७।१९	६।१७।५५। ८
९	११। ४।५६	१०।२४।३९।५०	२।१२।१३।४७	१०। १।२१।५४	९। ५।२९।१९	०। ३।१२। ३	९। ३।३१।४५	४।१२।२९।२३	३।२९।१५। ४	६।१७।५४।२०
१०	११। ८।५२	१०।२५।३९।४८	२।१२।३१।१२	१०। १।३५।२५	९। ५।४०।३९	०। ३।३६।१६	९। ३।३७। १	४।१२।२६।१२	३।२९।१२।५२	६ १७।५३।३०
११	११।१२।४९	१०।२६।३९।४४	२।१२।४९। ५	१०। १।५३।५३	९। ५।५१।५५	०। ३।५८।५०	९। ३।४२।१४	४।१२।२३। १	३।२९।१०।४२	६।१७।५२।३८
१२	११।१६।४५	१०।२७।३९।३८	२।१३। ७।२३	१०। २।१७।२०	९। ६। ३। ५	०। ४।१९।४२	९। ३।४७।२३	४।१२।१९।५१	३।२९। ८।३३	६।१७।५१।४५
१३	११।२०।४२	१०।२८।३९।३०	२।१३।२६। ८	१०। २।४५।४५	९। ६।१४।१०	०। ४।३८।५४	९। ३।५२।२९	४।१२।१६।४०	३।२९। ६।२५	६।१७।५०।५०
१४	११।२४।३८	१०।२९।३९।२०	२।१३।४५।१९	१०। ३।१९। ८	९। ६।२५। ९	०। ४।५५।२६	९। ३।५७।३१	४।१२।१३।२९	३।२९। ४।२२	६।१७।४९।५३
१५	११।२८।३५	११। ०।३९। ८	२।१४। ४।५८	१०। ३।५७।२९	९। ६।३६। ४	०। ५।१२।१८	९। ४। २।२९	४।१२।१०।१८	३।२९। २।१९	६।१७।४८।५४
१६	११।३२।३२	११। १।३८।५५	२।१४।२५।१०	१०। ४।४०।४८	९। ६।४६।५४	०। ५।२६।२२	९। ४। ७।२२	४।१२। ७। ७	३।२९। ०।१७	६।१७।४७।५४

—: विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदयास्त ज्ञात करना :—

पृष्ठ ११५–१८ पर २–२ अक्षांशों के अन्तर पर ०° से ३०° अक्षांश तक के स्थलों के सूर्योदयास्त स्थानीय समयों में लगभग ६–६ दिन के व्यवधान से दिये गये हैं (३०° से अधिक अक्षांशों के लिए गत वर्षका पञ्चाङ्ग देखें) इन उदयास्तकालों में किरणवक्रीभवन संस्कार किया गया है। जिस नगर का उदयास्त निकालना हो उसके अक्षांश "अक्षांशादि सारिणी" (पृ. १२५–१२६) में देखें)। तदनन्तर पृ. ११५–१८ पर उस अक्षांश के नीचे एवं अभीष्ट तारीख के सम्मुख सूर्योदयास्त प्राप्त करें। ये स्थानीय समय के हैं। इनमें स्टैण्डर्ड अन्तर के मिनट, जो पृ. १२५–२६ पर 'अक्षांशादि सारिणी' में हैं, चिह्न के विपरीत जोड़ने या घटाने से [अर्थात् ऋण(—) चिह्न हो तो जोड़ देने से, धन (+) चिह्न हो तो घटा देने से] स्वदेशीय स्टैण्डर्ड टाईम बन जाएगा। जैसे—६ फरवरी को राजकोट में सूर्य का उदय एवं अस्तकाल जानना है। राजकोट के अक्षांश लगभग २२° उत्तर हैं। २२° अक्षांश के नीचे ६ फरवरी को सूर्योदय काल ६।३६ एवं सूर्यास्त ५।५२ मिला। ये समय स्थानीय हैं। इनमें राजकोट का स्टैण्डर्ड अन्तर ४६ मिनट ऋण (—) होने से जोड़ देने पर राजकोट में ६ फरवरी को सूर्योदय एवं सूर्यास्त के स्टैण्डर्ड टाईम क्रमशः ७।२२ तथा ६।३८ हुए। नोट:–(१) ये उदयास्तकाल सूर्यबिम्ब की परिधि के ऊर्ध्वतम भाग का दृश्य क्षितिज से स्पर्श का समय बतलाते हैं। इन उदयास्तकालों में लगभग ४ मिनट क्रमशः जोड़ने एवं घटाने से सूर्य केन्द्र सम्बन्धी उदयास्त काल प्राप्त होंगे। (२) उत्तर अक्षांश वाले स्थानों के लिए बाईं ओर वाले कालम में एवं दक्षिण अक्षांश वाले स्थानों के लिए दाईं ओर वाले कालम में दी गई तारीखें देखनी चाहिएं। दक्षिण अक्षांश वाले सूर्योदयास्त काल में गतवर्षीय पञ्चाङ्ग के पृष्ठ १२०–२१ पर दिया गया मिनटात्मक संस्कार देना आवश्यक है।

—: विदेशीय स्टैण्डर्ड टाईम तथा भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर :—

कुछ देशों के स्टैं. टाईमों का भारतीय स्टैं. टाईम से अन्तर पृष्ठ १२६ पर दिया गया है। अन्तर के इन घण्टा मिनटों को भारतीय स्टैं. टा. में चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्टदेशीय स्टैं. टा. प्राप्त होगा। किसी विदेशीय स्टैं. टा. में उस देश के स्टैं. टा. तथा भारतीय स्टैं. टा. के अन्तर के घण्टा मिनटों को चिह्न के विपरीत युक्त या वियुक्त करने से भारतीय स्टैं. टा. हो जाएगा।

विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री आदि के निर्माण के लिए भारतीय पञ्चाङ्ग का प्रयोग करने से पूर्व विदेशीय स्टैं. टा. में दिये गये जातक के जन्म समय को भारतीय स्टैं. टा. में परिवर्तित कर लेना नितान्त आवश्यक है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

रोपड़ (पंजाब) के स्पष्टार्कोदय से लेकर १०-१० घटी के अन्तर पर दैनिक स्पष्ट चन्द्र
(सं० २०१७)

मास	ति. वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
चैत्र शुक्लपक्ष	१ चं.	११।२३। ५।१५	११।२५।१४।२५	११।२७।२३।३५	११।२९।३२।४६	०। १।३९।४९	०। ३।४६।२
	२ मं.	०। ५।५२।५९	०। ७।५९।३४	०।१०। ६। ९	०।१२।१२।४४	०।१४।१८।२५	०।१६।२३।
	३ बु.	०।१८।२७।५४	०।२०।३२।३८	०।२२।३७।२३	०।२४।४२। ७	०।२६।४६।४३	०।२८।४८।४
	४ गु.	१। ०।५०।४५	१। २।५२।४६	१। ४।५४।४७	१। ६।५६।४८	१। ८।५८।४९	१।११। ०।१
	५ शु.	१।१३। १।२१	१।१५। २।२३	१।१७। ३।२४	१।१९। ४।२६	१।२१। ५।२८	१।२३। ६।
	६ श.	१।२५। ६।४८	१।२७। ७। १	१।२९। ७।१३	२। १। ७।२६	२। ३। ७।३८	२। ५। ७।
	७ र.	२। ७। ८। ३	२। ९। ८।१८	२।११। ८।३२	२।१३। ८।४७	२।१५। ९। १	२।१७। ९।१
	८ चं.	२।१९। ९।३०	२।२१।१०।१२	२।२३।११।१४	२।२५।१२।१६	२।२७।१३।१७	२।२९।१४।१
	९. मं.	३। १।१५।२१	३। ३।१६।२२	३। ५।१८।५४	३। ७।२१।१४	३। ९।२३।३३	३।११।२५।५
	१० बु.	३।१३।२८।१२	३।१५।३०।३२	३।१७।३३।२९	३।१९।३७।५०	३।२१।४२।१७	३।२३।४६।४
	११ गु.	३।२५।५१।११	३।२७।५५।३८	४।००।००। ५	४। २। ६।४४	४। ४।१३।२३	४। ६।२०।
	१२ शु.	४। ८।२६।४१	४।१०।३३।२०	४।१२।३९।५९	४।१४।४८।३३	४।१६।५७।५०	४।१९। ७।
	१३ श.	४।२१।१६।२३	४।२३।२५।४०	४।२५।३४।५७	४।२७।४५।३१	४।२९।५७।२५	५। २। १
	१४ र.	५। ४।२१।१४	५। ६।३३। ८	५। ८।४५। २	५।१०।५८। ५	५।१३।१२।३९	५।१५।२७।१
	१५ चं.	५।१७।४१।४७	५।१९।५६।२१	५।२२।१०।५५	५।२४।२६।३८	५।२६।४३।३३	५।२९।००।२
वैशाख कृष्णपक्ष	१ मं.	६। १।१७।२२	६। ३।३४।१६	६। ५।५१।११	६। ८। ९।२१	६।१०।२८।१५	६।१२।४७।
	२ बु.	६।१५। ६। ३	६।१७।२४।५७	६।१९।४३।५१	६।२२। ४।२४	६।२४।२५।१२	६।२६।४६।
	३ गु.	६।२९। ६।४९	७। १।२७।३७	७। ३।४८।३८	७। ६।१०।३९	७। ८।३२।४०	७।१०।५४।४०
	४ शु.	७।१३।१६।४१	७।१५।३८।४२	७।१८। १।१६	७।२०।२४।१३	७।२२।४७। ९	७।२५।१०।
	५.श.	७।२७।३३। २	७।२९।५५।५९	८। २।१९।१८	८। ४।४२।३५	८। ७। ५।५२	८। ९।२९।
	६ र.	८।११।५३।२५	८।१४।१५।३५	८।१६।३८।४२	८।१९। १।४९	८।२१।२४।५६	८।२३।४८।
	७ चं.	८।२६।११।१०	८।२८।३३।३६	९। ०।५५।५२	९। ३।१८। ८	९। ५।४०।२३	९। ८। २।३
	८ मं.	९।१०।२४।४१	९।१२।४५।४४	९।१५। ६।४८	९।१७।२७।५१	९।१९।४८।५४	९।२२। ९।५
	९ बु.	९।२४।३०। ९	९।२६।४९।३२	९।२९। ८।५४	१०। १।२८।१७	१०। ३।४७।३९	१०। ६। ७।
	११ गु.	१०। ८।२४।४८	१०।१०।४२। ८	१०।१२।५९।२८	१०।१५।१६।४९	१०।१७।३४। ९	१०।१९।५१।३
	१२ शु.	१०।२२। ६।४२	१०।२४।२२।४३	१०।२६।३६।४५	१०।२८।५१।४६	११। १। ६।४७	११। ३।२२।४
	१३ श.	११। ५।३४।१२	११। ७।४६।३७	११। ९।५९। १	११।१२।११।२६	११।१४।२३।५१	११।१६।३६।१६
	१४ र.	११।१८।४६। ६	११।२०।५५।५०	११।२३। ५।३४	११।२५।१५।१७	११।२७।२५। १	११।२९।३४।४
	३० चं.	०। १।४३। ०	०। ३।५०। ७	०। ५।५७।१४	०। ८। ४।२१	०।१०।११।२८	०।१२।१८।३५
वैशाख शुक्लपक्ष	१ मं.	०।१४।२३।५५	०।१६।२८।४९	०।१८।३३।४४	०।२०।३८।३८	०।२२।४३।३३	०।२४।४८।२
	२ बु.	०।२६।५३। ५	०।२८।५५।४५	१। ०।५८।२५	१। ३। १। ५	१। ५। ३।४६	१। ७। ६।२
	३ गु.	१। ९। ९। ६	१।११।१०।५६	१।१३।१२।१३	१।१५।१३।२९	१।१७।१४।४६	१।१९।१६।
	३ शु.	१।२१।१७।१९	१।२३।१८।३५	१।२५।१८।५४	१।२७।१९।१२	१।२९।१९।३०	२। १।१९।४
	४ श.	२। ३।२०। ६	२। ५।२०।२४	२। ७।२०।३९	२। ९।२०।४८	२।११।२०।५७	२।१३।२१।
	५ र.	२।१५।२१।१५	२।१७।२१।२४	२।१९।२१।३३	२।२१।२२। ८	२।२३।२२।५३	२।२५।२३।३
	६ चं.	२।२७।२४।२४	२।२९।२५।१०	३। १।२५।५५	३। ३।२६।४३	३। ५।२८।५१	३। ७।३०।५
	७ मं.	३। ९।३३। ८	३।११।३५।१६	३।१३।३७।२५	३।१५।३९।३३	३।१७।४२।३७	३।१९।४६।३
	८ बु.	३।२१।५०।२९	३।२३।५४।२५	३।२५।५८।२१	३।२८। २।१७	४। ०। ६।१३	४। २।१२।३
	९ गु.	४। ४।१९। २	४। ६।२५।२४	४। ८।३१।४७	४।१०।३८।१०	४।१२।४४।३२	४।१४।५०।३
	१० शु.	४।१६।५९।१६	४।१९। ८।००	४।२१।१६।४३	४।२३।२५।२६	४।२५।३४।१०	४।२७।४४।
	११ श.	४।२९।५५।३०	५। २। ६।५४	५। ४।१८।१७	५। ६।२९।४१	५। ८।४१। ५	५।१०।५३।३
	१२ र.	५।१३। ७।३६	५।१५।२१।३७	५।१७।३५।३७	५।१९।४९।३७	५।२२। ३।३८	५।२४।१८।४
	१३ चं.	५।२६।३५।१०	५।२८।५१।३९	६। १। ८। ७	६। ३।२४।३६	६। ५।४१। ५	६। ७।५८।४
	१४ मं.	६।१०।१७। ८	६।१२।३५।३५	६।१४।५४। २	६।१७।१२।२९	६।१९।३०।५६	६।२१।५०।५४
	१५ बु.	६।२४।११।२०	६।२६।३१।४६	६।२८।५२।१२	७। १।१२।३८	७। ३।३३।१४	७। ५।५५।

रोपड़ (पंजाब) के स्पष्टार्कोदय से लेकर १०-१० घटी के अन्तर पर दैनिक स्पष्ट चन्द्र

(सं० २०१७)

मास	ति. वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
ज्येष्ठ कृष्णपक्ष	१ गु.	७। ८।१६।५६	७।१०।३८।४६	७।१३। ०।३७	७।१५।२२।२८	७।१७।४४।४५	७।२०। ७।३३
	२ शु.	७।२२।३०।२१	७।२४।५३। ९	७।२७।१५।५७	७।२९।३८।४५	८। २। २। ०	८। ४।२५।१७
	४ श.	८। ६।४८।३४	८। ९।११।५०	८।११।३५। ७	८।१३।५८।२५	८।१६।२१।३२	८।१८।४४।३९
	५ र.	८।२१। ७।४६	८।२३।३०।५३	८।२५।५४। ०	८।२८।१६।२७	९। ०।३८।५६	९। ३। १।२४
	६ चं.	९। ५।२३।५३	९। ७।४६।२१	९।१०। ८।५८	९।१२।३०।२४	९।१४।५१।४९	९।१७।१३।१५
	७ मं.	९।१९।३४।४०	९।२१।५६। ६	९।२४।१६।५०	९।२६।३६।३७	९।२८।५६।२४	१०। १।१६।१०
	८ बु.	१०। ३।३५।५७	१०। ५।५५।४४	१०। ८।१४। ५	१०।१०।३३।४७	१०।१२।४९।२९	१०।१५। ७।११
	९ गु.	१०।१७।२४।५३	१०।१९।४२।३५	१०।२१।५८।२४	१०।२४।१४। ०	१०।२६।२९।३५	१०।२८।४५।११
	१० शु.	११। १। ०।४६	११। ३।१६।२२	११। ५।२९।२४	११। ७।४२।२४	११। ९।५५।२४	११।१२। ८।२४
	११ श.	११।१४।२१।२४	११।१६।३४।२४	११।१८।४५। ०	११।२०।५५।२४	११।२३। ५।४८	११।२५।१६।१२
	१२ र.	११।२७।२६।३६	११।२९।३७। ०	०। १।४५। ६	०। ३।५२।४६	०। ६। ०।२६	०। ८। ८। ५
	१३ चं.	०।१०।१५।४५	०।१२।२३।२५	०।१४।२९।४४	०।१६।३५। २	०।१८।४०।१९	०।२०।४५।३७
	१४ मं.	०।२२।५०।५४	०।२४।५६।१२	०।२७। १। ८	०।२९। ४।१३	१। १। ७।१७	१। ३।१०।२२
	३० बु.	१। ५।१३।२६	१। ७।१६।३१	१। ९।१९।३५	१।११।२१।४०	१।१३।२३।१५	१।१५।२४।५०
ज्येष्ठ शुक्लपक्ष	१ गु.	१।१७।२६।२४	१।१९।२७।५९	१।२१।२९।३४	१।२३।३१। २	१।२५।३१।३१	१।२७।३२।
	२ शु.	१।२९।३२।२९	२। १।३२।५८	२। ३।३३।२७	२। ५।३३।५६	२। ७।३४।१४	२। ९।३४।२०
	३ श.	२।११।३४।२५	२।१३।३४।३१	२।१५।३४।३६	२।१७।३४।४२	२।१९।३४।४७	२।२१।३५।१०
	४ र.	२।२३।३५।४४	२।२५।३६।१५	२।२७।३६।४५	२।२९।३७।१६	३। १।३७।४७	३। ३।३८।२३
	५ चं.	३। ५।४०।२१	३। ७।४२।१२	३। ९।४४। ४	३।११।४५।५५	३।१३।४७।४७	३।१५।४९।३९
	६ मं.	३।१७।५२।२३	३।१९।५५।४९	३।२१।५९।१४	३।२४। २।४०	३।२६। ६। ५	३।२८। ९।३८
	७ बु.	४। ०।१३।११	४। २।१८।४८	४। ४।२४।२६	४। ६।३०। ३	४। ८।३५।४१	४।१०।४१।११
	८ गु.	४।१२।४६।५५	४।१४।५४।२२	४।१७। २।२८	४।१९।१०।३५	४।२१।१८।४१	४।२३।२६।४८
	९ शु.	४।२५।३४।५४	४।२७।४४।१६	४।२९।५५।१०	५। २। ६। ४	५। ४।१६।५८	५। ६।२७।५७
	१० श.	५। ८।३८।४६	५।१०।५०।४१	५।१३। ४। ६	५।१५।१७।३०	५।१७।३०।५५	५।१९।४४।१२
	११ र.	५।२१।५७।४४	५।२४।१२। ८	५।२६।२८। ९	५।२८।४४।१०	६। १। ०।११	६। ३।१६।१९
	१२ चं.	६। ५।३२।१३	६। ७।४९।१४	६।१०। ७।१३	६।१२।२५।१२	६।१४।४३।१०	६।१७। १। २
	१३ मं.	६।१९।१९। ८	६।२१।३८।३२	६।२३।५८।३८	६।२६।१८।४५	६।२८।३८।५१	७। ०।५८।५९
	१४ बु.	७। ३।१९। ३	७। ५।३९।५२	७। ८। १।३८	७।१०।२३।२४	७।१२।४५। ९	७।१५। ६।५७
	१५ गु.	७।१७।२९।५८	७।१९।५२।४२	७।२२।१५।२६	७।२४।३८। ९	७।२७। ०।५३	७।२९।२३।३५ ७
आषाढ़ कृष्णपक्ष	१ शु.	८। १।४६।४२	८। ४। ९।५१	८। ६।३३। ०	८। ८।५६। ९	८।११।१९।१८	८।१३।४२। ८
	२ श.	८।१६। ५।३०	८।१८।२८।५२	८।२०।५२।१५	८।२३।१५।३७	८।२५।३८।५९	८।२८। २। ७
	३ र.	९। ०।२४।४८	९। २।४७।३०	९। ५।१०।११	९। ७।३२।५२	९। ९।५५।३४	९।१२।१७।३०
	४ चं.	९।१४।३९।१३	९।१७। ०।५७	९।१९।२२।४०	९।२१।४४।२३	९।२४। ५।३४	९।२६।२५।४८
	५ मं.	९।२८।४६। १	१०। १। ६।१५	१०। ३।२६।२९	१०। ५।४६।४२	१०। ८। ५।३९	१०।१०।२३।४७
	७ बु.	१०।१२।४१।५५	१०।१५। ०। २	१०।१७।१८।१०	१०।१९।३६।१८	१०।२१।५२।४८	१०।२४। ९। १
	८ गु.	१०।२६।२५।१३	१०।२८।४१।२६	११। ०।५७।३८	११। ३।१३।५१	११। ५।२७।३६	११। ७।४१।१६
	९ शु.	११। ९।५४।५६	११।१२। ८।३६	११।१४।२२।१६	११।१६।३५।५६	११।१८।४७। ६	११।२०।५८। ९
	१० श.	११।२३। ९।११	११।२५।२०।१४	११।२७।३१।१६	११।२९।४२।१९	०। १।५१।१९	०। ३।५९।३८
	११ र.	०। ६। ७।५६	०। ८।१६।१५	०।१०।२४।३३	०।१२।३२।५२	०।१४।३९।१७	०।१६।४५। ८
	१२ चं.	०।१८।५०।५९	०।२०।५६।५०	०।२३। २।४१	०।२५। ८।३२	०।२७।१३।४५	०।२९।१७।१४
	१३ मं.	१। १।२०।४४	१। ३।२४।१३	१। ५।२७।४३	१। ७।३१।१२	१। ९।३४।४२	१।११।३६।५९
	१४ बु.	१।१३।३८।५८	१।१५।४०।५७	१।१७।४२।५६	१।१९।४४।५५	१।२१।४६।५४	१।२३।४८।३४
	१४ गु.	१।२५।४९।१६	१।२७।४९।५७	१।२९।५०।३९	२। १।५१।२०	२। ३।५२। २	२। ५।५२।४३
	३० शु.	२। ७।५३।४०	२। ९।५३।४९	२।११।५३।५८	२।१३।५४। ७	२।१५।५४।१६	२।१७।५४।२५

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रोपड़ (पंजाब) के स्पष्टार्कोदय से लेकर १०–१० घटी के अन्तर पर दैनिक स्पष्ट चन्द्र
(सं० २०१७)

मास	ति. वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
आषाढ़ शुक्लपक्ष	१ श.	२।१९।५४।३४	२।२१।५४।३०	२।२३।५५। १	२।२५।५५।३१	२।२७।५६। २	२।२९।५६।
	२ र.	३। १।५७। ३	३। ३।५७।५०	३। ५।५९।१५	३। ८। ०।४०	३।१०। २। ५	३।१२। ३।
	३ चं.	३।१४। ४।५५	३।१६। ६।२०	३।१८। ९।२४	३।२०।११।२९	३।२२।१५।३३	३।२४।१८।३
	४ मं.	३।२६।२१।४२	३।२८।२४।४६	४। ०।२७।५९	४। २।३३।१५	४। ४।३८।३०	४। ६।४३।४
	५ बु.	४। ८।४९। १	४।१०।५४।१७	४।१२।५९।३३	४।१५। ६।४८	४।१७।१४।२१	४।१९।२१।५
	६ गु.	४।२१।२९।२९	४।२३।३७। २	४।२५।४४।३६	४।२७।५३।३४	५। ०। ३।४५	५। २।१३।५
	७ शु.	५। ४।२४। ८	५। ६।३४।१९	५। ८।४४।३१	५।१०।५५।४३	५।१३। ८।३९	५।१५।२१।३
	८ श.	५।१७।३४।३०	५।१९।४७।२५	५।२२। ०।२१	५।२४।१४।२३	५।२६।२९।४७	५।२८।४५।१
	९ र.	६। १। ०।३५	६। ३।१५।५९	६। ५।३३।२३	६। ७।४७।५४	६।१०। ५।३३	६।१२।२३।१
	१० चं.	६।१४।४०।५१	६।१६।५८।३०	६।१९।१६। ९	६।२१।३५।१६	६।२३।५५। ०	६।२६।१४।४
	११ मं.	६।२८।३४।२९	७। ०।५४।१३	७। ३।१३।५८	७। ५।३५।१८	७। ७।५६।४१	७।१०।१८।
	१२ बु.	७।१२।३९।२७	७।१५। ०।५०	७।१७।२२।३२	७।१९।४५। ६	७।२२। ७।३९	७।२४।३०।१
	१३ गु.	७।२६।५२।४६	७।२९।१५।२०	८। १।३८।१६	८। ४। १।२३	८। ६।२४।३०	८। ८।४७।३
	१५ शु.	८।११।१०।४४	८।१३।३३।५२	८।१५।५७।१७	८।१८।२०।४२	८।२०।४४। ६	८।२३। ७।३
श्रावण कृष्णपक्ष	१ श.	८।२५।३०।५६	८।२७।५४। ६	९। ०।१७। ३	९। २।३९।५९	९। ५। २।५६	९। ७।२५।५३
	२ र.	९। ९।४८।४९	९।१२।१०।५४	९।१४।३२।५७	९।१६।५५। ०	९।१९।१७। ३	९।२१।३९। ६
	३ चं.	९।२४। ०।४६	९।२६।२२।२२	९।२८।४१।५८	१०। १। २।३३	१०। ३।२३। ९	१०। ५।४३।४५
	४ मं.	१०। ८। ३।३४	१०।१०।२२।१३	१०।१२।४०।५२	१०।१४।५९।३०	१०।१७।१८। ९	१०।१९।३६।४८
	५ बु.	१०।२१।५२। ६	१०।२४। ८।५१	१०।२६।२५।३६	१०।२८।४२।२१	११। ०।५९। ६	११। ३।१५।५१
	६ गु.	११। ५।३१।४२	११। ७।४६। ३	११।१०। ०।२३	११।१२।१४।४४	११।१४।२९। ४	११।१६।४३।२१
	७ शु.	११।१८।५४।५६	११।२१। ६।३०	११।२३।१८। ५	११।२५।२९।३९	११।२७।४१।१४	११।२९।५२।४८
	८ श.	०। २। १।५४	०। ४।१०।५४	०। ६।१९।५४	०। ८।२८।५३	०।१०।३७।५३	०।१२।४६।५२
	९ र.	०।१४।५३।५३	०।१७। ०।१२	०।१९। ६।३१	०।२१।१२।५०	०।२३।१९। ९	०।२५।२५।२८
	१० चं.	०।२७।३०।५४	०।२९।३५। ३	१। १।३९।१३	१। ३।४३।२२	१। ५।४७।३२	१। ७।५१।४१
	११ मं.	१। ९।५५।५१	१।११।५८। ६	१।१४। ०।२०	१।१६। २।३४	१।१८। ४।४७	१।२०। ७। १
	१२ बु.	१।२२। ९।१५	१।२४।११। १	१।२६।१२। १	१।२८।१३। १	२। ०।१४। १	२। २।१५। १
	१३ गु.	२। ४।१६। १	२। ६।१७। १	२। ८।१७।२३	२।१०।१७।३७	२।१२।१७।५२	२।१४।१८। ६
	१४ शु.	२।१६।१८।२१	२।१८।१८।३६	२।२०।१८।५२	२।२२।१९।१५	२।२४।१९।३९	२।२६।२०। २
	३० श.	२।२८।२०।२६	३। ०।२०।४९	३। २।२१।१३	३। ४।२१।५८	३। ६।२३। ५	३। ८।२४।१२
श्रावण शुक्लपक्ष	१ र.	३।१०।२५।१९	३।१२।२६।२६	३।१४।२७।३३	३।१६।२८।४०	३।१८।३३।१८	३।२०।३४। ०
	२ चं.	३।२२।३६।४२	३।२४।३९।२४	३।२६।४२। ६	३।२८।४४।४८	४। ०।४८।२३	४। २।५३।२८
	३ मं.	४। ४।५८।३३	४। ७। ३।३८	४। ९। ८।४३	४।११।१३।४८	४।१३।१८।५३	४।१५।२५।३६
	४ बु.	४।१७।३२।१५	४।१९।३८।५४	४।२१।४५।३३	४।२३।५२।१२	४।२५।५८।५१	४।२८। ७।३२
	५ गु.	५। ०।१७।११	५। २।२६।५१	५। ४।३६।३०	५। ६।४६।१०	५। ८।५५।५०	५।११। ६।४७
	६ शु.	५।१३।१९। ४	५।१५।३१।२१	५।१७।४३।३७	५।१९।५५।५४	५।२२। ८।११	५।२४।२१।३७
	७ श.	५।२६।३६।३१	५।२८।५१।२६	६। १। ६।२०	६। ३।२१।१५	६। ५।३६। ९	६। ७।५२।१२
	८ र.	६।१०। ९।५१	६।१२।२७।३१	६।१४।४५।१०	६।१७। २।५०	६।१९।२०।२९	६।२१।३७।१४
	९ चं.	६।२३।५६।२९	६।२६।१५।४४	६।२८।३४।५९	७। ०।५४।१४	७। ३।१३।२९	७। ५।३४।३०
	१० मं.	७। ७।५५।३५	७।१०।१६।४१	७।१२।३७।४६	७।१४।५८।५२	७।१७।२०।२०	७।१९।४२।४१
	११ बु.	७।२२। ५। २	७।२४।२७।३३	७।२६।४९।४४	७।२९।१२। ५	८। १।३४।५६	८। ३।५८। ०
	१२ गु.	८। ६।२१। ४	८। ८।४४। ९	८।११। ७।१३	८।१३।३०।१७	८।१५।५३।४७	८।१८।१७।१७
	१३ शु.	८।२०।४०।४६	८।२३। ४।१६	८।२५।२७।४६	८।२७।५१। ५	९। ०।१४।१२	९। २।३७।१९
	१४ श.	९। ५। ०।२६	९। ७।२३।३३	९। ९।४६।४०	९।१२। ९। ०	९।१४।३३।१८	९।१६।५३।३७
	१५ र.	९।१९।१५।५५	९।२१।३८।१४	९।२४। ०।११	९।२६।२१। ९	९।२८।४२। ७	१०। १। ३। ५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

रोपड़ (पंजाब) के स्पष्टार्कोदय से लेकर १०—१० घटी के अन्तर पर दैनिक स्पष्ट चन्द्र
(सं० २०१७)

मास	ति. वा,	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
भाद्रपद कृष्णपक्ष	१ चं.	१०। ३।२४। ३	१०। ५।४५। १	१०। ८। ५। ०	१०।१०।२४।२०	१०।१२।४३।४०	१०।१५। ३। [illegible]
	३ मं.	१०।१७।२२।२०	१०।१९।४१।४०	१०।२१।५९। ६	१०।२४।१६।१७	१०।२६।३३।२८	१०।२८।५०।३[illegible]
	४ बु.	११। १। ७।५०	११। ३।२४।५७	११। ५।३९।५६	११। ७।५४।५५	११।१०। ९।५४	११।१२।२४।५[illegible]
	५ गु.	११।१४।३९।५२	११।१६।५४।३२	११।१९। ६।४३	११।२१।१८।५५	११।२३।३१। ६	११।२५।४३।१[illegible]
	६ शु.	११।२७।५५।२९	०। ०। ७।३४	०। २।१७।११	०। ४।२६।४९	०। ६।३६।२६	०। ८।४६। [illegible]
	७ श.	०।१०।५५।४१	०।१३। ५।१९	०।१५। ९।५४	०।१७।१६।५१	०।१९।२३।४८	०।२१।३०।४[illegible]
	८ र.	०।२३।३७।४२	०।२५।४४।३९	०।२७।५२।५९	०।२९।५७।४३	१। २। २।२८	१। ४। ७।[illegible]
	९ चं.	१। ६।११।५७	१। ८।१६।४१	१।१०।२१। ४	१।१२।२३।४४	१।१४।२६।२४	१।१६।२९। [illegible]
	१० मं.	१।१८।३१।४४	१।२०।३४।२४	१।२२।३७। ४	१।२४।३८।५९	१।२६।४०।२१	१।२८।४१।४[illegible]
	११ बु.	२। ०।४३। ५	२। २।४४।२७	२। ४।४५।४९	२। ६।४७। ०	२। ८।४७।१६	२।१०।४७।३[illegible]
	११ गु.	२।१२।४७।४८	२।१४।४८। ५	२।१६।४८।२१	२।१८।४८।३५	२।२०।४९। ६	२।२२।४९।२[illegible]
	१२ शु.	२।२४।४९।३५	२।२६।४९।४९	२।२८।५०। ४	३। ०।५०।१८	३। २।५०।३३	३। ४।५१।२[illegible]
	१३ श.	३। ६।५२।२४	३। ८।५३।२६	३।१०।५४।२७	३।१२।५५।२९	३।१४।५६।३१	३।१६।५७।३[illegible]
	१४ र.	३।१८।५९।५५	३।२१। २।१३	३।२३। ४।३०	३।२५। ६।४८	३।२७। ९। ५	३।२९।११।२[illegible]
	३० चं.	४। १।१४।५३	४। ३।१९। ८	४। ५।२३।२३	४। ७।२७।३९	४। ९।३१।५४	४।११।३६।[illegible]
भाद्रपद शुक्लपक्ष	१ मं.	४।१३।४०।५१	४।१५।४७।१६	४।१७।५३।४१	४।२०। ०। ६	४।२२। ६।३१	४।२४।१२।५[illegible]
	२ बु.	४।२६।१९।२१	४।२८।२८। ०	५। ०।३७। २	५। २।४६। ४	५। ४।५५। ६	५। ७। ४। [illegible]
	३ गु.	५। ९।१३।१०	५।११।२३।५३	५।१३।३५।३८	५।१५।४७।२४	५।१७।५९। ९	५।२०।१०।५[illegible]
	४ शु.	५।२२।२२।४०	५।२४।३५।५३	५।२६।५०।११	५।२९। ४।२९	६। १।१८।४८	६। ३।३३। [illegible]
	५ श.	६। ५।४७।२४	६। ८। १।२०	६।१०।१८। ७	६।१२।३४।५४	६।१४।५१।४२	६।१७। ८।२[illegible]
	६ र.	६।१९।२५।१६	६।२१।४५।२४	६।२४। ४। ७	६।२६।२२।५१	६।२८।४१।३४	७। १। ०।१[illegible]
	७ चं.	७। ३।१९। १	७। ५।३९।५४	७। ८। ०।४५	७।१०।२१।३६	७।१२।४२।२६	७।१५। ३।१[illegible]
	८ मं.	७।१७।२४।३१	७।१९।४६।३४	७।२२। ८।३८	७।२४।३०।४१	७।२६।५२।४४	७।२९।१४।४[illegible]
	९ बु.	८। १।३७।२४	८। ४। ०।१८	८। ६।२३।१२	८। ८।४६। ६	८।११। ९। ०	८।१३।३३।५[illegible]
	११ गु.	८।१५।५५।३१	८।१८।१९। ४	८।२०।४२।३७	८।२३। ६।११	८।२५।२९।४४	८।२७।५३।१[illegible]
	१२ शु.	९। ०।१६।२८	९। २।३९।४१	९। ५। २।५३	९। ७।२६। ६	९। ९।४९।१८	९।१२।११।५[illegible]
	१३ श.	९।१४।३४।३३	९।१६।५७।१२	९।१९।१९।५०	९।२१।४२।२९	९।२४। ४।४७	९।२६।२६।१[illegible]
	१४ र.	९।२८।४७।३८	१०। १। ९। ३	१०। ३।३०।२९	१०। ५।५१।५४	१०। ८।१२।१७	१०।१०।३३। [illegible]
	१५ चं.	१०।१२।५१।५५	१०।१५।११।४४	१०।१७।३३।३३	१०।१९।५१।२२	१०।२२। ९। ६	१०।२४।२६।४५
आश्विन कृष्णपक्ष	१ मं.	१०।२६।४४।२४	१०।२९। ९। ४	११। १।१९।४३	११। ३।३७।११	११। ५।५२।४६	११। ८। ८।२१
	२ बु.	११।१०।२३। ०	११।१२।३२।३२	११।१४।५५। ७	११।१७।१०।१८	११।१९।२३।१६	११।२१।३६।१४
	३ गु.	११।२३।४९।११	११।२६। ८। ८	११।२८।१५। ५	०। ०।२७।२२	०। २।३७।३९	०। ४।४७।५७
	४ शु.	०। ६।५८।१४	०। ९। ९।३२	०।११।१८।४९	०।१३।२८।५६	०।१५।३६।३३	०।१७।४४।११
	५ श.	०।१९।५१।४८	०।२१।५।२५	०।२४। ७। २	०।२६।१४।३९	०।२८।२०।२४	१। ०।२५।४२
	६ र.	१। २।३०।५९	१। ४।३६।१६	१। ६।४१।३३	१। ८।४६।५१	१।१०।५१।१७	१।१२।५४।२१
	७ चं.	१।१४।५७।२५	१।१७। ०।३०	१।१९। ३।३४	१।२१। ६।३८	१।२३। ९।४३	१।२५।११।२४
	८ मं.	१।२७।१२।५६	१।२९।१४।२८	२। १।१६। ०	२। ३।१७।३२	२। ५।१९। ४	२। ७।२०।२३
	९ बु.	२। ९।२०।५७	२।११।२१।३१	२।१३।२२। ६	२।१५।२२।४०	२।१७।२३।१५	२।१९।२३।५०
	१० गु.	२।२१।२४।१०	२।२३।२४।२४	२।२५।२४।३९	२।२७।२४।५३	२।२९।२५। ८	३। १।२५।२२
	११ शु.	३। ३।२५।३८	३। ५।२६।२३	३। ७।२७। ९	३। ९।२७।५४	३।११।२८।४०	३।१३।२९।२
	१२ श.	३।१५।३०।११	३।१७।३१।३९	३।१९।३३।४०	३।२१।३५।४१	३।२३।३७।४२	३।२५।३९'
	१३ र.	३।२७।४१।४४	३।२९।४३।४५	४। १।४७।१८	४। ३।५१। ३	४। ५।५४।४८	४। ७।५
	१४ चं.	४।१०। २।१७	४।१२। ६। १	४।१४।१०।३५	४।१६।१६।२८	४।१८।२२।२१	४।२०।६
	३० मं.	४।२२।३४। ७	४।२४।४०। ०	४।२६।४६। ०	४।२८।५४।२७	५। १। २।५४	५। ?

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रोपड़ (पंजाब) के स्पष्टार्कोदय से लेकर १०–१० घटी के अन्तर पर दैनिक स्पष्ट चन्द्र

(सं० २०१७)

मास	ति. वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५[illegible]
आषाढ़ शुक्लपक्ष	१ श.	२।१९।५४।३४	२।२१।५४।३०	२।२३।५५। १	२।२५।५५।३१	२।२७।५६। २	२।२९।५६।[illegible]
	२ र.	३। १।५७। ३	३। ३।५७।५०	३। ५।५९।१५	३। ८। ०।४०	३।१०। २। ५	३।१२। ३।[illegible]
	३ चं.	३।१४। ४।५५	३।१६। ६।२०	३।१८। ९।२४	३।२०।१२।२९	३।२२।१५।३३	३।२४।१८।[illegible]
	४ मं.	३।२६।२२।४२	३।२८।२४।४६	४। ०।२७।५९	४। २।३३।१५	४। ४।३८।३०	४। ६।४३।[illegible]
	५ बु.	४। ८।४९। १	४।१०।५४।१७	४।१२।५९।३३	४।१५। ६।४८	४।१७।१४।२१	४।१९।२१।[illegible]
	६ गु.	४।२१।२९।२९	४।२३।३७। २	४।२५।४४।३६	४।२७।५३।३४	५। ०। ३।४५	५। २।१३।[illegible]
	७ शु.	५। ४।२४। ८	५। ६।३४।१९	५। ८।४४।३१	५।१०।५५।४३	५।१३। ८।३९	५।१५।२२।[illegible]
	८ श.	५।१७।३४।३०	५।१९।४७।२५	५।२२। ०।२१	५।२४।१४।२३	५।२६।२९।४७	५।२८।४५।[illegible]
	९ र.	६। १। ०।३५	६। ३।१५।५९	६। ५।३१।२३	६। ७।४७।५४	६।१०। ५।३३	६।१२।२३।[illegible]
	१० चं.	६।१४।४०।५१	६।१६।५८।३०	६।१९।१६। ९	६।२१।३५।१६	६।२३।५५। ०	६।२६।१४।[illegible]
	११ मं.	६।२८।३४।२९	७। ०।५४।१३	७। ३।१३।५८	७। ५।३५।१८	७। ७।५६।४१	७।१०।१८।[illegible]
	१२ बु.	७।१२।३९।२७	७।१५। ०।५०	७।१७।२२।३२	७।१९।४५। ६	७।२२। ७।३९	७।२४।३०।[illegible]
	१३ गु.	७।२६।५२।४६	७।२९।१५।२०	८। १।३८।१६	८। ४। १।२३	८। ६।२४।३०	८। ८।४७।[illegible]
	१५ शु.	८।११।१०।४४	८।१३।३३।५२	८।१५।५७।१७	८।१८।२०।४२	८।२०।४४। ६	८।२३। ७।[illegible]
श्रावण कृष्णपक्ष	१ श.	८।२५।३०।५६	८।२७।५४। ६	९। ०।१७। ३	९। २।३९।५९	९। ५। २।५६	९। ७।२५।५३
	२ र.	९। ९।४८।४९	९।१२।१०।५४	९।१४।३२।५७	९।१६।५५। ०	९।१९।१७। ३	९।२१।३९। ६
	३ चं.	९।२४। ०।४६	९।२६।२२।२२	९।२८।४४।५८	१०। १। २।३३	१०। ३।२३। ९	१०। ५।४३।४५
	४ मं.	१०। ८। ३।३४	१०।१०।२२।१३	१०।१२।४०।५२	१०।१४।५९।३०	१०।१७।१८। ९	१०।१९।३६।४८
	५ बु.	१०।२२।५२। ६	१०।२४। ८।५१	१०।२६।२५।३६	१०।२८।४२।२१	११। ०।५९। ६	११। ३।१५।५१
	६ गु.	११। ५।३३।४२	११। ७।४६। ३	११।१०। ०।२३	११।१२।१४।४४	११।१४।२९। ४	११।१६।४३।२१
	७ शु.	११।१८।५४।५६	११।२१। ६।३०	११।२३।१८। ५	११।२५।२९।३९	११।२७।४१।१४	११।२९।५२।४८
	८ श.	०। २। १।५४	०। ४।१०।५४	०। ६।१९।५४	०। ८।२८।५३	०।१०।३७।५३	०।१२।४६।५२
	९ र.	०।१४।५३।५३	०।१७। ०।१२	०।१९। ६।३१	०।२१।१२।५०	०।२३।१९। ९	०।२५।२५।२८
	१० चं.	०।२७।३०।५४	०।२९।३५। ३	१। १।३९।१३	१। ३।४३।२२	१। ५।४७।३२	१। ७।५१।४१
	११ मं.	१। ९।५५।५१	१।११।५८। ६	१।१४। ०।२०	१।१६। २।३४	१।१८। ४।४७	१।२०। ७। १
	१२ बु.	१।२२। ९।१५	१।२४।११। १	१।२६।१२। १	१।२८।१३। १	२। ०।१४। १	२। २।१५। १
	१३ गु.	२। ४।१६। १	२। ६।१७। १	२। ८।१७।२३	२।१०।१७।३७	२।१२।१७।५२	२।१४।१८। ६
	१४ शु.	२।१६।१८।११	२।१८।१८।३६	२।२०।१८।५२	२।२२।१९।१५	२।२४।१९।३९	२।२६।२०। २
	३० श.	२।२८।२०।२६	३। ०।२०।४९	३। २।२१।१३	३। ४।२१।५८	३। ६।२३। ५	३। ८।२४।१२
श्रावण शुक्लपक्ष	१ र.	३।१०।२५।१९	३।१२।२६।२६	३।१४।२७।३३	३।१६।२८।४०	३।१८।३१।१८	३।२०।३४। ०
	२ चं.	३।२२।३६।४२	३।२४।३९।२४	३।२६।४२। ६	३।२८।४४।४८	४। ०।४८।२३	४। २।५३।२८
	३ मं.	४। ४।५८।३३	४। ७। ३।३८	४। ९। ८।४३	४।११।१३।४८	४।१३।१८।५३	४।१५।२५।३६
	४ बु.	४।१७।३२।१५	४।१९।३८।५४	४।२१।४५।३३	४।२३।५२।१२	४।२५।५८।५१	४।२८। ७।३२
	५ गु.	५। ०।१७।११	५। २।२६।५१	५। ४।३६।३०	५। ६।४६।१०	५। ८।५५।५०	५।११। ६।४७
	६ शु.	५।१३।१९। ४	५।१५।३१।२१	५।१७।४३।३७	५।१९।५५।५४	५।२२। ८।११	५।२४।२२।३७
	७ श.	५।२६।३६।३१	५।२८।५१।२६	६। १। ६।२०	६। ३।२२।१५	६। ५।३६। ९	६। ७।५२।१२
	८ र.	६।१०। ९।५१	६।१२।२७।३१	६।१४।४५।१०	६।१७। २।५०	६।१९।२०।२९	६।२१।३७।१४
	९ चं.	६।२३।५६।२९	६।२६।१५।४४	६।२८।३४।५९	७। ०।५४।१४	७। ३।१३।२९	७। ५।३४।३०
	१० मं.	७। ७।५५।३५	७।१०।१६।४१	७।१२।३७।४६	७।१४।५८।५२	७।१७।२०।२०	७।१९।४२।४१
	११ बु.	७।२२। ५। २	७।२४।२७।३३	७।२६।४९।४४	७।२९।१२। ५	८। १।३४।५६	८। ३।५८। ०
	१२ गु.	८। ६।२१। ४	८। ८।४४। ९	८।११। ७।१३	८।१३।३०।१७	८।१५।५३।४७	८।१८।१७।१७
	१३ शु.	८।२०।४०।४६	८।२३। ४।१६	८।२५।२७।४६	८।२७।५१। ५	९। ०।१४।२२	९। २।३७।१९
	१४ श.	९। ५। ०।२६	९। ७।२३।३३	९। ९।४६।४०	९।१२। ९। ०	९।१४।३१।१८	९।१६।५३।३७
	१५ र.	९।१९।१५।५५	९।२१।३८।१४	९।२४। ०।११	९।२६।२१। ९	९।२८।४२। ७	१०। १। ३। ५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रोपड़ (पंजाब) के स्पष्टार्कोदय से लेकर १०–१० घटी के अन्तर पर दैनिक स्पष्ट चन्द्र

(सं० २०१७)

मास	ति. वा,	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
भाद्रपद कृष्णपक्ष	१ चं.	१०। ३।२४। ३	१०। ५।४५। १	१०। ८। ५। ०	१०।१०।२४।२०	१०।१२।४३।४०	१०।१५। ३। ०
	३ मं.	१०।१७।२२।२०	१०।१९।४१।४०	१०।२१।५९। ६	१०।२४।१६।१७	१०।२६।३३।२८	१०।२८।५०।३९
	४ बु.	११। १। ७।५०	११। ३।२४।५७	११। ५।३९।५६	११। ७।५४।५५	११।१०। ९।५४	११।१२।२४।५३
	५ गु.	११।१४।३९।५२	११।१६।५४।३२	११।१९। ६।४३	११।२१।१८।५५	११।२३।३१। ६	११।२५।४३।१८
	६ शु.	११।२७।५५।२९	०। ०। ७।३४	०। २।१७।११	०। ४।२६।४९	०। ६।३६।२६	०। ८।४६। ३
	७ श.	०।१०।५५।४१	०।१३। ५।१९	०।१५। ९।५४	०।१७।१६।५१	०।१९।२३।४८	०।२१।३०।४५
	८ र.	०।२३।३७।४२	०।२५।४४।३९	०।२७।५२।५९	०।२९।५७।४३	१। २। २।२८	१। ४। ७।१३
	९ चं.	१। ६।११।५७	१। ८।१६।४१	१।१०।२१। ४	१।१२।२३।४४	१।१४।२६।२४	१।१६।२९। ४
	१० मं.	१।१८।३१।४४	१।२०।३४।२४	१।२२।३७। ४	१।२४।३८।५९	१।२६।४०।२१	१।२८।४१।४३
	११ बु.	२। ०।४३। ५	२। २।४४।२७	२। ४।४५।४९	२। ६।४७। ०	२। ८।४७।१६	२।१०।४७।३२
	११ गु.	२।१२।४७।४८	२।१४।४८। ५	२।१६।४८।२१	२।१८।४८।३५	२।२०।४९। ६	२।२२।४९।२
	१२ शु.	२।२४।४९।३५	२।२६।४९।४९	२।२८।५०। ४	३। ०।५०।१८	३। २।५०।३३	३। ४।५१।२
	१३ श.	३। ६।५२।२४	३। ८।५३।२६	३।१०।५४।२७	३।१२।५५।२९	३।१४।५६।३१	३।१६।५७।३
	१४ र.	३।१८।५९।५५	३।२१। २।१३	३।२३। ४।३०	३।२५। ६।४८	३।२७। ९। ५	३।२९।११।२
	३० चं.	४। १।१४।५३	४। ३।१९। ८	४। ५।२३।२३	४। ७।२७।३९	४। ९।३१।५४	४।११।३६।
भाद्रपद शुक्लपक्ष	१ मं.	४।१३।४०।५१	४।१५।४७।१६	४।१७।५३।४१	४।२०। ०। ६	४।२२। ६।३१	४।२४।१२।५
	२ बु.	४।२६।१९।२१	४।२८।२८। ०	५। ०।३७। २	५। २।४६। ४	५। ४।५५। ६	५। ७। ४।
	३ गु.	५। ९।१३।१०	५।११।२३।५३	५।१३।३५।३८	५।१५।४७।२४	५।१७।५९। ९	५।२०।१०।५
	४ शु.	५।२२।२२।४०	५।२४।३५।५३	५।२६।५०।११	५।२९। ४।२९	६। १।१८।४८	६। ३।३३।
	५ श.	६। ५।४७।२४	६। ८। १।२०	६।१०।१८। ७	६।१२।३४।५४	६।१४।५१।४२	६।१७। ८।२
	६ र.	६।१९।२५।१६	६।२१।४५।२४	६।२४। ४। ७	६।२६।२२।५१	६।२८।४१।३४	७। १। ०।१
	७ चं.	७। ३।१९। १	७। ५।३९।५४	७। ८। ०।४५	७।१०।२१।३६	७।१२।४२।२६	७।१५। ३।१
	८ मं.	७।१७।२४।३१	७।१९।४६।३४	७।२२। ८।३८	७।२४।३०।४१	७।२६।५२।४४	७।२९।१४।४
	९ बु.	८। १।३७।२४	८। ४। ०।१८	८। ६।२३।१२	८। ८।४६। ६	८।११। ९। ०	८।१३।३१।५
	११ गु.	८।१५।५५।३१	८।१८।१९। ४	८।२०।४२।३७	८।२३। ६।११	८।२५।२९।४४	८।२७।५३।१
	१२ शु.	९। ०।१६।२८	९। २।३९।४१	९। ५। २।५३	९। ७।२६। ६	९। ९।४९।१८	९।१२।१२।५
	१३ श.	९।१४।३४।३३	९।१६।५७।१२	९।१९।१९।५०	९।२१।४२।२९	९।२४। ४।४७	९।२६।२६।१
	१४ र.	९।२८।४७।३८	१०। १। ९। ३	१०। ३।३०।२९	१०। ५।५१।५४	१०। ८।१२।१७	१०।१०।३२।
	१५ चं.	१०।१२।५२।५५	१०।१५।११।४४	१०।१७।३१।३३	१०।१९।५१।२२	१०।२२। ९। ६	१०।२४।२६।४५
आश्विन कृष्णपक्ष	१ मं.	१०।२६।४४।२४	१०।२९। ९। ४	११। १।१९।४३	११। ३।३७।११	११। ५।५२।४६	११। ८। ८।२१
	२ बु.	११।१०।२३। ०	११।१२।३२।३२	११।१४।५५। ७	११।१७।१०।१८	११।१९।२३।१६	११।२१।३६।१४
	३ गु.	११।२३।४९।११	११।२६। ८। ८	११।२८।१५। ५	०। ०।२७।२२	०। २।३७।३९	०। ४।४७।५७
	४ शु.	०। ६।५८।१४	०। ९। ९।३२	०।११।१८।४९	०।१३।२८।५६	०।१५।३६।३३	०।१७।४४।११
	५ श.	०।१९।५१।४८	०।२२।१५।२५	०।२४। ७। २	०।२६।१४।३९	०।२८।२०।२४	१। ०।२५।४२
	६ र.	१। २।३०।५९	१। ४।३६।१६	१। ६।४१।३३	१। ८।४६।५१	१।१०।५१।१७	१।१२।५४।२१
	७ चं.	१।१४।५७।२५	१।१७। ०।३०	१।१९। ३।३४	१।२१। ६।३८	१।२३। ९।४३	१।२५।११।२४
	८ मं.	१।२७।१२।५६	१।२९।१४।२८	२। १।१६। ०	२। ३।१७।३२	२। ५।१९। ४	२। ७।२०।२३
	९ बु.	२। ९।२०।५७	२।११।२१।३१	२।१३।२२। ६	२।१५।२२।४०	२।१७।२३।१५	२।१९।२३।५०
	१० गु.	२।२१।२४।१०	२।२३।२४।२४	२।२५।२४।३९	२।२७।२४।५३	२।२९।२५। ८	३। १।२५।२२
	११ शु.	३। ३।२५।३८	३। ५।२६।२३	३। ७।२७। ९	३। ९।२७।५४	३।११।२८।४०	३।१३।२९।२
	१२ श.	३।१५।३०।११	३।१७।३१।३९	३।१९।३३।४०	३।२१।३५।४१	३।२३।३७।४२	३।२५।३९।४३
	१३ र.	३।२७।४१।४४	३।२९।४३।४५	४। १।४७।१८	४। ३।५१। ३	४। ५।५४।४८	४। ७।५८।३३
	१४ चं.	४।१०। २।१७	४।१२। ६। १	४।१४।१०।३५	४।१६।१६।२८	४।१८।२२।२१	४।२०।२८।१४
	३० मं.	४।२२।३४। ७	४।२४।४०। ०	४।२६।४६। ०	४।२८।५४।२७	५। १। २।५४	५। ३।११।२०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रोपड़ (पंजाब) के स्पष्टार्कोदय से लेकर १०-१० घटी के अन्तर पर दैनिक स्पष्ट चन्द्र

(सं० २०१७)

मास	ति. वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
आश्विन शुक्लपक्ष	१ बु.	५। ५।१९।४७	५। ७।२८।१३	५। ९।३६।४०	५।११।४७।२४	५।१३।५८।३५	५।१६।१।१४ [illegible]
	२ गु.	५।१८।२०।५७	५।२०।३२।८	५।२२।४३।१९	५।२४।५६।१७	५।२७।१०।२	५।२९।२३।४ [illegible]
	३ शु.	६। १।३७।३१	६। ३।५१।१५	६। ६। ५। ०	६। ८।२०।४२	६।१०।३७।१	६।१२।५३।[illegible]
	४ श.	६।१५। ९।४०	६।१७।२५।५९	६।१९।४२।१९	६।२२। ०।१२	६।२४।१८।२२	६।२६।३६।३ [illegible]
	५ र.	६।२८।५४।४३	७। १।१२।५३	७। ३।३१।१४	७। ५।५१।४२	७। ८।१२।११	७।१०।३२।३ [illegible]
	६ चं.	७।१२।५३। ८	७।१५।१३।३६	७।१७।३४।३४	७।१९।५६।१७	७।२२।१८। १	७।२४।३९।४ [illegible]
	७ मं.	७।२७। १।२७	७।२९।२३।१०	८। १।४५।४२	८। ४। ८।३१	८। ६।३३।२०	८। ८।५४।[illegible]
	८ बु.	८।११।१६।५८	८।१३।३९।५०	८।१६। ३। ७	८।१८।२६।२४	८।२०।४९।४०	८।२३।१२।५ [illegible]
	९ गु.	८।२५।३६।१४	८।२७।५९।३५	९। ०।२२।५७	९। २।४६।२९	९। ५।१०। २	९। ७।३३।३ [illegible]
	१० शु.	९। ९।५७। ७	९।१२।२१।४२	९।१४।४४।३३	९।१७। ७।२४	९।१९।३०।१६	९।२१।५३। ८
	११ श.	९।२४।१३। ८	९।२६।३४।४९	९।२८।५६।२९	१०। १।१८।१०	१०। ३।३३।५०	१०। ६। १।३०
	१२ र.	१०। ८।२०। ०	१०।१०।४०।३६	१०।१३। १।१२	१०।१५।२१।४७	१०।१७।४२।२३	१०।२०।२५ [illegible]
	१४ चं.	१०।२२।२१। ४	१०।२४।३९। ९	१०।२६।५७।१५	१०।२९।१५।२०	११। १।३३।२५	११। ३।५१। ६
	१५ मं.	११। ६। ७।१६	११। ८।२३।२६	११।१०।३९।३७	११।१२।५५।४७	११।१५।११।५७	११।१७।२७।११
कार्तिक कृष्णपक्ष	१ बु.	११।१९।४०।४४	११।२१।५४।१७	११।२४। ७।५१	११।२६।२२।२४	११।२८।३४।५८	०। ०।४७।३६
	२ गु.	०। २।५८।३६	०। ५। ९।३६	०। ७।२०।३६	०। ९।३१।३६	०।११।४२।३६	०।१३।५२।५६
	३ शु.	०।१६। १।१२	०।१८। ९।२८	०।२०।१७।४५	०।२२।२६। १	०।२४।३४।१७	०।२६।४२।३१
	४ श.	०।२८।४८।१४	१। ०।५३।५७	१। २।५९।४१	१। ५। ५।२४	१। ७।११। ७	१। ९।१६।५०
	५ र.	१।११।२१।११	१।१३।२४।४८	१।१५।२८।२५	१।१७।३२। २	१।१९।३५।३९	१।२१।३९।१६
	६ चं.	१।२३।४२।३३	१।२५।४४।२६	१।२७।४६।२०	१।२९।४८।१३	२। १।५०। ७	२। ३।५२। ०
	६ मं.	२। ५।५३।५४	२। ७।५५। २	२। ९।५५।४५	२।११।५६।२९	२।१३।५७।१२	२।१५।५७।५५
	७ बु.	२।१७।५८।३९	२।१९।५९।२२	२।२१।५९।३६	२।२३।५९।५०	२।२६। ०। ५	२।२८। ०।१९
	८ गु.	३। ०। ०।३४	३। २। ०।४९	३। ४। १।११	३। ६। १।४३	३। ८। २।१६	३।१०। २।४८
	९ शु.	३।१२। ३।२१	३।१४। ३।५५	३।१६। ४।२७	३।१८। ५।४३	३।२०। ७।१९	३।२२। ८।५५
	१० श.	३।२४।१०।३१	३।२६।१२। ७	३।२८।१३।४३	४। ०।१५।३८	४। २।१८।५४	४। ४।२२।११
	११ र.	४। ६।२५।२७	४। ८।२८।४४	४।१०।३२। ०	४।१२।३५।१७	४।१४।३९।५०	४।१६।४५।१३
	१२ चं.	४।१८।५०।३६	४।२०।५५।५९	४।२३। १।२२	४।२५। ६।४५	४।२७।१२।४७	४।२९।२०।३०
	१३ मं.	५। १।२८।१४	५। ३।३५।५७	५। ५।४३।४१	५। ७।५१।२४	५। ९।५९। ७	५।१२। ९।३६
	१४ बु.	५।१४।२०। २	५।१६।३०।२८	५।१८।४०।५४	५।२०।५१।२०	५।२३। १।४६	५।२५।१४।३०
	३० गु.	५।२७।२७।३४	५।२९।४०।३९	६। १।५३।४३	६। ४। ६।४८	६। ६।१९।५२	६। ८।३५। ६
कार्तिक शुक्लपक्ष	१ शु.	६।१०।५०।४८	६।१३। ६।३१	६।१५।२२।१३	६।१७।३७।५६	६।१९।५३।३९	६।२२।११।१८
	२ श.	६।२४।२९। २	६।२६।४६।४६	६।२९। ४।३०	७। १।२२।१४	७। ३।४०।१७	७। ६। ०। ८
	३ र.	७। ८।२०। ०	७।१०।३९।५१	७।१२।५९।४३	७।१५।१९।३४	७।१७।४०।१०	७।२०। १।४३
	४ चं.	७।२२।२३।१६	७।२४।४४।४९	७।२७। ६।२२	७।२९।२७।५५	८। १।५०।१३	८। ४।१२।४९
	५ मं.	८। ६।३५।२५	८। ८।५८। १	८।११।२०।३८	८।१३।४३।२३	८।१६। ६।३५	८।१८।२९।४८
	६ बु.	८।२०।५३। ०	८।२३।१६।१३	८।२५।३९।२५	८।२८। २।४७	९। ०।२६।१५	९। २।४९।४३
	८ गु.	९। ५।१३।११	९। ७।३६।४०	९।१०। ०।२९	९।१२।२३।२८	९।१४।४६।२७	९।१७। १।२६
	९ शु.	९।१९।३२।२५	९।२१।५५।२४	९।२४।१७।५९	९।२६।४०। ०	९।२९। २। १	१०। १।२४। २
	१० श.	१०। ३।४६। ३	१०। ६। ८। ४	१०। ८।२९। ०	१०।१०।४९।४१	१०।१३।१०।२२	१०।१५।३१। ३
	११ र.	१०।१७।५१।४४	१०।२०।१२।१४	१०।२२।३०।४८	१०।२४।४९।२२	१०।२७। ७।५६	१०।२९।२६।३०
	१२ चं.	११। १।४५। ४	११। ४। ३। ५	११। ६।१९।५०	११। ८।३६।३५	११।१०।५३।२०	११।१३।१०। ५
	१३ मं.	११।१५।२६।५०	११।१७।४२।३०	११।१९।५६।५५	११।२२।११।२०	११।२४।२५।४५	११।२६।४०।१०
	१४ बु.	११।२८।५४।३५	०। १। ७।३१	०। ३।१९। २	०। ५।३०।३२	०। ७।४२। ३	०। ९।५३।३३
	१५ गु.	०।१२। ५। ४	०।१४।१५।२८	०।१६।२४।२८	०।१८।३३।२८	०।२०।४२।२७	०।२२।५१।२७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

रोपड़ (पंजाब) के स्पष्टार्कोदय से लेकर १०—१० घटी के अन्तर पर दैनिक स्पष्ट चन्द्र
(सं० २०१७)

मास	ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष	१	शु.	०।२५। ०।२६	०।२७। ८।५०	०।२९।१५। ७	१। १।२२।२४	१। ३।२७।४१	१। ५।३३।५८
	२	श.	१। ७।४०।१५	१। ९।४६।३२	१।११।५०।५४	१।१३।५५। ३	१।१५।५९।१३	१।१८। ३।२२
	३	र.	१।२०। ७।३२	१।२२।११।४१	१।२४।१५।२९	१।२६।१७।४१	१।२८।१९।५३	२। ०।२२। ४
	४	चं.	२। २।२४।१६	२। ४।२६।४७	२। ६।२८।३९	२। ८।२९।४१	२।१०।३०।४३	२।१२।३१।४४
	५	मं.	२।१४।३२।४६	२।१६।३३।४७	२।१८।३४।४९	२।२०।३५।१८	२।२२।३५।३८	२।२४।३५।५८
	६	बु.	२।२६।३६।१७	२।२८।३६।३७	३। ०।३६।५७	३। २।३७।१६	३। ४।३७।४०	३। ६।३८। ५
	७	गु.	३। ८।३८।३०	३।१०।३८।५६	३।१२।३९।२१	३।१४।३९।४६	३।१६।४०।१२	३।१८।४१।३०
	८	शु.	३।२०।४२।४८	३।२२।४४। ७	३।२४।४५।२५	३।२६।४६।४३	३।२८।४८। २	४। ०।४९।५५
	९	श.	४। २।५१।३९	४। ४।५५।२३	४। ६।५८। ७	४। ९। ०।५१	४।११। ३।३५	४।१३। ६।१९
	१०	र.	४।१५।११। ०	४।१७।१५।५४	४।१९।२०।४८	४।२१।२५।४२	४।२३।३०।३६	४।२५।३५।३०
	१०	चं.	४।२७।४१।२८	४।२९।४८।३७	५। १।५५।४६	५। ४। २।५५	५। ६।१०। ४	५। ८।१७।१३
	११	मं.	५।१०।२४।५३	५।१२।३४।४०	५।१४।४४।२७	५।१६।५४।१४	५।१९। ४। १	५।२१।१३।४८
	१२	बु.	५।२३।२३।४५	५।२५।३६। ७	५।२७।४८।३०	६। ०। ०।५२	६। २।१३।१५	६। ४।२५।३७
	१३	गु.	६। ६।३८। ०	६। ८।५२।५४	६।११। ७।५३	६।१३।२२।५२	६।१५।३७।५१	६।१७।५२।५०
	३०	शु.	६।२०। ८। १	६।२२।२५।२३	६।२४।४२।४६	६।२७। ०। ९	६।२९।१७।३१	७। १।३४।५४
मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष	१	श.	७। ३।५२।४५	७। ६।१२। १	७। ८।३३।१७	७।१०।५०।३३	७।१३। ९।४९	७।१५।२९। ६
	२	र.	७।१७।४९।५३	७।२०।११। ३	७।२२।३२।१४	७।२४।५३।२४	७।२७।१४।३५	७।२९।३५।४५
	३	चं.	८। १।५७।५३	८। ४।२०। ४	८। ६।४२।१५	८। ९। ४।२६	८।११।२६।३७	८।१३।४९। ८
	४	मं.	८।१६।१२।२२	८।१८।३५।३७	८।२०।५८।५२	८।२३।२२। ६	८।२५।४५।२१	८।२८। ८।४८
	५	बु.	९। ०।३२।२१	९। २।५५।५५	९। ५।१९।२८	९। ७।४३। २	९।१०। ६।२६	९।१२।२९।३०
	६	.	९।१४।५२।३४	९।१७।१५।३९	९।१९।३८।४३	९।२२। १।४७	९।२४।२४।३१	९।२६।४६।४९
	७	शु.	९।२९। ९। ८	१०। १।३१।२६	१०। ३।५३।४४	१०। ६।१६। २	१०। ८।३७।१८	१०।१०।५८।१९
	८	श.	१०।१३।१९।२०	१०।१५।४०।२०	१०।१८। १।२१	१०।२०।२२। ३	१०।२२।४२।१८	१०।२५। ०।३३
	९	र.	१०।२७।१९।४८	१०।२९।३९। ३	११। १।५८।१८	११। ४।१६।५१	११। ६।३४।२३	११। ८।५१।५५
	१०	चं.	११।११। ९।२८	११।१३।२६। ०	११।१५।४४।३२	११।१७।५८।४२	११।२०।१३।३८	११।२२।२८।३४
	११	मं.	११।२४।४३।३०	११।२६।५८।२५	११।२९।१३।२०	०। १।२६।२२	०। ३।३८।३१	०। ५।५०।४१
	१२	बु.	०। ८। २।५०	०।१०।१५। ०	०।१२।२७। ९	०।१४।३७।४५	०।१६।४७।२०	०।१८।५६।५६
	१३	गु.	०।२१। ६।३२	०।२३।१६। ७	०।२५।२५।४२	०।२७।३४।१०	०।२९।४१। ५	१। १।४८। ०
	१४	शु.	१। ३।५४।५५	१। ६। १।५०	१। ८। ८।४५	१।१०।१५।२३	१।१२।२०। ५	१।१४।२४।४८
	१५	श.	१।१६।२९।३०	१।१८।३४।१३	१।२०।३८।५५	१।२२।४३।३८	१।२४।४५।१७	१।२६।४७।५५
पौष कृष्णपक्ष	१	र.	१।२८।५०।३३	२। ०।५३।११	२। २।५५।४९	२। ४।५८।२७	२। ७। १।२६	२। ९। ३।४३
	२	चं.	२।११। ५।००	२।१३। ६।१६	२।१५। ७।३२	२।१७। ८।४८	२।१९।१०। ४	२।२१।१०।४९
	३	मं.	२।२३।११।१२	२।२५।११।३६	२।२७।११।५९	२।२९।१२।२३	३। १।१२।४६	३। ३।१३।१०
	४	बु.	३। ५।१३।२४	३। ७।१३।४२	३। ९।१३।५९	३।११।१४।१७	३।१३।१४।३५	३।१५।१४।५२
	५	गु.	३।१७।१५।३१	३।१९।१६।३४	३।२१।१७।३८	३।२३।१८।४१	३।२५।१९।४५	३।२७।२०।४८
	६	शु.	३।२९।२१।५२	४। १।२३।४९	४। ३।२६।१०	४। ५।२८।३१	४। ७।३०।५३	४। ९।३३।१४
	७	श.	४।११।३५।३५	४।१३।३८।१४	४।१५।४२।३३	४।१७।४६।५२	४।१९।५१।११	४।२१।५५।३०
	८	र.	४।२३।५९।४९	४।२६। ४। ८	४।२८।१०। १	५। ०।१६।३०	५। २।२३। ०	५। ४।२९।२९
	९	चं.	५। ६।३५।५९	५। ८।४२।२८	५।१०।४९।५६	५।१२।५९। ४	५।१५। ८।१२	५।१७।१७।२०
	१०	मं.	५।१९।२६।२८	५।२१।३५।३६	५।२३।४४।४४	५।२५।५६।३२	५।२८। ८।१९	६। ०।२०। ६
	११	बु.	६। २।३२।५३	६। ४।४३।४१	६। ६।५६।२१	६। ९।१०।३५	६।११।२४।४९	६।१३।३९। २
	१२	गु.	६।१५।५३।१६	६।१८। ७।३०	६।२०।२३। २	६।२२।४०। ५	६।२४।५७। ८	६।२७।१४।११
	१३	शु.	६।२९।३१।१४	७। १।४८।१७	७। ४। ५।३७	७। ६।२३।१८	७। ८।४२। ०	७।११। ०।४१
	१४	श.	७।१३।१९।२२	७।१५।३८। ६	७।१७।५७।५१	७।२०।१८।३४	७।२२।३९।१७	७।२५। ०। ०
	३०	र.	७।२७।२०।४३	७।२९।४१।२६	८। २। ३।१८	८। ४।२५।११	८। ६।४७।२४	८। ९। ९।२७

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

रोपड़ (पंजाब) के स्पष्टार्कोदय से लेकर १०–१० घटी के अन्तर पर दैनिक स्पष्ट चन्द्र

(सं० २०१७)

मास	ति. वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५
पौष शुक्लपक्ष	१ चं.	८।११।३१।३०	८।१३।५३।५०	८।१६।१६।४६	८।१८।३९।४३	८।२१। २।३९	८।२३।
	२ मं.	८।२५।४८।३२	८।२८।११।४६	९। ०।३५। ५	९। २।५८।२५	९। ५।२१।४४	९। ७।४
	३ बु.	९।१०। ८।२१	९।१२।३१।३०	९।१४।५४।३९	९।१७।१७।४८	९।१९।४०।५७	९।२२।
	४ गु.	९।२४।२६।५९	९।२६।४९।२४	९।२९।११।५२	१०। १।३४।२१	१०। ३।५६।४९	१०। ६।१
	६ शु.	१०। ८।४०।४८	१०।११। २। ६	१०।१३।२३।२४	१०।१५।४४।४२	१०।१८। ६। ०	१०।२०।२
	७ श.	१०।२२।४६।४२	१०।२५। ६।२३	१०।२७।२६। ४	१०।२९।४५।४५	११। २। ५।२६	११। ४।२
	८ र.	११। ६।४१।४७	११। ८।५९।२२	११।११।१६।५६	११।१३।३४।३१	११।१५।५२। ५	११।१८। ८
	९ चं.	११।२०।२३।३८	११।२२।३९। २	११।२४।५४।२६	११।२७। ९।५०	११।२९।२५।१४	०। १३८
	१० मं.	०। ३।५९।१८	०। ६। ४। ७	०। ८।१६।५६	०।१०।२९।४५	०।१२।४२।३४	०।१४।५३
	११ बु.	०।१७। ३।४७	०।१९।१३।५४	०।२१।२४। १	०।२३।३४। ८	०।२५।४४।१५	०।२७।५२
	१२ गु.	१। ०। ०।१२	१। २। ७।४४	१। ४।१५।१६	१। ६।२२।४७	१। ८।३०।१९	१।१०।३
	१३ शु.	१।१२।४२।१७	१।१४।४७।२६	१।१६।५२।३५	१।१८।५७।४४	१।२१। २।५३	१।२३। ८
	१४ श.	१।२५।११।१८	१।२७।१४।१७	१।२९।१७।१६	२। १।२०।१५	२। ३।२३।१४	२। ५।२६
	१५ र.	२। ७।२८।३४	२। ९।३०। ०	२।११।३१।२६	२।१३।३२।५२	२।१५।३४।१८	२।१७।३५
माघ कृष्णपक्ष	१ चं.	२।१९।३७।१०	२।२१।३७।४६	२।२३।३८।१३	२।२५।३८।४०	२।२७।३९। ७	२।२९।३९
	२ मं.	३। १।३९।३३	३। ३।३९।५४	३। ५।४०।१६	३। ७।४०।३७	३। ९।४०।५८	३।११।४१
	२ बु.	३।१३।४१।४१	३।१५।४१।१२	३।१७।४२। ०	३।१९।४२।४५	३।२१।४३।३०	३।२३।४
	३ गु.	३।२५।४५। ०	३।२७।४५।४५	३।२९।४६।३१	४। १।४८।१८	४। ३।५०।१५	४। ५।५२
	४ शु.	४। ७।५४। ९	४। ९।५६। ६	४।११।५८। ३	४।१४। ०।३८	४।१६। ४।२३	४।१८। ८
	५ श.	४।२०।११।५५	४।२२।१५।३६	४।२४।१९।२०	४।२६।२३। ५	४।२८।२८।४२	५। ०।३४
	६ र.	५। २।४०।२८	५। ४।४६।२१	५। ६।५२।१४	५। ८।५८। ७	५।११। ५।१८	५।१३।१३
	७ चं.	५।१५।२२।१२	५।१७।३०।३९	५।१९।४०।३६	५।२१।५०। ३	५।२४। ०।३८	५।२६।११
	८ मं.	५।२८।२२।४२	६। ०।३२।१४	६। २।४२।४६	६। ४।५३।१८	६। ७। ४। ५	६। ९।१७
	९ बु.	६।११।३१।४७	६।१३।४५।३८	६।१५।५९।२९	६।१८।१३।२०	६।२०।२७।४३	६।२२।४३
	१० गु.	६।२५। ०।१३	६।२७।१६।२८	६।२९।३२।४३	७। १।४८।५८	७। ४। ५।४९	७। ६।२३
	११ शु.	७। ८।४१।५९	७।११। ०। ४	७।१३।१८।१०	७।१५।३६।१५	७।१७।५५।३६	७।२०।१६
	१२ श.	७।२२।६।२८	७।२४।५६।५४	७।२७।१७।२०	७।२९।३७।४६	८। १।५९।१८	८। ४।२१
	१३ र.	८। ६।४२।४४	८। ९। ४।२७	८।११।२६।११	८।१३।४८। ५	८।१६।१०।५१	८।१८।३३
	३० चं.	८।२०।५६।२३	८।२३।१९।१०	८।२५।४१।५६	८।२८। ५। १	९। ०।२८।१८	९। २।५१
माघ शुक्लपक्ष	१ मं.	९। ५।१४।५१	९। ७।३८। ८	९।१०। १।२३	९।१२।२४।३५	९।१४।४७।३७	९।१७।१०।४
	२ बु.	९।१९।३४। १	९।२१।५७।१३	९।२४।२०।१६	९।२६।४२।५२	९।२९। ५।२८	१०। १।२८।
	३ गु.	१०। ३।५०।४१	१०। ६।१३।१७	१०। ८।३५।२४	१०।१०।५७। ४	१०।१३।१८।४५	१०।१५।४०।२
	४ शु.	१०।१८। २। ६	१०।२०।२५।५०	१०।२२।४५।२९	१०।२५। ५। ९	१०।२७।२४।४८	१०।२९।४४।२
	५ श.	११। २। ४। ७	११। ४।२२।५७	११। ६।४०।४८	११। ८।५८।३९	११।११।१६।३०	११।१३।३४।२
	६ र.	११।१५।५२।१२	११।१८। ८।५०	११।२०।२४।४८	११।२२।४०।४७	११।२४।५६।४५	११।२७।१२।४
	७ चं.	११।२९।२८।४२	०। १।४२।४२	०। ३।५६। ६	०। ६। ९।३१	०। ८।२२।५५	०।१०।३६।१
	८ मं.	०।१२।४९।४४	०।१५। १। ६	०।१७।११।५३	०।१९।२२।४०	०।२१।३३।२८	०।२३।४४।१५
	९ ं.	०।२५।५५। २	०।२८। ४। ६	१। ०।१२।१०	१। २। ०।१४	१। ४।२८।१८	१। ६।३६।२२
	१० गु.	१। ८।४४।२६	१।१०।५१।३७	१।१२।५७।१०	१।१५। २।४३	१।१७। ८।१७	१।१९।१३।५०
	११ शु.	१।२१।१९।२३	१।२३।२४।४४	१।२५।२८।१३	१।२७।३१।४२	१।२९।३५।१२	२। १।३८।४१
	१२ श.	२। ३।४२।१०	२। ५।४५।४०	२। ७।४८।१०	२। ९।४९।५५	२।११।५१।४०	२।१३।५३।२५
	१३ र.	२।१५।५५।१०	२।१७।५६।५५	२।१९।५८।४०	२।२१।५९।१०	२।२३।५९।३७	२।२६। ०। ४
	१४ चं.	२।२८। ०।३१	३। ०। ०।५८	३। २। १।२५	३। ४। १।४२	३। ६। १।५७	३। ८। २।१२
	१५ मं.	३।१०। २।२७	३।१२। २।४२	३।१४। २।५७	३।१६। ३।१२	३।१८। ३।४५	३।२०। ४।१६

रोपड़ (पंजाब) के स्पष्टार्कोदय से लेकर १०–१० घटी के अन्तर पर दैनिक स्पष्ट चन्द्र

(सं० २०१७)

मास	ति. वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
फाल्गुन कृष्णपक्ष	१ बु.	३।२२। ४।४७	३।२४। ५।१७	३।२६। ५।४८	३।२८। ६।१९	४। ०। ६।५४	४। २। ८।३१
	२ गु.	४। ४।१०। ८	४। ६।११।४५	४। ८।१३।२२	४।१०।१४।५९	४।१२।१६।३६	४।१४।१८।५८
	३ शु.	४।१६।२२।१४	४।१८।२५।३१	४।२०।२८।४७	४।२२।३२। ४	४।२४।३५।२०	४।२६।३८।३७
	४ श.	४।२८।४३। ६	५। ०।४८।२७	५। २।५३।४८	५। ४।५९। ९	५। ७। ४।३०	५। ९। ९।५१
	५ र.	५।११।१७।३४	५।१३।२५।२६	५।१५।३३।१८	५।१७।४१। ९	५।१९।४९। १	५।२१।५६।५३
	६ चं.	५।२४। ५।४०	५।२६।१६।११	५।२८।२६।४२	६। ०।३७।१६	६। २।४७।४४	६। ४।५८।१५
	७ मं.	६। ७। ९।१६	६। ९।२२।१९	६।११।३५।२१	६।१३।४८।२४	६।१६। १।२७	६।१८।१४।३०
	८ बु.	६।२०।२७।५०	६।२२।४३।३५	६।२४।५९।२०	६।२७।१५। ५	६।२९।३०।५०	७। १।४६।३५
	९ गु.	७। ४। ३।१०	७। ६।२०।५४	७। ८।३८।३८	७।१०।५६।२२	७।१३।१४। ६	७।१५।३१।५०
	१० शु.	७।१७।५०।३७	७।२०।१०।२८	७।२२।३०।२०	७।२४।५०।११	७।२७।१०। ३	७।२९।२९।५४
	११ श.	८। १।५१। ०	८। ४।१२।२८	८। ६।३३।५६	८। ८।५५।२४	८।११।१६।५२	८।१३।३८।२२
	१२ र.	८।१६। १। ३	८।१८।२३।३४	८।२०।४६। ५	८।२३। ८।३६	८।२५।३१। ७	८।२७।५३।५९
	१३ चं.	९। ०।१७। ८	९। २।४०।१७	९। ५। ३।२६	९। ७।२६।३५	९। ९।४९।४४	९।१२।१२।५४
	१४ मं.	९।१४।३६। ८	९।१६।५९।२३	९।१९।२२।३७	९।२१।४५।५२	९।२४। ९। ३	९।२६।३२।५२
	३० बु.	९।२८।५४।४१	१०।१।१७।३०	१०। ३।४०।१९	१०। ६। ३। ८	१०। ८।२५।१२	१०।१०।४७।३०
फाल्गुन शुक्लपक्ष	१ गु.	१०।१३। ९।४८	१०।१५।३२। ६	१०।१७।५४।२४	१०।२०।१४। ४	१०।२२।३४।२७	१०।२४।५४।५०
	२ शु.	१०।२७।१५।१३	१०।२९।३५।३६	११। १।५५।५९	११। ४।१५।३५	११। ६।३३।५७	११। ८।५२।१९
	३ श.	११।११।१०।४१	११।१३।२९। ३	११।१५।४७।२५	११।१८। ४।३७	११।२०।२१। ६	११।२२।३७।३५
	५ र.	११।२४।५४। ४	११।२७।१०।३२	११।२९।२७। १	०। १।४१।३६	०। ३।५५।३४	०। ६। ९।३२
	६ चं.	०। ८।२३।३०	०।१०।३७।२८	०।१२।५१।२६	०।१५। ३।१२	०।१७।१४।३८	०।१९।२६। ४
	७ मं.	०।२१।३७।३०	०।२३।४८।५६	०।२६। ०।२२	०।२८। ९। ०	१। ०।१७।४१	१। २।२६।२२
	८ बु.	१। ४।३५। ३	१। ६।४३।४४	१। ८।५२।२५	१।१०।५९।५०	१।१३। ५।४९	१।१५।११।४८
	९ गु.	१।१७।१७।४८	१।१९।२३।४७	१।२१।२९।४६	१।२३।३५।२९	१।२५।३९।२१	१।२७।४३।१३
	९ शु	१।२९।४७। ६	२। १।५०।५८	२। ३।५४।५०	२। ५।५८।४२	२। ८। १।२२.	२।१०। ३।२३
	१० श.	२।१२। ५।२४	२।१४। ७।२५	२।१६। ९।२६	२।१८।११।२७	२।२०।१३।१७	२।२२।१४। ५
	११ र.	२।२४।१४।५३	२।२६।१५।४१	२।२८।१६।२९	३। ०।१७।१७	३। २।१८। ५	३। ४।१८।४१
	१२ चं.	३। ६।१८।५०	३। ८।१८।५२	३।१०।१८।५४	३।१२।१८।५६	३।१४।१८।५८	३।१६।१९। ०
	१३ मं.	३।१८।१९। ३	३।२०।१९।२४	३।२२।१९।४६	३।२४।२०। ८	३।२६।२०।३१	३।२८।२०।५३
	१४ बु.	४। ०।२२।१५	४। २।२३।३७	४। ४।२४।५९	४। ६।२६।२१	४। ८।२७।४३	४।१०।२९। ५
	१५ गु.	४।१२।३०।२७	४।१४।३२।३५	४।१६।३५।१७	४।१८।३७।५९	४।२०।४०।४१	४।२२।४३।२३
चैत्र कृष्णपक्ष	१ शु.	४।२४।४६। ५	४।२६।४८।५५	४।२८।५३।४९	५। ०।५८।४३	५। ३। ३।३८	५। ५। ८।३२
	२ श.	५। ७।१३।२६	५। ९।१८।२१	५।११।२४।४०	५।१३।३१।५५	५।१५।३९।१०	५।१७।४६।२५
	३ र.	५।१९।५३।४०	५।२२। ०।५५	५।२४। ८। ३	५।२६।१७।५३	५।२८।२७।४३	६। ०।३७।३३
	४ चं.	६। २।४७।२३	६। ४।५७।१३	६। ७। ८।५७	६। ९।२१।३०	६।११।३४। ४	६।१३।४६।३७
	५ मं.	६।१५।५९।११	६।१८।११।४४	६।२०।२४।४६	६।२२।३९।४९	६।२४।५४।५३	६।२७। ९।५६
	६ बु.	६।२९।२५। ०	७। १।४०। ३	७। ३।५५।४२	७। ६।११।३१ २	७। ८।३०।२३	७।१०।४७।४३
	७ गु.	७।१३। ५। ४	७।१५।२२।२४	७।१७।४०।४०	७।२०। ०। ९	७।२२।१९।३९	७।२४।३९। ८
	८ शु.	७।२६।५८।३८	७।२९।१८। ७	८। १।३८।४७	८। ३।५९।५५	८। ६।२१। ३	८। ८।४२।११
	९ श.	८।११। ३।१९	८।१३।२४।३०	८।१५।४६।४६	८।१८। ९। २	८।२०।३१।१७	८।२२।५३।३३
	१० र.	८।२५।१५।४९	८।२७।३८।२५	९। ०। १।२६	९। २।२४।२८	९। ४।४७।२९	९। ७।१०।३१
	११ चं.	९। ९।३३।३३	९।११।५६।४८	९।१४।२०। ७	९।१६।४३।२७	९।१९। ६।४६	९।२१।३०। ५
	१२ मं.	९।२३।५३।२२	९।२६।१६।१८	९।२८।३९।१५	१०। १। २।११	१०। ३।२५। ८	१०। ५।४८। ४
	१४ बु.	१०। ८।१०।४३	१०।१०।३२।४८	१०।१२।५४।५३	१०।१५।१६।५८	१०।१७।३९। ३	१०।२०। ०।५६
	३० गु.	१०।२२।२२।४२	१०।२४।४२।२८	१०।२७। ३।१३	१०।२९।२२।५९	११। १।४४।४५	११। ४। ४।५२

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्वशुभकार्यों के लिए वर्जित काल—जन्ममास, जन्मतिथि, जन्मनक्षत्र, व्यतिपात, भद्रा, वैधृति, अमावस्या, माता पिता के श्राद्ध का दिन, तिथि-वृद्धि, तिथिक्षय, अधिक तथा क्षयमास, गुरु शुक्र का अस्त तथा इनका बाल वृद्धत्व, १३ दिन का पक्ष, कुलिकयोग, अर्द्ध याम, महापात, विष्कुम्भ और वज्रयोग के आदि की ३ घड़ियां, परिघयोग का आधा भाग, शूल योग के आदि की ५ घड़ियां, गण्ड और अतिगण्ड क आदि की ६ घड़ियां और व्याघातयोग के आदि की ९ घड़ियां, ये सब शुभकार्यों में वर्जित हैं। मध्याह्न या मध्य रात्रि से पहले और पीछे के दस दस पल का काल पापग्रह का नवांशक ग्रहण के पहले के ३ दिन, उत्पात और ग्रहण के पीछे के सात दिन (किसी के मत से ५ दिन, ३ दिन या ५ मुहूर्त) वर्जित हैं, स्वराशि से ४।८।१२वां चन्द्रमा तथा पापग्रह से युक्त चन्द्र व लग्न और नवांश के भी वर्जित हैं। सब शुभ कार्यों के लिए साधारणतः शुभमुहूर्त—अपने जन्म लग्न या जन्मराशि से ३।६।१०।११वीं राशि लग्न में हो, शुभग्रह से युक्त व दृष्ट हों, लग्न से ८।१२ स्थान में कोई ग्रह न हो तो सब शुभ कार्यों का आरम्भ सिद्धिदायक है।

गुरु शुक्र के अस्त में वर्जित कर्म—बावली, बगीचा, तालाब, कूप, मकान—इनका आरम्भ और इनकी प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ और व्रतोद्यापन, महादान, गोदान, प्रथमश्रावणीकर्म, नीलवृषभत्याग, मुण्डनसंस्कार, देवतास्थापन, दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह, अपूर्वदेवतीर्थदर्शन संन्यास, अग्निहोत्र, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्ययाग, कर्णवेध, विद्यारम्भ, इन कर्मों को गुरु शुक्र के अस्त में तथा इनके बाल्य-वार्धक्य में नहीं करना चाहिए॥ सीमन्तजातकादीनि प्राशनान्तानि यानि च। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः॥

गुरु शुक्र का बाल्यवृद्धत्व—शुक्र पश्चिमोदय के बाद १० दिन, पूर्वोदय के बाद ३ दिन बाल होता है। इसी प्रकार अस्त प्रथम पश्चिम में ५ दिन और पूर्व में १५ दिन वृद्धत्व होता है। गुरु का बाल्य तथा वृद्धत्व १५ दिन का होता है। एक आचार्य का मत है कि आवश्यक कर्म में गुरु शुक्र के बाल्य-वृद्धत्व का ३ दिन ही दोष मानना। इसी प्रकार चन्द्रमा का बाल्य आध दिन और वृद्धत्व दोष ३ दिन मानना।

जन्मचन्द्रप्रशंसा—कृषिभवनविवाहेऽन्नाशन मौञ्जिबन्धे, प्रथमयुवतिसंगारामकूपादिकृत्ये। पटविधिमभिषेके जन्मचन्द्रः प्रशस्तः, इति वदति वराहः क्षौरयात्रां विहाय। द्वादशचन्द्रप्रशंसा-गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः॥

किस कार्य म किस ग्रह का बल देखना

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	एषां बलम्
नृप-दर्शने	सर्वस-त्कार्ये	संग्रामे	विद्या-भ्यासे	विवाहे चोत्सवे	यात्रायां	दीक्षायां	पापकर्मणि	क्रूर-कृत्ये	एतु कृत्येषु

भद्रायां कार्याकार्यनिर्णयः

व्रधबंधविषाग्न्यस्त्रच्छेदनोच्चाटनादि यत्॥ तुरंगमहिषोष्ट्रादि कर्म विष्ट्यां तु सिद्धयति॥ न कुर्यान्मंगलं विष्ट्यां जीवितार्थी कदाचन। कुर्वन्नज्ञस्तदा क्षिप्रं सर्वतो नाशमाप्नुयात्॥ आवश्यके परिहारः—दिवापरार्द्धजा विष्टिःपूर्वार्द्धोत्था यदा निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम्॥

भद्राया मुखपुच्छघटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	आयां तिथीनाम्
प.	आ.	उ	नै.	ई.	द.	वा.	.	आसु दिग्विदिक्षु
५	२	७	४	८	३	६	१	एषु यामेष्वादी
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखघटी५कृष्णे शुभम्
८	१	६	३	७	२	५	४	एषु यामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रयं पुच्छं शुक्ले शुभम्

गुर्वादित्यविचारः—एकर्क्षे गुर्वर्के व्रतबन्धोद्वाहकादयः सर्वे। न शुभफलदाश्च गदिता अस्तमितेज्येऽनर्थदः प्रोक्तः, (भृगुः)॥ एकराशौ गुरौ सूर्ये न विवाहः कदाचन। ऋक्षान्तरे गुरौ सूर्ये तदा दोषो विनश्यति। सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहः कदाचन। मेषस्थिते दिवानाथे सिंहेज्ये च शुभप्रदः॥ आवश्यके परिहारः—मघादिपञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः। गंगागोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत्॥ नीचराशि—मकरे च गतो जीवः प्रशस्तः सवकर्मसु। नीचांशकगतस्त्याज्यो यस्मादंशेषु नीचता॥ यात्रोद्वाहौ प्रतिष्ठाञ्च गृहचूडाव्रतादिकम्। वर्जयेद्यत्नतश्चैव जीवे वक्रातिचारगे। अपवादः—अतिचारे सप्तदिनं वक्रे द्वादशमेवच। नीचस्थितेऽपि वागीशे मासमेकं विवर्जयेत्॥ अन्यच्च—वक्रे सुरेज्ये स्वगृहे दिनत्रयम्। वर्ज्यं मुनीन्द्रैरखिलेषु कर्मसु (मुहूर्तकल्पद्रुमे)।

ताराबलविचारः—कृष्णाष्टम्यूर्ध्वतो ग्राह्यं दशाहं तारकाबलम्। परतोऽब्जबलं ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मसु॥ ताराऽपवादः—पर्याये प्रथमे वर्ज्यः विपत्प्रत्यरिनैधनाः। द्वितीये त्वंशका वर्ज्यास्तृतीये त्वखिलाः शुभाः। आद्यंशो विपदि त्याज्यः प्रत्वरे चरमोऽशुभः। वधस्त्याज्यस्तृतीयोंऽशः शेषा अंशास्तु शोभनाः।

अथ शुभाशुभ—ताराज्ञानाय चक्रम्

जन्मनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें। गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभादि फल समझें।

१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२७
जन्म	संपत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परम मि
शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

आवश्यक मुहूर्त ... —गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य हो वह शास्त्रसम्मत शुभ मुहूर्त में करे तो अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है।

गर्भाधानसंस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां—१,२,३,५,७,१०,११,१२,१३। शुभ नक्षत्र—तीनों उत्तरा, मृ. ह. अनु. रो. स्वा. श्र. ध. श.। शुभ लग्न—जब लग्न और ४,५,७,९,१० स्थानों में शुभग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, सूर्य मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से समरात्रि हो।

चित्रा. पुन. पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिये मध्यम है।

गर्भाधान के लिए अशुभ काल

भद्रा, ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्ति का दिन ; संध्याकाल, मंगल, रवि शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां, ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी, ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी घड़ी, ५, ९, १, लग्नों के आदि की आधी घड़ी, ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी, ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक घड़ी, निधनतारा, जन्मनक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र, ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृतियोग, माता-पिता के श्राद्ध का दिन का समय, परिघयोग का आधा भाग, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापयुक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिये वर्जित है।

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्रमा	शनि	बुध	गर्भाधानसमय का लग्नेश	चंद्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चंद्रबल देखना चाहिए, और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त—यह गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृ. पुन. पु. ह. मूल और श्रवण नक्षत्र में १,२,३,५,७.१०,११,१३,१५ तिथियों में जब लग्न से १,४, ५,७,९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३,६,११ स्थान में पापग्रह हों तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमन्त संस्कार का मुहूर्त—गर्भाधान से छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियों, वारों नक्षत्रों और लग्नों में सीमन्त शुभ होता है।

गर्भ रक्षा के लिए विष्णु पूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधाजनन संस्कार—बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहिले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्ण सहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर "ॐभूस्त्वयि दधामि, ॐभुवस्त्वयि दधामि, ॐस्वस्त्वयि दधामि, ॐभूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा २ चार बार मधु चटावें। ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिका पथ्य का मुहूर्त—रिक्तामा, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों, वार चं. बु. गु. शु. हों, नक्षत्र मृग. पुन. पु. श्र. रे. पू. हों, तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूत स्त्री के स्नान का मुहूर्त—रेवती, तीनों उत्तरा, रो. मृ. ह. स्वा. अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में रवि गुरु और भौम वारों में, १,२,३,५,७, १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं। आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री के जल पूजन का मुहूर्त—मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार को ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र. पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जल पूजन उत्तम है ; परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र पौष या अधिक मास पूरा होने पर भी जल पूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकर्म का मुहूर्त—संक्रान्ति का दिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२ वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को, मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा, रो. ह. अश्विनी पुष्य, अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहण मुहूर्त

सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

जन्म दिन से १०।१२।१६।१८।३२ वें दिन शुभवार में, मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा. रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इनसे रहित तिथियों में १।४।७।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर १।४।५।६।७।९। १०।११ वें शुभग्रह हों ३।६।११वें पापग्रह हों तो उत्तम होता है।

निष्क्रमणमुहूर्त—स्वा. अश्वि. पुन. ह. मृ. पु. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में भौम, शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता अमा भद्रादि से रहित शुभ दिन में तीसरे चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२ वें दिन बालक का निष्क्रमण करे इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भूम्युपवेशनमुहूर्त—पांचवें महीने में पृथ्वी वराह का पूजन कर, भौम के पूर्णबल में तीनों उत्तरा. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिरलग्न में शुभ दिन में बालक के कर्णनीकटिसूत्र बांध कर पृथ्वी पर बिठलावें।

तत्र मन्त्र—रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुःप्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये ! इति ॥ इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रक्खे, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त—जन्म मास से ६, ८, १० या १२ वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें में कन्या का भद्रादिदोषरहित १. ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म. रे. चि. अनु. ह. अश्वि पू. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, दशम स्थान पापग्रह रहित हो, १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी २ के मत से जन्मनक्षत्र अनु. शततारका और स्वाती अशुभ हैं॥

कर्णवेध का मुहूर्त—चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) जन्म मास, जन्म-नक्षत्र ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़कर जन्म में से १२वें दिन या १६वें दिन ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पु. अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टमस्थान शुभ हो, १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों, तुला, वृष, धन या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के करने से मनुष्य के हार्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या की नासिका छेदन का मुहूर्त—कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका वेध शुभ है।

मुण्डन मुहूर्त—गर्भाधानकाल से या जन्म काल से विषम अर्थात् ३ रे., ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टमलग्न को छोड़ २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रांति के दिन छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये. मृ. र. चि. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित् नक्षत्रों में शुभ है। लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डन कर्म में विशेष—स्वकुलशिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभसमय में अपने २ इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो—"यथा-कुलधर्मं:" इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है॥

क्षौर बनवाने का मुहूर्त—मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाए गये हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं। वर्जित काल—शनि, रवि, सोमवार, हजामत से नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३ तिथियां, संक्रांति का दिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर या भोज के पीछे हजामत बनावाना अशुभ है।

विशेष फल—यज्ञ, विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है। किसी किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे और रूपजीवी जैसे नट, भांड इत्यादि वह किसी दिन हजामत बनवा सकते हैं। वर्णभेद से क्षौर का वार—ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त—जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायणसूर्य में गणेश, विष्णु सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को ह०, अश्वि, पुष्य, अभि श्र. स्वा. रे. पुन. आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में, बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २, ३, ५, ६ १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में मेष, कर्क तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिए।

विद्यारम्भ का मुहूर्त—उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़ कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में म. आर्द्रा, पुन. हस्त, चि., स्वा. श्र. ध. शत. अश्विनी, मू. तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो. पुष्य, आश्ले. अनु. रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थान में शुभग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त—सूर्य, भौम, शनिवार हों, ४।९।१४ तिथि हों, ज्ये. आश्ल. म. तीनों पूर्वा. भ. कृ. वि. आर्द्रा. उ. षा. शत. नक्षत्र शभ हैं।

सीने पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त—अश्वि. पु. चि. अनु. ध. ये नक्षत्र सूर्य, बुध, चन्द्र बृ०, शु० ये वार १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीतसंस्कार का मुहूर्त—यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है, देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) ... जिसमें दान हो उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत के अर्थ हैं पिरो देने वाला अर्थात् देव पूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु-धागा-विशेष) यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से वा गर्भ से (गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११ वें, वैश्य १२ वें इन वर्षों में यदि न किया जाय तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं, उसके बाद सावित्री पतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३ उत्तरा, रो. आश्ले. स्वा. श्र. ध. मू. मृ. रे. चि. अनु. तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य हैं सू. चं. बु. (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघशुक्ल १२ को और संक्रांति दिन को तथा रोगवाण को छोड़कर मध्याह्न के पहिले शुभ है। शु. गु. चं. और लग्नेश ६।८ वें स्थान में, चं. शु. १२वें स्थान में और १।५।८वें में पापग्रह अशुभ हैं। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पापग्रह ३।६।११ स्थानों में वृष या कर्क का पूर्णचंद्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु शुक्र के बाल वृद्ध अस्त के समय को छोड़ कर उपनयन शुभ है।

योनिनाड्यादि...

इस चक्र के नक्षत्र जानने पर ही ...

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

योनिनाड्यादिज्ञानचक्रम्

नक्षत्र	योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गण	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथ में	पंच शलाका में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध	विष घटी के म. धु.
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	अश्वमुख	३	पू फा.	पू. फा	५०
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	योनि	३	अनु.	म.	२४
कृ.	मेष	बानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	ध.	३०
रो.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि.	४०
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा.	उषा.	१४
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा.	पूषा.	२१
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.	३०
पु.	मेष	बानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व	अंध	क्षिप्र लघु	बाण	३	ज्ये.	ज्ये.	२०
आश्ले.	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध.	अनु.	३२
म.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	गृह	५	श्र.	भ.	३०
पू.फा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्रक्रूर	मंचक	२	अश्वि.	अश्वि.	२०
उ.फा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.	१८
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्र लघु	कर	५	उभा.	उभा.	२१
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदुमैत्र	मुक्ता	१	पूभा.	पूभा.	२०
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.	१४
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मृदुमैत्र	तोरण	४	कृ.	ध.	१४
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मिश्रसाधा	बलिनिभ	४	भ.	आश्ले.	१०
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य.	पु.	१४
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन.	पुन.	५६
पू.षा.	बानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	उग्रक्रूर	गजदन्त	२	आ.	आ.	२४
उ.षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.	२०
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.	०
श्र.	बानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व	सुलो.	चरचल	वामन	३	म.	कृ.	१०
ध.	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व	अंध	चरचल	मर्दल	४	आश्ले.	वि.	१०
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.	१८
पू.भा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चित्रा.	चित्रा.	१६
उ.भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.	२४
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा	३०

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक । स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढा

इस चक्र के नक्षत्र जानने पर ही योनिनाड़ी गण आदि मालूम हो सकते हैं, पञ्चशलाका व सप्तशलाका वेध भी ज्ञात हो सकता है, जिस नक्षत्र का तारा आकाश में देखना है तो उसके समीप कितने तारे हैं उसका रूप कैसा है यह भी इस चक्र से जान सकते हैं।

मेलापक सारिणी देखने की रीति

मुहूर्तशास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारिणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिले उसमें गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणोंवाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या वा चिह्न भी है। उसका विवरण यह है कि—एक नाड़ी दोष की जगह (३), गुणमहादोष की जगह (१) भकूट महादोष षडष्टक में (६), नवपञ्च में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहले है वहां शून्य (०) रक्खा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां ऋण का (−) और जहां अधिक समझा गया वहां धन का चिह्न (+) दिया गया है। गुणों की संख्या के नीचे कोई अंक व चिह्न नहीं हैं वहां निर्दोष समझना चाहिए। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिए कि ३६ गुण में केवल १२ मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ी दोष, और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इसलिए सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिलें तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और उसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिए विचार नहीं करना चाहिए। क्योंकि अशुभ है, एक नक्षत्र में पादभेद हो तो नाड़ीदोष नहीं माना जाता।

आवश्यके दोषदानम्—द्विचके ताम्रसुवर्णमष्टरिपुके गोयुग्मम-र्थाङ्कके। रौप्यं कांस्यमयैकनाड़ियुजि गोस्वर्णादि दद्याद्बहेत्।

अपवाद—न वर्गवर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा। तारा विरुद्धो नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे। कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा हो तो वर का नाशक है, ग्रहमैत्री और योनि मिलती हो तो इसका भी दोष नहीं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मेलापक सारिणी

वरस्य	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
कन्यायाः भानि	अ १	भ १	कृ १	कृ ।।।	रो १	मृ ॥	मृ ॥	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि ॥	चि ॥	स्वा १	वि ।।।	वि ।	अ १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र १	ध ॥	ध ॥	शत १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे १
मेष अ १	२८ ३	३३ ०	२७॥	१७॥ ४	२३॥ -४	२२॥ -४	२५॥	१९॥ ३	१७॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२७	२० +५	२४ ५+	१४॥ ३५	९॥ ३६	१०॥ २३६	१२॥ २	२२	२८ -२	२२	१८॥ -१	२४॥ -१	२३ ३१	१३॥ ३५	२६॥ +५	२३ ५+	२०	२६	२०	१९॥	१४॥ ३	१५॥ ३	१४॥ ३६	२३॥ ५+	२६ ६+
भ १	३३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०४१	२६॥ -४	१४॥ ३४	१७॥ ३	२५॥	२५॥	३०॥	२२॥ ३	२४॥ १	१९ -१५	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१०॥ ६	३॥ १३६	१३ १३	२८	२१ -०	१८॥ -१६	१७॥ ३६	१९॥ १६	१९॥ -१५	१७॥ ३५	२५॥ ५+	२७॥	२६	१० १२३	९॥ १३२	१९॥ -१	२३ -२	२२॥ २४+	१६॥ ३४	२५॥ ६+
कृ ।	२६॥	२८ १	२८ २	१८ ३४	१० ०११४	१६॥ ४	१९॥	१९॥ १	१९॥	२४॥	२६॥	२२॥ ३	१५॥ ३५	१९ १५	२० १५	१५ १६	१४ ६	१७॥ ६	२७	१४ ३	१९ ३	१६॥ ३६	१९॥ -६	२५॥ -२	२५ ५+	१९ १२५	१९॥ ३२५	१३॥ २३	१३॥ २३	२५	२४॥	२५॥	१८॥ ९	१७॥ १४	१९॥ १४	१०॥ ३४
वृष कृ ।।।	१९ ४	१९ १४	१९ ३४	२८ ३	१८॥ १३	२६॥	१७ ४+	१७ १४	१७ ४+	२१	२३	१९ ३	१९ ३	२१ १	२२ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+	२२ -६	९ ३६	१४ ३६	२१॥ ३	२४॥	३०॥	२२ ६	१४ १२६	७ १३६	१२ १३५	१०॥ ३५२	२४॥ +५	२९	३०	२३ १	२० १	२२ १	१३ ३
रो १	२३॥ -४	२३॥ -८	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६॥ ०४	२३ ४+	२२ ४+	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ -१५	१७॥ -१६	१५ ३६	८ ३१६	१४॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१३॥ १६	१९॥ ६	११ ३६२	१६ ३५२	१८ ३५	१९ -१५	२४॥ -१	२४ -१	२९	२६	२७	१९ ३
मृ ॥	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -८	२७॥	३५	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ ४+	२६	१९ ३	२१	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	११॥ ३५	१०॥ ३२	२४॥ -६	१७ -१	२३॥	२१॥ ३	२४॥	१४॥ ६	१०॥ ३५	१६॥ २६	२१॥ २५+	२६ ५+	१२ ३५	१७॥ २	२६॥	२८	२५	१८ ३	२७
मिथुन मृ ॥	२६॥	१७॥ ३	२७॥	१९ +४	२६॥ ४+	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१८॥ -४	१९॥ ३१	१३॥ ४	२२॥	१८॥ ३	२७॥	३१॥	३४	२० ३	१३ ३५	२७ +५	१९॥ ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६	२३	१९ ३	२५ २+	१९॥ -२६	२४ -६	१० ३६	१२ ३५	२१ ५+	२२॥ ५+	२४	१३ ३	२६
आ १	१८॥ ३	२८॥	२१॥ १	१९ +१४	२४ -४	२५॥ ४+	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०॥ -४	१२॥ १४	२१॥ १	२७॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -१५	२७ ५+	२० १५	१३॥ १६	१९ २६	५ १३६२	१५ १३	२८	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१७ -१६	१९ १५+	१२ १३५	१७ ३५	१८॥ ३	२६	२६
पुन ।।।	१८॥ ३	२५॥	२१॥	१९ ४+	२२ ४+	२२ ४+	३१॥	२४ ३	२८ ३	१८ -३४	२१ ५०	१५॥ -६	२१॥ +२	२५॥ +२	१९॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३	२६॥	१९॥ ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४॥ ५	२०॥ २६	६ ३५	१४ २	२६	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१६॥ -६	१८॥ +५	१३ ३५	१६ ३५	१७॥ ३	२६॥	२६
कर्क पुन ।	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२०	२५	१७॥ ३	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८॥	१६॥ +२४	२०॥ २८	१४॥ ३४	१६॥ ३	१७॥ ३	१९॥	२९	२६॥	२०॥	१९ ५+	२५ ५+	१०॥ ३५	७॥ ३६	२०॥ -१	२०॥ -१	२६	२७	२१	१३ ६	५॥ ३६	२॥ ३६	१६ ३५	२५ ५+	२४॥ १+
पु १	२०॥	२०॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	२०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ४	३४	२८ ३	२९ ०	१८॥ +४	१४॥ ३०	२३॥ ५+	२५॥	२५॥	१९॥ ३	११ ३	२५	२०॥	१९ -५	१७ ३५	२० -५	१७॥ ६	२१॥ २३६	२०॥ ६	२६	२७ -२	१३ ३	४ ३६	१३ ६	१७॥ ६	२६ ५+	१८ ३५	२६ ५+
श्ले १	२५	२३ १	२१॥ ३	१८ ३	१९ ३१	२९	१४॥ ४	१९॥ १४	१३ ४	२७॥	२८	२८ ३	१५ ०१४२	१५॥ १४२	१७॥ १४	१९॥ १	१९॥	२४॥	२४	११ ३	१६ ३	१४॥ ३५	१९ -५	२५ -५	२२॥ ६	१५॥ १६	७॥ ३१६	१३ १३	१३ ३	३६	१७ ६	१८ ६	११ १६	१७॥ १५	२० १५	१२ ३५
सिंह म १	१९ ४५	१९ १५	१५॥ ३५	१६॥ ३	३॥ ३१	१७॥	२०॥	२७॥ १	१९॥ -२	१६ +२४	१८॥ ४+	१६ ३६२	२६ ३	३० ०१	२६॥ १	१४॥ १४	१४॥ ४	१९॥ ४	२३॥	२०॥ ३	२५॥ ३	२४॥ ३	२४॥	३२	२४ -५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१७॥ ६	२३॥	२४॥	१७॥ १	१७॥ १६	१८॥ १६	१२ ३६
पूफा १	२५ ५+	१३ ३४	१९ -१५	२० १	२३॥	१५॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२५॥ -२	२२॥ +२४	१६॥ ३४	१६॥ -१२६	३० -१	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२०॥ ६+	५॥ १३४	९॥ १३	२४॥	१७॥ १	२३॥ -१	२२॥ १	२४॥ -१	२० १५+	१७ ३५	२४ ५+	११ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	२॥ १३	२०॥ १	२३॥	२३॥ -६	१६॥ ३६	२४॥ -६
उफा ।	१५॥ ३५	२५ ५+	२० -१५	२१ १	२६	२४॥	२७॥	१९॥ ३	१५॥ ३	१६॥ ३०	२५॥ ४+	१८॥ -१४	२६॥ -१	३०	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१२॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३०॥	१६॥ १३	९॥ १३५	२५ ५+	२५ ५+	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	१०॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२४॥ ६-
कन्या उफा ।।।	११ ३२	२२ २	१६ १२	२०॥ +१५	२४॥ ४+	२४ ४+	३२॥	२१॥ १	२३॥ १	१७॥ १	२७॥	२०॥ १	१५॥ १४	२३ ६+	१७ ३४	२८ ३	२७ ३०	२४॥ १२+	१६॥ १२४	२५॥ ६+	१६॥ १२४	१८ १२	२२	१२ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४ +५	२४ ५+	१५॥ +१५	१६॥ -१६	९॥ ३१६	२४॥ ३६	१७ ३	२८	२९
ह १	११ ३३६	१६॥ २	२२ २	२०॥ +५	२३॥ ४२	२४॥ ४२	३०	२८॥ ३	२३॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२१॥	१६ +४	२०॥ ४+	१५ ३४	२६ ३	२८ ०	२८ ०	२० ०८	२६॥ ६+	१८॥ ६	२०	२१	१३॥ ३	१९ ३	२७	२८॥	२३ +५	२४ ५+	१८ ५+	१६ -६	१०॥ ३६२	१३॥ ३६	१६ ३	२६	२६
चि ॥	१२॥ १	८॥ ३३६	१८॥ १	२३ ५+	१८॥ १५	१०॥ ३५	१८ ३	२२ १	२६॥	१९॥	११॥ ३	२५॥	२०॥ -८	६॥ १३६	१३॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	१९ ३४	१२ ०८	२५॥ ८	२७	३१	५	२७	[illegible] १३	[illegible] १	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	३६ ३६	२८ -६	१६॥ १६	१९ १	१० १३२	१६

[illegible] – [illegible] · [illegible] नाडीदोषो ० विचारे ० [illegible] · नाडीदोषो न [illegible] ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

	वरराशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	भांति	अ १	भ १	कृ ।	कृ ।।।	रो १	मृ ।।	मृ ।।	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पू.फा १	उ.फा ।	उ.फा ।।।	ह १	चि ।	चि ।।	स्वा १	वि ।।।	वि ।	अनु १	ज्ये १	मू १	पू.षा १	उ.षा ।	उ.षा ।।।	श्र १	ध ।।	ध ।।	शत १	पू.भा ।।।	पू.भा ।	उ.भा १	रे १
तुला	चि ।।	२२	२४ १२	२८	२३ ६+	१८॥ १६	२०॥ ३६	१२ ३५	२० १५	१८॥ ५+	१९	११ ३	२५	२४॥	२०॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० ४+	२० ३४	२८ ३	२७ ०	३३॥	२२॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१३ १३	२१ १	२३॥ १	२५	२३ ३	१८ ३५	२६ ५+	१८॥ १५	१२ १६	३ १३६२	१२ ६
	स्वा १	२९ २+	२८	१६ ३	११ ३६	१४ २५	२४ -६	२६ ५+	२६ ५+	२७ ५+	२७॥	२८	२७ ३	१२॥ ३	२४	२५॥	२५॥ .८	२७॥ ४+	२१ ४+	२८	२८ ३	२० ०३	९ ३४०	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	३२ ३	२१॥ ३	२२॥ ३	२६	२१ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८॥ ६	१९ ६	११ ३६
	वि ।।।	२२	२२ ९	२० ३	२५ ३६	९ १३६	१७ -६	१८॥ ५+	२० १५	२० ५+	२०॥	२०॥	१७ ३	१६॥ ३	१८॥ १	१७॥ १२	१७॥ १६२	१८॥ ६+	२६ ४+	३३॥	१९ ३	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२१॥ ४	२७	२१ ०१	१३ १३	१५॥ १३	१५॥ ३	२९॥	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३॥ १६	१२॥ १६२	४ ३६
वृश्चिक	वि ।	१६॥ ६+	१६॥ १६	१४॥ ३५	१९॥ ३	१३॥ १३	२१॥	११ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	१८ -५	१८ ५-	१४॥ -३५	२४॥ ३	२२॥ १	२२॥ १२	१७ १२	१८	२६	२२॥ ६	७ ३४	१५ ३४	२८ ३	२७ ०	३३॥	२१॥ ४+	१५॥ ४१	७॥ १३४	११ १३	११ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	११ १५	१८ १५२	९॥ ३५
	अनु १	२३॥ ६	१४॥ ३६	१८॥ -६	२३॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	१९॥ ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४॥	२०॥ ३	२८॥	२४	२५	२२ ३	६४ ३४	२०॥ ८	१६ ८	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४॥	२४ ५+	३७ ३५	२६ ५+
	ज्ये १	१० ३५	१७॥ १६	२३॥ -६	२८॥	२२॥ १	२९॥	१२ ६	२ ३१६२	४ ६३	१९॥ ५३	१९ ५+	२५ -५	३१	२३॥ १	१५॥ १३	११ १३	११ ३	२४	१९॥ ४	१४॥ ६	१९ ६	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०३१४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	९॥ १३५	२० १५	२० +५
धनु	मू १	२२॥ ३५	१९ १५	२५ ५+	१९॥ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	२१	१४ १३	१२ ३	७॥ ३६	१७॥ ६	२३ ६	२४ ५+	१८ १५	१९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२६	२६	२१	२६	२२॥ ४+	१६॥ +२४	१६ ३४२	२८ ३	२८ ०१	१५॥ १	१३॥ १४	१४॥ ४	१९॥ ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६॥ १३	२४॥ १	२६
	पूषा १	२५॥ +५	१७॥ ३५	१९॥ -१२५	१४ १६२	१८॥ ६	२०॥ ३६	१२ ३	२६	२७	२७॥ ६	१४॥ २३६	१६॥ १६	२२ -१५	१७ ३५	२५ ५+	२८॥	२७	१२ १३	१२ १३	२७	२० १	१६॥ -१४	१५॥ ३४	१७॥ -१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२॥ ४	५॥ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	२९॥	२२॥ ३	३०॥
	उषा ।	२४ ५+	२५॥ ५+	११॥ १३५	६ १३६	१० २३६	१६॥ २६	२५ २+	२६	२७	२२॥ ६	२२॥ ६	८॥ १६३	८॥ १५३	२४ ५+	२ +	२८॥	२८॥	२० १	२० १	१९ ३	१२ १३	८॥ १३४	२३॥ ४+	१७॥ -१४	२५ -१	३५	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१३॥ १४	२२॥ १	२३॥ १	२८॥	२९॥	३०॥	२२॥ ३
मकर	उषा ।।।	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	१९॥ २६+	२४॥ -६	२२॥ -६	२८	२८	१४ १३	८॥ १३६	२० %	२१ ६	२४ ५+	२४ ५	१५॥ १५	२२॥ -१	२१॥ ३	१४॥ १३	१२ ३१	२७	२१ १	१४॥ १४	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२७ ०३	२५॥ १+	१५॥ +१४	१६॥ १४+	२१॥ ४+	२९॥	३०॥	२२॥ ३
	श्र १	२८	२७	१४॥ ३२	१२ ३५२	१७ ३५	२६ ५+	२३ -६	१९॥ -६	२१॥ -६	२८	२८ २+	१४ ३	५॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३ ५+	२४ ५+	१७ ५+	२४	२१॥ ३	१४॥ ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२२॥ ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७ -०	१७ ०४	१७॥ ४+	२०॥ ४+	२८॥	२९॥	३३॥ ३
	ध ।।	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	१५ १५	११ ३५	८ ३६	१६ १६	१४॥ -६	२३	१३ ३	२७	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १६	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	१९ ३	२४	२८॥	२६	१२ ३	२६	२०॥ ४	६॥ ३४१	१४॥ ४१	२५॥ १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ०४	१७॥ १४	२४॥ १	१५ १३	२२॥ +२
कुम्भ	ध ।।	१९॥	१०॥ १३२	२५॥	३०	२५॥ १	१७॥ ३	११ ३५	१८ १५.	१७ +५	१२ ६	४ ३६	१८ ६	२४॥	२०॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ ६+	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२३॥ १	१६॥ १४	१८ +४	१८ ३४	२८ ३	३३ ०	२७॥ १	१६॥ १४	६॥ १३४	१३॥ ४२
	शत १	१४॥ ३	२७॥ १	२६॥	३१	२५ १	२६॥	२८ ५+	१२ १३५	१२ ३५	६॥ ३६	१३ ६	१९ ६	२५॥	१९॥ १	११॥ १३	२०॥ १३६	२०॥ २३६	२५ ६	२६ +५	२१ २५+	२६ ५+	२६॥	२०	१८ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१७ १४	१७॥ ४+	२४ ४+	३३	२८ ३.	२९ ०१३	८ १३४०	१४॥ १४	१५॥ ४
	पूभा ।।।	१७॥ ३	२४॥ २+	१९॥ -१	२४ -१	३०	३०	२३॥ ५+	१७ ३५	१७ ३५	११॥ ३६	१९॥ ६	१२ १६	१८॥ १	२४॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५-	२६ ५+	२० -१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५ १३	२१॥	२१॥	२२॥ +४	२२॥ ४+	१८॥ -१४	२० -१	१९ १३	२८ ३	१६ ३४	२२ ०४	१९॥ ४२
मीन	पूभा ।	१४॥ ३४	२२॥ ४२	१६॥ -१४	१९ १	२५	२५	२४	१७॥ ३	१७॥ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१६॥ -१६	२२॥ ६+	१४॥ ३६	१६ ३	१६ .३	१८ १+	११ १६	१८॥ ६	२२॥ १६	१९ -१५	२५ +५	९॥ १३५	१४ १२	२८॥	२८॥	२८॥	२८॥	१४॥ १	१५॥ १४	७ १३४	१५ ३४	२८ ३	३३ ०	३०॥ +२
	उभा १	२३॥ ४+	१५॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७ ३	२५	२६॥	३६ ५	१९ ३५	२० १५	१७॥ -१६	१५ ३६	२५॥ ६+	२७	२६	९ १३२	२ १२६२	१९ ६	२१॥ १६२	१८ १५२	१८ ३५	२० -१५	२३॥ -१	२१॥ ३	२९॥	२९॥	२९॥	१४॥ १३	५॥ १३४	२४॥ १४	२१ ४	३३	२८ ३	३३ ०
	रे १	२५ ४+	२३॥ ४+	१०॥ ३४	१३ ३	१७ ३	२६	२५	२४	२५	२४॥ ५	२६ ५	१३ ३५	१२ ३६	२२॥ ६+	२२॥ ६+	२४	२५	१९	१२ ६	१० ३६	४ ३६	२०॥ ३५	२६ ५+	२१ ५+	२६	२८॥	२०॥ ३	२३॥ १	२१॥ ३	२२॥ -२	१३॥ ४२	१५॥ ४	१७॥ ४२	२९॥ +२	३३	२८ ३

बिना मेल के विवाह —अयोजिता सन्निकक्षा क्रीता स्नेहादिनार्पिता । स्वयमेवागता कन्या नवास्ता शुद्धिमंलके । पनसदस्तदपूर्वो यस्मिन् पूरे यस्या च योषिति । कन्योवा आयत एव वान्यात्किांक्षाठिचिन्तयेत्

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मेलापक सारिणी

कन्याया	वरस्य	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
	भानि	अ १	भ १	कृ ।	कृ ।।।	रो १	मृ ॥	मृ ॥	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि ॥
मेष	अ १	२८ ३	३३ ०	२७॥	१७॥ ४	२३॥ -४	२२॥ -४	२५॥	१९॥ ३	१७॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२७	२० १५	२४ ५+	१४॥ १५	७॥ ३२	१०॥ २३६	१२॥ ६
	भ १	३३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०४१	२६॥ -४	१४॥ ३४	१७॥ ३	२५॥	२५॥	३०॥	२३॥ ३	२४॥ १	१९ -१५	१७ ३५	२४ ५+	१२ ६	१०॥ ५	३॥ १३६
	कृ ।	२६॥	२८ १	२८ १	१८ ३४	१० ०१४४	१६॥ ४	१९॥	१९॥ १	१९॥	२४॥	२६॥	२२॥ ३	१५॥ ३५	११ १५	२० १५	१५ १६	१४ ५	१७॥ ५
वृष	कृ ।।।	१९ ४	१९ १४	१९ ३६	२८ ३	१८॥ १३	२६॥	१७ ४+	१७ १४	१७ ०४+	२१	२३	१९ ३	१९ ३	२१ १	२२ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+
	रो १	२३॥ -४	२३॥ -४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६॥ ०४	२३ ४+	२२ ४+	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ -१५
	मृ ॥	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ ४+	२६	१९ ३	२१	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	११॥ ३५
मिथुन	मृ ॥	२६॥	१७॥ ३	२१॥	१९ +४	२६॥ ४+	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१८॥ -४	१९॥ ३०	१३॥ ४	२२॥	१८॥ ३	२७॥	३१॥	३४	२० ३
	आ १	१८॥ ३	२०॥	२१॥ १	१९ +१४	२४ -४	२५॥ ४+	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०॥ -४	१२॥ १४	२१॥ १	२७॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १
	पुन ।।।	१८॥ ३	२५॥	२१॥	१९ ४+	२२ ४+	२२ ३+	३१॥	२४ ३	२८ ३	१४ -३४	२१ ६०	१५॥ -४	२१॥ +२	२५॥ +२	१९॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३	२६॥
कर्क	पुन ।	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२६	२५	१७॥ ३	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३३ ०	२८॥	१६॥ २४	२०॥ २०	१४॥ ३४	१६॥ ३	१७॥ ३	१९॥
	पु १	२९॥	२०॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	१०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ४	३४	२८ ३	२९ ०	१८॥ +४	१४॥ ३०	२३॥ ४+	२५॥	२५॥	११॥ ३
	श्ले १	२५	२३ १	२१॥ ३	१८ ३	११ ३१	२९	१३॥ ४	१९॥ १३	१३ ४	२७॥	२८	२८ ३	१५ ०२४२	१५॥ १४२	१७॥ १४	१९॥ १	१९॥	२७॥
सिंह	म १	१९ ५	१९ १५	१५॥ ३५	१६॥ ३	२॥ ३१	१७॥	२०॥	२०॥ १	१९॥ -२	१६ +२४	१८॥ ४+	१६ ३४२	२७ ३	२० ०१	२६॥ १	१४॥ १४	१४॥ ०	१९॥ ४
	पूफा १	२५ ५+	१० ३५	१९ -१५	२० १	२३॥	१५॥ ३	१८॥ १	२६॥	२५॥ -२	२३॥ +२४	१६॥ ३४	१६॥ -१०४	३० -१	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२०॥ ४+	६॥ १३४
	उफा ।	२५॥ ३५	२५ ५+	२० -१५	२१ १	२२	२४॥	७॥	१९॥ ३	१०॥ ३	१४॥ ३०	२५॥ ४+	१८॥ -१४	२६॥ -१	३०	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१२॥ १४२
कन्या	उफा ।।।	१२ ३३	१२ २	१६ १२	२०॥ +१५	२५॥ ५+	२८ ५+	३१॥	२१॥ २	२३॥ २	१७॥ १	२७॥	२०॥ १	१५॥ १४	२३ ४+	१७ ३४	२८ ३	२७ ३०	२४॥ १२+
	ह १	१९ २३६	१८॥ ५	२९ ५	२०॥ +५	२३॥ ५+	२४॥ ५+	३०	२८॥ ३	२३॥ ३	१८॥ ३	२२॥	२९॥	१६ +४	२०॥ ४+	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०
	चि ॥	१२॥ २	४॥ १२६	१८॥ २	२३ ५+	१८॥ १५	१०॥ ३५	१८ ३	२२ १	२४॥	१९॥	१९॥ ३	२५॥	२०॥ +४	६॥ १३४	१३॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३

कन्याया	वरस्य	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	भानि	चि ॥	स्वा १	वि ।।।	वि ।	अ १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र १	ध ॥	ध ॥	शत १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे १
मेष	अ १	२२	२८ -२	२२	१८॥ -६	२४॥ -६	१३ ३६	१२॥ ३५	२४॥ +५	२३ ५+	२०	२६	२०	१९॥	१४॥ ३	१५॥ ३	१४॥ ३४	२३॥ ३+	२६ ४+
	भ १	१३ १३	२८	२१ -०	१८॥ -१६	१७॥ ३६	१९॥ १६	१९॥ -१५	१७॥ ३५	२५॥ ५+	२७॥	२६	१० १२३	९॥ १३२	१९॥ -१	२३ -२	२२॥ २४+	१६॥ ३४	२५॥ ४+
	कृ ।	२७	१४ ३	२१ ३	१६॥ ३६	१९॥ -६	२५॥ -६	२५ ५+	१९ १२५	१४॥ ३१५	१३॥ १३	१३॥ २३	२५	२४॥	२५॥	१८॥ १	१७॥ १४	१९॥ १४	२०॥ ३४
वृष	कृ ।।।	२२ -६	९ ३६	१४ ३६	२१॥ ३	२४॥	३०॥	२२ ६	१५ १२६	७ १३६	१२ १३५	२०॥ ३५२	२४॥ +५	२९	३०	२३ १	२० १	२२ १	१३ ३
	रो १	१७॥ -१६	१५ ३६	८ ३१६	१४॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१३॥ १२	१९॥ ६	२१ ३६२	१६ ३५२	१८ ३५	१९ -१५	२४॥ -१	२४ -१	२१	२६	२७	१९ ३
	मृ ॥	१०॥ ३६	२४॥ -६	१७ -६	२३॥	२१॥ ३	२४॥	१४॥ ६	१०॥ ३६	१६॥ २६	२१॥ २५+	२६ ५+	१२ ३५	१७॥ ३	२६॥	२८	२५	१८ ३	२७
मिथुन	मृ ॥	१३ ३५	२७ +५	१९॥ ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६	२३	१९ ३	२५ २+	१९॥ -२६	२४ -६	१० ३६	१२ ३५	२१ ५+	२२॥ ५+	२४	१७ ३	२६
	आ १	२० -१५	२७ ५+	२० १५	१३॥ १६	१० २६	५ १११२	१५ १३	२८	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१७ -१६	१९ १५+	१२ १३५	१७ ३५	१८॥ ३	२६	२६
	पुन ।।।	१९॥ ५+	२७ ५,	२१ ५+	१४॥ ६	२०॥ २६	६ ३६	१४ ३	२०	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१६॥ -६	१८॥ +५	१३ ३५	१६ ३५	१७॥ ३	२६॥	२६
कर्क	पुन ।	१९	२६॥	२०॥	१९ ५+	२५ ५+	१०॥ ३५	७॥ ३६	२०॥ -१	२०॥ -१	२६	२७	२१	१२ ६	५॥ ३६	९॥ ३६	१६ ३५	२५ ५+	२४॥ १+
	पु १	११ ३	२५	२०॥	१९ -५	१७ ३५	२० -५	१७॥ ६	१२॥ २३६	२०॥ ६	२६	२७ -२	१३ ३	८ ३६	१३ ६	१७॥ ६	२६ ५+	१८ ३५	२६ ५+
	श्ले १	२४	११ ३	१६ ३	१४॥ ३५	१९ -५	२५ -५	२२॥ ६	१५॥ १६	७॥ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७ ६	१८ ६	११ १६	१७॥ १५	२० १५	१२ ३५
सिंह	म १	२३॥	१०॥ ३	१५॥ ३	२४॥ ३	२४॥	३२	२४ -५	१९ १५	८॥ १३७	३॥ ३१६	४॥ ३२	१७॥ ६	२३॥	२४॥	१७॥ १	१७॥ १६	१८॥ १६	१२ ३६
	पूफा १	९॥ १३	२४॥	१७॥ १	२३॥ -१	२२॥ १	२४॥ -१	२० १५+	१७ ३५	२४ ५+	११ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	२॥ १३	१०॥ १	२३॥	२३॥ -६	१६॥ ३६	२४॥ -६
	उफा ।	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३०॥	१६॥ १३	९॥ १३५	२५ ५+	२५ ५+	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	१०॥ १३	१५॥ १	१५॥ ३६	२६॥ -६	२४॥ ६-
कन्या	उफा ।।।	१६॥ १२४	२५॥ ४+	१६॥ १२४	१८ १२	२२	१२ १३	१४ १३	२१॥	२१॥	२४ +५	२४ ५+	१५॥ +१५	१६॥ -१६	९॥ ३१६	१४॥ ३६	१७ ३	२८	२६
	ह १	२० ०४	२६॥ ४+	१८॥ ४+	२०	२२	१३॥ ३	१४ ३	२७	२८॥	२३ ५+	२४ ५+	१८ ५+	१६ -६	१०॥ ३६२	१३॥ ३६	१६ ३	२६	२६
	चि ॥	१९ ३८	१२ ०८	२५॥ ४+	२७	३१	-५	२७	[illegible] १३	२१ ४	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	३६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९ १	१० १३२	१६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मेलापक सारिणी

कन्या	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
वर / भांश	अ ४	भ ४	कृ ।	कृ ।।।	रो ४	मृ ॥	मृ ॥	आ ४	पुन ।।।	पुन ।	पु ४	श्ले ४	म ४	पूफा ४	उफा ।	उफा ।।।	ह ४	चि ॥	चि ॥	स्वा ४	वि ।।।	वि ।	अनु ४	ज्ये ४	मू ४	पूषा ४	उषा ।	उषा ।।।	श्र ४	ध ॥	ध ॥	शत ४	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा ४	रे ४
तुला चि ॥	२२	१६ २३	२८	२३ ६+	१८॥ १६	२०॥ ३६	१२ ३५	२० १५	१८॥ ५+	१९	११ ३	२५	२४॥	१७॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० ४	२० ३४	२८ ३	२७ ०	३३॥	२२॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१३ १३	२१ १	२३॥ १	२५	२३ ३	१८ ३५	२६ ५+	१८॥ १५	१२ १६	३ १३६२	१२ ६
तुला स्वा ४	२१ ३+	२८	२६ ३	११ ३६	१४ ३६	२४ -६	२६ ५+	२६ ५+	२७ ५+	२७॥	२८	२३ ३	१२॥ ३	२४	२५॥	२५॥ ४	२७॥ ४+	२१ ४+	२८	२८ ३	२० ०३	९ ३४०	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	३२ ३	२१॥ ३	२२॥ ३	२६	२१ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८॥ ६	१९ ६	११ ३६
तुला वि ।।।	२१	२२ ३	२० ३	२५ ३६	९ १३६	१७ -६	१८॥ ५+	२० १५	२० ५+	२०॥	२०॥	१७ ३	१६॥ ३	१८॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ ४+	२६ ४+	३३॥	११ ३	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२१॥ ४	२७	२१ ०१	१३ १३	१५॥ १३	१५॥ ३	२९॥	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३॥ १६	१२॥ १६२	४ ३६
वृश्चिक वि ।	२६॥ ६+	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१३॥ १३	२९॥	११ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	१८ -५	१८ ५-	१४॥ -३५	२४॥ ३	२२॥ १	२२॥ १२	१७ १२	१८	२६	२२॥ ६	७ ३४	१५ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२२॥ ४+	१५॥ ४१	७॥ १३४	११ १३	११ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५२	९॥ ३५
वृश्चिक अनु ४	२३॥ ६	१४॥ ३६	१८॥ -६	२३॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	१९॥ ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४॥	२०॥ ३	२८॥	२४	२५	२१ ३	६॥ ३४	२०॥ ६	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४॥	२४ ५+	३७ ३५	२६ ५+
वृश्चिक ज्ये ४	१० ३६	१७॥ १६	२३॥ -६	२८॥	२२॥ १	२९॥	१२ ६	२ ३१६२	४ ६३	१९॥ ५३	१९ ५+	२५ -५	३१	२३॥ १	१५॥ १३	११ १३	११ ३	२४	१९॥ ४	१४॥ ४	१९ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	९॥ १३५	२० १५	२० +५
धनु मू ४	१२॥ ३५	१९ १५	२५ ५+	१९॥ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	२१	१४ १३	१२ ३	७॥ ३६	१७॥ ६	२३ ६	२४ ५+	१८ १५	१९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२६	२६	२१	२६	२२॥ ४+	१६॥ +२४	१६ ३४२	२८ ३	२८ ०१	१५॥ १	१३॥ १४	१४॥ ४	१९॥ ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६॥ १३	२४॥ १	२६
धनु पूषा ४	२५॥ +५	१७॥ ३५	१९॥ -१२५	१४ १६२	१८॥ ६	२०॥ ३६	१९ ३	२६	२७	२२॥ ६	१४॥ २३६	१६॥ १६	१९ -१५	१७ ३५	२५ ५+	२८॥	२७	१२ १३	१२ १३	२७	२० १	१६॥ -१४	१५॥ ३४	१७॥ -१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२॥ ४	५॥ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	२९॥	२२॥ ३	३०॥
धनु उषा ।	२४ ५+	२५॥ ५+	११॥ १३५	६ १३६	१० २३६	१६॥ २६	२५ २+	२६	२७	२२॥ ६	२२॥ ६	८॥ १६३	८॥ १५६	२४ ५+	२ +५	२८॥	२८॥	२० १	२० १	१९ ३	१२ १३	८॥ १३४	२३॥ ४+	१७॥ -१४	२५ -१	३५	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१३॥ १४	२३॥ १	२३॥ १	२८॥	२९॥	३०॥	२२॥ ३
मकर उषा ।।।	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	१९॥ २६+	२४॥ -६	२१॥ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ५	२१ ६	२४ ५+	२४ ५	१५॥ १५	२२॥ -१	२१॥ ३	१४॥ १३	१२ ३१	२७	२१ १	१४॥ १४	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२७ ०३	२५॥ १+	१५॥ +१४	१६॥ १४+	२१॥ ४+	२९॥	३०॥	२२॥ ३
मकर श्र ४	२८	२७	१४॥ ३२	१२ ३५२	१७ ३५	२६ ५+	२३ -६	१९॥ -६	२१॥ -६	२८	२८ २+	१४ ३	५॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३ ५+	२४ ५+	१७ ५+	२४	२१॥ ३	१४॥ ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२२॥ ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७ -०	१७ ०४	१७॥ ४+	२०॥ ४+	२८॥	२९॥	३३॥ ३
मकर ध ॥	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	१५ १५	११ ३५	८ ३६	१६ १६	१४॥ -६	२३	१३ ३	२७	१८॥ ६	४॥ १३६	२०॥ १६	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	१९ ३	२४	२८॥	२६	१२ ३	२६	२०॥ ४	६॥ ३४१	१४॥ ४१	२५॥ १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ०४	१७॥ १४	२४॥ १	१५ १३	२२॥ +२
कुम्भ ध ॥	१९॥	१०॥ १३२	२५॥	३०	२५॥ १	१७॥ ३	११ ३५	१८ १५	१७ +५	१२ ६	४ ३६	१८ ६	२४॥	२०॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ ६+	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२३॥ १	१६॥ १४	१८ +४	१८ ३४	२८ ३	३३ ०	२७॥ १	१६॥ १४	६॥ १३४	१३॥ ४२
कुम्भ शत ४	१४॥ ३	२७॥ १	२६॥	३१	२५ १	२६॥	२७ ५+	१२ १३५	१२ ३५	६॥ ३६	१३ ६	१९ ६	२५॥	१९॥ १	११॥ १३	१०॥ १३६	१०॥ २३६	२५ ६	२६ +५	२१ २५+	२६ ५+	२६॥	२०	१८ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१७ १४	१७॥ ४+	२४ ४+	३३	२८ ३	२९ ०१३	८ १३१०	१४॥ १४	१५॥ ४
कुम्भ पूभा ।।।	१७॥ ३	२४॥ २+	१९॥ -१	२४ -१	३०	३०	२३॥ ५+	१७ ३५	१७ ३५	११॥ ३६	१९॥ १	१२ १६	१८॥ १	२४॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५-	२६ ५+	२० -१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५ १३	२१॥	२९॥	२२॥ +४	२२॥ ४+	१८॥ -१४	२० -१	१९ १३	२८ ३	१६ ३४	२२ ०४	१९॥ ४२
मीन पूभा ।	२४॥ ३८	२१॥ ४२	१६॥ -१४	१९ १	२५	२५	२४	१७॥ ३	१७॥ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१६॥ -१६	२२॥ ६+	१४॥ ३६	१६ ३	१६ .३	१८ १+	११ १६	१८॥ ६	२२॥ १६	१९ -१५	२५ +५	९॥ १३५	१४ १२	२८॥	२८॥	२८॥	२८॥	१४॥ १	१५॥ १४	७ १३४	१५ ३०	२८ ३	३३ ०	३०॥ +२
मीन उभा ४	२३॥ ४+	१५॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	२७ ३	२५	२६॥	३६ ५	१९ ३५	२० १५	१७॥ -१६	१५ ३६	२५॥ ६+	२७	२६	९ १३२	२ १३६६	१९ ६	११॥ १६२	१८ १५२	१४ ३५	२० -१५	२३॥ -१	२१॥ ३	२९॥	२२॥	२९॥	१४॥ १३	५॥ १३४	२४॥ १४	२१ ४	३३	२८ ३	३३ ०
मीन रे ४	२५ ४+	२३॥ ४+	१०॥ ३४	१३ ३	१७ ३	२६	२५	२४	२५	२४॥ ५	२६ ५	१३ ३५	१२ ३६	२२॥ ६+	२२॥ ६+	२४	२५	१९	१२ ६	१० ३६	४ ३६	१०॥ ३५	२६ ५+	२१ ५+	२६	२८॥	२०॥ ३	२३॥ १	२२॥ ३	२२॥ -२	१३॥ ४२	१५॥ ४	१७॥ ४२	२९॥ +२	३३	२८ ३

बिना मेल के विवाह —अयोजिता सम्बिलब्धा श्रीता स्नेहादिनापिता । स्वयमेवागता कन्या नवास्ता शुद्धिमंलकं । यत्रसक्तचक्षुषो यस्मिन् बुरे यस्या च योषिति । मनोधो प्रायत एव नान्यभिकान्तशुद्धिविन्तयेत्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहमेलापकविचार—वर की कुण्डली में जन्मलग्न, चन्द्रमा तथा शुक्र से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना, यदि कन्या के जन्मलग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर का नाशक होता है।

अपवाद—वर की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थानों में मंगल हो और कन्या की जन्म-कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। एवं एक की कुण्डली में मंगल हो दूसर की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाय तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है और जितने ग्रह कन्या की कुण्डली में अशुभ होकर पड़े हों उतन या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़ हों तो शुभ जानें। इसी प्रकार कन्या के जन्मलग्न में ७।८ स्थान तथा वर का २।७ स्थान अवश्य विचार लेन. चाहिए और दोनों का पंचम भाव विशेषता से दखना चाहिए। कन्या के सप्तमेश तथा शुक्र आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उनपर दृष्टि होने से सौभाग्य योग का विचार अत्यावश्यक है। अथवा वैधव्यादिदोषजां कन्यामच्युतविवाहादिशान्ति विधाय दारयोग्यायायुष्मते वराय दद्यात।

विवाहार्थ वर के गुण—कुल, शीलस्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप, विद्या, धन-सनाथता य सात गुण जिस वर में उत्तम मिलें उसको कन्या दनी चाहिए।

वर के दोष—दूरदेश द्वीपान्तरवासी, अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन, नास्तिक, आजीविका से रहित, अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढ्य, मूर्ख, शूर, मोक्ष की चाह से विरक्त, वृद्ध, कन्या से छोटा ऐसे २ दोषों से युक्त वर को कन्या नहीं देनी चाहिए।

विवाहार्थ कन्या के दोष—अत्यन्त चौड़े मस्तक वाली, कुबड़ी, लज्जाहीन, झूठ बोलने वाली, रोगग्रस्त, अंगहीन, अतिस्थूल अथवा अतिदुर्बल, लम्बी व पतली, झगड़ालू अन्धी तथा बहिरी (बोली) ऐसे दस दोषों में से किसी भी दोष वाली कन्या को सुखार्थी वर्जित कर

वाग्दान—कुड़माई—सगाई स पहिले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना जरूरी है—सपिण्डता, ऋषिगोत्रशुद्धि, शील, सामुद्रिक, तथा ज्योतिष-शास्त्र में कहे हुए षडष्टकादि मेलापक सारिणी से विचार लेना, और कुण्डली मिलान के समय निम्नलिखित पांच महादोष भी यत्नपूर्वक वर्जित करने चाहिए—(१) दारिद्र्य, (२) मृत्यु, (३) वैधव्य, (४) व्यभिचार, (५) सन्तान का अभाव।

वर वरण मुहूर्त—उ. ३, रो. कृ. पू. ३, रिक्ता अमावस्या को छोड़कर शुभ तिथि तथा शुभवार में चन्द्रबल देखकर शुभ लग्न में पुरोहित अथवा कन्या का भ्राता वर के घर पर उत्तर वा पश्चिमाभिमुख बैठकर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशर चन्दनादि से तिलक लगाये। तदनन्तर वस्त्र यज्ञोपवीत तथा यथोचित द्रव्य से वर को सत्कृत करे और वर के मुख में एक छुवारा या मीठा, (गुड़,बतासा) देकर यह मन्त्र पढ़े "तस्मिन् कालेऽग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते ह्यरोगिणे। अव्यंगेऽपतितेऽक्लीबे पिता तुभ्यं प्रदास्यति।" यदि भ्राता से भिन्न पुरोहितादि वाग्दान करे तो "पिता तुभ्यं प्रदास्यति" के स्थान में "दाता तुभ्यं प्रदास्यति" कहे।

कन्यावरण मुहूर्त—उ. षा. स्वा. श्र. पूर्वा. ३, अनु. ध. कृ. विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ समय देखकर ...

विवाहकालनिर्णय—२० वर्ष पहले पुरुष का और ८ वर्ष से पहले तथा रजोदर्शन के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता है। अतः रजोदर्शन पूर्व (कुचों के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान कर) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्वसम्मत श्रीपतिनिबन्धोक्त वर्षों में गुरुचंद्र शुद्धि देखकर विवाह कर देवे। तथा "मासत्रया-दूर्ध्वमयुग्मवर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत्। विवाहशुद्धिं प्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादयो गर्गवराहमुख्याः। द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है। यदि किसी योग्य वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे तो माता पितादि को न कोई दोष लगता है और न प्रायश्चित्त कर्तव्य है। वसिष्ठः—दशवर्षव्यतिक्रांता कन्या शुद्धिविवर्जिता। तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मतः।

आजकल वर से कितनी कम उमर कन्या की हो—विवाह के समय पति की उमर ... दो से भाग देवे जो आवे उसमें ६ जोड़ने से जो वर्ष आवे वह विवाह के समय पत्नी ... उमर होनी चाहिए। यथा वर की उमर यदि ३० वर्ष की हो तो वधू की उमर २१ व५ की होनी चाहिए, यह सुखी विवाह का फार्मूला है।

विवाह के पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और वर के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर का नहीं। कन्या का नाम रखने के लिए मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझकर ऋण (—) का चिह्न लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अत्यधिक मिले उसी क बाई ओर जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार—(आगे देखो पृष्ठ ९१)।

प्रयोगचक्रम्

सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना करें।

स्थान	नक्षत्र	फलानि
शीर्षे	३	नार्थसिद्धिः
मुखे	३	सुमंत्रसिद्धिः
कंठे	३	मृत्युदायकः
हस्ते	४	शत्रुभीतिः
हृदि	४	ष्टाप्तिः
उदरे	३	धनहानिः
कट्यां	३	साधनादर्थ
चरण	४	साधनाद्धितः

मंत्रदीक्षामुहूर्त—अधिकमासरहित वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. इन मासों में, शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियों में तथा कृष्णपक्ष की २।३।५ तिथियों में, शुभवार में वृष. मि. सिंह. कं. तु. ध. मी. लग्न हों, लग्न से १।५।७।१० वें शुभग्रह हों, ३।६।११ वें पापग्रह हों तब मंत्र दीक्षा लेना उत्तम है।

विशेष—सतीर्थ पर, सूर्यचन्द्रग्रहण के समय तथा श्रावणीपर्व में मंत्रदीक्षा लेते समय मास तथा पञ्चांगशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिए।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त—वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. २।६।७।१०।१३।१५ तिथि, (अथवा या तिथिर्यस्य देवस्य तस्यां वा) र. सो. गु. शु. अ. रो. मृ. पुन. पु. उ. ३. ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे. (स्वस्वामिनक्षत्रे वा) चन्द्रतारा अनुकूल होने पर गुरुशुक्र के उदय में शुभ लग्न से १२वां स्थान शुद्ध होने पर (विष्णुमन्त्रे स्थिरे शिवस्य चरे दुर्गायाः द्विस्वभावे लग्ने) प्रारम्भ करना श्रेष्ठ है।

लग्नगण्डान्त—कर्क, सिंह की वृश्चिक, धन की और मीन, मेष के आदि अन्त की ...

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

(९० पृष्ठ का शेष) "राश्यभिधानकल्पलता" ग्रन्थ देखकर निर्दोष शुद्ध सुन्दर नाम रख लेना चाहिए। बहुत से विद्वान् कन्या-संकल्प के समय पर "वरस्य पञ्चमे कन्या कन्याया नवमे वरः" बोलते हुए शीघ्रता से नाम बदल देते हैं जिसमें अनेक दोष रह जाते हैं। नाम बदलने का फल कुछ नहीं होता। एतदर्थ लग्न से पहले ही अच्छी तरह सारिणी आदि देखकर बदलना चाहिए।

अथ विवाहमासः—विवाहशुद्धौ मीनार्कञ्च विना प्रोक्तमुत्तरायणमुत्तमम्। त्याज्योऽर्को धनुपश्चान्ये मध्यमाः स्युः करग्रहे। वर्षासु पाणिग्रहणं न केचिद् केचिद् वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे तथा यत्र तथैव तत्र ॥१॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया ॥२॥

अथ जन्ममासादिषु निषेधः—सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्म मास, जन्म नक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं। अत्यावश्यके परिहारः—जातं दिनं दूषयते वशिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च।

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो—एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग २ मण्डप गाड़कर वर और जो पुरोहित पहिला कार्य करा चुका है, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावे। इसी प्रकार जिस गृह में पहिला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाड़ कर कार्य को करे।

अथ ज्येष्ठ विचार—ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिकासूर्य को छोड़कर दानादि पूर्वक करे।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय—दो सगी बहिनों का विवाह एक साथ या छै मास के अन्दर करे तो निस्सन्देह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट् मास तक कन्या का विवाह न करे और कन्या वा पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करे अर्थात् पहले करले और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्धतिलतर्पण भी न करे और मुण्डन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करे। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभ कार्य करले। वहां छः मास का विचार नहीं है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच—साहे चिठ्ठी (कुंकुमपत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से १ साल, स्त्री के मरण से ३ मास, भाई व पुत्र के मरण से १॥ मास, कुल वालों के मरण से २२॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करे। अति संकट में ३० दिन के बाद शांति करके अथवा विशेष शांति और गोदान करके अशौच के बाद करे।

विवाह के मुहूर्त प्रथम ही शुद्ध कर चुके हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य चन्द्र देखिये और वधू की राशि से चन्द्र गुरु देखिये बस इसी को त्रिबलशुद्धि कहते हैं। यह त्रिबल शुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हों तो मध्यम है यदि सूर्य गुरु नेष्ट हों तो विवाह नहीं बनेगा ऐसा कहना। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु० सू० चं०) शुद्धि प्रथम देखें। "झषचापकुलीरस्थो जीवोऽप्यशुभगोचरः। अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु" (बृ०)। तुलाराशौ अपूज्यरविः—धर्मश्रीधनगतो दिवाकरस्तौलिराशिजनितस्य शोभनः। आवश्यके पूज्यरविपरिहारः—गार्ग्याङ्गिरोवत्सवशिष्ठगौतमपराशराद्या मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चाङ्कगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहाः ॥ (मु० प्र० सा०)।

विवाहादौ त्रिबलशोधनम्

पूज्यगुरुः—१०।६।३।१
श्रेष्ठगुरुः—९।५।११।२।७
नेष्टगुरुः—४।८।१२
श्रेष्ठरविः—३।६।१०।११
पूज्यरविः—१।२।५।७।९
नेष्टरविः—४।८।१२
नेष्टचन्द्रः—४।८ पूज्यचन्द्रः—१२
श्रेष्ठचन्द्रः—१।२।३।५।६।७।९।१०।११

ध. मी. कर्क राशि में हो तो नेष्ट गुरु भी श्रेष्ठ है।

कन्यावरयोः तैलादि लापने (बन्न) दिनसंख्या

राशि	१।२।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२
तैलादि ला.	७।५।९।९।५।७।७।९।५।९।५

अथ विवाहे तिथिवारनक्षत्राणि

रो. मृ. उत्तरा ३. भ. ह. स्वा. अनु. मू. रे. एतद्वेधरहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षयरहिततिथिषु कात्यायनमते अश्वि. चि. श्र. धनिष्ठास्वपि शुभम् ॥

अथ विवाहाङ्गकृत्यारम्भमुहूर्त—वर कन्या को चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाह दिन से पहले ३।६।९ इन दिनों को छोड़ कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रयमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगल कलशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगन सफाई, भूषण गढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध मंगल स्नानादि सर्व कार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाहमुहूर्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रांतिसाम्य और दग्धातिथि इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सब का विचार करके इस वर्ष के विवाहमुहूर्त लग्न दिये हुए हैं। इन दस दोषों में जो जिस मुहूर्त में हैं वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

लत्तादोषज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्ननक्षत्र
दक्षिण	बाम	दक्षिण	बाम	दक्षिण	बाम	दक्षिण	बाम	दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम	बन्धुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षय.	मरणं	फलम्

यथा—सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ. फा. १२ वां हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ; इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

२ पातदोषज्ञानाय चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.	विवाहित
०	मृ	अ	कृ	भ	कृ	अ	रो	भ	भ	अ	पातदूषित नक्षत्र
पुन	आ	मृ	आ	मृ	श्र	आ	ज्ये	पुन	ध	ज्ये	
श	ज्ये	ज्ये	वि	श	ध	उषा	ध	श	वि	ध	
पू.फा.	ध	पुष्य	पू.भा	पूषा	पुष्य	पूभा	श्ले	वि	उ.फा	म	
चि	म	ह	०	स्वा	ह	पूषा	मू	अनु	०	पूफा	
मू.	ह	रे	पूभा	म	रे	पूफा	उभा	उषा	मू	स्वा	

हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इस नक्षत्र में विवाह करने से पात दोष होता है।

३ युति—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता किन्तु श्रेष्ठ है। सू. मं. शु. श. रा. के. की युति दारिद्र्य मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की विशेष करके वर्जित है।

६ बाणज्ञानाय सुलभचक्रम्

बाण नाम	गतांशाः राशौ	प्रति अर्कस्य ५ कर्म वर्ज्याः	वार-समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्ध	रवौ रात्रौ त्याज्यम्
वह्नि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे सदैव वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृपसेवायां	मन्दे दिवा त्याज्यम्
चौर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे संध्ययोः वर्ज्यम्

१० संक्रान्तिविशेषः

३ १२	२ ११	४ १	६ ३	५ ८	१० ७	सूर्य राशयः
२	४	६	८	१०	१२	तिथयः

इन संक्रांतियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं सो विवाह में वर्जनीय हैं।

भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीनं विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्॥

लत्तादिदोषाणां परिहारवाक्यानि—लत्तामालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे पातश्च कुरु (कुरुक्षत्रे बांगर) जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रान्त) एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्॥ उपग्रहर्क्षं कुरुवाह्लिकेषु (आगरा प्रान्त अवधस्थान) कलिङ्गवंगेषु (जगन्नाथ-पुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्॥ सौराष्ट्र (काठियाबाड़) शाल्वैः (उज्जैन प्रान्ते) च लत्ताभं त्यजेद् सिद्धं किल सर्वदेशे॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुरादि प्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः।

विशेषपरिहार—चित्रां गते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः। पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः।

युतिपरिहारः—स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा। अत्यावश्यके वेधपरिहारः—पादमेव शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः (नारदः)॥ अतोऽन्त्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम्। तृतीयको द्वितीयकं चतुर्थगस्तु चादिमम्॥ भिनत्ति वेधकृद्ग्रहो न चान्यपादमादरात् (वशिष्ठः)॥ अथ पापग्रहेण भुक्त-भोग्यक्रान्तनक्षत्रस्य शुभेषु त्यागः—भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभा-शुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः॥ अस्यापवादः—ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण भुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते। जामित्रपरिहारः—(व्यवहार समुच्चये)—स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्रवर्गगे। हृत्वा जामित्रकृद्दोषं करोति विपुलं सुखम्। मूहूर्तचिन्तामणावपि—एकार्गलोपग्रहपातलत्ताजामित्रकर्तर्युदयास्तदोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपन्ना लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः।

४ वेधदोषचक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.
अभि.	उषा.	श्रवण.	रे.	उभा.	श.	भ.	पुन.	मा.	ह.	उफा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेध दोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिए।

५ जामित्रदोषचक्रम्

रो.	मृ.	म.	उ.	ह.	स्वा	अनु.	मू.	उ.	उ.	रे.	न.
अनु	ज्ये.	ध.	पू.भा.	उ.भा.	अ.	कृ.	मृ.	पुन.	उ.फा.	ह.	श्र.न.

विवाह लग्न से सातवें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र हैं और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं, याने १४वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय है।

७ एकार्गलदोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कुम्भ शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

८ उपग्रह

सूर्य के नक्षत्र से ५वें ७वें ८वें १०वें १४वें १५वें १८वें १९वें २१वें २२वें २३वें २४वें और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

९ स्थूल क्रांतिसाम्यदोषचक्रम्

मे०	वृ०	मि०	क०	कं०	तु०
सिंह०	म०	ध०	वृश्चि०	मी०	कुं०

नीचे या ऊपर की राशि पर सूर्य हो या चन्द्रमा हो तो स्थूल क्रांतिसाम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य, सिंह के चंद्रमा में वा सिंह के

विवाहे लग्नशुद्धिचक्रम्

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
चं						च.	सर्व	चं मं.				श.	
पाप		०	०	रा.	०	श. लग्नेशः		शुभाः लग्नेशः	०	०	०		त्याज्याः

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्नभंगयोगाः—व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तोऽज्ञागुरुसमी)॥ वर्गोत्तमं विनाम्श्यांशो विवाहे न शुभप्रद.। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च। यदा लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ पंग्वन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः बादरायणः—मासशून्याह्वयास्तारा राशयो बधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः॥

कर्तरीदोषः—लग्नस्य पृष्टाग्रगयोश्च साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारी न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः॥ "इयं कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः—पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहनीचास्तगौ कर्तरीदोषौ नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमे दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणः सह। अपवादान्तरम्। उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्रसंस्थः सितो वापि पञ्चगान्गरुडो यथा। मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांश-ग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यथैकादशगः शशी। अब्दायनर्तुमासोत्थः पक्षति-थ्यर्क्षसम्भवाः ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे। लग्नाधिपो यदा केन्द्रलग्ना-देकादशालये॥ सर्वग्रहकृतं रिष्टमकोपि विलयं नयेत्। बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम्॥ द्यूनं विहाय वैस्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिराः। स्मरण रहे कि पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तम रहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

र.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्तगणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३		स्थानानि	
६	३	६	२	२	२	६	३	३		
८	११	११	३	३	४	८	८	८		लग्नं शुभं विवाहे स्याद्दशविशोपकाधिकम्।
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विशोपकाबलम्

अथ गोधूलिलग्नविचारः—लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्व-वर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्। लग्न यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्न विशुद्ध सति वीर्ययुक्तं गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते। मार्ग. माघ, फाल्गुन संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चै. वै. में गौओं की धूली से आकाश आच्छादित होने पर ज्येष्ठ आषाढ में सूर्य आधा अस्त होने पर श्रा. भा. अश्वि. का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्यदोषः—कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तदा गोधूलिके त्याज्यः पञ्चदोषस्तु दूषितः। "अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्क" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना।

संकीर्णचाण्डालादिजातीनां विवाहमुहूर्तः—कृष्णपक्षे भानु-भौमार्कजानां, वारे योगे चापि धिष्ण्यं निषिद्धम्। संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं प्रीत्यर्थायुः प्राप्तये शौनकाद्याः॥

पुनर्विवाहे सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्।

३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भंग	श्री	उन्नति	फलम्

अन्यच्च—सूर्यभात् ४।११।१८।२५ सख्यकसाभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथिमासवेधभृगुगुर्वस्तादिदोषोऽपि नावलोकनीयः।

वधू प्रवेश का मुहूर्त—जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहल आती है वह वधू प्रवेश कहा जाता है। विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन, इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरान्त ३रे ५वें वर्ष म भी स्थिर लग्न में वधूप्रवेश शुभ है। वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढ़त्व का भी विचार नहीं करना। व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा। अमासंक्रांतितिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि तां चरेत्। रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३. पुष्य, अनु. इन नक्षत्रों में और च. बु. बृ. शु. श. इन वारों में १। २। ३। ५। ६। ७। ८। १०। ११। १२। १३। १५ तिथियों में ५। ८। ११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधूप्रवेश शुभ है।

प्रवेशस्य समयमाह—वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

विवाहतः प्रथमवर्ष वधूनिवासफलम्—विवाह के बाद आषाढ़ मास म कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास म पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं।

द्विरागमन का मुहूर्त—प्योके से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक, कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २,३,६,७ या १२ वीं

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्, तीनों उत्तरा. रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. मृ. र. चि. और अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः—द्विरागमे षोडषवासरान्ते एकादशाहं समवासरेषु। नचात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वारमुखयादि विचारणीयम्।

शुक्रस्य सम्मुख दक्षिणे निषेधः—सम्मुख या दक्षिण शुक्र म यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीडन आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवं विवाहसम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध म जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः—सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे संमुखेऽस्तगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे॥ अत्यावश्यकेऽभिमुखेशुक्रदोषनाशाय शान्तिः—राजते वाथ सौवर्णे कांस्य पात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते॥ निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ताफलान्वितम्। महाश्वेतगवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्।

प्रथमस्त्रीसंगममुहूर्त—रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध. उत्तरा ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर प्रथम दिन स्त्री संगम करे। मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्तव्य—स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करे आदर सत्कार करे। विशेष गुप्त बात न कहे। और विशेषाधिकार भी न दे, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती। अपवाद में एक दो हो सकती हैं। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उनका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े हाथी सांड़ भैंस आदि अपनी स्त्री पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववध्वां पाककर्ममुहूर्तः—द्विरागमनोत्तर मृ. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र. ध. श. रो. वि. रे. एषु नक्षत्रेषु शुभावसरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २।५।८।११ लग्नेषु,चतुर्थाष्टशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम्।

सधवास्त्रीणां वस्त्रसुवर्णरत्नभूषणादिधारणमुहूर्तः—ह. चि. स्वा. अनु. धनि. र. अश्वि. एषु भेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावस्यारहिततिथिषु, नूतनवस्त्रसौवर्णरत्नरजतदन्तादिभूषणानां धारणं प्रशस्तम्॥

चूड़ीचक्रम्—सूर्यनक्षत्राद् गणना ८ अशुभ। ३ शुभ। ४ शुभ। ७ अशुभ। २ अशुभ। १ शुभ। २ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः—विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्षमापालेन समर्पितम्। निन्द्येऽपि धिष्ण्यवारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।

भूषणघटनमुहूर्तः—ह. अ. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३. रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहिततिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्॥

दुकान खोलने का मुहूर्त—ह. चि. रो. र. उत्तरा ३. पुष्य. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़ कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर

में पापग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पाप रहित हो, अपनी शुभ दशा भी चलती हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भर्तृगृहात्पितृगृहागमनमुहूर्तः—पूर्वा ३ भ. मू. म. ज्ये. आ. आश्ले. एतद्भिन्नेषु, चं. बु. शु. वारेषु सत्तिथौ शुभलग्न कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः॥

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त—भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पू. ३, ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्र—सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन तक नक्षत्र गिनकर चक्र स शुभाशुभ फल जाने।

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैऋत	सन्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोर भय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी)-मुहूर्तः—अ. मृ. चि. ह. पुष्य. अनु. रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र. बु. वृ. शु. वारेषु शुभः। लग्नस्थे, १०।११ सूर्ये भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीशयोनिमैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भमुहूर्तः—अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा ३, ह. चि. अनु. श्र. रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू. चं. बु. वृ. श. वारेषु शुभयुते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्ट रहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः स्यात्॥

द्रव्यप्रयोगमुहूर्तः—पुन. स्वा. मृग. रे. चि. नु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु ९।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९।५ शुभग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।

ऋण लेने के लिये वर्जितकालः—मंगलवार संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण लेतो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुध वार को धन नहीं देना चाहिए। कृ. रो. आर्द्रा, श्ले. उ. ३, वि. ज्ये. मू. नक्षत्रों में भद्रा व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

श्रीकाशीनाथमते क्रयविक्रयमुहूर्तः—पुष्य. पू. भा. अनु. श्र. ह. म. स्वा. उत्तरा. ३, आश्ले. रे. एषु. भेषु, सत्तिथौ शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि. वारों में बुध, रवि श्रेष्ठ माना गया है।

वस्तु बेचने के नक्षत्र—पू. फा. पू. षा. पू. भा. वि. कृ. श्ले. भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं।

नोट—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फी सदी नुकसान रहेगा इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने बेचने के नक्षत्र दिखाये गये हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना ऐसे व्यापारी क्या करेंगे इन नक्षत्रों को। लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अवश्य ध्यान कर तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सच है।

नालिश (अर्जी) का मुहूर्त—४।९।१४ तिथि हो, मं. श. वार हो. कृ. आर्द्रा. भ. अ. श्ले. म. ज्ये. म. वि. पूर्वा ३. नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

ग्रामभात् वासकृत् नक्षत्र यावद् गणना कार्या स्थाननक्षत्रफलम्		
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवे, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वजा, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ स्वान, ५ वृषभ ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ हैं।

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौडाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवे। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तु भूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृह... बनाना हो तो भूमिपूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा एक हाथ लम्बा एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिये पृथ्वी की शुभाशुभपरीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदे कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदे। खोदते समय जो जमीन में पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़ राख बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं. बु. गु. शु. श. वारों में. रो. मृ. चित्रा ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे. वेधरहित नक्षत्रों में., २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्स चक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ-नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षी	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुख	३	पीड़ा असत्

विशेषः—पुष्य. ३ रो. म. आश्ले. पू.षा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्र में और बृहस्पति को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो. ह. अ. उफा. चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं वि. अ. चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिसपर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्—"संक्रांति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय। इस इक्कीस २४ में षट् दिन पृथ्वी सोय। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।१।१।७।६।२।१० एता घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। अन्यच्च सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूपविचारः

मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
अर्थहानिः	सुपुष्टिः	सुप्राप्तिः	पुत्रनाशः	स्त्रीनाशः	गृहेशनाशः	संपत्	सुखम्	शत्रुभयम्

अथ चुल्लिचक्रविचार

सूर्य के नक्षत्र से ४ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावे तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतनगृहप्रवेश मुहूर्त

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठमासेषु शोभनः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग)-कार्तिकमासयोः॥ (यहां चान्द्रमास लेना) उत्तरा ३. अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में चं, बृ. श. इन वारों में २।५।८।११ लग्नों में अत्यावश्यके ३।६।९।१२ लग्न में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों ३।६।११ में क्रूर हों, १।६।८।१२ वें चन्द्रमा न हो, चौथा ८ वें स्थान शुद्ध हो, जन्म लग्न या जन्म राशि से ८ वीं राशि लग्न में न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमाला युक्त कलश शंखध्वनि मंगलगान के साथ दम्पति को गृहप्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण या तृण कुटीर अथवा अग्नि-वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै. श्रा. का. मार्ग. फा. मास में शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्
खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागः शुभदो भवेत्

राहुमुख	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्यः	मी. मेष वृष	मि. क. सिंह	कर्क तुला वृश्चिक	धनु मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सि. कं. तु.	वृश्चि. ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कन्या
जलाशयारम्भे सूर्यः	म. कुं. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धनु
खातदिशाज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्याम्	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्
सूर्यनक्षत्रात्

स्थान.	न.	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोण	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ॥

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्
सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु. ह. तीनों. उ, रो. ध. श. म. पू.षा. रे. पुष्य. मृ. नक्षत्र हों वा चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हों, शुक्र १० वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूपचक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्य ३ अमृत जल

गणनाक्रम—मध्यपूर्व आग्नेय दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्

सूर्यभात्तडागचक्रम्

ई. २. जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रम—पूर्व आग्नेय द० नै० प० वा० उ० ई० मध्ये वारिवाहः।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान अ. भ. कृ. मध्यजल	पूर्व पुन. पु. श्ले. जलाभाव	आग्नेय म. पूफा. उषा. मध्यजलम्
उत्तर पूभा. उभा. रे. मिष्टजलम्	मध्य रो. मृ. आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण ह. चि. स्वा. जलाभाव
वायव्य श्र. ध. श. क्षारजलम्	पश्चिम मू. पू. उषा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्य वि. अनु. ज्ये बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्तं :—

देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे।
माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने ॥
मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः।
महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।

अश्वि० रो० मृ० पुष्य, ह० चि० स्वा० अनु० श्र० ध० श० उत्तरा० ३. रे० एषु भेषु कुजशनिर्वजितवारेषु २। ३ । ५ । ७ । ८ १०।११।१२।१३ एतत्तिथौ शुक्ले १ । २ । ३। ५ तिथिषु कृष्ण, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर-(२।५।८।११) लग्नेषु लग्नात् १।४।७।१०।९।५।२।११ स्थानेषु शुभैः, ६ । ११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्ण देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवताविशेषेण लग्नम्—सिंहे सूर्यो शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्वरे क्षुद्राद्यं ददेव्यः स्थिरेऽखिलाः। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिने यदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः।

वास्तुशान्तिमुहूर्तः—श्र० ध० मृ० मू. अनु० रे० ह० चि० स्वा० उत्तरा ३. पुन. पु. रो० अश्वि० एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है—जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़कर एक और जोड़ना पनः ४ का भाग देना यदि पूरा भाग लग जाय (० शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राण हानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी। इसक बाद आहुतिचक्र जरूर देखिए।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू०	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेषः—यात्रा विवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्। महारुद्रे व्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत। दिग्दाहेप्यथवा घोर ग्रहास्ते भूमिकम्पने। कतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत् ॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सुरालये अग्निचक्रमवलोकयेत्सुधी ॥ दुर्गभंगे गृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकर्म नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्ष्यते ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

...या उवार प्रक्षणीय कुम्भिके । आवना प्रतिमा कु...
...मधुरत्नाचरचिता प्रतिमां ततः । कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते ॥

अथ ऋणी-धनी विचारः—स्ववर्गद्विगुणां कृत्वा परवर्गेण योजयेत् । अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ॥

यथा—अपने वर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना फिर ८ का भाग देना । फिर दूसरे का वर्ग दुगना करके अपना वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना ; जिसका भाग शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना ।

हलप्रवहणमुहूर्त—मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पु. श्र. ध. श. मू. म. वि. एषु भेषु रिक्तामाषष्ठयष्टमीरहितसत्तियौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम् ।

हलचक्रम् सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें					बीजवपने राहुचक्रम् राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
३	८	९	८	नक्षत्र	८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्तः—ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा ३. चि. अनु. म. रे. स्वा. ध. म. मू. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः ।

विशेषः—रवौ रौद्रा (आर्द्रा)—द्यपादस्थे यदि संजायते रजः ।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत् ॥

नवान्नभक्षणमुहूर्तः—मृ. र. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है ; नन्दा रिक्तातिथियों और पौष चैत्र को छोड़कर सू. बु. गु. शुक्रवार शुभ हैं ।

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्त—अश्वि. पुन. पु. ह. वि. ज्ये. धनि. शत. र. नक्षत्र में गौ लेना बेचना । अन्य पशु पुन. पूर्वा ३. ह. अनु. ज्ये. मृ. धनि.. रे. में लेना बेचना शुभ है । गाय लेनी हो तो उ. फा. से दिन नक्षत्र तक गिने, ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है । वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक फिर दो दो के क्रम से गाय के समान फल जानो । महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौनक्षत्रगणना क्रमसे शुभाशुभ-फल सूर्य नक्षत्र तक गिनें (नौमी चौदस चौथ चौपाया । मंगल हानि करे घर आया)

सूर्यनक्षत्रात्मकाष्टादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्

६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र संख्या
उत्तमपाक शुभ	शवदहन नेष्ट	सर्पभय नष्ट	मित्रलाभ शुभ	रोगभय नष्ट	क्वाथकर्म नेष्ट	सुख शुभ	फलम्

...ह. चि. अनु. उत्तरा ३. रो. ह. पुष्य, अश्वि. श. मृ. वि. नक्षत्रों में रिक्तारहित शुभ तिथियों में और चं. बु. वृ. शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१।११।१२ लग्न में शुभ है । तृणकाष्ठादिसंग्रह निषेधः—तृण काष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कर्म कुम्भ, मीन के चन्द्रमा में नहीं करना चाहिए ।

औषध का मुहूर्त–ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. र. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल, जन्मनक्षत्र को छोड़कर इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़कर शुभ तिथियों में, भौम शनि को छोड़कर अन्यवारों में शुभ है ।

अथ यात्रा मुहूर्तः—

ह. म. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन ध. अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा ; रो. उत्तरा ३. पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या ; भ. कृ. आर्द्रा, आश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एषु भेषु निन्द्या । तत्रात्यावश्यकत्वेऽपि यात्रायां भरण्यादिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका गमनकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा ।

दिग्द्वारलग्नानि

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	शुभम्
२।६।१०	३।७।११	४।८।११	१।५।९	मध्यम
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	भयम्
१ १	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	म० भ०

यात्रा में शुभाशुभ लग्न–जन्मलग्न और जन्म राशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांक में यात्रा कदापि न करे । शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।१०।११ वें पापग्रह हों । अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा १० वें शनि, ६ वें शुक्र, १२।६।८वें लग्नेश हों । अन्यच्च यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा । दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने ॥

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों वा मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा वा देवदर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित है ।

दिक्शूलज्ञानायचक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
पूर्व	आ.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि	वाय.	उत्तर.	ईशा.	दिशा	पू.	द.	प	उ
चं. श.	चं.बु.	गुरु	सू.शु.	सू. शु.	भौम	मं.	बु. गु.	वार:	ज्ये.	पू. भा.	रोहि.	उ.फा

दिक्शूलपरिहार :—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्यज्यदिवाकराणाम् । दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्रवारे पयस्तथा । गुडमंगारके वारे बुधवारे तिलानपि । गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि । माषान्भक्त्वा शनिवारे शूले गच्छन्न दोषभाक् ॥२॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यात्रा में कालज्ञान

शनौ	पूर्वे
शुक्रे	आग्नेय्यां
गुरौ	दक्षिणे
बुधे	नैर्ऋत्ये
भौमे	पश्चिमे
चन्द्रे	वायव्ये
रवौ	उत्तरे

सम्मुखे नेष्ट

योगिनीवासचक्रम

पू०	अग्नि०	दक्षि०	नैर्ऋ०	पश्चिम	वाय०	उत्तरे	ईशा०	दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बांये की शुभ, युद्ध यात्रा की बांयें ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है। समयशूल उषा काल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्ध रात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नही जाना चाहिए। गर्गगुरु अङ्गिरामुहूर्त—गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाय। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषाकालः सप्तपञ्च (५७) अरुणोदयः। अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रात शेषं सूर्योदयो भवेत् ॥

चन्द्रवासचक्रम्

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यक-षट्यात्मकचन्द्रवासचक्रम्

पू.	द०.	प०	उ०	पू०	द०	प०	उ०	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	घटी

षट्यात्मक चन्द्रवास जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिये।

कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषा लयं यान्ति पूर्णचंद्रे हि सम्मुखे ॥इति॥ सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा—करण-भगणदोषं, वारसंक्रान्ति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं यामयायार्द्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमा सम्मुखस्थः ॥

सर्वाङ्कसिद्धियोगः—शुक्लादि तिथि वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रख क्रमशः ७।८।३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य जय लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत को मत जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे, क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्णक्रमेण प्रस्थानविधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेऊ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान से पूर्व रक्खे। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करे।

दिने चतुर्घटिकामुहूर्तम्

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध.	बृह.	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रौ चतुर्घटिकामुहूर्तम्

घटा	सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.
३॥	शु.	चं..	का	उ.	अ.	रो.	ल.
७॥	अ.	रो.	ला.	शु.	चं.	का	उ.
११।	चं.	का	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.
१५	रो.	ला.	शु.	चं.	का.	उ.	अ.
१८॥	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	च.
२२॥	ला.	शु.	चं.	का	उ.	अ.	रो.
२६।	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	ज.	का.
३०	श.	चं	का.	उ.	अ.	रो.	ल.

सूचना—यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी फल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभशकुनानि—मृग बांये दाहिने जो आवे तत्काल। अन धन लक्ष्मी बहु मिले चलते प्रातःकाल ॥ विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल निर्मल वस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुतस्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, सजलपूर्णघट, यात्रा पश्चाद्रिक्त घट, यात्रा समय देखने में शुभ हैं। **अशुभशकुनानि**—वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जार युद्ध, कुटुम्बकलि, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन, छिक्का, दुष्ट-वाणी, यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

रामदैवज्ञोक्तम् आवश्यके यात्रामुहूर्तचक्रम्

पो०	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	कष्ट	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तृतीया-त्रयोदशी चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना, अ॰.वस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, कार्य सिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रामुहूर्त—चि. ह. पु. मृ. पूर्वा ३. अनु. श्र. ध. एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र-तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्तः—मृ. रे. अनु. रो. उ. ३. ह. अ. पुष्य. स्वा. श्र. ध. एषु भेषु चं. बु. वृ. शु. श. वारेषु १।२। ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।३।८।९।११।१२ एषु लग्नेषु, १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८ शुद्धौ शुभः; वि. कृ. पू ३. भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा. आश्ले. नक्षत्राणि ; ४।९।१४।६। १२।८।३० तिथयः सू. मं. वारौ. १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मंगल को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है—विशेषः—प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति।

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

म.	व.	मि.	क.	सि	क.	त	वृ.	ध.	म.	कु.	मी	राशया
म.	क.	कु.	मि.	म.	सि.	ध.	वृष.	मिथुन	सिंह	ध.	कुम्भ	घातचन्द्र
र.	श.	च.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	वृष.	शु.	घातवार
म.	ह.	स्वा	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे	भ.	रो.	आ.	श्लेषा	घातनक्षत्र
मे.	व.	ध.	मि	वृश्चि	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि	मि.	मेष.	चन्द्रघात
का.	मा	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	वै.	ज्ये.	आ.	श्राव.	भा.	आ.	घातमास
वि.	सु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	शूं	वृष.	वै.	गं	व्या.	वै.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	३१	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	३	८	९	८	१०	
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	

युद्ध, विवाद, राजसेवा, वाहन रोगादि कार्यों में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं है। 'घाततिथिर्घातवारघातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञस्त्वन्यकर्मसु शोभनम्।'

वाम दक्षिण निर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का कहा वह ही सरट (गिरगट) के चढ़ने का जाने। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल तथा होता है।

अथांगविभागे पल्ली-(छिपकली, कोड़किरली) पतनफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्टान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुर्वृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यृक्षाणि—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु. अश्विनी, रो. मृ. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. य नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। अतोऽन्येषु भेषु निन्द्याः।

पल्लीपाते कर्तव्यकर्म—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करे। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्ध दिन भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्तलग्न में तथा अष्टमचन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान करना भी उत्तम है।

छिक्काफलम्—छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग अथवा—छींक सूँघनी छल कर लीन्हीं, पीनस सरदी घास फल होनी। छींकि पीठि की कुशल उचारे; बाईं कारज सबै सवारे ॥१॥ सन्मुख छींक लड़ाई भारे; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जय कारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥ कन्या विधवा मालन धोवन धोबिन रजस्वला वैश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्का—आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः। एक नाक दो छींक; काम बने सब ठीक ॥

तीर्थ में मुण्डन विचार—मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः, वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रे विशालां (उज्जयिनी) गिरिजां गयाम्।

हर प्रकार की पुस्तकें—मिलने का पता:—
मोतीलाल बनारसीदास, बैंग्लो रोड, जवाहरनगर देहली-६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अंगस्फुरणफलम्

पुरुषों का दायां अंग और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है ।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षःस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधः	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोष्ठवृद्धि		मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	वस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्रपक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	उरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नपत्वबृद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल लसन मस्सा हो वा खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना । पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो । राजाओं के हाथ में तिल या खाज हो तो जय होती है । साधारण व्यक्ति को लाभ होता है ।

उत्पातफलचक्रम्

उत्पात	फल	उत्पात	फल	उत्पात	फल
दिग्दाह	वर्षा न हो	भूकम्प	प्रजा को भय	सर्वग्रहअतिचार	शुभ फल
धूल वर्षे	दुर्भिक्ष पड़े	पहाड़ टूटे	राजा की मृत्यु	मूसल निकले	युद्धमहर्घता
पत्थर वर्षे	अकाल हो	वृक्ष टूटे	राजा को भय	धूम्रकेतु उदय	राजभंग करे
तारे टूटें	जनक्षय	उलटी ऋतु	रोग विशेष	२।३।४ शूलोद	राजनाश
बिजली टूटे	जल सूखे	आदमी के पशु हो	राजविघ्न	सुवर्ण पंक्ति	राजनाश
दिनअंधेरा	प्रजाक्षय	गृहयुद्ध	राजाओंमेंविग्रह	त्रिकोणतारा	प्रजानाश
ग्रहसंयुति	अकाल	सूर्यचंद्र मंद पड़े	देश क्षय	वन्यपशुगांवबसे	मनु. शून्य हो
श्वेतमण्डल	भय हो	कृष्णमंडल	राज्य नाश	घर उल्लू बोले	गृह शून्य हो
पीतमंडल	रोग हो	धूम्र मंडल	बर्फ पत्थर पड़े	बांकी कबूतर-	गृहस्वा. नाश
नीलमंडल	वर्षा हो	बिना ऋतु फल	अन्न नाश	घर में बसे	
रक्तमंडल	युद्ध हो	सूखीभूमिगीली	बहुत वर्षा	सू. चं. बिम्ब	रोगभय
स्त्री बध हो	दुर्भिक्ष पड़े	विप्रबालक बध	दुर्भिक्ष पड़े	अधिक देखपड़े	राजनाश
देवध्वंस	राजनाश	सर्वग्रास	सबवस्तु मंहगी	भूमिकम्प	दुर्भिक्ष

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं विधिश्च

सू.	च.	मं०	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
	सुकांति	मृति	श्री.	वित्त	विरति	सुख	फलम्
				हानि		सुयोग	
तापम्							
पर्णं	०	मनि	०	दर्भा	गोमय	०	पालन

तैलाभ्यङ्गे वर्ज्यानि

तदात्राह—

रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांतौ वैधृतावपि । षष्ठ्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च, तैलाभ्यंगो न पर्वग ।

विशेष—यदि प्रतिदिन तैल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है । अभिमन्त्रित, औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल, सुगंधित तेल लगाने स किसी दिन दोष नहीं है ।

काकस्पर्शादी फलम्—मस्तक पर काक स्पर्श धन नाश, मरण तथा कलह करता है । कमर, कन्धे पर अशुभ होता है । स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति पुत्र का नाश करता है । वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है । काकमैथुन देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्यु तुल्य कष्ट वा इच्छित कार्य नाश करता है । इसके दोष दूर करने के निमित उड़द के आटे को काक प्रतिमा मृण्मयपात्र में स्थापन कर उड़द, चावल, घी, मीठा का नैवेद्य देवे, ग्राम स दक्षिण की ओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (वा करावे) पूजाछाया पात्र दान और पञ्चगव्य से स्नान भी करे । इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते हैं ।

अथकाकवचनफलविचारः—काकस्य वचनं श्रुत्वा पादच्छायां तु कारयेत् । त्रयोदशपदं दत्त्वा षड्भिर्भागं समाहरेत् । लाभश्छेदस्तथा सौख्यं भोजनं च धनागमम् । निःशेषं मरणं व्याधिरेतत्काकस्य लक्षणम् ।

कपोतः (कबूतर)—सिर पर गिरे वा स्वपालित् कबूतर के बिना अन्य कबूतर घर में बसें वा उल्लू गृह में चला जावे तो मृत्यु व मान स्थान हानि होती है, तद्दोषनिवृत्त्यर्थ दुर्गापाठ, होम सप्तधान्य दानादि करने से शान्ति हो ।

मुष्टिचक्र

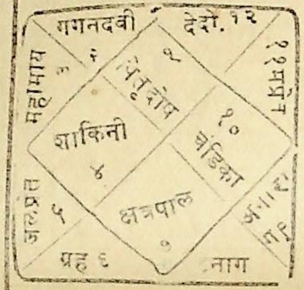

अङ्क प्रश्न तथा फल वर्णन

प्रश्नकर्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख स कहलावे या लिखावे । उसमें बारह का भाग देकर पीछे यदि १।९।७ बचे तो देर से कार्य सिद्धि होवे । यदि ८।४।१०।५ बचे तो कार्य नाश होवे । ११ बचे तो सिद्धि. २ बचन से वृद्धि ३।६।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि होवे यह फल कहे ।

अथ स्वप्न-विचार

स्वप्न ७ प्रकार का होता है, प्रथम दृष्ट (दिन में देखे हुए को देखना), द्वितीय श्रुत (सुने हुए को सुनना). तृतीय अनुभूत (जाग्रतावस्था में ...)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(दिन में कल्पना की हुई वस्तु को देखना), षष्ठ भाविक (न देखो न सुनो उससे विलक्षण) सप्तम दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से)। पूर्वोक्त सात प्रकारों में से "दृष्ट, श्रुत, अनुभूत, प्रार्थित, कल्पित" ये पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है। सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है। इतना विशेष है कि बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। सुजन देखकर पुनः स्नानादि से शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल, पुष्प, दक्षिणा रक्खे, स्वस्थ चित्त से स्वप्न का वर्णन करे शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे।

शुभस्वप्न---राजा, विप्र, देवता, गुरु, श्वेत वस्त्र वाली स्त्री इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना, महल, पर्वत, सिंह, अश्व इन पर चढ़ना व दर्शन करना, रक्त से स्नान, रथ शय्यादि का ज्वलन, स्व शिर का छेदन, अपना मरण, देव ध्वनि श्रवण, रक्त पीत पुष्प दर्शन, दर्पण प्राप्ति, दही चावल भोजन, जुआ, रण विवाद में अपनी जय, इन्द्र धनुष का देखना, मठा कपास इन दो वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु, स्वप्न में देखना धनैश्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि कोई क्लर्क या मुन्शी यह स्वप्न देखे कि उसने दफ्तर के रजिस्टरों वा बहियों में गल्तियां की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने को शाबाश व तरक्की मिलेगी।

यदि स्वप्न में फल पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट खाय तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वप्न में बिच्छू या सर्प के जल में पैर काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर हो कर सुख हो। श्वेत वस्त्र वाली स्त्री का स्नान करना, हाथों में हथकड़ी, पैरों में जंजीर का बन्धन पड़ना, नर या नारी के हाथ से जूती व खड़ाऊं, छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना, अपने पैर व भुजा के मांस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना, ऐसे स्वप्न दीखें तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने शिर के मांस को खाना राज्य लाभ करता है। गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्यमण्डल का दीखना, अपना मरना दीखे तो रोगी पुरुष का रोगनाश और निरोग पुरुष को लाभ होता है। बगुला, मुर्गी, कुब्ज का दीखना चतुर स्त्री प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त व मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्या लाभ क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस, चरबी का खाना, विष्ठा अपने अंग में लगाना, श्वेत चन्दन, श्वेत वस्त्र पुष्प से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष को देह देखना, लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर दे जाय तो भी लाभ हो। नदी समुद्र में तैरना, तालाब में तैर कर पार जाना, सूर्योदय का देखना कष्टनिवृत्ति करता है। ऊंचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है। राजा, गौ, ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दर फलयुक्त देखना बिगड़े काम सिद्ध होंगे ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई दुकानदार स्वप्न देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाए बिना भाग गया है तो उसको समझ लेना चाहिये कि हमको रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे, यदि किसी की बहन स्वप्न देखे कि उसके भाई पर भारी विपत्ति पड़ी है और उसकी जान खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो उसका किसी बड़े आदमी के साथ विवाह हो जाएगा, और यदि वह विवाहित है तो उसके घर में सब प्रकार से सुख शान्ति रहेगी। शुभ स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

अशुभस्वप्न---लाल वस्त्र पहिरना, सूर्य चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का टूटना, अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री का मंगल गाते देखना, नीमरकास के वृक्ष पर चढ़ना, रुई, कपास, तेल, लोहा, मिलना, इससे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना या किसी के द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु व भारी कष्ट को सूचित करता है। शिर के सार बालों का या मुख के दांतों का गिरना, द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन करना व किसी वस्तु को मांगकर लेजाना द्रव्य हानि व कष्ट करता है। तैलपक्व गुलगुले तथा तांबे के पैसे मिलना रोगसंकट सूचक है। अपनी स्त्री को कमोज को मरी स्त्रीं ले जावे तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो। हाथ, नाक का काटना, कीच (पंक) में फंसना, ऊंट गधे भैंस पर चढ़कर तैल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाहगोतमंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्तवस्त्रवाली स्त्री का आलिंगन करना, बंदर सर्प पर चढ़ना, श्राद्धआदि पितृकार्यों का करना, भूत प्रेत चांडालों के साथ मिलना, अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशामें जाना इत्यादि स्वप्न मृत्यु कारक होते हैं। नदीमें डूबना अथवा नदीके प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतु के वर्षा देखना बाघ, रीछ, गीदड़, बिलाव, भैंस, सर्प, मक्खी, का दर्शन, पर्वत शिखा का तथा बड़े महल व्वजा का गिरते देखना अशुभकष्ट व चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती, देव, विप्र इनके विना सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ व चिन्ताकारक है। अगर "विधवास्त्री" यह स्वप्न देखे कि उससे शादी करने का किसी ने सवाल किया है तो उसपर कोई सख्त बीमारी आवे या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर कूदकर दांतसे मास काटे तो शत्रु गुप्तमान से अनिष्ट करेगा।

स्वप्न का फल कब मिलेगा

रात्रि के प्रथम प्रहर का एक वर्ष में, द्वितीय का ८ मास में, तृतीय का ३ मास में तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है।

अशुभ स्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम, यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, अश्वत्थपूजन, विष्णुसहस्रनाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ, ब्राह्मणभोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देखकर फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

आयुनिर्णय---१---लग्नेश अष्टमेश से तथा जन्मलग्न और चन्द्र पर से आयुष्य का निर्णय करे। दोनों से एकवाक्यता न मिले तो जन्मलग्न, होरालग्न से आई आयु ठीक समझे; चरे चरे स्थिरे-द्विःस्वभाव-दीर्घायुः। द्विःस्वभावे-द्विःस्वभावे, चरे-स्थिरे मध्यायुः। स्थिरे-स्थिरे, चरे-द्विःस्वभावे-अल्पायु।

२---११,१,४,७,१०,५,९, इन स्थानों में लग्नेश, अष्टमेश और दशमेश के पड़ने से दीर्घायु होती है, ३।८ में पापग्रह हो, पणफर में भी यदि पापग्रह हो तो मध्यायु इसके अतिरिक्त अल्पायु।

३---लग्नेश सूर्य का मित्र हो तो दीर्घायु, सम हो तो मध्यायु, शत्रु हो तो अल्पायु।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अथ महर्षिपराशरोक्तविंशोत्तरीमहादशान्तर्दशाज्ञानचक्रम्

सूर्यदशा वर्ष ६				चन्द्रदशा वर्ष १०				भौमदशा वर्ष ७				राहुदशा वर्ष १८				गुरुदशा वर्ष १६				शनिदशा वर्ष १९				बुधदशा वर्ष १७				केतुदशा वर्ष ७				शुक्रदशा वर्ष २०			
कृ.उ.फा.उ.षा				रो. ह. श्रवण.				मृ. चि. ध.				आ. स्वा. श.				पुन. वि. पू. भा				पु. ऽनु उ. भा.				श्ले. ज्ये. रे.				म. मू. अ.				पू.फा. पूषा. भ.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा	दि.	ग्र	व.	मा.	दि	ग्रह	व.	मा.	दि	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७	रा.	२	८	१२	बृ.	२	१	१८	श.	३	०	३	बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८	बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९	के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	र.	१	०	०
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६	श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९	शु.	२	१०	०	र.	०	४	६	चं.	१	८	०
रा.	०	१०	१४	गु.	१	४	०	श.	१	१	९	बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०	र.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
बृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७	के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	र.	०	११	१२	चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	र.	३	०	०
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७	शु.	३	०	०	र	०	९	१८	चं	१	७	०	मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०	[illegible]	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९	रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	र.	०	४	६	चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६	बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	२
शु.	१	०	०	र.	०	६	०	चं.	०	७	०	मं.	१	०	१८	र.	२	४	२४	रा	२	६	१२	श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

शिवोक्तयोगिनीदशान्तर्दशयोर्ज्ञानार्थचक्रमिदम्

मंगला व. १			पिंगला व. २			धान्या व. ३			भ्रामरी व. ४			भद्रा व. ६			उल्का व. ६			सिद्धा व. ७			संकटा व. ८			दशा तथा वर्ष
चन्द्र			सूर्य			गुरु			मंगल			बुध			शनि			शुक्र			केतु			दशेशग्रहाः
आर्द्रा चि. श्र.			पुन. स्वा. ध.			पुष्य. वि. श.			आश्ले. ऽनु.पूभा			भ. म.ज्ये. उभा			कृ. पू.फा.मू.रे.			रो उ.फा.पू.षा.			मृ. ह. उषा			जन्म नक्षत्र
मं.	०	१०	पिं.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०	
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०	
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पिं.	५	१०	अन्तर्दशामासादि
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	सं.	१३	१०	मं.	२	०	पिं.	४	२०	धा.	८	०	शुभदशा—म धा. भ. सि.
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२६	मं.	१	२०	पिं.	४	०	धा.	७	१०	भ्रा.	१०	२०	नष्टदशा—पि. भ्रा. उ. सं.
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०	पिं.	३	१०	धा.	६	१०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०	
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पिं.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०	
सं.	२	२०	मं	०	२०	पिं.	२	०	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०	

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल जोडने से भयात होता है। ६० में से घटाये हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र की घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें, भयात की पलों को दशा के वर्ष से गुणाकर भोग की पलों से भाग देवे लब्ध अंक वर्ष, फिर शेषांक को १२ से गुणे, भभोग के पलों से भाग दें लब्ध मास, फिर ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें लब्ध दिन. फिर ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दे लब्धांक घटी, फिर शेष को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में घटाने से [illegible]

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थग्रहफलबोधचक्रम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
[illegible]	चिन्ता	पृ भीः	धनलाभः	हानिः	कष्टम्	शत्रुनाशः	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाशः	[illegible]	धनला.	पीड़ा
[illegible]	पीड़ा	धनलाभः	हर्षः	शत्रुनाशः	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योद.	[illegible]	धनला.	[illegible]
[illegible]	व्रणः	धननाशः	जयः	व्यसनं	दुर्गतिः	शत्रुनाशः	स्त्रीकष्टम्	पीड़ा	पुण्योदयः	[illegible]	धनला.	[illegible]
[illegible]	सौख्यम्	धनलाभः	सुखम्	द्रव्यलाभः	पुत्रलाभः	कलहः	धनलाभः	व्यग्रता	सुखम्	[illegible]	सुखला.	[illegible]
[illegible]	सुखम्	धनलाभः	जयः	वाह. ला.	पुत्रप्रा.	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्मलाभः	[illegible]	धनला.	[illegible]
[illegible]	मानप्रा.	धनप्राप्तिः	कीर्तिला.	सुखला.	धनलाभ	शत्रुभीतिः	स्त्रीसुखम्	कष्टम्	धर्मोद.	[illegible]	क्षेमला	[illegible]
[illegible]	वातार्तिः	पीड़ा	धनलाभ :	दुःखम्	पुत्रपी.	जयः	स्त्रीकष्टम्	रोगः	भाग्यहा.	[illegible]	धनला.	[illegible]
[illegible]	शिरोर्तिः	राजभी.	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाशः	शत्रुनाशः	रोगभीः	कष्टम्	धर्महा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	चिन्ता	क्लेश :	आरोग्यं	राजभीः	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्यना.	धनला.	लाभः	[illegible]
[illegible]	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टि.	दुःखम	सन्ताप्तिः	कष्टम	व्यसनम	दुःखम	भाग्योद.	राज्यप्राः	लाभः	[illegible]

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ केरलमते प्रश्न-विचारः

प्रातःकाल वदेत्पुष्पं मध्याह्ने तु फलं वदेत् । सायंकाले वदेन्मूलं रात्रौ तु देवतां वदेत् ॥

ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष	अष्टवर्गः
अइउएओ	कखगघङ	चछजझञ	टठडढण	तथदधन	पफबभम	यरलव	शषसह	प्रश्नाक्षराणि
अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	प्रश्ननिर्णयः
धा	धातु	मूल	जीव	जीव	जीव	मूल	जीव	प्रश्नः
कुशल	रोगी	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	कुशल	रोगी	प्रवासीप्रश्न
स्थिर	महाकष्ट	चंचल	चंचल	महाकष्ट	स्थिर	स्थिर	कष्ट	प्रवासीचरादि
समीप	समीप	दूर	पुनर्गत	मार्गस्थ	मार्गस्थ	दूरस्थ	पुनर्गत	प्रवासीकामार्ग
स्वल्प	सप्त	एकविंश	१ मास	सार्धमा	२ मास	६मास	१ वर्ष	प्रश्न दिनादि
पत्र	अस्थि	फल	काष्ठ	धान्य	तृण	जीव	पुष्प	मुष्टि प्रश्न
गोधूम	तिल	पाताल	दाल	तण्डुल	चणे	गुड़	यव	धान्य ज्ञान
कौसुम्भ	श्वेत	लोहितांग	पांडुनील	पीत	आकाश	श्याम	मिश्र	मुष्टि वर्ण
सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	रोगी प्रश्न
सप्तदिन	दो मास	पक्ष	१ मास	पक्ष	मास १	सप्तदिन	२ मास	कष्टदिन
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	नष्ट लाभः
पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैर्ऋत	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिक्षुनष्ट
ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	धानक	नौकर	टहलन	नाई	चौर जाति
ऊखले	अग्निगृहे	अरण्ये	अन्तरिक्षे	भांडगते	काष्ठशिल	गृहे	भूविमध्ये	नष्टस्थानम्
भैरव	जगदंबा	सूर्य्य	हनुमत	रुद्रगण	सरस्वती	गणेश	पितृ	देव पूजा
आगम	न आगम	आगम	नआगम	आगम	न आगम	आगम	नआगम	आगमनागमौ
जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जयजयहानि
न मोक्ष	मोक्ष	न मोक्ष	मोक्ष	न मोक्ष	मोक्ष	न मोक्ष	मोक्ष	बंदीमोक्षप्रश्न
सप्तदिन	१ वर्ष	पक्ष १५	मास ६	मास १	मास ६	मास ३	वर्ष १	दिनानि
स्थिर	न सिद्धि	त्वरितं	दीर्घकाल	त्वरितं	दीर्घकालं	स्थिर	न सिद्धि	कार्यसिद्धि
शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	व्यवहार प्रश्न
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	स्त्रीलाभप्रश्न
पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्रकन्या प्रश्न
शत	एक	शत	२०	६०	४५	७५	१५	आयु प्रश्न
विलंब	उत्तम	विलंब	उत्तम	उत्तम	न वर्षा	उत्तम	न वर्षा	वृष्टि प्रश्न
२७	७	३०	२०	१०	६०	३०	६०	दिनादि

रोगोत्पत्ति सन्तान प्रतिबन्धादि में देवदोष ज्ञान

प्रश्नलग्न से ३।६।९।१२ स्थान शुभरहित कोई पापग्रह हो तो विष जल शस्त्र से मरे हुए किसी स्वकुलोत्पन्न व्यक्ति का दोष जानें। यदि ८।१२ वें स्थान में राहु हो तो प्रेतदोष, गुरु हो तो पितृदोष, चन्द्रमा या शुक्र हो तो जलदेवी का दोष, सूर्य हो तो देवीदोष, (लग्न में सूर्य हो तो क्षेत्रपाल का दोष). शनि हो तो सती दोष, बुध हो तो भूतदोष, भौम हो तो शाकिनीदोष ईश्वर से विमुख मनुष्य को होता है। भौम स्वक्षेत्री १२ में हो तो छाया चुड़ैल, चौथे श. मं. राहुचौपाटिया, बली वा नीच भौम १।४।८ वें हो तो शत्रु के घर से मसाणी, १० सू. मं. सौकण, १२ भौम नणद बड़ी, ८ वें भौम नणद छोटी, ४ भौम भैण, १० मं. गु. सती कुल की, १० मं. चं. अपने दुर्गास्थान का दोष कहना यह ग्रह योग न हो तो केवल प्रश्नलग्न से दोष निम्नलिखित जानें। बलवान् मेषलग्न में प्रश्न हो तो पितृदोष कहें, वृष में हो तो आकाशदेवी का, मिथुन में हो तो महामाया का, कर्क में शाकिनी का, सिंह में जलभय प्रेतदोष, कन्या में केवल ग्रहदोष, तुला में क्षेत्रपाल का, वृश्चिक में नाग का, धनु में कर्मजन्य, मकर में श्रीदुर्गा का, कुम्भ में भूतप्रेत का, मीन में योगिनी का दोष कहें। बलवान् पापग्रह केन्द्र में हो तो पूर्वोक्त देवता असाध्य, शुभ ग्रह हो तो साध्य होते हैं अर्थात् मन्त्र स्तुति पूजन आदि से उसका दोष दूर हो जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

मूक प्रश्न का अनुभूत प्रकार

बिना पूछे किसी के मन का प्रश्न कह देने से ज्योतिषी की मानप्रतिष्ठा विशेष होती है और ज्योतिश्शास्त्र पर प्रष्टा की श्रद्धा भी बढ़ती है। एतदर्थ हम श्रीमार्तण्डपञ्चांग प्रेमी पण्डितों के हितार्थ अनुभव सिद्ध मूक प्रश्न का प्रकार लिखते हैं, जिस से मूक प्रश्न पूर्ण मिलता है। स्मरण रहे कि प्रश्नकालिक शुद्ध स्वदेशीय लग्न स्पष्ट तथा तात्कालिक सूक्ष्म ग्रह स्पष्ट बनाने में गलती न हो। हमारे पञ्चांग के दैनिक ग्रह स्पष्टों से केवल घट्यादि चालन द्वारा तात्कालिक प्रश्नोपयोगी सूक्ष्म ग्रह आते हैं।

प्रश्न कथन प्रकार—प्रश्न कुण्डली में नव ग्रहों में से इष्टदेव नमस्कृति पूर्वक देखिए जो ग्रह अधिक बली (उच्च, स्वराशि, मित्रराशि, मूलत्रिकोण, केन्द्रस्थ, स्वनवांश, वर्गोत्तमांश अर्थात् जिस राशि का ग्रह हो नवांश में भी उ। राशि का) हो, वह लग्न से जिस भाव में हो उस भाव का निःसन्देह प्रश्न कहे। यदि उस ग्रह की स्थिति द्वारा दो तीन प्रश्न निकलें तो उनमें से प्रष्टा की परिस्थिति, आयु देश और कालादि का विचार करके बुद्धि द्वारा जो ठीक बैठे वही प्रश्न कहे। जैसे किसी ने प्रश्न किया तो उस समय अन्य ग्रहों से बली राहु मिला और वह बैठा भी लग्न में है, तो राहु के प्रथम भाव में होने से पुत्र और विद्या का प्रश्न समझें। ऐसे दो प्रश्न निकले, अब प्रष्टा की ओर देखा तो उसकी आयु १६ वर्ष के लगभग है तो पुत्र एवं विद्या दोनों प्रश्नों में से ज्योतिषी को चाहिए कि उसे कहे आपका विद्या संबंधी प्रश्न है अगर वही प्रष्टा बड़ी उमर का हो तो पुत्र विद्या दोनों में से पुत्र का प्रश्न कहना युक्तिसंगत था, इत्यादि बुद्धिमान् ज्योतिषी को चाहिए कि मूकप्रश्न कहने के लिए शास्त्र और बुद्धि दोनों का उपयोग करके जो निकले वही कहे तो सत्य होगा।

सूर्य—

१ भाव में बली—शरीर संबंधी प्रश्न
२ „ में—धनसम्बन्धी
३ „ में—झगड़े का प्रश्न
४ „ में—जय उच्चता का
५ „ में—पुत्र सम्बन्धी
६ „ में—यात्रा सम्बन्धी
७ „ में—स्त्री सम्बन्धी
८ „ में—जहाज बेड़ी दरिया जल सम्बन्धी
९ „ में—यात्रा विदेश सम्बन्धी
१० „ में—राज कर्म सम्बन्धी
११ „ में—धनलाभ क्रयविक्रय विषयक
१२ „ में—शत्रु झगडा परदेश खर्च का प्रश्न समझे

चन्द्रमा—

१ भाव में बली होकर बैठा हो तो क्षेत्र धन और भोजन का प्रश्न
२ „ में—धन और झगड़े का
३ „ में—वर्षा और जल का
४ „ में—माता व मकान का
५ „ में—पुत्र का
६ „ में—रोग का
७ „ में—स्त्री का
८ „ में—भोजन चिन्ता का
९ „ में—मकान का
१० „ में—यात्रा का
११ „ में—क्षेत्र खाता दुष्ट पुरुष पवित्रता वस्त्र कपड़े, आदि का
१२ „ में—नष्ट वस्तु के लाभ का

मंगल—

१ भाव में बली हो तो—भय वा झगड़े का प्रश्न कहे।
२ „ में—नष्ट वस्तु का
३ „ में—भाई मित्र व क्लेश का
४ „ में—मित्र व वैरी का चौपाया व क्रयविक्रय का
५ „ में—क्रोध, नीति नौकरी का
६ „ में—सोना, सिक्का कली चांदी का
७ „ में—नष्ट वस्तु, नौकर, धन घर जमीन का
८ „ में—यात्रा का
९ „ में—झगडे का
१० „ में—शत्रु के आने का
११ „ में लाभ का
१२ „ में—झगड़े युद्ध का

बुध—

१ भाव में हो तो—शास्त्र व सुख का प्रश्न समझे।
२ „ में—वस्त्र, धन, शरीर का
३ „ में—साम भाई का
४ „ में—बावली, जल, खेती, बगीचा का
५ „ में—सन्तान और कार्यसिद्धि का
६ „ में—कार्यसिद्धि धन, खोई हुई गुप्त स्त्री की मैत्री का
७ „ में—पक्षी और स्त्री का
८ „ में—राजा व आज्ञा नष्ट चीज का
९ „ में—पशु पक्षी का
१० „ में—शास्त्र, कथा व सुखका
११ „ में—धन लाभ का
१२ „ में—पाखण्ड, द्रोह छल और सुख का

गुरु—

१ भाव में बली हो तो—सुख का प्रश्न समझो।
२ „ में—धन, कल्याण, सुखका
३ „ में—सम्बन्धी श्वसुर का
४ „ में—कुल संबन्धी विवाह का
५ „ में—पुत्र, प्रीति विवाह का
६ भाव में—स्त्री विवाद, और गर्भ का
७ „ में—अर्थ द्रव्य मंत्र सिद्धि
८ „ में—सुख का
९ „ में—परदेश, मार्ग, धन प्राप्ति का
१० „ में—मित्र फूटना और सुख का
११ „ में—स्थिति, सुख का
१२ „ में—यश का

शुक्र—

१ भाव में बली हो तो इष्ट देव, नाचना और मित्र सुख का
२ भाव में—रत्न धन और वस्त्र का
३ „ में—स्त्री, गर्भ, बहिन, भाईका
४ „ में—विवाह सुख का
५ „ में—मित्र, भाई, और पुत्र का
६ „ में—गर्भोत्पत्ति का
७ „ में—स्त्री, योगाभ्यास और प्रीति का
९ „ में—स्वप्न का
१० „ में—श्रेष्ठ कर्म का
११ „ में—स्त्री व झगड़े का
१२ „ में—नष्ट वस्तु का

शनि—

१ भाव बली हो तो—रोग वा स्त्री का
२ भाव में—विद्या पत्र का
३ „ में—भाई के नाश का
४ „ में—स्त्री के दूध व अन्य दूध का
५ „ में— दो पुरुषों की कार्य सिद्धि का
६ „ में—शत्रु का
७ „ में—स्त्री वा पुत्र का
८ „ में—व्यापार का
९ „ में—यात्रा का
१० „ में—धन व आरोग्य का
११ „ में—विद्या वा यश का
१२ „ में—शुभकर्म, खर्च अथवा

... को टेन्डर देने का मुहूर्त

टेन्डर देने के समय द्वारा का विचार मुख्य है जो इस प्रकार किया जाता है कि प्रत्येक वार

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राहु

१ भाव मे हो तो—पुत्र और विद्या का प्रश्न समझे	१ भाव म हो तो—लाभ व खच का
२ ,, म—यश वा आरोग्य का	२ ,, में—मैत्री व जय का
३ ,, मे—मित्र व भाई का	३ ,, में—शोक पुत्र भाई का
४ ,, में—स्त्री सुख का	४ ,, द्रव्य वा वृक्ष का
५ ,, में—द्रव्य का	५ ,, में—स्त्री नौकर वा अधिकार का
६ ,, में—व्यापार का	६ ,, म—नृत्य गायन वा रोगका
७ ,, में—अन्य देश का	७ ,, में—मन्त्र सिद्धि का
८ ,, म—नष्ट द्रव्य, कूप, जमीन, धन का	८ ,, में—कर कर्म वा मरने का
९ ,, में—जय का	९ ,, में—विद्याभ्यास वा पर स्त्री संग का
१० ,, म—शोक, दुःख व भयका	१० ,, म—घर मकान वा सुखका
११ ,, म—लाभ का	११ ,, में—सब प्रकार के लाभ का
१२ ,, में—विवाह व खर्च का	१२ ,, में—नष्ट वस्तु नजर वा खर्च का प्रश्न कहना चाहिए।

अथवा—लग्नेश लाभेश दोनों में से जो ग्रह बली हो और फिर उससे चन्द्रमा जिस भावमें वर्तमान हो प्रश्नकर्ता के मनमें उसी विचारणीय भाव की विचारणीय वस्तु की चिन्ता कहे, सत्य होगी।

कार्याकार्य प्रश्न विचार

दिशा प्रहरसंयुक्ता तारका वारमिश्रिता।
अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम् ॥
पंचक त्वरिता सिद्धिः षट्तुर्यं च दिनत्रयम्।
त्रिसप्तके विलंबश्च द्वौ चाष्टौ न च सिद्धिदौ ॥

अस्यार्थः—प्रश्नकर्त्ता का मुख जिस दिशा में हो पूर्व से आदि लेकर उस दिशा की संख्या उस समय का नक्षत्र वार और समय की प्रहर सब मिलाकर ८ का भाग देवे शेष १ तथा ५ बचे तो कार्य सिद्धि, ६—४ बचे तो ३ दिन मे कार्य होगा, ३—७ बचे तो देरी से कार्य सिद्धि होगी और २—८ बचे तो कार्य सिद्धि नहीं होगी, ऐसा कह देना।

वस्तु खरीदने बेचने का चमत्कारी मुहूर्त

रवि, बुध, गुरु, शुक्रवार को २।३।७।१३।१५ तिथि हो और अश्विनी, चित्रा, स्वाती, श्रवण, शतभिषा, रेवती इनमें से कोई नक्षत्र भी हो तो मंदी हुई वस्तु खरीदने से अवश्य लाभ रहता है। इसी तरह मङ्गलवार व सोमवार को ४।९।१४ तिथि से अतिरिक्त अन्य तिथि हो और भरणी, कृत्तिका, आश्लेषा, विशाखा, तीनों पूर्वा इनमें से कोई नक्षत्र भी हो तो तेज हुई वस्तु बेचने से लाभ हाथ आता है।

टेन्डर देने का मुहूर्त

टन्डर देने के समय होरा का विचार मुख्य है जो इस प्रकार किया जाता है कि प्रत्येक वार को सूर्योदय के समय होरा उसी वार की होती है। होरा का समय २॥ घटी यानि १ घण्टा का होता है और दूसरी होरा उसी वार क छठे वार की होती है इसी प्रकार प्रत्येक घण्टे की होरा निकाल लेनी चाहिए। चं. ब. गु. शु. की होरायें शुभ हैं।

होरा (क्षणवार) फल

सूर्य की होरा—टेन्डर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने देने के लिए अच्छी होती है

चन्द्रकी होरा—सब कार्यों के लिए अच्छी होती है।

मंगल की होरा—युद्ध, द्यूत, यात्रा, कर्ज देना, सभा सोसाइटी में जाना, मुकदमा के कार्यों म उत्तम होती है।

बुध की होरा—विद्या (कला काव्य) का आरम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार करना, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थनापत्र प्रस्तुत करने के लिए शुभ होती है।

गुरु की होरा—विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलन, कोष संग्रह, नवीन काव्य, लेखन प्रकाशन, अनेक शुभ कार्यों के लिए शुभ है)

शुक्र की होरा—यात्रा, भूषण, नवीनवस्त्र धारण, सौभाग्य—वर्धक कार्य शुभ होते हैं।

शनि की होरा—द्रव्य संग्रह, भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ,मशीनरी मिल्स कार्यारम्भ, समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

बीमार के जन्मपत्र से जानना कि जियेगा या मर जायगा

विंशोत्तरी म जन्म लग्न से दूसरे स्थान या तीसरे, छठे, सातवें, आठवें, बारहवें के स्वामी की दशा हो, अथवा इन स्थानों म से किसी स्थान में वह ग्रह पड़ा हो जिसकी दशा वर्तमान हो और योगिनी दशा मे पिंगला २, भ्रामरी ४, उल्का ६, या संकटा ८, दशा में स कोई भी दशा इस समय वर्तमान हो और योगिनी दशा मे अन्तर सप्तमेश का अथवा सप्तम में जो ग्रह पड़ा हो, या सप्तम को पूर्ण दृष्टि म देखता हो उसका अन्तर योगिनी दशा म हो और गोचर में जन्मराशि से जन्म के चौथे सातवे आठवें या बारहवें स्थानों में शनि गुरु राहु या केतु हो, गोचर में मंगल जन्मराशि में हो या जन्मराशि को देखता हो और गोचर में सूर्य जिस राशि के हों। (समराशि या विषम राशि) यदि सम हो और उस राशि का स्वामी जन्मपत्र में विषय राशि का हो और सूर्य विषम राशि के हों तो उस राशि का स्वामी जन्मपत्र में सम राशि में हो तो बीमार की अवश्य मृत्यु हो जावेगी और इसके विपरीत होने से निश्चय करके नहीं मरेगा। यह गुप्त रहस्य पञ्चांग प्रेमियों को भेंट है।

ज्ञातव्य विषय

बिना सकल्प और शास्त्रविधि के सकाम कर्म निष्फल है।
बिना तिल और तर्पण के पितृ कार्य निष्फल है।
बिना तुलसी और पुरुषसूक्त के विष्णु पूजा निष्फल है।
बिना बिल्वपत्र और जलधारा के शिवपूजा निष्फल है।
बिना मिष्ठान्न और दक्षिणा के ब्राह्मण भोजन निष्फल है।
बिना दूर्वा और गुड़ के गणेश पूजा निष्फल है।
बिना लाल पुष्प और अर्घ्य के सूर्य पूजा निष्फल है।
बिना लाल पुष्प और लाल चन्दन के दुर्गा पूजा निष्फल है।
बिना पवित्री और चन्दन क ब्राह्मण की संध्या निष्फल है।

बिना ईश्वर भजन के मनुष्य जीवन निष्फल है।
बिना दम्पति प्रीति के गृहस्थ निष्फल है।
बिना नियम श्रद्धा के तीर्थ यात्रा निष्फल है।
बिना माता पिता की सेवा के तपस्या निष्फल है।
बिना श्रद्धा शुद्धि व सात्विक भोजन के श्राद्ध निष्फल है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तेजी मन्दी निकालने की ध्रुवा

अथ दिन ध्रुवा ॥ १ ॥

सूर्य १३७	चन्द्र ९४	मंगल ८०९
बुध ७०२	बृहस्पति ७१३	शुक्र ८०८
शनि ८५	०	०
पृथ्वी भर का ध्रुव		२०८५

अथ तिथिध्रुवा ॥ २ ॥

प्रतिपदा ६१०	द्वितीया ७१०	तृतीया ४८१	चतुर्थी ३५७
पंचमी ६३४	षष्ठी ३०४	सप्तमी ८१२	अष्टमी १११
नवमी ५६५	दशमी ३०५	एकादशी २३३	द्वादशी २६१
त्रयोदशी ५२४	चतुर्दशी ५५२	पूर्णिमा ६३०	अमावस्या १६६

अथ नक्षत्र ध्रुवा ॥३॥

अश्वि. १७६	भरणी ६८३	कृत्ति. ३७०	रोहिणी ७७५	मृग. ६८२	आर्द्रा १४६	पुन. ५४०
पुष्य ६३४	आश्ले. १७०	मघा ७३	पू. फा ८५	उ. फा. १४८	हस्त ८१०	चित्रा ३०५
स्वाती ८६१	विशा. ७३४	अनु. ७१२	ज्येष्ठा ७१६	मूल ६४३	पू. षा. ६१४	उ. षा. ६२३
अभि. ६८३	श्रवण ६५७	धनि. ५००	शत० ५६४	पू. भा. ३३६	उ. भा. १८३	रेवती ७२०

अथ मासध्रुवा ॥ ४ ॥

चैत्र ६१	वैशाख ६३	ज्येष्ठ ६५
आषाढ़ ६७	श्रावण ६९	भाद्र ७१
आश्विन ७३	कार्तिक ५१	मार्ग. ५३
पौष ५५	माघ ५७	फाल्गुन ६५

अथ सूर्य राशि ध्रुवा ॥ ५ ॥

मेष ५२०	वृष ७६२	मिथुन ५१०
कर्क २१८	सिंह ८३०	कन्या २६०
तुला ५०३	वृश्चिक ७११	धनु २२४
मकर ५५४	कुम्भ २७०	मीन ५८६

अथ देश तथा नगरों की ध्रुवा ॥

कलकत्ता २४७	नागपूर १६६	आसाम ७९१	इटावा ८९०
हरिद्वार २७२	बीकानेर २१३	अजमेर १६७	बम्बई १९८
मध्य प्र० १३८	नेपाल १५४	चीन ६४२	पंजाब ४१९
रंगून १६७	सूरत १२८	युरोप ९७६	अमेरिका ३३२

अथ पदार्थ की ध्रुवा ॥ ७ ॥

सोना २५३	चांदी ७६०	तांबा ५६३	पीतल २५८	लोहा ९१५	कांस २४९	पत्थर १६३	मोती १४२
रुई ७१७	कपड़ा १२७	पाट ४७६	हेसियन ७३८	सूत १०३	तमाखू २४०	सुपारी २५२	लोह ८८
मरिच २६८	घृत ४६४	तेल १६९	अतर ७५	गुड़ २५६	चीनी ३२८	ऊन ११२	शाल ८११
धान ७१२	गेहूँ २३२	मूंग ८०१	चावल ७७४	तीसी ३८६	सरसों ८५८	राहर ३३३	नीमक ३१७
सोरा १५६	अफीम २६३	गौ १३२	बैल १६२	महिषी ६१२	भेड़ ६१८	हाथी ८३०	घड़ा ८३५

अथ तेजी-मन्दी देखने का चक्र ८

सूर्य १ तेज	चन्द्र २ अतिमन्दा	भौम ३ तेज
राहु ४ अति तेज	बृहस्पति ५ मन्द	शनि ६ तेज
बुध ७ सम	केतु ८ तेज	शुक्र ९ तेज

अथ तेजी मन्दी निकालने की रीति

जिस देश की जिस वस्तु की, जिस दिन तेजी मन्दी निकालनी हो उस देश, वस्तु, तिथि, वार, नक्षत्र, मास, राशि इन सबके ध्रुवों का योग (जोड़) कर ९ का भाग देकर शेष से जिस दिन का बिचारना हैं उस दिन से शेष तुल्य कोष्ठ में आठवें चक्र में देखकर तेजी मन्दी ज्ञात कर लेना।

उदाहरण—कलकत्ता में चैत्र शुदी २ शुक्रवार को भरिणी नक्षत्र में चाँदी की तेजी मन्दी जाननी है तो कलकत्ते की ध्रुवा २४७, चैत्र की ६१, द्वितीया की ७१०, शुक्रवार की ८०८, भरिणी नक्षत्र की ६८३, चान्दी की ७६०, सूर्यमीन राशि की ध्रुवा ५८६ है। इन सबका जोड़ ३८५५ हुआ। इसमें ९ के भाग देने से शेष ३ आया। अतः आठवें चक्र में देखा तो शुक्र से तीसरा चन्द आया। इसका फल वहीं पर अतिमन्दा लिखा है। विशेष अनक तेजी मन्दी जानना हो तो हमारा ग्रन्थ [illegible]

स्वर शास्त्र का चमत्कार

...णायनीय व्रतों का दक्षिणायन में, उत्तरायणीय व्रतों का

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

स्वर शास्त्र का चमत्कार

(१) प्रातः जागते समय जिस नथने से श्वास चल रहा हो उसी ओर के हाथ को देखकर श्वास अन्दर खींचे पुनः देखें, भगवान् को स्मरण कर हाथ चूमे। चलते श्वास वाली ओर का पाद प्रथम पृथ्वी पर रखे। सदैव ऐसा ही करें। सदा सफलता व प्रसन्नता प्राप्त होगी, सभी दुःख दूर होंगे। (२) दिन को बायां और रात को दायां स्वर चलाया करें। भोजन करने के बाद आधा घण्टा बाईं करवट लेटें, पाखाना करते और नहाते समय दायाँ स्वर चलाया करें। जल पीने के बाद दाईं करवट लेटें और पेशाब करते समय बायां स्वर चलाया करें। रोग पास न फटकने पायेंगे। (३) जिससे कार्य लेना हो उसे चलते श्वास की ओर रख कर बातचीत करें, काम निकल आवेगा। (४) पीड़ा आरम्भ होते समय जो स्वर चल रहा हो उसे बन्द करदें, दूसरा स्वर चलायें, पीड़ा भाग जायेगी। (५) शत्रु, रूठे मित्र या क्रोधित अफसर के पास जाने से पहले शनैः शनैः श्वास अन्दर खींचकर नाभि में ठहराए, उस पुरुष की मूर्ति नाभि में देखें, फिर शनैः शनैः श्वास बाहर निकालें। नाभि में बैठी उसकी मूर्ति का ध्यान फिर धरें, श्वास अन्दर खींचते हुए उस रूठे पुरुष के विचार मन में लिए उसके पास जावे, उसे बन्द नथने की ओर करके बातचीत करें, इच्छाएं पूर्ण होंगी। (६) रोग सरदी से हो तो दायां और गर्मी से हो तो बायां स्वर चलाने से आराम होगा। (७) शुक्ल पक्ष के पहले रविवार को दायां स्वर चलते समय दृढ़ निश्चयपूर्वक पत्र लिखें अवश्य आशा पूर्ण होगी। (८) रात के पिछले पहर पुरुष का दायां और स्त्री का बायां स्वर चलते समय भोग हो तो स्त्री पुरुष में अटूट प्रेम बढ़े व स्वास्थ्य ठीक रहे। (९) दोनों नथने चलते समय सर्व कार्य छोड़ ईश्वराराधन से इच्छाएं पूर्ण होंगी।

अथ योगिनीदशाकृतारिष्टशमनाय जपार्थमंगलादीनां मन्त्राः।

मङ्गलामन्त्रः ॐ ह्रीं मंगले मंगलार्थे स्वाहा	पिंगलामन्त्रः ॐग्लौ पिंगले वीरकारिणी-प्रसादे फट्स्वाहा	धान्यामन्त्रः ॐश्रीधनदे धन्ये स्वाहा	भ्रामरीमन्त्रः ॐभ्रामरिजगतामधीश्वरि भ्रामरि क्लीं स्वाहा
भद्रिका मन्त्रः ॐभद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय	उल्कामन्त्रः ॐ उल्के मम रोगं नाशय जंभय स्वाहा	सिद्धामन्त्रः ॐ ह्रीं सिद्धे मे सर्वमानसं साधय	संकटामन्त्रः ॐ ह्रीं संकटे ममरोगं नाशय स्वाहा

प्रहरवशात् भूकम्पफलज्ञानाय चक्रम्

दिने	दिने	दिने	दिने	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ
प्र. प्रहर	द्वि. प्रहर	तृ. प्रहर	च. प्रहर	प्र. प्रहर	द्वि. प्रहर	तृ. प्रहर	च. प्रहर
राजा मृत्यु	मंत्री भय	पशु भय	अन्न का नाश	अन्नवृद्धि	राज्यभय	प्रजापीड़ा	राजयुद्ध

...ायनीय व्रतों का दक्षिणायन में, उत्तरायणीय व्रतों का उत्तरायण में एवं अपने अपने व्रतेश नक्षत्र वारों में आरम्भ वा उद्यापन करना श्रेष्ठ है, जैसे शिव का आर्द्रा रविवार में, विष्णु का श्रवण द्वादशी बुधवार में योग्य है एवं अन्य व्रतों को भी विचार कर मृ. रे. चि. अ. उ. ३, रो. ह. अश्वि ति. स्वा. पु. श्र. ध. श. नक्षत्रों में र. चं. गु.बल देख कर क्षय मलमास अस्तादि रहित शुभ वार लग्न में व्रतारम्भोद्यापन करना उत्तम है।

पराधीनता में यात्रा मुहूर्त—आवश्यकता में लग्नमात्र बल देखना कहा है कि किसी प्रकार संकट में तथा दैवयोग से किसी प्रकार व्यसनागत विघ्न होने पर अथवा राजा की आज्ञा द्वारा शीघ्रता होने पर मनोभिलषित लग्न से न्यून लग्न में व सामान्य तिथ्यादियों व शुभ स्वर में भी गमन कर लेना।

क्षेत्रपाल (खेड़ा) ग्राम से किस ओर होना चाहिए ?

यदि ग्राम के नाम का आद्यक्षर अकारादि स्वर में हो तो पूर्व में, कवर्ग में हो तो अग्नि, चवर्ग में हो तो दक्षिण में, टवर्ग में हो तो नैऋत्य कोण में, तवर्ग में हो तो पश्चिम में, पवर्ग में हो तो वायव्य कोण में, यकारादि (अन्तःस्थों) में हो तो उत्तर में, शकारादि (ऊष्मों) में हो तो ईशान में, उस खेड़े का शिर समझकर ग्राम के उसी भाग में खेड़े की स्थापना करें। स्थापना ठीक न हो तो ग्राम का नाम बदलकर भी उचित स्थान पर खेड़े की स्थापना की जा सकती है।

श्री क्षेत्रपाल (खेड़ा) निवास वा जागृतादि विचार

ग्रामनक्षत्रमारभ्य दिनभं गणयेत्सुधी। चतुर्भिस्तु हरेद्भागं शेषांके फलमादिशेत् ॥१॥
एकेन जाग्रतो ग्रामः पर्यंकस्थो द्वितीयके। रामशेषे सुप्तावस्था शून्ये शून्यं निगद्यते ॥२॥

घण्टात्मक स्पष्ट स्वदेशीय (लोकल) टाईम से घट्यादिक इष्ट निकालने की रीति

यदि प्रश्न वा जन्मसमय का लोकल टाइम दिन के १२ बजे से पहले हो तो जन्म वा प्रश्नकाल के लोकल घण्टा मिनटों में से सूर्योदय के लोकल घण्टे मिनटों को घटाकर जो घंटे मिनट शेष बचें, उनकी घड़ी पल बना लो, बस वही सूर्योदयात् शुद्धेष्ट होगा। यदि दिन के १२ बजे के बाद रात के १२ बजे तक जन्म व प्रश्नकाल हो तो घण्टे मिनटोंकी घड़ी पल बनाकर दिनार्द्ध में जोड़ने से सूर्योदयात् इष्टकाल आता है। यदि रात के १२ बजे से पीछे अर्धोदय पर्यन्त का इष्ट काल अपेक्षित हो तो १२ बजे के अनन्तर जितने घण्टे मिनट हो गये हों उनकी घड़ी पल बनाकर उस दिन के मिश्रमान (दिनार्द्ध में से ३० घड़ी जोड़े हुए अंक) में जोड़ देने से सूर्योदयात् शुद्धेष्ट काल होगा।

अथवा जेब घड़ी द्वारा अभीष्ट दिन को अपने ग्राम का सूर्योदय पहिले मिला कर नोट कर रखें, या दूसरे दिन मिला लें, फिर जितने घण्टे मिनट सूर्योदय से जन्म अथवा प्रश्न पर्यन्त व्यतीत हो चुके हों उनकी घड़ी पल बना लेने से भी सूर्योदयात् शुद्धेष्ट आता है। इसमें स्टैंडर्ड लोकल टाइम का अन्तर जोड़ने घटाने की कोई आवश्यकता नहीं।

नोट—१ घड़ी में २४ मिनट, १ मिनट में २। पल और एक सैकिण्ड में २॥ विपल होते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ लग्नसारिणी ॥

पलभा ७।१२

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	स्वोदय पलानि
मेष	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	२०६
०	३८	४५	५२	५९	५	१२	१९	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	
वृषभ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	२४२
१	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	
मिथुन	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	२९९
२	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	
कर्क	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	३४७
३	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२३	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	
सिंह	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	३५६
४	४७	५९	११	२३	३४	४६	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३५०
५	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	३५०
६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१४	२६	३७	४९	१	१३	२५	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	३५६
७	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	३४७
८	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	
मकर	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	२९९
९	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	२४२
१०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२०६
११	१२	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	१०	१७	२४	३१	

उदाहरण—स्पष्ट सूर्य १।१५।५०।४०, इसकी राशि १ अंश १५ के प्रमाण लग्नसारिणी में कोष्ठक देखा तो ८।४८ है। इसमें इष्ट घट्यादि ९।५ मिलाया तो १७।५३ हुए। यह इष्टयुक्त किया हुआ लग्नसारिणी का कोष्ठक हुआ, इस इष्टकोष्ठक से अल्पकोष्ठक सारिणी में देखा तो (१७।५१). तीन राशि ५ अंश के कोष्ठक में मिलता है, इस कारण ३ कर्क राशि ५ अंश लिए। इसके नीचे सूर्य की कला ५० विकला ४० युक्त किया तो ३।५।५०।४० हुआ, तदनन्तर इष्टयुक्त कोष्ठक १७।५३ और अल्पकोष्ठक १७।५१ का अन्तर किया तो पल २ हुआ, इसमें अल्पकोष्ठक १७।५१ और ऐष्य (आगे का) कोष्ठक १८।२ के अन्तर पल ११ का भाग दिया तो लब्ध ० अंश आया, शेष २ को ६० से गुणा किया तो १२० हुए, इनमें फिर भाजक ११ का भाग दिया तो लब्धि १० कला आई; शेष १० बचे इन को ६० से गुणा किया तो ६०० हुए, इनमें भाजक ११ का फिर भाग दिया तो लब्ध ५५ विकला आई। इस अंशादि फल ०।१०।५५ को प्रथम आये हुए राश्यादि ३।५।५०।४० में युक्त किया तो राश्यादि ३।६।१।३५ यह सूक्ष्म स्पष्ट लग्न हुआ॥

```
११) २ (०।१०।५५
    ६०
   ----
   १२०
   ११०
   ----
    १०
    ६०
   ----
   ६००
   ६०५
   ----
```

अथ लग्नपश्चात् सूक्ष्मलग्नसाधनम्—जिस समय का लग्न साधन करना हो उस समय का प्रथम राश्यादि स्पष्टसूर्य बना लो, फिर सूर्य की राशि अंश प्रमाण लग्न सारणी के कोष्ठक में इष्ट घटी पल युक्त करना, उससे अल्प कोष्ठक के राशि अंश लेना। राशि अंश के नीचे स्पष्टसूर्य की कला विकला युक्त करना। तदनन्तर इष्ट युक्त किये हुए कोष्ठक और अल्प कोष्ठक का अन्तर करना, जो शेष बचे उसमें अल्प कोष्ठक और उसके आगे के (ऐष्य) कोष्ठक का अन्तर करके भाग देना, लब्ध जो अंश कला विकला फल आवे वह प्रथम आये हुए राश्यादि में युक्त करने से सूक्ष्म स्पष्ट लग्न होता है॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ दशमलग्न सारिणीयम् ॥ (सर्वत्रोपयोगी)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	लङ्कोदय पलानि
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	२७८
०	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	०	१७	
वृषभ	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	२९९
१	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	३२३
२	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	१९	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	३२३
३	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९९
४	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६	
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	२७८
५	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३७	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	२७८
६	३३	४२	५२	१	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	
वृश्चि.	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	२९९
७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	
धनु	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	३२३
८	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	३२३
९	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	२९९
१०	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	२७८
११	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	

नोट—हमार यहां से समीपवर्ती जैसे चण्डीगढ़, अम्बाला, पटियाला, नाभा, लुधियाना, मोघा, शिमला, होशियारपुर, जालन्धर आदि स्थानों में स्वल्पान्तर होने के कारण चरान्तरसारणी से दिनमानादि साधन के बिना भी काम चल सकता है ॥

अथ दशमलग्नसाधनम्—उदयादिष्टकालेषु द्युदलं हि प्रपातयेत् । दशमस्य भवेदिष्टं सारिखांगौ-सुखांगने ॥१॥

अर्थः—सूर्योदयात् घट्यादि इष्टकाल में से दिनार्ध हीन करना, जो शेष बचे वह दशमभाव का इष्ट होता है (यदि इष्ट में से दिनार्ध न घट सके तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़ कर घटाना)। इसी दशम भावेष्ट को जन्मकालीन इष्ट मान कर इस दशमलग्नसारिणी द्वारा पूर्ववत् लग्न की क्रिया करने से दशमभाव सिद्ध होता है। कभी कभी दशमभाव में नवम या एकादश राशि भी हो जाती है। दशमभाव में ६ राशि युक्त करने से चतुर्थभाव और लग्न में ६ राशि युक्त करने से सप्तमभाव होता है ॥

भावसाधनम्—विलग्नतूर्यं षड्भक्तं पंचवारं तनौ क्षिपेत् । एकाद्वियुक्तास्ते व्यस्ता भावाः षट्षड् युताः परे ॥२॥ अर्थः—चतुर्थभावमें लग्न को हीन करके शेष का षष्ठांश लेवे, उस षष्ठांश को लग्न में ५ बार युक्त करे, अर्थात् प्रथम बार षष्ठांश को लग्न में युक्त करने से द्वितीयभाव की आरम्भसन्धि होगी फिर उसी आरंभसंधि में षष्ठांश युक्त करने से दूसरा भाव होवेगा। इसी प्रकार क्रमपूर्वक ५ बार षष्ठांश युक्त करने से चतुर्थभाव की आरंभसंधि तक चारों भाव हो जावेंगे। इसके अनन्तर एक २ बढ़ाते हुए उत्क्रम से चतुर्थभाव की आरंभ सन्धि से लग्न की विरामसन्धि तक १ से ५ पर्यंत केवल राशिसंख्या में युक्त करने से सन्धिसहित ६ भाव हो जावेंगे, अर्थात् चतुर्थभाव की आरम्भसन्धि में १ राशि युक्त करने से पंचमभाव की आरम्भसन्धि हो जावेगी, तीसरे भाव में २ राशि युक्त करने से पंचम भाव होगा, इसी प्रकार क्रमपूर्वक सन्धिसहित ६ भाव हो जावेंगे इसके अनन्तर शेष ६ भावों के साधन में उपर्युक्त सन्धिसहित (६) छः ही भावों में (६) छः राशि युक्त करने से सन्धिसह द्वादशभाव होते हैं ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ वर्षप्रवेश सारणीयम्

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

त्रिराशिपतिचक्रम्

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मीन	राशयः
सू	शु	श	शु	बृ	चं	बु	मं	श	मं	बृ	चं	दि. ल. प.
बृ	चं	बु	मं	सू	शु	श	शु	श	मं	बृ	चं	च रा. ल. प.

वर्षफल साधनप्रकारः—(१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष करना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गत वर्ष जाने। स्मरण रहे कि मेषार्कप्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा क अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछाड़ी के संवत् से करना (वर्षायनर्त वगपर्वकमत्र सौरात्) इस प्रकार गतवर्ष लाकर उसी गताब्द अंक के नीचे जो सारिणी में बारादि अंक हैं उनमें जन्म का बार, इष्ट, घड़ी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश होता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना ऊपर से बारांक में सात से अधिक आजाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्ष प्रवेश समय का स्पष्ट बारादि इष्ट होगा। (२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्टसूर्यवत् वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन ठीक वर्ष प्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी-कभी बार नहीं मिलता सो वहां पर मुख्य वर्षप्रवेश का बार जानना योग्य है। इस इष्ट के अनुसार पीछे लिखी स्वदेशीय लग्न सारिणी स लग्न साधन करके वर्षकुण्डली लगाना। वर्षप्रवेश समय का सूर्य जन्म समय के स्पष्ट सूर्यवत् तब मिलता है जब कि जन्म और वर्षप्रवेश का सामयिक गणित एक ही करण ग्रंथ से किया हो। वर्ष बनाने में जन्मस्थान की स्वदेशीय सारिणी से वर्षलग्नादि साधन करे अन्यथा वर्षपत्र अशुद्ध होगा। **मुन्थानयनप्रकारः**—गताब्दवृन्द में जन्म लग्न जोड़कर उससे १२ का भाग देना, जो शेष बचे वह मुन्था जानना, यह मुन्था प्रतिदिन पांच कला चलती है।

अथ त्रिपताकीचक्रम्—तिरछी और खड़ी तीन तीन रेखा खींचकर उनक कोण परस्पर मिलाकर त्रिपताकी चक्र तैयार करो, उस चक्र के पूर्व की मध्य रेखा पर वर्ष प्रवेश का लग्न रख कर अन्य स्थानों में शेष क्रमशः ११ राशियों को स्थापन करो, अब ग्रह स्थापन करने की यह विधि है कि गत वर्षों में एक युक्त कर ९ का भाग देने से जो शेष रहे उनकी संख्या की राशि पर जन्म राशि से चन्द्रमा होता है, एक युक्त गताब्दों में ४ का भाग देने से जो शेष रहे उसी संख्या पर शेष ग्रह जन्मस्थान से होते हैं, परंतु राहु केतु को विपरीत जानना। फल—यदि उक्त चक्र में राहु के साथ चन्द्रमा का वेध होवे तो कष्ट, सूर्य के वेध से संताप, शनैश्चर भौम के वेध से शरीर पीड़ा होती है, शुभ ग्रहों के वेध से जय सौख्य लाभ होता है शुभाशुभ ग्रहों का वेध देख कर वर्ष का फल कहें॥

अथ हर्षबलम्

स्थानबल—सूर्य लग्न से ९, चं० ३, मं० ६, बु० १, गु० ११, शु. ५, श० १२, इन स्थानों में ५ बल देते हैं। **स्वोच्चबल**—सू. १।५, चं० २।४, मं० १।८।१०, बु० ३।६, गु० ९।१२।४, शु० २।७।१२, श० १०।११।७ इन स्थानों में ५ बल देते है। **पुरुष स्त्री बल**—स्त्रीग्रह (च०, बु०, शु०, श०) १।२।३।७।८।९ और पुरुषग्रह (सू० मं० बृ०) ४।५।६।१०।११।१२ वें स्थानों में ५ बल देते हैं। **दिनरात्रिबल**—दिनके वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं। **मित्रशत्रुज्ञान**—जिस ग्रह का मित्रादि देखना है उस ग्रह से ३।५।९।११ इन स्थानों पर जो ग्रह हों वह उसके मित्र होते हैं और २।६।८।१२ वें हों तो सम, १।४।७।९ वें होवें तो शत्रु।

वर्षेशनिर्णये दृष्टिज्ञानम्—९।५ वें ४५ कला, ३ रे ४० कला, ११ वें १० कला, ४।१० वें १५, और १७ वे पूर्ण कला (६० कला) दृष्टि होती है।

अथ वर्षेशनिर्णयः—जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५, दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्र राशि का स्वामी इन पांचों अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होगा, यदि पांचों में से कोई भी लग्नको न देखता होतो उनमें से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो तो वह बल दृष्टि अधिकार यह तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश होगा। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे वा जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश होगा॥ फल—वर्षेश ६।८।१२ वें अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भय विशेष होगा यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

"अथ ३२ सा श्री सूर्य यन्त्र विधान॥ अनार की कलम से हरिद्रा के साथ यंत्र को भूर्जपत्र पर अथवा कागज पर लिखें नीचे अपना मनोरथ अपना कार्य लिखें फिर उस यन्त्र को रुई की खड़ी फूल में बनाकर रविवार को ज्योत जगावे। फिर हरिद्रा की माला बनाकर बीजमन्त्र का ११०० ग्यारह सौ जप करें. जपमन्त्र—"ह्रीं हंसः" इस मन्त्र का सात या २१ रविवार विधिपूर्वक जप करने से श्री सूर्यनारायण की कृपा से सम्पूर्ण दुःखों की निवृत्ति होगी, [illegible]।

मुद्दा दशा चक्र विधि जन्मनक्षत्र की संख्या में गतवर्षगण जोड़ के २ घटा दें, ९ से भाग करने पर जो शेष बचे वह सूर्य से लेकर मुद्दा दशा होती है। योगिनी के लिये जन्मनक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़, ३ और जोड़े, ८ से शेष करे तो मंगलादि योगिनी होती है॥

मुद्दादशा क्रमः

क्रम	ग्रहाः	मास	दिन
१	सूर्य	०	१८
२	चंद्र	१	०
३	भौम	०	२१
४	राहु	१	२४
५	गुरु	१	१८
६	शनि	१	२७
७	बुध	१	२१
८	केतु	०	२१
९	शुक्र	२	०

[illegible] मुद्दादशा

मं.	पिं.	ध.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

ग्रहों के निरयण राशिनक्षत्रचार सं० २०४७

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों के निरयण राशिनक्षत्रचार सं० २०१७

सूर्य नक्षत्र राशि चार

मास	ति.	वा.	नक्षत्र राशि
चैत्र शु.	३	बु.	रेवती
वैशा. कृ.	२	बु.	अश्वि. मेष
वैशा. शु.	१	मं.	भरि.
" "	१४	मं.	कृत्ति.
ज्ये. कृ.	४	श.	वृष
" "	१४	मं.	रोहि.
ज्ये. शु.	१३	मं.	मृग.
आषा. कृ.	५	मं.	मिथुन
" "	१३	मं.	आर्द्रा.
आषा. शु.	११	मं.	पुन.
श्राव. कृ.	८	श.	कर्क
" "	११	मं.	पुष्य
श्राव. शु.	१०	मं.	आश्ले.
भाद्र. कृ.	१०	मं.	मघा सिंह
भाद्र. शु.	८	मं.	पू. फा.
आश्वि. कृ.	८	मं.	उ. फा.
" "	११	शु.	कन्या.
आश्वि. शु.	६	चं.	हस्त
कार्ति. कृ.	६	चं.	चित्रा
" "	१२	चं.	तुला
कार्ति. शु.	३	र.	स्वा.
मार्ग. कृ.	३	र.	विशा.
" "	११	मं.	वृश्चि.
मार्ग. शु.	१	श.	अनु.
" "	१४	शु.	ज्येष्ठा
पौष कृ.	१२	गु.	मूल. धनु.
पौष शु.	११	बु.	पू. षा.
माघ कृ.	८	मं.	उ. षा.
" "	११	शु.	मकर
माघ शु.	४	शु.	अभिजि.
" "	७	चं.	श्रव.
फाल्गु. कृ.	५	र.	धनि.
" "	१२	र.	कुंभ
फाल्गु. शु.	३	श.	शत.
चैत्र कृ.	२	श.	पू. भा.
चै. कृ.	१२	म.	मीन

भौम नक्षत्र राशि चार

मास	ति.	वा.	नक्षत्र राशि
चै. शु.	६	श.	शत.
वै. कृ.	८	मं.	पू. भा.
वै. शु.	६	चं.	मीन
" "	११	श.	उ. भा.
ज्ये. कृ.	१४	मं.	रेवती
आषा. कृ.	२	श.	अश्वि. मेष
आषा. शु.	५	बु.	भरि.
श्राव. कृ.	१०	चं.	कृत्ति.
" "	३०	श.	वृष
श्राव. शु.	१५	र.	रोहि.
भाद्र. शु.	६	र.	मृग.
आश्वि. कृ.	३	गु.	मिथुन
आश्वि. शु.	१	बु.	आर्द्रा.
कार्ति. शु.	१	शु.	पुन.
मार्ग. शु.	१	श.	वक्री
पौष कृ.	३०	र.	व. आर्द्रा.

बुध नक्षत्र राशिचार

मास	ति.	वा.	नक्षत्र राशि
चै. शु.	२	मं.	पू. भा.
" "	१४	र.	मीन
वैशा. कृ.	२	बु.	उ. भा.
" "	१३	श.	रेवती
वैशा. शु.	५	र.	अश्वि. मेष.
वैशा. शु.	१२	र.	भरि.
ज्ये. कृ.	४	श.	कृत्ति.
" "	६	चं.	वृष
" "	१०	शु.	रोहि.
ज्ये. शु.	१	गु.	मृग.
" "	५	चं.	मिथुन
" "	८	गु.	आर्द्रा
आषा. कृ.	२	श.	पुन.
आषा. कृ.	११	र.	कर्क
" "	१४	गु.	पुष्य
आषा. शु.	९	र.	वक्री
श्राव. कृ.	५	बु.	व. पुन.
" "	१०	चं.	व. मिथुन
श्राव. शु.	४	बु.	मार्गी
" "	१२	गु.	कर्क
भाद्र. कृ.	१	चं.	पुष्य
" "	१०	मं.	आश्ले.
भाद्र. शु.	१	मं.	मघा सिंह
" "	८	मं.	पू. फा.
आश्वि. कृ.	१	मं.	उ. फा.
" "	३	गु.	कन्या
" "	९	बु.	हस्त
आश्वि. शु.	२	गु.	चित्रा
" "	६	चं.	तुला
"	११	श.	स्वा.
का. ति. कृ.	७	बु.	विशा.
कार्ति. शु.	३	र.	वृश्चिक
" "	८	गु.	वक्री
" "	११	र.	व. तुला
मार्ग. कृ.	६	बु.	व. स्वा.
" "	१३	गु.	मार्गी
मार्ग. शु.	७	शु.	विशा.
" "	१५	श.	वृश्चिक
पौष कृ.	२	चं.	अनु.
" "	११	बु.	ज्येष्ठा
पौष शु.	४	गु.	मू. धनु.
" "	१४	श.	पू. षा.
माघ कृ.	६	र.	उ. षा.
" "	८	मं.	मकर
" "	१२	श.	अभि.
" "	३०	चं.	श्रवण
माघ शु.	८	मं.	धनि.
" "	१२	श.	कुंभ
फाल्गु. कृ.	१	बु.	शत.
फाल्गु. कृ.	१२	र.	वक्री
फाल्गु. शु.	९	शु.	व. धनि.

गुरु नक्षत्र राशि चार

मास	ति.	वा.	नक्षत्र-राशि
मार्ग. शु.	१०	चं.	पू. षा.
माघ शु.	१०	गु.	उ. षा.
फाल्गु. कृ.	१०	शु.	मकर
चैत्र कृ.	१४	बु.	अभि.

शुक्र नक्षत्र राशिचार

मास	ति.	वा.	नक्षत्र-राशि
चैत्र शु.	७	र.	मीन
" "	१०	बु.	उ. भा.
वैशा. कृ.	६	र.	रेवती
वैशा. शु.	३	गु.	अश्वि. मेष
" "	१३	चं.	भरि.
ज्ये. कृ.	१०	शु.	कृत्ति.
" "	१२	र.	वृष
ज्ये. शु.	५	चं.	रोहि.
आषा. कृ.	१	शु.	मृग.
" "	८	गु.	मिथुन
" "	१३	मं.	आर्द्रा
आषा. शु.	८	श.	पुन.
श्राव. कृ.	२	र.	कर्क
" "	५	बु.	पुष्य
श्राव. शु.	१	र.	आश्ले.
" "	११	बु.	मघा, सिंह
भाद्र. कृ.	८	र.	पू. फा.
भाद्र. शु.	३	गु.	उ. फा.
" "	६	र.	कन्या
" "	१५	चं.	हस्त
आश्वि. कृ.	११	शु.	चित्रा
आश्वि. शु.	१	बु.	तुला
" "	७	मं.	स्वा.
कार्ति. कृ.	४	श.	विशा.
कार्ति. कृ.	११	र.	वृश्चिक
" "	१३	मं.	अनु.
कार्ति. शु.	१०	श.	ज्ये.
मार्ग. कृ.	६	बु.	मू. धनु.
मार्ग. शु.	२	र.	पू. षा.
" "	१३	गु.	उ. षा.
पौष कृ.	१	र.	मकर
" "	७	श.	अभि.
" "	१०	मं.	श्रव.
पौष शु.	७	श.	धनि.
" "	१३	शु.	कुंभ
माघ कृ.	३	गु.	शत.
माघ शु.	१	मं.	पू. भा.
" "	१०	गु.	मीन
" "	१३	र.	उ. भा.
फाल्गु. कृ.	१२	र.	रेव.
फाल्गु. शु.	१५	गु.	अश्वि. मेष

शनि नक्षत्रराशिचार

मास	ति.	वा.	नक्षत्र राशि
माघ कृ.	२	बु.	उ. षा.
फाल्गु. कृ.	२	गु.	मकर

राहु नक्षत्रराशिचार

मास	ति.	वा.	नक्षत्र राशि
वैशा. कृ.	१	मं.	सिंह
आषा. कृ.	५	मं.	पू. फा.
फाल्गु. शु.	६	चं.	मघा

केतु नक्षत्रराशिचार

मास	ति.	वा.	नक्षत्र राशि
वैशा. कृ.	१	मं.	कुम्भ
कार्तिक कृ.	१३	मं.	शत.

वरुण नक्षत्रराशिचार

मास	ति.	वा.	नक्षत्र राशि
आश्वि. कृ.	१२	श.	मघा सिंह
मार्ग. शु.	१३	गु.	वक्री
फाल्गु. शु.	३	श.	व. आश्ले. कर्क

इस वर्ष इन्द्र (नेपच्यून) वर्ष भर स्वाती में ही रहेगा ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्र के अतिरिक्त सब ग्रहों की समकल युतियें (सं० २०१७)

युत ग्रह	युति की तारीख
सू. बु.	१७ मई १९६०
"	१७ जुलाई १९६०
"	३१ अग. १९६०
"	७ नवम्बर १९६०
"	६ जनवरी १९६१
"	२२ फर. १९६१
सू. गु.	६ जनवरी १९६१
सू. शु.	२२ जून १९६०
सू. श.	११ जन. १९६१
सू. रा.	८ सितंबर १९६०
सू. के.	२५ फर. १९६१
सू. व.	१४ अग. १९६०
सू. इं.	१ नवम्बर १९६०
मं. के.	१ मई १९६०
बु. गु.	६ जनवरी १९६१
बु. शु.	६ मई १९६०
"	१३ जुला. १९६०
बु. श.	९ जनवरी १९६१
बु. रा.	४ सितंबर १९६०
बु. के.	११ अप्रैल १९६०
"	८ फरवरी १९६१
बु. व.	२३ अग. १९६०
बु. इं.	७ अक्तूबर १९६०
"	१३ नवं. १९६०
"	२१ नवं. १९६०
गु. शु.	१९ नवं. १९६०
गु. श	१८ फर. १९६१
शु. श.	२८ नव. १९६०
शु. रा.	२२ अग. १९६०
शु. के.	४ अप्रैल १९६०
"	१३ जन. १९६१
शु. व.	१ अगस्त १९६०
श. इं.	४ अक्तूबर १९६०

अक्षांश भेद से भारत के विभिन्न स्थानों पर चन्द्र दर्शन के दिन एवं उन्नत शृङ्ग की दिशा का निर्णय (सं० २०१७)

मास→	चै. शु.			वै. शु			ज्ये. शु.			आ. शु.			श्रा.शु.			भा.शु.			आश्वि.शु.			का. शु.			मार्ग. शु.			पौ. शु.			माघ शु.			फा. शु.		
भारतीय अक्षांश ↓	चन्द्र दर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नतांश	चन्द्र दर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नतांश	चन्द्र दर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नतांश	चन्द्र दर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नतांश	चन्द्र दर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नतांश	चन्द्र दर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नतांश	चन्द्र दर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नतांश	चन्द्र दर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नतांश	चन्द्र दर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नतांश	चन्द्र दर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नतांश	चन्द्र दर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नतांश	चन्द्र दर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नतांश
१० °	१ चं.	द.	४	२ बु.	उ.	६	२ शु.	उ.	१४	१ श.	उ.	२८	२ चं.	उ.	२९	२ बु.	उ.	२८	२ गु.	उ.	२४	१ शु.	उ.	१२	२ र.	उ.	८	१ चं.	द.	५	२ बु.	द.	५	१ गु.	द.	७
१५ °	"	उ.	१	"	"	११	"	"	१९	"	"	३४	"	"	३४	"	"	३४	"	"	२९	"	"	१७	"	"	१३	"	०	०	"	०	०	"	"	२
२० °	"	"	६	"	"	१६	"	"	२४	" *	"	३९	"	"	३९	"	"	३९	"	"	३४	"	"	२२	"	"	८	"	उ.	५	"	उ.	५	"	उ.	३
२५ °	"	"	११	"	"	२१	"	"	२९	२ र. +	"	३६	"	"	४४	"	"	४४	"	"	३९	" ×	"	२७	"	"	२३	"	"	१०	"	"	१०	"	"	९
३० °	"	"	१६	"	"	२६	"	"	३४	२ र.	"	४१	"	"	४९	"	"	४९	"	"	४४	२ श.	"	४१	"	"	२८	"	"	१५	"	"	१५	"	"	१४
३५ °	"	"	२१	"	"	३१	"	"	३९	"	"	४६	'	"	५४	"	"	५४	"	"	४९	"	"	४६	"	"	३३	"	"	२०	"	"	२०	"	"	१

* French Indo-China में चन्द्रदर्शन २६ जून को होगा। + कराची में चन्द्र दर्शन २५ जून को होगा। × रेखांश ८२° से पूर्व में चन्द्रदर्शन २२ अक्तूबर को ही होगा। ० सम शृङ्ग

ग्रहों के उदय (सं० २०१७)

ग्रह	उदय दिशा	उदय
बुध	पश्चिम	ज्येष्ठ शु. ३ श.
"	पूर्व	श्रावण शु. ३ मं.
"	पश्चिम	आश्विन कृ. १० गु.
"	पूर्व	मार्गशीर्ष कृ. १० चं.
"	पश्चिम	माघ शु. ९ बु.
"	पूर्व	फाल्गुन शु. १३ मं.
गुरु	पूर्व	माघ शु. ५ श.
शुक्र	पश्चिम	श्रावण शु. ८ र.
शनि	पूर्व	माघ शु. ११ शु.

ग्रहों के अस्त (सं० २०१७)

ग्रह	अस्त दिशा	अस्त
बुध	पूर्व	वैशाख शु. १० शु.
"	पश्चिम	आषाढ़ शु. १५ शु.
"	पूर्व	भाद्रपद कृ. ११ गु.
"	पश्चिम	कार्त्तिक शु. १३ मं.
"	पूर्व	पौष कृ. १० मं.
"	पश्चिम	फाल्गुन कृ. १४ मं.
गुरु	पश्चिम	पौष शु. ७ श.
शुक्र	पूर्व	ज्येष्ठ कृ. १० शु.
शनि	पश्चिम	पौष शु. ८ र.

ग्रहों के वक्र-मार्ग काल (सं० २०१७)

ग्रह	वक्री	मार्गी
मंगल	मार्गशीर्ष शु. १ श.	फाल्गुन कृ. ६ चं.
बुध	आषाढ़ शु. ९ र.	श्रावण शु. ४ बु.
"	कार्त्तिक शु. ८ गु.	मार्गशीर्ष कृ. १३ गु.
"	फाल्गुन कृ. १२ र.	चैत्र कृ. ४ चं.
गुरु	वैशाख कृ. ८ मं.	भाद्रपद कृ. १२ शु.
शनि	वैशाख शु. २ बु.	आश्विन कृ. १० गु.
वरुण	....	वैशाख कृ. १४ र.
"	मार्गशीर्ष शु. १३ गु.	....
इन्द्र	....	श्रावण कृ. १० चं.
"	फाल्गुन कृ. १० श.	....

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

सूर्योदय एवं सूर्यास्त (बिम्ब शीर्ष दृग्य) स्थानीय काल में

स्टै. टा. के लिये स्टैण्डर्ड अन्तर जो कि पृष्ठ १२५-२६ पर 'अक्षांशादि सारिणी' में है, चिह्न के विपरीत जोड़ें अथवा घटावें

उत्तर अक्षांश		अक्षांश ०°		२°		४°		६°		८°		१०°		१२°		१४°		दक्षिण अक्षांश	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त		
मास	ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	अस्त	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	ता.	मास
जनवरी	१	५।५९	६। ७	६। ३	६। ४	६। ७	६। १	६।१०	५।५७	६।१४	५।५४	६।१७	५।५०	६।२१	५।४७	६।२४	५।४३	३	जुलाई
	७	६। २	६।१०	६। ६	६। ७	६। ९	६। ४	६।१३	६। ०	६।१६	५।५७	६।१९	५।५३	६।२३	५।५०	६।२६	५।४७	९	
	१३	६। ५	६।१२	६। ८	६। ९	६।११	६। ६	६।१५	६। ३	६।१८	६। ०	६।२१	५।५६	६।२४	५।५३	६।२८	५।५०	१५	
	१९	६। ७	६।१४	६।१०	६।१२	६।१३	६। ९	६।१६	६। ६	६।१९	६। ३	६।२२	५।५९	६।२५	५।५७	६।२८	५।५४	२२	
	२५	६। ९	६।१६	६।१२	६।१३	६।१४	६।११	६।१७	६। ८	६।२०	६। ५	६।२३	६। २	६।२६	५।५९	६।२८	५।५७	२८	
	३१	६।१०	६।१७	६।१३	६।१५	६।१५	६।१२	६।१८	६।१०	६।२०	६। ७	६।२३	६। ४	६।२५	६। २	६।२८	५।५९	४	अगस्त
फरवरी	६	६।१०	६।१८	६।१३	६।१६	६।१५	६।१३	६।१७	६।११	६।२०	६। ९	६।२२	६। ६	६।२४	६। ४	६।२७	६। २	१०	
	१२	६।११	६।१८	६।१३	६।१६	६।१५	६।१४	६।१७	६।१२	६।१९	६।१०	६।२१	६। ८	६।२३	६। ६	६।२५	६। ४	१६	
	१८	६।११	६।१८	६।१२	६।१६	६।१४	६।१४	६।१६	६।१३	६।१७	६।११	६।१९	६। ९	६।२१	६। ८	६।२२	६। ६	२२	
	२४	६।१०	६।१७	६।११	६।१५	६।१३	६।१४	६।१४	६।१३	६।१५	६।११	६।१७	६।१०	६।१८	६। ९	६।१९	६। ७	२९	
मार्च	२	६। ९	६।१६	६।१०	६।१५	६।११	६।१४	६।१२	६।१३	६।१३	६।१२	६।१४	६।१०	६।१५	६।१०	६।१६	६। ९	४	सितम्बर
	८	६। ८	६।१४	६। ८	६।१४	६। ९	६।१३	६।१०	६।१२	६।१०	६।१२	६।११	६।११	६।१२	६।१०	६।१२	६।१०	१०	
	१४	६। ६	६।१३	६। ६	६।१२	६। ७	६।१२	६। ७	६।१२	६। ८	६।११	६। ८	६।११	६। ८	६।११	६। ९	६।१०	१६	
	२०	६। ४	६।११	६। ४	६।११	६। ४	६।११	६। ४	६।११	६। ४	६।११	६। ५	६।११	६। ४	६।११	६। ४	६।११	२२	
	२६	६। ३	६। ९	६। २	६। ९	६। २	६।१०	६। २	६।१०	६। १	६।१०	६। १	६।११	६। १	६।११	६। ०	६।१२	२८	
अप्रैल	२	६। १	६। ७	६। ०	६। ८	५।५९	६। ८	५।५८	६। ९	५।५८	६।१०	५।५७	६।१०	५।५६	६।११	५।५५	६।१२	६	अक्तूबर
	८	५।५९	६। ६	५।५८	६। ६	५।५७	६। ७	५।५६	६। ८	५।५५	६। ९	५।५४	६।१०	५।५२	६।१२	५।५१	६।१३	१२	
	१४	५।५७	६। ४	५।५६	६। ५	५।५४	६। ६	५।५३	६। ८	५।५२	६। ९	५।५१	६।१०	५।४९	६।१२	५।४८	६।१३	१७	
	२०	५।५६	६। २	५।५४	६। ४	५।५२	६। ६	५।५१	६। ७	५।४९	६। ९	५।४८	६।११	५।४६	६।१२	५।४४	६।१४	२३	
	२६	५।५४	६। १	५।५२	६। ३	५।५१	६। ५	५।४९	६। ७	५।४७	६। ९	५।४५	६।११	५।४३	६।१३	५।४१	६।१५	२९	
मई	१	५।५४	६। १	५।५२	६। ३	५।४९	६। ५	५।४७	६। ७	५।४५	६। ९	५।४३	६।१२	५।४१	६।१४	५।३८	६।१६	३	नवम्बर
	७	५।५३	६। ०	५।५१	६। ३	५।४८	६। ५	५।४६	६। ७	५।४३	६।१०	५।४१	६।१२	५।३८	६।१५	५।३६	६।१८	९	
	१३	५।५३	६। ०	५।५०	६। ३	५।४७	६। ५	५।४५	६। ८	५।४२	६।११	५।४०	६।१३	५।३७	६।१६	५।३४	६।१९	१५	
	१९	५।५३	६। ०	५।५०	६। ३	५।४७	६। ६	५।४४	६। ९	५।४१	६।१२	५।३८	६।१४	५।३५	६।१८	५।३२	६।२१	२०	
	२५	५।५३	६। ०	५।५०	६। ४	५।४७	६। ७	५।४४	६।१०	५।४१	६।१३	५।३८	६।१६	५।३५	६।१९	५।३१	६।२३	२६	
	३१	५।५४	६। १	५।५१	६। ४	५।४७	६। ८	५।४४	६।११	५।४१	६।१४	५।३८	६।१७	५।३४	६।२१	५।३१	६।२४	२	दिसम्बर
जून	६	५।५५	६। २	५।५२	६। ६	५।४८	६। ९	५।४५	६।१२	५।४१	६।१६	५।३८	६।१९	५।३४	६।२३	५।३१	६।२६	७	
	१२	५।५६	६। ३	५।५३	६। ७	५।४९	६।१०	५।४६	६।१४	५।४२	६।१७	५।३८	६।२०	५।३५	६।२४	५।३१	६।२८	१३	
	१८	५।५७	६। ४	५।५४	६। ८	५।५०	६।१२	५।४७	६।१५	५।४३	६।१९	५।४०	६।२२	५।३६	६।२६	५।३२	६।३०	१९	
	२४	५।५८	६। ६	५।५५	६। ९	५।५२	६।१३	५।४८	६।१६	५।४५	६।२०	५।४१	६।२३	५।३८	६।२७	५।३४	६।३१	२४	
	३०	६।००	६। ७	५।५६	६।११	५।५३	६।१४	५।५०	६।१८	५।४६	६।२१	५।४२	६।२४	५।३९	६।२८	५।३५	६।३२	३०	

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्योदय एवं सूर्यास्त (बिम्ब शीर्ष दृश्य) स्थानीय काल में।

स्टै. टा. के लिये स्टैण्डर्ड अन्तर जो कि पृष्ठ १२५-२६ पर 'अक्षांशादि सारिणी' में है, चिह्न के विपरीत जोड़ें अथवा घटावें

उत्तर अक्षांश		अक्षांश ०°		२°		४°		६°		८°		१०°		१२°		१४°		दक्षिण अक्षांश	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त		
मास	ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	ता.	मास
जुलाई	६	६। १	६। ८	५।५८	६।१२	५।५४	६।१५	५।५१	६।१८	५।४८	६।२२	५।४४	६।२५	५।४१	६।२९	५।३७	६।३२	४	जनवरी
	१२	६। २	६। ९	५।५९	६।१२	५।५५	६।१६	५।५२	६।१९	५।४९	६।२२	५।४५	६।२५	५।४२	६।२९	५।३९	६।३२	१०	
	१८	६। २	६। ९	५।५९	६।१३	५।५६	६।१६	५।५३	६।१९	५।५०	६।२२	५।४७	६।२५	५।४४	६।२९	५।४०	६।३२	१५	
	२४	६। ३	६।१०	६। ०	६।१३	५।५७	६।१६	५।५४	६।१९	५।५१	६।२२	५।४८	६।२४	५।४५	६।२८	५।४२	६।३१	२१	
	३०	६। ३	६।१०	६। ०	६।१३	५।५८	६।१५	५।५५	६।१८	५।५२	६।२१	५।४९	६।२३	५।४६	६।२६	५।४४	६।२९	२७	
अगस्त	५	६। २	६। ९	६। ०	६।१२	५।५८	६।१४	५।५५	६।१७	५।५३	६।१९	५।५०	६।२२	५।४८	६।२४	५।४५	६।२७	१	फरवरी
	११	६। २	६। ८	६। ०	६।११	५।५७	६।१३	५।५५	६।१५	५।५३	६।१७	५।५०	६।२०	५।४८	६।२२	५।४६	६।२४	७	
	१७	६। १	६। ७	५।५९	६। ९	५।५७	६।११	५।५५	६।१३	५।५३	६।१५	५।५१	६।१७	५।४९	६।१९	५।४७	६।२१	१३	
	२३	५।५९	६। ६	५।५८	६। ८	५।५६	६। ९	५।५४	६।११	५।५३	६।१२	५।५१	६।१४	५।४९	६।१६	५।४८	७।१८	१८	
	२९	५।५८	६। ४	५।५६	६। ६	५।५५	६। ७	५।५४	६। ८	५।५२	६।१०	५।५१	६।११	५।४९	६।१२	५।४८	६।१४	२४	
सितम्बर	४	५।५६	६। २	५।५५	६। ३	५।५४	६। ४	५।५३	६। ५	५।५२	६। ६	५।५१	६। ८	५।४९	६। ८	५।४८	६।१०	२	मार्च
	१०	५।५४	६। ०	५।५३	६। १	५।५२	६। २	५।५२	६। २	५।५१	६। ३	५।५०	६। ४	५।४९	६। ५	५।४९	६। ५	८	
	१६	५।५२	५।५८	५।५१	५।५९	५।५१	५।५९	५।५१	५।५९	५।५०	६। ०	५।५०	६। ०	५।४९	६। ०	५।४९	६। १	१४	
	२२	५।५०	५।५६	५।४९	५।५६	५।४९	५।५६	५।४९	५।५६	५।४९	५।५६	५।४९	५।५७	५।४९	५।५६	५।४९	५।५६	२०	
	२८	५।४८	५।५४	५।४८	५।५४	५।४८	५।५३	५।४८	५।५३	५।४९	५।५३	५।४९	५।५३	५।४९	५।५२	५।४९	५।५२	२६	
अक्टूबर	३	५।४६	५।५२	५।४६	५।५२	५।४७	५।५१	५।४७	५।५१	५।४८	५।५०	५।४९	५।५०	५।४९	५।४९	५।५०	५।४८	३०	
	९	५।४४	५।५१	५।४५	५।५०	५।४६	५।४९	५।४७	५।४८	५।४८	५।४७	५।४८	५।४६	५।४९	५।४५	५।५०	५।४४	५	अप्रैल
	१५	५।४३	५।४९	५।४४	५।४८	५।४५	५।४७	५।४६	५।४६	५।४७	५।४४	५।४८	५।४३	५।५०	५।४२	५।५१	५।४१	१२	
	२१	५।४२	५।४८	५।४३	५।४७	५।४४	५।४५	५।४६	५।४३	५।४७	५।४२	५।४९	५।४१	५।५०	५।३९	५।५२	५।३७	१८	
	२७	५।४१	५।४७	५।४२	५।४६	५।४४	५।४४	५।४६	५।४२	५।४८	५।४०	५।५०	५।३८	५।५१	५।३६	५।५३	५।३४	२४	
नवम्बर	२	५।४०	५।४७	५।४२	५।४५	५।४४	५।४३	५।४७	५।४१	५।४९	५।३९	५।५१	५।३७	५।५३	५।३४	५।५५	५।३२	३०	
	८	५।४०	५।४७	५।४३	५।४५	५।४५	५।४३	५।४७	५।४०	५।५०	५।३८	५।५२	५।३५	५।५५	५।३३	५।५७	५।३०	६	मई
	१४	५।४१	५।४८	५।४४	५।४५	५।४६	५।४३	५।४९	५।४०	५।५१	५।३७	५।५४	५।३५	५।५७	५।३२	६। ०	५।२८	१२	
	२०	५।४२	५।४९	५।४५	५।४६	५।४८	५।४४	५।५१	५।४१	५।५४	५।३८	५।५६	५।३५	५।५९	५।३२	६। २	५।२९	१९	
	२६	५।४४	५।५१	५।४७	५।४८	५।५०	५।४५	५।५३	५।४२	५।५६	५।३९	५।५९	५।३५	६। २	५।३२	६। ५	५।२९	२५	
दिसम्बर	२	५।४६	५।५३	५।४९	५।५०	५।५२	५।४७	५।५५	५।४३	५।५९	५।४०	६। २	५।३७	६। ५	५।३४	६। ९	५।३०	३१	
	८	५।४८	५।५५	५।५२	५।५२	५।५५	५।४९	५।५८	५।४६	६। २	५।४२	६। ५	५।३८	६। ९	५।३५	६।१२	५।३२	७	जून
	१४	५।५१	५।५८	५।५४	५।५५	५।५८	५।५२	६। १	५।४८	६। ५	५।४५	६। ८	५।४१	६।१२	५।३८	६।१५	५।३४	१३	
	२०	५।५४	६। १	५।५७	५।५८	६। १	५।५४	६। ४	५।५१	६। ८	५।४७	६।११	५।४४	६।१५	५।४०	६।१८	५।३७	१९	
	२६	५।५७	६। ४	६।००	६। १	६। ४	५।५७	६। ७	५।५४	६।११	५।५०	६।१४	५।४७	६।१८	५।४३	६।२१	५।४०	२५	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सूर्योदय एवं सूर्यास्त (बिम्ब शीर्ष दृश्य) स्थानीय काल में

स्टैं. टा. के लिये स्टैण्डर्ड अन्तर जो कि पृष्ठ १२५-२६ पर 'अक्षांशादि सारिणी' में है, चिह्न के विपरीत जोड़ें अथवा घटावें

उत्तर अक्षांश		१६°		१८°		२०°		२२°		२४°		२६°		२८°		३०°		दक्षिण अक्षांश	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त		
मास	ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	ता.	मास
जनवरी	१	६।२८	५।४०	६।३१	५।३६	६।३५	५।३२	६।३९	५।२८	६।४३	५।२४	६।४७	५।२०	६।५२	५।१६	६।५६	५।११	३	जुलाई
	७	६।३०	५।४३	६।३३	५।४०	६।३७	५।३६	६।४१	५।३२	६।४५	५।२८	६।४९	५।२४	६।५३	५।२०	६।५७	५।१६	९	
	१३	६।३१	५।४७	६।३४	५।४३	६।३८	५।४०	६।४१	५।३६	६।४५	५।३३	६।४९	५।२९	६।५३	५।२५	६।५७	५।२१	१५	
	१९	६।३१	५।५०	६।३५	५।४७	६।३८	५।४४	६।४१	५।४१	६।४५	५।३७	६।४८	५।३३	६।५२	५।३०	६।५६	५।२६	२२	
	२५	६।३१	५।५४	६।३४	५।५१	६।३८	५।४८	६।४०	५।४५	६।४४	५।४१	६।४७	५।३८	६।५०	५।३५	६।५४	५।३१	२८	
	३१	६।३१	५।५७	६।३३	५।५४	६।३६	५।५१	६।३९	५।४९	६।४२	५।४६	६।४५	५।४३	६।४८	५।३९	६।५१	५।३६	४	अगस्त
फरवरी	६	६।२९	६। ०	६।३१	५।५७	६।३४	५।५५	६।३६	५।५२	६।३९	५।५०	६।४२	५।४७	६।४४	५।४४	६।४७	५।४१	१०	
	१२	६।२७	६। २	६।२९	६। ०	६।३२	५।५८	६।३३	५।५६	६।३६	५।५३	६।३८	५।५१	६।४०	५।४९	६।४३	५।४६	१६	
	१८	६।२४	६। ४	६।२६	६। २	६।२८	६। १	६।३०	५।५९	६।३१	५।५७	६।३३	५।५५	६।३५	५।५३	६।३८	५।५१	२२	
	२४	६।२१	६। ६	६।२२	६। ५	६।२४	६। ३	६।२५	५। २	६।२७	६। ०	६।२८	५।५९	६।३०	५।५७	६।३२	५।५५	२९	
मार्च	२	६।१७	६। ८	६।१८	६। ७	६।१९	६। ५	६।२०	६। ४	६।२२	६। ३	६।२३	६। २	६।२४	६। १	६।२५	६। ०	४	सितम्बर
	८	६।१३	६। ९	६।१४	६। ८	६।१५	६। ७	६।१५	६। ७	६।१६	६। ६	६।१७	६। ५	६।१८	६। ५	६।१९	६। ४	१०	
	१४	६। ९	६।१०	६। ९	६।१०	६।१०	६। ९	६।१०	६। ९	६।१०	६। ९	६।११	६। ८	६।११	६। ८	६।१२	६। ८	२६	
	२०	६। ४	६।११	६। ४	६।११	६। ५	६।११	६। ४	६।११	६। ४	६।११	६। ४	६।११	६। ४	६।११	६। ४	६।११	२२	
	२६	६। ०	६।१२	६। ०	६।१२	५।५९	६।१३	५।५९	६।१३	५।५८	६।१४	५।५८	६।१४	५।५८	६।१५	५।५७	६।१५	२८	
अप्रैल	२	५।५५	६।१३	५।५४	६।१४	५।५४	६।१५	५।५२	६।१५	५।५१	६।१६	५।५१	६।१७	५।५०	६।१८	५।४९	६।१९	६	अक्तूबर
	८	५।५०	६।१४	५।४६	६।१५	५।४९	६।१६	५।४७	६।१७	५।४६	६।१९	५।४४	६।२०	५।४३	६।२१	५।४२	६।२३	१२	
	१४	५।४६	६।१५	५।४५	६।१६	५।४४	६।१८	५।४२	६।१९	५।४०	६।२१	५।३८	६।२३	५।३७	६।२५	५।३५	६।२६	१७	
	२०	५।४२	६।१६	५।४०	६।१८	५।३९	६।२०	५।३७	६।२२	५।३५	६।२४	५।३३	६।२६	५।३०	६।२८	५।२८	६।३०	२३	
	२६	५।३९	६।१७	५।३६	६।१९	५।३५	६।२२	५।३२	६।२४	५।३०	६।२६	५।२७	६।२९	५।२५	६।३१	५।२२	६।३४	२९	
मई	१	५।३६	६।१९	५।३३	६।२१	५।३२	६।२३	५।२९	६।२६	५।२६	६।२९	५।२३	६।३१	५।२०	६।३४	५।१७	६।३७	३	नवम्बर
	७	५।३३	६।२०	५।३०	६।२३	५।२८	६।२६	५।२५	६।२९	५।२२	६।३२	५।१९	६।३५	५।१६	६।३८	५।१२	६।४१	९	
	१३	५।३१	६।२२	५।२८	६।२५	५।२६	६।२८	५।२२	६।३१	५।१९	६।३४	५।१५	६।३८	५।१२	६।४१	५। ८	६।४५	१५	
	१९	५।२९	६।२४	५।२६	६।२७	५।२३	६।३०	५।१९	६।३४	५।१६	६।३७	५।१२	६।४१	५। ८	६।४५	५। ४	६।४९	२०	
	२५	५।२८	६।२६	५।२५	६।२९	५।२०	६।३३	५।१७	६।३६	५।१४	६।४०	५।१०	६।४४	५। ६	६।४८	५। २	६।५२	२६	
	३१	५।२७	६।२८	५।२४	६।३२	५।२०	६।३५	५।१६	६।३९	५।१२	६।४१	५। ८	६।४७	५। ४	६।५१	५। ०	६।५६	२	दिसम्बर
जून	६	५।२७	६।३०	५।२४	६।३४	५।२०	६।३८	५।१६	६।४२	५।१२	६।४६	५। ७	६।५०	५। ३	६।५४	४।५९	६।५९	७	
	१२	५।२८	६।३२	५।२४	६।३६	५।२०	६।४०	५।१६	६।४४	५।१२	६।४८	५। ७	६।५२	५। ३	६।५७	४।५८	७। १	१३	
	१८	५।२९	६।३३	५।२५	६।३७	५।२१	६।४१	५।१७	६।४५	५।१२	६।५०	५। ८	६।५४	५। ३	६।५९	४।५९	७। ३	१९	
	२४	५।३०	६।३५	५।२६	६।३९	५।२२	६।४३	५।१८	६।४७	५।१४	६।५१	५। ९	६।५५	५। ५	७। ०	५। ०	७। ५	२४	
	३०	५।३२	६।३६	५।२८	६।३९	५।२४	६।४३	५।२०	६।४७	५।१६	६।५२	५।११	६।५६	५। ७	७। ०	५। २	७। ५	३०	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्योदय एवं सूर्यास्त (बिम्ब शीर्ष दृश्य) स्थानीयकाल में

स्टैं० टा० के लिये स्टैण्डर्ड अन्तर जो कि पृष्ठ १२५-२६ पर 'अक्षांशादि सारिणी' में है, चिह्न के विपरीत जोड़ें अथवा घटावें

उत्तर अक्षांश		१६°		१८°		२०°		२२°		२४°		२६°		२८°		३०°		दक्षिण अक्षांश	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त		
मास	ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	ता०	मास
जुलाई	६	५।३३	६।३६	५।३०	६।४०	५।२६	६।४४	५।२२	६।४८	५।१८	६।५२	५।१३	६।५६	५। ९	७। ०	५। ४	७। ५	४	जनवरी
	१२	५।३५	६।३६	५।३२	६।३९	५।२८	६।४३	५।२४	६।४७	५।२०	६।५१	५।१६	६।५५	५।१२	६।५९	५। ७	७। ४	१०	
	१८	५।३७	६।३५	५।३४	६।३९	५।३०	६।४२	५।२६	६।४६	५।२३	६।४९	५।१९	६।५३	५।१५	६।५७	५।१०	७। २	१५	
	२४	५।३९	६।३४	५।३६	६।३७	५।३२	६।४०	५।२९	६।४४	५।२५	६।४७	५।२२	६।५१	५।१८	६।५५	५।१४	६।५९	२१	
	३०	५।४१	६।३२	५।३८	६।३५	५।३४	६।३८	५।३१	६।४१	५।२८	६।४४	५।२५	६।४८	५।२१	६।५१	५।१७	६।५५	२७	
अगस्त	५	५।४२	६।३०	५।४०	६।३२	५।३७	६।३५	५।३४	६।३८	५।३१	६।४१	५।२८	६।४४	५।२५	६।४७	५।२१	६।५०	१	फरवरी
	११	५।४४	६।२७	५।४१	६।२९	५।३९	६।३२	५।३६	६।३४	५।३३	६।३७	५।३१	६।३९	५।२८	६।४२	५।२५	६।४५	७	
	१७	५।४५	६।२३	५।४३	६।२५	५।४०	६।२८	५।३८	६।३०	५।३६	६।३२	५।३३	६।३४	५।३१	६।३७	५।२८	६।३९	१३	
	२३	५।४६	६।१९	५।४४	६।२१	५।४२	६।२३	५।४०	६।२५	५।३८	६।२७	५।३६	६।२९	५।३४	६।३१	५।३२	६।३३	१८	
	२९	५।४७	६।१५	५।४५	६।१७	५।४४	६।१८	५।४२	६।२०	५।४०	६।२१	५।३९	६।२३	५।३७	६।२५	५।३५	६।२६	२४	
सितम्बर	४	५।४७	६।११	५।४६	६।१२	५।४५	६।१३	५।४४	६।१४	५।४२	६।१५	५।४१	६।१७	५।४०	६।१८	५।३८	६।१९	२	मार्च
	१०	५।४८	६। ६	५।४७	६। ७	५।४६	६। ८	५।४५	६। ८	५।४५	६। ९	५।४४	६।१०	५।४३	६।११	५।४२	६।१२	८	
	१६	५।४८	६। १	५।४८	६। २	५।४८	६। २	५।४७	६। ३	५।४७	६। ३	५।४६	६। ४	५।४५	६। ४	५।४५	६। ५	१४	
	२२	५।४९	५।५६	५।४९	५।५७	५।४९	५।५७	५।४९	५।५७	५।४९	५।५७	५।४८	५।५७	५।४८	५।५७	५।४८	५।५७	२०	
	२८	५।५०	५।५२	५।५०	५।५१	५।५०	५।५१	५।५०	५।५१	५।५१	५।५१	५।५१	५।५०	५।५१	५।५०	५।५१	५।५०	२६	
अक्तूबर	३	५।५०	५।४८	५।५१	५।४७	५।५१	५।४७	५।५२	५।४६	५।५२	५।४५	५।५३	५।४५	५।५४	५।४४	५।५४	५।४३	३०	
	९	५।५१	५।४३	५।५२	५।४२	५।५३	५।४२	५।५४	५।४१	५।५५	५।४०	५।५६	५।३८	५।५७	५।३७	५।५८	५।३६	५	अप्रैल
	१५	५।५२	५।३९	५।५३	५।३८	५।५५	५।३७	५।५६	५।३५	५।५७	५।३४	५।५९	५।३३	६। ०	५।३१	६। २	५।३०	१२	
	२१	५।५४	५।३६	५।५५	५।३४	५।५७	५।३२	५।५८	५।३१	६। ०	५।२९	६। २	५।२७	६। ४	५।२५	६। ६	५।२३	१८	
	२७	५।५५	५।३२	५।५७	५।३१	५।५९	५।२९	६। १	५।२६	६। ३	५।२४	६। ५	५।२२	६। ८	५।२०	६।१०	५।१८	२४	
नवम्बर	२	५।५७	५।३०	६। ०	५।२८	६। २	५।२५	६। ४	५।२३	६। ७	५।२०	६। ९	५।१८	६।१२	५।१५	६।१४	५।१२	३०	
	८	६। ०	५।२८	६। २	५।२५	६। ५	५।२३	६। ८	५।२०	६।१०	५।१७	६।१३	५।१४	६।१६	५।११	६।१९	५। ८	६	मई
	१४	६। २	५।२६	६। ५	५।२४	६। ८	५।२१	६।११	५।१८	६।१४	५।१५	६।१७	५।११	६।२१	५। ८	६।२४	५। ५	१२	
	२०	६। ५	५।२६	६। ९	५।२३	६।१२	५।२०	६।१५	५।१६	६।१८	५।१३	६।२२	५। ९	६।२५	५। ६	६।२९	५। २	१९	
	२६	६। ९	५।२६	६।१२	५।२३	६।१५	५।१९	६।१९	५।१६	६।२२	५।१२	६।२६	५। ८	६।३०	५। ४	६।३४	५। ०	२५	
दिसम्बर	२	६।१२	५।२७	६।१६	५।२३	६।१९	५।२०	६।२३	५।१७	६।२७	४।१२	६।३१	५। ८	७।३५	५। ४	६।३९	५। ०	३१	
	८	६।१६	५।२८	६।१९	५।२५	६।२३	५।२१	६।२७	५।१७	६।३१	५।१३	६।३५	५। ९	६।३९	५। ५	६।४३	५। ०	७	जून
	१४	६।१९	५।३०	६।२३	५।२७	६।२७	५।२३	६।३०	५।१९	६।३५	५।१५	६।३९	५।११	६।४३	५। ६	६।४८	५। २	१३	
	२०	६।२२	५।३३	६।२६	५।२९	६।३०	५।२५	६।३४	५।२१	६।३८	५।१७	६।४२	५।१३	६।४७	५। ९	६।५१	५। ४	१९	
	२६	६।२५	५।३६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		

साम्पातिक काल (कोष्ठक नं० १)

सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

साम्पातिक काल (कोष्ठक नं० १)

सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०
	घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०
१८७६	६।३९। ९	१८८८	६।३९।३०	+१९००	६।३९।५४	१९१२	६।३६।१८	१९२४	६।३६।३९	१९३६	६।३७। ४	१९४८	६।३७।२४	१९६०	६।३७।४७
१८७७	६।४२। ८	१८८९	६।४२।२९	१९०१	६।३८।५७	१९१३	६।३९।१८	१९२५	६।३९।३९	१९३७	६।४०। ३	१९४९	६।४०।२४	१९६१	६।४०।४७
१८७८	६।४१।१२	१८९०	६।४१।३२	१९०२	६।३७।५९	१९१४	६।३८।२१	१९२६	६।३८।४२	१९३८	६।३९। ६	१९५०	६।३९।२७	१९६२	६।३९।५०
१८७९	६।४०।१४	१८९१	६।४०।३४	१९०३	६।३७। १	१९१५	६।३७।२४	१९२७	६।३७।४४	१९३९	६।३८। ८	१९५१	६।३८।३०	१९६३	६।३८।५३
१८८०	६।३९।१७	१८९२	६।३९।३७	१९०४	६।३६। ४	१९१६	६।३६।२७	१९२८	६।३६।४७	१९४०	६।३७।११	१९५२	६।३७।३३	१९६४	६।३७।५६
१८८१	६।४२।१६	१८९३	६।४२।३७	१९०५	६।३९। ३	१९१७	६।३९।२६	१९२९	६।३९।४६	१९४१	६।४०।१०	१९५३	६।४०।३३	१९६५	६।४०।५५
१८८२	६।४१।१९	१८९४	६।४१।४०	१९०६	६।३८। ५	१९१८	६।३८।२९	१९३०	६।३८।४९	१९४२	६।३९।१२	१९५४	६।३९।३५	१९६६	६।३९।५७
१८८३	६।४०।२१	१८९५	६।४०।४३	१९०७	६।३७। ७	१९१९	६।३७।३२	१९३१	६।३७।५२	१९४३	६।३८।१५	१९५५	६।३८।३८	१९६७	६।३९। ०
१८८४	६।३९।२४	१८९६	६।३९।४६	१९०८	६।३६। ९	१९२०	६।३६।३४	१९३२	६।३६।५६	१९४४	६।३७।१७	१९५६	६।३७।४१	१९६८	६।३८। ३
१८८५	६।४२।२३	१८९७	६।४२।४५	१९०९	६।३९। ९	१९२१	६।३९।३३	१९३३	६।३९।५५	१९४५	६।४०।१६	१९५७	६।४०।४०	१९६९	६।४१। २
१८८६	६।४१।२५	१८९८	६।४१।४८	१९१०	६।३८।१२	१९२२	६।३८।३५	१९३४	६।३८।५८	१९४६	६।३९।१९	१९५८	६।३९।४३	१९७०	६।४०। ५
१८८७	६।४०।२८	१८९९	६।४०।५१	१९११	६।३७।१५	१९२३	६।३७।३८	१९३५	६।३८। १	१९४७	६।३८।२२	१९५९	६।३८।४५	१९७१	६।३९। ७

+ सन् १९०० प्लुतवर्ष (लीप इयर) नहीं था।

साम्पातिक काल (कोष्ठक नं० २)

तारीख	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	तारीख
	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	
१	०। ०। ०	२। २।१३	३।५२।३६	५।५४।५०	७।५३। ७	९।५५।२१	११।५३।३८	१३।५५।५०	१५।५८। ४	१७।५६।२१	१९।५८।३४	२१।५६।५०	१
२	०। ३।५७	२। ६। ९	३।५६।३३	५।५८।४७	७।५७। ४	९।५९।१७	११।५७।३४	१३।५९।४७	१६। २। ०	१८। ०।१७	२०। २।३१	२२। ०।४७	२
३	०। ७।५३	२।१०। ६	४। ०।३०	६। २।४३	८। १। ०	१०। ३।१४	१२। १।३१	१४। ३।४४	१६। ५।५७	१८। ४।१४	२०। ६।२७	२२। ४।४३	३
४	०।११।५०	२।१४। २	४। ४।२६	६। ६।४०	८। ४।५७	१०। ७।१०	१२। ५।२७	१४। ७।४०	१६। ९।५३	१८। ८।१०	२०।१०।२४	२२। ८।४०	४
५	०।१५।४६	२।१७।५९	४। ८।२३	६।१०।३६	८। ८।५३	१०।११। ७	१२। ९।२४	१४।११।३६	१६।१३।५०	१८।१२। ७	२०।१४।२०	२२।१२।३६	५
६	०।१९।४३	२।२१।५५	४।१२।१९	६।१४।३३	८।१२।५०	१०।१५। ३	१२।१३।२१	१४।१५।३३	१६।१७।४६	१८।१६। ३	२०।१८।१७	२२।१६।३३	६
७	०।२३।३९	२।२५।५२	४।१६।१६	६।१८।२९	८।१६।४६	१०।१९। ०	१२।१७।१७	१४।१९।२९	१६।२१।४३	१८।२०। ०	२०।२२।१३	२२।२०।३०	७
८	०।२७।३६	२।२९।४८	४।२०।१२	६।२२।२६	८।२०।४३	१०।२२।५६	१२।२१।१४	१४।२३।२६	१६।२५।४०	१८।२३।५७	२०।२६।१०	२२।२४।२७	८
९	०।३१।३२	२।३३।४५	४।२४। ९	६।२६।२२	८।२४।३९	१०।२६।५३	१२।२५।१०	१४।२७।२३	१६।२९।३७	१८।२७।५४	२०।३०। ६	२२।२८।२३	९
१०	०।३५।२९	२।३७।४२	४।२८। ५	६।३०।१९	८।२८।३६	१०।३०।४९	१२।२९। ६	१४।३१।२०	१६।३३।३३	१८।३१।५०	२०।३४। ३	२२।३२।२०	१०
११	०।३९।२५	२।४१।३८	४।३२। २	६।३४।१६	८।३२।३२	१०।३४।४६	१२।३३। ३	१४।३५।१६	१६।३७।३०	१८।३५।४७	२०।३८। ०	२२।३६।१६	११
१२	०।४३।२२	२।४५।३५	४।३५।५९	६।३८।१२	८।३६।२९	१०।३८।४२	१२।३६।५९	१४।३९।१३	१६।४१।२६	१८।३९।४३	२०।४१।५६	२२।४०।१३	१२
१३	०।४७।१८	२।४९।३२	४।३९।५५	६।४२। ९	८।४०।२५	१०।४२।३९	१२।४०।५६	१४।४३। ९	१६।४५।२३	१८।४३।४०	२०।४५।५२	२२।४४। ९	१३
१४	०।५१।१५	२।५३।२८	४।४३।५२	६।४६। ६	८।४४।२२	१०।४६।३५	१२।४४।५२	१४।४७। ६	१६।४९।१९	१८।४७।३७	२०।४९।४९	२२।४८। ६	१४
१५	०।५५।१२	२।५७।२५	४।४७।४९	६।५०। २	८।४८।१८	१०।५०।३२	१२।४८।४९	१४।५१। २	१६।५३।१६	१८।५१।३३	२०।५३।४५	२२।५२। २	१५
१६	०।५९। ८	३। १।२१	४।५१।४५	६।५३।५९	८।५२।१५	१०।५४।२८	१२।५२।४५	१४।५४।५९	१६।५७।१२	१८।५५।३०	२०।५७।४२	२२।५५।५९	१६
१७	१। ३। ५	३। ५।१८	४।५५।४२	६।५७।५५	८।५६।११	१०।५८।२५	१२।५६।४२	१४।५८।५५	१७। १। ९	१८।५९।२६	२१। १।३९	२२।५९।५६	१७
१८	१। ७। १	३। ९।१४	४।५९।३८	७। १।५२	९। ०। ८	११। २।२१	१३। ०।३८	१५। २।५२	१७। ५। ५	१९। ३।२२	२१। ५।३६	२३। ३।५३	१८
१९	१।१०।५७	३।१३।११	५। ३।३५	७। ५।४८	९। ४। ४	११। ६।१८	१३। ४।३५	१५। ६।४८	१७। ९। २	१९। ७।१९	२१। ९।३२	२३। ७।४९	१९
२०	१।१४।५४	३।१७। ८	५। ७।३१	७। ९।४५	९। ८। १	११।१०।१५	१३। ८।३२	१५।१०।४५	१७।१२।५८	१९।११।१५	२१।१३।२९	२३।११।४६	२०
२१	१।१८।५१	३।२१। ५	५।११।२८	७।१३।४१	९।११।५८	११।१४।१२	१३।१२।२९	१५।१४।४१	१७।१६।५५	१९।१५।१२	२१।१७।२५	२३।१५।४२	२१
२२	१।२२।४८	३।२५। १	५।१५।२५	७।१७।३८	९।१५।५५	११।१८। ८	१३।१६।२५	१५।१८।३८	१७।२०।५१	१९।१९। ८	२१।२१।२२	२३।१९।३९	२२
२३	१।२६।४४	३।२८।५८	५।१९।२१	७।२१।३४	९।१९।५१	११।२२। ५	१३।२०।२२	१५।२२।३४	१७।२४।४८	१९।२३। ५	२१।२५।१८	२३।२३।३५	२३
२४	१।३०।४१	३।३२।५४	५।२३।१८	७।२५।३१	९।२३।४८	११।२६। १	१३।२४।१८	१५।२६।३१	१७।२८।४४	१९।२७। १	२१।२९।१५	२३।२७।३२	२४
२५	१।३४।३७	३।३६।५१	५।२७।१५	७।२९।२८	९।२७।४४	११।२९।५८	१३।२८।१५	१५।३०।२७	१७।३२।४१	१९।३०।५८	२१।३३।११	२३।३१।२८	२५
२६	१।३८।३४	३।४०।४७	५।३१।११	७।३३।२४	९।३१।४१	११।३३।५४	१३।३२।११	१५।३४।२४	१७।३६।३७	१९।३४।५४	२१।३७। ८	२३।३५।२५	२६
२७	१।४२।३०	३।४४।४४	५।३५। ८	७।३७।२०	९।३५।३७	११।३७।५१	१३।३६। ८	१५।३८।२०	१७।४०।३४	१९।३८।५१	२१।४१। ४	२३।३९।२१	२७
२८	१।४६।२७	३।४८।४०	५।३९। ५	७।४१।१७	९।३९।३४	११।४१।४७	१३।४०। ४	१५।४२।१७	१७।४४।३१	१९।४२।४८	२१।४५। १	२३।४३।१८	२८
२९	१।५०।२३	३।५२।३७	५।४३। १	७।४५।१३	९।४३।३०	११।४५।४४	१३।४४। १	१५।४६।१४	१७।४८।२८	१९।४६।४५	२१।४८।५७	२३।४७।१४	२९
३०	१।५४।२०	. . .	५।४६।५८	७।४९।१०	९।४७।२७	११।४९।४१	१३।४७।५७	१५।५०।११	१७।५२।२४	१९।५०।४१	२१।५२।५४	२३।५१।११	३०
३१	१।५८।१६	. . . .	५।५०।५४	. . .	९।५१।२४	.	१३।५१।५४	१५।५४। ७	.	१९।५४।३८	. . . . .	२३।५५। ७	३१
												२३।५९। ३	३२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

साम्पातिक काल (कोष्ठक नं० ३)

पूर्व रेखांश	सां०का० संस्कार
अं० क०	सेकण्ड
८। ०	+ ४५
१०। ०	+ ४४
१२। ०	+ ४२
१४। ०	+ ४१
१६। ०	+ ४०
१८। ०	+ ३८
२०। ०	+ ३७
२२। ०	+ ३६
२४। ०	+ ३४
२६। ०	+ ३३
२८। ०	+ ३२
३०। ०	+ ३१
३२। ०	+ २९
३४। ०	+ २८
३६। ०	+ २७
३८। ०	+ २५
४०। ०	+ २४
४२। ०	+ २३
४४। ०	+ २१
४६। ०	+ २०
४८। ०	+ १९
५०। ०	+ १७
५२। ०	+ १६
५४। ०	+ १५
५६। ०	+ १३
५८। ०	+ १२
६०। ०	+ ११
६२। ०	+ १०
६४। ०	+ ८
६६। ०	+ ७
६८। ०	+ ६
७०। ०	+ ४
७२। ०	+ ३
७४। ०	+ २
७६।३०	०
७९। ०	− २
८१। ०	− ३
८३। ०	− ४
८५। ०	− ६
८७। ०	− ७
८९। ०	− ८
९१। ०	− १०
९३। ०	− ११
९५। ०	− १२
९७। ०	− १३
९९। ०	− १५
१०१। ०	− १६
[illegible]	[illegible]

साम्पातिक काल (कोष्ठक नं० ४)

घ० मि०	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
	मि०सै०	मि०सै०	मि०सै०	मि०सै०	मि०सै०	मि०सै०	मि०सै०	मि०सै०	मि०सै०	मि०सै०	मि०सै०	मि०सै०
०	०। ०	०। १	०। २	०। २	०। ३	०। ४	०। ५	०। ६	०। ७	०। ७	०। ८	०। ९
१	०।१०	०।११	०।११	०।१२	०।१३	०।१४	०।१५	०।१६	०।१६	०।१७	०।१८	०।१९
२	०।२०	०।२१	०।२१	०।२२	०।२३	०।२४	०।२५	०।२५	०।२६	०।२७	०।२८	०।२९
३	०।३०	०।३०	०।३१	०।३२	०।३३	०।३४	०।३४	०।३५	०।३६	०।३७	०।३८	०।३९
४	०।३९	०।४०	०।४१	०।४२	०।४३	०।४४	०।४४	०।४५	०।४६	०।४७	०।४८	०।४८
५	०।४९	०।५०	०।५१	०।५२	०।५३	०।५३	०।५४	०।५५	०।५६	०।५७	०।५७	०।५८
६	०।५९	१। ०	१। १	१। २	१। २	१। ३	१। ४	१। ५	१। ६	१। ७	१। ७	१। ८
७	१। ९	१।१०	१।११	१।११	१।१२	१।१३	१।१४	१।१५	१।१६	१।१६	१।१७	१।१८
८	१।१९	१।२०	१।२०	१।२१	१।२२	१।२३	१।२४	१।२५	१।२५	१।२६	१।२७	१।२८
९	१।२९	१।३०	१।३०	१।३१	१।३२	१।३३	१।३४	१।३४	१।३५	१।३६	१।३७	१।३८
१०	१।३९	१।३९	१।४०	१।४१	१।४२	१।४३	१।४३	१।४४	१।४५	१।४६	१।४७	१।४८
११	१।४८	१।४९	१।५०	१।५१	१।५२	१।५३	१।५३	१।५४	१।५५	१।५६	१।५७	१।५७
१२	१।५८	१।५९	२। ०	२। १	२। २	२। २	२। ३	२। ४	२। ५	२। ६	२। ६	२। ७
१३	२। ८	२। ९	२।१०	२।११	२।११	२।१२	२।१३	२।१४	२।१५	२।१६	२।१६	२।१७
१४	२।१८	२।१९	२।२०	२।२०	२।२१	२।२२	२।२३	२।२४	२।२५	२।२५	२।२६	२।२७
१५	२।२८	२।२९	२।२९	२।३०	२।३१	२।३२	२।३३	२।३४	२।३४	२।३५	२।३६	२।३७
१६	२।३८	२।३९	२।३९	२।४०	२।४१	२।४२	२।४३	२।४३	२।४४	२।४५	२।४६	२।४७
१७	२।४८	२।४८	२।४९	२।५०	२।५१	२।५२	२।५२	२।५३	२।५४	२।५५	२।५६	२।५७
१८	२।५७	२।५८	२।५९	३। ०	३। १	३। २	३। २	३। ३	३। ४	३। ५	३। ६	३। ६
१९	३। ७	३। ८	३। ९	३।१०	३।११	३।११	३।१२	३।१३	३।१४	३।१५	३।१५	३।१६
२०	३।१७	३।१८	३।१९	३।२०	३।२०	३।२१	३।२२	३।२३	३।२४	३।२५	३।२५	३।२६
२१	३।२७	३।२८	३।२९	३।२९	३।३०	३।३१	३।३२	३।३३	३।३४	३।३४	३।३५	३।३६
२२	३।३७	३।३८	३।३८	३।३९	३।४०	३।४१	३।४२	३।४३	३।४३	३।४४	३।४५	३।४६
२३	३।४७	३।४८	३।४८	३।४९	३।५०	३।५१	३।५२	३।५२	३।५३	३।५४	३।५५	३।५६

अयनांश सारिणी (भाग २ य)

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५
जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अयनांश सारिणी (भाग १ म)

ई०सन्	अयनांश	ई०सन्	अयनांश
	अं०क०वि०		अं०क०वि०
१८७६	२२। ६।३७	१९२४	२२।४६।४९
१८७७	२२। ७।२७	१९२५	२२।४७।३९
१८७८	२२। ८।१७	१९२६	२२।४८।३०
१८७९	२२। ९। ७	१९२७	२२।४९।२०
१८८०	२२। ९।५८	१९२८	२२।५०।१०
१८८१	२२।१०।४८	१९२९	२२।५१। ०
१८८२	२२।११।३८	१९३०	२२।५१।५१
१८८३	२२।१२।२८	१९३१	२२।५२।४१
१८८४	२२।१३।१९	१९३२	२२।५३।३१
१८८५	२२।१४। ९	१९३३	२२।५४।२१
१८८६	२२।१४।५९	१९३४	२२।५५।१२
१८८७	२२।१५।५०	१९३५	२२।५६। २
१८८८	२२।१६।४०	१९३६	२२।५६।५२
१८८९	२२।१७।३०	१९३७	२२।५७।४२
१८९०	२२।१८।२०	१९३८	२२।५८।३३
१८९१	२२।१९।११	१९३९	२२।५९।२३
१८९२	२२।२०। १	१९४०	२३। ०।१३
१८९३	२२।२०।५१	१९४१	२३। १। ४
१८९४	२२।२१।४१	१९४२	२३। १।५४
१८९५	२२।२२।३२	१९४३	२३। २।४४
१८९६	२२।२३।२२	१९४४	२३। ३।३४
१८९७	२२।२४।१२	१९४५	२३। ४।२५
१८९८	२२।२५। २	१९४६	२३। ५।१५
१८९९	२२।२५।५३	१९४७	२३। ६। ५
१९००	२२।२६।४३	१९४८	२३। ६।५५
१९०१	२२।२७।३३	१९४९	२३। ७।४६
१९०२	२२।२८।२३	१९५०	२३। ८।३६
१९०३	२२।२९।१४	१९५१	२३। ९।२६
१९०४	२२।३०। ४	१९५२	२३।१०।१६
१९०५	२२।३०।५४	१९५३	२३।११। ७
१९०६	२२।३१।४४	१९५४	२३।११।५७
१९०७	२२।३२।३५	१९५५	२३।१२।४७
१९०८	२२।३३।२५	१९५६	२३।१३।३८
१९०९	२२।३४।१५	१९५७	२३।१४।२८
१९१०	२२।३५। ५	१९५८	२३।१५।१८
१९११	२२।३५।५६	१९५९	२३।१६। ८
१९१२	२२।३६।४६	१९६०	२३।१६।५९
१९१३	२२।३७।३६	१९६१	२३।१७।४९
१९१४	२२।३८।२६	१९६२	२३।१८।३९
१९१५	२२।३९।१७	१९६३	२३।१९।२९
१९१६	२२।४०। ७	१९६४	२३।२०।१९
१९१७	२२।४०।५७	१९६५	२३।२१।१०
१९१८	२२।४१।४७	१९६६	२३।२२। ०
१९१९	२२।४२।३८	१९६७	२३।२२।५०
१९२०	२२।४३।२८	१९६८	२३।२३।४०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

२३°१५' अयनांशीय निरयण लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३०° के लिए

हरिद्वार, भटिण्डा, करनाल, अम्बाला एवं पटियाला आदि नगरों के लिए उपयोगी ।

राशि→	मेष (०)		वृष (१)		मिथुन (२)		कर्क (३)		सिंह (४)		कन्या (५)	
अंश ↓	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.
०	१९। ४।५९	१७३	२०।३८।३८	२०७	२२।३३। ५	२५३	०।४७।५७	२८२	३। ९।४८	२८२	५।२९। १	२७५
१	१९। ७।५२	१७४	२०।४२। ५	२०८	२२।३७।१८	२५५	०।५२।३९	२८३	३।१४।३०	२८२	५।३३।३६	२७६
२	१९।१०।४६	१७५	२०।४५।३३	२०९	२२।४१।३३	२५६	०।५७।२२	२८२	३।१९।१२	२८१	५।३८।१२	२७६
३	१९।१३।४१	१७५	२०।४९। २	२११	२२।४५।४९	२५७	१। २। ४	२८३	३।२३।५३	२८१	५।४२।४८	२७५
४	१९।१६।३६	१७७	२०।५२।३३	२१२	२२।५०। ६	२५८	१। ६।४७	२८४	३।२८।३४	२८१	५।४७।२३	२७५
५	१९।१९।३३	१७७	२०।५६। ५	२१४	२२।५४।२४	२६०	१।११।३१	२८४	३।३३।१५	२८१	५।५१।५८	२७६
६	१९।२२।३०	१७८	२०।५९।३९	२१५	२२।५८।४४	२६१	१।१६।१५	२८४	३।३७।५६	२८१	५।५६।३४	२७५
७	१९।२५।२८	१७८	२१। ३।१४	२१७	२३। ३। ५	२६३	१।२०।५९	२८४	३।४२।३७	२८०	६। १। ९	२७५
८	१९।२८।२६	१८०	२१। ६।५१	२१८	२३। ७।२८	२६४	१।२५।४३	२८४	३।४७।१७	२८०	६। ५।४४	२७५
९	१९।३१।२६	१८१	२१।१०।२९	२२०	२३।११।५२	२६५	१।३०।२७	२८४	३।५१।५७	२७९	६।१०।१९	२७६
१०	१९।३४।२७	१८२	२१।१४। ९	२२२	२३।१६।१७	२६६	१।३५।११	२८४	३।५६।३६	२७९	६।१४।५५	२७६
११	१९।३७।२९	१८२	२१।१७।५१	२२३	२३।२०।४३	२६७	१।३९।५५	२८५	४। १।१५	२८०	६।१९।३१	२७५
१२	१९।४०।३१	१८४	२१।२१।३४	२२५	२३।२५।१०	२६९	१।४४।४०	२८५	४। ५।५५	२७९	६।२४। ६	२७५
१३	१९।४३।३५	१८५	२१।२५।१९	२२७	२३।२९।३९	२७०	१।४९।२५	२८५	४।१०।३४	२७८	६।२८।४१	२७६
१४	१९।४६।४०	१८५	२१।२९। ६	२२८	२३।३४। ९	२७०	१।५४।१०	२८४	४।१५।१२	२७८	६।३३।१७	२७६
१५	१९।४९।४५	१८७	२१।३२।५४	२२९	२३।३८।३९	२७२	१।५८।५४	२८४	४।१९।५०	२७८	६।३७।५३	२७५
१६	१९।५२।५२	१८८	२१।३६।४३	२३२	२३।४३।११	२७३	२। ३।३८	२८४	४।२४।२८	२७८	६।४२।२८	२७६
१७	१९।५६। ०	१८९	२१।४०।३५	२३३	२३।४७।४४	२७३	२। ८।२२	२८५	४।२९। ६	२७८	६।४७। ४	२७६
१८	१९।५९। ९	१९१	२१।४४।२८	२३४	२३।५२।१७	२७४	२।१३। ७	२८५	४।३३।४४	२७७	६।५१।४०	२७७
१९	२०। २।२०	१९१	२१।४८।२२	२३६	२३।५६।५१	२७५	२।१७।५२	२८४	४।३८।२१	२७७	६।५६।१७	२७६
२०	२०। ५।३१	१९३	२१।५२।१८	२३८	०। १।२६	२७६	२।२२।३६	२८४	४।४२।५८	२७७	७। ०।५३	२७७
२१	२०। ८।४४	१९४	२१।५६।१६	२३९	०। ६। २	२७७	२।२७।२०	२८४	४।४७।३५	२७७	७। ५।३०	२७६
२२	२०।११।५८	१९५	२२। ०।१५	२४१	०।१०।३९	२७७	२।३२। ४	२८३	४।५२।१२	२७६	७।१०। ६	२७७
२३	२०।१५।१३	१९७	२२। ४।१६	२४२	०।१५।१६	२७९	२।३६।४८	२८४	४।५६।४९	२७७	७।१४।४३	२७७
२४	२०।१८।३०	१९८	२२। ८।१८	२४४	०।१९।५५	२७९	२।४१।३१	२८३	५। १।२५	२७६	७।१९।२०	२७७
२५	२०।२१।४८	१९९	२२।१२।२२	२४५	०।२४।३४	२८०	२।४६।१५	२८३	५। ६। २	२७६	७।२३।५७	२७८
२६	२०।२५। ७	२०१	२२।१६।२७	२४७	०।२९।१४	२८०	२।५०।५८	२८२	५।१०।३८	२७६	७।२८।३५	२७८
२७	२०।२८।२८	२०२	२२।२०।३४	२४९	०।३३।५४	२८०	२।५५।४१	२८३	५।१५।१४	२७५	७।३३।१३	२७९
२८	२०।३१।५०	२०३	२२।२४।४३	२५१	०।३८।३४	२८१	३। ०।२३	२८२	५।१९।५०	२७६	७।३७।५२	२७७
२९	२०।३५।१३	२०५	२२।२८।५४	२५१	०।४३।१५	२८२	३। ५। ६		५।२४।२५		७।४२।२९	२७८
३०	२०।३८।३८		२२।३३। ५		०।४७।५७		३। ९।४८		५।२९। १		७।४७। ७	

राशि→	तुला (६)		वृश्चिक (७)		धनु (८)		मकर (९)		कुम्भ (१०)		मीन (११)	
अंश ↓	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.
०	७।४७। ७	२७९	१०। ८।१३	२८५	१२।२८। ७	२६९	१४।३२।४८	२२५	१६।१४।५३	१८४	१७।४१।२४	१६६
१	७।५१।४६	२७९	१०।१२।५८	२८४	१२।३२।३६	२६८	१४।३६।३३	२२४	१६।१७।५७	१८३	१७।४४।१०	१६६
२	७।५६।२५	२७९	१०।१७।४२	२८४	१२।३७। ४	२६७	१४।४०।१७	२२३	१६।२१। ०	१८२	१७।४६।५६	०६५
३	८। १। ४	२८०	१०।२२।२६	२८५	१२।४१।३१	२६५	१४।४४।००	२२१	१६।२४। २	१८१	१७।४९।४१	१६५
४	८। ५।४४	२७९	१०।२७।११	२८४	१२।४५।५६	२६४	१४।४७।४१	२१९	१६।२७। ३	१८१	१७।५२।२६	१६५
५	८।१०।२३	२८०	१०।३१।५५	२८४	१२।५०।२०	२६४	१४।५१।२०	२१८	१६।३०। ४	१७९	१७।५५।११	१६५
६	८।१५। ३	२८०	१०।३६।३९	२८४	१२।५४।४४	२६२	१४।५४।५८	२१६	१६।३३। ३	१७८	१७।५७।५६	१६५
७	८।१९।४३	२८१	१०।४१।२३	२८४	१२।५९। ६	२६०	१४।५८।३४	२१५	१६।३६। १	१७८	१८। ०।४१	१६५
८	८।२४।२४	२८१	१०।४६। ७	२८४	१३। ३।२६	२६१	१५। २। ९	२१२	१६।३८।५९	१७७	१८। ३।२६	१६५
९	८।२९। ५	२८१	१०।५०।५१	२८३	१३। ७।४५	२५९	१५। ५।४१	२१२	१६।४१।५६	१७५	१८। ६।११	१६५
१०	८।३३।४६	२८१	१०।५५।३४	२८३	१३।१२। ३	२५७	१५। ९।१३	२१०	१६।४४।५१	१७६	१८। ८।५६	१६५
११	८।३८।२७	२८२	११। ०।१७	२८३	१३।१६।२०	२५५	१५।१२।४३	२०८	१६।४७।४७	१७४	१८।११।४१	१६६
१२	८।४३। ९	२८२	११। ५। ०	२८२	१३।२०।३५	२५४	१५।१६।११	२०७	१६।५०।४१	१७४	१८।१४।२७	१६६
१३	८।४७।५१	२८२	११। ९।४२	२८२	१३।२४।४९	२५२	१५।१९।३८	२०६	१६।५३।३५	१७३	१८।१७।१३	१६६
१४	८।५२।३३	२८२	११।१४।२४	२८१	१३।२९। १	२५१	१५।२३। ४	२०४	१६।५६।२८	१७२	१८।१९।५९	१६५
१५	८।५७।१५	२८३	११।१९। ५	२८१	१३।३३।१२	२४९	१५।२६।२८	२०३	१६।५९।२०	१७१	१८।२२।४४	१६६
१६	९। १।५८	२८३	११।२३।४६	२८०	१३।३७।२१	२४८	१५।२९।५१	२०२	१७। २।११	१७१	१८।२५।३०	१६७
१७	९। ६।४१	२८३	११।२८।२६	२८०	१३।४१।२९	२४६	१५।३३।१३	२००	१७। ५। २	१७०	१८।२८।१७	१६७
१८	९।११।२४	२८३	११।३३। ६	२८०	१३।४५।३५	२४५	१५।३६।३३	१९८	१७। ७।५२	१७१	१८।३१। ४	१६७
१९	९।१६। ७	२८४	११।३७।४६	२७८	१३।४९।४०	२४३	१५।३९।५१	१९७	१७।१०।४३	१७०	१८।३३।५१	१६७
२०	९।२०।५१	२८३	११।४२।२४	२७८	१३।५३।४३	२४२	१५।४३। ८	१९६	१७।१३।३३	१६८	१८।३६।३८	१६८
२१	९।२५।३४	२८४	११।४७। २	२७७	१३।५७।४५	२४०	१५।४६।२४	१९५	१७।१६।२१	१६९	१८।३९।२६	१६८
२२	९।३०।१८	२८४	११।५१।३९	२७६	१४। १।४५	२३८	१५।४९।३९	१९४	१७।१९।१०	१६८	१८।४२।१४	१६८
२३	९।३५। २	२८४	११।५६।१५	२७६	१४। ५।४३	२३७	१५।५२।५३	१९२	१७।२१।५८	१६७	१८।४५। २	१६९
२४	९।३९।४६	२८४	१२। ०।५१	२७५	१४। ९।४०	२३५	१५।५६। ५	१९१	१७।२४।४५	१६८	१८।४७।५१	१७०
२५	९।४४।३०	२८५	१२। ५।२६	२७४	१४।१३।३५	२३४	१५।५९।१६	१८९	१७।२७।३३	१६७	१८।५०।४१	१७१
२६	९।४९।१५	२८४	१२।१०। ०	२७३	१४।१७।२९	२३२	१६। २।२५	१८८	१७।३०।२०	१६६	१८।५३।३२	१७१
२७	९।५३।५९	२८५	१२।१४।३३	२७२	१४।२१।२१	२३१	१६। ५।३३	१८८	१७।३३। ६	१६६	१८।५६।२३	१७१
२८	९।५८।४४	२८५	१२।१९। ५	२७१	१४।२५।१२	२२९	१६। ८।४१	१८७	१७।३५।५२	१६६	१८।५९।१४	१७२
२९	१०। ३।२९	२८४	१२।२३।३६	२७१	१४।२९। १	२२७	१६।११।४८	१८५	१७।३८।३८	१६६	१९। २। ६	१७३
३०	१०। ८।१३		१२।२८। ७		१४।३२।४८		१६।१४।५३		१७।४१।२४		१९। ४।५९	

२३।१५ अयनांशीय निरयण लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३१° के लिए

चण्डीगढ़, जालन्धर, शिमला, लुधियाना एवं फिरोजपुर आदि नगरों के लिए उपयोगी।

राशि →	मेष (०)		वृष (१)		मिथुन (२)		कर्क (३)		सिंह (४)		कन्या (५)	
अंश ↓	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति
	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.
०	१९। ४। ७	१७१	२०।३६।४७	२०५	२२।३०।४१	२५३	०।४५।४६	२८३	३। ८।२८	२८४	५।२८।४६	२७८
१	१९। ६।५८	१७२	२०।४०।१२	२०६	२२।३४।५४	२५४	०।५०।२९	२८४	३।१३।१२	२८४	५।३३।२४	२७९
२	१९। ९।५०	१७३	२०।४३।३८	२०८	२२।३९। ८	२५६	०।५५।१३	२८४	३।१७।५६	२८३	५।३८। ३	२७७
३	१९।१२।४३	१७३	२०।४७। ६	२०९	२२।४३।२४	२५७	०।५९।५७	२८५	३।२२।३९	२८३	५।४२।४०	२७७
४	१९।१५।३६	१७४	२०।५०।३५	२११	२२।४७।४१	२५८	१। ४।४२	२८५	३।२७।२२	२८४	५।४७।१७	२७७
५	१९।१८।३०	१७५	२०।५४। ६	२१३	२२।५१।५९	२६०	१। ९।२७	२८५	३।३२। ६	२८३	५।५१।५४	२७८
६	१९।२१।२५	१७६	२०।५७।३९	२१३	२२।५६।१९	२६१	१।१४।१२	२८५	३।३६।४९	२८२	५।५६।३२	२७८
७	१९।२४।२१	१७६	२१। १।१२	२१५	२३। ०।४०	२६३	१।१८।५७	२८६	३।४१।३१	२८२	६। १।१०	२७७
८	१९।२७।१७	१७७	२१। ४।४७	२१७	२३। ५। ३	२६४	१।२३।४३	२८५	३।४६।१३	२८२	६। ५।४७	२७८
९	१९।३०।१४	१७९	२१। ८।२४	२१९	२३। ९।२७	२६५	१।२८।२८	२८६	३।५०।५५	२८२	६।१०।२५	२७७
१०	१९।३३।१३	१८०	२१।१२। ३	२२०	२३।१३।५२	२६६	१।३३।१४	२८६	३।५५।३७	२८१	६।१५। २	२७८
११	१९।३६।१३	१८१	२१।१५।४३	२२२	२३।१८।१८	२६८	१।३८। ०	२८६	४। ०।१८	२८२	६।१९।४०	२७७
१२	१९।३९।१४	१८२	२१।१९।२५	२२४	२३।२२।४६	२६९	१।४२।४६	२८६	४। ५। ०	२८१	६।२४।१७	२७८
१३	१९।४२।१६	१८२	२१।२३। ९	२२५	२३।२७।१५	२७०	१।४७।३२	२८७	४। ९।४१	२८०	६।२८।५५	२७८
१४	१९।४५।१८	१८४	२१।२६।५४	२२७	२३।३१।४५	२७१	१।५२।१९	२८६	४।१४।२१	२८१	६।३३।३३	२७८
१५	१९।४८।२२	१८५	२१।३०।४१	२२९	२३।३६।१६	२७२	१।५७। ५	२८६	४।१९। २	२८०	६।३८।११	२७८
१६	१९।५१।२७	१८६	२१।३४।३०	२३०	२३।४०।४८	२७३	२। १।५१	२८६	४।२३।४२	२८०	६।४२।४९	२७८
१७	१९।५४।३३	१८७	२१।३८।२०	२३२	२३।४५।२१	२७४	२। ६।३७	२८७	४।२८।२२	२८०	६।४७।२७	२७९
१८	१९।५७।४०	१८८	२१।४२।१२	२३३	२३।४९।५५	२७५	२।११।२४	२८६	४।३३। २	२८०	६।५२। ६	२७८
१९	२०। ०।४८	१९०	२१।४६। ५	२३५	२३।५४।३०	२७५	२।१६।१०	२८६	४।३७।४२	२७९	६।५६।४४	२७९
२०	२०। ३।५८	१९१	२१।५०। ०	२३७	२३।५९। ५	२७७	२।२०।५६	२८६	४।४२।२१	२७९	७। १।२३	२७८
२१	२०। ७। ९	१९२	२१।५३।५७	२३९	०। ३।४२	२७८	२।२५।४२	२८६	४।४७। ०	२७९	७। ६। १	२७९
२२	२०।१०।२१	१९३	२१।५७।५६	२४०	०। ८।२०	२७९	२।३०।२८	२८५	४।५१।३९	२७९	७।१०।४०	२७९
२३	२०।१३।३४	१९५	२२। १।५६	२४२	०।१२।५९	२७९	२।३५।१३	२८६	४।५६।१८	२७९	७।१५।१९	२८०
२४	२०।१६।४९	१९६	२२। ५।५८	२४३	०।१७।३८	२८०	२।३९।५९	२८५	५। ०।५७	२७८	७।१९।५९	२७९
२५	२०।२०। ५	१९८	२२।१०। १	२४५	०।२२।१८	२८०	२।४४।४४	२८५	५। ५।३५	२७९	७।२४।३८	२८०
२६	२०।२३।२३	१९९	२२।१४। ६	२४७	०।२६।५८	२८१	२।४९।२९	२८५	५।१०।१४	२७८	७।२९।१८	२८०
२७	२०।२६।४२	२००	२२।१८।१३	२४८	०।३१।३९	२८२	२।५४।१४	२८५	५।१४।५२	२७८	७।३३।५८	२८०
२८	२०।३०। २	२०२	२२।२२।२१	२४९	०।३६।२१	२८२	२।५८।५९	२८४	५।१९।३०	२७८	७।३८।३८	२८०
२९	२०।३३।२४	२०३	२२।२६।३०	२५१	०।४१। ३	२८३	३। ३।४३	२८५	५।२४। ८	२७८	७।४३।१८	२८१
३०	२०।३६।४७		२२।३०।४१		०।४५।४६		३। ८।२८		५।२८।४६		७।४७।५९	

राशि →	तुला (६)		वृश्चिक (७)		धनु (८)		मकर (९)		कुम्भ (१०)		मीन (११)	
अंश ↓	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति
	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.
०	७।४७।५९	२८०	१०।१०। ३	२८७	१२।३०।३०	२६९	१४।३४।५८	२२४	१६।१६।१३	१८२	१७।४१।४०	१६४
१	७।५२।३९	२८१	१०।१४।५०	२८६	१२।३४।५९	२६८	१४।३८।४२	२२३	१६।१९।१५	१८१	१७।४४।२४	१६२
२	७।५७।२०	२८१	१०।१९।३६	२८६	१२।३९।२७	२६७	१४।४२।२५	२२१	१६।२२।१६	१८०	१७।४७। ६	१६३
३	८। २। १	२८२	१०।२४।२२	२८६	१२।४३।५४	२६६	१४।४६। ६	२२०	१६।२५।१६	१७९	१७।४९।४९	१६३
४	८। ६।४३	२८२	१०।२९। ८	२८६	१२।४८।२०	२६५	१४।४९।४६	२१८	१६।२८।१५	१७८	१७।५२।३२	१६३
५	८।११।२५	२८२	१०।३३।५४	२८५	१२।५२।४५	२६३	१४।५३।२४	२१६	१६।३१।१३	१७८	१७।५५।१५	१६३
६	८।१६। ७	२८२	१०।३८।३९	२८५	१२।५७। ८	२६२	१४।५७। ०	२१५	१६।३४।११	१७७	१७।५७।५८	१६३
७	८।२०।४९	२८३	१०।४३।२४	२८६	१३। १।३०	२६०	१५। ०।३५	२१३	१६।३७। ८	१७५	१८। ०।४१	१६३
८	८।२५।३२	२८३	१०।४८।१०	२८५	१३। ५।५०	२६०	१५। ४। ८	२११	१६।४०। ३	१७४	१८। ३।२४	१६२
९	८।३०।१५	२८३	१०।५२।५५	२८५	१३।१०।१०	२५८	१५। ७।३९	२१०	१६।४२।५७	१७४	१८। ६। ६	१६३
१०	८।३४।५८	२८४	१०।५७।४०	२८४	१३।१४।२८	२५६	१५।११। ९	२०८	१६।४५।५१	१७३	१८। ८।४९	१६३
११	८।३९।४२	२८४	११। २।२४	२८४	१३।१८।४४	२५५	१५।१४।३७	२०७	१६।४८।४४	१७२	१८।११।३२	१६३
१२	८।४४।२६	२८४	११। ७। ८	२८३	१३।२२।५९	२५३	१५।१८। ४	२०६	१६।५१।३६	१७१	१८।१४।१५	१६३
१३	८।४९।१०	२८४	११।११।५१	२८३	१३।२७।१२	२५२	१५।२१।३०	२०४	१६।५४।२७	१७१	१८।१६।५८	१६४
१४	८।५३।५४	२८४	११।१६।३४	२८३	१३।३१।२४	२५०	१५।२४।५४	२०२	१६।५७।१८	१७०	१८।१९।४२	१६४
१५	८।५८।३८	२८५	११।२१।१७	२८२	१३।३५।३४	२४९	१५।२८।१६	२०१	१७। ०। ८	१७०	१८।२२।२६	[illegible]
१६	९। ३।२३	२८५	११।२५।५९	२८१	१३।३९।४३	२४७	१५।३१।३७	२००	१७। २।५८	१६९	[illegible]	[illegible]
१७	९। ८। ८	२८५	११।३०।४०	२८१	१३।४३।५०	२४६	१५।३४।५७	१९८	१७। ५।४७	१६८	[illegible]	[illegible]
१८	९।१२।५३	२८५	११।३५।२१	२८०	१३।४७।५६	२४४	१५।३८।१५	१९७	१७। ८।३५	१६८	[illegible]	[illegible]
१९	९।१७।३८	२८५	११।४०। १	२८०	१३।५२। ०	२४३	१५।४१।३२	१९५	१७।११।२३	१६७	[illegible]	[illegible]
२०	९।२२।२३	२८६	११।४४।४१	२७९	१३।५६। ३	२४१	१५।४४।४७	१९४	१७।१४।१०	१६७	[illegible]	[illegible]
२१	९।२७। ९	२८६	११।४९।२०	२७८	१४। ०। ४	२३९	१५।४८। १	१९३	१७।१६।५७	१६६	[illegible]	[illegible]
२२	९।३१।५५	२८६	११।५३।५८	२७७	१४। ४। ३	२३७	१५।५१।१४	१९२	१७।१९।४३	१६६	[illegible]	[illegible]
२३	९।३६।४१	२८५	११।५८।३५	२७६	१४। ८। ०	२३६	१५।५४।२६	१९०	१७।२२।२९	१६५	[illegible]	[illegible]
२४	९।४१।२६	२८६	१२। ३।११	२७६	१४।११।५६	२३५	१५।५७।३६	१८९	१७।२५।१४	१६५	[illegible]	[illegible]
२५	९।४६।१२	२८६	१२। ७।४७	२७४	१४।१५।५१	२३३	१६। ०।४५	१८८	१७।२७।५९	१६५	[illegible]	[illegible]
२६	९।५०।५८	२८६	१२।१२।२१	२७४	१४।१९।४४	२३१	१६। ३।५३	१८७	१७।३०।४४	१६४	[illegible]	[illegible]
२७	९।५५।४४	२८७	१२।१६।५५	२७३	१४।२३।३५	२२९	१६। ७। ०	१८५	१७।३३।२८	१६४	[illegible]	[illegible]
२८	१०। ०।३१	२८६	१२।२१।२८	२७१	१४।२७।२४	२२८	१६।१०। ५	१८४	१७।३६।१२	१६४	[illegible]	[illegible]
२९	१०। ५।१७	२८६	१२।२५।५९	२७१	१४।३१।१२	२२६	१६।१३। ९	१८४	१७।३८।५६	१६४	१९। १।१७	१७०
३०	१०।१०। ३		१२।३०।३०		१४।३४।५८		१६।१६।१३		१७।४१।४०		१९। ४। ७	

२३°१५' अक्षांशीय निरयण दशम लग्न सारिणी (सर्वत्र उपयोगी)

राशि →	मेष (०) साम्पा. काल	गति	वृष (१) साम्पा. काल	गति	मिथुन (२) साम्पा. काल	गति	कर्क (३) साम्पा. काल	गति	सिंह (४) साम्पा. काल	गति	कन्या (५) साम्पा. काल	गति
अंश ↓	घं. मि. से.	से.	घं. मि. से.	से.	घं. मि. से.	से.	घं. मि. से.	से.	घं. मि. से.	से.	घं. मि. से.	से.
०	१।२६। ३	२२६	३।२३।२६	२४५	५।३०।३६	२६१	७।४०।२२	२५४	९।४२।२०	२३३	११।३५।१३	२२०
१	१।२९।४९	२२६	३।२७।३१	२४६	५।३४।५७	२६१	७।४४।३६	२५३	९।४६।१३	२३३	११।३८।५३	२२१
२	१।३३।३५	२२७	३।३१।३७	२४७	५।३९।१८	२६१	७।४८।४९	२५३	९।५०। ६	२३२	११।४२।३४	२२०
३	१।३७।२२	२२७	३।३५।४४	२४८	५।४३।३९	२६१	७।५३। २	२५२	९।५३।५८	२३१	११।४६।१४	२२०
४	१।४१।१०	२२८	३।३९।५२	२४८	५।४८। ०	२६२	७।५७।१४	२५१	९।५७।४९	२३१	११।४९।५४	२२१
५	१।४४।५८	२२९	३।४४। ०	२४९	५।५२।२२	२६२	८। १।२५	२५१	१०। १।४०	२३०	११।५३।३५	२२०
६	१।४८।४७	२२९	३।४८। ९	२५०	५।५६।४४	२६१	८। ५।३६	२५०	१०। ५।३०	२२९	११।५७।१५	२२०
७	१।५२।३६	२३०	३।५२।१९	२५०	६। १। ५	२६२	८। ९।४६	२४९	१०। ९।१९	२२९	१२। ०।५५	२२०
८	१।५६।२६	२३०	३।५६।२९	२५१	६। ५।२७	२६२	८।१३।५५	२४९	१०।१३। ८	२२८	१२। ४।३५	२२०
९	२। ०।१६	२३१	४। ०।४०	२५२	६। ९।४९	२६१	८।१८। ४	२४८	१०।१६।५६	२२८	१२। ८।१५	२२१
१०	२। ४। ७	२३१	४। ४।५२	२५२	६।१४।१०	२६१	८।२२।१२	२४७	१०।२०।४४	२२७	१२।११।५६	२२०
११	२। ७।५८	२३२	४। ९। ४	२५३	६।१८।३१	२६२	८।२६।१९	२४७	१०।२४।३१	२२७	१२।१५।३६	२२०
१२	२।११।५०	२३३	४।१३।१७	२५३	६।२२।५३	२६१	८।३०।२६	२४६	१०।२८।१८	२२६	१२।१९।१६	२२१
१३	२।१५।४३	२३३	४।१७।३०	२५४	६।२७।१४	२६१	८।३४।३२	२४५	१०।३२। ४	२२६	१२।२२।५७	२२१
१४	२।१९।३६	२३४	४।२१।४४	२५५	६।३१।३५	२६१	८।३८।३७	२४४	१०।३५।५०	२२५	१२।२६।३८	२२१
१५	२।२३।३०	२३५	४।२५।५९	२५६	६।३५।५६	२६०	८।४२।४१	२४४	१०।३९।३५	२२५	१२।३०।१९	२२१
१६	२।२७।२५	२३६	४।३०।१५	२५६	६।४०।१६	२६०	८।४६।४५	२४३	१०।४३।२०	२२४	१२।३४। ०	२२१
१७	२।३१।२१	२३६	४।३४।३१	२५६	६।४४।३६	२६०	८।५०।४८	२४२	१०।४७। ४	२२४	१२।३७।४१	२२१
१८	२।३५।१७	२३७	४।३८।४७	२५७	६।४८।५६	२६०	८।५४।५०	२४१	१०।५०।४८	२२४	१२।४१।२२	२२२
१९	२।३९।१४	२३७	४।४३। ४	२५७	६।५३।१६	२५९	८।५८।५१	२४१	१०।५४।३२	२२३	१२।४५। ४	२२२
२०	२।४३।१२	२३८	४।४७।२१	२५८	६।५७।३५	२५९	९। २।५२	२४०	१०।५८।१५	२२३	१२।४८।४६	२२२
२१	२।४७। ९	२३९	४।५१।३९	२५८	७। १।५४	२५८	९। ६।५२	२३९	११। १।५८	२२३	१२।५२।२८	२२२
२२	२।५१। ८	२४०	४।५५।५७	२५९	७। ६।१२	२५८	९।१०।५१	२३८	११। ५।४१	२२२	१२।५६।१०	२२३
२३	२।५५। ८	२४०	५। ०।१६	२५९	७।१०।३०	२५८	९।१४।४९	२३९	११। ९।२३	२२२	१२।५९।५३	२२३
२४	२।५९। ८	२४१	५। ४।३५	२५९	७।१४।४८	२५७	९।१८।४८	२३७	११।१३। ५	२२२	१३। ३।३६	२२४
२५	३। ३। ९	२४२	५। ८।५४	२६०	७।१९। ५	२५६	९।२२।४५	२३६	११।१६।४७	२२२	१३। ७।२०	२२४
२६	३। ७।११	२४३	५।१३।१४	२६०	७।२३।२१	२५६	९।२६।४१	२३६	११।२०।२९	२२१	१३।११। ४	२२४
२७	३।११।१४	२४३	५।१७।३४	२६०	७।२७।३७	२५६	९।३०।३७	२३५	११।२४।१०	२२१	१३।१४।४८	२२४
२८	३।१५।१७	२४४	५।२१।५४	२६१	७।३१।५३	२५५	९।३४।३२	२३४	११।२७।५१	२२१	१३।१८।३२	२२५
२९	३।१९।२१	२४५	५।२६।१५	२६१	७।३६। ८	२५४	९।३८।२६	२३४	११।३१।३२	२२१	१३।२२।१७	२२६
३०	३।२३।२६		५।३०।३६		७।४०।२२		९।४२।२०		११।३५।१३		१३।२६। ३	

राशि →	तुला (६) साम्पा. काल	गति	वृश्चिक (७) साम्पा. काल	गति	धनु (८) साम्पा. काल	गति	मकर (९) साम्पा. काल	गति	कुम्भ (१०) साम्पा. काल	गति	मीन (११) साम्पा. काल	गति
अंश ↓	घं. मि. से.	से.	घं. मि. से.	से.	घं. मि. से.	से.	घं. मि. से.	से.	घं. मि. से.	से.	घं. मि. से.	से.
०	१३।२६। ३	२२६	१५।२३।२६	२४५	१७।३०।३६	२६१	१९।४०।२२	२५४	२१।४२।२०	२३३	२३।३५।१३	२२०
१	१३।२९।४९	२२६	१५।२७।३१	२४६	१७।३४।५७	२६१	१९।४४।३६	२५३	२१।४६।१३	२३३	२३।३८।५३	२२१
२	१३।३३।३५	२२७	१५।३१।३७	२४७	१७।३९।१८	२६१	१९।४८।४९	२५३	२१।५०। ६	२३२	२३।४२।३४	२२०
३	१३।३७।२२	२२८	१५।३५।४४	२४८	१७।४३।३९	२६२	१९।५३। २	२५२	२१।५३।५८	२३१	२३।४६।१४	२२०
४	१३।४१।१०	२२८	१५।३९।५२	२४८	१७।४८। १	२६१	१९।५७।१४	२५१	२१।५७।४९	२३१	२३।४९।५४	२२१
५	१३।४४।५८	२२९	१५।४४। ०	२४९	१७।५२।२२	२६२	२०। १।२५	२५१	२२। १।४०	२३०	२३।५३।३५	२२०
६	१३।४८।४७	२२९	१५।४८। ९	२५०	१७।५६।४४	२६१	२०। ५।३६	२५०	२२। ५।३०	२२९	२३।५७।१५	२२०
७	१३।५२।३६	२३०	१५।५२।१९	२५०	१८। १। ५	२६२	२०। ९।४६	२४९	२२। ९।१९	२२९	०। ०।५५	२२०
८	१३।५६।२६	२३०	१५।५६।२९	२५१	१८। ५।२७	२६२	२०।१३।५५	२४९	२२।१३। ८	२२८	०। ४।३५	२२०
९	१४। ०।१६	२३१	१६। ०।४०	२५२	१८। ९।४९	२६१	२०।१८। ४	२४८	२२।१६।५६	२२८	०। ८।१५	२२१
१०	१४। ४। ७	२३१	१६। ४।५२	२५२	१८।१४।१०	२६१	२०।२२।१२	२४७	२२।२०।४४	२२७	०।११।५६	२२०
११	१४। ७।५८	२३२	१६। ९। ४	२५३	१८।१८।३१	२६२	२०।२६।१९	२४७	२२।२४।३१	२२७	०।१५।३६	२२०
१२	१४।११।५०	२३३	१६।१३।१७	२५३	१८।२२।५३	२६१	२०।३०।२६	२४६	२२।२८।१८	२२६	०।१९।१६	२२१
१३	१४।१५।४३	२३३	१६।१७।३०	२५४	१८।२७।१४	२६१	२०।३४।३२	२४५	२२।३२। ४	२२६	०।२२।५७	२२१
१४	१४।१९।३६	२३४	१६।२१।४४	२५५	१८।३१।३५	२६०	२०।३८।३७	२४४	२२।३५।५०	२२५	०।२६।३८	२२१
१५	१४।२३।३०	२३५	१६।२५।५९	२५६	१८।३५।५५	२६१	२०।४२।४१	२४४	२२।३९।३५	२२५	०।३०।१९	२२१
१६	१४।२७।२५	२३६	१६।३०।१५	२५६	१८।४०।१६	२६०	२०।४६।४५	२४३	२२।४३।२०	२२४	०।३४। ०	२२१
१७	१४।३१।२१	२३६	१६।३४।३१	२५६	१८।४४।३६	२६०	२०।५०।४८	२४२	२२।४७। ४	२२४	०।३७।४१	२२१
१८	१४।३५।१७	२३७	१६।३८।४७	२५७	१८।४८।५६	२६०	२०।५४।५०	२४१	२२।५०।४८	२२४	०।४१।२२	२२२
१९	१४।३९।१४	२३७	१६।४३। ४	२५७	१८।५३।१६	२५९	२०।५८।५१	२४१	२२।५४।३२	२२३	०।४५। ४	२२२
२०	१४।४३।१२	२३८	१६।४७।२१	२५८	१८।५७।३५	२५९	२१। २।५२	२४०	२२।५८।१५	२२३	०।४८।४६	२२२
२१	१४।४७। ९	२३९	१६।५१।३९	२५८	१९। १।५४	२५८	२१। ६।५२	२३९	२३। १।५८	२२३	०।५२।२८	२२२
२२	१४।५१। ८	२४०	१६।५५।५७	२५९	१९। ६।१२	२५८	२१।१०।५१	२३९	२३। ५।४१	२२२	०।५६।१०	२२३
२३	१४।५५। ८	२४०	१७। ०।१६	२५९	१९।१०।३०	२५८	२१।१४।५०	२३८	२३। ९।२३	२२२	०।५९।५३	२२३
२४	१४।५९। ८	२४१	१७। ४।३५	२५९	१९।१४।४८	२५७	२१।१८।४८	२३७	२३।१३। ५	२२२	१। ३।३६	२२४
२५	१५। ३। ९	२४२	१७। ८।५४	२६०	१९।१९। ५	२५६	२१।२२।४५	२३६	२३।१६।४७	२२२	१। ७।२०	२२४
२६	१५। ७।११	२४३	१७।१३।१४	२६०	१९।२३।२१	२५६	२१।२६।४१	२३६	२३।२०।२९	२२१	१।११। ४	२२४
२७	१५।११।१४	२४३	१७।१७।३४	२६०	१९।२७।३७	२५६	२१।३०।३७	२३५	२३।२४।१०	२२१	१।१४।४८	२२४
२८	१५।१५।१७	२४४	१७।२१।५४	२६१	१९।३१।५३	२५५	२१।३४।३२	२३४	२३।२७।५१	२२१	१।१८।३२	२२५
२९	१५।१९।२१	२४५	१७।२६।१५	२६१	१९।३६। ८	२५४	२१।३८।२६	२३४	२३।३१।३२	२२१	१।२२।१७	२२६
३०	१५।२३।२६		१७।३०।३६		१९।४०।२२		२१।४२।२०		२३।३५।१३		१।२६। ३	

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि :—

यह मानना पड़ेगा कि पाश्चात्य गणना पद्धति सूक्ष्मता, सरलता एवं लाघव की दृष्टि से भारतीय गणना पद्धति से कहीं आगे बढ़ चुकी है। हम चाहते हैं—हमारे पाठक इन पद्धतियों के आवश्यक ज्ञान से वञ्चित न रहें। यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधि दे रहे हैं। स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पष्ट करने में अपेक्षित सूक्ष्मता नहीं आ पाती, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने साम्पातिक काल (Sidereal-time) की पद्धति को अपनाया है। यहां हम "साम्पातिक काल क्या है?" इस विषय में कुछ भी सैद्धान्तिक विवेचन न करते हुए इससे लग्न स्पष्ट करने की सर्वसाधारणोपयोगी विधि ही प्रस्तुत करते हैं—

विधि:—सां० का० (साम्पातिक काल) से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्व प्रथम नीचे लिखे उपकरण, जो इस पञ्चाङ्ग में दिए गए कोष्ठकों (सारिणियों) से बिना किसी परिश्रम के प्रस्तुत किये जा सकते हैं, प्रस्तुत कीजिए—

†(१) **अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)**
§(२) **अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)**
(३) **अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर (+या −)**
} ये तीनों उपकरण १२५–२६ पृष्ठस्थ "अक्षांशादि सारिणी" से उठाइए।

विशेष:—यदि 'अक्षांशादि सारिणी' में अभीष्टनगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि उपयोग में लाए जा सकते हैं।

(४) **अभीष्ट नगर का स्थानीय समय:**—जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्टैण्डर्ड टाईम में अभीष्टनगर (जहाँ का लग्न स्पष्ट करना हो, वहाँ) के स्टैण्डर्ड अन्तर के मिनटादि या (घण्टादि) को चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्टनगर का स्थानीय समय बन जाता है। '+' यह चिह्न जोड़ने की एवं '—' यह चिह्न घटाने की क्रिया को बतलाता है।

(५) **अभीष्ट तारीख का अयनांश :**—पृ० १२० पर अयनांश सारिणी को दो (१म एवं २य) भागों में दिया गया है। सारिणी के १म भाग में से अभीष्ट ईस्वी सन् के आगे लिखे अंशादि अयनांश ले और उनमें सारिणी के २य भाग में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का कलादि फल लेकर जोड़ देने से अभीष्ट दिन के स्पष्ट अयनांश होंगे।

(६) **इष्टकालिक साम्पातिक काल:**—पृष्ठ ११९—१२० पर साम्पातिक काल के चार कोष्ठक दिए गए हैं। इनके आधार पर इष्ट कालिक सां० का० इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है—सां० का० कोष्ठक नं० (१) में से अभीष्ट सन का सां० का० उठाएं। उसमें सां० का० कोष्ठक नं० (२) से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का (लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां० का० लेकर जोड़ने से रोपड़ शहर में अभीष्ट तारीख के प्रारम्भ (स्थानीय समय ० घं. ०मि.) का सां० का० प्राप्त होगा। इसमें सां० का० कोष्ठक नं० (३) से अभीष्टनगर के रेखांशों द्वारा सेकण्डात्मक संस्कार उठाकर चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से यह अभीष्टनगर में अभीष्ट तारीख के प्रारम्भ (स्थानीय समय ०घं.० मि.) का सां० का० बन जाएगा। अब इसे अभीष्ट समय का बनाने के लिए इसमें अभीष्ट स्थानीय समय, जिसका साधन पहिले बताया जा चुका है, के घण्टा मिनटादि जोड़ें और फिर इस योगफल में स्थानीय समय के घण्टा मिनटों द्वारा सां० का० कोष्ठक नं० (४) से प्राप्त किया गया मिनटादि काल संस्कार जोड देने से घण्टादि इष्ट सां० का० होगा। यहां यदि घण्टे २४ हों या २४ से अधिक हों तो उनमें से २४ घटाकर शेष ही ग्रहण करना चाहिए।

इस पञ्चाङ्ग में दिये गए सां० का० कोष्ठकों से सन् १८७६ से सन् १९७१ तक का सां० का० जाना जा सकता है।

सारिणी से लग्न स्पष्ट करने की विधि :—पृ० १२१—१२२ पर ३० एवं ३१ अक्षांश वाले नगरों के लग्न स्पष्ट करने की दो सारिणिएं दी गई हैं, जो पंजाब के अधिकतर नगरों के लिए उपयोगी हैं। अभीष्टनगर के अक्षांश वाली लग्न सारिणी में उक्त रीति से बनाए गए सां० का० के घण्टामिनटादि को ढूंढे। यदि वहाँ इष्ट सां० का० पूरा २ न मिले (पूरा कभी ही मिलता है) तो सारिणी में उसके बिल्कुल समीप वाला परन्तु उससे कम सां०का० जहां हो उसके कालम के बिल्कुल ऊपर की लाईन में दी गई राशि एवं बाईं ओर की सबसे पहिली लाइन में दिया गया अंश देखकर दोनों को एक ओर अलग लिख लें। फिर सारिणी में देखे गए सां० का० एवं इष्ट सां० का० के सेकण्डात्मक अन्तर को ६० से गुणा करे। इस गुणनफल को सारिणी में देखे गए सां० का० एवं सारिणीस्थित उससे नीचे के सां० का० के मध्य आगे ही गति वाले कालम में दिए गए सेकण्डों से भाग देकर क्रमशः दो लब्धि कला एवं विकला प्राप्त कर एक ओर रखे राशि एवं अंशों में जोड़ दें। इस प्रकार यह २३°।१५′ अयनांश सम्बन्धी निरयण लग्न स्पष्ट होगा। इसे इष्टदिवसीय निरयण बनाने के लिए उस दिन के अयनांश का २३ अंश १५ कला से अन्तर करे। यदि इष्ट अयनांश २३°।१५′ से अधिक हो तो इस अंशादि, कलादि या विकलादि अन्तर को पूर्वसाधित लग्न में से घटाए, अन्यथा उसमें जोड़ दे। इस प्रकार यह इष्ट निरयण सूक्ष्म लग्न स्पष्ट होगा।

ठीक इसी प्रकार जिससे लग्न स्पष्ट किया गया है उसी सां० का० से पृ० १२३ पर दी गई दशमलग्नसारिणी से दशम लग्न स्पष्ट करें। दशमलग्नसारिणी सभी अक्षांशों के लिए एक सी ही होती है।

उदाहरण—सन् १९५९ की १२ जून को भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार दिन के २ बजकर ३० मिनट (अर्थात् १४ बजकर ३० मिनट) पर भटिण्डा (पंजाब) में लग्न स्पष्ट करें।

				घं० मि०
"अक्षांशादि सारिणी" से	भटिण्डा के अक्षांश उ०	३०°।११′	भा. स्टैं. टा.	१४।३०
	भटिण्डा के रेखांश पू०	७५।००	स्टैण्डर्ड अन्तर —	३०
		मि० से०		
	भण्टिडा का स्टैण्डर्ड अन्तर−	३०।००	स्थानीय समय	१४।००
	सन् १९५९ ई०	२३°।१६′। ८″	'अयनांश सारिणी' १म भाग से	
	१२ जून +	२२	'अयनांश सारिणी' २य भाग से	
	इष्ट अयनांश	२३।१६।३०		

(शेष पृ० १३० पर देखिये)

† भारत के समस्त नगरों के अक्षांश उत्तर ही हैं।
§ भारत के समस्त नगरों के रेखांश पूर्व ही हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

पाकिस्तान बनने से पूर्व काल के लिए कराची, लाहौर

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ध्यान दीजिए—इस सारिणी में दिये गये पाकिस्तानी शहरों के 'स्टैण्डर्ड अन्तर' पाकिस्तानी स्टैं. टा. एवं लोकल (स्थानीय) टाइम का अन्तर है। पाकिस्तान बनने से पूर्व यह अन्तर भिन्न था।

[illegible]
रेखांश ग्रीनविच से अभीष्ट नगर का अंशात्मक पूर्वापरान्तर
देशान्तर—रोपड़ नगर से अभीष्ट नगर का पूर्वापरान्तर मिनटों में
स्टैण्डर्ड अन्तर—वर्तमान स्टैण्डर्ड टाईम का स्थानीय टाईम से अन्तर

पाकिस्तान बनने से पूर्व काल के लिए कराची, लाहौर आदि किसी भी पाकिस्तानी शहर का मिनटादि 'स्टैण्डर्ड अन्तर' उस नगर के रेखांश एवं ८२अंश ३०कला के अंशादि अन्तर को ४से गुणा करने पर प्राप्त होगा।*

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशान्तर	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशान्तर	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशान्तर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.	मिनट से.		अं. क.	अं. क.	मि.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि.	मि. से.
अकोला (सी.पी.)	२०।४२	७७। २	पू. २	–२१।५२	कुमारी अन्तरीप	८। ५	७७।३४	पू. ४	–१९।४४	झालरापाटन	२४।३२	७६।१२	प. १	–२५।१२
अजमेर	२६।२७	७४।४२	प. ७	–३१।१२	कुम्भकोणम्	१०।५८	७९।२५	प. १२	–१२।२०	झांसी	२५।२७	७८।३७	पू. ८	–१५।३२
अटक (पा.)	३३।५३	७२।१७	प. १७	–१०।५२	कोटा (राज.)	२५।१०	७५।५२	प. ३	–२६।३२	झेलम (पा.)	३२।३५	७३।४७	प. ११	– ४।५२
अमृतसर	३१।३८	७४।४८	प. ७	–३०।४८	कोलम्बो (सीलोन)	६।५६	७९।५६	प. १४	–१०।१६	ट्रावनकोर	९। ०	७७। ०	पू. २	–२२। ०
अम्बाला	३०।२१	७६।५२	पू. १	–२२।३२	कोल्हापुर	१६।४२	७४।१६	प. ९	–३२।५६	टोंक (राज.)	२६।११	७५।५०	प. ३	–२६।४०
अयोध्या	२६।४८	८२।१४	पू. २३	– १। ४	कोचीन बंदर	९।५८	७६।१७	प. १	–२४।५२	डिबाई	२८।१२	७८।१५	पू. ७	–१७। ०
अलमोड़ा	२९।३७	७९।४०	प. १३	–११।२०	खंभात	२२।१९	७२।३६	प. १६	–३९।३६	डेराइस्माइलखां (पा.	३१।५१	७०।५६	प. २२	–१६।१६
अलवर	२७।३४	७६।३८	पू. १	–२३।२८	गया	२४।४९	८५। १	पू. ६	+१०। ४	डेरागाजीखां (पा.)	३०। ४	७०।४९	प. २३	–१६।४४
अहमदनगर	१९। ५	७४।४८	प. ७	–३०।४८	ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	प. ७	–१७।२०	ढाका (पा.)	२३।४३	९०।२६	प.	+ १।४४
अहमदाबाद	२३। २	७२।३८	प. १५	–३९।२८	गाजीपुर (यू. पी.)	२५।३४	८३।३५	पू. २८	+ ४।२०	तलागंग	३२।५६	७२।२८	प. १६	–४०। ८
अलीगढ़ (यू.पी)	२७।५४	७८। ६	पू. ६	–१७।३६	गिलगित	३५।५५	७४।२२	प. ९	–३२।३२	त्रिचनापल्ली	१०।५०	७८।४६	प. ९	–१४।५६
आगरा („)	२७।१०	७८। ०	प. ६	–१७।४०	गुजरात (पा.)	३२।३६	७४। ५	प. १०	– ३।४०	दरभंगा	२६।१०	८५।५७	पू. ३८	+ १३।४८
आजमगढ़ („)	२६। ५	८३।११	प. २७	+ २।४८	गुजरांवाला (पा.)	३२।१०	७४।१४	प. ९	– ३। ४	द्वारिका	२२।१४	६९। १	प. ३०	–५३।५६
आबू	२४।४०	७२।४५	प. १५	–३९। ०	गुरदासपुर	३२। ३	७५।२७	प. ४	–२८।१२	दार्जिलिंग	२७। ३	८८।१८	पू. ४७	+ २३।१२
इटावा	२६।४७	७९। २	प. १०	–१३।५२	गोरखपुर	२६।४५	८३।२४	प. २८	+३।३६	दिल्ली	२८।३८	७७।१२	पू. ३	–२१।१२
इन्दौर	२२।४४	७५।५०	प. ३	–२६।४०	गोवा	१५।३०	७३।५७	प. १०	–३४।१२	देहरादून	३०।१९	७८। ४	पू. ६	–१७।४४
उज्जैन	२३। ९	७५।४३	प. ३	–२७। ८	चम्बा	३२।२९	७६।१०	प. १	–२५।२०	धौलपुर	२६।४२	७७।५३	पू. ६	–१८।२
उदयपुर (मेवाड़)	२४।३५	७३।४२	प. ११	–३५।१२	चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	पू. १	–२२।३२	नडियाद (गुज.)	२२।४१	७२।५५	प. १४	–३८।२०
एलिचपुर (सी.पी.)	२१।१८	७७।३३	पू. ४	–१९।४८	चीरापूञ्जी	२५।१७	९१।४७	पू. ६१	+३७। ८	नसीराबाद (राज.)	२६।१८	७४।४६	प. ७	–३०।५६
औरङ्गाबाद (हैद.)	१९।५३	७५।२३	प. ४	–२८।२८	छतरपुर (वि.प्र.)	२४।५४	७९।३८	पू. १३	–११।२८	नागपुर	२१। ९	७९। ९	पू. ११	–१३।२४
कठुआ (काश्मीर)	३२।१७	७५।३६	प. ४	–२७।३६	छपरा (बिहार)	२५।४७	८४।४१	पू. ३३	+ ८।४४	नाभा	३०।२५	७६। ९	प. १	–२५।२४
कपूरथला	३१।२३	७५।२५	प. ४	–२८।२०	जलपाइगुड़ी	२६।३२	८८।४६	पू. ४९	+२५। ४	नाथद्वारा	२४।५६	७३।५२	प. ११	–३४।३२
करनाल	२९।४२	७७। २	पू. २	–२१।५२	जम्मू	३२।४४	७४।५४	प. ६	–३०।२४	नासिक	२०। २	७३।५०	प. ११	–३४।४०
कराची (पा.)	२४।५१	६७। ४	प. ३८	–३१।४४	जब्बलपुर	२३।१०	७९।५९	पू. १४	–१०। ४	ननीताल	२९।२३	७९।३०	प. १२	–१२। ०
कलकत्ता	२२।३४	८८।२४	पू. ४८	+२३।३६	जयपुर	२६।५५	७५।५२	प. ३	–२६।३२	पटना (बिहार)	२५।३७	८५।१३	पू. ३५	+१०।५२
काठमाण्डू (नैपा.)	२७।४२	८५।१२	पू. ३५	+१०।४८	जालन्धर	३१।१९	७५।१८	प. ५	–२८।४८	पटियाला	३०।२०	७६।२५	प. १	–२४।२०
कानपुर	२६।२७	८०।२४	पू. १६	– ८।२४	जामनगर	२२।२७	७०। ७	प. २६	–४९।३२	पठानकोट	३२।१७	७५।४२	प. ३	–२७।१२
कालाबाग (पा.)	३२।५८	७१।३६	प. २०	–१३।३६	जीन्द	२९।१९	७६।२३	प. १	–२४।२८	प्रयागराज	२५।२८	८१।५४	पू. २२	– २।२४
काशी	२५।२०	८३। ०	पू. २६	+ ३। ०	जूनागढ़	२१।३१	७०।३६	प. २४	–४७।३६	पाण्डीचेरी	११।५६	७९।५३	पू. १४	–१०।२८
कांगड़ा	३२। ५	७६।१८	प. १	–२४।४८	जैसलमेर	२९।५५	७०।५७	प. २२	–४६।१२	पुञ्छ (का.)	३३।५१	७४। ८	प. ९	–३३।२८
कांकरोली	२५। २	७३।५४	प. १०	–३४।२४	जोधपुर	२६।१८	७३। ४	प. १४	–३७।४४	पूना	१९। ०	७२।५५	प. १४	–३८।२०
कुरुक्षेत्र	३०। ०	७६।४८	पू. १	–२२।४८	जौनपुर	२५।४६	८२।४४	पू. २५	+ ०।५६	पेशावर (पा.)	३४। २	७१।३७	प. २०	–१३।३२

* नगर के रेखांश ८२°।३०' से अधिक या कम होने पर स्टैण्डर्ड अन्तर क्रमशः धन या ऋण होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारिणी

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशांतर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अ. क.	अ. क.	मिनट	मि. से.
पोरबन्दर	२१।३७	६९।४९	प. २७	–५०।४४
फर्रुखाबाद	२७।२४	७९।३७	पू. १२	–११।३२
फरीदकोट	३०।४०	७४।५७	प. ६	–३०।१२
फिरोजपुर	३०।५५	७४।४०	प. ७	–३१।२०
बडौदा	२२। ०	७३।३०	प. १२	–३६। ०
बम्बई	१९। ०	७२।५४	प. १४	–३८।२४
बरेली	२८।२२	७९।२७	पू. १२	–१२।१२
बद्रीनाथ	३०।४४	७९।३२	पू. १२	–११।५२
बर्दवान	२३।१६	८७।५२	पू. ४५	+२१।२८
बहावलपुर	२८।२४	७१।४७	प. १९	–४२।५२
बिलासपुर (म. प्र.)	२२। ५	८२।१३	पू. २३	– १। ८
बीकानेर	२८। १	७३।२२	प. १३	–३६।३२
बीजापुर	१६।५०	७५।४७	प. ३	–२६।५२
बंगलौर	१२।५८	७७।३८	पू. ५	–१९।२८
भटिण्डा	३०।११	७५। ०	प. ६	–३०। ०
भरतपुर	२७।१५	७७।३०	पू. ४	–२०। ०
भागलपुर (बि.	२५।१४	[illegible]	पू. ४२	–१७।५६
भोपाल (म.भा.)	२३।१६	७७।३६	पू. ४	–१९।३६
भूटान (स्टेट)	२७।३०	९०। ०	पू. ५४	+३०। ०
मद्रास	१३। ४	८०।१७	पू. १५	– ८।५२
मथुरा	२७।२८	७७।४१	पू. ५	–१९।१६
मालेरकोटला	३०।३१	७५।५९	प. २	–२६। ४
मियावाली (पा.)	३२।३५	७१।३३	२०	–१३।४८
मिण्टगुमरी (पा.)	३०।५८	७३।२१	प. १३	– ६।३६
मुल्तान (पा.)	३०।१२	७१।३१	प. २०	–१३।५६
मुजफ्फरपुर (बि.)	२६। ७	८५।२७	पू. ३६	+११।४८
मणिपुर (स्टेट)	२४।४४	९३।५८	पू. ७०	+४५।५२
मुरादाबाद	२८।५१	७८।४९	पू. ९	–१४।४४
मेरठ	२९। १	७७।४५	पू. ५	–१९। ०
मैसूर (स्टेट)	१२।१८	७६।४२	प. १	–२३।१२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशांतर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अ. क.	अ. क.	मिनट	मि. से.
रतलाम	२३।२१	७५। ७	प. ६	–२९।३२
रत्नगिरि	१७। ८	७३।१९	प. १३	–३६।४४
रामेश्वरम्	९।१७	७९।२२	पू. ११	–१२।३६
रावलपिण्डी (पा.)	३३।३७	७३। ६	प. १४	– ७।३६
राजमहेन्द्री (आंध्र)	१७। ०	८१।४८	पू. २१	– २।४८
रिवाड़ी	२८।१२	७६।४०	पू. १	–२३।२०
रेवा (वि.प्र.)	२४।३१	८१।१९	पू. १९	– ४।४४
रायपुर (म. प्र.)	२१।१५	८१।४१	पू. २१	– ३।१६
राजकोट	२२।१८	७०।५६	प. २२	–४६।१६
रोहतक	२८।५४	७६।३८	पू. १	–२३।२८
रोपड़ (पंजाब)	३०।५७	७६।३०	पू. ०	–२४।००
लखनऊ	२६।५५	८०।५९	पू. १८	– ६। ४
लायलपुर (पा.)	३१।४४	७३। ५	प. १४	– ७।४०
लाहौर (पा.)	३१।३७	७४।२६	प. ८	– २।१६
लुधियाना	३०।५५	७५।५४	प. २	–२६।२४
शिकारपुर (सिंध)	२७।५७	६८।४०	प. ३१	–५५।२०
शिमला	३१। ६	७७।१३	पू. ३	–२१। ८
श्रीनगर (का.)	३४। ६	७४।५१	प. ७	–३०।३६
सरगोधा (पा.)	३२। २	७२।४०	प. १५	– ९।२०
सहारनपुर	२९।५८	७७।२३	पू. ४	–२०।२८
सियालकोट (पा.)	३२।३१	७४।३६	प. ८	– १।३६
सतारा (बम्बई)	१७।४२	७४। २	प. १०	–३३।५२
सागर (म.प्र.)	२३।५०	७८।४५	पू. ९	–१५। ०
सूरत	२१।१२	७२।५२	प. १५	–३८।३२
सोलन (हि.प्र.)	३०।५५	७७। ९	पू. ३	–२१।२४
हरिद्वार	२९।५८	७८।१३	पू. ७	–१७। ८
हिसार	२९।१०	७५।४६	प. ३	–२६।५६
हैदराबाद (सिंध.)	२५।२५	६८।३८	प. ३१	–५५।२८
हैदराबाद (द.)	१७।२०	७८।३०	पू. ८	–१६। ०
होशियारपुर	३१।३२	७५।५७	प. २	–२६।१२

कुछ विदेशीय नगरों के अक्षांशादि

नगर वश	अक्षांश	रेखांश	भारतीय स्टैं.टा. से. देशीय स्टै. का अन्तर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	घ. मि.	मि. स.
काबुल (अफगा.)	उ.३४।३०	पू.६९।१८	– १। ०	+ ७।१२
कन्दहार "	उ.३१।३७	पू.६५।३०	– १। ०	– ८। ०
क्वेटा (बिलोचि.)	उ.३०।१२	पू.६७। ०	– ०।३०	–३२। ०
माण्डले (ब्रह्मा)	उ.२१।५९	पू.९६। ८	– १। ०	– ५।२८
रंगून (ब्रह्मा)	उ.१६।४५	पू.९६।१३	– १। ०	– ५। ८
सिंगापुर (मलाया)	उ. १।१७	१०३।५१	+ २। ०	–३४।३६
बगदाद (इराक)	उ.३३।२०	पू.४४।२७	– २।३०	– २।१२
मक्का (अरब)	उ.२१।२५	पू.३९।५४	– २।३०	–२०।२४
तेहरान (ईरान)	उ.३५।४१	पू.५१।२५	– २। ०	– ४।२०
काहिरा (मिस्र)	उ.३०। २	पू.३१।१५	– ३।३०	+ ५। ०
जेनेवा (स्विट्जर)	उ.४६।१३	पू. ६। ७	– ४।४०	–३५।३२
जेरुशलम (इजरा.)	उ.३१।४६	पू.३५।१४	– ३।३०	+२०।५६
न्यूयार्क (अमेरिका)	उ.४०।४३	प.७४। ०	–१०।३०	+ ४।००
वाशिंगटन "	उ.३८।५५	प.७७। ४	–१०।३०	– ८।१६
बर्लिन (पू.जर्मनी)	उ.५२।३२	पू.१३।२५	– ४।३०	– ६।२०
बुडापेस्ट (हंगरी)	उ.४७।२९	पू.१९। ३	– ४।३०	+१६।१२
लन्दन (इंगलैण्ड)	उ.५१।३०	प. ०। ५	– ५।३०	– ०।२०
ग्रीनविच "	उ.५१।३०	० ०	– ५।३०	– ० ०
ल्हासा (तिब्बत)	उ.२९।४०	पू.९१ ५	०। ०	+३४।२०
लिस्बन (पुर्तगाल)	उ.३८।४४	प. ९।	– ५।३०	–३६।३६
ढाका (पू. पाकि.)	उ.२३।४३	पू.९०।२६	+ ०।३०	+ १।४४
कराची (प. पाकि.)	उ.२४।५१	पू.६७। ४	– ०।३०	–३१।४४
नैरोबी (केन्या)	द. १।१८	पू.३६।५२	– २।३०	–३२।३२
मोम्बासा "	द. ४। ०	पू.३९।४०	– २।३०	–२१।२०
म्वांजा (टांगानिका)	द. २।३५	पू.३२।५६	– २।३०	–४८।१६
मोशी "	द. ३।२१	पू.३७।२०	– २।३०	–३०।४०
टोकियो (जापान)	उ.३५।४०	१३९।४५	+ ३।३०	+१९। ०
पेरिस (फ्रांस)	उ.४८।५०	पू. २।२०	– ४।३०	–५०।४०
मास्को (रूस)	उ.५५।४५	पू.३७।३७	– २।३०	–२३।३२
रोम (इटली)	उ.४१।५४	पू.१२।२८	– ४।३०	–१०। ८
हांगकांग (चीन)	उ.२२।१८	पू.११४।१०	+ २।३०	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

[illegible]	घ ०	घ १	घ २	घ ३	घ ४	घ ५	घ ६	घ ७	घ ८	घ ९	घ १०	घ ११	घ १२	घ १३	घ १४	घ १५	घ १६	घ १७	घ १८	घ १९	घ २०	घ २१	घ २२	घ २३	मिनट
०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०
१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१
२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२
३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३
४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४
५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५
६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६
७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७
८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८
९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९
१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०
११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११
१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२
१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१३
१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१४
१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१५
१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६
१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१७
१८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८
१९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१९
२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०
२१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२१
२२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२२
२३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३
२४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२४
२५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२५
२६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२६
२७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२७
२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२८
२९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२९
३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३०
३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३१
३२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३२
३३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३३
३४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३४
३५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३५
३६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३६
३७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३७
३८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३८
३९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३९
४०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४०
४१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४१
४२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४२
४३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४३
४४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४४
४५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४५
४६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४६
४७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४७
४८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४८
४९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४९
५०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५०
५१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५१
५२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५२
५३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५३
५४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५४
५५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५५
५६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५६
५७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५७
५८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५८
५९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ श्रीगणेशाम्बागुरुभ्यो नमः ॥

सं० २०१७ में विवाहादि मुहूर्त्त

खचरगतिविधानामुद्गमानुद्गमाद्यान् विविधवचनजालाल्लोकयन् शास्त्रसिद्धान् ।
सकलभरतभूमौ किञ्च पञ्चापदेशे, करकलनमुहूर्त्तालीमहं संलिखामि ॥

समयशुद्धि

शुक्र अस्तः—ज्ये. कृ. १० शु. से श्राव. शु. ७ श. तक शुक्र अस्त रहेगा।

गुरु अस्त :—पौष शु. ७ से माघ शु. ४ शु. तक गुरु अस्त रहेगा। 'ग्रहलाघव' आदि प्राचीनकरण ग्रन्थों में गुरु शुक्र के उदयास्त ज्ञान के लिए दी गई कालांश पद्धति स्थूल है। इस विषय में श्री केतकराचार्य द्वारा अपनाई गई उन्नतांश पद्धति सूक्ष्म है। हमने इसी पद्धति के आधार पर गुरु एवं शुक्र के उदयास्त का निर्णय किया है। आकाशीय वातावरण की अनुकूलता में इसकी यथार्थता को प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध भी किया जा सकता है।

गुरु-शुक्र के अस्त से पूर्व तीन दिन वृद्धत्व दोष एवं उदय के पश्चात् भी तीन दिन बाल्य दोष के शुभ कार्यों में वर्जित है।

सूचनाः—नीचे दिये गए मुहूर्त्तों में जहां कहीं भी युति, वेध, दग्धा एवं शुक्र-भौम-चन्द्र के षष्ठाष्टमस्थ दोषों के परिहार मिल गए हैं वहां लग्न लगा दिए गए हैं।

यहां क्रांतिसाम्य (महापात) दोष का विचार सूक्ष्म गणित से किया गया है।

शुद्ध सपरिहार विवाह मुहूर्त्त (सं० २०१७)

सब देशों के लिये

वै.प्र. ४ (वै. कृ. ५ श.) मू. ।।ऽ गु.।।।ऽऽ।ऽ ल. गोधू. सूर्यास्त से पूर्व, वा. ल. ८
वै.प्र.६ (वै.कृ. ७ चं.) उ.षा.।।।।।।ऽऽ।। ल. धूलिमुख वा ८
वै.प्र. ७ (वै. कृ. ८ मं.) श्रव. ।ऽ।।ऽ चौ. ऽऽ।। धूलिमुख वा रा. ल. ८
वै.प्र. १६ (वै. शु. ३ गु.) रो. ।।।।ऽ चौ.ऽ।।। ल. १० श. गु. दा. वा ल. १२
वै.प्र. २३ (वै. शु. ९ गु.) म. ।।।।।ऽ।।। दि. ल. ४. गोधूलि
वै.प्र. २५ (वै.शु.११ श.) उ. फा. ।।ऽ रा. ।ऽ के. ।ऽ।।। ल. धूलिमुख
ज्ये.प्र. ३ (ज्ये.कृ. ६ चं.) उ. षा. ।।।।ऽअ. ऽऽ।। दि. ल. ४ अं. ११ उ., च. दा.
ज्ये.प्र. ३ (ज्ये. कृ.६ चं.) श्रव. ऽचं. ।।।।ऽ अ.ऽ।।। ल. गोधूलि

केवल पंजाब के लिए

श्राव.प्र.२२ (श्राव. शु. १४ श.) श्रव. ।।।ऽ श. ।ऽ अ. ऽऽ।।ल. १
श्राव.प्र. २३ (श्राव.शु. १५ र.) श्रव. ।।।ऽ श. ।ऽ अ. ऽऽ।। दि. ल. ६
[illegible]
श्रा.प्र. २७ (भा.कृ. ५ गु.) रेव. ऽश.।।।।।ऽ।ऽ घं. ४८ उ., ल. गोधूलि वा रा. ल. १
भा.प्र. २ (भा.कृ.११ बु.) मृग. ।ऽ।।।।ऽ।। दि. ल. ६
भा.प्र. ९ (भा. शु. २ बु.) उ. फा. ।।।।ऽ के ।ऽ।।। ल. १२ चं. दा.
भा.प्र. १० (भा. शु. ३ गु.) ह. ।ऽ।।।ऽ रो. ।।।। ल. १२ चं. दा.
भा. प्र. १९ (भा.श. १३ श.) श्रव. ऽसू.।।।।ऽ रो. १७ उ., ऽ।।। दि. ल. ६ आव. अनिष्ट ग्रह दा. वा धूलिमुख
भा. प्र. १९ (भा. शु. १३ श.) धनि. ।।।।ऽ रो. ।।।।ल. १ अं. ३ उ.,
आश्वि. प्र. १० (आश्वि. शु. ५ र.) अनु. ।।।।ऽ रो. ।।।। ल. धूलिमुख
आश्वि. प्र. ११ (आश्वि. शु. ६ चं.) अनु. ।।।।।।।।। दि. ल. ७
आश्वि. प्र. १३ (आश्वि शु. ८ बु.) मू. ऽरा. ।ऽ गु. ।।ऽ अ. ऽऽ।ऽ दि. ल. ७ अं. १० तक
आश्वि. प्र. १४ (आश्वि. शु. ९ गु.) उ. षा. ।।।।।ऽ।।। दि. ल. ७ अं. ५ उ., वा गोधूलि
आश्वि. प्र. १५ (आश्वि. शु. १० शु.) श्रव. ।।।।ऽ नृ. ऽऽ।। दि. ल. ७ वा गोधूलि
आश्वि. प्र. १६ (आश्वि. शु. ११ श.) धनि. ।।।।।।।।। ल. धूलिमुख
आश्वि. प्र. २५ (कार्त्ति. कृ.६ चं.) मृग. ।ऽ २२ या. ।।।।ऽ २२ या. ऽ २२उ., ।। गोधूलि
का. प्र. १३ (का. शु. १० श.) धनि. ।ऽ।।ऽ अ. ६ या. ।।।। दि. ल.८
का. प्र. १६ (का. शु. १३ मं.) रेव. ऽश.ऽ।।ऽ चौ. ।।।। ल. ६ चं. मं. दा.

सब देशों के लिए

का.प्र.२१ (मार्ग.कृ.३र.) मृ.।।।।ऽशु.ऽअ.।।।।ल.६
का.प्र.२६ (मार्ग.कृ.८शु.) म.।।।।।ऽऽ।।ल.६भौ.दा.
का.प्र.२७ (मार्ग.कृ.९श.) म.।।।।ऽ सो.ऽऽ।।ल. धूलिमुख
मार्ग.प्र. ८ (मार्ग.शु.४मं.) उ.षा. ।ऽ।।ऽमं.ऽचौ.५२या.ऽऽ।।ल. ६ वा७
मार्ग. प्र.९ (मार्ग.शु.५बु.) उ.षा.।ऽ।।ऽमं.।ऽऽ।।दि.ल.१२आव.बु.दा.वा. धूलिमुख
मार्ग.प्र. ९ (मार्ग.शु.५बु.) श्रव.।।।।ऽरो.५१उ.,ऽ।।ल.६.,७
मार्ग.प्र.१० (मार्ग. शु.६गु.) श्रव.।।।।ऽरो.ऽ।।दि.ल.१२आव.बु.दा.,वा धूलिमुख
मार्ग.प्र.१० (मार्ग.शु.६गु.) धनि. ।।।।ऽरो.५०या.।ऽ।।ल.६,७
मार्ग.प्र.१३ (मार्ग.शु.९ र.) उ. भा.।।।।ऽअ.४७या.ऽऽ।ऽल.६चं.मं.दा
मार्ग.प्र.१४ (मार्ग.शु.१०चं.) रेव.ऽश.।।।।।।।।ल. गोधूलि
मार्ग.प्र.१८ (मार्ग.शु.१४शु.) रो. ।।।।ऽरो.ऽऽ।।ल. ६
मार्ग.प्र.१९ (मार्ग. शु.१५श.) रो.।।।।ऽरो.ऽऽ।।दि.ल.१२वा१बु.दा.
मार्ग.प्र.१९ (मार्ग. शु.१५श.) मृग.।ऽ।ऽशु.ऽसू.।।ऽ।।ल.६
मार्ग.प्र.२७ (पौष कृ.८र.) उ.फा.।।।।ऽरो.३१उ.,ऽऽ।।दि.ल.१वा रा.ल.७
मार्ग.प्र.२८ (पौ.कृ.९चं.) ह.।।।।ऽरो.३०या.।।।ऽदग्धा४१उ.,दि.ल.१२चं.दा.,धूलिमुख वा रा.ल.७
माघ.प्र.१४ (माघ शु.१०गु.) रो.।।।।।।ऽ।।दि. ल.१२,गोधूलि
माघप्र.२३ (फाल्गु.कृ.४श.) उ.फा.।।।।ऽनृ.१९उ.।ऽ।।दि.ल.१२चं.दा.,१वा गोधूलि
माघप्र.२४ (फाल्ग.कृ.५र.) ह.।।।ऽशु.ऽश.ऽनृ.ऽऽ।।दि.ल.१२चं.दा.आव.
फा.प्र.२६ [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

उपनयन मुहूर्त (सं० २०१७)

यह बातें प्रमाणित हो चुकी है कि ब्राह्मणादि जातियों में जन्म लेने वाले प्रायः सभी बालक स्वजात्युक्त ९० प्रतिशत गुण वीर्यगत प्रभाव के कारण जन्म से ही साथ लाते हैं। यज्ञोपवीतादि वैदिक संस्कारों द्वारा उनके वे गुण शुद्ध, परिष्कृत रूप को ग्रहण करते हैं। यहां यह आवश्यक है कि वे संस्कार वर्णोचित आयु एवं शास्त्रविहित शुभ काल में किए जाएं।

चैत्र शु. ५ गु. रोहि.
" " १० बु. पुष्य
" " ११ गु. आश्ले.
वैशा. शु. ३ गु. रोहि. (४।९ उ.)
ज्ये. कृ. १ गु. अनु. (प्रतिपदा के बाद)
माघ शु. १० गु. रोहि. (५।५४उ.)
फाल्गु.शु. ११ र. (९।४उ.) पुन.
" " १२ चं. पुष्य

द्विरागमन मुहूर्त (सं० २०१७)

वैशा. कृ. ७ चं. उ.षा. (२।१उ.)
" " ११ गु. शत.
वैशा. शु. ३ गु. रोहि. (४।९ उ.)
" " " शु. रोहि. (अतिगं. ६ घ.तक)
" " ६ चं. (१५।४४उ.) पुन. पुष्य
" " १३ चं. (२१।२५ वा.) चि.
मार्ग कृ. १२ बु. चि.
मार्ग शु. ३ चं. मू.
" " ६ गु. (२३।५९उ.) श्रव.
" " ७ शु. धनि. (भ.१८।२३ उ.)
" " १० चं. उ. भा.
" " १२ बु. अश्वि.

पौष कृ. ४ बु. (२२।५८ उ.) पुष्य
फाल्गु. शु. १२ चं. पुष्य
चैत्र कृ. ७ गु. अनु.
" ,, ८ शु. (२३।३या.) मू. (१३।०उ.)

सूचना—यदि विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर २ द्विरागमन हो जाए तो उपरोक्त मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं।

विशेषः—यदि दीपावली के दीपों के प्रकाश में स्त्री पति के घर में आवे तो उसमें भी कोई मास नक्षत्रादि की शुद्धि न देखें। ऐसे समय पति-गृह में प्रवेश हो तो लक्ष्मी वृद्धि व सर्वसुख प्राप्त होते हैं।

नूतन गृह-प्रवेश मुहूर्त (सं० २०१७)

वैशा. शु. १३ चं. (२१।२५ वा.) चि.
कार्ति. शु. ६ बु. उ. षा. (भ.५४।९उ.)
" " १२ चं. उ. भा.
मार्ग. शु. १० चं. उ. भा.
" " " , रेव. (भ.३३।५४उ.)

माघ शु. १० गु. रोहि. (भ.५०।४८ उ.)
" " ११ शु.मृग. (भ.२२।७ वा.)
(वैधृ. ५३ घ. उ.)

गृहारम्भ मुहूर्त (सं० २०१७)

वैशा. शु. १३ चं. (२१।२५वा.) चि.
ज्ये. कृ. १ गु. अनु. (परिघार्ध घ. २ तक)
भाद्र. शु. १२ शु. उ. षा.
आश्वि.कृ. २ बु. रेव. (२३।४८ उ.)
कार्ति. शु. १० श. धनि. (अग्नि घ. ६ तक)
" " १२ चं. उ. भा. (६।५१ उ.)
मार्ग.कृ. २ श.रोहि. (११।४उ.) (परिघार्ध घ १४ उ.)

मार्ग. शु. ७ शु. (१८।२१ वा.) धनि.
(व्याघा. ६ से १६ घ. तक)
" " १० चं. उ. भा.
" " १५ श. रोहि.
माघ शु. १० गु. रोहि. (५।५४ उ.)
" " ११ शु. मृग. (भ.२२।७ वा.)
फाल्गु. शु. १२ चं. पुष्य.

अशुद्ध विवाह मुहूर्त (सं० २०१७)

गत पृष्ठ पर शुद्ध सपरिहार विवाह मुहूर्त्त दिये गए हैं। यहां हम उन विवाह नक्षत्रों का निर्देश कर रहे हैं जिनमें अपरिहार्य दोष या दोषों के कारण विवाह नहीं हो सकते। साथ २ दोषों का निर्देश किया गया है, ताकि उनमें विवाह की अशास्त्रीयता के हेतु का ज्ञान हो सके।

वैशा.कृ.३गु.अनु.व्यतीपात
वैशा. कृ. ४ शु. अनु. मृत्यु
वैशा.कृ.६ र. मू. लग्नाभाव,
वैशा.कृ.९बु. धनि. लग्नाभाव, कां. सा.
वैशा.शु.३गु. रो. अतिगं. नक्षत्रान्त
वैशा.शु.३ शु. मृ. लग्नाभाव
वैशा. शु. ४ श. मृ. लग्नाभाव
वैशा. शु. ८ बु. म. लग्नाभाव
वैशा.शु. १० शु.उ.फा. लग्नाभाव
वैशा. शु. ११ श. ह. } भौमवेध
वैशा. शु. १२ र. ह. }
वैशा. शु. १२ र. चि. } केतुवेध
वैशा. शु. १३ चं. चि. }
वैशा. शु. १३ चं. स्वा. } व्यतीपात
वैशा.शु. १४ मं. स्वा. }
वैशा. शु. १५ बु. अनु. परिघार्ध
ज्ये.कृ. १ गु. अनु. मृत्यु.
ज्ये. कृ.२ शु. मू. मासान्त,
ज्ये.कृ. ५ र. उ.षा. मृत्युबाण

ज्ये. कृ. १० से श्राव. शु. ७ तक शुक्रास्त
श्राव.शु.११ बु. मू. वैधृ. भद्रा, कां. सा.,
श्राव.शु.१२ गु. मू. नक्षत्रान्त.
श्राव.शु.१३ शु.उ.षा. मृत्यु.
श्राव.शु.१४ श. उ.षा. मृत्यु. भद्रा,
श्राव.शु.१५ र. धनि. सूर्यवेध
भाद्र.कृ.१ चं. धनि. तिथिक्षय सूर्यवेध,
भाद्र कृ.५ श. उ. भा. लग्नाभाव
भाद्र कृ. ६ शु. रेव. लग्नाभाव
भाद्र.कृ.६ शु. अश्वि. भुजङ्गपात
भाद्र.कृ.७ श. अश्वि. भद्रा
भाद्र.कृ.९ चं. रो. मासान्त.
भाद्र.कृ.१० मं. रो. संक्रान्ति
भाद्र.कृ.१० मं. मृग. संक्रान्ति

भाद्र.शु.४ शु. ह. नक्षत्रान्त
भाद्र.शु.४ शु. चि. केतुवेध
भाद्र.शु.५ श. स्वा. मृत्युबाण, कां. सा.
भाद्र.शु.७चं. अनु. वैधृ.विष्कं, लग्नाभाव
भाद्र.शु.८ मं. मू. लग्नाभाव,
भाद्र.शु. ९ बु. मू. तिथिक्षय, दग्धा,
भाद्र.शु. ११ गु. उ. षा. } भौमवेध
भाद्र.शु. १२ शु. उ. षा. }
भाद्र.शु. १२ शु. श्रव. लग्नाभाव
भाद्र.शु.१४ र. धनि. लग्नाभाव
आश्वि.शु.२ गु. चि. } शुक्रयुति, केतुवेध
आश्वि.शु.३ शु. चि. }
आश्वि. शु. ३ शु. स्वा. लग्नाभाव
आश्वि.शु.४ श. स्वा. वैधृति
आश्वि.शु.७ मं. मू. मृत्यु
आश्वि.शु. १४ चं. उ. भा. } सूर्यवेध
आश्वि.शु. १५ मं. उ. भा. }
आश्वि. शु. १५ मं. रेव., ल. कर्क मे कर्तरी
कार्ति.कृ.१बु. रे. ल. कुम्भ में कर्तरी
कार्ति.कृ.१ बु. अश्वि. } राहुवेध
कार्ति.कृ.२गु. अश्वि. }
कार्ति.कृ.४ शं. रो. लग्नाभाव
कार्ति.कृ.५ र. रो. व्यतिपात
कार्ति. कृ.१० श. म. मृत्यु.
कार्ति. कृ. ११ र. म. मासान्त
कार्ति. शु. २ श. अनु. } शुक्रयुति
कार्ति.शु. ३ र. अनु. }
कार्ति.शु.४ चं. मू. } भौमवेध
कार्ति.शु.५ मं. मू. }
कार्ति.शु. ६ बु. उ. षा. तिथिक्षय
कार्ति. शु. ८ गु. उ. षा. भद्रा
कार्ति.शु. ८ गु. श्रव. } भुजङ्गपात
कार्ति.शु. ९ शु. श्रव. } पं.नि.
कार्ति.शु.९ शु. धनि.कां.सा.सायं.५।३१ तक।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त सं० २०१७ (गत पृष्ठ का शेष)

कार्ति.शु.१२ चं. उ. भा. कर्क में कर्त्तरी
कार्ति.शु.१४ बु. अश्वि. राहुवेध
मार्ग.कृ.२ श. रो. मृत्यु
मार्ग.कृ.३ र. रो. भद्रा.
मार्ग.कृ. ४ च. मृ. लग्नाभाव
मार्ग.कृ. १० र. उ. फा. वैधृति भद्रा
मार्ग.कृ. १० चं. उ. फा. मासान्त
मार्ग.कृ ११ मं. ह. संक्रान्ति
मार्ग.शु.२ र. मृ. } भौमवेध
मार्ग.शु. ३चं.मृ. }
मार्ग.शु. ७ शु. धनि. भद्रा लग्नाभाव
मार्ग.शु.१० चं. उ. भा. लग्नाभाव
मार्ग.शु.११मं. रेव. व्यतिपात
मार्ग.शु. ११ मं. अश्वि. } राहुवेध
मार्ग.शु. १२ बु. अश्वि. }
पौषकृ. १ र. मृग. पात्रवेध
पौषकृ. ६ शु. म. वैधृति भद्रा
पौष कृ. ९ चं. उ. फा. कर्त्तरी
पौषकृ. १० मं. ह. भद्रा लग्नाभाव
पौषकृ. १० मं. चि. मृत्यु
पौषकृ. ११ बु. चि. मासान्त

पौष शु. ७ से माघ. शु. ४ तक गुरु अस्त

माघ शु. ११ शु. रो. भद्रा
माघ शु. ११ शु. मृग. शनिवेध
माघ शु. १२ श. मृग. वैधृति शनिवेध
फा. कृ. १ बु. म. } सूर्यवेध
फा.कृ. २ गु. म. }
फा. कृ. ३ शु. उ. फा. भद्रा, लग्नाभाव
फा.कृ. ४ श. ह. लग्नाभाव
फा.कृ. ५ र. चि. शूल
फा.कृ.६ चं. चि. भुजंगपात
फा. कृ.६ चं. स्वा. भद्रा
फा.कृ.७ मं. स्वा. केतुवेध
फा.कृ.८बु. अनु. लग्नाभाव
फा.कृ.९ गु. अनु. का.सा.

नीचस्थ गुरु का नीचांशक फा. कृ. १० से फा. शु. १० तक

फा.शु.१४ बु. से चैत्र कृ.२ र. तक ग्रहण शूल
चै.कृ. ४ चं. चि. सूर्यवेध
चै.कृ. ४ चं. स्वा. } केतुवेध
चै.कृ. ५ मं. स्वा. }
चै.कृ.६ बु. अनु. भद्रा लग्नाभाव
चै.कृ. ८ शु. मू. (व्यती.४१ उ.) लग्नाभाव
चैत्र कृ. ९ श. मू. व्यतिपात
चै.कृ.१० र. उ. षा. शनियुति, मृत्यु
चै.कृ. ११ चं. श्रव. मासान्त.

शनि शान्ति यन्त्र

इसे धारण करने से शनि कृत अरिष्ट, साढसती व ढैया का अशुभ फल शान्त रहता है।
भेंट २॥)

मङ्गल शान्ति यन्त्र

इस यन्त्र को मंगलीक स्त्री या पुरुष भुजा पर बाँधे तो मंगलकृत अशुभ फल शान्त रहता है।
भेंट २॥)

यन्त्रों को धारण करने की विधि एवं नियम यन्त्र के साथ भेजे जाते हैं।

व्यवस्थापक—

श्री मार्त्तण्ड कार्यालय म० पो० कुराली (अम्बाला) पञ्जाब

(पृ० १२४ का शेषांश)

साम्पातिक काल साधन

		घं० मि० से०	
सन् १९५९ ई०		६।३८।४५	सां० का० कोष्ठक नं० (१) से
१२ जून	+	१०।३८।४२	सां० का० कोष्ठक नं० (२) से
रोपड़ में १२ जून सन् १९५९ के प्रारम्भ का सां.का.		१७।१७।२७	
रेखांश सम्बन्धी संस्कार	+	१	सां० का० कोष्ठक नं० (३) से
भटिण्डा में १२ जून सन् १९५९ के प्रारम्भ का सां. का.		१७।१७।२८	
स्थानीय समय	+	१४।००।००	
काल संस्कार	+	२।१८	सां.का. कोष्ठक नं० (४) से
इष्टकालिक साम्पातिक काल		७।१९।४६	

भटिण्डा के अक्षांश लगभग ३० उत्तर हैं, अतः इस इष्ट सां० का० को ३० अक्षांश वाली लग्न सारिणी में देखा तो इसके निकटतम एवं इससे कम सां० का० ७।१९।२० प्राप्त हुआ, जिसके बिल्कुल ऊपर ५ राशि एवं बाईं ओर सबसे पहिले कालम में २४ अंश लिखे हैं। इन्हें (५ राशि २४ अंशों को) एक ओर लिख लिया। सारिणी स्थित सां० का० ७।१९।२० एवं इष्ट सां० का० के अन्तर २६ सेकण्ड को ६० से गुणा किया। इस गुणनफल को ७।१९।२० एवं सारिणी में इससे नीचे दिए गए ७।२३।५७ सां० का० के मध्य आगे ही गति वाले कालम में लिखे २७७ सेकण्डों से भाग देकर क्रमशः दो लब्धियें ५ कला एवं ३८ विकला प्राप्त हुईं। इन्हें एक ओर लिखे हुए ५ राशि २४ अंश में जोड़ा तो ५।२४।५।३८ यह २३°।१५′ अयनांश-सम्बन्धी निरयण राश्यादि लग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से २३°।१५′ एवं १२ जून सन् १९५९ के अयनांश २३।१६।३० के अन्तर १ कला ३० विकला को घटाया (क्योंकि इष्ट अयनांश २३°।१५′ से अधिक है) तो ५।२४।४।८ हमारा अभीष्ट निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

इसी साम्पातिक काल द्वारा दशम सारिणी से इसी प्रकार दशम भी स्पष्ट किया जा सकता है।

श्रीसिद्ध महालक्ष्मी यन्त्र

इस अद्भुत प्रभावशाली यंत्र को अपनी पेटी-गल्ले वा सन्दूक में रखने से और साथ ही वर्ष में एक बार यथाशक्ति विधिपूर्वक पूजनार्चन करते रहने से धनहानिकारक ग्रहों की दशाओं का अशुभ फल दूर होकर घर में लक्ष्मी का निवास वृद्धि पर रहता है अनुभव कर देखिये विशेष प्रशंसा करना हम ठीक नहीं समझते। यंत्र मंगाते समय अपनी जाति गोत्र व नाम अवश्य लिखें यंत्र की भेंट सर्वसाधारण से रजिस्ट्री डाकखर्च सहित ५ रु. ९० नये पैसे हैं। वी. पी. से कुछ अधिक लगेगा, धनाढ्य सेठ साहूकारों को श्रद्धापूर्वक यथासामर्थ्य २१) वा ११)रु. भेजना चाहिए।

व्यवस्थापक—

श्री मार्त्तण्ड कार्यालय, म० पो० कुराली (अम्बाला) पञ्जाब

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

मुनि श्री प्रकाश विजय जी द्वारा प्राप्त जैन पर्वानिर्णय

वीर संवत् २४८६–८७ आत्म संवत् ६४–६५ शाक: १८८२ विक्रम संवत् २०१७

प्रतिष्ठा	सन् १९६०-६१	तिथि		तारीख
फा. १५	श्रीवृद्धिविजय (बूटेराय) जी म. का स्वर्गदिन और श्री विजयानंदसूरि (आत्माराम) जी म० का जन्मदिन	चैत्र शु. १	सोम	ता. २८- २-६०
फा. २२	" सिद्ध चक्र (आयंबिल) तप ओली जन्मदिन शुरु	चैत्र शु. ७	रवि.	ता. ४- ३-६०
" २७	" वर्धमान (महावीर) स्वामी का जन्मदिन	चैत्र शु. १३	शनि.	ता. ९- ३-६०
" २९	" आयंबिल तप ओली पूर्ण चै. पू. सि. का मेला	चैत्र शु. १५	सोम	ता. ११- ३-६०
चै. १५	" वर्षीतप ऋषभदेवजी का पारणा (अक्षयत.)	वै. शु. ३	गुरु	ता. २८- ३-६०
वै. २०	" विजयानंदसूरि (आत्मा रा.) जी म. का स्व. दिन	ज्ये. शु. ८	शुक्र	ता. ३- ५-६०
ज्ये. १७	" चौमासी अट्ठाई प्रारम्भ	आषा. शु. ७	शुक्र.	ता. १- ६-६०
" २३	" चौमासी चौदस	आषा. शु. १४	गुरु.	ता. ७- ६-६०
" २४	" चौमासी अट्ठाई सम्पूर्ण	आषा. शु. १५	शुक्र.	ता. ८- ७-६०
आषा. १३	" नेमनाथ भगवान् का जन्मदिन	श्राव. शु. ५	शुक्र.	ता. २९- ७-६०
भा. ३	" पर्युषणपर्व अट्ठाई प्रारंभ	भादोवदि १२	शुक्र.	ता. १९- ८-६०
" ६	" कल्पसूत्र वाचना प्रारंभ	" " ३०	सोम.	ता २२- ८-६०
" ७	" वीरजन्म वांचन	" शु. १	मंगल.	ता. २३- ८-६०
" १०	" संवत्सरी पर्व	" " ४	शुक्र.	ता. २६- ८-६०
" १६	" जगद्गुरु विजयहरि सूरि स्वर्ग दिन	" ११	गुरु.	ता. १- ९-६०
" ३१	" युगवीर आ. श्रीवल्लभ सूरि स्वर्गदिन	आसोवदि ११	शुक्र.	ता. १६- ९-६०
आ. १०	" सिद्धचक्र आयंबिल ओली शुरु	" शु. ६	सोम.	ता. २६- ९-६०
" १८	" सिद्धचक्र आयंबिल ओली संपूर्ण	" " १५	मंगल	ता. ४-१०-६०
का. ३	" म. महावीरस्वा का निर्वाण दिन दिवाली पर्व	का. व. ३०	गुरु.	ता. २०-१०-६०
" ४	" गौतम स्वामी केवल ज्ञान	" शु. १	शुक्र.	ता. २१-१०-६०
" ५	" भाई दूज श्रीवल्लभ सूरि जन्म दिन	" " २	शनि.	ता. २२-१०-६०
" ७	" ज्ञान पंचमी	" " ५	सोम.	ता. २४-१०-६०
" ९	" चौमासी अट्ठाई प्रारंभ	" " ७	बुध.	ता. २६-१०-६०
" १६	" चौमासी अट्ठाई संपूर्ण कार्तिक पूर्णिमा	" " १४	बुध.	ता. २-११-६०
" १७	" सिद्धाचल, हस्तिनापुर, शौरीपुर का मेला	" " १५	गुरु	ता. ३-११-६०
मा. १४	" मौन एकादशी (१५० कल्याणक दिन)	मार्ग श. ११	सोम.	ता. २९-११-६०
" २८	" पौष दशमी (श्रीपार्श्वनाथ प्रभु का जन्मदिन)	पौ. वदि १०	मंगल	ता. १३-१२-६०
माघ. २	" मेरुत्रयोदशी (ऋषभ प्रभु का मोक्ष दिन)	माघवदि १३	रवि.	ता. १५- १-६१
फा. ९	" चौमासी अट्ठाई	फा. शु. ७	मंगल	ता. २१- २-६१
" १८	" चौमासी अट्ठाई सम्पूर्ण कांगड़ा तीर्थ का मेला	" " १५	गुरु.	ता. २- ३-६१
" २६	" ऋषभदेवप्रभुका जन्मदिन वर्षीतपकी शुरुआत	चै. वदि ८	शुक्र	ता. १०- ३-६१

...नत्व परिश्रमसाध्य औषधी से बच्चे का ज्वर, खांसी, सोखा, बदहजमी, हरे दस्त, सूखा मसान आदि समस्त रोग दूर होकर बच्चा निरोग हृष्ट-पुष्ट होता है, दांत भी सुख से निकलते हैं। कीमत १ शीशी पैकिंग रजिस्ट्री आदि सहित ६।)

पुष्टि मार्तण्ड—इस अचूक गुणकारी औषधि के कुछ काल नियमपूर्वक सेवन से वीर्य के सर्वविकार जड़ से दूर होकर शरीर पुष्ट होता है खुराक भी अपना पूरा असर करती है १ शीशी ५) डाक खर्च १–)॥ पृथक् ।

प्रदर मार्तण्ड—स्त्रियों के महाघातक लाल या सफेद प्रदर (पैड़े) की सिद्धौषधी। मूल्य ४) डाकखर्च पृथक्। (नोट—पत्र भेजते समय यह अवश्य लिखें कि लाल प्रदर है कि सफेद। उमर का अन्दाज और कितने दिन से यह रोग है। निर्माता—एच. आर. वैद्य

मंगाने का पता—

श्रीमार्तण्ड कार्यालय, मु० पो० कुराली, जि० अम्बाला, पंजाब

नव्यजन स्वास्थ्य विज्ञान

लेखक

डा० मुकुन्दस्वरूप

भूतपूर्व प्रिंसिपल, आयुर्वेदिक विद्यालय

हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी

पुस्तक हर व्यक्ति के लिये उपादेय है

कर्मठगुरुः

यह द्विजातिमात्र के लिए नित्य किया एवं कर्मकाण्ड का अद्वितीय ग्रन्थरत्न है। इसके आधार पर साधारण पठित जन भी विद्वान् के आगे बैठ कर सर्वप्रकार के कर्म निःसङ्कोच करा सकता है। इसकी अद्भुत शैली देखने योग्य है। जप, मन्त्र, पुरश्चरणादि के अनेक विधान और अनुभवसिद्ध बातें लिखी गई हैं। कर्मकाण्ड-विषयक ऐसा ग्रन्थ आज तक नहीं छपा। विशेष क्या गागर में सागर भरा पड़ा है।

आर्य संस्कृति तथा साहित्य की सन्देश वाहिका

संस्कृत-हिन्दी मासिक पत्रिका

विशेषांक सहित वा० म० ६) } **दिव्यज्योतिः** { एक प्रति का ६२ नये पैसे

संस्थापक तथा संपादक, सर्वतन्त्र स्वतन्त्र श्री आचार्य दिवाकरदत्त शर्मा

—: विशेष आकर्षण :—

१—सरल संस्कृत २—सांस्कृतिक साहित्य का सृजन ३—प्राचीन तथा अर्वाचीन ज्ञान-विज्ञान के समन्वयके साथ ज्योतिषायुर्वेद एवं कर्मकाण्डके सिद्धान्तों का विश्लेषण ४—बालोपयोगी शिक्षाप्रद साहित्य ५—नारीजीवन ६—संस्कृत जगत् में बौद्धिक क्रान्ति तथा नई चेतना का जागरण। अविलम्ब लिखिए :—

व्यवस्थापक :—दिव्यज्योतिः, आनन्दलाज, जाखू, शिमला—१

मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

१००० रुपये नकद इनाम

जो चाहोगे वही मिलेगा

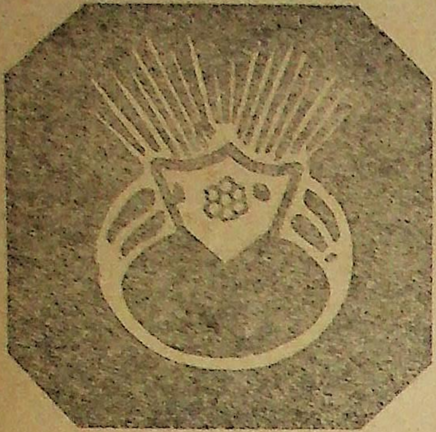

जब आप किसी ओर से निराश न हों इस तिलस्मी अंगूठी को पहनने से आप जिस पुरुष या स्त्री का नाम लोगे वह देखते ही फौरन बस में हो जायगा। चाहे वह कितना ही पत्थर हृदय क्यों न हो। सात समुद्र फांदकर सात ताले तोड़कर आपके चरणों में हाजिर होगा। पत्थर दिल और दुश्मनी को छोड़कर आपकी आज्ञा मानने लगेगा। मन चाही सगाई शादी होगी। मृतात्माओं से बातचीत होगी। जमीन में गड़ा धन सपने में दिखाई देगा। मुकदमे में जीत होगी। परीक्षा में पास होंगे। व्यौपार में लाभ होगा बुरे ग्रह टल जायंगे। बदकिस्मती दूर होगी। खुश किस्मत बन जाओगे। जीवन आराम में बीतेगा। मूल्य तांत्रिक अंगूठी १।।। ≡) स्पेशल ३) स्पेशल पावरफुल ३।।। ≡) जिसका असर बिजली के करन्ट की तरह होता है। चाँदी की बनी १५) चाँदी की बनी स्पेशल पावरफुल २१) सोने की बनी ४१) सोने की स्पेशल पावर फुल ५१) डाक खर्च १)

यह तांत्रिक अंगूठी ग्रहण और शुभ मुहूर्त में तैयार की गई है। सूर्य पूर्व के बजाय पश्चिम से निकल सकता है परन्तु इस तांत्रिक अंगूठी का असर कभी खाली नहीं जा सकता। ठीक न होने पर दुगनी कीमत की गारन्टी। गलत साबित करने वाले को एक हजार रुपया नकद इनाम। एक बार अवश्य आजमायें। नोट—आर्डर देते समय अपना पता पूरा व साफ और सुन्दर लिखें।

प्रिन्सिपल शाइनिङ्ग मिस्मरेजम हाऊस (G.D.M.60) जालंधर सिटी ३

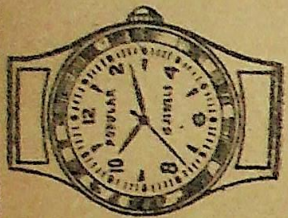

६) रुपये में घड़ी

१५ ज्यूल रिस्टवाच गारन्टी पाँच वर्ष केवल ६ रुपये में। चेन सिस्टम स्कीम द्वारा प्राप्त करें। डाक खर्च १रु० २५ नये पैसे अलग। नोट—यह स्कीम अपने हनीमून सेंट के व्योपार की प्रगति के लिये जारी की गई है। स्कीम नापसंद होने पर दाम वापिस।

लन्दन ट्रेडिंग एजेन्सी वाच सप्लायर्स (G.D,M.60)
जिालन्धरसी

त्रिकालदर्शी करामाती दर्पण—किसी भी उम्र का मनुष्य इस करामाती दर्पण में देख सकता है। चोरी गई वस्तु व गुमशुदा का पता, बीमार के स्वस्थ होने या न होने का हाल, आने वाले और गुजरे हुए हालात, भावी दुखों से बचने के उपाय, गड़े धन का पता, किसी मुश्किल काम का हल होना या न होना, प्रेम, नौकरी, अदालती केस, परीक्षा आदि में विजय पाना, स्वर्गवासी माता-पिता मित्रों, शहीदों से मुलाकात, जिसे कभी न देखा हो या जिसकी स्वप्न में भी आशा न हो उसे आप इसमें आसानी से देख लेंगे। मूल्य मय परचा तरकीब दो रुपये आठ आने २।।) रु०। दो दर्पण चार रुपये आठ आने ४।।) रु० महसूल डाक १) अलग।

मैनेजर शाइनिंग मिस्मरेज हाउस (G.D.M.60), जालंधर शहर ३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जो पूछोगे जवाब मिलेगा

आपके भाग्य में क्या लिखा है ?

यदि आप एक साल के अन्दर पेश आने वाले नेक या बद हालात समय से पहले जानना चाहते हैं तो आज ही एक पोस्ट-कार्ड पर किसी दिल पसन्द फूल का नाम लिखकर भेज दें—बस फिर हम ज्योतिष के हिसाब से आपके आने वाले १२ मास के लाभ हानि, किस व्यापार से फायदा, किस प्रकार रोज-गार मिलेगा, नौकरी, उन्नति, तबदीली, स्त्री व सन्तान का सुख, किसी से नया मेल मिलाप, या किसी प्रकार से धन का मिलना, यानी पोस्टकार्ड की तारीख से लेकर १ साल तक होने वाली कुल बातों के खुलासे का मासिक वर्ष फल बनाकर केवल १।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे डाक खर्च अलग। साथ ही बुरे ग्रहों के शान्ति का उपाय भी लिखा जायगा। एक बार की परीक्षा से ही आप को पता लग जायगा कि ज्योतिष विद्या में हमें कहां तक ज्ञान प्राप्त है।

श्री पंडित देवदत्त शास्त्री राज ज्योतिषी,

(G. D. M. 60) जालन्धर शहर [पंजाब]

१०,००० रुपये की घड़ियाँ

मुफ्त इनाम

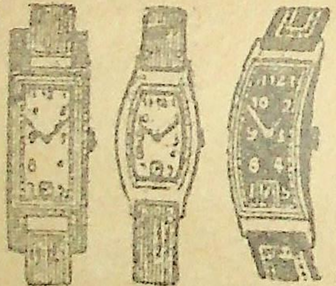

हमारे प्रसिद्ध 'बाल काला तेल' के इस्ते-माल से सफेद बाल काले हो जाते हैं और फिर काले ही पैदा होते हैं। बेनजीर सन्यासी तोहफा है। सिवाय हमारे दूसरी जगह से न मिलेगा। गिरते हुए बालों को रोकता है, बालों को लम्बा, घुंघर वाले और चमकदार बनाता है। गंजा-पन दूर कर आंखों और दिमाग को ताकत देता है, याददास्त को बढ़ाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत प्रति शीशी सिर्फ १।।।) एक रुपया बारह आने, डाक खर्च अलग। तीन शीशी की रियायती कीमत ४।।) इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी तथा सुन्दर रिस्ट वाच जिसकी खूबसूरती तथा मजबूती की गारन्टी ५ साल है और एक अंगूठी न्यू गोल्ड और तीन शीशी के खरीदार को रिस्ट वाच तथा ६ अंगूठी मुफ्त भेजी जाती हैं। नापसन्द होने पर दाम वापिस। जल्दी करें वरना ऐसा मौका हाथ न आवेगा।

मिलने का पता:—शाइनिंग फार्मेसी

(G. D. M. 60) जालन्धर सिटी ३

त्रिकालदर्शी 'असली करामात

यंत्रक रूमाल' सबसे बढ़िया

यह एक सन्यासी का दिया हुआ चम-त्कारी रूमाल है इसे केवल अपनी जेब में रखें ईश्वर की कृपा से आपके दिल की मुराद शीघ्र ही पूरी होगी। जिससे आपको मुहब्बत हो या जिससे शादी की इच्छा हो वह घर बैठे बिठाये आपसे मिलने के लिये तड़पने लगेगा। मन चाही सुन्दर स्त्री मिलेगी। राज सभा में मान, मुकदमे में जीत, चोरी का पता, परीक्षा में पास होना, दौलत से मालामाल हो जायेंगे। पहेली में नफा होगा। दुश्मन अधीन होंगे। नौकरी जल्दी मिलेगी अर्थात् दुनियां के सब मुश्किल काम अवश्य पूरे होंगे। आजमायश करने पर इसके जौहर खुलेंगे। मूल्य असली रूमाल का एक रुपया पन्द्रह आने १।।।≡) तीन रूमाल ५) रु० डाक खर्च एक या तीन रूमाल पर १) अलग। गलत निकले तो दाम वापिस।

प्रोफेसर शाइनिंग मिस्मरेजम हाउस

(G. D. M. 60) जालन्धर शहर [पंजाब]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१०००) रुपये नकद इनाम

जो मांगोगे वही मिलेगा

अब आप किसी तरफ से निराश न हों। इस तान्त्रिक अंगूठी को पहनने से दिल में आप जिस स्त्री या पुरुष का नाम लेंगे, वह देखते ही देखते फौरन वश में हो जायगा, चाहे कितना पत्थर दिल क्यों न हो सात समुद्र फांद, सात ताले तोड़, आपके कदमों में हाजिर होगा, कठोरता तथा शत्रुता को छोड़ आपका हुक्म मानने लगेगा, दिल पसन्द सगाई शादी होगी, नौकरी मिलेगी, मुर्दा रूहों से बात-चीत होगी, जमीन में दबी दौलत सपने में दिखाई देगी, मुकदमे में जीत मिलेगी, परीक्षा में पास होंगे, व्योपार में लाभ होगा, दुष्ट ग्रह शान्त होंगे। बद-किस्मती दूर होगी, खुश-किस्मत बन जाओगे, जीवन सुख शान्ति तथा प्रसन्नता से व्यतीत होगा।

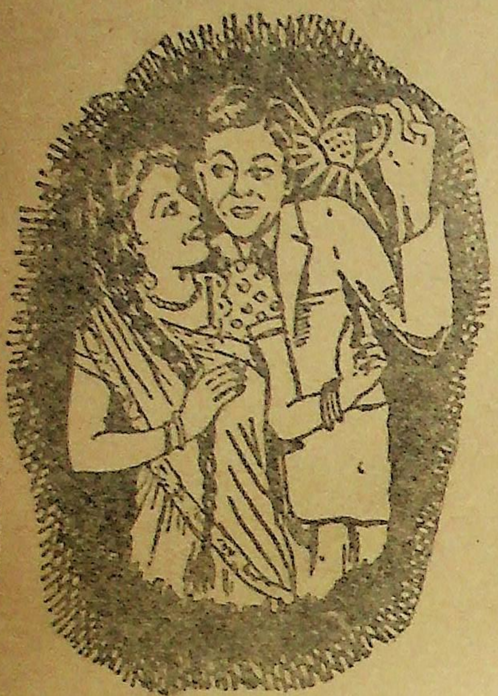

तान्त्रिक अंगूठी १-१५-०, स्पेशल पावरफुल ३-१५-० तीन रुपये पन्द्रह आने जिसका २४ घंटों में फौरन असर होता है। यह तान्त्रिक अंगूठी ग्रहण तथा शुभ मुहूर्त में तैयार की गई है। सूर्य पूर्व के बजाय पश्चिम से उदय हो सकता है लेकिन इस तान्त्रिक अँगूठी का असर कभी खाली नहीं जाता। ठीक न होने पर दुगनी कीमत वापस की गारण्टी है। मिथ्या साबित करने वाले को १०००) नकद इनाम। एक बार जरूर आजमायश करें।

राज ज्योतिषी पं० देवदत्त शास्त्री तान्त्रिकाचार्य (G.D.M.60) जालंधर सिटी ३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

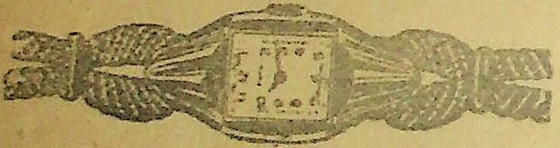
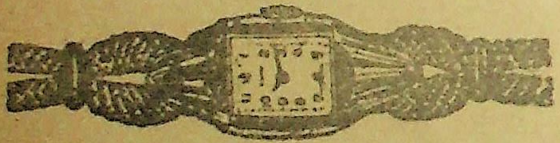

१००० रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारी प्रसिद्ध दवाई "असली जौहर हुस्न" के लगाने से हर जगह के बाल बगैर तकलीफ के दूर हो जाते हैं और फिर उस जगह बाल पैदा नहीं होते जगह रेशम की तरह मुलायम नरम और साफ हो जाती है। कीमत प्रति शीशी की सिर्फ १।।।) डाकखर्च १) अलग। तीन शीशी की रियायती कीमत ५) पाँच रु०। इस दवाई को मशहूर करने के लिये हर शीशी के साथ दो अंगूठी सोना लंडन न्यू गोल्ड मुफ्त और दो खूबसूरत न्यू रिस्टवाच बतौर इनाम मुफ्त भेजी जाती हैं। जल्दी करें और फायदा हासिल करें। माल पसन्द न होने पर मूल्य वापिस किया जाता है। तीन शीशी के खरीदार से डाकखर्च माफ और छः घड़ियाँ और ६ अंगूठियाँ सोना लंडन न्यू गोल्ड मुफ्त इनाम दी जाती हैं।

• असली बाल काला तेल नं० ५१० सबसे बढ़िया •

हमारे प्रसिद्ध "बाल काला तेल" के इस्तेमाल से सफेद बाल काले हो जाते हैं और फिर काले ही पैदा होते हैं। यह बेनजीर सन्यासी तोफा है। सिवाय हमारे दूसरी जगह से न मिलेगा। गिरते हुए बालों को रोकता है। बालों को लम्बा, घुंघर वाले और चमकदार बनाता है गंजापन दूर करता है। आँखों और दिमाग को ताकत देता है। याद-दास्त बढ़ाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत प्रति शीशी सिर्फ १।।।) एक रुपया बारह आने, डाक खर्च १ =) अलग। तीन शीशी की रियायती कीमत ५) पाँच रुपया, इस तेल को मशहूर करने के लिये हर एक शीशी के साथ दो फैन्सी न्यू रिस्टवाच और दो अँगूठी सोना लण्डन न्यू गोल्ड मुफ्त बतौर इनाम भेजी जाती हैं। माल पसंद न होने पर मूल्य वापिस किया जाता है, तीन शीशी के खरीदार को डाकखर्च माफ और छः घड़ियाँ और छः अँगूठियाँ सोना लण्डन न्यू गोल्ड मुफ्त इनाम, जल्दी करिये वर्ना ऐसा मौका फिर हाथ न आयेगा।

• काले गोरे हो गए •

यदि आप अपने चेहरे या शरीर का रङ्ग काले से गोरा करना चाहते हैं और मुख के बदनुमा दाग, कील, छाइयाँ, झुर्रियाँ, बदरौनकी, खुश्की आदि को दूर करके चेहरा गुलाब की तरह मुलायम चमकदार खूबसूरत बनाना चाहते हैं, तो हमारा तैयार किया हुआ "लण्डन ब्यूटी लोशन" इस्तेमाल करें। इससे आपके जिसम या चेहरे का रङ्ग काले से गोरा हो जायेगा। यह लोशन स्त्रियों और पुरुषों सबको खुश करने वाला तोफा है। कीमत प्रति शीशी १।।। ≡) एक रुपया पन्द्रह आने है। तीन शीशी की कीमत ५) डाक खर्च एक से तीन शीशी तक १ –) अलग। इस दवा को मशहूर करने के लिये एक शीशी के साथ दो फैन्सी न्यू रिस्टवाच और दो अँगूठी सोना लंडन न्यू गोल्ड मुफ्त बतौर इनाम भेजी जाती है। माल पसन्द न हो तो दाम वापिस किया जाता है जल्दी करें वर्ना ऐसा अवसर हाथ न आवेगा।

मनेजर—लण्डन ट्रेडिंग एजेन्सी G.D.M.60 जालन्धर सिटी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

प्यारी बहिनों !

अपना बच्चा ! प्यारा बच्चा ! ! एक विवाहित स्त्री के लिये सन्तान कितनी प्रिय वस्तु है परन्तु आज कितनी ही स्त्रियाँ ऐसी हैं जो कि संतान उत्पत्ति के योग्य हैं किन्तु उनके यहां संतान नहीं। विवाह को कई वर्ष बीत चुके हैं, परन्तु इस प्रिय वस्तु को तरसती हैं या एक दो बच्चे पैदा होने के पश्चात् फिर बच्चा पैदा नहीं हुआ। निम्नलिखित नुस्खा ऐसी ही बे-औलाद बहिनों के लिये है। यह गर्भ धारण करने में सहायक है। इसके सेवन करने से न जाने कितनी ऐसी स्त्रियों के संतान पैदा हुई है जो कि अज्ञानता से अपने आपको बांझ समझे हुई थीं। शक्ति तथा स्वास्थ्य की वृद्धि के लिये भी यह दवा अपूर्व है। निरोग रहने के लिये इसे प्रत्येक स्त्री को सेवन करना चाहिये।

नुस्खा यह है:—कपूर, दूधिया बच, नागरमोथा, मीठा चिरायता, गिलोय, देवदारु, हल्दी, अतीस, दारू-हल्दी, पीपरामूल, चीते की जड़ की छाल, धनियाँ, त्रिफला, चव्य, वायविडंग, गजपीपर, सोंठ, पीपर, गोल मिर्च, सोना माखी की शुद्ध भस्म, जवाखार, सज्जीखार, सेंधा नोन, काला नोन और बिड़ नोन—हरेक ३-३ माशे। निशोथ, दन्ती, तेजपात, दालचीनी, बीज इलायची और बंसलोचन १०-१० माशे। भस्म फौलाद (१०१ आँच की) २० माशे, मिश्री २ तोले, शुद्ध सूर्यतापी शिलाजीत ५ तोले और शुद्ध गुगल ५ तोले। सब दवाओं को कूट पीसकर कपड़े से छान करके ३-३ रत्ती की गोलियाँ बनालें। एक गोली प्रतिदिन दूध के साथ सेवन करें। याद रखिये कि सभी दवायें विशेषतः शिलाजीत और भस्म फौलाद लिखे अनुसार होनी चाहियें। अशुद्ध अथवा बाजारू दवाओं से बजाय लाभ के हानि हो सकती है।

प्रिय पाठको : आप इसे साधारण दवा न समझें। यह नुस्खा मेरा स्वयं परीक्षित है। और इसे मैंने हजारों बहनों पर अजमाया है। विवाह के एक वर्ष पश्चात् दुर्भाग्य से मैं भी कई एक विकारों में फँस गई थी जिनके कारण मैं प्रतिदिन कमजोर होती जा रही थी। चेहरे का रंग पीला पड़ गया था। हर समय सिर चकराता, कमर दर्द करती और बदन टूटता रहता था। प्रातः समय पर पेट और नलों में सख्त दर्द रहता। मैंने सुपारी पाक, कारडियल राउ कई एक औषधियाँ सेवन कीं, किन्तु अन्त में इस नुस्खे के प्रयोग से न केवल मेरे स्वास्थ्य सम्बन्धी सब विकार ही दूर हो गये बल्कि मेरे यहाँ एक बालक ने भी जन्म लिया अब मैं इस नुस्खे को अपनी अन्य बहिनों की भलाई के लिए प्रकाशित कर रही हूँ। यदि कोई बहन अज्ञानता या समय अभाव के कारण स्वयं तैयार न कर सके तो मैं उसे इसी नुस्खे से निर्मित अपनी दवा "स्त्री कल्याण" वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। मूल्य १५ दिन की दवा २ रुपये १४ आने। डाक खर्च अलग।

सूचना—यदि कोई व्यक्ति यह साबित कर दे कि मेरी दवा 'स्त्री कल्याण' उपरोक्त नुस्खे के अनुसार तैयार नहीं होती, तो उसे एक हजार रुपया इनाम।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, नं० ४०. बुढलाडा जिला हिसार (पञ्जाब।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हमारे यहाँ मिलने वाली संस्कृत-हिन्दी पुस्तकों का सूचीपत्र

वेद

नं० पुस्तक का नाम — मूल्य–रु० न.पै.

१ अग्निदेवता मंत्रसंग्रह—सातवलेकर ६–००

२ अग्निवेश्य गृह्यसूत्र—मूल ट्रीवेंड्रम २–२५

३ अथर्ववेद-संहिता—मूल पं० सातवलेकर ६–००

४ अथर्ववेद—सायण भाष्य तथा हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण– पं० रामस्वरूप ८ जिल्दों में १२५–००

५ अथर्ववेद—सुबोध हिन्दी भाष्य (१ से १८ अध्याय) पं० सातवलेकर ४०–००

६ अथर्ववेद—हिन्दी टीका जयदेव १, २ भाग १६–००

७ अथर्ववेद—पिप्पलाद शाखा-सम्पूर्ण-पाण्डुलिपिका फोटो में छपा-शारदा लिपि-अमरीका का छपा तीन बड़ी-बड़ी जिल्दों में ३००–००

८ [अथर्ववेद संहिता—पैप्लाद शाखा (१–१३ तक) डा० रघवीर ३०–००

९ अथर्ववेदपदानां अकारादिवर्णक्रमानुक्रमणिका— स्वामी विश्वेश्वरानन्द ३०–००

१० [अथर्ववेद की प्राचीनता—(हिन्दी) कुशवाहा ०–३७

११ अथर्ववेदीय दन्त्योष्ठ विधि—(अर्थात्) २–५०

१२ अथर्ववेदीया—बृहत्सर्वानुक्रमणिका ६–००

१३ अथर्ववेदीया माण्डू की शिक्षा— २–००

१४ अथर्ववेदीय व्रात्यकाण्ड (भाष्य तथा भाषानुवाद सहित) ले० डा० श्रीसम्पूर्णानन्द मुख्यमंत्री, उत्तरप्रदेश। यह अथर्ववेद का पन्द्रहवां काण्ड है। वेदों के भाष्य-कर्ता श्रीसायणमाधव ने भी इस काण्ड का भाष्य नहीं किया, जिससे इन मंत्रों का आशय आज तक अज्ञात-सा ही पड़ा रहा। इस कमी को दूर करने के लिए विद्वान् लेखक न चिरकाल तक अध्ययन एवं मनन कर इस काण्ड पर संस्कृत में भाष्य की रचना की। साथ ही साथ साधारण जनता के उपयोग के लिये हिन्दी-भाषा में भी अनुवाद कर राष्ट्रभाषा की अनुपम सेवा की और वेदार्थ के जिज्ञासु इसके लिए सदा कृतज्ञ रहेंगे। इसका विशुद्ध संस्करण सर्वप्रथम प्रकाशित किया गया है। बढ़िया कागज एवं सुन्दर छपाई नये टाइप में ३–००

१५ आयुर्वेद प्रकरण—आयुर्वेद के सब वेदमंत्र ५–००

१६ अदितिः आदित्यास्चमंत्रसंग्रह ३–००

१७ अवेस्ता (पारसियों की धर्मपुस्तक) संस्कृत छाया और भावानुवाद सहित उपोद्घात और अहोमयश्त्— यस्न ९। पं० राजाराम कृत १–२५

१८ आश्विनौ देवता (मंत्र संग्रह) पं० सातवलेकर ३–००

१९ अस्यवामस्य सूक्त ऋग्वेदका—सायण तथा आत्मानंद भाष्य तथा अंग्रेजी अनुवाद १२–००

२० आचार्य सायण और माधव–प्रो० बलदेव हिन्दी ६–००

२१ आपस्तम्ब गृह्यसूत्र—अनाकुला तथा तात्पर्यदर्शन दो व्याख्या काशी ७–००

२२ आपस्तम्ब श्रौतसूत्र—रामाग्निचिद्वृत्ति सहित धूर्त स्वामी भाष्य दो भाग मैसूर १५–००

२३ आपस्तम्ब श्रौतसूत्र–(धूर्त स्वामी भाष्य) चिन्न स्वामी शास्त्री प्रथम भाग बड़ोदा २०–००

२४ आपस्तम्ब श्रौतसूत्र—रुद्रदत्त कृत व्याख्या सहित सम्पूर्ण दुष्प्राप्य कलकत्ता २५०–००

२५ आपस्तम्ब शुल्बसूत्र—कपर्दि, करविन्द, सुन्दर ३ व्याख्या २–७५

२६ आरण्य संहिता—(सामवेद) सायण भाष्य १–००

२७ आश्वलायन गृह्य मन्त्र व्याख्या—हरदत्त २–८१

२८ आश्वलायन गृह्यसूत्र—देवस्वामि, नारायण दो व्याख्या सहित प्रथम अध्याय मद्रास ८–००

२९ आश्वलायन गृह्यसूत्र—नारायण वृत्ति गृह्यपरिशिष्ट, गृह्यकारिका पूना ४–२५

३० आश्वलायन श्रौत सूत्र—सिद्धान्ति भाष्य ०–५३

३१ आश्वलायन श्रौत सूत्र—नारायण वृत्ति पूना ७–००

३२ आश्वलायनसूत्रप्रयोगदीपिका—मञ्जनाचार्य ३–००

३३ इन्द्रदेवता मन्त्रसंग्रह—अनेक सूचियों सहित ७–००

३४ इन्द्र शक्ति का विकास—पं० सातवलेकर ०–३५

३५ उदक शान्ति—(खुला पत्रा) बम्बई ०–५०

३६ उदकशान्ति–शौनकोय (ऋग्वेदीय) प्रयोग ०–५०

३७ उपनिदान सूत्र—(साम गानां छन्द) ०–५०

३८ उरु ज्योति—वैदिक अध्यात्मसुधा— ३–००

३९ उषा देवता—उषा देवता के वेद मंत्र १–७५

४० उषादेवता—अर्थ तथा स्पष्टीकरण सहित ३–००

४१ ऊहगानं—दशरात्र पर्व १–००

४२ ऋग्वेद—मूलमात्र सम्पूर्ण मध्यम अजमेर ६–५०

४३ ऋग्वेद संहिता—मूल, मंत्र वर्णानुक्रम सूची सहित— बुक साइज–अजमेर १०–००

४४ ऋग्वेद संहिता–(मूल) पं०सातवलेकर मध्यम १०–००

४५ ऋग्वेद संहिता—परिभाषा-सर्वानुक्रम स्वाहाकार–प्रयोग ऋग्विधान–मंत्रकोशादियुक्त खुला ६–००

४६ ऋग्वेद संहिता–पदपाठ–बुकसाइज १५–००

४७ ऋग्वेदसंहिता—सायण से प्राचीन वेंकट माधव कृत भाष्य सहित तथा आज तक जितने भी प्राचीन भाष्य उपलब्ध हैं और उनका अर्थ वेंकटमाधव से भिन्न है वह सब भी टिप्पणी में दे दिये गये हैं इस प्रकार सभी भाष्यों का आशय इसमें मिल जायेगा। चार बड़ी जिल्दों में बहुत सुन्दर छपाई, कागज, जिल्द सुनहरी चार भागों में सात मंडल आ गए हैं बाकी भाग छपन पर मिलेंगे चारभाग २००–००

४८ ऋग्वेद—सायण भाष्य पदादि सूचि सहित पांच भागों में सम्पूर्ण पूना १३५–००

४९ ऋग्वेद संहिता—श्री कपालि शास्त्रि विरचित सिद्धाञ्जन भाष्य समेत प्रथम अष्टक के १ से १२१ सूक्त तक दो भाग ५५–००

५० ऋग्वेद भाष्य–स्कान्द स्वामिकृत प्रथमअष्टक ६–७५

५१ ऋग्वेद संहिता—स्कान्द भाष्य तथा वेंकट माधव व्याख्या ३ भाग ट्रीवेंड्रम ५–२५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

५२ ऋग्वेद–उद्गीथ भाष्य दशममण्डल के ५वें सूक्त के ४ मन्त्र से दशममण्डल के ३४वें सूक्त के ३रे मन्त्र ६–००

५३ ऋग्वेद व्याख्या–(माधव)–केवल २रा भाग २०–००

५४ ऋग्वेद—पं० सातवलेकर कृत सुबोध हिन्दी भाष्य (१ से १९) २३–००

५५ ऋग्वेद—भाषाभाष्य (प्रथम भाग) ऋषि दयानन्द कृत संस्कृत भाष्यका भाषानुवाद—प्रथम मंडल के ४६वें सूक्त के १५वें मंत्र तक २–५०

५६ ऋग्वेद संहिता—(वैदिक जीवन भाष्य) पदपाठ, शब्दार्थ, संस्कृत और सूक्त के भाषा भावार्थ सहित–पं० शिवनाथ अहिताग्नि द्वारा अपूर्ण १००–००

५७ ऋग्वेद—पं० जयदेव विद्यालंकार कृत हिन्दी अनुवाद सहित (१ से ५, ७ भाग) ४८–००

५८ ऋग्वेद—पं० रामगोविन्दकृत केवल हिन्दी १२–००

५९ ऋक् संग्रह-सायणभाष्य—अंग्रेजी नोट्स ३–००

६० ऋग्वेद सार संग्रह—शिवनाथ अहिताग्नि ३–००

६१ ऋक्-सूक्त -संग्रह—प्रो० हरिदत्त शास्त्री कृत सायण भाष्यानुसारी हिन्दी व्याख्या सहित छपता है ३–७५

६२ ऋग्वेद की कतिपय दानस्तुतियों पर विचार–युधिष्ठिर मीमांसक ०–२५

६३ ऋग्वेद की ऋक्संख्या—युधिष्ठिर मीमांसक ०–५०

६४ ऋग्वेद के अग्नि सूक्त—पं० सातवलेकर २–००

६५ ऋग्वेदीय नित्यविधि–खुलापन्ना बम्बई १–५०

६६ ऋग्वेद पर व्याख्यान—पं० भगवद्दत्त हिन्दी २–५०

६७ ऋग्वेद प्रातिशाख्य–उवट भाष्य डा०मंगलदेव ८–७५

६८ ऋग्वेद प्रातिशाख्य–मूल–अनेक टिप्पणियों सहित डा० मंगलदेव द्वारा सम्पादित २०–००

६९ ऋग्वेदभाष्य भूमिका–(सायणीय) बदरीनाथी ०–६२

७० ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका—स्वामी दयानन्द २–५०

७१ ऋग्वेद मंत्र संहिता—(पत्रात्मक) बम्बई १–२५

७२ ऋग्वेद–मन्त्राणांवर्णानुक्रमसूची पं०सातवलेकर २–००

७३ ऋग्वेद में रुद्रदेवता—पं० सातवलेकर ०–६२

७४ ऋग्यजुस्सामाथर्वविधान–अग्निमहापुराणान्तर्गत ०–२५

७५ ऋग्वेदानुक्रमणि–(माधव भट) ४–००

७६ एकाग्नि कांड—कृष्णयजुर्वेदीय १–००

७७ ऐतरेयारण्यक—सायणाचार्य कृत भाष्य सहित ५–५०

७८ ऐतरेयारण्यक—पर्यालोचनम् अथवा ऐतरेयारण्यक आचार विचाराः—डाक्टर मंगलदेव शास्त्री २–००

७९ एतरेयालोचनम्—ऐतरेय ब्राह्मणस्य उपोद्घात २–५०

८० ऐतरेय ब्राह्मण मूल—पत्रात्मक २–००

८१ ऐतरेय ब्राह्मण—सायण भाष्य सम्पूर्ण पूना १६–००

८२ ऐतरेयब्राह्मण—सायणभाष्य सहित सोसाइटी का छापा दुष्प्राप्य

८३ ऐतरेयब्राह्मण—श्रीषड्गुरुशिष्य कृत सुखप्रदाख्य वृत्ति १ से ३२ अध्याय तक १६–५०

८४ एतरेय ब्राह्मण—(ऋग्वेदीय) केवल हिन्दी ५–००

८५ ऐतरेय ब्राह्मण पदानुक्रमणिका ४–००

८६ ऐतरेयब्राह्मण आरण्यक कोष–केवलानन्द ८–००

८७ कर्मप्रदीप—छान्दोग्य परिशिष्ट दो भाग २–२५

८८ काठक गह्य सूत्र—त्रयभाष्य सारयुक्त १०–००

८९ काठक संहिता–(कृष्ण यजुर्वेदीय) मूल १०–००

९० काण्व संहिता–(यजुर्वेदीय) मूल ५–००

९१ कत्यायन श्रौत सूत्र—कर्कभाष्य काशी १३–००

९२ कात्यायन श्रौतसूत्र—पं० विद्याधर गौड़कृत सरल संस्कृत वृत्ति ८–००

९३ कात्यायनश्रौतसूत्र की भूमिका–श्रीविद्याधर ०–५०

९४ कात्यायनशुल्ब सूत्रम्–कर्कभाष्य महीधर वृत्ति ०–३७

९५ कौथुमगृह्यसूत्र अंग्रेजी सहित ९–००

९६ कौशिक गृह्य सूत्र–(अथर्ववेद) दारिलकेशव संक्षिप्त सं०टीका तथा उदयनारायणकृत हिन्दी ४५–००

९७ खादिरगृह्यसूत्र—श्री पटाभिराम विरचित सूत्रार्थ बोधिनी वृत्ति सहित २–००

९८ खादिरगृह्यसूत्र—रुद्रस्कन्द कृत व्याख्या सहित मैसूर

९९ खादिरगृह्यसूत्र–रुद्रस्कन्द वृत्ति तथा हि०अनु० २–५०

१०० गणपत्यथर्वशीर्ष—मूल बम्बई ०–१२

१०१ गणेशाथर्वशीर्ष—सभाष्य पूना ०–५०

१०२ गोपथब्राह्मण–मलमात्र–डा०गास्ट्रा संपादित २०–००

१०३ गोभिल गृह्य सूत्र मृदुला व्याख्या ४–००

१०४ गोभिलगृह्यसूत्र—(प्रथमखंड) भटनारायण १५–००

१०५ गोभिलगृह्यसूत्र–उदयनारायणसिंहकृत भा.टी. २–५०

१०६ गो-ज्ञान कोश–(द्वितीय भाग) वेदमंत्रों में जो गौ के विषय के मंत्र हैं सब दिये हैं सातवलेकर ६–००

१०७ चतुर्वेदभाष्यभूमिकाना संग्रह–सायणाचार्य ५–००

१०८ चरणव्यूह–(शौनक)– महीदास भाष्य ०–८७

१०९ चारायणीय मन्त्रार्षाध्याय–मूल २–००

११० छान्दोग्य ब्राह्मण–गुणविष्णुकृत—वेदार्थ प्रकाश-सहित परिशिष्टादि १७–००

१११ चारों वेदों के मन्त्रों की वर्णानुक्रमणिका-अजमेर २–५०

११२ जमिनीय उपनिषद्ब्राह्मण–(सामवेदीय) ५–००

११३ जैमिनीय ब्राह्मण सम्पूर्ण ३०–००

११४ जैमिनीय संहिता–(सामवेदीय) डा० रघुवीर १०–००

११५ ताण्ड्य महाब्राह्मणम्–सायण भाष्य सम्पूर्ण २०–००

११६ तैत्तिरीयआरण्यक–सायणाचार्य भाष्य सहित कलकत्ता दुष्प्राप्य। सोसाइटी

११७ तैत्तिरीयारण्यक–सायण भाष्य सम्पूर्ण पूना १३–७५

११८ तैत्तिरीयप्रातिशाख्य–त्रिभाष्यरत्न व्याख्या दुष्प्राप्य

११९ तैत्तिरीयप्रातिशाख्य—माहिषेय कृत–पदक्रमसदन भाष्य सहित मदरास २–२५

१२० तैत्तिरीयब्राह्मण—सायणभाष्य–सम्पूर्ण पूना २१–७५

१२१ तैत्तिरीय ब्राह्मण—भट भास्कर तथा सायण भाष्य द्वितीयाष्टक ३–५०

१२२ तैत्तिरीय संहिता–(कृष्ण यजुर्वेदीय) मूल १०–००

१२३ तैत्तिरीय संहिता (कृष्ण यजुर्वेदीय) सायण भाष्य सहित २ व ४ से ८ भाग तक ३३–००

१२४ तैत्तिरीय संहिता–पदानुक्रमणी प्रथम खंड २–००

१२५ दण्डक–शुक्ल यजुर्वेदीय बम्बई ०–७५

१२६ दशरात्रपर्व–(ऊहगानम्) दो भाग १–५०

१२७ देवे संज्ञक मंत्र—आपस्तम्बशाखोक्त ०–१२

१२८ देवे ,, ऋग्वेदोक्त ०–१२

१२९ देवतावाद का भौतिक तथा वैज्ञानिक रहस्य—भाग १ श्री हंसराजलिखित १–००

१३० दैवतसंहिता—प्रथम भाग–अग्निइंद्र-सोम–मरुदेवता मंत्र संग्रह १२–००

१३१ ,, ,, द्वितीय भाग—अश्विनौ –आयुर्वेद प्रकरण–रुद्र-उषा–आदिति विश्वदेव १२–००

१३२ दैवत संहिता–भाग तीसरा मूल पं० सातवलेकर ६–००

१३३ दैवत–षड्विंश ब्राह्मण–सायण भाष्य सहित २–६२

१३४ द्राह्यायण गृह्यसूत्र वृत्ति–रुद्रस्कन्द प्रणीत पूना १–५०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१३५ [illegible] तथा भा०टी० २–५०
१३६ निरुक्त—(निघण्टुसमन्वित) मूलमात्र श्री लक्ष्मण स्वरूपकृत उपोद्घात, विषमस्थल विवरण, समालोचना, टिप्पणी सहित १२–००
१३७ निरुक्त (यास्क) राजवाड़े संपादित मूल नोट्स १०–००
१३८ निरुक्त—अर्थात् निघण्टु (वैदिक कोष) दुर्गाचार्य कृत व्याख्या बम्बई १४–००
१३९ निरुक्त—दुर्गाचार्य वृत्ति समेत दो भाग म पूना २४–२५
१४० निरुक्त—देवराज यज्व कृत निर्वचन तथा दुर्गाचार्य विरचित ऋज्वर्थाख्य टीका सहित—जीवानन्द सम्पादित कलकत्ता २०–००
१४१ निरुक्त अमरेश्वर ठाकुर कृत बंगाली प्रथम ८–००
१४२ निरुक्त—पुष्करणा व्याख्या १ से ४, ७ कांड ५–००
१४३ निरुक्तलघुविवृत्ति—मुकुन्द झा कृत दुष्प्राप्य ५–००
१४४ नीतिमञ्जरी—सभाष्या श्रीद्याद्विवेद विरचित ४–५०
१४५ पवमान पञ्चसूक्तम्—(ऋग्वेदी) १०–८७
१४६ पवमान-पञ्च सूक्त—पं० सातवलेकर ०–५०
१४७ पार्दविधानम्—शौनक कृत १–२५
१४८ पारस्कर गृह्यसूत्र—मूलमात्र ०–६२
१४९ पारस्कर गृह्यसूत्र—हरिहर भाष्य सहित ३–५०
१५० पारस्कर गृह्यसूत्र—पाचभाष्य सहित १०–००
१५१ पारस्कर गृह्यसूत्र—(कर्क—जयराम—हरिहर गदाधर—विश्वनाथ कृत भाष्य पंचक सहित—(कामदेव भाष्य सहित) बम्बई १२–००
१५२ पाशुपत सूत्र—पंचार्थ भाष्य सहित २–२५
१५३ प्रायश्चित—वेद—संग्रह—सामान्य अवतरणिका, प्राचीन भाष्य, विविध टिप्पणी आदि युक्त २–००
१५४ पितृ संहिता—(मूल) ०–२५
१५५ पितृ संहिता—रामगीता सहित ०–७५
१५६ पुरुष सूक्त—(मूल) ०–०६
१५७ पुरुष सूक्त—सायण भाष्य पूना ०–५०
१५८ पुरुषसूक्त—सायण, महीधर, मङ्गल, निम्बार्क १–२५
१५९ पुरुष सूक्त—हिन्दी टीका ०–१२
१६० पुष्पसूत्र—सामप्रातिशाख्य सभाष्य ४–५०
१६१ भारतीय इतिहास और वेद—ले० शिवपूजन ०–१९
१६२ भारद्वाज शिक्षा—नागेश्वर कृत व्याख्या १–५०
१६३ मंत्र संहिता—(शुक्ल यजुर्वेदीय) ५२३ मंत्र ३–००
१६४ मन्त्रार्थ दीपिका—शत्रुघ्न मिश्र प्रणीत ५–००
१६५ मरुद्देवता—मन्त्रसमन्वय-चरणसूची सातवलेकर २–००
१६६ मरुत देवता मंत्र संग्रह—हिन्दी अनुवाद ५–००
१६७ मानवी आयुष्य—पं० सातवलेकर ०–५०
१६८ मैत्रायणी—आरण्यक (यजुर्वेदीय) सातवलेकर ०–७५
१६९ मैत्रायणी संहिता—(कृष्ण यजुर्वेदीय) मूल १०–००
१७० यजुर्वेद-शुक्ल—पत्रात्मकस्थूलाक्षर—पारायणविधि ५–००
१७१ यजुर्वेद—शुक्ल—पत्रात्मक—स्थूलाक्षर मन्त्रानुक्रमणी, याज्ञवल्क्य शिक्षा, प्रतिज्ञासूत्र तथा सर्वानुक्रम सहित पं० रामतेज द्वारा सम्पादित—काशी ४–००
१७२ यजुर्वेद का सुबोधहिन्दीभाष्य अ.४० आत्मज्ञान २–००
१७३ यजुर्वेदसंहिताशुक्लपत्रात्मकस्थूलाक्षर—दौलतराम ५–००
१७४ यजुर्वेदसंहिता—शुक्ल—पत्रात्मक, स्थूलाक्षर—१०–००
१७५ यजुर्वेद मूल गुटका—अजमेर २–००
१७६ यजुर्वेद—(मूल) बुक साइज—अजमेर बड़ा १–५०
१७७ यजुर्वेद संहिता—मूल पं० सातवलेकर बड़ा ४–००
१७८ यजुर्वेद—मूल बारीक टाईप पं० सातवलेकर २–००
१७९ यजुर्वेद—शुक्ल—उव्वट—महीधरभाष्ययुक्त बम्बई १४–००
१८० यजुर्वेद—हिन्दी अनुवाद सहित दो भाग ५–००
१८१ यजुर्वेद का सुबोध भाष्य—हिन्दी अध्याय ३० पुरुष-मेध—प्रकरण यजुर्वेद का अर्थात् मनुष्यों की सच्ची उन्नति का सच्चा साधन पं० सातवलेकर कृत २–००
१८२ यजुर्वेद का सुबोध भाष्य-अध्याय ३२ सर्व-मेध यज्ञ (पूर्वार्द्ध) अर्थात् एक ईश्वर की उपासना—पं० सातवलेकर कृत १–५०
१८३ यजुर्वेद का सुबोधभाष्य (प्रथम अध्याय) अर्थात् श्रेष्ठतम कर्म का आदेश—पं० सातवलेकर १–५०
१८४ यजुर्वेद का सुबोध भाष्य हिन्दी—अध्याय ३६—पं० सातवलेकरकृत सच्ची शांति का उपाय १–५०
१८५ यजुर्वेद—जयदेव कृत—हिन्दी अनुवाद १६–००
१८६ यजुर्वेद—(१–४)—हिन्दी टीका ०–५०
१८७ यजुर्वेद मंत्र पाद—वर्णानुक्रम सूची १–५०
१८८ यजुर्वेदीय—माध्यन्दिनीय मंत्र संहिता १–००
१८९ यजुर्वेद—संहिता—सर्वानुक्रम सूत्र १–५०
१९० यजुर्वेद—शुक्ल—सर्वानुक्रम सूत्र भाष्य ४–५०
१९१ यज्ञतत्त्वप्रकाश—म.म, चिन्नस्वामी ३–००
१९२ याज्ञवल्क्य शिक्षा—हिन्दी टीका सहित ०–६२
१९३ रुद्रभाष्य—अभिनव शंकराचार्य १–६२
१९४ रुद्रहोम स्वाहाकार ०–२५
१९५ रुद्राध्याय (नमक-चमक) ०–५०
१९६ रुद्राध्याय—सायण तथा भटभास्करभाष्य पूना २–००
१९७ रुद्राष्टाध्यायी—पार्थिव पूजन एवं पूजन प्रयोग १–००
१९८ रुद्राष्टाध्यायी—मूल बारीक खुला काशी ०–३७
१९९ रुद्राष्टाध्यायी शुक्ल यजुर्वेदीय—स्थूलाक्षर बंबई ०–७५
२०० रुद्राष्टाध्यायी—शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राभिषेक प्रयोग ०–७५
२०१ यजुर्वेदीयषडङ्गरुद्री—खुला पत्रा बम्बई ०–५०
२०२ रुद्राष्टाध्यायी—सभाष्य भाषा टीका बम्बई २–५०
२०३ लाट्यायन श्रौतसूत्र—अग्निष्टोमान्त काशी ३–००
२०४ लौगाक्षिगृह्यसूत्र—देवपालकृत भाष्य सम्पूर्ण दो भाग में ५–५० जिल्द ७–००
२०५ बाराह गृह्यसूत्र—भाषा टीका सहित १–२५
२०६ विश्वेदेवा मंत्रसंग्रह—अनेक सूची सहित ५–००
२०७ वेद का स्वयं शिक्षक—दो भाग में सातवलेकर ३–००
२०८ वेद धरातल—गिरीशचन्द्र अवस्थी कृत १०–००
२०९ वेद परिचय—३ भाग में पं० सातवलेकर ५–००
२१० वेद—विद्या—निदर्शन—आधिभौतिक और आधिदैविक पक्ष—ले० पं० भगवद्दत्त १२–५०
२११ वेदप्रकाश—श्री सत्यज्ञानानन्द तीर्थ कृत १–५०
२१२ वेदभाष्यसार—(भट्टोजीदीक्षित प्रणीत) १–००
२१३ वेदभाष्यानुशीलन—स्वा०दयानन्दजी—कुशवाहा १–००
२१४ वेद में कृषि विद्या—पं० सातवलेकर ०–५०
२१५ वेद में चर्खा—पं० सातवलेकर ०–६२
२१६ वेद रहस्य—श्री अरविन्द हिन्दी अनुवाद तीन भाग सादा १५ रु० ३ जिल्दों में १८–००
२१७ वेद वाणी—पाश्चात्य—मत परीक्षांक—पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु सम्पादित १–००
२१८ वेदवाणी—(वेदांक) पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु— १–००
२१९ वेदवादद्वात्रिंशिका—सिद्धसेन दिवाकर
२२० वेद विज्ञान मीमांसा—वेणीराम शर्मा गौड़ ०–५०
२२१ वेदसार हिन्दी अर्थ सहित १–५०
२२२ वेदांग प्रकाश—स्वा०दयानन्द १४भाग अजमेर १५–००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

२२३ वेदांग प्रकाश—(अव्ययार्थ) ०—२५
२२४ वेदांग प्रकाश—(आख्यातिक) ५—००
२२५ वेदांग प्रकाश—(उणादि कोष) १—५०
२२६ वेदांग प्रकाश—(कारकीय) ०—४५ तथा ०—६२
२२७ वेदांग प्रकाश—(गणपाठ) ०—६२
२२८ वेदांग प्रकाश—(धातुपाठ) ०—७५ तथा ०—६२
२२९ वेदांग प्रकाश—(सामासिक) ०—९० तथा ०—६२
२३० वेदांग प्रकाश—(नामिक) ०—९५
२३१ वेदांग प्रकाश—(निघण्टु वैदिक कोष) ०—६५
२३२ वेदांग प्रकाश—(पारिभाषिक) ०—६५
२३३ वेदांग प्रकाश—(वर्णोच्चारण शिक्षा) ०—१५
२३४ वेदांग प्रकाश—(सन्धि विषय) ०—७५
२३५ वेदांग प्रकाश—(सौवरः) ०—२५
२३६ वेदांग प्रकाश—(स्त्रैणतद्धित) १—७५
२३७ वेदलावण्यम् डा० सुधीरकुमारकृत हिन्दी अनु. ८—२५
२३८ वेदों का वास्तविक स्वरूप अथवा वेदों के महान् आदर्श डा० मंगलदेव शास्त्री ०—३७
२३९ वैखानसागम—मरीचि प्रोक्त २—५०
२४० वैखानस स्मार्तसूत्र—(कृष्ण यजुर्वेदीय) १—५०
२४१ वैखानस श्रौतसूत्र—(कृष्ण यजुर्वेदीय) ७—५०
२४२ वैदिक अग्निविद्या—पं० सातवलेकर २—००
२४३ वैदिक कहानियाँ—प्रो० बलदेव उपाध्याय काशी २—००
२४४ वैदिक कोष—हंसराज प्रणीत १५—००
२४५ वैदिक पदानुक्रम-कोष—संहिता, ब्राह्मण, उपनिषद आदि सूत्रवर्गीय ४२५ ग्रंथों के प्रत्येक रूप के श्रुति-स्थल निदर्शन तथा स्वर, व्युत्पत्ति, व्याकरण तथा विषय आलोचना सम्बन्धि विषद टिप्पणी सहित पं० विश्वबन्धु शास्त्री कृत ९ भाग का (और भाग छप रहे हैं) १८०—००
२४६ वैदिक चिकित्सा—पं० सातवलेकर १—५०
२४७ वैदिकज्योति—आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री ७—००
२४८ वैदिक दर्शन—डा० फतहसिंह (हिन्दी) ५—५०
२४९ वैदिक सम्पत्ति—पं० रघुनन्दन शर्मा
२५० वैदिक सर्प विद्या—(हिन्दी) पं० सातवलेकर ०—६२
२५१ वैदिक साहित्य—पं० रामगोविन्द त्रिवेदी हिन्दी ६—००
२५२ वैदिक साहित्य और संस्कृति—प्रो० बल्देव ७—००
२५३ वैदिक साहित्य की रूपरेखा—पाण्डे, जोशी ३—७५
२५४ वैदिक साहित्य परिशीलन—प्रयाग ३—००
२५५ वैदिक सिलेक्शन—मूल पदपाठ और भाष्य ४—५०
२५६ वैदिकसूक्त-संग्रह (उषः सूक्त, पृथिवी सूक्त, शान्त्यध्याय) सटीक ०—७५
२५७ वैदिक स्वराज्य की महिमा—पं० सातवलेकर ०—७५
२५८ शतपथब्राह्मण—माध्यन्दिन स्थूलाक्षर सम्पूर्ण अनुक्रमणिका सहित ३ भाग में काशी ११—००
२५९ शतपथब्राह्मण—(माध्यंदिन) सायण भाष्य तथा टिप्पणी सहित—सम्पूर्ण पांचों खंड बम्बई १५०—००
२६० शतपथब्राह्मण—सायण भाष्य सहित अपूर्ण जितना छपा है उतना ही दुष्प्राप्य ए. सोसाइटी का छपा
२६१ शतपथब्राह्मण—सायणभाष्य प्रथमकांड बम्बई ८—५०
२६२ शतपथब्राह्मण—हिन्दी विज्ञानभाष्य केवल ४—५ श्री मोतीलालजी कृत १९—००
२६३ वैदिक स्वर मीमांसा—युधिष्ठिरमीमांसक ३—००
२६४ वैदिक वांङमय का इतिहास प्रथमभाग—(वेदों की शाखायें) पं० भगवद्दत्त कृत १०—००
२६५ शतरुद्री पद्धति—मैथिली ०—८७
२६६ शांखायनारण्यक—श्रीधर शास्त्रीकृत प्रस्तावना १—००
२६७ शांखायन ब्राह्मण—(ऋग्वेदान्तर्गत) पूना २—००
२६८ शिक्षादि वेदांगचतुष्टय—पत्रात्मक ०—५०
२६९ शिक्षादि वेदांगषडङ्गानि—बम्बई ३—००
२७० शिक्षासूत्राणि—आपिशली, पाणिनी चन्द्रगोमि ०—२५
२७१ शुक्लयजुर्वेदकाण्वसंहिता—सायणाचार्य भाष्य सहित (१—२० अध्याय) ८—००
२७२ शुल्वसूत्र—(कात्यायन) सरल संस्कृत वृत्ति सहित ०—३७
२७३ शौनकीयम्—मूल ०—६२
२७४ श्रीसूक्त—मूल ०—१२
२७५ श्रीसूक्त—विद्याधर, पृथ्वीधर, कंठ भाष्यत्रय ०—७५
२७६ श्रीसूक्तप्रसादिनी—संस्कृत टीका तथा हिन्दी १—५०
२७७ श्री सूक्तम्—(लक्ष्मी सूक्त सहित) पांच प्रकार के अनुष्ठान तथा अन्वय हिन्दी भाषा—वेणीराम ०—३७
२७८ श्रुतिसारसमुद्धरणम्—तोटकाचार्यविरचित सटीक १—१२
२७९ श्रुतिसार समुद्धरण—सच्चिदानन्द योगीन्द्र कृत तत्व-दीपिका व्याख्या सहित पूना १—२५
२८० श्रुति सिद्धान्त सार संग्रह हिन्दी ५—००
२८१ श्रौतकोष—दो भाग—संस्कृत तथा अंग्रेजी अनु. ७५—००
२८२ श्रौतपाठ—प्रथम भाग—संहिता भाग ६—००
२८३ श्रौत पदार्थ निर्वचनम्—(यज्ञ शब्दकोष) ६—५०
२८४ श्रौतसूत्र—(कात्यायन) देवयाज्ञिक पद्धति १२—००
२८५ षट्सूक्तानि—(पुरुष, विष्णु, नारायण, श्रीलक्ष्मी तथा देवी सूक्त) मूल ०—२५
२८६ षडङ्गरुद्री—पूर्वोत्तराङ्गपूजाविधि युक्त काशी १—५०
२८७ सत्याषाढ़ श्रौतसूत्र—वैजयन्ती व्याख्या सहित १० भाग में सम्पूर्ण पूना ४२—५०
२८८ सामवेद संहिता—मूल गुटका १—५०
२८९ सामवेद-संहिता—मूल पं० सातवलेकर बारीक २—००
२९० सामवेद संहिता—मूल अजमेर सादा १—०० जि० २—००
२९१ सामवेद संहिता—सायणभाष्य सहित प्रथम भाग के पृष्ठ १—९६, १५३ से १९२ तक नहीं हैं, बाकी सम्पूर्ण दुष्प्राप्य सोसाइटी का छपा
२९२ सामवेद संहिता—सायण भाष्य तथा पं० रामस्वरूप शर्मा कृत हिन्दी अनुवाद सहित दुष्प्राप्य
२९३ सामवेद—हिन्दी अनुवाद सहित—आचार्य वीरेन्द्र ६—००
२९४ सामवेदसंहिता—जयदेव कृत हिन्दी अनुवाद ८—००
२९५ सामवेद-साम संस्कारभाष्य—भगवदाचार्यकृत संस्कृत तथा हिन्दी अनुवाद दो भाग १६—००
२९६ सामवेद—पं० सातवलेकर बड़ा अक्षर मूल ३—००
२९७ सामवेद—कौथुमशाखीय ग्रामगेय (वेय प्रकृति) गानात्मक-प्रथम तथा आरण्यक गानात्मक द्वितीय भाग पं० सातवलेकर ६—००
२९८ सामवेदीय आन्हिक सपाकर्म पद्धति—काशी १—२५
२९९ सामवेदीय रुद्रजपविधि—पंचचक्रपूजन, लवरुद्र १—५०
३०० सामवेद समालोचना—(वेद वाणी पत्रिका के अन्तर्गत) ३ अंकों में ब्रह्मदत्त जिज्ञासु सम्पादित १—१२
३०१ सामवेदीय सुबोधिनी पद्धति—शिवरामविरचित ४—५०
३०२ सांख्यायनगृह्य संग्रह—कौषीतकी गृह्यसूत्र काशी १—५०
३०३ सोमदेवता—मंत्र संग्रह मूल—पं० सातवलेकर ३—००
३०४ सौर सूक्त—मूल ०—१२
३०५ हिरण्यकेशीय मंत्र संहिता १—२५
३०६ त्रिसूक्तम्—पुरुषसूक्त, श्रीसूक्त, लक्ष्मीसूक्त ०—३७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उपनिषद्

३०७ अप्रकाशित उपनिषद्–ब्रह्मयोगीकृत सं० व्याख्या (७१ उपनिषद्) २०–००

३०८ अष्टात्रिंशदुपनिषद्—मूल गुटका बम्बई २–५०

३०९ आथर्वण उपनिषद्–(शिर, गर्भो, नादबिन्दु, ब्रह्मबिन्दु, अमृतबिन्दु, ध्यानबिन्दु, तेजोबिन्दु, योगशिखो, योग तत्त्व सन्यस, आरुणेयोपनिषद्दीपिका व्याख्या सहित अन्तिम पृष्ठ नहीं है दुष्प्राप्य

३१० आथर्वण उपनिषद–सवृत्ति ३–७५

३११ ईशोपनिषद्–शांकरभाष्य–आनंदगिरि टीका १–५०

३१२ ईशावास्योपनिषद्–भाष्य तदव्याख्यानं आचार्य भाष्य तात्पर्य निगमान्तदेशिकवीरराघवचार्य १–५०

३१३ ईशावस्योपनिषद्–मनस्विनी व्याख्या सहित १–५०

३१४ ईशावास्योपनिषद्–प्रकाशिका तथा बालबोधिनी २–५०

३१५ ईशोपनिषद्–(मध्व) रघुनाथतीर्थीय खुला पत्रा ४–००

३१६ ईशोपनिषद्–हिन्दी विज्ञानभाष्य श्रीमोतीलाल २०–००

३१७ ईशावस्योपनिषद्–शंकर भाष्य, हिन्दी अनुवाद ०–१९

३१८ ईशावास्योपनिषद–हिन्दी व्याख्या गोरखपुर ०–६

३१९ ईशावस्योपनिषद–प० ज्वालाप्रसादकृत हिन्दी ०–२५

३२० ईशोपनिषद्–पं० सातवलेकर हिन्दी अनुवाद २–००

३२१ ईशावास्योपनिषत्–मन्त्र, अन्वय, मन्त्रार्थ, शंकर भाष्य भाष्यानुवाद तथा उपनिषद् सुबोधिनी हि.टी. ०–७५

३२२ ईशावास्यवृत्ति–विनोबा भावे ०–७५

३२३ ईशादि ८ उपनिषद–स्वा० विद्यानंदकृत हिन्दी ५–००

३२४ ईशादि दशोपनिषद–उपनिषद ब्रह्मयोगी कृत सं० व्याख्या सहित दो भाग में मदरास ३०–००

३२५ ईशादि दशोपनिषद्–रंगरामानुज भाष्य सहित श्री वीरराघवाचार्य संपादित ३५–७५

३२६ ईशादि नौ उपनिषद–अन्वय, हिन्दी व्याख्या २–००

३२७ ईशादि पञ्चोपनिषद–(ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक) शंकर आनंदगिरि ६–००

३२८ सानन्दगिरीकृत टीका शांकर भाष्य सम्वलितेशाकेन-कठप्रश्नमुण्डकमाण्डुक्योपनिषदः–सोसाइटी दुष्प्राप्य

३२९ ईशादिविंशोत्तरशतोपनिषद–(मूल) पाठान्तर, टिप्पणी आदि सहित बम्बई १०–००

३३० ईश, केन, कठ–रंग रामानुज भाष्य–राघवाचार्य ६–००

३३१ ईशकेनकठोपनिषद—दिगम्बरानुचर विरिचितार्थ प्रकाश व्याख्या समेत पूना १–५०

३३२ ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य आनन्दवल्ली, भृगु उपनिषद–रंगरामानुज भाष्य सहित–पूना ३–७५

३३३ उपनिषदों के चौदह रत्न–हिन्दी सचित्र गोरखपुर ०–३७

३३४ उपनिषद-भाष्य प्रथमखण्ड–(ईशादि पांच उपनिषद) शांकर भाष्य तथा उसका हिन्दी अनुवाद २–६२

३३५ उपनिषद भाष्य खंड २–(मांडूक्य, एतरेय, तैत्तिरीय) शांकरभाष्य तथा उसका हिन्दी अनुवाद २–६९

३३६ उपनिषद्वाक्य महाकोश–२२३ उपनिषदां वाक्यैः १६–००

३३७ उपनिषद् समुच्चय–शंकरानन्द दीपिका १०–००

क३३७ उपनिषद–अष्टादश–अनेकों टिप्पणी सहित २०–००

३३८ एकादशोपनिषत्–मूल सहित धारावाही हिन्दी में व्याख्या–प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार १२–००

३३९ एतरेयोपनिषत्–शांकरभाष्य आनन्दगिरिटीका २–००

३४० एतरेयोपनिषद्–(मध्व) ताम्रपर्णीय खुला पन्ना १०–०

३४१ एतरेयोपनिषद्–शांकरभाष्य तथा उसका हिन्दी ०–३७

३४२ एतरेयोपनिषद् (भाषाभाष्य विवरण) सातवलेकर ०–७५

३४३ कठोपनिषद–शांकर भाष्य, आनन्दगिरि तथा गोपाल यतीन्द्रकृत टीका द्वय सहित पूना २–००

३४४ कठोपनिषद्–शांकरभाष्य तथा आनंदगिरिटीका १–५०

३४५ कठोपनिषद्–शांकर भाष्य तथा उसका हिन्दी ०–५६

३४६ कठोपनिषद्–मूल, अन्वय, मंत्रार्थ शांकर भाष्य, भाष्यानुवाद सुबोधिनी हिन्दी टीका काशी ३–००

३४७ कठोपनिषद्–पं० सातवलेकरकृत हिन्दी अनुवाद १–५०

३४८ कठोपनिषद् (चित्रमय) श्लोक हिन्दी, अंग्रेजी १५–००

३४९ काठकोपनिषद्–शांकर–रामानुजभाष्य–श्रीधर शास्त्रि प्रणीत व्याख्या ५–००

३५० कलिसंतारणोपनिषत्–(हिन्दी) बम्बई ०–१९

३५१ केनोपनिषद्–शांकरभाष्य तथा आनन्दगिरिटीका १–५०

३५२ केनोपनिषद्–शंकरभाष्य, रंगरामानुजकृत प्रकाशिका तथा श्रीधरशास्त्रीकृत बालबोधिनी सहित २–५०

३५३ केनोपनिषद्–मंत्र, अन्वय, मंत्रार्थ, शांकरभाष्य, भाष्यानुवाद हिन्दी टीका सहित काशी ०–७५

३५४ केनोपनिषद–शांकर भाष्य तथा उसका हिन्दी ०–५०

३५५ केनउपनिषद्–पं० सातवलेकरकृत हिन्दी अनु. १–७५

३५६ कैवल्योपनिषद्—मूल बम्बई ०–०९

३५७ चतुर्विंशत्युपनिषत्सार संग्रह–भाषा ५–००

३५८ छान्दोग्योपनिषद्–शांकरभाष्य तथा आनन्दगिरि व्याख्या सहित पूना ७–५०

३५९ छान्दोग्योपनिषद्–शांकर भाष्य आनंदगिरि ८–००

३६० छान्दोग्योपनिषद्–शांकरभाष्य तथा आनंदगिरि टीका दुष्प्राप्य सोसाइटी

३६१ छान्दोग्योपनिषद्–शांकरभाष्य तथा उसका हिन्दी अनुवाद गोरखपुर ३–७५

३६२ छान्दोग्योपनिषद्–रंगरामानुज भाष्य पूना ५–६२

३६३ छान्दोग्य–रंगरामानुज भाष्य वीरराघवाचार्य ९–७५

३६४ छान्दोग्योपनिषद्–नित्यानंद कृत मिताक्षरा ३–३७

३६५ छान्दोग्योपनिषद्–भाषाटीका सहित विद्यानंद १०–००

३६६ जैमिनीयोपनिषद्–ब्राह्मण सामवेदीय ५–००

३६७ तलवकारोपनिषद्–मध्व खुला पन्ना ४–००

३६८ तैत्तिरीयोपनिषद्–शंकरभाष्य आनन्दगिरि पूना २–७५

३६९ तैत्तिरीयोपनिषद्–शंकर भाष्य तथा आनंदगिरि, दीपिका, तैत्तिरीय विद्या प्रकाश टिप्पणी १–२५

३७० तैत्तिरीयोपनिषद्–अद्वैतानन्द तात्पर्य दीपिका १–००

३७१ तैत्तिरीयोपनिषद्–पं० सातवलेकर कृत हिन्दी १–५०

३७२ तैत्तिरीयोपनिषद–शांकरभाष्य तथा उसका हिन्दी अनुवाद गोरखपुर ०–८१

३७३ तैत्तिरीय ऐतरेयोपनिषद–रंग रामानुज भाष्य ७–५०

३७४ तैत्तिरीय तथा ऐतरेयोपनिषद–शंकर भाष्य तथा आनंदगिरि कृत टीका सहित दुष्प्राप्य सोसाइटी

३७५ तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्यम्–अच्युत कृष्णानन्द तीर्थ विरचितया वनमाला व्याख्यया समेतम् ५–६२

३७६ तैत्तिरीयोपनिषद्–(मध्व) श्रीनिवासतीर्थीय ८–००

३७७ तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्य वार्तिक—सुरेश्वर कृत भाष्य तथा आनन्द गिरि टीका पूना ३–२५

३७८ दशोपनिषद–(मूलमात्र) स्थूलाक्षर पूना ३–००

३७९ दशोपनिषद–शांकरभाष्य सहित काशी १५–००

३८० दशोपनिषद–भास्करानन्दकृतसुबोध सं० टीका ३–००

३८१ दशोपनिषद–शांकर भाष्य २ भाग में १०–००

३८२ दशोपनिषद् भाषा—अच्युतानन्द कृत बम्बई ५–००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

३८३ धर्मकोश—उपनिषत्काण्ड ४ भाग में लक्ष्मणशास्त्री जोशी द्वारा सम्पादित ११०—००
३८४ नारायणोपनिषद्—हिन्दी टीका सहित बम्बई २—००
३८५ नृसिंहपूर्वोत्तरतापनीयोपनिषद—शांकरभाष्य तथा विद्यारण्य प्रणीत दीपिका सहित पूना २—५०
३८६ पञ्चविंशदुपनिषद—गुटका बम्बई २—००
३८७ प्रश्नोपनिषद—शंकर आनंदगिरि पूना १—५०
३८८ प्रश्नोपनिषद—पं० सातवलेकर हिन्दी अनुवाद १—५०
३८९ प्रश्नोपनिषद—शांकर भाष्य तथा उसका हिन्दी अनुवाद गोरखपुर ०—४४
३९० प्रश्नोपनिषद—मध्व खुला पन्ना २—५०
३९१ प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, अथर्वशिखोपनिषद—रंगरामानुज भाष्य तथा वीरराघवाचार्य टीका ५—००
३९२ बृहदारण्यकोपनिषद्—शंकरभाष्य—तथा हिन्दी ५—५०
३९३ बृहदारण्यकोपनिषद्—विद्यानन्द कृत हिन्दी १०—००
३९४ बृहदारण्यकोपनिषद् मिताक्षरा—नित्यानंद ४—००
३९५ बृहदारण्यकोपनिषद्—रंगरामानुजभाष्य सहित ८—००
३९६ बृहदारण्यकोपनिषद्—शंकर आनंदगिरि पूना १३—००
३९७ बृहदारण्यकोपनिषद्—शंकर भाष्य, आनन्दगिरि टीकायुक्त (काशी) १६—००
३९८ बृहदारण्यकोपनिषद—शंकर आनंदगिरि जीवानन्द८—७५
३९९ बृहदारण्यकोपनिषद—नित्यानन्द—मिताक्षराकृत४—७५
४०० बृहदारण्यकोपनिषद्—रंग रामानुज प्रकाशिका ५—५०
४०१ बृहदारण्यकवार्तिकसार—दो भाग में श्री विद्यारण्य मुनि विरचित—अच्युतमुनि तथा म० म० हरिहर कृपालु कृत हिन्दी अनुवाद सहित काशी १२—००
४०२ भवसन्तारणोपनिषद्—भा० टीका १—५०
४०३ महानारायणोपनिषद—(अथर्ववेदीय) नारायण कृत दीपिका सहित—कर्नल जैकब द्वारा सम्पादित ०—६९
४०४ माण्डूक्य—हिन्दी अनुवाद पं० सातवलेकर ०—५०
४०५ माण्डूक्योपनिषद—गौड़पादीय कारिका, शांकर भाष्य, आनंदगिरि टीका सहित—पूना ३—५०
४०६ माण्डूक्योपनिषद्—गौड़पाद शांकर भाष्य—आनन्द गिरि टीका—काशी ४—००
४०७ माण्डूक्योपनिषद—शांकरभाष्य तथा उसका हिन्दी अनुवाद गोरखपुर १—००
४०८ गौड़पादीय आगमशास्त्रम्—भट्टाचार्येण विधुशेखरेण रचितया वृत्यासमेतम् कलकत्ता ८—५०
४०९ मुक्तिकोपनिषद—भा० टी० बम्बई ०—५०
४१० मुण्डकोपनिषद्—शंकरभाष्य आनन्दगिरि टीका १—००
४११ मुण्डकोपनिषद्—शंकर भाष्य तथा श्रीधर शास्त्री कृत बालबोधिनी टीका सहित पूना २—५०
४१२ मुण्डकोपनिषद—शांकरभाष्य तथा उसका हिन्दी अनुवाद गोरखपुर ०—४४
४१३ मुण्डकोपनिषद—हिन्दी अनु० सातवलेकर १—५०
४१४ याज्ञिक्युपनिषद्विवरण—पुरुषोत्तमानन्द तीर्थ कृत४—००
४१५ योगोपनिषद—(२० उपनिषद) ब्रह्मयोगि कृत संस्कृत व्याख्या मदरास २०—००
४१६ रामतापिनीयोपनिषद्—आनन्दवन कृत व्याख्या सहित अनन्तराम शास्त्री सम्पादित प्रयाग १—८७
४१७ रामतापनी उपनिषद—सुबोधिनी हिन्दी टीका १—७५
४१८ वैष्णवोपनिषद ब्रह्मयोगिकृत सं० व्याख्या २०—००
४१९ शाक्तोपनिषद—ब्रह्मयोगिकृत सं० व्याख्या ८—००
४२० श्वेताश्वतरोपनिषद—शांकर भाष्य दीपिका ३—५०
४२१ श्वेताश्वतरोपनिषद—शांकर भाष्य तथा उसका हिन्दी अनुवाद गोरखपुर ०—८७
४२२ श्वेताश्वतरोपनिषद—रामस्वरूप शर्मा कृत अन्वय, पदार्थ और भावार्थ १—७०
४२३ शैवोपनिषद—ब्रह्मयोगिकृत सं० व्याख्या १२—००
४२४ श्रुतिसिद्धान्तसार संग्रह—(अष्टोत्तरशतोपनिषत्सार) बम्बई ५—००
४२५ सन्यास उपनिषद—ब्रह्मयोगि सं० व्याख्या १५—००
४२६ सामान्यवेदान्तोपनिषद्—ब्रह्मयोगिकृत संस्कृत २०—००

कर्मकाराड

४२७ अर्कीविवाह—भाषा टीका ०—१९
४२८ अग्निष्टोम पद्धति—आध्वर्य पद्धति, औद्गात्र पद्धति, हौत्र पद्धति ४—५०
४२९ अन्त्यकर्मदीपक—नित्यानन्द २—५०
४३० अन्त्येष्टिश्राद्धकर्मपद्धति—चतुर्थीलाल २—००
४३१ अनुष्ठानप्रकाश—चतुर्थीलाल १२—००
४३२ अष्टशान्ति—बम्बई ०—२०
४३३ आचार रत्न—लक्ष्मणभट्ट कृत २—००
४३४ आचारार्क (ऋग्वेदीय)—खुला पन्ना १—५०
४३५ आचारादर्श—यजुर्वेदियों के आन्हिक १—२५
४३६ आधान पद्धति—वामन शास्त्री ३—००
४३७ आन्हिककर्म सूत्रावली—बम्बई ४—००
४३८ आन्हिक पद्धति—पं० नव्य चण्डीदास १—००
४३९ आन्हिक सूत्रावली—(शुक्ल यजुर्वेदीय) वैद्यनारायण बम्बई ६—००
४४० आन्हिकसूत्रावलि—दौलतराम गौड़ काशी ६—००
४४१ आर्याभिविनय—अजमेर ०—३७
४४२ आश्लेषा—ज्येष्ठा शान्ति ०—५० तथा ०—२०
४४३ उत्सजर्नोपकरण विधि ०—५०
४४४ उपनयन पद्धति—(वायुनन्दन) भाषा टीका ०—६९
४४५ उपनयन पद्धति—(माध्यन्दिन) श्रीविद्याधर १—५०
४४६ उपनयन पद्धति—भाषा टीका १—००
४४७ उपनयन मार्तण्ड—भा०टी०—पं०विंध्याचल दत्त०—७५
४४८ उपाकर्म पद्धति सटिप्पण १—२५
४४९ उमामहेश्वर गुटका—नेपालियों के लिए २—००
४५० ऋग्वेदीय ब्रह्मकर्म समुच्चय—पत्राकार—मूल— ५—००
४५१ ऋग्वेदोक्तनित्य विधि—खुला पत्रा १—५०
४५२ एकोदृष्ट श्राद्ध प्रयोग—(सांवत्सरिक) ०—२२,०—५०
४५३ एकोदृष्ट श्राद्ध प्रयोग—भाषा टीका ०—२५, ०—३७
४५४ एकादशीव्रतोद्यपनप्रकाश २—२५
४५५ कर्मठगुरु—राज ज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभ कृत। नित्य कर्म के लिए सबसे बढ़िया ग्रन्थ। पंडितजी के द्वारा अनुभूत अनेकों सिद्धिप्रद अनुष्ठान भी लिखे गये हैं—जैसे—सिद्धिपुत्रेष्ठि विधि। कर्मकाण्ड विषय का ऐसा ग्रन्थ आज तक नहीं छपा ५—०
४५६ कर्मकाण्डक्रमावली—सोमशम्भु विरचित १—५०
४५७ कर्मकलाप—स्वा० सहजानन्द १६—००
४५८ कर्मकाण्ड प्रकाशिका—मूल—वैष्णवदास ०—६२
४५९ कर्म मीमांसा दर्शन—भाषानुवाद सहित ८—५०
४६० कल्पपूजा १—१२
४६१ कलशप्रतिष्ठा—पूजा वि[illegible] ०—२५
४६२ कातीय तर्पण पद्धति ०—१३
४६३ कातीयेष्टि दीपक—(दर्शपौर्णमास्य पद्धति) १—५०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४६४ कात्यायनी पितृतर्पण—बम्बई ०—२५
४६५ कात्यायनी शान्ति ०—२५
४६६ कुण्डमण्डप सिद्धि—भा० टी० ०—५०
४६७ कुण्डार्क—छ: संस्कृत टीका ३—००
४६८ कुम्भ विवाह ०—१९
४६९ कुलदेवता स्थापनविधि ०—६
४७० कृत्य शिरोमणि—(श्री तूफानी शर्मा प्रणीत) ४—००
४७१ कृत्यसार समुच्चय—श्री अमृतनाथ शर्मा १—७५
४७२ कृत्यसार समुच्चय (अमृतनाथ) पं०गंगाधर ४—५०
४७३ कृपाराम मीमांसा भा० टी० ०—६२
४७४ कूपोत्सर्गपद्धति—भाषा टीका ०—१५
४७५ गयायात्रापद्धति—भाषा ०—४५
४७६ गयाश्राद्धपद्धति—मूल ०—६२
४७७ गयाश्राद्धपद्धति—भाषा टीका सहित ०—८७
४७८ गायत्री पूजा पद्धति—— ०—२५
४७९ गोदान तुलादान पद्धति—भाषा टीका ०—१२, ०—१९
४८० गोविन्दार्चनचन्द्रिका—खुला मूल १०—००
४८१ गौडीयश्राद्ध प्रकाश महानिबन्ध—खुला पन्ना ८—००
४८२ गौरीशंकर गुटका—नेपालियों के लिए २—००
४८३ गृहनिर्माण व्यवस्था—भाषा टीका ०—६२
४८४ ग्रहप्रयोग—ग्रहशांति वायुनन्दन—२—० ग्लेज २—२५
४८५ ग्रह शान्ति—भाषा टीका १—२५
४८६ ग्रहशान्ति-प्रयोग—दौलतराम गौड़ ३—५०
४८७ चूडाकरण पद्धति—(माध्यन्दिन शाखा) ०—१९
४८८ छन्दोगान्हिक—श्रीदत्त उपाध्याय कृत ०—७५
४८९ छन्दोगानां उपनयन पद्धति—संस्कृत टीका १—२५
४९० छन्दोगानां पार्वण पद्धति—संस्कृत टीका ०—३७
४९१ छन्दोगानाम—विवाह पद्धति—इन्दुमती टीका १—२५
४९२ छन्दोगानां संक्षिप्तान्हिक— ०—३७
४९३ जन्मदिन पूजा पद्धति ०—१२, ०—२५
४९४ ज्येष्ठाशान्ति—मूल ०—२५
४९५ तीर्थ श्राद्ध विधि—भाषा टीका ०—२५
४९६ तुलसी पूजा पद्धति—मूल ०—१३
४९७ तुलादानादि पद्धतिः—नवग्रह होम पद्धतिः—प्रायश्चित्त पद्धतिः—विष्णुयाग पद्धतिः—
४९८ दशकर्म पद्धति—भाषा टीका २—००
४९९ दशकर्मादि पद्धति—(षोडश संस्कार, शान्तिविधि तथा अनेक दान विधि सहित) जनार्दन पाण्डे सम्पादित ७—०
५०० दशकर्मपद्धति——मूल १—००
५०१ दानखण्डोक्त पुण्याहवाचन—— ०—२५
५०२ दुर्गा पूजा——श्यामा पूजा पद्धति ०—७५
५०३ दुर्गापूजन प्रयोग ३—००
५०४ द्विरागमन—इष्टशोधन दत्तक मुहूर्त्त व्यवस्था भाषा टीका ०—१३
५०५ द्वैत निर्णय सिद्धान्त संग्रह—(भानुभट) ०—५०
५०६ धनिष्ठापञ्चक शांति—मूल ०—३७, ०—२५
५०७ धर्मतत्व—भाषा १—१३
५०८ धर्म संग्रह—(धर्म बोधक श्लोक संचय) २—२५
५०९ नवग्रह विधान पद्धति—मूल—पत्राकार ०—६२
५१० नवरत्न विवाह पद्धति—भाषा टीका ३—००
५११ नान्दीमुख श्राद्ध पद्धति—भाषा टीका ०—३७
५१२ नान्दी श्राद्ध प्रयोग—षोडश मातृका पूजादि समेत ०—५०
५१३ नारायणाबलि प्रयोग—भाषा टीका १—२५
५१४ नित्यकर्म पद्धति—भाषा टीका ०—५०
५१५ नित्यकर्म प्रयोग—गोरखपुर ०—४४
५१६ नित्य कर्म प्रयोग माला—श्री चतुर्थीलाल २—००
५१७ नित्यकर्म विधि—भाषा टीका पं० बालकृष्ण १—१३
५१८ नित्यकर्म विधि—सटीक—गायत्री शांकरभाष्य— महिम्न स्तोत्र, पुरुष सूक्तादि सहित—श्रीलक्ष्मीनाथ १—००
५१९ नित्य-नैमित्तिक-कर्मसमुच्चय—(यजुर्वेदीय) ५—५०
५२० नूतन गृह प्रवेश हवन पद्धति २—००
५२१ नूतन वास्तु प्रबन्ध—भाषा टीका सहित— ०—६२
५२२ पद्य पञ्चाशिका—भा० टी० ०—७५
५२३ परिशिष्टोक्त पुण्याहवाचन—भा० टी० ०—२५
५२४ पर्वोत्सव विवरण—भाषा १—००
५२५ पञ्चदेवता पूजन—(भा० टी०) ०—१९
५२६ पञ्चरत्न विवाह पद्धति—पं० फलाहारि शर्मा २—००
५२७ पञ्चदान-पद्धति—मूल ०—३७
५२८ पञ्चम क्रूल—— ०—३७
५२९ पञ्च महायज्ञ विधि—भा० टी० (आर्य समाज) ०—२५
५३० पञ्चयज्ञ—भाषा टीका समेत ०—५०
५३१ पञ्चाङ्ग पद्धति——मूल ०—२५, ०—३७
५३२ पार्थिव पूजन विधान—भा० टी० ०—१९
५३३ पार्थिवेश्वर पूजा पद्धति—भा० टी० ०—१३
५३४ पार्वण श्राद्ध प्रयोग—भा० टी० ०—५०, ०—३७
५३५ पितृकर्म निर्णय—पं० त्रिलोकनाथ ३—००
५३६ पुत्तलविधान पद्धति—मूल ०—३१ भाषाटीका ०—३७
५३७ पुराणोक्त गृह शान्ति—वास्तु शांति १—५०
५३८ पुराणोक्त विवाह पद्धति——मूल— ०—३७
५३९ पूतना शांति—भा० टी० ०—१३
५४० पौरोहित्य कर्म सार—— १—५०
५४१ प्रतिष्ठा संग्रह—मूल—पं० रामलाल ७—००
५४२ प्रदोष व्रत चन्द्रिका—— ०—७५
५४३ प्रपञ्चसार विवेक——पत्राकार मूल—— १—७५
५४४ प्रयोग पारिजात—(नृसिंह)—षोडश संस्कार ७—००
५४५ प्रयोगरत्न—नारायण भट्टी——ऋग्वेदीय— ३—५०
५४६ प्रेत मञ्जरी—भाषा टीका—वायुनन्दन १—७५
५४७ प्रेतमञ्जरी—(यजुर्वेदीनां) भा० टी० १—५०, १—०
५४८ ब्रह्मकर्म समुच्चय—हिरण्यकेशीय (३८८) ५—००
५४९ ब्रह्मकर्म समुच्चय—ऋग्वेदीय ६—००
५५० बृहद्गायत्री महामन्त्रीय——सरयूपारीणभाष्य ०—५०
५५१ मंगलाष्टक शाखोच्चार—— ०—२०
५५२ मण्डप कुण्डसिद्धि——सान्वय भा० टी० सहित तथा कुण्डार्कादि १९ ग्रन्थ २—००
५५३ महालक्ष्मी पूजन विधि—— ०—१९
५५४ महालक्ष्मी पूजा पद्धति—भाषाटीका १—००
५५५ मूल शान्ति विधि——मूल ०—३१ तथा ०—१९
५५६ यजुः शाखीय शान्ति काण्ड प्रदीप—(शुक्ल यजुः शाखीय कर्मकाण्ड प्रदीप परिशिष्ट रूप) पत्राकार २—००
५५७ यज्ञोपवीत पद्धति—भा० टी० ०—७५
५५८ यज्ञोपवीत पद्धति—भा० टी० पं० रामस्वरूप १—५०
५५९ रामार्चन चन्द्रिका——आनन्दवन प्रणीत १—५०
५६० रामार्चा पद्धति—भा० टी० पं० मातृप्रसाद पाण्डे ०—५०
५६१ रुद्रविधान पद्धति——मूल खुला पन्ना ०—६२
५६२ रुद्रयोग प्रयोग——वायुनन्दन २—५०
५६३ लघुदर्पण पद्धति——जगन्नाथ ६—००
५६४ लघुपूजा अनुष्ठान पद्धति ०—५६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

५६५ लम्बोदरी होम पद्धति–मूल खुला पन्ना ०–३१
५६६ लक्ष्मी पूजन प्रयोग १–००
५६७ वर्षकृत्य—रुद्रधर शर्मा ३–००
५६८ वर्षकृत्य दीपक–पं० नित्यानन्द ७–००
५६९ वसन्तोत्सव निर्णय ०–१२
५७० वास्तु पूजा पद्धति–गृहप्रवेश ०–३७
५७१ वास्तु शान्ति प्रयोग काशी ०–६२ तथा बम्बई ०–७५
५७२ वास्तु प्रतिष्ठा संग्रह २–५०
५७३ वासिष्ठी हवन पद्धति—हिन्दी टीका ०–७५, ०–६७
५७४ वासिष्ठी हवन पद्धति–मूल ०–३५. भाषाटीका ०–५०
५७५ विनय पद्य पञ्चाशिका–भाषा टीका सहित ०–७५
५७६ विवाह पटलसार समुच्चय–कृष्णशंकर केशवराम ०–५०
५७७ विवाह पद्धति—चतुर्थीलाल भा० टी० १–१२
५७८ विवाह पद्धति—भा० टी० वायुनन्दन ०–९४
५७९ विवाह पद्धति—भाषाटीका १–००
५८० विवाहपद्धति–भैयाराम कृत भा० टी० २–००
५८१ विवाह पद्धति—आर्यसमाज ०–५०
५८२ विवाहसोपाङ्गविधि भा० टी० ३–००
५८३ विष्णुयाग प्रयोग २–५०, ३–००
५८४ विश्वकर्मा पूजापद्धति–मातृप्रसाद पाण्डे ०–३१
५८५ विज्ञप्ति रत्नावली—अन्वयार्थ सहित १–००
५८६ वेदोक्त गृह वास्तु पद्धति–मूलखुलापत्रा ०–८७
५८७ वैवाह पद्यावली—भाषा टीका सहित १–५०
५८८ वैश्य संध्याप्रयोग ०–१३
५८९ व्रत रत्नाकर—प्रथमपत्र २–२५
५९० व्रतोद्यापन प्रकाश–पत्रात्मक ३–७५
५९१ शांति पद्धति—पं० ईश्वरी दत्त २–००
५९२ शांतिप्रकाश चतुर्थीलाल ६–५०
५९३ शिलान्यास पद्धति–पं० विद्याधर गौड़ ०–२५
५९४ शिलान्यास पद्धति–देहली न्यास ०–३७
५९५ शिवार्चन पद्धति (शुक्लयजुर्वेदीय) १–५०
५९६ शुक्ल यजुशाखीय कर्मकाण्ड प्रदीप ७–००
५९७ शूद्रदश गात्र इकादशाह—वृषोत्सर्ग ०–३७
५९८ शूद्र पार्वण—एकोदृष्ट पद्धति वायुनन्दन मिश्र ०–१९
५९९ श्राद्धपद्धति—वाचस्पति १–७५
६०० श्रावणी प्रयोग—वायुनन्दन १–५०
६०१ श्राद्धप्रयोगदीपिका १–२५
६०२ श्राद्धविवेक—रुद्रधर २–००
६०३ श्राद्धविवेक–श्राद्धपद्धति–भाषाटीका मातृ प्र. ६–००
६०४ श्राद्ध संग्रह–भाषा टीका–पं० वायुनन्दनमिश्र ५–००
६०५ षोडश-संस्कार-विधि—सनातन (भाषाटीका सहित) पं० गंगा प्रसाद ४–००
६०६ सचित्र सतर्पण सन्ध्या दर्पण–भाषानुवादसहित २–००
६०७ सनातनधर्म दीपिका—स्वा० दयानन्द ०–७५
६०८ समंत्र नवरात्र पद्धति–मूल खुला पन्ना ०–५०
६०९ स्मार्त प्रभ–(गणपति पूजादि नान्दी श्राद्धान्त) विद्याधर शास्त्री गौड़ ३–००
६१० सर्वदेव प्रतिष्ठा प्रकाश–चतुर्थीलाल खुलापन्ना ४–५०
६११ सर्वदेव पूजा पद्धति—भा० टी० ०–२५
६१२ साकारोपासना तत्व–बंगला से अनूदित– ०–७५
६१३ सामवेदोपाकर्म प्रयोग–शंकरराम शास्त्री १–२५
६१४ सपिण्डी निर्णयेष्टिका–श्रीशिवदयाल कृत मूल ०–४४
६१५ सापिण्ड्य कल्पलतिका–सदाशिव देव विरचित ०–६२
६१६ सापिण्ड्य दीपक—म० म० नित्यानन्द ०–३७
६१७ सन्ध्या—यजुर्वेदीय मूल ३ न. पै. भा. टी. ०–०६
६१८ सन्ध्या–(शु० यजुर्वेदीय) तर्पण भा० टी० ०–२५
६१९ सन्ध्याभाष्य–चतुर्वेद सन्ध्या, तर्पण, ब्रह्मयज्ञ, श्रुति-सूत्र व्याख्या आदि सहित पं० श्यामनारायण चतुर्वेद संग्रहीत ४–००
६२० सन्ध्याभाष्य समुच्चय—षट्भाष्य सहित ३–००
६२१ सन्ध्योपासन—सामवेदीय ०–२५
६२२ सन्ध्योपासन—(क्षत्रिय) भा० टी० ०–१३
६२३ संध्योपासन—(आर्य समाज) ०–०६
६२४ सन्ध्यातर्पण पद्धति–छन्दोगानां (मैथिली) ०–१३
६२५ सन्ध्या-वैश्य—भा० टी० ०–१२
६२६ संस्कार कौस्तुभ—मूल खुलापन्ना अनन्तदेव ३–५०
६२७ संस्कार दीपक–३ भाग नित्यानन्द पर्वतीय कृत १५–००
६२८ संस्कार पद्धति–भास्कर शास्त्री संशोधित ३–७५
६२९ संस्काराविधि—श्री दयानन्द सरस्वती निर्मित ०–८७
६३० सन्यास पद्धति हि. टीका १–२५
६३१ संस्कार प्रकाश—चतुर्थीलाल ४–५०
६३२ संक्षिप्तान्हिक—वाजसनेयी (मैथिली) ०–६१
६३३ संक्षिप्तदीक्षा पद्धति–गुणाधान पद्धति सहित
६३४ स्वस्त्ययन कलश प्रतिष्ठा— ०–१९
६३५ हरदी मातृ पूजा—भा० टी० ०–१९
६३६ होमपद्धति—गणपति पूजा सहित ०–१९
६३७ त्रिकाल संध्या—यजुर्वेदीय ०–१३
६३८ त्रिपिण्डी श्राद्धपद्धति—वायुनन्दन ०–१९, ०–६२

धर्मशास्त्र

६३९ अग्निहोत्रचन्द्रिका–वामन शास्त्री देवव्रातभाष्य ४–८१
६४० आङ्गिरसस्मृति—ए० एन० कृष्णा अयंगर १२–००
६४१ अश्विनीयान मीमांसा—श्री वेंकटाचल शास्त्री २–००
६४२ अशौचनिर्णय—मूल ०–२५ भाषाटीका ०–२५
६४३ आचार चंद्रिका–स्वा० दयानन्द ०–७५
६४४ आचारार्क–बम्बई १–२५
क६४४ आचारादर्श—बम्बई १–२५
६४५ आचारभूषण—(त्रयम्बक) हिरण्यकेश्यान्हिक ६–५०
६४६ आचारमयूख—(नीलकंठ भट विरचित) १–२५
६४७ आपस्तम्बधर्मसूत्र–हरदत्तकृत उज्ज्वलावृत्ति ७–००
६४८ आपस्तम्ब धर्म सूत्र—उज्ज्वला आदि संस्कृत टीकाओं के अनुसार भाषा टीका सहित पं० रामचन्द्र ८–००
६४९ आपस्तम्बीयधर्मसूत्र—मूल, पाठभेद, टिप्पणी, उज्ज्वल वृत्ति के उद्धरण तथा सूत्र अनुक्रमणिका ३–००
६५० आचारेन्दु—त्रयम्बक विरचित ६–००
६५१ आधानपद्धति—वामन शास्त्री प्रणीत मूल ३–००
६५२ आर्यविद्यासुधाकर—यज्ञेश्वर चिम्मणभट विरचित तथा डा० मंगलदेव शास्त्री द्वारा सम्पादित १०–००
६५३ आर्यविधानम्—पं० विश्वेश्वरनाथरेउ प्रणीत भाषा टीका सहित २ भाग में हिन्दू कानून की पुस्तक २०–०
६५४ उत्सर्गमयूख—(नीलकंठभट) मूल ०–२५
६५५ कर्मविपाक–(नक्षत्र चरण) भाषाटीका ३–००
६५६ कात्यायन मत संग्रह–नारायण चन्द्र बन्द्योपाध्याय सम्पादित अंग्रेजी भूमिका, टिप्पणी सहित २–२५
६५७ कात्यायन स्मृति–आंगल अनुवाद सहित ४–५०
६५८ कालतत्वविवेचन (रघुनाथ भट प्रणीत) तिथि तत्व-विवेचन नन्दकिशोर शर्मा संपादित दो भाग ३–७५
६५९ कालमाधवकारिका—(माधवाचार्य प्रणीत) ०–७५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

६६० कालमाधव—माधवाचार्य कृत सटिप्पण ३–००
६६१ कालमाधव लक्ष्मी–माधवाचार्य प्रणीत कालमाधव पर लक्ष्मीदेवी लक्ष्मी तथा अन्य दो टीकायें भूमिका टिप्पणी सहित जे० बी० चौधरी १०–००
६६२ कालविवेक–जीमूतवाहन–पं०मधुसूदन संपादित ५–२५
६६३ क्रमदीपिका–(केशवभटाविरचित) श्रीगोविन्द भट्टाचार्य कृत विवरण सहित–३ भागों में ४–५०
६६४ कृत्यकल्पतरु–लक्ष्मीधर विरचित १ से ११ खंड ब्रह्मचारिकांड ११ रु० गृहस्थकांड १२ रु० नियतकाल काण्ड १९।५० श्राद्धकाण्ड १५ रु० दानकाण्ड ९ रु० व्रतकाण्ड १७ रु० तीर्थविवेचनकांड ८ रु० शुद्धिकाण्ड ९।३८ राजधर्मकांड १० रु० व्यवहारकाण्ड २६।७५ मोक्षकाण्ड १२ रु० १४९–६२
६६५ कृत्यरत्नाकर–श्री चण्डेश्वर ठक्कुर विरचित ६–००
६६६ क्षय् (धर्मदिग्दर्शन) माधवाचार्य शास्त्री दोभाग १५–०
६६७ गदाधर पद्धति–आचारसार ४–५०
६६८ गोत्र प्रवरनिबन्ध कदम्ब बम्बई ५–००
६६९ गौतम धर्म सूत्र परिशिष्ट (द्वितीय प्रश्न)–अंग्रेजी भूमिका टिप्पणी सहित–ए०एन० कृष्ण १२–००
६७० गृहस्थ रत्नाकर–चण्डेश्वर ५–२५
६७१ चतुर्वर्गचिंतामणि–प्रायश्चित खंड हेमाद्रि—१२–००
६७२ चतुर्विंशतिमत संग्रह–भट्टोजी दीक्षित संकलित ३–००
६७३ जयसिंह कल्पद्रुम–मूलमात्र बम्बई १२–००
६७४ जाति भास्कर–भाषाटीका बम्बई ८–००
क६७४ जाति विज्ञान का आधार (गेयर) हिन्दी अनु० ७–००
६७५ टोडरानन्द–(सर्ग सौख्य, अवतार सौख्य) प्रथम १०–०
६७६ तिथ्यर्क-दिवाकरकृत–तिथियों के निर्णय आदि २–००
६७७ तिथिचिन्तामणि ०–७५
६७८ तिथिनिर्णय–भट्टोजी दीक्षित १–५०
६७९ तीर्थचिन्तामणि–वाचस्पति मिश्र ३–७५
६८० दण्डविवेक (वर्धमान कृत) १२–००
६८१ दत्तकमीमांसा–नंद पण्डितकृत मंजरी व्याख्या ५–५०
६८२ दर्शपूर्णमास प्रकाश–प्रथमभाग धूर्तस्वामी भाष्यवृत्ति तथा रुद्रदत्तप्रणीत सूत्रदीपिका सहित–पूना १०–००
६८३ दानक्रिया कौमुदी–गोविन्दानन्द-प्रणीत २–२५
६८४ दानचंद्रिका–मूल १–१२
६८५ दानदीपिका—भाषाटीका ०–५०
६८६ दानमयूख—(नीलकंठ भट) मूल २–००
६८७ दानसागर—(बल्लालसेन) ४ भाग सम्पूर्ण ३०–००
६८८ दानसंग्रह मूल ३–५०
६८९ दायभाग—जीमूतवाहन प्रणीत २–५०
६९० दीपकलिका–शूलपाणी कृत ९–५०
६९१ दीक्षातत्वमीमांसा—पं० वेणीराम शर्मा १–५०
६९२ दीक्षाप्रकाशिका–श्री विष्णु भट विरचित १–००
६९३ धर्मकल्पद्रुम—स्वा० दयानन्द कृत सनातन धर्म का अत्युत्तम ग्रन्थ १–३ भाग, पंचम, ७–८ १०–००
६९४ धर्मकोष–व्यवहार कांड व्यवहार मातृका, विवाद पदानि तीन खंडों में पं० लक्ष्मण शास्त्री कृत ५२–०
६९५ धर्मचौर्यरसायन—गोपाल योगीन्द्र विरचित २–२५
६९६ धर्मतत्व निर्णय–(वासुदेव शास्त्री) पूना २–२५
६९७ धर्मतत्वनिर्णय परिशिष्ट–(वासुदेव शास्त्री) १–२५
६९८ धर्मद्वैतनिर्णय—शंकर भट ९–५०
६९९ धर्म प्रदीप—मूलमात्र २–००
७०० धर्मविज्ञान—स्वा० दयानन्द कृत तीन भाग में (सनातन धर्म) १३–००
७०१ धर्मशास्त्र संग्रह २६ स्मृति १५–००
७०२ धर्मसिन्धु—मूल बम्बई ४–००
७०३ धर्म सिन्धु—हिन्दी टीका सहित बम्बई १२–००
७०४ धर्मशास्त्रे आशौच कांड–वृद्धि दीपिका ०–१९
७०५ धर्मादर्श—नूतनमतमतान्तर पर्यालोचक निबन्ध संस्कृत में श्री देवकृष्ण २०–००
७०६ धर्मानिबन्धि श्लोक चतुर्दशी सटीक—शेषकृष्ण ०–५०
७०७ धर्मशास्त्रीय व्यवस्था संग्रह—
७०८ धार्मिक विमर्श समुच्चय–(नरहरि शास्त्री) ३–५०
७०९ धार्मिक विमर्शसमुच्चय—द्वितीय ५–००
७१० नवरात्र प्रदीप–(विनायक प्रणीत) १–००
७११ नारदीय मनु संहिता—भवस्वामि कृत भाष्य २–५०
७१२ नित्याचार पद्धति–विद्याकर वाजपेयी प्रणीत ५–२५
७१३ नित्याचार प्रदीप–नृसिंह वाजपेयी १ ३भाग अपूर्ण १२–७५
७१४ निर्णयसिन्धु—मूलमात्र खेमराज ५–००
७१५ निर्णयसिन्धु—(कमलाकर भट प्रणीत) पाठान्तर टिप्पणी आदि सहित नारायण आचार्य ९–००
७१६ निर्णयसिन्धु–(कमलाकर भट) कृष्ण भट कृत सस्कृत व्याख्या सहित सम्पूर्ण २२–००
७१७ निर्णयसिन्धु—पं० ज्वालाप्रसाद कृत हिन्दी १४–००
७१८ निर्णयसिन्धु—भा०टी० पं० मिहिरचन्द्र १५–००
७१९ निर्णयामृत—मूल ३–५०
७२० नीतिमयूख—नीलकंठ भट प्रणीत १–२५
७२१ नृसिंहप्रसाद—श्राद्धसार (दलपति राज प्रणीत) १–०
७२२ नृसिंहप्रसाद–व्यवहार सार (दलपतिराज) २–००
७२३ नृसिंह प्रसाद–प्रायश्चित सार (दलपतिराज) १–६२
७२४ नृसिंहप्रसाद–तीर्थसार (दलपतिराज प्रणीत) ०–७५
७२५ पशुवालम्भ मीमांसा–वामन शास्त्री विरचित-मूल १–०
७२६ पाराशर धर्म संहिता–सायण माधवाचार्य कृत टीका खंड व्यवहार कांड दो भागों में ९–५०
७२७ पाराशर स्मृति–भा० टीका १–५०
७२८ पुरुषार्थ चिन्तामणि–विष्णुभट प्रणीत बम्बई ४–००
७२९ पुरुषार्थ चिन्तामणि—पूना ९–००
७३० पुरुषार्थ सुधानिधि–सायणाचार्य विरचित १४–००
७३१ प्रायश्चित कदम्ब–भा० टी० १–००
७३२ प्रायश्चित प्रकरण–भवदेव प्रणीत ३–२५
७३३ प्रायश्चित प्रकाश बम्बई १–७५
७३४ प्रायश्चित मयूख–(नीलकंठ भट) सटीक २–००
७३५ प्रायश्चितेन्दुशेखर कुण्डाकंच–नागोजी भट २–५०
७३६ प्रायश्चित प्रदीप–कृत्यप्रदीप–शुद्धिप्रदीप १–५०
७३७ बौधायन धर्मसूत्र–गोविन्द कृत विवरण ७–००
७३८ ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्ड–हिन्दी टीका सहित १०–००
७३९ बृहस्पति स्मृति–अंग्रेजी भूमिका, टिप्पणी, अनुक्रमणिका सहित–श्री रंगस्वामि संकलित १८–००
७४० भारत धर्म समन्वय–भाषा १–१३
७४१ भीष्म का राजधर्म–डा० श्यामलाल ६–००
७४२ मदन महार्णव–(कर्म विपाक के ऊपर) २४–००
७४३ मदनरत्नप्रदीप–मदनसिंहकृत व्यवहार कांड १२–००
७४४ मनुस्मृति—कुल्लूक भट्ट कलकत्ता ३–१३
७४५ मनुस्मृति—कुल्लूक भट कृत मन्वर्थ मुक्तावलि, टिप्पणी, पाठान्तर, आदि सहित–नारायण सं० ७–००
७४६ मनुस्मृति—कुल्लूक भट प्रणीत मन्वर्थ मुक्तावली क्षेपक, परिशिष्ट अनुक्रमणिका गोपाल शास्त्री ७–००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

७४७ मनुस्मृति–मेधातिथि कृत भाष्य सम्पूर्ण ३भाग १३–००
७४८ मनुस्मृति–मणि प्रभा हिन्दी टीकासहित ५–००
७४९ मनुस्मृति–सान्वय हिन्दी टीका बम्बई ६–००
७५० मनुस्मृति–भाषा टीका ३–००, ४–००
७५१ मनुस्मृति–हिन्दी टीका सहित १–४ अध्याय २–००
७५२ मनुस्मृति–(द्वितीयोध्याय) सं० हि० टीका ०–७५
७५३ मनु का राजधर्म—डा० श्यामलाल ५–००
७५४ मातृकाविलास—मूल ३–५०
७५५ मांस तत्वविवेक–विश्वनाथ पंचानन ०–३७
७५६ यति धर्म संग्रह–(विश्वेश्वर सरस्वती) २–७५
७५७ यज्ञ तत्त्व प्रकाश–चिन्नस्वामि शास्त्री ३–००
७५८ यज्ञ मीमांसा–भा० टी० २–५०
७५९ याज्ञवल्क्यस्मृति–वीरमित्रोदय तथा मिताक्षरा ८–००
७६० याज्ञवल्क्य स्मृति–मिताक्षरा तथा अन्य प्राच्य टीका पाठान्तर टिप्पणी बंबई ८–००
७६१ याज्ञवल्क्यस्मृति–अपरार्क टीका–पूना १९–५०
७६२ याज्ञवल्क्यस्मृति–सुबोधिनी और बालंभटी व्याख्या 'मिताक्षरा' तथा उससे भी प्राचीन विश्वरुपाचाय कृत बालक्रीड़ा सहित १७–००
७६३ याज्ञवल्क्यस्मृति–बालम्भटी व्याख्या समलंकृत मिताक्षरा टीका सहित व्यवहाराध्याय सम्पूर्ण १६–५०
७६४ याज्ञवल्क्यस्मृति–बालंभटी–प्रायश्चित ११–२५
७६५ याज्ञवल्क्यस्मृति–बालंभटी–व्यवहार १६–५०
७६६ याज्ञवल्क्यस्मृति–बालंभटी–आचाराध्याय १८–७५
७६७ राजधर्म कौस्तुभ–(अनन्तदेव) अंग्रेजी भूमिका १५–००
७६८ लघुसंवत्सरादि निर्णय–सीताराम झा ०–२५
७६९ लेक्चर्स आन धर्मशास्त्र–म०म० श्रीधर शास्त्री १–५०
७७० वनमाला–जीवनाथझा हिन्दी टीका ०–२५
७७१ वर्षक्रिया कौमुदी—गोविन्दानन्द ५–२५
७७२ वसन्तोत्सव निर्णय—पं० सूर्यनारायण ०–१२
७७३ वाशिष्ठ धर्मशास्त्र—सटिप्पण १–००
७७४ विधान परिजात अनन्तदेव चतुर्थस्तवक तक ५५–००
७७५ विधानमाला—नृसिंह भट शंकर ६–२५
७७६ विधानसंग्रह— ०–५०
७७७ विवादचिन्तामणि—मूल २–५०
७७८ विवाद रत्नाकर—चंडेश्वर कृत ६–००

७७९ वीरमित्रोदय–परिभाषाप्रकाश-संस्कारप्रकाश २५–००
७८० वीरमित्रोदय–आन्हिक प्रकाश (मित्र मिश्रप्रणीत) ९–००
७८१ वीरमित्रोदय—तीर्थप्रकाश ९–००
७८२ वीरमित्रोदय—पूजा प्रकाश ६–००
७८३ वीरमित्रोदय—भक्ति प्रकाश ३–०
७८४ वीरमित्रोदय—लक्षणप्रकाश १०–५०
७८५ वीरमित्रोदय—राजनीति प्रकाश ७–५०
७८६ वीरमित्रोदय—व्यवहाराध्याय कलकत्ता ७–५०
७८७ वीरमित्रोदय—व्यवहार प्रकाश ९–००
७८८ वीरमित्रोदय—शुद्धिप्रकाश ४–५०
७८९ वीरमित्रोदय—समय प्रकाश ४–५०
७९० वीरमित्रोदय—श्राद्धप्रकाश ६–००
७९१ व्यवहार चिन्तामणि–वाचस्पति मिश्र २५–००
७९२ व्यवहार निर्णय—वरदराज सटिप्पण–के० वी० रंगस्वामी संपादित अंग्रेजी भूमिका सहित ३०–००
७९३ व्यवहार मयूख—(नीलकंठ) मूल १–५०
७९४ व्यवहार मयूख (श्री नीलकंठ) पी० वी० काणे संपादित पाठान्तर तथा अंग्रेजी टिप्पणी सहित १०–००
७९५ व्यवहारमाला—पूना १–५०
७९६ व्यासस्मृति—(व्यवहाराध्याय) बटेकृष्ण घोष संपादित अंग्रेजी टिप्पणी सहित २–५०
७९७ व्रतकोश—जगन्नाथ शास्त्री संग्रहीत २–००
७९८ व्रतचन्द्रिका—हिन्दी गौरीशंकर उपाध्याय २–००
७९९ व्रतराज—हिन्दी टीका सहित जिल्ददार १६–००
८०० व्रतार्क—भाषा टीका सहित ८–००
८०१ व्रात्यताप्रायश्चित निर्णय तथा व्रात्यता शुद्धि संग्रह १–५०
८०२ शांतिमयूख—(नीलकंठ) वायुनंदन संपादित २–५०
८०३ शांतिसार—दिनकरभट ३–५०
८०४ शास्त्रतत्वनिर्णय—नीलकंठ कृत—श्रीसदाशिव कातरे कृत अंग्रेजी भूमिका सहित संपादित ५–००
८०५ शुद्धिकौमुदी—(गोविंदानन्द) ३–७५
८०६ शुद्धिमयूख—नीलकंठ—मूल १–००
८०७ शूद्राचार शिरोमणि—शेषकृष्ण निर्मित १–१३
८०८ श्राद्ध कल्पलता—नन्द पंडित ४–५०
८०९ श्राद्धक्रियाकौमुदी—गोविंदानन्द प्रणीत ५–२५
८१० श्राद्ध चन्द्रिका—दिवाकर भट ३–००

८११ श्राद्ध तत्व—शशिशेखर ०–८७
८१२ श्राद्ध मयूख—नीलकंठ—मूल १–५०
८१३ श्राद्धमञ्जरी—बापू भट विरचित ३–००
८१४ षडशीति—(आदित्याचार्य) शुद्धिचन्द्रिका टीका २–००
८१५ सत्यार्थ प्रकाश—स्वामी दयानन्द सरस्वती १–५०
८१६ सनातन धर्म शिक्षा–पं० रामस्वरूप शर्मा ४–००
८१७ सनातन धर्मोद्धार—चार भागों में ४०–००
८१८ सम्बन्ध निर्णय—गोपाल पंचानन १–२५
८१९ सम्बन्ध विवेक—शूलपाणियतीन्द्र २–२५
८२० समय मयूख—नीलकंठ–मूल २–००
८२१ संस्कार पद्धति—पूना ३–७५
८२२ संस्कार मयूख— १–५०
८२३ संस्कार रत्नमाला—दो भाग संपूर्ण पूना १८–५०
८२४ संस्कार गणपति–श्री रामकृष्णप्रणीत १५–००
८२५ स्मृतिकौस्तुभ—अनन्तदेव (सम्वत्सर-दीधिति) ५–००
८२६ स्मृति चंद्रिका—देवन भट प्रणीत ६ भाग में (अशौच, श्राद्ध, संस्कार, आन्हिक, तथा व्यवहार) १३–७५
८२७ स्मृति तत्व—(तिथि, श्राद्ध, आन्हिक, प्रायश्चित, ज्योतिष, मलमास तथा संस्कार तत्व)–रघुनन्दन भट प्रणीत २ भाग २५–००
८२८ स्मृतिमुक्ताफलम्–वैद्यनाथ दीक्षित कृत ५५–००
८२९ स्मृति समुच्चय—(२७ स्मृतियों का संग्रह)–पाठान्तर निर्देश आदि सहित संशोधित ७–५०
८३० स्मृत्यर्थसार—श्रीधराचार्य प्रणीत २–५०
८३१ स्मृतिसारोद्धार—श्री विश्वम्भर त्रिपाठी कृत ६–००
८३२ स्मार्तोल्लास—(शिवप्रसाद कृत) ३ भाग २–५६
८३३ सुबोधिनी—मिताक्षा पर व्याख्या १०–२५
८३४ सूरिसर्वस्व—गोविन्द प्रणीत–३ खंड अपूर्ण २–२५
८३५ हारलता—अनिरुद्ध भट प्रणीत २–२५
८३६ हिन्दू विवाह में कन्यादान का स्थान—डा० सम्पूर्णानन्द १–००
८३७ हिन्दू संस्कार–(हिन्दी)–डा० राजबली पांडे १५–००
८३८ त्रिशच्छ्लोकी—शंकर शास्त्री विरचित ४–५०
८३९ त्रिस्थली सेतु—तीर्थेन्दु शेखर मोक्ष विचार ०–७५
८४० त्रिस्थली सेतु—नारायण भट प्रणीत ५–५०

– – – –

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

महापुराण-उपपुराण

८४१ अग्निपुराण-मूल मात्र संपूर्ण पूना १०-००
८४२ अग्नि पुराण—बुक साईज मूल कलकत्ता जीर्ण ६-५०
८४३ अष्टादश पुराण दर्पण—भाषा ६-००
८४४ अष्टादश पुराण परिचय-श्रीकृष्णमणि २-००
८४५ आत्म पुराण—संस्कृत टीका पत्रात्मक २५-००
८४६ आदि पुराण—भा० टी० खुला पत्रा बम्बई ४-५०
८४७ कल्कि पुराण—मूल (बुकसाइज) जीवानन्द १-७५
८४८ कल्कि पुराण—भा० टी० २-००
८४९ काशी खंड—संस्कृत टीका खुला पत्रा १५-००
८५० काशी खण्ड—भाषा टीका खुला पत्रा २०-००
८५१ काशी खंड—केवल भाषा बुक साइज १०-००
८५२ कूर्म महापुराण—मूल खुला पत्रा ७-००
८५३ केदार कल्प—रुद्रयामलान्तर्गत भा० टी० ३-५०
८५४ केदार खंड—मूल बम्बई १०-००
८५५ केदार खंड—भा० टी० ,, २०-००
८५६ केदार खंड—केवल भाषा ,, ९-००
८५७ गरुड़ पुराण—१६ अध्याय भा० टी० खुला २-५०
८५८ गरुड़पुराण—३४ अध्याय भा० टी० ,, १-५०
८५९ गरुड़ पुराण -सारोद्धार संस्कृत टीका २-७५
८६० गरुड़ पुराण—संपूर्ण मूल बुकसाइज कलकत्ता ४-५०
८६१ देवी भगवत मूल—गटका काशी ६-००
८६२ देवी भागवत—भा० टी० खुला पत्रा बम्बई ४०-००
८६३ देवी भागवत—केवल भाषा बुक साइज २०-००
८६४ धर्म संग्रह-(इतिहास पुराणोद्धृत धर्म बोधकश्लोक संचय) वेंकटराम २-२५
८६५ नृसिंह पुराण-मूल बुकसाइज ३-५०
८६६ पद्म पुराण—मूल ४ भागों में सम्पूर्ण पूना ३०-००
८६७ पुराण दिग्दर्शन—माधवाचार्य शास्त्री विरचित ८-००
८६८ पुराण विषय समनुक्रमणिका ६-००
८६९ पुराण विषयानुक्रमणिका-राजनीति १५-००
८७० पुराणरहस्यम्—(श्री अनदाचरण) संस्कृत १-५०
८७१ पुराण संहिता-आलमंदार संहिता, बृहत्सदाशिव संहिता, सनत्कुमार संहिता काशी ६-००
८७२ पुराण काव्य स्तोत्र सुधा अ० प० कारमरकर ५-००
[illegible]
८७४ प्रेमसुधा सागर-भागवत दशमस्कान्ध हिन्दी ३-५०
८७५ ब्रह्मवैवर्तपुराण-मूल बुकसाइज पूना २ भाग १४-२५
८७६ ब्रह्मवैवर्त पुराण—खुलापत्रा बम्बई १८-००
८७७ ब्रह्मपुराण-बुक साइज २५-००
८७८ ब्रह्माण्ड पुराण—खुला पत्रा मूल १४-००
८७९ ब्रह्मोत्तर खंड—भा० टी० ३-५०
८८० भविष्य पुराण-मूल बुक साइज २५-००
८८१ भागवत—सम्पूर्ण मूल गुटका गोरखपुर ३-००
८८२ भागवत—गुटका निर्णय सागर बम्बई ९-००
८८३ भागवत—मोटा अक्षर मूल बड़ा साइज ६-००
८८४ भागवत—सचूर्णिका सं० टीका बम्बई खुला २५-००
८८५ भागवत—चूर्णिका संस्कृत टीका काशी २४-००
८८६ भागवत—श्रीधरी संस्कृत टीका खुला २४-००
८८७ भागवत—भाषा टीका सामयिकी पत्रात्मक २०-००
८८८ भागवत-सरस्वती भाषा टीका दृष्टान्त और प्रकाश टिप्पणी से अलंकृत श्रीकृष्ण पूजन, भागवत हवन विधान,प्रत्येक अध्यायसार, प्रतिस्कन्ध श्रवण-माहात्म्य आदि विषयों से विभूषित ३०-००
८८९ भागवत-शालिगराम कृत भा० टी० खुला पत्रा मोटा अक्षर बढ़िया कागज बम्बई ४०-००
८९० भागवत—भा० टी० बुकसाइज दो भाग—१५-००
८९१ भागवत—सामयिकी भा०टी०-पं० रामतेज १५-००
८९२ भागवत सुधा सागर—केवल भाषा ८-५०
८९३ भागवत—केवल भाषा अनेक रंगीन चित्रों सहित २ भाग इलाहाबाद १६-००
८९४ भागवत—दशमस्कन्ध भा०टी०खुला बम्बई १०-००
८९५ भागवत—दशमस्कन्ध भा०टी० खुला काशी ८-००
८९६ भागवत—एकादशस्कन्ध भा०टी०खुला बम्बई ४-००
८९७ भागवत—एकादश स्कन्ध प्रत्येक पद का हिन्दी अनुवाद तथा भावानुवाद २ भाग काशी ६-५०
८९८ भागवत एकादशस्कन्ध-हिन्दी १-०० जिल्द १-३७
८९९ भागवत-राधेश्याम तर्ज—श्रीलाल कृत ५-२५
९०० भागवतामृत—भा० टी० १-७५
९०१ भागवत चतुश्शती—(भागवत संग्रह)-दशम १-००
९०२ भागवत चतुश्शती—(शिवराम) ३-९ स्कन्ध २-००
९०३ भागवत वेदस्तुति—संस्कृत हिन्दी श्रीराममूर्ति २-२५
९०४ मत्स्य पुराण—मूल बुक साइज कलकत्ता ७-५०
९०५ मत्स्य पुराण—खुला पत्रा मूल १४-००
९०६ मत्स्य पुराण—केवल हिन्दी राम प्रताप २०-००
९०७ मन्त्र भागवत—नीलकंठ सटीक पत्रात्मक ०-८७
९०८ महा भागवत—देवी पुराण मूल खुला पत्रा २-००
९०९ मार्कण्डेय पुराण-मूल बुक साइज ४-५०
९१० मार्कण्डेय पुराण भा० टी० खुला १५-००
९११ मार्कण्डेय पुराण—केवल भाषा काशी ३-००
९१२ युग पुराण— २-००
९१३ रामाश्वमेध—मूल (पद्मपुराणान्तर्गत) मोटा अक्षर-खुला पत्रा बम्बई ४-२५
९१४ रामाश्वमेध-भा० टी० खुला पत्रा ११-००
९१५ रामाश्वमेध—(पद्मपुराणान्तर्गत) भाषा ४-५०
९१६ लघुभागवतामृत—रूपगोस्वामी कृत भा० टी० ४-००
९१७ ललितोपाख्यान—ब्रह्माण्ड पुराणान्तागत मूल ३-५०
९१८ लिङ्गपुराण—बुक साइज कलकत्ता ६-५०
९१९ लिङ्गपुराण—खुला पत्रा बम्बई मोटा अक्षर १६-००
९२० वामनपुराण—खुला पत्रा मूल ६-००
९२१ वामनपुराण—केवल भाषा वार्तिक ९-००
९२२ वायुपुराण—खुला पत्रा, मोटा अक्षर १२-००
९२३ वायुपुराण-केवल भाषा पं० रामप्रताप शास्त्री १२-००
९२४ विष्णु पुराण—बुकसाइज कलकत्ता १०-००
९२५ विष्णुपुराण—सटीक खुला पत्रा बम्बई ९-००
९२६ विष्णुपुराण—भा० टी० गोरखपुर ४-००
९२७ विष्णु धर्मोत्तर पुराण—मूल खुला पत्रा १८-००
९२८ विष्णुधर्मोत्तर-३सरा कांड चित्र प्रकरण—डा० पी० शाह द्वारा सम्पादित २०-००
९२९ शिवपुराण—मूल खुलापत्रा १८-००
९३० शिवपुराण—भा० टी० खुला पत्रा ५०-००
९३१ शिवपुराण—केवल भाषा बम्बई २०-००
९३२ शिवभारत—संस्कृत २-२५
९३३ श्री सुबोधिनी—श्री वल्लभाचार्य ४-५०
९३४ स्कन्दमहापुराण-मूल सम्पूर्ण खुला पत्रा बम्बई नेट ३००-०
९३५ सुखसागर—(भागवत) सरल भाषा सचित्र २०-००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

९३६ सुखसागर—मोटा अक्षर मथुरा १६—०, १२—००
९३७ सुखसागर—मक्खन लखनऊ १०—००
९३८ सुखसागर—सरल भाषा लाला शालिगराम कृत सफेद कागज बड़ा साइज बढ़िया बम्बई २८—००
९३९ सुखसागर—ला० शालिग्राम गुटका, बारीक १२—००
९४० शुक सुधासागर—मोटा अक्षर रंगीन चित्र २०—००
९४१ सौर पुराण—मूल पूना ४—५०
९४२ हरिवंशपुराण—संस्कृत टीका पद्यात्मक २०—००
९४३ हरिवंश पुराण—नीलकंठी सं० टी० बुकसाईज ४०—००
९४४ हरिवंश पुराण—भाषा टीका खुला ३२—००
९४५ हरिवंश पुराण भाषा—सम्पूर्ण लखनऊ १६—००
९४६ हरिवंश पुराण—भाषा बंबई १२—००
९४७ हरिलीलामृत—श्रीबोपदेव प्रणीत सटीक १—५०

रामायण-महाभारत

९४८ अग्निवेष रामायण —भा० टी० ०—६२
९४९ अद्भुत रामायण—मूल खुला १—००
९५० अद्भुतरामायणभा० टी० खुला पत्रा २—००
९५१ अध्यात्म रामायण—मूल बम्बई २—०० काशी १—५०
९५२ अध्यात्म रामायण—संस्कृत टीका खुला पत्रा ७—००
९५३ अध्यात्म रामायण—नरोत्तम रामवर्मा—गोपालचक्रवर्ति ३ सं० टी० २०—००
९५४ अध्यात्म रामायण—भा० टी० बुक साईज ३—००
९५५ अध्यात्म रामायण—हिन्दी टीका मोटा अक्षर १०—००
९५६ आत्म रामायण—भाषा रामायण का रहस्य ०—८७
९५७ आनन्द रामायण—मूल १०—००
९५८ आनन्द रामायण—भा० टी० बुकसाइज १६—००
९५९ काशीतिहास—पं० भाउ शास्त्री वझे संस्कृत १—५०
९६० गर्ग संहिता—मूल—खुला ११—००
९६१ गर्ग संहिता—भा० टी० खुला २०—००
९६२ जैमिनी अश्वमेध—मूल खुला ४—५०
९६३ जैमिनी अश्वमेध—भा० टी० खुला ११—००
९६४ नासिकेतोपाख्यान—हिन्दी टीका सहित १—००
९६५ बालबोध रामायण—डी० के० श्री खंडे १—००
९६६ भारतपारिजात—(महात्मा गांधी चरित) संस्कृत हिन्दी-स्वामी भगवदाचार्य प्रणीत ३ भाग १८—००

९६७ भारतसार—केवल मूल मात्र ३—५०
९६८ मन्त्र रामायण—सटीक गुटका २—००
९६९ महाभारत—मूल—दाक्षिणात्य शाखानुसार सविमर्श संशोधित पी० सुब्रह्मण्या शास्त्री—१८ जिल्द में सम्पूर्ण ७५—००
९७० महाभारत—मूल—संपूर्ण १८ पर्व ४ जिल्दों में गोरखपुर २२—५०
९७१ महाभारत—नीलकंठी संस्कृत टीका संपूर्ण बुकसाइज पूना—दुष्प्राप्य २५०—००
९७२ महाभारत—(विराट पर्व)—नीलकंठी, दीपिका—दुर्घटार्थ प्रकाशिनी—विरोधाचार्य भञ्जनी— भारतार्थ प्रकाश—लक्षाभरण—विषमपद विवरण आदि संस्कृत ८ टीका बम्बई ५—००
९७३ महाभारत—उद्योग पर्व—नीलकंठी—दीपिका—दुर्घटार्थ प्रकाशिनी-भारतार्थ प्रकाश तथा लक्षाभरण १०—००
९७४ महाभारत—तात्पर्य—टीका—ज्ञान दीपिका—(देवबोधाचार्य कृत उद्योग पर्व टीका) ४—००
९७५ महाभारत—तात्पर्य टीका ज्ञान दीपिका (देव बोध बोध कृत भीष्म पर्व व्याख्यान) २—००
९७६ महाभारत—भा० टी० सचित्र गोरखपुर संपूर्ण ३६ भागों में सचित्र ७२—००
९७७ महाभारत—आदिपर्व—हि० टी० सातवलेकर ७—००
९७८ महाभारत—सभापर्व—भा० टी०—सातवलेकर ३—५०
९७९ महाभारत—शांति पर्व पूर्वार्द्ध—सातवलेकर १०—००
९८० महाभारत-सम्पूर्ण १८ पर्व भाषा टीका सहित ६ जिल्दों में गोरखपुर ६५—००
९८१ महाभारत—केवल हिन्दी छोटा टाइप १० जिल्दों में संपूर्ण पं० द्वारकाप्रसाद कृत २०—००
९८२ महाभारत—केवल हिन्दी भाषा, सम्पूर्ण, मोटा अक्षर सचित्र १० बड़ी जिल्दों में प्रयाग ९०—००
९८३ महाभारत—भाषा संपूर्ण मोटा अक्षर—आठ बड़ी जिल्द लखनऊ ४५—००
९८४ महाभारत—संक्षिप्त भाषानुवाद—रामलग्न पाण्डे ६—००
९८५ महाभारत—भाषा—बा० जमनादास मेहरा ४—००
९८६ महाभारत—सबलसिंह चौहान बम्बई १०—००
९८७ महाभारत—छन्द—सबल सिंह चौहान लखनऊ ६—००

९८८ महाभारत—[illegible] छंदोबद्ध—राधेश्याम १०—७५
९८९ महाभारत—आर्य समाज—सरदार यशवन्त सिंह ४—००
९९० महाभारत—सरल छंदोबद्ध—शैलेन्द्रकुमार १०—००
९९१ महाभारत की समालोचना—पं० सातवलेकर १—५०
९९२ मूल रामायण—भाषा टीका ०—२५
९९३ मूल रामायण—शीलनिरुपणाध्याय सं० हि० ०—६२
९९४ रामायण कालीन—आर्य संस्कृति निबन्धमाला १—५०
९९५ रामाश्वमेध—मूल खुलापत्रा ४—२५
९९६ रामाश्वमेध—भा० टी० खुला पत्रा बम्बई ११—००
९९७ रामाश्वमेध—केवल भाषा वार्तिक ४—५०
९९८ बाल्मीकी रामायण—मूल गुटका बम्बई ८—००
९९९ बाल्मीकी रामायण—मूल खुला मोटा अक्षर १७—००
१००० बाल्मीकी रामायण—मूल—गुटका काशी ८—००
१००१ बाल्मीकी रामायण—म० म० चिन्नस्वामि द्वारा संपादित स्थूलाक्षर बुक साईज मदरास १३—००
१००२ बाल्मीकी रामायण—गोविन्द राजीय, (भूषण) रामानुजि तनिश्लोकी माहेश्वर तीर्थीयाख्या व्याख्या चतुष्टय सहित खुला पत्रा रु. ६०—०० बुक साइज ३ बड़ी जिल्दों में मोटा अक्षर ६०—००
१००३ बाल्मीकी रामायण—तिलक शिरोमणि, भूषण, तीन संस्कृत टीका ७ भाग बम्बई बारीक ४०—००
१००४ बाल्मीकी रामायण—पं० ज्वालाप्रसाद कृत भा० टी० खुला बम्बई ४०—००
१००५ बाल्मीकी रामायण—भाषा टीका काशी २४—००
१००६ बाल्मीकि रामायण—हिन्दी भाषानुवाद सहित—१० भाग में—पं० द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी २४—००
१००७ बाल्मीकि रामायण—बालकांड—पं०सातवलेकर ५—००
१००८ बाल्मीकि रामायण—अयोध्याकांड—भा०टी० ४—००
१००९ बाल्मीकि रामायण—किष्किन्धा सातवलेकर ४—००
१०१० बाल्मीकि रामायण—अरण्यकांड—सातवलेकर ४—००
१०११ बाल्मीकि रामायण—युद्धकांड २भागसातवलेकर ८—००
१०१२ बाल्मीकि रामायण—उत्तरकांड सातवलेकर ४—००
१०१३ बाल्मीकि रा०—सुन्दरकाण्ड—मूल गु० बम्बई २—५०
१०१४ बाल्मीकि रामायण—सुन्दरकांडमूल काशी २—००
१०१५ बाल्मीकि रामायण—सुन्दर कांड—मूल—खुला ४—००
१०१६ बाल्मीकि रामायण—सुन्दरकांडभा०टी०मुनिलाल ३—५०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१०१६क वाल्मीकि रा०—सुन्दरकाण्ड भा०टी० रामतेज २-००
१०१७ वाल्मीकि रा०—सुन्दरकाण्ड भा०टी० पत्रात्मक ५-५०
१०१८ वाल्मीकि सुन्दरकाण्ड—मर्ग १,२ मूल गुजराती ३-००
१०१९ वाल्मीकि रामायण—केवल भाषा मोटा अक्षर दो जिल्दों में बम्बई २५-००
१०२० वाल्मीकि रा०—भाषा मोटा अक्षर लखनऊ २२-००
१०२१ वाल्मीकि रामायण—सम्पूर्ण भाषा इलाहाबाद १३-००
१०२२ वाल्मीकि रामायण—सम्पूर्ण भाषा मथुरा ८-००
१०२३ वाल्मीकि रामायण—(संक्षिप्त) भा०टी० २-५०
१०२४ वाल्मीकि रामायणसार (भाषा) डा० धीरेन्द्र १-५०
१०२५ रामायण कालीन समाज—हिन्दी ४-००
१०२६ रामायणकालीन संस्कृति—हिन्दी ४-००

व्रत, कथा, महात्म्य आदि

१०२७ अनन्त व्रत कथा—भा० टी० ०-५०
१०२८ अन्नपूर्णा व्रत कथा—भा० टी० ०-३७
१०२९ अयोध्या महात्म्य—रुद्रयामल तन्त्रार्गत १-००
१०३० अर्बुद माहात्म्य सार—स्कन्दपुराणान्तर्गत— ०-५०
१०३१ अवन्ती क्षेत्र—उज्जैन—म० स्कन्दपुराणान्तर्गत ७-००
१०३२ अक्षय नवमी व्रत कथा—भा० टी० ०-१३
१०३३ आदित्य व्रत कथा—भा० टी० ०-१९
१०३४ तिहास—गुरु खालसा हिन्दी ५-००
१०३५ उत्तर काशी माहात्म्य ०-३१
१०३६ ऋषि पञ्चमी व्रत कथा—भा० टी० ०-५०
१०३७ एकादशी माहात्म्य— भा० टी० ३-०
१०३८ एकादशी महात्म्य केवल भाषा ०-७५
१०३८क करवा चतुर्थी—भा० टी० ०-२५
१०३९ कृष्ण जन्माष्टमी—भा० टी० ०-३७
१०४० कार्तिक महात्म्य—भा० टी० १-५०, २-०, ३-०
१०४१ कार्तिक महात्म्य—३५ अध्याय क्षेमंकारी ४-५०
१०४२ कार्तिक शुक्ल रविषष्ठी व्रत कथा ०-१९
१०४३ काशी यात्रा—भाषा, सचित्र ०-८७
१०४४ काशीपुरी महात्म्य—पंचकोशी महात्म्य दोहा ०-४४
१०४५ काशी केदार महात्म्य—भा० टी० ३-००
१०४६ कुरुक्षेत्र महात्म्य ०-१९
१०४७ कोकिला महात्म्य १-२५
१०४८ गणेश चतुर्थी माघ मास—हिन्दी टीका ०-१३
१०४९ गणेशचतुर्थी भाद्र मास—हिन्दी टीका ०-१३
१०५० गया महात्म्य—गया पद्धति सहित—हिन्दी टीका १-७५
१०५१ गया महात्म्य—मूल ०-८७
१०५२ गोदावरी महात्म्य—गौतमी महात्म्य ३-५०
१०५३ चन्दनषष्ठी—सूर्यषष्ठी कथा हिन्दी टीका सहित ०-२५
१०५४ चान्द्रायण व्रत कथा—हिन्दी टीका सहित ०-३१
१०५५ चित्रगुप्त कथा—हिन्दी टीका ०-१३
१०५६ चित्रगुप्तयमद्वितीया व्रतकथा ०-३७
१०५७ जगन्नाथ महात्म्य पुरुषोत्तम महात्म्य—बड़ा २-५०
१०५८ जन्माष्टमी व्रतकथा—भा० टी० ०-३७
१०५९ जीवित्पुत्रिका—व्रतकथा—भा० टी० ०-१९
१०६० ज्येष्ठमासमहात्म्य—भा० टी० ३-००
१०६१ द्वादश ज्योतिर्लिंग यात्रा २-००
१०६२ पञ्चकोशी यात्रा ०-३१
१०६३ पर्वोत्सव विवरण भाषा १-५०
१०६४ पुरुषोत्तम महात्म्य—भा० टी० अधिक ३-०, २-७५
१०६५ प्रयाग कल्पवास ०-२५
१०६६ प्रयाग महात्म्य ०-७५
१०६७ प्रेमसागर—भाषासचित्र २-०, २-५०, ३- ४-००
१०६८ प्रेमसुधासागर—भाषा सचित्र गोरखपुर ३-५०
१०६९ फाल्गुन महात्म्य—मूल १-२५
१०७० बदरीनारायणमहात्म्य—स्कन्दपुराणान्तर्गत १-२५
१०७१ बदरीनारायण महात्म्य—सनत्कुमार संहिता १-२५
१०७२ बहुला व्रतकथा—भा० टी० ०-१९
१०७३ बृहदाष्टमी व्रतकथा—भा० टी० ०-३१
१०७४ भक्तमाल—नाभाजी सटीक ३-५०
१०७५ भक्तमाल—रामरसिकावली कवित्त दोहा १०-००
१०७६ भक्तमाल—केवल भाषा १०-००
१०७७ भगवन्नाम महात्म्य—रघुनाथेन्द्रकृत सव्याख्या १-३७
१०७८ भारत की तीर्थ यात्रा— ६-५०
१०७९ भाद्रपद गणेश चतुर्थी—भा० टी० ०-१९
१०८० भाद्रपद महात्म्य—मूल १-००
१०८१ भारतीय व्रतोत्सव—हिन्दी ३-००
१०८२ भीष्मपञ्चक व्रत प्रयोग ०-२५
१०८३ भुवनेश्वरी कथा—मूल गुजराती अनुवादसहित २-५०
१०८४ मङ्गला गौरी व्रत कथा—भा० टी० ०-२५
१०८५ महालक्ष्मी व्रतकथा— भा०टी० ०-२५
१०८६ माघ महात्म्य—भा०टी०, ३, २-२५ २-५०
१०८७ माघ भादो गणेश चौथ ०-१९
१०८८ मुक्ता भरण सप्तमी—भा० टी० ०-२५
१०८९ मिथिला महात्म्य ०-३७
१०९० मार्गशीर्ष महत्म्य—भा० टी० ३-००
१०९१ यम द्वितीय कथा ०-१९
१०९२ यज महात्म्य—भा० टी० ०-३१
१०९३ रविषीष्ठ व्रत कथा—भा० टी० ०-१३
१०९४ रामनवमी व्रतकथा— ०-१९
१०९५ रेवा खण्ड—स्कन्द पुराणान्तर्गत ७-००
१०९६ वट सावित्री व्रत कथा—भा० टी० ०-३७
१०९७ वामन द्वादशी व्रत कथा— वायुनन्दन ०-१९
१०९८ विश्राम सागर— ५-००
१०९९ व्यतीपात कथा—मूल ०-१९
११०० व्यतीपात कथा—भा० टी० ०-३७
११०१ व्रत रत्नाकर—प्रथम भाग २-००
११०२ व्रतराज—भा० टी० १६-००
११०३ व्रतार्क—भा० टी० ८-००
११०४ व्रतोत्सव कोमुदी ०-८७
११०५ व्रत कल्पद्रुम—सूरत २-५०
११०६ वैशाख महात्म्य—भा० टी० ३-००
११०७ शनिप्रदोष—पक्षप्रदोष व्रत कथा—भा० टी० ०-२५
११०८ शिवरात्री व्रत कथा—भा० टी० ०-१३
११०९ शिवरात्रि महात्म्य—भा० टी० ०-७५
१११० श्रावण मास महात्म्य—भा० टी० ४-००
११११ सङ्कट गणेश चतुर्थी व्रत कथा—मूल ०-४४
११११क संकट गणेश चतुर्थी भा० टी० ०-७५, १-२५
१११२ सत्यनारायण इतिहास समुच्चय—०-६२, १-००
१११३ सत्यनारायण पूजा कथा—मूल ०-२५
१११४ सत्यनारायण—व्रतकथासप्ताध्यायी भा०टी० ०-४४
१११५ सत्यनारायण कथा—भा० टी० ५ अध्याय ०-३१
१११६ सत्यनारायण—भा०टी०५ अध्याय वायुनन्दन ०-३७
१११७ सत्यनारायण कथा—भाषा राधेश्याम ०-५०
१११८ सावित्री व्रत कथा—भा० टी० ०-३७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१११९ सेतु महात्म्य ३–५०
११२० सोमवती अमावस्या कथा—भा० टी० ०–५०
११२१ सोमावती कथा—भा० टी० ०–३१
११२२ हरितालिका व्रत कथा—भा० टी० ०–२५
११२३ हरिलीलामृत—बोपदेव १–५०
११२४ हमारे त्योहार–डा० व्रजमोहन भाषा १–५०
११२५ हलषष्ठी व्रत कथा—भा० टी० ०–१३
११२६ होलिका कथा—भा० टी० ०–१९

वेदान्त

(शांकर, रामानुज, वल्लभाचार्य आदि)

११२७ अच्युत लेखमाला–विद्वानों के लेख हिन्दी २–००
११२८ अणु भाष्य–प्रकाश व्याख्या काशी २२–५०
११२९ अणुभाष्य–वल्लभाचार्य प्रणीत श्रीधरकृत बालबोधिनी टीका सहित दो भागों में ६–२५
११३० अद्वैत चिन्तामणि–रङ्गोजी भट ०–८७
११३१ अद्वैत मकरन्द–लक्ष्मीधर ०–५६
११३२ अद्वैत ब्रह्म सिद्धि–(सदानन्द यदि) ४–६९
११३३ अद्वैतरत्नरक्षणम्–(मधसूदन सरस्वती) ०–७५
११३४ अद्वैत रत्नाकर–(अमरदास विरचित) स्वकृत रत्नाभा व्याख्या तथा भाषा टीका सहित ०–६२
११३५ अद्वैतरस मञ्जरी–(सदाशिव) लघुविवरण ०–६२
११३६ अद्वैत तत्त्व शुद्धि–अद्वैतामोदादि परीक्षा पर्याय–म० म० अनन्त कृष्ण शास्त्री कृत १५–००
११३७ अद्वैत नवनीतम्–श्री कृष्णावधूत कृत ३–००
११३८ अद्वैत विद्यातिलक–(समरपुङ्गव) सटीक ०–६२
११३९ अद्वैत सिद्धान्त विद्योतन ०–८७
११४० अद्वैत सिद्धान्तसारसंग्रह–नारायणश्रम प्रणीत ०–७५
११४१ अद्वैत सिद्धान्त सार संग्रह–सदानन्द ४–५०
११४२ अद्वैत सिद्धि–(मधुसूदन सरस्वती) गौड़ ब्रह्मानन्दी, विट्ठलेशीयोपाध्यायी तथा सिद्धि नामक व्याख्याओं व अनन्त कृष्ण शास्त्री संग्रहीत न्यायामृताद्वैतसिद्धि तरङ्गिणी लघु चन्द्रिका सहित २५–००
११४३ अद्वैत सिद्धि–गुरु चन्द्रिका टीका २, ३ भाग ७–२५
११४४ अद्वैतामोद–वासुदेव शास्त्री प्रणीत ३–००
११४५ अद्वैतामृत–भा० टी० १–००
११४६ अधिकरण सारावली–श्री वेदान्ताचार्य १–२५
११४७ अध्यात्म प्रकाश—भाषा ०–३७
११४८ अध्यात्म विद्योपदेशविधि–शंकराचार्यप्रणीत ०–३७
११४९ अध्यात्म विनोद—भाषा ०–६२
११५० अनुभूति प्रकाश—विद्यारण्य विरचित मूल २–००
११५१ अनुभव प्रकाश–(बनानाथ कृत) हिन्दी पद्योंमें १–७५
११५२ अनुव्याख्यानम (मध्व सम्प्रदाय) ६–००
११५३ अपरोक्षानुभूति–शंकराचार्य विरोचत सटीक ०–५०
११५४ अपरोक्षानुभूति–भा० टी० बम्बई १–२५
११५५ अपरोक्षानभूति–हिन्दी टीका सहित गोरखपुर ०–१५
११५६ अभ्यास योग—श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल सजिल्द २–२५
११५७ अष्टावक्र संहिता–(अष्टावक्र)–जीवानन्द १–२५
११५८ अभिलाष सागर—भाषा ४–००
११५९ आत्मबोध–(शंकराचार्य) अन्वय–भाषार्थसहित ०–५०
११६० आत्मपुराण–संस्कृत टीका खुला पन्ना २५–००
११६१ आत्म तत्वविवेक–(उदयनाचार्य) जीवानन्द २–५०
११६२ आत्म-प्रबोध–स्वामी विष्णु तीर्थ–भाषा १–००
११६३ आत्म विद्या विलास–(सदाशिवेन्द्र सरस्वती) ०–२५
११६४ आत्मानात्म विवेक–आत्म बोध–शंकराचार्य ०–४७
११६५ आत्मानुसन्धान और आत्मानुभूती–भूपेन्द्रनाथ ०–७५
११६६ आनन्दामृत वर्षिणी–स्वामी आनन्दगिरि भाषा २–००
११६७ अभोग कल्पतरु–व्याख्या–लक्ष्मी नृसिंह कृत २०–००
११६८ ओंकारमहिमाप्रकाश–(ऊंकार से वर्णाक्षर) १–५०
११६९ उपदेश साहस्त्री–(भागवत्पादाचार्य) श्री रामतीर्थ कृत पदयोजनिका व्याख्या सहित २–००
११७० उपदेश साहस्री–(शंकराचार्य प्रणीत) भा०टी० २–००
११७१ उपाधि खंड–श्री आनन्द तीर्थ विरचित २–५०
११७२ उपासना–योगानन्द सरस्वती (आलू बाबा) ०–७५
११७३ कल्याण का मार्ग–श्री योगानन्द जी २–२५
११७४ काय बोध–(दत्तात्रेय समुदायानुगत)–सटीक ०–५०
११७५ कायपरिशुद्धि–वासुदेव शास्त्री प्रणीत २–००
११७६ क्रम दीपिका—केशव भट ४–५०
११७७ क्रियासार–नीलकंठ शिवाचार्य विरचित ३ भाग
११७८ कुण्डलिया–गिरधर– (१०० कुण्डलिया छंद) ०–१९
११७९ कुंडलिया–गिरधर (नीति, वैराग्य उपदेश आदि विषयक ४५७ कुण्डलिया छंद) बंबई १–००
११८० कृष्णोपदेश–(भगवद्गीता भाषा छंदों में) ०–७५
११८१ खण्डनखण्डखाद्य (अनिर्वचनीयता सर्वस्व) श्री हर्ष प्रणीत शंकर चैतन्य भारती कृत शारदा टीका सहित दो भागों में १४–००
११८२ खण्डन परिशिष्ट–ताराचरण ०–५०
११८३ गुरु कृपा–श्री निवासाचार्य विरचित २–२५
११८४ गूढार्थ दीपिका–धनपति सूरी ६–००
११८५ चन्द्रकान्त–(वेदान्त) भाषा इच्छाराम सूर्यराम देसाई ३ खंडों में ३०–००
११८६ चण्डिकोरित्त दीपिका–(उपोद्घात प्रकाश) ४–५०
११८७ चर्पटपंजरिका–स्वा० योगानन्द हिन्दी विवेचना १–५०
११८८ चैतन्य चरितावली–५ भाग सचित्र ४–३७
११८९ जप्पजी साहब–स्वा० परमानन्द कृत हिं०टी० २–२५
११९० ढाईहजार अनमोलबोल–हिन्दी ०–६२
११९१ तत्वचिन्तामणि–भा० टी० जयदयाल ५–९४
११९२ तत्वदीपन–(पञ्च पादिका विवरण पर व्याख्या) अखंडानन्द मुनि कृत ८–००
११९३ तत्वप्रकाशिका व्याख्या भावबोध–रघुत्तम यतिकृत
११९४ तत्वप्रदीपिका–(चित्सुखी) नयन प्रसादिनी व्याख्या तथा स्वा० योगीन्द्रानन्द कृत सटिप्पण सरल हिन्दी अनुवाद सहित काशी १२–००
११९५ तत्वबोध–शंकराचार्य भा०टी० ०–३७, ०–२५, ०–३१
११९६ तत्वमुक्ताकलाप–सर्वार्थसिद्धिवृत्ति तथा आनन्ददायिनी भाव प्रकाश व्याख्या १–४ भाग २४–७५
११९७ तत्वबिन्दु–वाचस्पति मिश्र ०–५०
११९८ तत्व सन्दर्भ–भा० टी० १–५०
११९९ तत्वत्रयम–(विशिष्टाद्वैत) लोकाचार्य भाष्य ३–००
१२०० तत्वार्थदीप निबन्ध–शास्त्रार्थ प्रकरण
१२०१ तत्वानुसंधान–भाषा स्वामी चिदघनानन्द ७–००
१२०२ तत्वसार—रत्नसारिणी व्याख्या सहित ६–००
१२०३ तर्कताण्डव–व्यास तीर्थ विरचित श्री राघवेन्द्र कृत न्यायदीप व्याख्या सहित ४ भाग ९–२५
१२०४ त्रिदण्डिमत विभेदिनी—शंकराश्रम ३–००
१२०५ दर्शन सर्वस्व–शंकर चैतन्य भारती प्रणीत २–२५
१२०६ दश श्लोकी–(शंकराचार्य) भा० टी० ०–२५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१२०७ [illegible] ज्ञानमाला–भाषा वेदान्तीजी [illegible]
१२०८ दहरविद्या प्रकाशिका–(शिवेन्द्र सरस्वती) ०–५०
१२०९ दक्षिणामूर्ति संहिता ०–८१
१२१० दास बोध–भाषा ३–००
१२११ दिनचर्या–श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल कृत १–५६
१२१२ दीक्षा और गुरुतत्व–श्रीभुपेन्द्रनाथ सान्यालकृत १–५६
१२१३ दृष्टान्त दीपक––(दृष्टान्त संख्या ४३२) भाषा २–०
१२१४ दृष्टान्त मंजूषा–भाषा स्वा० परमानन्द २–००
१२१५ द्वैताद्वैत विवेक १–२५
१२१६ ैत निर्णय सिद्धान्तसंग्रह १–१३
१२१७ ैताध्वकण्टकोद्धार–श्री नागराज विरचित २–००
१२१८ नय मंजरी–श्री अप्पय दीक्षित २–२५
१२१९ न्यायामृततरंगिणी–श्री रामचार्य प्रणीत– १६–२५
१२२० न्यायामृत लहरी–अथवा परतत्त्वभ्रमनिरासनक्षत्र १–२५
१२२१ न्याय परिशुद्धि–सटीक–वेदान्ताचार्य ७–५०
१२२२ न्याय भास्कर खंडन–मध्व चान्द्रिका खंडन १–५०
१२२३ न्याय मकरंद–आनन्द बोध व्याख्या ६–००
१२२४ न्याय रक्षामणि–(अप्पय दीक्षित कृत ब्रह्मसूत्र प्रथम अध्याय व्याख्या) ७–००
१२२५ नवधा भक्ति–हिन्दी ०–१३
१२२६ नारद भक्ति सूत्र–भा० टी० ०–१९
१२२७ नारायणीयं–भक्त प्रिया व्याख्या सहित ४–७५
१२२८ नैष्कर्म सिद्धि–सुरेश्वराचार्य ज्ञानोत्तम कृत चन्द्रिका एम० हिरीयाना प्रणीत अंग्रेजी भूमिका ३–००
१२२९ नैष्कर्म सिद्धि–सरल हिन्दी टीका सहित काशी १–७५
१२३० निर्भय विलास–भाषा पद्य २–५०
१२३१ नित्या चार दर्पण––स्वामी ब्रह्मानन्द भाषा १–००
१२३२ पञ्चरत्नकारिका––सदाशिव ०–८७
१२३३ पंचकोश विवेक–स्वा० योगानन्द (अल्लू बाबा) १–५०
१२३४ पञ्चदशी–रामकृष्ण टीका पुराना छापा लखनऊ १–५०
१२३५ पञ्चदशी–रामकृष्णकृत व्याख्या सहित गुटका ३–००
१२३६ पञ्चदशी––(विद्यारण्य) रामकृष्ण व्याख्या, टिप्पणी पाठान्तर, श्रुतिकोश, श्लोक विषय सूचि तथा नन्दगिरी कृत भूमिका सहित ६–५०
१२३७ पंचदशी––(विद्यारण्य) रामकृष्ण व्या० ४–००
१२३८ पंचदशी–(विद्यारण्य) पीताम्बरजी कृत तत्व प्रका-
१२३९ पंचदशी––केवल भाषा श्री आत्मस्वरूप ६–००
१२४० पंचदशी–पं० रामावतार कृत हिन्दी टीका ६–००
१२४१ पञ्चदशी––पं० मिहिरचंद कृत हिन्दी टीका ६–००
१२४२ पञ्चदशी–(विद्यारण्य) संक्षिप्त हिन्दी भावार्थ १–००
१२४३ पंचप्रक्रिया––(सर्वज्ञात्म विरचित) आनन्दज्ञान प्रणीत पूर्ण टीका विद्या मुनि व्या० २–८७
१२४४ पंचामृत––स्वामी मंगलदास भाषा पद्य ०–५०
१२४५ पंचीकरण––छ संस्कृत टीका बम्बई १–७५
१२४६ पंचीकरण––केवल भाषा २–००
१२४७ परतत्त्वभ्रमनिरासन नक्षत्र माला– १–००
१२४८ परमार्थ पत्रावली––भाषा जयदयाल १–५०
१२४९ परमार्थ प्रकाशिका––(अद्वैतामोद परिशीलन) ५–००
१२५० परमार्थ सार––आदिशेष विरचित सं०टीका ०–५०
१२५१ परमेश्वर प्रार्थना––स्वामी ब्रह्मानन्द ०–१९
१२५२ परपक्ष गिरिवज्र––संस्कृत टीका ९–००
१२५३ पक्षपात रहित–अनुभव प्रकाश स्वामी विशुद्धानन्द जी–काली कमली वाले ८–००
१२५४ प्रकरणपञ्चक–श्री शंकराचार्य (आत्मबोध–प्रबोधानुभूति–तत्त्वो०) भा० टी० ०–७५
१२५५ प्रणवकल्प–(स्कन्दपुराणान्तर्गत) प्रकाश भाष्य १–५०
१२५६ प्रपन्नामृत–अनन्ताचार्य प्रणीत ५–००
१२५७ प्रत्यक्तत्त्व चिन्तामणि–सदानन्द व्यासकृत तथा स्वोपज्ञ व्याख्या सहित ५–००
१२५८ पंचपादिका तथा पंचपादिका विवरण व्याख्या २८–७५
१२५९ पुरुषार्थसुधानिधि–सायणाचार्य विरचित १४–००
१२६० पूजातत्व–म० म० श्री गोपीनाथ जी कविराज द्वारा प्रकाशित अध्यात्म जीवन व साधकों के लिए अत्यन्त उपयोगी ४–००
१२६१ प्राणसंगली–श्री गुरुनानक साहिब–संत सम्पूर्ण सिंह जी कृत टिप्पणी सहित ३ भाग में ८–००
१२६२ प्रकरणग्रन्थसंग्रह–श्रीशंकराचार्य के अनेक ग्रन्थ १२–५०
१२६३ प्रकटार्थ विवरणम्–(ब्रह्मसूत्र शांकर भाष्य व्याख्या) द्वितीय भाग–(२–३.१ से ४–४–२२) ८–००
१२६४ प्रमेय रत्नावली–बलदेव कृत २–५०
१२६५ प्रस्थान भेद–मधुसूदन सरस्वती कृत ०–२५, ०–३१
[illegible] प्रस्थान रत्नाकर–(पुरुषोत्तमजी) २–००
१२६७ प्रज्ञानन्द प्रकाश––भाषा ३–००
१२६८ प्राणतत्व –भाषा १–००
१२६९ प्रेमपत्तन–चैतन्य सम्प्रदाय सव्याख्या १–२५
१२७० प्रेम योग––वियोगी हरी हिन्दी १–५०
१२७१ प्रेम दर्शन–भा० टी० (भक्तिसूत्र) ०–३१
१२७२ पूर्णप्रज्ञदर्शन–मध्वभाष्य जिल्द २–२५
१२७३ पूर्वोत्तर मीमांसावादनक्षत्र माला–अप्पय दीक्षित ३–५०
१२७४ बिल्वदल–भूपेन्द्रनाथ सान्याल (हिन्दी)–जीवनोत्कर्ष के लिए ७० लेख––दो भाग ५–५०
१२७५ बोधसार–नरहरि–दिवाकर कृत सं०टी० १५–००
१२७६ बृहदारण्यक वार्तिकसार––लघु संग्रह १५–००
१२७७ बृहदारण्यक वार्तिकसार––श्री विद्यारण्य मुनि विरचित–भा० टी० सहित दो भाग १२–००
१२७८ ब्रह्मदर्पण–भाषा उपन्यास–बा० जालिम सिंह ०–७५
१२७९ ब्रह्मवाद संग्रह–शुद्धाद्वैत परिष्कार (वल्लभाचार्य सम्मत)––भा० टी० १–००
१२८० ब्रह्ममीमांसा भाष्य–अर्थात् निम्बार्काचार्य प्रणीत ब्रह्मसूत्र पर वेदान्त पारिजात सौरभ भाष्य १–५०
१२८१ ब्रह्मानन्द पद मञ्जरी–स्वा० ब्रह्मानन्द ०–३७
१२८२ ब्रह्मसिद्धि–मंडनमिश्र–शंखपाणि व्याख्या ७–७५
१२८३ ब्रह्मसूत्र–शांकरभाष्य–पाठान्तर, टिप्पणी मूल ८–००
१२८४ ब्रह्मसूत्र–शांकरभाष्य–भामती, कल्पतरु–परिमल व्याख्या तथा सूत्र, भाष्य उद्धृत वचन कोश २८–००
१२८५ ब्रह्मसूत्र–शंकर–आनन्दगिरि २ भाग पूना १८–००
१२८६ ब्रह्मसूत्र–शांकरभाष्य, रत्नप्रभा, भामती, न्याय २०–००
१२८७ ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य–चतुःसूत्र्यन्त पूर्णानन्दीयव्याख्या द्वितीय अध्याय द्वितीय पाद तक ८–००
१२८८ ब्रह्मसूत्र शांकर भाष्यम्–चतुःसूत्र्यन्त पूर्णानन्दीय व्याख्या––श्री गोविन्दानन्द प्रणीत रत्नप्रभा व्याख्या तथा वाचस्पति मिश्र कृत भामती ११–००
१२८९ ब्रह्मसूत्र–विज्ञान भिक्षुभाष्य सम्पूर्ण ९–००
१२९० ब्रह्मसूत्र–भाष्य निर्णय–श्री चिद्घनानन्द पुरी विरचित तृतीयपाद तक ५–६२
१२९१ ब्रह्मसूत्र–भास्करभाष्य ४–५०
१२९२ ब्रह्मसूत्रवृत्ति–(ब्रह्मतत्त्वप्रकाशिका) सदाशिवेन्द्र ३–५०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१२९३ ब्रह्मसूत्रीयवेदान्तवृत्ति–श्री रामानन्दप्रणीद १–२५
१२९४ ब्रह्मसूत्र–तात्पर्य विवरण श्री भैरव शर्मा २–२५
१२९५ ब्रह्मसूत्र––मर्र.चिका वृत्ति ३–००
१२९६ ब्रह्मसूत्र दं.पिका–शंकरानन्द विरचित ३–००
१२९७ ब्रह्मसूत्र–सुन्दर भट द्वैताद्वैतसिद्धान्त सेतुका वत्ति तथा देवाचार्य प्रणीत सिद्धान्त जान्हवी टीका सहित ४–५०
१२९८ ब्रह्मसूत्रवृत्ति–शंकर शिष्य प्रणीत अद्वैत मंजरी १–००
१२९९ ब्रह्मसूत्र–शांकरभाष्य (चतुः सूत्री भामती तथा पं० लक्ष्मीनाथझाकृत प्रकाश विकास टीका ५–००
१३०० ब्रह्मसूत्र–शांकर भाष्यार्थरत्नमाला सुब्रह्मण्यकृत ६–२५
१३०१ ब्रह्मसूत्रवत्ति–हरिदीक्षित कृत ३–७५
१३०२ ब्रह्मसूत्रवृत्ति–मिताक्षरा अन्नमभट ७–००
१३०३ ब्रह्मसूत्र–शांकर भाष्य (चतुः सूत्री) भामती कल्पतरु परिमल सहित ४–५०
१३०४ ब्रह्मसूत्र–सिद्धान्त मुक्तावली वनमालि विर० ३–७५
१३०५ ब्रह्मसूत्र–ब्रह्मामृतवर्षिणी ६–७५
१३०६ ब्रह्मसूत्र–श्रीगं चिन्दानन्द कृत भाष्यार्थ प्रदीपिका (हिन्दी) टीका सहित (प्रथमाध्याय मात्र) ४–००
१३०७ ब्रह्मसूत्र–भाष्य सिद्धान्त संग्रह १–५०
१३०८ ब्रह्मसूत्र–रत्नप्रभा भोले बाबाकृत हिन्दी अनुवाद सहित केवल तीसरा भाग ५–५०
१३०९ ब्रह्मसूत्र–शंकरभाष्य का ठीक हिं०अनु०सम्पूर्ण ६–००
१३१० ब्रह्मसूत्र–शांकर भाष्य (चतुः सूत्री) भाषानुवाद २–२५
१३११ ब्रह्मसूत्रभाष्य–श्री कंठाचार्यकृत शिवार्कमणदीपक सहित सम्पूर्ण दो भागों में २५–००
१३१२ ब्रह्मसूत्र–मराठी टीका सहित ३ भाग में ३६–००
१३१३ बोधैक्य सिद्धि–अच्युतराय सटीक ६–००
१३१४ भक्त नामावली ०–१९
१३१५ भक्ति चन्द्रिका– शांडिल्य सूत्र व्या० दो भाग १–२२
१३१६ भक्ति चन्द्रिका–भाषा पद्यात्मक–गणेश सिंह १–००
१३१७ भक्ति दर्शन (शाण्डिल्य)–स्वामी ज्ञानानन्दाकृत १–२५
१३१८ भक्ति निर्णय–(अनन्तदेव) तथा नाम महात्म्य ०–३१
१३१९ भक्तिप्रकाश–पौराणिक–भा० टी० गोपालदास २–००
१३२० भक्त्यधि करण माला–(नारायण तीर्थकृत) ०–६२
१३२१ भक्ति मुक्तावली–गुरुपाद शेखर कृत १–००
१३२२ भक्ति रसायन–मधुसूदन–सटीक ३–००
१३२३ भक्ति रसामृत सिन्धु–(रूप गोस्वामी) सटीक ४–००
१३२४ भगवन्नाम कौमुदी–लक्ष्मीधर कृत–प्रकाश टीका ०–७५
१३२५ भगवन्नाम महात्म्य–(रघुनाथ यति) सटीक १–३७
१३२६ भगवत चर्चा–हनुमान दास पोद्दार–६ भाग सादा ४–६ जिल्द ६–३१
१३२७ भक्तपदी–हिन्दी हरदत्त शर्मा १–००
१३२८ भगवद्भक्ति रसायन–(मधुसूदन सरस्वती) विद्यानन्द कृत 'रसधारा' हिन्दी व्याख्या सहित २–००
१३२९ भगवान पर विश्वास–भाषा ०–२५
१३३० भव रोग की रामबाण दवा–भाषा ०–३१
१३३१ भामती–(ब्रह्मसूत्रशंकरभाष्यव्याख्या) वाचस्पति ३–५०
१३३२ भावरसामृत–(संत गुलाब सिंह) भाषा पद्यात्मक ०–३७
१३३३ भावरसामृत–बोधप्रकाश स्वा० गुलाबसिंह ०–५६
१३३४ भेद जयश्री–(वेणीदत्ताचार्य) माध्वद्वैतवाद ग्रंथ ०–६२
१३३५ भेदधिक्कार–नृसिंहाश्रम कृत ३–००
१३३६ भेदरत्न–शंकर मिश्र ०–७५
१३३७ भेद साम्राज्य–श्री रंग रामानुज विरचित १–५०
१३३८ मध्वतन्त्र मुख मर्दन–अप्पय दीक्षित विरचित २–५०
१३३९ मध्वतन्त्रमुख मर्दन–अप्पय दीक्षित कृत १–५०
१३४० मध्व मुखालंकार–वनमालि मिश्र विरचित ०–७५
१३४१ मध्व मंत्र रत्नाकर–टी० आर० कृष्णाचार्य ५–००
१३४२ मणिरत्नमाला–स्वा योगानंदकृत भाषा विवेचन ३–०
१३४३ महानय प्रकाश–शितिकंठ (शाक्त मत) ०–६२
१३४४ महावाक्यरत्नावली–(दर्शनोपनिषत्सार भूत) ०–५०
१३४५ महावाक्यरत्नावली–अष्टोत्तरशतोपनिषत्सार ०–३७
१३४६ महावाक्य विवरण–भा० टी० १–१३
१३४७ मानमाला–रामानन्द व्याख्या
१३४८ मायावाद खंडन–आनन्दतीर्थ (पत्रात्मक) १–५०
१३४९ मोक्षसाधन और योगाभ्यास सान्याल ०–३७
१३५० मुमुक्षु का मनन–(हिन्दी) ऋ० कु० रामचन्द्र शर्मा
१३५१ यतीन्द्रमत दीपिका–श्रीनिवासदास प्रकाश व्या.स. २–०
१३५२ यतीन्द्रमत दीपिका–सटिप्पण ०–४४
१३५३ योग रसायन भाषा १–२५
१३५४ योगवासिष्ठ–तात्पर्य प्रकाश–सं०टी० खुला २२–००
१३५५ योगवासिष्ठ–भा०टी० सम्पूर्ण ५ भाग में स्थूलाक्षर ४८–०० प्रथम भाग के अतिरिक्त अन्य भाग पृथक २ भी मिलते हैं द्वितीय १०–००, तृतीय १०–० चतुर्थ १०–०० पांचवां ८–००
१३५६ योगवासिष्ठ–भ.षा–२ भाग में बम्बई २५–००
१३५७ योगवासिष्ठ–हिन्दी भाषा २ भाग लखनऊ २२–००
१३५८ योगवासिष्ठ–सार भाषा वार्तिक बम्बई ४–५०
१३५९ यो.वासिष्ठ और उसके सिद्धान्त–डा० आत्रेय १०–००
१३६० योगानन्द सत्संग–भाषा पद्य-सरलानुवाद सहित २–५०
१३६१ युक्तितत्व समीक्षा ४–५०
१३६२ युक्तिप्रकाश–भाषा साधु निश्चलदास २–००
१३६३ रत्नपञ्चक–शंकराचार्य प्रणीत–सभाष्य ०–३७
१३६४ लघुयोगवासिष्ठ–वासिष्ठ चन्द्रिका व्याख्या सहित ६–०
१३६५ लघुवासुदेव मनन––कृष्ण स्वामी अय्यर कृत विवेचनात्मक अंग्रेजी भूमिका १–३७
१३६६ लघुवासुदेवमनन–(भाषा)–वासुदेव यतीन्द्र विरचित अद्वैत सिद्धान्त ग्रंथ ०–८७
१३६७ लोक परलोक सुधार-भाषा ५ भाग २–२५
१३६८ वल्लभाचार्य–जीवन चरित्र, तत्वबोध
१३६९ व्याख्यान रत्नमाला–पं० बलदेवप्रसाद मिश्र ३–५०
१३७० वाक्य सुधा–योगानन्द कृत भाषा विवेचन सहित १–५०
१३७१ वाक्यवृत्ति–शंकराचार्यप्रणीत–विश्वेश्वर टी० ०–७५
१३७२ वाक्य वृत्ति–स्वा० योगानन्द कृत भाषा विवेचन १–५०
१३७३ वादावलि–पुरुषोत्तम आदि गोस्वामी विरचित २–००
१३७४ विचार–चन्द्रोदय–पीताम्बरी भाषा बम्बई ३–००
१३७५ विचार चन्द्रोदय–स्वा० निगमानन्द सरल हिन्दी १–२५
१३७६ विचार दीपक–ब्रह्मानन्द स्वामी–भाषा २–००
१३७७ विचार माला–स्वा० गोविन्द दास सटीक २–००
१३७८ विचार माला–अनाथदास जी कृत ०–३७
१३७९ विचार माला–तथा कुण्डलिया गिरधर ०–४४
१३८० विचार सागर–निश्चलदास प्रणीत–निगमानन्द परमहंसकृत सरल हिन्दी व्याख्या सहित नेट ३–५०
१३८१ विचार सागर–पीताम्बर टीका बम्बई १०–००
१३८२ विचार सागर–निश्चल दास–वृत्तिरत्नावलि मथुरा ८–०
१३८३ विद्वन्मण्डन–विट्ठलनाथ दीक्षित–सुवर्णसूत्र व्या ३–५०
१३८४ विवरणोपन्यास–रामानन्द सरस्वती– ३–००
१३८५ विवरण प्रमेय संग्रह–(विद्यारण्य) हिन्दीटीका ६–००
१३८६ विवरणादि प्रस्थान विमर्श–पं० वीरमणि १–००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१३८७ विवेक मार्तण्ड—विश्वरूपदेव ०—६२
१३८८ विवेक चूडामणि—शंकराचार्य जीवानंद संपादित ०—४७
१३८९ विवेक चूडामणि—भा० टी० बम्बई २—२५
१३९० विवेक चूडामणि—भा० टी० गोरखपुर ०—३१
१३९१ विषयवाक्यदीपिका—रंगरामानुज ५—००
१३९२ विशिष्टाद्वैताधिकरण माला—पं० सुदर्शनाचार्य १—००
१३९३ विशिष्टाद्वैतमत विजयवाद ०—०६
१३९४ वेद स्तुति—(भागवत) संस्कृत हिन्दी टीका २—२५
१३९५ वेद स्तुति—सीताराम कृत भाषानुवाद सहित ०—८७
१३९६ वेदान्त कौमुदी—रामाद्वयाचार्य प्रणीत—(ब्रह्मसूत्र शांकर भाष्य चतुःसूत्री की विषद व्याख्या) १३—५०
१३९७ वेदान्त कौस्तुभ—प्रभा सटीक ९—००
१३९८ वेदान्त छन्दावली—५ भाग—भोले बाबा हिन्दी २—३७
१३९९ वेदान्त तत्व विवेक—(नृसिंहाश्रम) स्वकृत तत्वविवेक दीपन तथा अग्निहोत्र प्रणीत पूरणी व्या० १५—००
१४०० वेदान्त दर्शन—भा० टी० स्वामी दर्शनानंद ३—००
१४०१ वेदान्त दर्शन—ब्रह्ममुनि भाष्य सहित ३—००
१४०२ वेदान्त दर्शन—(माधवाचार्य)—श्री भाष्यानुसार वेदांत पदार्थ प्रकाश भाषा व्याख्या सहित २—५०
१४०३ वेदान्त दर्शन—भा० टी० गोरखपुर २—००
१४०४ वेदान्त दर्शन—(भाष्य भूमिका तथा चतुःसूत्री के समन्वय भाष्य का हिन्दी संस्करण) ०—७५
१४०५ वेदान्तदर्शन—(ब्रह्मसूत्र की भूमिका) म० म० गोपीनाथ कविराज १—००
१४०६ वेदान्त दीपिका—स्वा० योगानंद जी कृत—भाषा २—५०
१४०७ वेदान्त दीप—(बादरायण सूत्रों की व्याख्या) रामानुजाचार्य विरचित ४—५०
१४०८ वेदान्त देशिक ग्रन्थमाला— ५०—००
१४०९ वेदांत परिभाषा—अर्थ दीपिका सहित २—००
१४१० वेदांत परिभाषा—(धर्म राजा ध्वरीन्द्र)—पेद्दादीक्षित कृत प्रकाशिका व्याख्या सहित २—५०
१४११ वेदांत परिभाषा—शिखामणि, मणिप्रभा दो सं० टी० ६—००
१४१२ वेदान्त परिभाषा हिन्दी टीका सहित २—२५
१४१३ वेदांत रत्न मंजूषा—(निम्बार्काचार्य विरचित दशश्लोकी की व्याख्या)—पुरुषोत्तमाचार्य ३—००
१४१४ वेदांत रत्न मंजूषा—सं० हि० टीका सहित ५—७५
१४१५ वेदांत रत्नावली—स्वामी भोले बाबा—(भाषा) ०—५०
१४१६ वेदांत रहस्य—वागीश भट्टाचार्य ०—०६
१४१७ वेदांत रहस्य—आलू बाबा—भाषा ०—८७
१४१८ वेदांत सूत्र मुक्तावलि—ब्रह्मानंद सरस्वती—पूना ३—५६
१४१९ वेदांत सभा—भा० टी० ०—८७
१४२० वेदान्त सजावली— १—००
१४२१ वेदान्तसार—(सदानन्द) भावबोधिनी सं० हि० १—५०
१४२२ वेदांतसार—जयाख्य संस्कृत टीका तथा शिवकुमारदेव कृत हिन्दी टीका सहित २—५०
१४२३ वेदान्तसार रामानुज—सटिप्पण २—५०
१४२४ वेदान्त सिद्धान्त कल्पवल्ली—हिन्दी टीका सहित ०—७५
१४२५ वेदान्त सिद्धान्त मुक्तावली—स्वा० प्रकाशानन्द ३—१३
१४२६ वेदान्त सिद्धान्त मुक्तावली—भा० टी० १०—००
१४२७ वेदान्त सिद्धान्त संग्रह—वनमाली कृत ४—५०
१४२८ वेदान्त सिद्धान्तादर्श— २—५०
१४२९ वेदान्त और अद्वैतवाद—स्वा० गणेशदासजी १—५०
१४३० वृत्ति प्रभाकर—निश्चलदास भाषा ७—००
१४३१ वृत्ति प्रभाकर—स्वा० आत्मानंदकृत सरल हिंदी ६—००
१४३२ वैयासिक न्यायमाला—अर्थात् वेदांताधिकरणन्याय माला तीर्थमुनि प्रणीत ३—००
१४३३ वैराग्य भास्कर—संस्कृत टीका भा० टी० १—२५
१४३४ वैराग्य संदीपनी—(गो० तुलसीदास) टीका सहित ०—९
१४३५ शांकरग्रन्थावलि—५ भाग में (प्रकरण, लघुभाष्य, स्तोत्र, भगवद्गीता, उपनिषद्) हर एक का ६—५०
१४३६ शंकर दिग्विजय (विद्यारण्य विरचित)—धनपति सूरि कृत डिण्डिमाख्या टीका सहित ९—००
१४३७ शांकर पादभूषण—रघुनाथ सूरि—दो भाग १२—५०
१४३८ शंकराचार्यकृत—प्रकरण ग्रन्थ (संग्रह) ७० ग्रंथ १२—५०
१४३९ शतश्लोकी—पूर्णानन्द प्रणीत—पंचावनी भाष्य १—२५
१४४० शतभूषणी—अनन्तकृष्ण शास्त्री विरचित—शंकरनारायण अय्यर कृत अंग्रेजी प्रस्तावना सहित २०—००
१४४१ शंकरभाष्यालोचन—पं० गंगाप्रसाद कृत ५—००
१४४२ शाब्दनिर्णय प्रकाशात्म— ०—८७
१४४३ शाण्डिल्य संहिता—भक्तिखंड २ भाग में २—१३
१४४४ शारीरिक मीमांसा वार्तिक भाष्य— ५—००
१४४५ शास्त्र दर्पण—अमलानन्द ३—२५
१४४६ शिवाद्वैत निर्णय—अप्पय दीक्षित—सव्याख्या २—८१
१४४७ शुद्धाद्वैत मार्तण्ड—(श्री गिरिधरजी विरचित) प्रकाश व्याख्या तथा प्रमेय रत्नार्णव १—५०
१४४८ शैवपरिभाषा (शिवाचार्य) रंगस्वामी-संपादित ३—३७
१४४९ श्रीकरभाष्य—श्रीकर शैव भाष्य २ भाग १८—००
१४५० श्रीभाष्य—यतीन्द्र मत दीपिका श्रीनिवासाचार्य ३—००
१४५१ श्री भाष्य—केवल दूसरा भाग १०—००
१४५२ श्रीभाष्य प्रकाशिका—श्री निवासाचार्य विर० ६—५०
१४५३ श्री सुबोधिनी—श्री वल्लभाचार्य ४—५०
१४५४ श्रुत्यंतु कल्पवल्ली—पुरुषोत्तमदास ३—००
१४५५ श्रुत्यन्त सुरद्रुम—पुरुषोत्तम ४—५०
१४५६ श्रुति कल्पलता—वामन कृत वेद स्तुति व्याख्या ३—५०
१४५७ संत प्रभाव—भाषा ०—६२
१४५८ संक्षेप शारीरिक—अन्वयार्थ प्रकाशिका व्याख्या ८—००
१४५९ संक्षेप शारीरिक—मधुसूदनी टीका ८—००
१४६० संक्षेप शारीरिक—सुबोधिनी तथा अन्वयार्थ बोधिनी दो संस्कृत टीका पूना १३—५०
१४६१ संक्षेप शारीरिक—नृसिंहाश्रमकृत तत्वबोधिनी ४—६
१४६२ संक्षेप शारीरिक—स्वा. रामानंद तथा स्वा. योगीन्द्रानंद कृत संस्कृत तथा हिन्दी टीका सहित १०—००
१४६३ सत्तत्वरत्नावली— १८—००
१४६४ सत्यदर्शन—स्वामी कालिकानंद (हिन्दी) ५—००
१४६५ सनत्सुजातीय—शंकर भगवत्पाद भाष्य सटीक १—२५
१४६६ स्वानुभवादर्श—माधवाश्रम विरचित सटीक ३—००
१४६७ स्वरूपानुसन्धान—गौरीशंकर उदयशंकर हिन्दी ५—००
१४६८ स्वराज्य सिद्धि—स्वामी हरिमुनि कृत भा० टी० १—८७
१४६९ स्वर्ग का विमान—सरल हिन्दी ५—००
१४७० सतत्वरत्नमाला—सटीक (मन्त्र) मंत्रात्मक ६—२५
१४७१ सत्संग के बिखरे मोती—भाषा ०—७५
१४७२ सत्संग माला— ०—२५
१४७३ सर्व वेदांत सार संग्रह—(संस्कृत) श्यामसुन्दरझा २—०
१४७४ साधन पथ—भाषा ०—१६
१४७५ साधन संकेत—भाषा ०—५०
१४७६ सारसंग्रह—गौड़ ब्रह्म सिद्धान्तग्रंथ रूपकविराज ६—००
१४७७ सारस्तावली—(भाषा) ०—७५
१४७८ सिद्धान्तदर्शन—विश्वदेवाचार्यकृत निरञ्जनभाष्य २—००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१४७९ सिद्धान्तलेश संग्रह–भा० टी० ६–००
१४८० सिद्धान्तबिन्दु–(मधुसूदन) पुरुषोत्तम कृत व्याख्या तथा प्रहलाद चन्द्रशेखर कृत अंग्रेजी अनुवाद ११–००
१४८१ सिद्धान्त बिन्दु–वासुदेव अभ्यंकर सं०टी० २–५०
१४८२ सिद्धान्त बिन्दु–भा० टीका सहित २–७५
१४८३ सिद्धान्त बिन्दु–न्यायरत्नावली तथा लघुव्याख्या ४–००
१४८४ सिद्धांतसार–रामावतारकृत हिन्दी टीका सहित १–५०
१४८५ सिद्धित्रयम्–आत्म सिद्धि २–००
१४८६ सुखीजीवन–भाषा ०–५०
१४८७ सुन्दर विलास–भाषा पद्य लखनऊ १–००
१४८८ सुन्दर विलास „ बंबई २–५०
१४८९ सूक्तावली–सारुक्तावली भा० टीका १–५०
१४९० सूक्तावली–सारुक्तावली ०–५०
१४९१ सूक्तिसुधाकर–भाषा ०–६२
१४९२ सूतसंहिता–तात्पर्य दीपिका सहित ७–००
१४९३ सूत संहिता–सटीक ३ भाग में पूना १७–२५
१४९४ सूत्रार्थामृत लहरी–कृष्णावधूत विरचित ३–२५
१४९५ सम्बन्धवार्तिक–सुरेश्वराचार्य कृत २८–१२
१४९६ हरिहराद्वैत भूषणम्–(बोधेन्द्र सरस्वती कृत) कारिका सहित चन्द्रशेखरन संपादित ६–६२
१४९७ ज्ञानमाला–भाषा ०–३७
१४९८ ज्ञानवैराग्य प्रकाश–स्वा० परमानंद भाषा २–००

दर्शन

१४९९ अनुमान चिन्तामणि–दीधित सहित–जीवानंद ५–६२
१५०० अनुमान–दीधिति–प्रसारिणी–कृष्णदास सार्वभौम–अपूर्ण २–२५
१५०१ आत्म तत्व विवेक–बौद्धन्याय खंडन–उदयनाचार्य कृत रामतर्कालंकार टिप्पणी–१ से ६ भाग काशी ९–००
१५०२ आत्म तत्व विवेक—नारायणी व्याख्या १०–००
१५०३ उभयाभावादि वार्क परिष्कार–बालकृष्ण मिश्र–१–००
१५०४ कारिकावली–प्राज्ञमनोरमा व्याख्या १–००
१५०५ कारिकावली–देवीसहाय कृत कंठाभरण टीका ०–७५
१५०६ कारिकावली–सिद्धांत मुक्तावली टिप्पणी १–२५
१५०७ कारिकावली–(प्रत्यक्षखण्डान्त) मुक्तावली–मयूख–प्रकाश–तीन टीका १–२५
१५०८ कारिकावली–सिद्धान्त मुक्तावली मयूख संपूर्ण २–२५
१५०९ कारिकावली–सिद्धांत मुक्तावली, न्यायचन्द्रिका १–२५
१५१० कारिकावली–मुक्तावली–प्रभा–मंजूषा, दिनकरीय, रामरुद्रीय तथा गंगाराम जटीय सहित मदरास १२–००
१५११ कारिकावली–मुक्तावली–दिनकरी–रामरुद्री ९–००
१५१२ कालीशंकरी–जागदीशी, व्यधिकरण कालीशंकरी ०–५०
१५१३ कुसुमाञ्जलि कारिका–उदयनाचार्य–रामभद्र सार्वभौम कृत कुसुमाञ्जलि कारिका व्याख्या ३–००
१५१४ केवलान्वयी प्रकरण–गंगेशोपाध्याय कृत–रघुनाथ शिरोमणि कृत दीधित, जागदीशी तथा केशवदेव द्विवेदीकृत नारायणी तथा शक्ति ४ व्याख्या ४–००
१५१५ क्रोडपत्र संग्रह–अर्थात् अनुमान जगदीशी, गदाधरी, माथुरी आदि पर टिप्पणियों का संग्रह १२–००
१५१६ ख्यातिवाद–शंकरचैतन्य भारतीय विरचित ०–६२
१५१७ गादाधरी–सामान्य निरुक्ति गूढार्थ तत्वालोक १–७५
१५१८ गादाधरी–सामान्य निरुक्ति प्रकरण–गंगा व्याख्या ६–०
१५१९ गादाधरी सामान्य निरुक्ति–गंगेश उपाध्याय रघुनाथ शिरोमणि कृत टीका तथा गदाधर भट कृत शिरोमणि टीका विवृत्ति सहित २–५०
१५२० गादाधरी–सव्यभिचार प्रकरण वामाचरणव्या० ३–५०
१५२१ गादाधरी–व्यधिकरण धर्मावच्छिन्नाभाव प्रकरण ३–०
१५२२ चतुर्दशलक्षणी–(द्वितीय लक्षणान्त) ३ सं.टी. १०–००
१५२३ जागदीशी–अवच्छेदकत्व निरुक्ति मूल ०–३१
१५२४ जागदीशी अवच्छेदकत्व निरुक्ति–विवृति मनोरमा ३–०
१५२५ जगदीशी अवच्छेदकत्व निरुक्ति–गंगाटीका २–५०
१५२६ जागदीशी–सिंह व्याघ्र लक्षण मनोरमा टीका १–२५
१५२७ जागदीशी पक्षता–(गंगेशोपाध्याय) शिरोमणि टीका तथा जागदीशी विवृत्ति सहित १–५६
१५२८ जागदीशी–पक्षता–पं० शिवदत्तकृत व्याख्या ३–००
१५२९ जागदीशी–व्यधिकरण–पं० शिवदत्तकृत व्याख्या ४–०
१५३० जागदीशी–सामान्यलक्षण–प्रकरण–काशिकानंदी ४–५०
१५३१ जागदीशी सिद्धान्त लक्षण–शिरोमणि टीका १–२५
१५३२ जागदीशी सिद्धान्त लक्षण–पं०शिवदत्त व्या० ३–००
१५३३ तत्वचिन्तामणि–दीधिति विवृत्ति–गदाधर भटाचार्य–अपूर्ण–अनुमान में सव्यभिचार तक १–३१
१५३४ तत्वचिन्तामणि–गंगेशोपाध्याय प्रामाण्य वादांत प्रथम खंड महेश ठक्कुर निर्मित दर्पण सहित १२–००
१५३५ तत्वचिन्तामणि–गंगेश उपाध्याय प्रत्यक्षखंड प्रथम भाग आलोक दर्पण आलोक कण्टकोद्धार, आलोक, प्रगल्भी तथा मिताक्षरा सहित १–२५
१५३६ तत्वचिन्तामणि–गंगेश उपाध्याय उपमान खंड १–५०
१५३७ तत्वचिन्तामणि–दीधिति प्रकाश–भवानंद सिद्धांत–वागीश–अनुमान खंड के व्याप्ति ग्रहोपाय ४–५०
१५३८ तत्वसार–राखाल दास–भूमिका टिप्पणी ०–५०
१५३९ तर्कपद्यरत्नावली–सुन्दराचार्य विरचित १–१३
१५४० तर्क कौमुदी–लौगाक्षिभास्कर मूल ०–२५
१५४१ तर्क प्रकरण–माथुरी गंगेशउपाध्याय तर्करहस्य १–००
१५४२ तर्कभाषा–मल्लमात्र–काशी ०–६२
१५४३ तर्कभाषा (केशवमिश्र) चिन्नं भट प्रकाशिका २–२५
१५४४ तर्कभाषा (केशव) श्री सुरेन्द्रनाथ कृत चिदानन्दी सं० हिन्दी व्याख्या १–५०
१५४५ तर्क भाषा–प्रभा प्रसारिणी–संस्कृत हिन्दी टी० १–००
१५४६ तर्कभाषा–विश्वेश्वरकृत तर्करहस्य दीपिकाहिन्दी ४–५
१५४७ तर्क भाषा–तत्वालोक–सं०हि०टीका २–०
१५४८ तर्क भाषा– „ „ रफ १–५०
१५४९ तर्क भाषा–रहस्य ढुण्ढिराज शास्त्री ०–३७
१५५० तर्क मकरंद–दीपिका प्रश्नोत्तरी ०–३७
१५५१ तर्कसंग्रह–पं० ज्वाला प्रसाद कृत छात्रोपयोगी कृष्णास्य सरल हिन्दी टीका सहित ०–३७
१५५२ तर्क संग्रह–महोपाध्याय क्षमाकल्याणगणिविरचित फक्किकाव्याख्या समन्वित दीपिकाव्याख्या ३–००
१५५३ तर्कसंग्रह–वीर राघवाचार्यकृत सुख प्रवेशिनी १–२५
१५५४ तर्कसंग्रह–शिशुहिता व्याख्या सहित–हरिशंकरझा ०–१९
१५५५ तर्कसंग्रह–सिद्धांत चन्द्रोदय व्याख्या सहित १–००
१५५६ तर्क संग्रह–चन्द्रिका–मुकुन्द शर्मा ०–५०
१५५७ तर्क संग्रह–दीपिका न्यायबोधिनी बम्बई ०–५०
१५५८ तर्कसंग्रह–न्यायबोधिनी समेत–भाषानुवाद १–७५
१५५९ तर्कसंग्रह–तत्वबोधिनी विस्तृत हिन्दी व्याख्या १–१३
१५६० तर्कसंग्रह–न्यायबोधिनी, पदकृत्य–बालमनोरमा–परीक्षा टीका सहित १–२५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१५६१ तर्कसंग्रह—पदकृत्य तथा हिन्दी टीका सहित ०—६२
१५६२ तर्कसंग्रह—न्यायबोधिनी, पदकृत्य, विरला, हिन्दी १—००
१५६३ तर्कसंग्रह—दीपिका तथा हिंदी टीका ०—५०
१५६४ तर्कसंग्रह—दीपिका—किरणावली १—२५
१५६५ तर्कसंग्रह—न्यायबोधिनी पदकृत्य १—००
१५६६ तर्कसंग्रह—भाषा टीका बम्बई ०—७५
१५६७ तर्क संग्रह—सटिप्पण दिनकरविष्णु गोखले पूना ०—७५
१५६८ (तर्कसंग्रह) भास्करोदय—(नीलकंठी तर्कसंग्रह-दीपिका प्रकाश की व्याख्या)—लक्ष्मीनृसिंह शर्मा २—००
१५६९ तर्कामृत—जगदीश भट्टाचार्य मूल ०—१३
१५७० तर्कामृत संक्षिप्त टिप्पणी सहित ०—२५
१५७१ तर्कामृत—प्रभा—सरस्वती संस्कृत हिन्दी टीका ०—५०
१५७२ तर्कामृत—प्रकाश—सं० तथा हिन्दी टीका ०—६२
१५७३ न्यायकलिका—जयन्त—गंगानाथ झा संपादित ०—४४
१५७४ न्याय कुसुमाञ्जलि—उदयनाचार्य—प्रथम भाग—शंकर मिश्र तथा गुनानन्द प्रणीत टीकाओं सहित—प्रथम स्तवकमात्र ३—००
१५७५ न्याय कुसुमाञ्जलि—वीरराघवाचार्य कृत कुसुमाञ्जलि विस्तर टीका सहित—दो भाग ७—५०
१५७६ न्यायकुसुमाञ्जलि—उदयनाचार्य प्रणीत अर्थ प्रकाशिका (जल्द), मकरन्द, प्रकाश, बोधिनी आदि ४ व्याख्या सहित तथा पं० बच्चाझा टिप्पणी १८—००
१५७७ न्यायकोष—न्यायादि शास्त्रों के पारिभाषिक शब्दों का कोष—भीमाचार्य विरचित १५—००
१५७८ न्यायकौस्तुभ—(प्रत्यक्ष खंड) महादेवपुणतामकर १—६२
१५७९ न्यायदर्शन—वात्स्यायन भाष्य सटिप्पण ३—००
१५८० न्यायदर्शन—वात्स्यायन भाष्य, विश्वनाथवृत्ति पूना ६—७५
१५८१ न्यायदर्शन—वात्स्यायनभाष्य सुदर्शनाचार्यप्रसन्न. १०—००
१५८२ न्यायदर्शन—वात्स्यायनभाष्य, उद्योतकर वार्तिक, तात्पर्य टीका तथा विश्वनाथ वृत्ति सहित द्वितीय खंड अ ४ आ० २ सू० १० पर्यन्त १०—००
१५८३ न्यायदर्शन—वात्स्यायन भाष्य, डा० गंगानाथ झा कृत खद्योत तथा भाष्य चन्द्र सहित काशी १०—००
१५८४ न्याय दर्शन—छज्जूराम टीका १—००
१५८५ न्यायदर्शन—भाषा-भाष्य स्वामीदर्शनानंद २—००
१५८६ न्यायदर्शन—वात्स्यायन भाष्य तथा डा० उदयनारायण सिंह कृत भाषानुवाद पूना १—००
१५८७ न्यायप्रकाश—स्वा० चिदघनानंद कृत भाषा १२—००
१५८८ न्यायप्रदीप—गंगासहाय १—७५
१५८९ न्यायमंजरी—जयंत भट कृत काशी १०—००
१५९० न्यायरत्न—मणिकंठमिश्र कृत तथा नृसिंह यज्व कृत द्युतिमलिका टीका सहित मदरास १०—००
१५९१ न्यायलीलावती—वल्लभाचार्य मूल १—२५
१५९२ न्यायलीलावती—वल्लभाचार्य वर्धमान, शंकरमिश्र तथा भगीरथठाकुर कृत विवृति प्रकाश कंठाभरण व्याख्याओं सहित १३—५०
१५९३ न्यायवार्तिक—तात्पर्य टीका वाचस्पति मिश्र कृत ६—०
१५९४ न्यायसार—श्री भासर्वज्ञ वासुदेव सूरि कृत न्याय सार पद पञ्चिका व्याख्या सहित १—८७
१५९५ न्यायसिद्धान्तमंजरी—जानकीनाथकृत सव्याख्या १—५०
१५९६ न्यायसिद्धाञ्जन—वंकटनाथ देशिक २—५०
१५९७ न्यायसिद्धान्त माला—जयरामभट्टकृत २ भाग १—५६
१५९८ न्यायसिद्धान्तमुक्तावलि—कृष्णवल्लभकिरणावली ४—००
१५९९ न्यायसिद्धान्तमुक्तावलि—गोविन्दसिंह हि०टी० ५—००
१६०० न्यायसिद्धान्तमुक्तावलि—प्रभासरस्वती संस्कृत हिन्दी टीका सहित अनुमान खंड ०—७५
१६०१ न्यायसिद्धान्त मुक्तावलि प्रभासरस्वती संस्कृत हिन्दी टीका सहित शब्द खंड ०—६२
१६०२ न्यायसिद्धान्तमुक्तावलि—प्रत्यक्ष खंड प्रभा सरस्वती संस्कृत हिन्दी भाष्य सहित १—००
१६०३ न्यायकारिकावलि—(भाषा परिच्छेद विश्वनाथ कृत) न्यायसिद्धान्त मुक्तावली हिन्दी अनुवाद तथा विस्तृत हिन्दी व्याख्या तथा आलोचना सहित डा० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री कृत प्रत्यक्ष खंड ५—२५
१६०४ न्यायसिद्धान्तमुक्तावलि—प्रश्नोत्तरी पं० विश्वनाथ १—२५
१६०५ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली—संपूर्ण चन्द्रधारीहि०टी० ५—००
१६०६ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली—पं० छज्जूरामसं०टी० २—००
१६०७ न्यायसिद्धान्त मुक्तावली—(भाषापरिच्छेद) प्रत्यक्ष न्यायाचार्य पं० श्री ज्वालाप्रसाद गौड़ विरचित छात्रोपयोगी अतिविस्तृत तथा सरल विलासिनी संस्कृत तथा हिन्दी दो टीकाओं समेत ५—००
१६०८ नीतितत्वाविर्भाव—चिदानन्द पण्डित प्रणीत ४—५०
१६०९ पदार्थ तत्त्व निरूपण—रघुनाथ कृत १—५०
१६१० पदार्थ तत्त्व निरूपण—रघुनाथ शिरोमणि—अंग्रेजी अनुवाद सहित २५—००
१६११ पदार्थ रत्नमाला—रघुनाथ कृत १—५०
१६१२ प्रमाण मञ्जरी—सर्वदेवसूरि (प्राचीनन्यायग्रंथ) ०—२५
१६१३ प्रमाणमञ्जरी—सर्वदेवरचित—व्याख्यात्रयोपेतम् ६—००
१६१४ प्रामाण्यवाद—चिन्तामणि—दीधिति, प्रभा सहित ३—००
१६१५ पारिभाषिक पदार्थ संग्रह—श्रीराम शास्त्री २—५०
१६१६ भारतीय दर्शन परिचय—प्रथमखंड न्याय दर्शन—प्रो० हरिमोहन झा कृत १०—००
१६१७ भारतीय दर्शन शास्त्र—(न्याय वैशेषिक)—पं० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री कृत हिन्दी ३—००
१६१८ भाषा परिच्छेद—मुकुन्दझा अन्वितार्थ प्रदीपिका १—००
१६१९ भेदसिद्धि—विश्वनाथ चानन ०—८७
१६२० माथुरी पञ्च लक्षणी—सटीक ०—३७
१६२१ माथुरी तर्क प्रकरण—वामाचरण १—००
१६२२ मुक्तिवाद रहस्य—पं० हरिराम ११—२५
१६२३ मुक्तिवाद—गदाधर भट्टाचार्य-चन्द्रिका व्याख्या ०—५०
१६२४ मान माला (प्रमाण ग्रंथ) अच्युत कृष्णानन्द-रामानन्द कृत व्याख्या सहित ३—००
१६२५ मुक्तावली तत्वालोक—प्रत्यक्ष-अनुमानखंड प्रश्नो ०—५०
१६२६ लौकिक न्यायाञ्जलि—प्रथम दूसरा भाग २—००
१६२७ व्याप्ति पञ्चक—सिंह व्याघ्र लक्षण गंगेशोपाध्याय-माथुरी, दीधिति, जागदीशी युक्त चन्द्रिका, शब्दाद्वैत (पदार्थ) मणिमाला सहित २—००
१६२८ व्याप्ति पञ्चक—शिरोमणि, माथुरी, जागदीशी टीका विवृति सहित—क० १—२५
१६२९ व्याप्तिपञ्चकरहस्य—सिंह व्याघ्र लक्षण रहस्य १—५०
१६३० वाद वारिधि—गदाधर भट ३ खंड ४—५०
१६३१ विषयता वाद—सटिप्पण ०—२५
१६३२ व्युत्पत्ति वाद—गदाधर भट—जयदेव मिश्र कृत जया टीका सहित ३—००
१६३३ व्युत्पत्ति वाद—सुदर्शनाचार्य कृत आदर्श व्याख्या ११—०
१६३४ व्युत्पत्तिवाद—लकारार्थ विचार—गदाधर—सुब्रह्मण्य शास्त्री कृत विवरण सहित ६—००
१६३५ व्युत्पत्तिवाद—गूढार्थतत्वालोक दुरुहांश प्रकाशिका ६—००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१६३६ व्युत्पत्तिवाद–तरणी प्रश्नोत्तरी ०–८७
१६३७ शक्तिवाद–(गदाधर भट)–हरिनाथ कृत विवृत्ति व्याख्या सहित ३–००
१६३८ शक्तिवाद–सुदर्शनाचार्य कृत आदर्श टीका ४–५०
१६३९ शक्तिवाद–मंजूषा तथा विनोदिनी सहित २–५०
१६४० शब्दशक्तिप्रकाशिका–कृष्णकान्ती तथा रामभद्री ८–००
१६४१ शास्त्रार्थ रत्नावली–जयदेव शर्मा १–५०
१६४२ सामान्यनिरुक्ति–चंद्रकला तथा विलास रसं टी. ६–००
१६४३ सर्वतन्त्र सिद्धान्त पदार्थ लक्षण–संग्रह-भिक्षु गोरीशंकर संग्रहीत अकारादि क्रम से ८९०१ लक्षण ०–७५
१६४४ संगमेश्वर कोडम्–जागदीशी सिद्धान्त लक्षण १–००
१६४५ त्रितलावच्छेदकतावाद–पं० शशिनाथ झा ४–५०
१६४६ ज्ञानलक्षणविचाररहस्य–रा० हरिराम १०–२५

वैशेषिक

१६४७ किरणावलीप्रकाश–वर्धमान उपाध्यायविरचित १–५०
१६४८ किरणावली प्रकाशदीधिति–रघुनाथ शिरोमणि ०–८०
१६४९ किरणावली भास्कर–पद्मनाभ मिश्र ०–८७
१६५० किरणावली–उदयनाचार्य प्रणीत वर्धमान टी. २२–२५
१६५१ गुरुसम्मत पदार्थ–तथा कौमारिलमतोपन्यास ०–८७
१६५२ न्यायसिद्धान्त तत्वामृत–श्रीनिवास कृत २–५०
१६५३ पदार्थशास्त्र–(वैशेषिकदर्शन के सिद्धान्तानुसार) २–५०
१६५४ पादार्थ मंडन–वेणीदत्त ०–४४
१६५५ प्रशस्तपाद भाष्य–(वैशेषिक दर्शन)–जगदीश सूक्ति-कालीपदकृत सूक्तिदीपिका तथा बंगला अपूर्ण ४–००
१६५६ प्रशस्तपाद भाष्य–टीकासंग्रह-कणाद रहस्य ३–००
१६५७ भारतीय दर्शन परिचय–(वैशेषिक) हिन्दी प्रो० हरिमोहन झा १०–००
१६५८ भाषारत्न–कणाद तर्कवागीश ७–०
१६५९ रससार–भट वादीन्द्र ०–५६
१६६० वैशेषिक दर्शन–शंकर मिश्रकृत उपस्कार सहित ३–७५
१६६१ वैशेषिक दर्शन–प्रशस्तपाद भाष्य-सूक्तिसेतु व्योमवती व्याख्या सहित १०–५०
१६६२ वैशेषिक दर्शन–भा० टी० बम्बई १–५०
१६६३ वैशेषिकदर्शन–कणाद दर्शनानन्द कृत भा० टी० ३–५०
१६६४ वैशेषिकदर्शन–प्राचीनव्याख्यासहित–प्रथमबार ९–५०
१६६५ वैशेषिक दर्शन–विमर्श–वीरराघवाचार्य ०–५०
१६६६ सप्तपदार्थी–(शिवादित्य) वैशेषिक दर्शन मित-भाषिणी, पदार्थचन्द्रिका तथा सन्दर्भ टीका

सांख्य

१६६७ सांख्यकारिका–गौडपादभाष्य ०–५०
१६६८ सांख्यकारिका–(संस्कृत हिन्दी टीका) श्रीकृष्ण १–००
१६६९ सांख्यकारिका–सांख्यचन्द्रिका टीका हि०अनु० ०–८७
१६७० सांख्यकारिका–गौडपादभाष्य हिन्दी टीका १–००
१६७१ सांख्यकारिका–हिन्दी तथा अंग्रेजी अनुवाद १–२५
१६७२ सांख्यतत्वकौमुदीप्रभा–ईश्वरकृष्ण कृत सांख्यकारिका तथा वाचस्पति मिश्र तत्व कौमुदी की विशद हिन्दी व्याख्या डा० आद्याप्रसाद ५–००
१६७३ सांख्यकारिका–सांख्यतत्वकौमुदी सुषमा व्या. २–००
१६७४ सांख्यकारिका–(ईश्वर कृष्ण) बालराम उदासीन कृत विद्वत्तोषिणी व्याख्या टिप्पणी तथा वाचस्पति मिश्र कृत सांख्यतत्व कौमुदी सहित ३–५०
१६७५ सांख्यकारिका–पं० शिवनारायण शास्त्री कृत सार-बोधिनी टीका तथा सांख्यतत्व कौमुदी सहित ५–०
१६७६ सांख्यतत्वकौमुदी–सांख्यकारिका तथा रघुनाथ कृत सांख्यतत्व विलास उपोद्घात सहित २–००
१६७७ सांख्यतत्व कौमुदी–(वाचस्पति मिश्र) पं० बंशीधर मिश्र कृत तत्व विभाकर टीका २–५०
१६७८ सांख्यतत्वकौमुदी दीपिका–हिन्दी टीका १–५०
१६७९ सांख्यतत्वालोक–हरिहरानन्द यज्ञेश्वर घोष ०–६९
१६८० सांख्यदर्शन–विज्ञानभिक्षुकृत सांख्यप्रवचनभाष्य २–५०
१६८१ सांख्यदर्शन–ब्रह्ममुनिकृत भाष्य सहित १–५०
१६८२ सांख्यसूत्र–अनिरुद्धवृत्ति प्रमथनाथ टीका २–५०
१६८३ सांख्यदर्शन–हिन्दी टीका सहित बम्बई २–५०
१६८४ सांख्यदर्शन–भाषा टीका स्वामी दर्शनानन्द २–००
१६८५ सांख्यदर्शन का इतिहास–पं०उदयवीर हिन्दी ३०–००
१६८६ सांख्यसंग्रह–सांख्यतत्त्व विवेचन, तत्व प्रदीपादि ३–००
१६८७ सांख्यसार–विज्ञानभिक्षु कृत ०–५०

योग

१६८८ अभ्यासयोग–हिन्दी–भूपेन्द्रनाथ २–२५
१६८९ अभ्यासयोग–हिन्दी–भूपेन्द्रनाथ सादा १–७५
१६९० आत्मानुसंधान और आत्मानुभूति–हिन्दी ०–७५
१६९१ उभे...य ...गदर्शन–हिन्दी १५–००
१६९२ गोरक्ष पद्धति–हिन्दी टीका सहित बम्बई १–००
१६९३ घेरण्ड संहिता–हिन्दी टीका सहित १–००
१६९४ प्रेम योग–वियोगी हरि हिन्दी १–५०
१६९५ बिन्दु योग–(राजयोगान्तर्गत) भा० टी० ०–८७
१६९६ ब्रह्मयोग सोपान–भाषा टीका रामनरेश मिश्र १–७५
१६९७ भक्ति सागर हि–१७ ग्रन्थ स्वा० चरणदास ७–००
१६९८ मन्त्रयोग चंद्रिका–हिन्दी अनुवाद सहित १–०
१६९९ मातृतत्व प्रकाश–श्री अरविन्द ग्रन्थानुवाद १–००
१७०० महायोगविज्ञान–श्री योगानन्द ब्रह्मचारी हिन्दी ६–००
१७०१ योगप्रदीप–स्वा० आत्मानन्द कृत ६–००
१७०२ मोक्षसाधन–या योगाभ्यास भूपेन्द्रनाथ सान्याल ०–३७
१७०३ योगतत्व प्रकाश–भाषा ०–२५
१७०४ योग दर्शन–मूल पाठ ०–०५
१७०५ योगदर्शन–व्यासभाष्य तथा वाचस्पति टीका २–८१
१७०६ योग दर्शन–मणिप्रभा व्याख्या २–००
१७०७ योग दर्शन–भोज वृत्ति सहित १–२५
१७०८ योगदर्शन–भाष्य विवरण–शंकर भगवत्पाद १२–७५
१७०९ योग दर्शन–नारायण तीर्थ कृत योग सिद्धान्त चन्द्रिका सूत्रार्थ बोधिनी व्याख्याओं सहित दो भाग ३–००
१७१० योगदर्शन–पातञ्जलि–स्वामी नारायण भाष्य ३–००
१७११ योगसूत्र–पातञ्जलि–बलदेवकृत योगप्रदीपिका १–००
१७१२ योगदर्शन–पदचन्द्रिका तथा अधिकरण दर्शक ०–५०
१७१३ योगसूत्र–पातञ्जल पद चन्द्रिका टीका ०–६२
१७१४ योगदर्शन–व्यास भाष्य हरिहरनान्द आरण्यकृत बंगला भाषानुवाद और टीका का मूल सहित हिन्दी ९–००
१७१५ योगदर्शन–पतञ्जलि–प्रभुदयालकृत दोहाभाषा १–७५
१७१६ योगदर्शन–सूत्र का भाषानुवाद तथा भाषाभाष्य २–००
१७१७ योगदर्शन–भाषा टीका गोरखपुर ०–७५, १–००
१७१८ योगसूत्र–पातञ्जलि–व्यास भाष्य सहित बंगाली बाबा कृत अंग्रेजी अनुवाद का हिन्दी रूपान्तर ५–००
१७१९ योगबीज–गोरक्षनाथ मूल ०–५०
१७२० योगमार्गप्रकाशिका–अर्थात् योगरहस्य भा०टी० १–२५
१७२१ योगयाज्ञवल्क्य––मूल ०–३७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१७२२ योगपातञ्जल—पाटान्तर, टिप्पणी, भूमिका आदि युक्त पी० सी० दीवान जी संपादित ५—००
१७२३ योगरसायन—ब्रह्मानन्द स्वामी भा० टी० १—२५
१७२४ योगसन्ध्या—हिन्दी टीका सहित २—००
१७२५ योगसाधन की तैयारी—पं० सातवलेकर १—००
१७२६ योगसारसंग्रह—विज्ञान भिक्षुकृत मूल तथा सरल हिन्दी अनुवाद सहित अनुवाद में विषय को भलीभांति समझाया गया है स्वा० सनातनदेव कृत २—००
१७२७ शिव संहिता—हिन्दी टीका सहित बम्बई २—५०
१७२८ शिवस्वरोदय—हिन्दी टीका सहित बम्बई १—००
१७२९ शिवस्वरोदय—भा० टीका काशी ०—६२
१७३० सहजप्रकाश—सहजोबाई कृत ०—७५
१७३१ साधन चंद्रिका—स्वा० दयानन्द हिन्दी १—७५
१७३२ सिद्धसिद्धान्त पद्धति—गोरखनाथ तथा अन्य योगियों की कृतियां कल्याणी मल्लिक संपादित १०—००
१७३३ सिद्ध सिद्धान्त संग्रह—बलभद्र विरचित श्रीगोपीनाथ कविराज कृत भूमिका ०—४४
१७३४ सिद्धान्त रत्न—(बलदेव) सटीक २ भाग १—९४
१७३५ सूर्य नमस्कार—औंधनरेश कृत १—००
१७३६ सूर्य भेदन व्यायाम ०—७५
१७३७ स्वर दर्पण—हिन्दी ०—६२
१७३८ स्वरोदय सार —हिन्दी ०—२५
१७३९ हठयोग प्रदीपिका—संस्कृत तथा हिन्दी टीका ३—००
१७४० हठयोग प्रदीपिका—संस्कृत व्याख्या समेत २—००
१७४१ हठयोगसंहिता—भाषानुवाद सहित ०—७५
१७४२ ज्ञान स्वरोदय—भाषा पद्य ०—२५

मीमांसा

१७४३ अधिकरण कौमुदी—देवनाथ ठाकुर कृत १—००
१७४४ अध्वरमीमांसा—कुतूहलवृत्ति वासुदेव प्रथमअ. ११—००
१७४५ अर्थसंग्रह—(लौगाक्षि भास्कर प्रणीत कौमदी १—५०
१७४६ अर्थसंग्रह—लौगाक्षि—भास्कराचार्य संस्कृत हिन्दी १—००
१७४७ अर्थवादादि विचार—श्रीरम्भद्रवाजिमिश्र प्रणीत वे टेश्वर दीक्षित विरचित टिप्पणी समेत १—००
१७४८ जैमिनीय न्याय माला—अर्थात् मीमांसाधिकरण न्यायमाला माधवाचार्य प्रणीत स्वरचित विस्तर व्याख्या सहित सम्पूर्ण पूना १२—००
१७४९ जैमिनीन्यायमाला—तृतीयाध्यान्ता ४—००
१७५० जैमिनीय सूत्रवृत्ति—सुबोधिनी श्री शितिकण्ठकृत भाषानुवाद सहित १—४ अध्याय ८—००
१७५१ जैमिनीय सूत्रार्थ संग्रह—परमेश्वर प्रणीत प्रथम भाग (तृतीय अध्याय के तृतीय पाद तक) ८—००
१७५२ तत्वबिन्दु (वाचस्पति मिश्रकृत) परमेश्वरकृत तत्त्वविभावना सहित ३—५०
१७५३ तन्त्र रत्न—पार्थसारथि (मीमांसा दर्शन के चतुर्थ तथा पंचम अध्याय टुप्टीका की व्याख्या)—दो भाग २—६०
१७५४ तन्त्र रहस्य—रामानुजाचार्य (प्रभाकर पूर्व मीमांसा दर्शन) ८—००
१७५५ तन्त्र सिद्धान्त रत्नावलि— चित्रस्वामी ३—००
१७५६ तौतातितमततिलकम्—भवदेव विरचित ३भागमें ५—२५
१७५७ न्याय बिन्दु—(सटीक) मदनमोहन पाठक १—५०
१७५८ न्याय रत्नमाला—पार्थसारथि रामानुजाचार्य कृति नायकरत्न व्याख्या सहित ४—५०
१७५९ न्यायसुधा—तन्त्रवार्तिक व्याख्या भट सोमेश्वरकृत २४—०
१७६० नयविवेक—भवनाथ मिश्र ३—५०
१७६१ पूर्वमीमांसाधिकरण कौमुदी— १—५०
१७६२ पूर्वमीमांसा सूत्र वृत्ति—भावबोधिनी १०—००
१७६३ प्रभाकर विजय—नंदीश्वर (पूर्व मीमांसा ग्रन्थ) २—५०
१७६४ बृहती—(प्रभाकर मिश्र) शाबर भाष्य व्याख्या—ऋजु विमला पञ्चिका सहित दो भाग ८—५०
१७६५ बृहती—ऋजु विमला दो व्याख्या काशी ४—५०
१७६६ भाटचिन्तामणि (भाट दीपिका व्या) वाञ्छेश्वर ७—५०
१७६७ भट चिन्तामणि—गागाभट विरचित ४—५०
१७६८ भाट दीपिका—(खंडदेव) शम्भु भट प्रणीत प्रभावली व्याख्या सहित निवीतान्त भाग १ बम्बई ८—००
१७६९ भाट दीपिका—(खंडदेव) पूर्व मीमांसा ग्रंथ शम्भुभट विरचित प्रभावली सहितपूर्व टक दो भाग ३२—००
१७७० मीमांसा कोष—मीमांसा दर्शन संगत समग्र भाष्य, वार्तिक, टीका निबन्ध कल्पसूत्र, वेदादि के अन्तर्गत शब्द, पद वाक्यादि का कोष परिशिष्टों सहित केवलानंद सरस्वती संपादित ४ भाग अ से न तक १३५—००
१७७१ मीमांसा कौस्तुभ—श्री खण्डदेव विरचित १८—००
१७७२ मीमांसादर्शन—महर्षि जैमिनी मूल २—००
१७७३ मीमांसादर्शन—सूत्रपाठ, सूत्रपूर्वी अकारादिक्रमानुसार, सूत्रपद सूचि सहित केवलानंद सरस्वती ३०—००
१७७४ मीमांसा दर्शन—तन्त्र वार्तिक शाबरभाष्य सहित ६ भाग में पूना तर्कपाद नहीं है ३२—७५
१७७५ मीमांसादर्शन—भाषा भाष्य (हिन्दी) समेत देवदत्त शर्मा १—३ अध्याय ५—००
१७७६ मीमांसान्यायप्रकाश—आपदेव मूल ०—७५
१७७७ मीमांसान्याय प्रकाश—आपदेव अनंतदेव १—००
१७७८ मीमांसान्याय प्रकाश—(आपदेव) वीर राघवाचार्य कृत मीमांसा सुधास्वाद व्याख्या सहित ५—००
१७७९ मीमांसान्याय प्रकाश—आपदेव वासुदेव शास्त्री विरचित प्रभा व्याख्या ३—५०
१७८० मीमांसा न्यायप्रकाश—भाटालंकार टीका काशी २—५०
१७८१ मीमांसा न्यायप्रकाश—चिन्नस्वामीकृत सारवि. ५—००
१७८२ मीमांसानुक्रमणिका—मदनमिश्र—मीमांसामंडल ७—५०
१७८३ मीमांसापरिभाषा—कृष्णयज्वपाठान्तर टिप्पणी ०—५६
१७८४ मीमांसा परिभाषा—कृष्णयज्व संस्कृत हिन्दी वागमयी दीपिकासहित गौरीनाथ पाठक संपादित ०—७५
१७८५ मीमांसा बालप्रकाश—भट शंकर विरचित ३—००
१७८६ मीमांसाशास्त्रसर्वस्व—हलायुध तृतीय अध्याय चतुर्थपादान्त २५—००
१७८७ मीमांसाशास्त्रसार— (मीमांसासिद्धान्ततत्त्वार्थप्रकाश) निवितान्त १—५०
१७८८ मीमांसा श्लोक वार्तिक—न्याय रत्नाकर व्याख्या सहित प्रथम अध्याय प्रथम पाद के ५वें सूत्र तक ४—५०
१७८९ मीमांसा श्लोकवार्तिक टीका—(शर्करिका) ४—००
१७९० वाक्यार्थरत्नम्—सुवर्णमुद्रिकासहित अहोबलसूरि १—२५
१७९१ विधिरसायन—अप्पय दीक्षित २ भाग ३—००
१७९२ विभ्रमविवेक—मंडन मिश्र कुप्पुस्वामी शास्त्री संपादित अंग्रेजी भूमिका सहित १—००
१७९३ शास्त्रदीपिका—पार्थसारथि प्रथम तर्क पाद रामकृष्ण प्रणीत युक्तिस्नेहप्रपूरणीसिद्धान्तचन्द्रिका व्याख्या गूढार्थ विवरण सहित ५—००

— — — —

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शैव

(काश्मीर, तथा अन्य)

१७९४ आन्हिक पद्धति—नव्य चण्डीदास अंग्रेजी भूमिका १—००
१७९५ ईश्वर प्रत्यभिज्ञा विमर्शिनी—उत्पलदेव कृत अभिनव गुप्त व्याख्या २ भाग ८—००
१७९६ ईश्वरप्रत्यभिज्ञा विवृत्ति विमर्शिनी—अभिनव गुप्त विरचित ३ भाग अजिल्द ८—०० सजिल्द ९—००
१७९७ उड्डामरेश्वर तंत्र—मूल पाठ १—७५
१७९८ कर्मकाण्ड क्रमावली—सोम शम्भु विरचित (शैव संध्या दीक्षा इत्यादि) १—५०
१७९९ काम कला विलास—पुण्यानन्दराम शास्त्री संपा० १—२५
१८०० क्रम दीपिका—अंग्रेजी भूमिका सहित श्रीकृष्ण १—५०
१८०१ क्रियासार—नीलकंठ शिवाचार्य कृत ३ भाग
१८०२ घटकर्पर काव्य—(कालिदास) अभिनव गुप्त ०—५०
१८०३ तंत्रसार—अभिनव गुप्ताविरचित पं० मुकुन्दराम २—५०
१८०४ तन्त्रालोक—अभिनवगुप्त विरचित राजानकजयरथ व्याख्या सहित १२ भागों में ३९—००
१८०५ देशोपदेश नर्ममाला—क्षेमेन्द्र कृत १—५०
१८०६ नरेश्वर परीक्षा—षड्ज्योति प्रणीत राम व्याख्या २—०
१८०७ नेत्रतन्त्र—क्षेमराजकृत उद्योत व्याख्या २ भाग ६—५०
१८०८ परमार्थसार—(अभिनवगुप्त) योगराजकृतविवृ. २—५०
१८०९ परात्रिंशिका—आगमशास्त्र अभिनवगुप्त व्याख्या ३—३७
१८१० परात्रीशिका—लघु वृत्ति (अभिनव गुप्त) तथा परात्रीशिका लक्ष्मी रामकृत विवृत्ति १—००
१८११ परात्रीशिका तात्पर्य दीपिका—शक्ताविज्ञान १—००
१८१२ प्रसाद मण्डन—(सूत्रधार मण्डन) शिल्पशास्त्र १—००
१८१३ भगवद्गीता—रामकंठकृत सर्वतोभद्र व्याख्या २—५०
१८१४ भास्करी अभिनव गुप्त कृता ईश्वर प्रत्यभिज्ञा विमर्शिनी व्याख्या द्वितीय भाग केवल ८—५०
१८१५ महानय प्रकाश—राजानक शिति कंठ प्रणीत १—७५
१८१६ महार्थमंजरी—महेश्वरानन्दकृत स्वोपज्ञ व्याख्या १—७५
१८१७ मालिनी विजयोत्तर तन्त्र—(शैव योग शास्त्र) ३—५०
१८१८ मालिनी विजय वार्तिक—(मालिनी विजयोत्तर व्याख्या) अभिनव गुप्त प्रणीत ३—००
१८१९ मृगेन्द्र तन्त्र—(विद्यापाद तथा योगपाद) रुद्र आगम शास्त्र—नारायण कंठ व्याख्यान ३—००
१८२० लल्लेश्वरी वाक्यानि—राजानक संस्कृत भाष्य ०—३७
१८२१ लोक प्रकाश—क्षेमेन्द्र विरचित १—०
१८२२ लौगाक्षि गृह्यसूत्र—देवपालकृतभाष्य दोभाग ५—५०
१८२३ वातुलनाथ सूत्र—अनन्त शक्ति कृत वृत्ति १—००
१८२४ वाम केश्वरीमत—राजानक जयरथकृत विवरण १—००
१८२५ विज्ञान भैरव—क्षेमराज तथा व्याख्या समेत २—५०
१८२६ शिव कवच ०—२५
१८२७ शिव ताण्डव ०—१९, ०—२५
१८२८ शिव दृष्टि—सोमानन्द विरचित उत्पल वृत्ति २—५०
१८२९ शिव महिम्न स्तोत्र—मूल ०—१३, ०—२५
१८३० शिव महिम्न स्तोत्र—मधुसूदन कृत व्याख्या ०—६२
१८३१ शिव महिम्न—अन्वय, भा० टी० ०—२५, ०—५०
१८३२ शिव महिम्न—भा० टी० ०—१९
१८३३ शिव सहस्र नाम—मूल ०—३१
१८३४ शिव सहस्र नामावली ०—३७
१८३५ शिव स्तोत्र— ०—०९
१८३६ शिव स्तोत्रावली—सटीक ३—००
१८३७ शिव स्तुति—गोकुलनाथ विरचित संस्कृत तथा हिन्दी अनुवाद सहित ०—६२
१८३८ शिव सूत्र वार्तिक—वरदराज कृत— १—००
१८३९ शिवसूत्रवार्तिक—राजानक प्रणीत—वृत्ति २—५०
१८४० शिवाद्वैत निर्णय—अप्पय दीक्षित २—८१
१८४१ शैव परिभाषा—शिवाचार्य ३—३७
१८४२ षट्त्रिंशतत्त्व संदोह—राजानक आनन्दकृत व्याख्या—भावोपहार (चक्रपाणिनाथ) रम्यदेवाचार्य व्याख्या—बोध पंचदशिका (अभिनव गुप्त) तथा परा प्रवेशिका (क्षेमराज) १—४४
१८४३ स्तव चिन्तामणि—(भट नारायण)—क्षेमराज २—२५
१८४४ स्पन्द कारिका—रामकण्ठाचार्य कृत विवृत्ति २—७५
१८४५ स्पन्द निर्णय—(वसुगुप्त विरचित स्पन्द कारिका—क्षेमराज कृत निर्णय सहित) ३—५०
१८४६ स्पन्द सन्दोह—क्षेमराज सटिप्पण ०—५०
१८४७ स्वच्छन्द तन्त्र—(आगम शास्त्र) क्षेमराज कृत व्याख्या—७ भागों में १६—५०
१८४८ सिद्धित्रयी—ईश्वरप्रत्यभिज्ञा कारिकावृत्ति—उत्पल ३—००

गीता

१८४९ अर्जुन गीता—भाषा ०—१९
१८५० अवधूत गीता—मूल ०—३७, ०—७५
१८५१ अवधूत गीता—भा० टी० बम्बई ३—२५
१८५२ अष्टावक्र गीता—हिन्दी टीका सहित बम्बई २—२५
लखनऊ ३—००
१८५३ उत्तर गीता—गौड़पादाचार्य प्रणीत व्याख्या ०—६२
१८५४ उत्तर सत्याग्रह गीता—पं० क्षमाराव ६—७५
१८५५ कपिल गीता—भा० टी० १—२५
१८५६ गणेश गीता—मूल ०—५०
१८५७ गणेश गीता—नीलकंठी व्याख्या पूना ३—००
१८५८ गणेश गीता—भा० टी० ०—८७
१८५९ गर्भ गीता—भाषा ०—१३
१८६० गांधी गीता—श्री निवास कृत ३—७५
१८६१ गीता हृदय—स्वा० सहजानन्द हिन्दी १२—००
१८६२ गुरु गीता—हिन्दी ०—५०
१८६३ गोपी गीता—सव्याख्या १—००
१८६४ चित्रमय भगवद्गीता—सारी गीता रंगीन चित्रोंमें ६०—०
१८६५ जीवन मुक्त गीता—भा० टी० ०—१३
१८६६ देवी गीता—भा० टी० १—००
१८६७ धीश गीता—भा० टी० १—१२
१८६८ नारद गीता—भा० टी० ०—१३
१८६९ पञ्चदश गीता—भा० टी० १—२५
१८७० पञ्चरत्न गीता—मूल ०—१९, स्थूलाक्षर २—५०
१८७१ पञ्चरत्न गीता—भा० टी० गुटका २—५०, भा० टी० स्थूलाक्षर ५—००
१८७२ ब्रह्मानन्द मोक्ष गीता—स्वा० ब्रह्मानन्द २—५०
१८७३ भगवद्गीता—विष्णु सहस्रनाम सहित मूल ०—०९
१८७४ भगवद्गीता—मूलस्थूलाक्षर अजि० ०—३१, जिल्द ०—५६
१८७५ भगवद्गीता—शंकरभाष्य, आनंदगिरि, नीलकंठी, मधुसूदनी भाष्योत्कर्ष दीपिका श्रीधरी, अभिनव गुप्त व्याख्या गूढ़ार्थ तत्वालोक अष्ट टीका २२—००
१८७६ भगवद्गीता—शंकरानन्दी उसकी हिन्दी टीका ८—००
१८७७ भगवद्गीता—अर्थप्रकाशिका—ब्रह्मयोगी व्याख्या १५—०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१८७८ भगवद्गीता—श्रीधरी—मधुसूदनी—पूना ८—
१८७९ भगवद्गीता—शांकर भाष्य, आनंदगिरि टीका, रामानुज भाष्य, तात्पर्यचंद्रिका माध्वभाष्य, प्रेमयदीपिका पैशाच,ब्रह्मानंदगिरि,अमृततरंगिणी ११टीका २०—००
१८८० भगवद्गीता—शंकरभाष्य—आनन्दगिरि ९—२५
१८८१ भगवद्गीता—ज्ञानेश्वरी हिन्दी ५—०, ६—००
१८८२ भगवद्गीता—चिद्घनानंदी भा० टी० १४—००
१८८३ भगवद्गीता—तत्वविवेचनी भा० टीका ४—००
१८८४ भगवद्गीता—सर्वतोभद्र सं० टीका मदरास ६—००
१८८५ भगवद्गीता—ज्ञानेश्वरी हिन्दी पद्यानुवाद श्रीगणेशप्रसाद १५—००
१८८६ भगवद्गीता—अमृत तरंगिनी भा० टी० २—५०
१८८७ भगवद्गीता—मूलश्लोक, अन्वय, श्रीधर स्वा० टी० उसका हिन्दी अनुवाद और योगी श्री श्यामाचरण लाहिड़ी व अध्यात्मदीपिका और उसकी विशद हिन्दी व्याख्या श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल कृत सम्पूर्ण ३ जिल्दों में २८—००
१८८८ भगवद्गीता—पैशाच भाष्य २—२५
१८८९ भगवद्गीता—रामानुजीय तात्पर्य चंद्रिका ११—२५
१८९० भगवद्गीता—अद्वैतांकुरीय टीका १—२ अ ३—२५
१८९१ भगवद्गीता—तत्वार्द सुदर्शनाचार्य टीका ७—००
१८९२ भगवद्गीता—रामकण्ठकृत टीका २—००
१८९३ भगवद्गीता—ज्ञानकर्मसमुच्चय व्या०आनन्दवर्धन६—७५
१८९४ भगवद्गीता—शांकर भाष्य पूना ७—५०
१८९५ भगवद्गीता—शांकर भाष्य मदरास ६—५०
१८९६ भगवद्गीता—शांकर भाष्य भा० टी० २—७५
१८९७ भगवद्गीता—निम्बार्कीयतत्व प्रकाशिका मधुसूदनी, शंकरानंद, श्रीधर, सदानंद धनपतिसूरि, सूर्य, राघवेन्द्रकृत ८ टीका सहित
१८९८ भगवद्गीता—स्वा० रामतीर्थ के शिष्य नारायणस्वामि कृत विशद हिन्दी व्याख्या सहित ३ भागों में २१—००
१८९९ भगवद्गीता—रामानुज भाष्य टी० २—५०
१९०० भगवद्गीता—पदच्छेद—अन्वय—भा० टी० १—२५
१९०१ भगवद्गीता—साधारण भा०टी० ०—५०,जिल्द ०—८७
१९०२ भगवद्गीता—भाषा टीका गुटका जि० ०—१६
१९०३ भगवद्गीता—पं० सातवलेकरकृत पुरुषार्थबोधनी हिन्दी
१९०४ भगवद्गीता—भा० टी० अन्वयांक दोहा २—५०
१९०५ भगवद्गीता—पदच्छेद भा०टी०—ज्वालाप्रसाद २—००
१९०६ भगवद्गीता—पदच्छेद अन्वयांक, पदार्थ तथा भा० टी० चिद्घनानंद के अनुसार गुटका २—००
१९०७ भगवद्गीता गीता रहस्य—लो० मा० तिलक कृत हिन्दी संस्करण १२—००
१९०८ भगवद्गीता—भा० टी० गुटका ०—७५
१९०९ भगवद्गीता—तावीजी ०—१३, १—२५
१९१० भगवद्गीता—भाषा ०—२५, स्थूलाक्षर महात्म्य १—२५
१९११ भगवद्गीता—लाहौरी भाषा १८ महात्म्य ३—०, २—५०, १—५०, १—०० ०—८७
१९१२ भगवद्गीता—गुजराती टीका सहित ३—५०
१९१३ भगवद्गीता—राधेश्यामकृत २—७५
१९१४ भगवद्गीता—हरिगीतामृत छंद में २—२५
१९१५ भगवद्गीता—गीतावली का पद्यानुवाद २—२५
१९१६ भगवद्गीता—प्रश्नोत्तर १—००
१९१७ भगवद्गीता—गीताज्ञान—पद्यानुवाद ०—७५
१९१८ भगवद्गीता—गणेशानन्द कृत भा० टी० १—००
१९१९ भगवद्गीता—का राजकीय तत्वावलोकन २—००
१९२० भगवद्गीता—समन्वय—पं० सातवलेकर २—००
१९२१ भगवद्गीता—अविकृत पाठः पादसुव्यासंयोजित बिल्वालिकर संशोधित ७—५०
१९२२ भगवद्गीता दर्शनानि—संस्कृत ४—००
१९२३ मोक्ष गीता—सवालक्ष रामनाम २—२५
१९२४ राम गीता—महात्म्य सहित ०—१३
१९२५ राम गीता—भा० टी० बम्बई ०—८७
१९२६ विष्णु गीता—भा० टी० १—५०
१९२७ शक्ति गीता—भा० टी० १—००
१९२८ शम्भु गीता—भा० टी० १—५०
१९२९ शिव गीता—मूल ०—७५
१९३० शिव गीता—बालानन्दिनी व्याख्या १—२५
१९३१ शिव गीता—भाषा टीका बम्बई २—००
१९३२ सप्तश्लोकी गीता—भा० टी० ०—१३
१९३३ सत्याग्रह गीता—पं० क्षमाराव २—५०

— — — —

१९३४ सन्यास गीता—भा० टी० १—००
१९३५ सूर्य गीता—भा० टी० ०—५०

तंत्र, मंत्र

१९३६ अघोरी तन्त्र—हिन्दी टीका सहित १—००
१९३७ अनुष्ठान प्रकाश—चतुर्थी लाल विरचित खुला १२—००
१९३८ अष्ट सिद्धि—हिन्दी टीका सहित १—३७
१९३९ आनंद लहरी—श्री श्यामानन्द कृत टीका १—२५
१९४० आनंद लहरी—लक्ष्मीधर व्याख्या बंगाक्षर १—५०
१९४१ आनन्दलहरी—श्रीशंकर विरचित तथा कैवल्याश्रम विरचित सौभाग्य वर्धिनी टीका तथा आंगल अनुवाद सहित ३—००
१९४२ आश्चर्य योग माला तन्त्र—(सिद्ध नागार्जुन) ०—४४
१९४३ इन्द्रजाल विद्या संग्रह—इन्द्रजाल शास्त्र कामरत्न, दत्तात्रेय तन्त्र, षट्कर्म दीपिका तथा सिद्ध नागार्जुनकक्षपुटम्—मूल ३—७५
१९४४ इन्द्रजाल भाषा— ३—००
१९४५ ईशान शिवगुरु देव पद्धति—चतुर्थ भाग (क्रिया पाद में ३१—६४ पटल तथा योगपाद) ४—५०
१९४६ उड्डीश तन्त्र—भाषा टीका ०—७५
१९४७ उड्डामरेश्वर तंत्र—मूल १—७५
१९४८ उपदेश मुक्तावलि—दो भाग में हिन्दी ३—३७
१९४९ कर्पूरादिस्तोत्र—विमलानन्द स्वामी कृत भूमिका टिप्पणी तथा आ० एवलन कृत अंग्रेजी ४—००
१९५० कार्तवीर्यार्जुनोपासनाध्याय—मूल मात्र ३—५०
१९५१ काम बोध—साजनी कृत टीकोपेत ०—५०
१९५२ कामकला विलास—पुण्यानंद विरचित सटीक १—२५
५—००
१९५३ कामरत्न—हिन्दी भाषा १—२५
१९५४ कालीतन्त्र—मूल २—००
१९५५ काली नित्यार्चन—भाषा श्री श्यामानन्द २—५०
१९५६ काली स्वतमंजरी—श्री रमादत्त शुक्ल संपादित ०—३७
१९५७ कालीस्वरूपतत्व—भाषा श्री श्यामानन्द नाथ १—२५
१९५८ क्रियोड्डीशतंत्र—हिन्दी टीका सहित ७—५०
१९५९ कौलज्ञान निर्णय—(बोधतन्त्र) ४—००
१९६० कौलावलि निर्णय—ज्ञानानंद परमहंस विरचित ४—००
१९६१ कौलावली निर्णय—(हिन्दी) श्री रमादत्त शुक्ल ३—०

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१९६२ क्रम दीपिका—केशव भट कृत काशी ४—५०
१९६३ गायत्री—(अनादि गुरु मंत्र) श्रीराम शर्मा ०—३७
१९६४ गायत्री—(विपत्ति निवारिणी) श्रीराम शर्मा आचार्य
१९६५ गायत्री—वेद शास्त्रों का निचोड़ श्रीराम शर्मा ०—३७
१९६६ गायत्री—सचित्र श्रीराम शर्मा आचार्य ०—३७
१९६७ गायत्री अधिकार—(स्त्रियों का) श्रीराम शर्मा ०—३७
१९६८ गायत्री उपासना—श्रीराम शर्मा आचार्य हिन्दी ०—८
१९६९ गायत्री का अर्थ और सन्देश—श्रीराम शर्मा ०—०८
१९७० गायत्री का वैज्ञानिक आधार—श्रीराम शर्मा ०—३७
१९७१ गायत्री की गुप्त शक्ति—हिन्दी श्रीराम शर्मा ०—०८
१९७२ गायत्री की दिव्य सिद्धियां—हिन्दी श्रीराम शर्मा ०—८
१९७३ गायत्री की सुलभ साधना—श्रीराम शर्मा आचार्य
१९७४ गायत्री के चौदह रत्न—प्रथम तथा द्वितीय भाग ०—७५
१९७५ गायत्री के प्रत्यक्ष चमत्कार—(गायत्री साधकों को हुए चमत्कारी अनुभवों का संग्रह) ३—५०
१९७६ गायत्री तन्त्र—कवचादि युक्त ०—७५
१९७७ गायत्री तन्त्र—भाषभाष्य समेत ०—८७
१९७८ गायत्री तत्व विमर्श—(भाषा) श्री श्यामानन्द १—००
१९७९ गायत्री पंचांग—मूल बंबई २—२५
१९८० गायत्री पुरश्चरण—पं० विश्वेश्वर दयालु वैद्य ०—५०
१९८१ गायत्री पुरश्चरण पद्धति—शंकरसूरि विरचित २—२५
१९८२ गायत्री पुरश्चरण विधि— ०—२५
१९८३ गायत्रीपूजापद्धति—(तान्त्रिकी) विभाकराचार्य ०—२५
१९८४ गायत्री महाविज्ञान—भाषा तीन भाग १०—५०
१९८५ गायत्री यज्ञ विधान—हिन्दी पं० श्रीराम शर्मा ३—५०
१९८६ गायत्री रामायण— ०—०८
१९८७ गायत्री शिक्षा—(सचित्र) श्रीराम शर्मा आचार्य २—०
१९८८ गायत्री साधना—(स्त्रियों की) श्रीराम शर्मा ०—०८
१९८९ गायत्री—सुख शान्ति दायिनी हिन्दी ०—०८
१९९० गायत्री से बुद्धिविकास—हिन्दी ०—०८
१९९१ गायत्री से यज्ञ का सम्बन्ध—श्रीराम शर्मा ०—०८
१९९२ गायत्री ही कामधेनु है—श्रीराम शर्मा आचार्य ०—३७
१९९३ गुप्त साधन तंत्र—हिन्दी बम्बई ०—६२
१९९४ चक्रपूजा—भाषा (श्री भद्रशील शर्मा) १—५०
१९९५ चक्रपूजा के स्तोत्र—श्री भद्रशील शर्मा
१९९६ चतुर्विंशति गायत्री ०—५०

१९९७ चिद्गगन चन्द्रिका—(महाकवि कालिदास विरचित) त्रिविक्रम तीर्थ सम्पादित १—००
१९९८ डाकार्णव—बौद्धतन्त्र ७—००
१९९९ तत्वनिधि—कृष्ण राज संगृहीत बम्बई ७—००
२००० तन्त्रसार—(हिन्दी) दो भाग २—००
२००१ तन्त्रसार—कृष्णानन्द अपूर्ण संस्कृत २—००
२००२ तंत्रसार—अभिनव गुप्त कृत २—५०
२००३ तंत्रसार संग्रह—(विषनारायणीय) सव्याख्या १५—२५
२००४ तंत्र-संग्रह—नीलकंठ ३—५०
२००५ तंत्रयुद्ध प्रकरण—(भट्टारक श्रीवेदोत्तम प्रणीत)
२००६ तंत्रालोक—अभिनव गुप्त कृत १२ भाग में जयरथ कृत व्याख्या सहित ३९—००
२००७ तंत्रराज तंत्र—प्राण मंजरी कृत सुदर्शन टीका ५—००
२००८ तन्त्र समुच्चय—(नारायण प्रणीत) विमर्शिनी तथा विवरण व्याख्या सहित ८—५०
२००९ ताराकर्पूरराज स्तोत्र—संस्कृत हिन्दी टीका सहित ०—४४
२०१० तारा नित्यार्चन—भाषा श्री रामादत्त शुक्ल १—५०
२०११ तारा स्तव मंजरी—श्रीरमादत्त शुक्ल सम्पादित १—७५
२०१२ तारा स्वरूप तत्व—(भाषा) श्यामानन्द नाथ १—००
२०१३ तारा रहस्य—(ब्रह्मानंद विरचित) मूल-कल. १—२५
२०१४ दत्तात्रय तंत्र—भा० टी० ०—७५, ०—५०
२०१५ दशांग दुर्गा—मूल पत्रात्मक १—५०
२०१६ दक्षिणामूर्ति संहिता—(श्री विद्या अराधन) ०—८१
२०१७ दुर्गा चरित्र—(संपूर्ण ५ भाग) राधेश्याम कृत ३—००
२०१८ दुर्गा पञ्चाङ्ग—मूल—मातृप्रसाद पाण्डेय ०—६२
२०१९ दुर्गा पूजन प्रयोग—सप्तशती सहित पत्रात्मक ३—००
२०२० दुर्गा पूजा—श्यामा पूजा—पद्धति ०—७५
२०२१ दुर्गा सप्तशती—पं० वायुनन्दन मिश्र २—००
२०२२ दुर्गा सप्तशती—गुटका—मूल १—१३, ०—७५
२०२३ दुर्गा सप्तशती—गुटका निर्णयसागर १—०० २—२५
२०२४ दुर्गा सप्तशती—पत्रात्मक १—००
२०२५ दुर्गा सप्तशती—पत्रात्मक २—००, १—५०, ०—८७
२०२६ दुर्गा सप्तशती—मूल बम्बई ला ३—५० जिल्द ४—००
२०२७ दुर्गा सप्तशती—लखनऊ सजिल्द १—५०
२०२८ दुर्गा सप्तशती—शान्तनवी संस्कृत टीका पत्रात्मक ३—०
२०२९ दुर्गा सप्तशती—भाषा टीका सहित ३—००, २—५०

२०३० दुर्गा—(श्रीसप्तशती गीता) मंत्र, अन्वय, हि० टी० १—२५
२०३१ दुर्गा सप्तशती—पंडित रामेश्वर भाषा टीका २—००
२०३२ दुर्गा पाठ—सरल हिन्दी पद्यानुवाद २—००
२०३३ दुर्गा सप्तशती—मैथिली पत्रात्मक २—००
२०३४ दुर्गार्चनाकल्पद्रुम—मूल खुला पत्रा १२—००
२०३५ दुर्गा रामायण—(श्री दुर्गा सप्तशती का हिन्दी पद्यानुवाद)—ब्रह्मदत्त दीक्षित—ललाम ०—७५
२०३६ देवीसूक्त—आंगल अनुवाद सहित ०—५०
२०३७ देवीशतकम—म० म० कृष्णनाथ प्रणीत ०—७५
२०३८ धन्वन्तरी तंत्रशिक्षा—हिन्दी टीका सहित २—५०
२०३९ नित्योत्सव—उमानन्द कृत ६—००
२०४० निष्पन्न योगावलि—(अभयाकरगुप्त) बौद्धतन्त्र १०—००
२०४१ नेत्रतंत्र—क्षेमराज कृत व्याख्या दो भाग ६—००
२०४२ पञ्चमकार तथा भावत्रय—भाषा २—००
२०४३ परशुराम कल्पसूत्र—रामेश्वर प्रणीत व्याख्या १९—००
२०४४ पुरश्चरण दीपिका—(काशीनाथ भट विरचित) ०—३१
२०४५ प्राणतोषिणी तन्त्र—मूल मात्र १०—००
२०४६ बगला तन्त्रम्—मूल ०—५०
२०४७ बगला नित्यार्चन—भाषा सहित १—००
२०४८ बगला पूजा—पद्धति (वैदिक) १—००
२०४९ बगलाराध्यसरणि—अर्थात् बगला सर्वांग ०—५०
२०५० बगला विधान—पं० विश्वेश्वर दयालु वैद्य ०—२५
२०५१ बटुकभैरवोपासनाध्याय—मूल खुला पत्रा ३—००
२०५२ बालास्तव मंजरी— १—२५
२०५३ बृहत इन्द्रजाल—अर्थात् कौतुकरत्न भण्डागार ४—००
२०५४ बृहद् गायत्रीय महामंत्रीय ०—५०
२०५५ बृहद्-ब्रह्म संहिता—पूना २—७५
२०५६ बृहत्साबरतंत्र—शिवोक्त हिन्दी टीका १—००
२०५७ भगवती गीता—भाषा ३—००
२०५८ भुवनेश्वरी नित्यार्चन—भाषा पं० योगीन्द्रकृष्ण २—००
२०५९ भैरवोपदेश भाषा—बाबा मोतीलाल जी २—५०
२०६० मन्त्र महोदधि—सव्याख्या यन्त्र सहित पत्रात्मक ९—०
२०६१ मन्त्र रत्नमंजूषा—(त्रिविक्रम भट्टारक प्रणीत) १—००
२०६२ मंत्रसिद्धि का उपाय—(भाषा) भद्रशील शर्मा १—००
२०६३ महानिर्वाण तन्त्र—हरिहरानन्द टीका सहित ५—००
२०६४ महानिर्वाणतन्त्र—हिन्दी टीका सहित ८—५०

CC-0 In Public Domain, Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

२०६५ महामृत्युञ्जय जपविधि—भा० टी० ०—२७
२०६६ महामृत्युञ्जय पञ्चाङ्ग—मातृ प्रसाद पाण्डेय ०—६२
२०६७ महायक्षिणी साधन—भा० टी० १—७५
२०६८ महालक्ष्मी पञ्चाङ्ग मूल ०—८७
२०६९ महात्रिपुरा सुन्दरी पूजा कल्प— १—१२
२०७० मातृ उपासना—भाषा श्री रामचरण १—५०
२०७१ मातृका भेद तन्त्र— २—५०
२०७२ मालिनी विजय तन्त्र—आगम शास्त्र ३—५०
२०७३ माहेश्वर तन्त्र—श्री कृष्णप्रियाचार्य ४—५०
२०७४ माहेश्वरी तन्त्र—हिन्दी टीका सहित ०—४४
२०७५ मुमुक्षु-मार्ग—१—२ भाग (हिन्दी) ६—००
२०७६ मेरुतन्त्र—मूल मात्र बम्बई १२—००
२०७७ मृगेन्द्रतन्त्र—विद्यापाद-योगपाद व्याख्या ३—००
२०७८ योगिनी तन्त्र—हिन्दी टीका सहित ७—००
२०७९ रत्नत्रय विभागोमहायानोत्तरतन्त्र— ८—००
२०८० रुद्रयामल—उत्तर तन्त्र मूल ३—७५
२०८१ रुद्रयामल तन्त्र—भाषा टीका बम्बई १—००
२०८२ ललित सहस्रनाम—मूल मात्र बम्बई ०—५०
२०८३ ललितासहस्रनाम—सौभाग्य भास्कर भाष्य २—५०
२०८४ ललितास्तवमणिमाला—बम्बई ०—५०
२०८५ लक्ष्मीतन्त्र—पाञ्चरात्र २०—००
२०८६ वन्देमातरम्—आद्याप्रसाद १—००
२०८७ वंध्यातन्त्र—भाषा टीका ०—४४
२०८८ वर्ण बीज प्रकाश—(सब तन्त्र ग्रन्थों का कोष) ३—०
२०८९ वामकेश्वरीमत विवरण—जयरथ कृत ०—५०
२०९० वाममार्ग—हिन्दी भाषा २—००
२०९१ विनय—सुधा—(सत्यान्वेषी) १—००
२०९२ विष्णुसंहिता—गणपति शास्त्री संपादित ३—००
२०९३ वृत्तमाला स्तुति—ज्ञान श्रीमित्र विरचित ०—७५
२०९४ शाक्तानन्दतरंगिणी—(हिन्दी) मूलधर्मका परिचय २—००
२०९५ शाक्तानन्द तरंगिणी—बंगला अक्षरों में १—७५
२०९६ शक्तिसंगमतन्त्र—केवल तृतीय खंड ५—००
२०९७ शतचण्डी विधान—भाषा १—७५
२०९८ श्यामा रहस्य—(पूर्णानन्द गिरि विरचित) मूल २—५०
२०९९ श्यामा पूजा पद्धति—(भाषा) रमादत्त शुक्ल २—००
२१०० श्यामा सपर्या वासना—भाषा श्यामानन्द नाथ ३—००
२१०१ शाक्तप्रमोद—दशमहाविद्या का यन्त्र मूलमात्र [illegible]
२१०२ शारदा तिलक—मूल ३—७५, सटीका १३—००
२१०३ शावर चिन्तामणि १—२५
२१०४ शैव प्रमोद—चन्द्रशेखर शुक्ल ०—२५
२१०५ शैव मनोरंजिनी—चारों भाग ३—००
२१०६ श्रीविद्या खड्गमाला— १—००
२१०७ श्रीविद्यानित्यार्चन—भाषा सहित २—५०
२१०८ श्रीविद्या नित्याह्निकम्— ५—७५
२१०९ श्रीविद्यामंत्र भाष्य त्रिकाण्ड सारार्थबोधिनी व्या- १—७५
२११० श्रीविद्यासपर्या पद्धति—दो भाग ४—५०
२१११ श्रीविद्यास्तव मंजरी— २—५०
२११२ षट्चक्र निरूपण—(पूर्णानन्द यति विरचित) तथा शिव-
प्रोक्त पादुका पंचक—विवृत्ति टीका सहित ३—५०
२११३ सप्तशती रहस्य—श्यामानन्द नाथ २—५०
२११४ सर्वोल्लास तंत्र—मूलमात्र ५—००
२११५ सात्वत तंत्र— १—५०
२११६ साधक का संवाद—भाषा सत्यान्वेषी कृत ३—५०
२११७ सावरि तन्त्र—(सेवड़े का जादू) भाषा ३—००
२११८ सिद्ध विश्वेश्वर तंत्र—(विश्वेश्वर दयालु वैद्य) १—२५
२११९ स्वच्छन्द तंत्र—क्षेमराज कृत व्याख्या सात भाग १६—५०
२१२० सौन्दर्य लहरी—स्वा० विष्णुतीर्थ कृत हिन्दी ५—००
२१२१ सौन्दर्य लहरी—अंग्रेजी अनु. सचित्र अमरीका २७—५०
२१२२ सौन्दर्य लहरी—लक्ष्मीधर व्याख्या—भास्कर भाष्या ३—७५
२१२३ सार्थ सौंदर्य लहरी—(बाबा मोतीलाल) हिन्दी २—५०
२१२४ सौन्दर्य लहरी—कैवल्याश्रमकृतया सौभाग्यवर्धन्या
लक्ष्मीधराचार्य कृतया लक्ष्मीधरया, कामेश्वर सूरि
कृतया अरुणामोदिन्या आंगल अनुवाद २५—००
२१२५ सौभाग्य लक्ष्मी—भाषा टीका सहित १—००
२१२६ हनुमदुपासना—मूलमात्र बंबम्बई ३—५०
२१२७ हंसविलास—हंसमिट्ठू कृत ८—०
२१२८ हिन्दुओं की पोथी—देवीदत्त शुक्ल २—००
२१२९ त्रिपुरारहस्य—माहात्म्य खण्ड काशी ७—००
२१३० ज्ञानार्णव तंत्र—मूलमात्र पूना २—००

व्याकरण

२१३१ अनुवाद कला—अथवा वाग्व्यवहारादर्श श्री चारुदेव
शास्त्री कृत उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए
संस्कृत अनुवाद की पुस्तक २—५०
२१३२ अनुवादकौमुदी—गुरुप्रसाद शास्त्री दूसरा भाग १—५०
२१३३ अनुवादकौमुदी—(संस्कृत अनुवाद सीखने के लिए
परमोपयोगी)—पं० दुर्गादत्त पन्त १—५०
२१३४ अपभ्रंशप्रकाश—श्री देवेन्द्रकुमार ३—००
२१३५ अर्थव्यञ्जकताविचारम् ०—५०
२१३६ अनुवादचन्द्रिका—लेखक पं० चक्रधर हंस नौटियाल
एम. ए. एल. टी. शास्त्री यह पुस्तक हाई स्कूल
इंटरमीडियेट तथा संस्कृत की प्रथमा प्राज्ञ आदि
कक्षाओं के छात्रों के लिए अतीव उपयोगी है।
संस्कृत के सरल निबन्ध आदि भी दिये गये हैं अनु-
वाद की सर्वोत्तम पुस्तक के १२वें संस्करण १९६०
का ूल्य ३—००
२१३७ अनुवादप्रभा—गौरीशंकर शास्त्री १—५०
२१३८ अभिनवधातुरूपावली—अंग्रेजी टिप्पणी ०—७५
२१३९ अभिनवशब्दरूपावलि—(अंग्रेजी मराठी टिप्पणी) १—०
२१४० अष्टाध्याई प्रकाशिका—श्रीदेवप्रकाश पातंजल शास्त्री
एम. ए. कृत संस्कृत तथा हिन्दी टीका सहित
(१३१६ सूत्र) कपड़े की जिल्द ८—००
२१४१ अष्टाध्यायी सूत्रपाठ—पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु ०—६२
२१४२ अष्टाध्यायी सूत्रपाठ—(अष्टक पाणिनीय) ०—६९
२१४३ अष्टाध्यायी सूत्रपाठ—पंचपाठी बम्बई १—२५
२१४४ अष्टाध्यायी सूत्रपाठ—वार्तिक पाठ निर्णयसागर १—२५
२१४५ अष्टाध्यायी—सवार्तिक गणपाठादि मद्रास १—००
२१४६ अष्टाध्यायी सूत्रपाठ—वार्तिक गणपाठ सहित अनुवृत्ति
निर्देश समन्वित यन्त्रस्थ
अष्टाध्यायी सूत्रपाठ—संस्कृत टीका—गुरुप्रसाद २—५०
२१४७ अष्टाध्यायीसूत्रपाठ—संस्कृत व्याख्या गुरुकुल १४—००
२१४८ अष्टाध्यायी शब्दानुक्रमणिका—श्री श्रीधर
२१४९ शास्त्री १२—००
अव्ययविवेक—श्री तारापद चौधरी ०—७५
२१५० आदर्श प्रश्नोत्तरमाला—(बिहार प्रान्तीय प्रथमा
२१५१ परीक्षा १९२९ से ३८) ०—५०
२१५२ आदर्श लघुकौमुदी—म० म० मथुराप्रसाद २—००
२१५३ आशुबोध व्याकरण—श्रीतारानाथ २—५०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

५४ आर्षपाणिनीय व्याकरण-पं० हरिशंकर १५-००
५५ उक्तिव्यक्ति प्रकरण-पं० दामोदर विरचित (१२वीं शती की कोशली भाषा, व्याकरण तथा तद्नुसार संस्कृत उद्धरणों का अध्ययन) ८-००
५६ उक्तिरत्नाकर-साधुसुन्दरगणि विरचित-उक्तीयक औक्तिकपदानि शब्दानुक्रमणिकादि समेत ४-७५
१५७ उणादिकोश-अजमेर १-५०
१५८ उणादिकोष-महादेव वेदान्तिन ११-२५
१५९ उणादिसूत्र-उज्ज्वलदत्त वृत्ति सहित ६-००
१६० उणादिसूत्रे-औणादिक पदार्णव वृत्ति पेरुसूरिकृत ४-५०
१६१ उत्तरपक्षावलि-ब्रह्मशंकर मिश्र संपादित ०-२५
१६२ उपसर्गवृत्ति-पं० रामचन्द्र झा ०-०६
१६३ ऋजुपाणिनीय श्रीगोपालशास्त्री, ०-५०
१६४ कविकल्पद्रुम-(वोपदेव प्रणीत धातुपाठ) दुर्गादास प्रणीत धातुदीपिका व्याख्या १-८७
१६५ कविकल्पद्रुम-वोपदेव (धातुकोष) बालकृष्ण ६-००
१६६ कारकचक्र— ०-७५, १-५६
१६७ कारक संबद्धोद्योत- १-७५
१६८ कारकोल्लास-भरतमल्लिक ०-२५
१६९ काशिकावृत्ति-पाणिनी विरचित व्याकरण सूत्र वृत्ति पं० जयादित्य निर्मित १२-००
२१७० काशिकाविवरण पञ्चिका-(न्यास) वामन जयादित्य काशिका व्याख्या ५०-००
२१७१ कौमुदी रूपलता-३६७ शब्द रूपयुक्त शब्दसाधन १-५०
२१७२ गुजराती स्वर व्यञ्जन प्रक्रिया २-००
२१७३ गुप्ता शुद्धिप्रदर्शन अथवा-व्युत्पत्ति प्रदर्शन (पं० पछार अम्बिकादत्त व्यास) दर्पण व्याख्या पं० जितेन्द्रियाचार्य ०-५०
२१७४ गुरुप्रसाद तथा गुरुप्रसाद शेषम तातासुब्बाराय शास्त्री कृत १-२ भाग १९-७५
२१७५ चान्द्रव्याकरण-चन्द्रगोमिन तृतीय अध्याय १२-००
२१७६ चित्रप्रभा-लघुशब्द रत्न व्याख्या हरिशास्त्री कृत ४-००
२१७७ जैनेन्द्र व्याकरण-देवनन्दिमुनि कृत अपूर्ण ५-००
१७८ जैनेन्द्र व्याकरण—महावृत्ति १५-००
१७९ तिङ्न्तमञ्जरी-धातुपाठ सहित ०-३७
१८० तिङ्न्तार्णव तरणिः-धातु संख्या युक्त श्रीगोपाल कृष्णाचार्य यज्व विरचित अकारादि वर्णानुक्रम निबद्ध धातुपाठ सहित दुष्प्राप्य ३०-००
२१८१ दशपाद्युणादि वृत्ति-युधिष्ठिर मीमांसक- ३-२५
२१८२ दुर्घट वृत्ति-(पाणिनीय सूत्र तथा दुर्घटलक्ष्य व्याख्या) सरणदेव सटि० २-३७
२१८३ धातु पाठ-पाणिनि मुनि विरचित सटिप्पण ०-६२
२१८४ ध्वनिविचार-नारायणगोविन्द ५-००
२१८५ धर्मदीपिका-श्रीमंगल विजय जी ४-५०
२१८६ धातुप्रदीप (मैत्रेय रक्षित) ३-००
२१८७ धातुरत्नाकर-१-२, ५-८ भाग मुनि-श्री लावण्य विजय जी अहमदाबाद २४-५०
२१८८ धातुरूपचन्द्रिका-(धातुरूपकोष) उपाध्याय ५-५०
२१८९ धातुरूप संग्रह-(मध्यकोमुदी के समस्तधातुओं के गण, प्रक्रिया एवं निष्ठा के रूपों का संग्रह) ५-५०
२१९० धातुरूपादर्श-पं० तारानाथ विरचित २-५०
२१९१ धातु रूपावलि-निर्णयसागर ०-५०
२१९२ धातुरूपावलि-काशी ०-५०
२१९३ नागेशाय निर्णय-(परिभाषेन्दुशेखर व्याख्या) १-२५
२१९४ निपात व्ययोपसर्ग वृत्ति-तिलक कृत २-२५
२१९५ न्यास कल्पलता-न्यास शास्त्रार्थ १-००
२१९६ पदार्थ दीपिका-कौण्ड भट कृत ०-५०
२१९७ परम लघुकथा-परम लघु मञ्जूषा प्रश्नोत्तरी १-००
२१९८ परमलघुमञ्जूषा-अर्थदीपिका टीका १-२५
२१९९ परमलघु मंजूषा भा० टीका सहित
२२०० परिभाषा पाठ— ०-०६
२२०१ परिभाषा वृत्ति,-ज्ञापक समुच्चय, कारक चक्र पुरुषोत्तम देव ८-००
२२०२ परिभाषेन्दु शेखर-नागेश भट जयदेव मिश्र विरचित-विजया व्याख्या ४-५०
२२०३ परिभाषेन्दु शेखर-वैद्यनाथ कृत गदा टीका ३-५०
२२०४ परिभाषेन्दु शेखर-तत्वप्रकाशिका तथा भति ५-५०
२२०५ परिभाषेन्दु शेखर-बृहत् शास्त्रार्थ कला टीका ३-००
२२०६ परिभाषेन्दु शेखर-लघु जटाजूट टीका २-००
२२०७ परिभाषेन्दु प्रश्न पञ्जिका-परीक्षोपयुक्त ०-७५
२२०८ परिभाषेन्दु शेखर प्रश्नोत्तरी-श्री रामावतार १-२५
२२०९ परिभाषेन्दु दीपिका-पं० हरिशंकर झा ०-७५
२२१० परिष्कार दर्पण-शास्त्रार्थ कला सहित २-००
२२११ पाणिनीय प्रबोध-श्री गोपाल शास्त्री २ भाग २-००
२२१२ पाणिनीय प्रदीप-दो भाग रामकान्त त्रिपाठी १-२५
२२१३ पाणिनीय शिक्षा-प्रदीप व्याख्या ०-३७
२२१४ पणिनीय शिक्षा-अभिनवराजलक्ष्मी तथा हिंदी ०-६२
२२१५ पाणिनीय शिक्षा-मनमोहन घोष संपादित ३-७५
२२१६ पाणिनीय सूत्र व्याख्या-(सोदाहरण) वीरराघवाचार्य कृत दो भाग ३१-७५
२२१७ पाणिनीय सिद्धान्त कोमुदी-म० म० पं० मथुराप्रसाद दीक्षित ३-५०
२-२५
२२१८ पाली प्रबोध-श्री आद्यादत्त ठाकुर २-२५
२२१९ पालि व्याकरण-भिक्षुधर्मरक्षित
२२२० पाली-प्राकृत व्याकरण-म०म०मथुराप्रसाद हि० १-५०
२२२१ प्रक्रिया कोमदी-दो भाग में रामचन्द्राचार्य कृत प्रसाद टीका सहित २०-००
२२२२ प्रक्रिया सर्वस्व-नारायण भट सव्याख्या ४ भाग, १-७५
२२२३ प्रक्रिया सर्वस्व-नारायण भट तद्धित प्रकरण ३-६२
२२२४ प्रयोग शास्त्रार्थ कला-पं० वेणीमाधव ०-२५
२२२५ प्राकृत प्रकाश-जीवानंद जीर्ण १-५६
२२२६ प्राकृत प्रकाश-(वररुचि) मनोरमा व्याख्या हिं ४-५
२२२७ प्राकृत प्रकाश-(वरुचि) रामपाणिवाद व्याख्या १०-
२२२८ प्राकृत प्रकाश-(वररुचि) सञ्जीवनी सुबोधिनी २-०
२२२९ प्राकृत भाषाओं का व्याकरण-हिन्दी-डा० हेमचन्द्र जोशी २०-००
२२३० प्राकृत कल्पतरु-मूल तथा अंग्रेजी अनुवाद सहित १०-०
२२३१ प्राकृतभाषा-(हिन्दी) डा० प्रबोध बेचरदास
२२३२ प्राकृतमञ्जरी-(श्लोकबद्ध) कात्यायन मुनि ०-५०
२२३३ प्राकृत मणिदीप-अप्पय दीक्षितप्रणीत व्याख्या ७-५०
२२३४ प्राकृतरूपावतार-सिंहराज कृत ५-००
२२३५ प्राकृत व्याकरण-(प्राकृत शब्दानुशासन) त्रिविक्रम स्वोपज्ञ वृत्ति पाठान्तर, परिशिष्टादि १०-००
२२३६ प्राकृत व्याकरण वृत्ति-त्रिविक्रमदेव काशी ७-५०
२२३७ प्राकृत विमर्श-(हिन्दी) डा० सरयूप्रसाद ४-५०
२२३८ प्रारम्भिक-पाणिनीय-पं० विश्वनाथ शास्त्री थोड़े समय में व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करने के लिए १-०
२२३९ प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी-डा० कपिलदेव १-२५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

२२४० प्रौढ़ मनोरमा—भट्टोजी दीक्षित प्रभा-विभा—शब्द-
रत्न ज्योत्स्ना कुचमर्दिनी अव्ययीभावान्त ६—००
२२४१ प्रौढ़ मनोरमा—शब्दरत्न भैरवी प्रभा—विभा १२—००
२२४२ प्रौढ़मनोरमा—शब्द रत्न—भैरवी—भावप्रकाशप्रभा १२-००
२२४३ प्रौढ़ मनोरमा—अव्ययी भावान्त—लघु शब्दरत्न तथा
शब्द रत्नप्रकाशिका व्याख्या पं० सभापति १२—००
२२४४ प्रौढ़ मनोरमा—शब्दरत्न तत्पुरुषादि तिङन्तस. १०—००
२२४५ प्रौढ़मनोरमा—शब्दरत्न तत्वादर्श पंचसंधि २—५९
२२४६ प्रौढ़मनोरमा-शब्दरत्न-प्रश्नोत्तरावली १—५०
२२४७ प्रौढ़मनोरमा—खण्डन—चक्रपाणिदत्त कृत १—७५
२२४८ पूर्वपक्षावली तथा उत्तर पक्षावली ०—५०
२२४९ फक्किकादर्श—पं० विश्वनाथ झा १—२५
२२५० फक्किकाप्रकाश—मैथिलेन्द्रदत्त विरचित १—५०
२२५१ फक्किका प्रश्नोत्तरी—परीक्षोपयुक्त १—५०
२२५२ फक्किकामर्मवृत्ति—पं० हरिशंकर झा १—५०
२२५३ फक्किकारत्न मंजूषा—पंक्ति व्याख्या दो भाग ४—५०
२२५४ फक्किका रत्नावली—पं० यज्ञनारायण पाठक ०—३५
२२५५ फक्किका सरलार्थ—सदाशिव शास्त्री १—००
२२५६ बटुलोधिणी—पं० हरिशंकर झा ०—८७
२२५७ बनारस-प्रथमा सोत्तरा—प्रश्नावली २—५७
२२५८ बिहार सोत्तरा प्रथमा प्रश्नावली— २—००
२२५९ बृहत संस्कृत शिक्षा वाटिका—२—३—४ भाग १—८०
२२६० भज भारतीयम्—पं० रामबालक शास्त्री ०—५०
२२६१ भावबोधिनी—सिद्धान्त कौमुदी पंक्ति पदार्थ
(विवरण टीका) २—००
२२६२ भाषा मंजरी— ०—३७
२२६३ भाषावृत्ति—पुरुषोत्तमदेव सटिप्पण (केवल वेद विषयक
सूत्रों के अतिरिक्त पाणिनी सूत्र वृत्ति) १२—००
२२६४ भाषा प्रवेशिनी—वेंकटरमन शास्त्री २—००
२२६५ भूषण सार चन्द्रिका—पं० हरिशंकर शर्मा ०—३५
२२६६ भूषणसारप्रकाश—(वैयाकरणभूषणप्रश्नोत्तरी) ०—८७
२२६७ मध्यमा व्याकरण सोत्रा प्रश्नावली—प्रथम खंड १—५०,
द्वि० खंड १—२५, तृतीय खंड २—२५, चतुर्थ खंड
२—५०, सम्पूर्ण ४ खंड ७—५०
२२६८ मध्यसिद्धान्त कौमुदी—(वरदराज) मूल ३—००
२२६९ मध्यसिद्धान्त कौमुदी—प्रभाकरी विवृत्ति, परमोप-
योगि परिशिष्ट, हिन्दी भावानुवाद एवं प्रश्नोत्तरा-
वलि सहित पं० विश्वनाथ शास्त्री प्रभाकर
संपादित कपड़े की जिल्द ५—५०
२२७० मध्य सिद्धान्त कौमुदी—प्रयोग सूचि १—२५
२२७१ मध्य कौमुदी रहस्य—मध्य कौमुदी प्रश्नोत्तरी २—००
२२७२ मनोरमा रत्न विवेक—हरिशंकर झा १—५०
२२७३ महाभाष्य—कैयट कृत प्रदीप तथा अन्नंभट कृत प्रदीपो-
द्योत् टीका सहित नवान्हिक २ भाग में २०—००
२२७४ महाभाष्य—म० म० गिरधर शर्मा संपादित व्याकरण
शास्त्र इतिहासात्मक विस्तृत भूमिका सहित प्रदीप,
उद्योत तथा तत्वालोक नवान्हिक १५—००
२२७५ महाभाष्य (पातंजल)—कैयट निर्मित प्रदीप तथा
नागेश भट विरचित उद्द्योत व्याख्या तथा छाया
सहित नवान्हिक बम्बई १६—००
२२७६ महाभाष्य (पातंजल) —प्रदीप तथा उद्योत सहित
विधि शेष रूप दूसरा खंड २—२—१ से २ अ० ४
पा० २ आ० द्वितीय अध्यायान्त ११—००
२२७७ महाभाष्य प्रदीप तथा उद्योत —सहित विधिप्रकरण रूप
३रा खंड ३—१—१३ अ० ४ पा० १ आ० तक
तृतीय अध्यायान्त ६—००
२२७८ माभाष्य—प्रदीप तथा उद्योत चतुर्थ खंड ४—१—१
आ० से ५—४—१ आ० पंचम अध्यायान्त ११—००
२२७९ महाभाष्य—प्रदीप तथा उद्योत सहित स्थान विधिरूप
पंचम खंड (षष्ठ अध्याय) ६—१—१ आ० से
६—४—४ आ० तक १२—००
२२८० महाभाष्य—मूल तथा वासुदेव शास्त्री अभ्यंकर कृत
मराठी अनुवाद सहित संपूर्ण ७ भागों में ८०—००
२२८१ महाभाष्य (पातंजल) तथा ह्नाधिकार प्रदीप तथा
उद्योत २भाग पूना ७ अ० २ पा० १ आ० ६—५०
२२८२ महाभाष्य प्रकाश प्रश्नोत्तरी—मधुकान्त झा ०—७५
२२८३ महाभाष्य प्रश्नोत्तरी— विश्वनाथ शास्त्री ०—८७
२२८४ महाभाष्य कुञ्चिका—(नवान्हिक) हरिशंकरझा १—५०
२२८५ महाभाष्यादर्श— १—५०
२२८६ महाभाष्य शब्दानुक्रमणिका—(स्थान निर्देशात्मक
कोश) श्रीधर शास्त्री १५—००
२२८७ मुग्धबोध व्याकरण—(सटीक) दुर्गादास व्याख्या ५—०
२२८८ रचनानुवाद कौमुदी—(संस्कृत व्याकरण, अनुवाद
तथा निबन्ध) डा० कपिलदेव यन्त्रस्थ
२२८९ रामचन्द्रिका—(संस्कृत शब्दरूपावली) ०—५०
२२९० रूपावतार—धर्मकीर्ति कृत दो भाग में
२२९१ रूपकौमुदी—(शब्द धातुरूप संग्रह) ३—००
२२९२ रूपचन्द्रिका—शब्द—धातु रूपावली २—५०
२२९३ रूपप्रभा—शब्द धातुरूपावली ३—५०
२२९४ रूपमाला—षड्लिंग विभाग शब्दरूपावलि पर्यन्त ०—८७
२२९५ रामावतार प्रकीर्ण प्रबन्धावलि प्रथम खंड ११—००
२२९६ लघुमंजूषारहस्य—रामेश्वरीपुरी १—००
२२९७ लघुधातुरूप संग्रह ०—३७
२२९८ लघुसिद्धान्तकौमुदी—सटीक १—२५
२२९९ लघुसिद्धान्त कौमुदी—सुधा संस्कृत टीका, ३—००
सजिल्द ३—७५
२३०० लघुसिद्धान्तकौमुदी—श्री पं० विश्वनाथजी शास्त्री
प्रभाकर कृत उपेन्द्र विवृत्ति तथा सूत्रों का सरल
हिन्दी अनुवाद तथा अनेकों परिशिष्ट समेत
ग्लेज़ कागज पृष्ठ संख्या ४४४ सप्तम संस्करण २—०
२३०१ लघुसिद्धान्तकौमुदी—व्याकरणाचार्य पं० श्रीवरानन्द
शास्त्रीकृत अति विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित।
प्रत्येक रूप सिद्धि युक्त १००० पृष्ठ में समाप्त
नवीन संस्करण यंत्रस्थ
०—९४
२३०२ लघुकौमुदी—सोत्तरा प्रयोगसूचि २—५०
२३०३ लघुकौमुदी—प्रश्नोत्तरी ०—५०
२३०४ लघुजटीका लघुशब्देन्दुशेखर (व्याख्या)
२३०५ लघुशब्देन्दुकला (लघुशब्देन्दु शेखर प्रश्नोत्तरी) १—२५
२३०६ लघुशब्देन्दुशेखर—(नागेश भट) अभिनव चन्द्रिका,
चिदस्थिमाला, सदाशिव भट्टी, विषमपद विवृत्ति,
ज्योत्स्ना विजया आदि छः टीका २०—००
लघुशब्देन्दुशेखर श्रीनित्यानन्दअव्ययीभावान्त १०—००
२३०७ लघुशब्देन्दुशेखर—नागेशभट्ट कृत नागेशोक्ति २—५०
२३०८ लघुशब्देन्दुशेखर—व्याख्या सदाशिव भटी ३—००
२३०९ लघुशब्देन्दुशेखर—व्याख्या श्रीधरी १—५०
२३१० लघुशब्देन्दुशेखर—व्याख्या विषमपद वाक्य वृत्ति २—५०
२३११ लिङ्गवचनविचार—दीनबन्धुझा उमेशझा संपादित ४—०
२३१२ लिङ्गानुशासन—दुर्गसिंह कृत स्वोपज्ञ वृत्ति समेत ८—०
२३१३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

२३१४ लौकिकन्यायशास्त्रार्थकला—कूटशास्त्रार्थकला ०—७५
२३१५ वर्णोच्चारण शिक्षा— ०—१६
२३१६ वाक्यपदीय ब्रह्मकाण्ड द्रव्येशझा कृत व्याख्या १—२५
२३१७ वाक्यपदीय—तृतीय कांड प्रकीर्णक काण्ड हेलराज व्याख्या सहित ५—६२
२३१८ वाक्यतत्व—पी० एस० ए० शास्त्री ०—३७
२३१९ वाक्यमुक्तावली—मुक्तामयवाक्य—चारुदेवशा. ३—००
२३२० वादरत्न २ भाग ५—००
२३२१ वादार्थसंग्रह—४ भाग २—७५
२३२२ विभक्त्यर्थ निर्णय—गिरधर भटाचार्य ५ भाग ७—५०
२३२३ वेदांग प्रकाश—स्वा० दयानन्दसरस्वती कृत संपूर्ण १५—०
२३२४ वैदिकस्वर मीमांसा— ३—००
२३२५ वैयाकरणभूषणसार—शांकरीव्याख्या प्रथमभाग ८—५०
२३२६ वैयाकरण भूषण निबन्ध संग्रह—प्रथमभाग ०—२५
२३२७ वैयाकरण भूषण सार—मूल कलकत्ता १—०९
२३२८ वैयाकरण भूषणसार—सरला सुबोधिनी टीका २—००
२३२९ वैयाकरणभूषणसार—(कौण्डभट दर्पणभैरवी) १२—००
२३३० वैयाकरणभूषणसार—पं० श्री सभापति जी श्री बालकृष्ण शास्त्री पंचोली कृतदर्पणप्रभा सहित ७—००
२३३१ वैयाकरण भूषण सार प्रकाश— ०—८७
२३३२ वैयाकरणसिद्धान्तकारिका—भटोजीदीक्षित—कौंड १—०
२३३३ वैयाकरण सिद्धान्त लघु-मंजूषा कुञ्जिका—कला टीका—तात्पर्य निरुपणान्त परीक्षोपयोगी ४—००
२३३४ व्याकरणदीपिका—पाणिनीयसूत्रवृत्तिऔरंभट १५—००
२३३५ व्याकरण सिद्धान्त सुधा निधि—पाणिनीय अष्टाध्यायी भाष्य व्याख्यान रुप श्री विश्वेश्वर सूरि कृत १५—०
२३३६ व्युत्पत्ति प्रदर्शन तथा गूढ़ाशुद्धि प्रदर्शन ०—५०
२३३७ वृत्तिदीपिका—मौनि श्रीकृष्ण भट विरचित ०—५६
२३३८ शब्दकौस्तुभ—भटोजी दीक्षित १८—००
२३३९ शब्दकौस्तुभ—नवान्हिक मात्र (भटोजी दीक्षित) ६—०
२३४० शब्दमंजरी—शंकरराम शास्त्री संपादित ०—६२
२३४१ शब्दरूप महोदधि— ०—६२
२३४२ शब्दरूपादर्श—जीवानन्द ०—८१
२३४३ शब्द रूपावलि— ०—२५, ०—३१
२३४४ शब्दरूपावलि— ०—३७, ०—५०
२३४५ शब्दापशब्दविवेक—प्रो० चारुदेव शास्त्री ५—००

२३४६ शब्दरत्न प्रदीप २—००
२३४७ शब्द सरोवर—राजाराम शास्त्री ०—३७
२३४८ शब्देन्दु सुधा—हरिशंकर झा १—५०
२३४९ शाकटायनव्याकरण—(यजवर्म) चिन्तामणि १५—००
२३५० शास्त्रार्थ रत्नावलि—म० म० जयदेव मिश्र कृत १—५०
२३५१ शिशुतोषिणी—हरिशंकर झा ०—७५
२३५२ षड्भाषा चन्द्रिका—(लक्ष्मीधर) अंग्रेजीभूमिका ७—५०
२३५३ संस्कृतचन्द्रिका—प्रथम प्रकाश ०—६२
२३५४ संस्कृत नाम रूपावली ०—५०
२३५५ संस्कृतनिबन्धपथप्रदर्शक—(हिन्दी) वी० आप्टे ४—००
२३५६ संस्कृत प्रथम पुस्तक—रामबिहारीलाल २—००
२३५७ संस्कृत द्वितीय पुस्तक—रामबिहारी लाल ३—००
२३५८ संस्कृत प्रतिलेखावलि—२ भाग ०—५६
२३५९ संस्कृत पाठमाला—पं० सातवलेकर २४ भाग १२—००
२३६० संस्कृत पाठावली-मराठी अंग्रेजीकृष्णाजीभास्कर १—१३
२३६१ संस्कृत प्रौढ़पाठावली—महालिंग शास्त्री ०—९४
२३६२ संस्कृत बोधिनी—प्रथम भाग पं० गिरिजादत्त ०—५०
२३६३ संस्कृत रचनानुवाद शिक्षक—श्री विश्वेश्वर २—००
२३६४ संस्कृत रचना प्रकाश—श्री रमाकान्त द्विवेदी १—९४
२३६५ संस्कृतोपक्रम पाठावली—महालिंग शास्त्री ०—६२
२३६६ संस्कृत रचनानुवाद चन्द्रिका—पं० रामबालक शास्त्री कृत—उच्चतर माध्यमिक छात्रों के लिए बोधगम्य तथा रुचिकर संस्कृत व्याकरण, १—२५
२३६७ संस्कृतालोक १—३ भाग १—५०
२३६८ संस्कृत पठनपाठन की अनुभूत सरलतम विधि—पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु १—२५
२३६९ संस्कृत लेखकमुक्तावली—श्रीबलवन्तकृत ६ भाग १—५०
२३७० संस्कृत वाक्य प्रबोध—स्वामी दयानन्द सरस्वती ०—२२
२३७१ संस्कृत वाक्य रचना—(मराठी माध्यम से) १—९६
२३७२ संस्कृत व्याकरण—रामचन्द्र झा १—००
२३७३ संस्कृत व्याकरण प्रबोध—२ भाग ५—५०
२३७४ संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका—बाबूराम सक्सेना ५—००
२३७५ संस्कृत व्याकरण सार—प्रो० रामचन्द्र शर्मा एम० ए० कृत—हिन्दी भाषा द्वारा संस्कृत व्याकरण सीखने के लिये उच्च कक्षाओं के लिए उपयोगी द्वितीय संस्करण ६—००

२३७६ संस्कृतव्याकरणशास्त्रकाइतिहास—युधि० मी० १०—००
२३७७ संस्कृत शिक्षा—४ भाग—श्री कनककलाढ शर्मा २—२५
२३७८ संस्कृत शब्द रूप कोश—कृष्णजी भास्कर वीरकर १—००
२३७९ संस्कृत सुलभ धातु रूपकोश—वीरकर तृतीय १—५०
२३८० संस्कृतस्वयंशिक्षक—प्रभा पं० गौरीशंकर शास्त्री ०—६९
२३८१ संस्कृत स्वयं शिक्षक डा० रामजी उपाध्याय २—५०
२३८२ संस्कृत स्वयं शिक्षक—पं० सातवलेकर ५—००
२३८३ संस्कृत सुबोधिनी—प्रथमभाग—पं० यज्ञनारायण ०—३७
२३८४ सन्धि चन्द्रिका १—००
२३८५ समस्या समज्या—म० म० रामशास्त्री २—००
२३८६ समास चक्र— ०—३१, ०—१६
२३८७ समास चन्द्रिका ०—०९
२३८८ समासदर्पण ०—८८
२३८९ सरल संस्कृत व्याकरण—लेखक श्री सत्यांशु मोहन मुखोपाध्याय एम. ए., एल. टी., टीचर्स ट्रेनिंग कालेज काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी। उत्तर प्रदेशीय हाई स्कूल, एडमिशन और इंटरमीडियेट परीक्षाओं के लिए उपयोगी। विषयविन्यास की नवीनता और सरलता द्वारा संस्कृत व्याकरण को सहज बोध्य बनाने वाली अत्युत्तम पुस्तक २—००
२३९० सरल हिन्दी व्याकरण—केदारनाथ शर्मा १—२५
२३९१ सरस्वती कण्ठाभरण—भोजदेव नारायण दण्डनाथ कृत हृदयहारिणी व्याख्या समेत चार भाग में १०—५०
२३९२ सादृश्य शास्त्रार्थ कला—वेणीमाधव शास्त्री ०—२५
२३९३ सारस्वत-व्याकरण—माधवकृत विवरण सहित ४—२५
२३९४ सारस्वत व्याकरण—चन्द्रकीर्ति सूरि प्रणीत—चन्द्रकीर्ति सुबोधिनी प्रसाद तथा मनोरमा विवृत्ति तथा सटीक लगानुशासन सहित संपूर्ण ८—००
२३९५ सारस्वत व्याकरण-अनुभूति स्वरूपाचार्य ३ वृति ३—२५
२३९६ सारस्वत व्याकरण—पूर्वार्द्ध चन्द्रकीर्ति व्याख्या ३—५०
२३९७ सारस्वत व्याकरण—(पूर्वार्द्ध) सटिप्पण १—००
२३९८ सिद्धान्त कौमुदी—भटोजी दीक्षित मूल ३—००
२३९९ सिद्धान्त कौमुदी—ज्ञानेन्द्र सरस्वती कृत तत्वबोधिनी टीका सहित म० म० पं० शिवदत्त टिप्पणी १०—०
२४०० सिद्धांत कौमुदी—केवल बालमनोरमा टीका—काशी पूर्वार्द्ध ७—००; उत्तरार्द्ध ६—५०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

२४०१ सिद्धान्त कौमुदी–बालमनोरमा–उत्तरार्द्ध मद्रास
२४०२ सिद्धान्त कौमुदी–वासुदेव दीक्षित कृत बाल मनोरमा तथा ज्ञानेन्द्र सरस्वती कृत तत्वबोधिनी दो संस्कृत टीका म० म० पं० गिरधर शर्मा जी तथा म० म० परमेश्वरानन्द जी द्वारा संशोधित। ४ भागों में सम्पूर्ण–प्रत्येक भाग अजिल्द ४) सजिल्द ५) संपूर्ण अजिल्द १६–० सजिल्द २०–०
२४०३ सिद्धांत कौमुदी प्रयोग सूची–(स्त्री प्रत्ययान्त)–साधनिका के साथ सूत्र वार्त्तिक परिभाषाओं का संक्षिप्त विवरण हिन्दी व्याख्या सहित पं० श्री जितेन्द्रियाचार्य १–००
२४०४ सिद्धान्त कौमुदी–प्रयोग सूची कारकांत ०–६२ न० पु० कारकादि–दीपिकान्त (द्वि० खं०) ०–७५ विकारार्थकादि चुरादन्त १–१३ तृ० खं० १–१३ ण्यन्तादि-उत्तरकृदन्त १-० संपूर्ण चारोंभाग ४–३७
२४०५ सिद्धांत कौमुदी–प्रश्नोत्तरी ४ भाग ७–५०
२४०६ सिद्धांतकौमुदी सोत्तरास्वर वैदिक–प्रयोग सूची ०–८७
२४०७ स्वरवैदिक प्रश्नोत्तरी १–२५
२४०८ सिद्धातचन्द्रिका–(रामाश्रम) संक्षिप्तबालबो० ३–५०
२४०९ सिद्धान्तचन्द्रिका–मू०तत्वदीपिका टीकासं० १२–००
२४१० स्वर व्यंजन–(भारत तथा द्वीपांतर की कवि भाषाओं का लिपिबोधक ग्रंथ) डा० रघुवीर १०–००
२४११ स्फोटवाद–नागेश भट सटीक १०–००
२४१२ स्फोट सिद्धि–(भारत मिश्र प्रणीत) ०–६२
२४१३ सुबोध संस्कृत व्याकरण–दो भाग १–००
२४१४ सुबोध संस्कृत–कामत कृत ३ भाग में ६–५०
२४१५ सुलभधातु रूप कोष १–५०
२४१६ सुलभसंस्कृत–नरोत्तम शास्त्री ०–३१
२४१७ सोत्तरासिद्धान्तप्रयोगसूची–शिवदत्त ४ भाग २–७५
२४१८ क्षीरतरंगिणी–क्षीरस्वामिकृत–पाणिनीधातुपाठस्य पश्चिमोत्तरशाखाया व्याख्या १२–००

काव्य

२४१९ अच्युतराभ्युदय–(राजनाथ कवि) श्रीकृष्ण सूरि विरचित लघुपञ्चिका व्याख्या समेत १ से ६ सर्ग १–५०, ७ से १२ ५–००
२४२१ अन्योक्ति साहस्री–श्री बदरीनाथ शर्मा ०–६२
२४२२ अन्योक्त्यष्टक संग्रह–पाठभेद परिशिष्ट भूमिका आदि समन्वित प्रतिभा दलपतराय सम्पादित २–००
२४२३ अब्दुल्लाचरित–(लक्ष्मीधर) बिमलचौधरीसं० ८–००
२४२४ अमर मंडन–(अमरसिंह कृत) कृष्णसूरि विरचित ३–०
२४२५ अमरुशतक–रसिकसञ्जीवनीव्याख्यापरिशिष्ट १–५०
२४२६ अमरु शतक–भा० टी० बम्बई १–१३
२४२७ आचार्य क्षेमेन्द्र–डा० मनोहरलाल गौड़ कृत समीक्षा सहित हिन्दी अनुवाद ४–००
२४२८ आर्यासप्तशती–विश्वेश्वरविरचितस्वोपज्ञव्या० ४–५०
२४२९ आर्यासप्तशती–(गोवर्धनाचार्य) दीपना कृत २–५०
२४३० आर्य शतक–अप्पय दीक्षित कृत सटीक १–२५
२४३१ आश्लेष शतक–नारायण पण्डित ०–३७
२४३२ आन्हिकस्तव–कपालिशास्त्रि प्रणीत १–००
२४३३ उदयवर्मचरित–के. साम्बशिवशास्त्री संशोधित १–२५
२४३४ उदार राघव–मल्लाचार्य प्रणीत सटीक २–५०
२४३५ उषानिरुद्ध–(प्राकृतकाव्य) रामपाणिवाद प्रणीत९–०
२४३६ ऋतु संहार–हिन्दी टीका सहित ०–२५
२४३७ ऋतुसंहार–सटीक बम्बई ०–७५
२४३८ ऋतुसंहार–संस्कृत हिन्दी टीका बम्बई १–१३
२४३९ कथाकोष प्रकरण–जिनेश्वर सूरि कृत प्राकृत १०–५०
२४४० कण्ठाभरणम–हिन्दी अनुवाद सहित ०–३१
२४४१ कवीन्द्र चन्द्रोदय–डा० हरदत्त संपादित २–५०
२४४२ काणि कण्ठाभरण–सव्याख्या ०–८७
२४४३ कालिदास–कवि सम्राट् कालिदास पर लिखी गई अलौकिक पुस्तक ले० श्री चन्द्रबली पाण्डेय ७–५०
२४४४ कालिदास ग्रन्थावलि–केवलसरल भाषानुवाद ३–००
२४४५ कालिदास ग्रंथावलि–(कालिदास के ग्रंथों का संग्रह भा० टी० सहित) पं० सीताराम चतुर्वेदी दुष्प्राप्य
२४४६ काव्य प्रबन्ध–बालकृष्ण भट शास्त्रिकृत १–५०
२४४७ काव्यमाला–१४ गुच्छक नाना विध प्राचीन काव्य आदि साहित्य ग्रन्थ २, ४, ५, ६, ७, ११, १२, १४, मिलते है। १४–००
२४४८ काव्यरत्न–(मुनिसुव्रत काव्य) अर्हद्दास ०–८७
२४४९ काव्य संग्रह–सव्याख्या ३ भाग में १३–००
२४५० किङ्किणी माला महालिंग शास्त्री २–५०
२४५१ किरात–संपूर्ण हि०टी० सहित रामप्रताप ६–००
२४५२ किरातार्जुनीयम्–(भारवी) घण्टापथ व्या० ३–५०
२४५३ किरातार्जुनीयम्–(भारवी)टीका घ० काशी २–५०
२४५४ किरातार्जुनीयम्–१–३ सर्गबालबो० सं०टी० ०–३१
२४५५ किरातार्जुनीय–(संपूर्ण) घण्टापथ, प्रकाश संस्कृत हिन्दीटीकासंस्करण ४–० तथा १–५ सर्ग १–२५
२४५६ किरातार्जुनीय–१–२ सर्ग सं० हि० काशी १–२५
२४५७ किरातार्जुनीयम्–१–२ सर्ग सं० हि० व्याख्या १–००
२४५८ किरातार्जुनीय–केवल हिन्दी संपूर्ण २–५०
२४५९ कुमारपाल चरित–श्रीहेमचन्द्र विरचित प्राकृत व्याकरण सहित ६–००
२४६० कुमारसंभव–संपूर्ण संजीवनी टीका बम्बई २–५०
२४६१ कुमारसम्भव–१–१७ सर्ग संजीवनी बंबई ४–५०
२४६२ कुमारसंभव–१–७ सर्ग अन्वय, पुंसवनी व्याख्या, व्युत्पत्ति, भावार्थ भाषार्थ तथा भाषापद्य ५–००
२४६३ कुमार संभव–१–७ सर्ग मल्लिनाथ कृत संजीवनी व्याख्या समेत अविनाशचन्द्र संशोधित
२४६४ कुमारसंभव–१–४ सर्ग अन्वय, पुंसवनी व्याख्या, सं० हि० २–५०, १–५ सर्ग ३–५०
२४६५ कुमार संभव–१–४ सर्ग अन्वय, सं० टि० ३ टीका २–०
२४६६ कुमारसंभव–१-३ सर्ग गोपालचारी सं० व्या. १–१३
२४६७ कुमारसम्भव–१ व ५ सर्ग पुंसवनी टीका, १–५०
२४६८ कुमारसम्भव–पंचम सर्ग पुंसवनी, व्याख्या १–००
२४६९ कुमारसम्भव केवल पंचम सर्ग डा० कैलाशनाथ १–७५
२४७० कुमारसंभव–टिप्पणी समेत अंग्रेजी अनुवाद १६–५०
२४७१ कुट्टनीमतकाव्य–दामोदर गुप्त मधुसूदन कौल ३–००
२४७२ कृष्णचरितम्-(समुद्रगुप्त) जीवराम कालिदास २–००
२४७३ श्रीकृष्ण लीलातरंगिनी–(नारायणतीर्थ प्रणीत) १–७५
२४७४ कोक संदेश–विष्णुत्रात विरचित मूल ०–६२
२४७५ कोशावतंसः–राघवकवि विरचित २–००
२४७६ गंगावतरण–नीलकंठ दीक्षित मूल ०–७५
२४७७ गउडवहो–वाक्पति (ऐतिहासिक प्राकृतकाव्य) पाठान्तर, संस्कृत व्याख्या अंग्रेजी भूमिका, ५–५०
२४७८ गाथासप्तशती–सातवाहनकृत मराठीअनुवाद २५–००
२४७९ गीत गोबिन्द–(जयदेव) मूल ०–५०

CC-0 ... Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

२४८० गीत गोविन्द–रसिक प्रिया रसमंजरी सं०टी० ३–५०
२४८१ गीतगोविन्द–(जयदेव) भाषा टीका सहित १–०
२४८२ गीतगोविन्द–अभिनय सहित २–२५
२४८३ गुरुवंश काव्य–प्रथम भाग १–७ सर्ग १–८७
२४८४ गुर्जर रासावली— १८–००
२४८५ ग्राम ज्योति–पं० क्षमाराव १–५०
२४८६ घट खर्पर काव्य–सटिप्पन, अंग्रेजी अनुवाद ४–००
२४८७ घटखर्पर काव्य–अभिनव गुप्त कृत विवृत्ति ०–५०
२४८८ चक्रपाणि विजय महाकाव्य–भट लक्ष्मीधर ३–५०
२४८९ चन्द्रप्रभ चरित–वीर नन्दिकृत संपूर्ण २–५०
२४९० चन्द्रप्रभचरित १–३ सर्ग संस्कृत हिन्दी टीका ०–५०
२४९१ चीमनी चरित–नीलकंठ विरचित ३–००
२४९२ चौरपञ्चाशिका–बिल्हण कृत अंग्रेजीअनुवाद २–५०
२४९३ जयन्त विजय–अभय देव १–५०
२४९४ जवाहरतरङ्गिणी–(भारतरत्नशतकम्) वर्णेकर २–०
२४९५ जानकी हरण–कुमारदास भूमिका, नोट्स ६–००
२४९६ जातिमाला–सोमनाथ विरचित २–००
२४९७ जामविजय–काव्य (वाणीनाथ) डा० चौधरी ५–००
२४९८ दशग्रीववध महाकाव्यम्–मार्कण्डेय मिश्र विर० ३–०
२४९९ दशावतार चरित–क्षेमेन्द्र १–५०
२५०० दिग्विजय महाकाव्य–मेघविजय जी कृत ८–००
२५०१ देलराम कथासार–राजानक भट मूल ०–७५
२५०२ देशिकेन्द्र स्तवाञ्जलि–प० महालिङ्ग शास्त्री ०–६२
२५०३ देशोपदेश नर्ममाला–क्षेमेन्द्र विरचित १–५०
२५०४ धर्म शर्माभ्युदय–(हरिचन्द्र) मूल १–५०
२५०५ धर्माकूतम्–सुन्दर काण्ड त्र्यम्बक मखिन ४–७५
२५०६ धर्माधिकारि वंश वर्णनम्– ०–५०
२५०७ धर्माभ्युदयमहाकाव्य–(वस्तुपालच०) उदयप्रभ ८–५०
२५०८ नटेश विजय–(वेंकट कृष्णदीक्षित) ०–८७
२५०९ नरनारायणीय–सव्याख्या १–३७
२५१० नरेश्वर परीक्षा (पादज्योति) संस्कृत व्याख्या २–००
२५११ नलाख्यान–भलण कवि–गुजराती ८–००
२५१२ नारायण शतक –(विद्याकर) व्याख्या सहित ४–००
२५१३ नारायणीयम् (नारायण) सव्याख्या ५–००
२५१४ नेमिदूतम्— १–५०
२५१५ नेमिनिर्वाण काव्य–वाग्भट विरचित १–५०

२५१६ नैषधीय चरित–(श्री हर्ष) नारायण शास्त्री विरचित प्रकाश व्याख्या निर्णयसागर बम्बई १५–००
२५१७ नैषधीय चरित–वेंकटेश्वर का छापा १०–००
२५१८ नैषधीयचरित–मल्लिनाथटीका १–८ सर्गकाशी ४–००
२५१९ नैषधीयचरित-हरिदासकृत संस्कृत टीका पूर्वार्द्ध १२–५०
२५२० नैषधीय चरित–मल्लिनाथ कृत 'जीवातु' तथा गोविंद शास्त्री कृत मणि प्रभा संस्कृत हिन्दी टीका सहित–संपूर्ण दो भाग काशी १३–००, १ सर्ग १–०, १–३सर्ग १–७५, १–५सर्ग ३–५०, १–९सर्ग ६ –००
२५२१ नैषधीय चरित–संस्कृत हिन्दी टीका १–३ सर्ग १–५०
२५२२ नैषधीयचरित–(भा० टी०) चण्डिकाप्रसाद ८–००
२५२३ नैषधीय चरित–भा० टी० ऋषीश्वरनाथ ६–००
२५२४ पउमसिरिचरिउ (धाहिल) अपभ्रंश ४–७५
२५२५ पतञ्जलिचरित–रामभद्र दीक्षित ०–८७
२५२६ पद्यमाला–श्री हरिशंकर मिश्र संपादित संस्कृत तथा हिन्दी सहित कोमल बुद्धि छात्रों के लिए अत्यन्त रोचक है १–००
२५२७ पद्मनाभशतक–(रामवर्म कुल शेखर) ०–३७
२५२८ पद्मानन्द महाकाव्य–(अमरचन्द सूरि) १६–००
२५२९ पद्मपुष्पाञ्जलि–वी० सुब्रह्मण्य विरचित २–००
२५३० पद्यवेणी–वेणीदत्त (सुभाषित) डा० चौधरी १०–०
२५३१ पद्यहर्षचरित–राजगोपालचक्रवर्ति १–२५
२५३२ पद्यामृत तरंगिणी–(हरिभास्कर) डा० चौधरी १०–०
२५३३ परमानन्दकाव्य–कवि परमानन्द १०–००
२५३४ पवनदूत–धोयी विरचित १–५०
२५३५ पान्थदूत काव्य–भोलानाथ डा० चौधरी संपादित १–०
२५३६ पादारविन्दशतक–मूक कवि ०–२५
२५३७ पारिजातहरण महाकाव्य–कविकर्णपूर ८–००
२५३८ पुरञ्जनचरित–कृष्णदत्त मैथिल ५–००
२५३९ पुष्पबाणविलास–(कालिदास) व्याख्या ०–५०
२५४० पृथ्वीराजविजय–जोनराज व्या० स० अपूर्ण २–२५
२५४१ प्रभावक चरित–डा० हीरानन्द संपादित ३–००
२५४२ प्रभावकचरित आचार्य जिनविजय संपादित ७–००
२५४३ प्रेमरसायन–श्रीविश्वनाथ पण्डित रचित सटीक १–००
२५४४ बल्लालचरित–आनन्द भट १–५०
२५४५ बालभारतम्–(अगस्त्यपंडित) संस्कृत व्याख्या २–२५

२५४७ बुद्धचरित–भाषा टीका (अश्वघोष) प्रथम भाग मूल तथा हिन्दी टीका २–५०
दूसराभाग केवल हिन्दी अनुवाद १–५०
२५४८ बृहत् कथा मंजरी–क्षेमेन्द्र विरचित १०–००
२५४९ ब्रह्मतर्कस्तव–पञ्चरत्न स्तुति (अप्पय दीक्षित) १–३७
२५५० भट्टि काव्य–जयमंगला सं० टीका० संपूर्ण ५–२५
२५५१ भट्टि काव्य–जयमंगला, भरत मल्लिक टीका ७–५०
२५५२ भट्टिकाव्य–'चन्द्रकला' विद्योतिनी संस्कृत हिन्दी टीका १–६ सर्ग ३–५०, १–११ सर्ग ३–५०, उत्तरार्द्ध १२–२२, ५–००, सम्पूर्ण १–२२, १२–००
२५५३ भरतचरित–कृष्णकवि १–८७
२५५४ भर्तृहरिशतकत्रय–कोशांबी संपादित ६–००
२५५५ भर्तृहरिशतकत्रय–संस्कृत टीका सहित पूना २–२५
२५५६ भर्तृहरिशतकत्रय–हिन्दी अंग्रेजी अनवाद ७–००
२५५७ भर्तृहरिशतकत्रय–हिन्दी टीका सहित काशी १–००
२५५८ भर्तृहरिशतकत्रय –हरिदासवैद्य कृत हिन्दी टीका सहित सचित्र सम्पूर्ण १५–५०
२५५९ भानुचन्द्रगणिचरित–सिद्धि चन्द्रोपाध्याय ८–००
२५६० भामिनीविलास–(जगन्नाथ) सटीक जीवानन्द ०–७८
२५६१ भामिनीविलास भाषा टीका १–५०
२५६२ भारतपारिजातम्–गान्धिचरितम् हिन्दी टीका सहित ३ भाग १८–००
२५६३ भारतीवैभव–सटिप्पण ० माधव प्रसाद देवकोटा
२५६४ भूपशतक–(राघव वाचस्पति) डा० चौधरी १–००
२५६५ भोटप्रकाश–तिब्बती तथा संस्कृत में ६–२५
२५६६ भृङ्गसन्देश–(वासुदेव) साम्बशिव शास्त्री ०–५०
२५६७ भ्रमरदूत काव्य (रुद्रन्याय पञ्चानन) डा०चौ० १–५०
२५६८ भ्रमर सन्देश–पं० महालिङ्ग शास्त्री १–५०
२५६९ मयूर सन्देश–उदय–संस्कृत व्याख्या, ३–७५
२५७० महर्षिकुलवैभवम् पं० मधुसूदनओझा–सं०हि० १०–७५
२५७१ मातृमुक्तावली–– ०–५०
२५७२ मानसोल्लास–सोमेश्वर दूसरा भाग ८–००
२५७३ मीरालहरी–पं० क्षमाराव कृत सटीक १–२५
२५७४ मूकपञ्चशती–मूक कवि कृत १–१३
२५७५ मेघदूत–कवि कालिदास प्रणीत, संस्कृत व्याख्या,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विस्तृत हिन्दीअनुवाद, पदच्छेद, दण्डान्वय व्याकरण नोट्स-लेखक प्रो० संसारचन्द्र एम०ए० तथा प्रो० मोहनदेव शास्त्री संपूर्ण ५–००

२५७६ मेघदूत–संजीवनी व्याख्या, बम्बई १–२५

२५७७ मेघदूत–(पूर्वमेघ) शिशु रञ्जिनी व्याख्या ०–२५

२५७८ मेघदूत–तात्पर्य दीपिका शाश्वत 'कविप्रिया' तथा मल्लिनाथी ८–००

२५७९ मेघदूत–भरत मल्लिक तथा आठ विविध टीकाओं के उद्धरणों सहित ८–००

२५८० मेघदूत–भा० टी० सुधीरकुमार ८–००

२५८१ मेघदूत–मल्लिनाथ तथा हिन्दी टीका ०–७५, १–२५

२५८२ मेघदूत की वैदिक पृष्ठभूमि और उसका सांस्कृतिक संदेश—सुधीरकुमार गुप्त ०–३७

२५८३ मेघदूत—एक अध्ययन डा० वासुदेवशरण ४–५०

२५८४ मेघ संदेश–(कालीदास) विद्युल्लता व्याख्या २–००

२५८५ यादवाभ्युदय–(वेदान्त देशिक) अप्पय दीक्षित ४–००

२५८६ यात्रा प्रबन्ध–(समर पुङ्गव) २–००

२५८७ युधिष्ठिर विजय–(श्रीवासुदेव) राजानक ३–००

२५८८ रघुवंश–(कालिदास) मल्लिनाथ संजीवनी ६–००

२५८९ रघुवंश–संजीवनी टीका रामतेज संपादित ३–००

२५९० रघुवंश काव्य–वल्लभ, हेमाद्रि, दिनकर मिश्र एवं अनेक प्राचीनतम टीकाओं के विशिष्टांश, विषय-वर्णनात्मक परिशिष्ट, श्लोकानुक्रम, वृत्तविवरण, एवं संपादकीय टिप्पणी के साथ बम्बई ४–५०

२५९१ रघुवंश–१–५ सर्ग-चूर्णिका संस्कृत व्याख्या ०–३७

२५९२ रघुवंश–६–१० सर्ग–सुबोधिनी टीका-अन्वय २–५०

२५९३ रघुवंश मल्लिनाथकृत संजीवनी, पं० धारादत्तजी कृत सरल संस्कृत व्याख्या, सुबोध हिन्दी अनुवाद, अन्वय, वाच्य, समास आदि देकर अत्यन्त छात्रोपयोगी बनाया गया है। सफेद कागज पर बढ़िया छपा है १ से ५ सर्ग तक मूल्य ३–०, हर एक सर्ग अलग अलग भी मिलते हैं हर एक का ०–६२

२५९४ रघुवंश–६–१४ संजीवनी संस्कृत हिन्दी टीका २–२५

२५९५ रघुवंश–मल्लिनाथ कृत संजीवनी तथा मणिप्रभा हिन्दी टीका सम्पूर्ण ५–००

२५९६ रम्भा शुक सम्वाद–भाषानुवाद सहित ०–२५

२५९७ रघुनाथाभ्युदय–रामभद्राम्बा विरचित १–१३

२५९८ रस चन्द्रिका–पं० विश्वेश्वर कृत मूल १–०

२५९९ रसिकाष्टक–काव्य मूल ०–१३

२६०० रसिक जीवन–गदाधर भट कृत ३–००

२६०१ रसिक जीवन–विस्तृत भूमिका, डा० चौधरी ७–५०

२६०२ राघवनैषधीय–हरदत्त सूरि सव्याख्या १–००

२६०३ राघवीय रामपाणिवाद १–७५

२६०४ राजविनोद महाकाव्य–महाकवि उदयराज २–२५

२६०५ रामकथा–वासुदेव ०–५०

२६०६ रामकर्णरसायन–रामभद्र दीक्षित मूल ०–८७

२६०७ रामकर्णामृत–शंकर भगवत्पाद मूल ०–८७

२६०८ रामचरितम् (सन्ध्याकरनन्दि) संस्कृत व्याख्या तथा अंग्रेजी अनुवाद ६–००

२६०९ रामचरितम्–अभिनन्द विरचित १०–००

२६१० रामचन्द्र–यशः प्रबन्ध–अकबरी कालिदास

२६११ रामपञ्चशती–(स्तोत्र ग्रंथ) राम व्याख्या ४–५०

२६१२ रामपादयुगलीस्तव–(चित्रकाव्य) सं० हिं० टी० १–००

२६१३ रामविजय महाकाव्य–(रूपनाथ) १–००

२६१४ रामविवाह–(चित्रकाव्य) भावार्थबोधिनीव्या० १–००

२६१५ रामायण सार संग्रह–भारत सार संग्रह १–१३

२६१६ रामोदन्तम्–शंकरराम शास्त्री ०–३१

२६१७ रावणार्जुनीयम्—भट भीम कृत २–००

२६१८ राक्षस काव्य–कालिदास ०–१३

२६१९ राक्षस काव्य किशोरकेली व्याख्या ०–२२

२६२० रिष्टसमुच्चय–दुर्गदेव विरचित १०–००

२६२१ रुक्मिणी कल्याण—राज चूडामणि दीक्षित कृत ५–००

२६२२ रोमावली शतक—रामचन्द्र भट ाचार्य कृत १–००

२६२३ लक्ष्मीश्वरोपायनम्— ०–८७

२६२४ लक्ष्मी सहस्रम् (वेङ्कटाध्व) सुबोधिनीव्याख्या १२–०

२६२५ लघुकाव्यानि–नीलकंठ ेक्षित १–००

२६२६ ललिता त्रिशती—शांकर भाष्य सहित २–००

२६२७ लीलावइकहा–(कौतुहल) सव्याख्या (प्राकृत) १५–०

२६२८ वज्जालग्ग (प्राकृत) संस्कृत छाया सहित ४–५०

२६२९ वङ्गीय दूत–काव्येतिहास (संस्कृत) चौधरी ५–००

२६३० वनलता–प० महालिङ्ग शास्त्री १–००

२६३१ वरदराजस्तव–मूल ०–२५

२६३२ वरदराजस्तव–(अप्पयदीक्षित) स्वकृतव्याख्या १–८४

२६३३ वसन्त शतक–सटीक ०–५०

२६३४ वाङ्मण्डनगुणदूततथाचन्द्रदूतकाव्य–डा० चौ० २–५०

२६३५ वातदूत–सटीक श्रीकृष्ण ०–७५

२६३६ विक्रमाङ्कदेवचरितम्–प्रथमसर्ग (बिल्हण) ०–६२

२६३७ विक्रमाङ्कदेवचरित–प्रथम सर्ग–हिन्दी टीका १–५०

२६३८ विक्रमार्क चरित्र–सटीक १–६९

२६३९ विचित्र परिषद्यात्रा–पं० क्षमाराव

२६४० विद्याकर सहस्रकम्–विद्याकर मिश्र

२६४१ विद्यापति-गीत-संग्रह–(नेपालक पोथी, रागतरङ्गिणी तथा रामभद्र पुरक पोथी के आधार पर) संपादक श्री सुभद्र झा १–७५

२६४२ विद्यापति गीत संग्रह–आंगल अनुवाद सहित डा० सुभद्र झा १०–००

२६४३ विनायकवै जयन्ती–स्वातन्त्र्यवीरशतक वर्णेकर २–००

२६४४ विद्वच्चरित पञ्चक १–००

२६४५ विष्णुचतुर्विंशत्यावतार (चित्रकाव्य) सं. हि. १–००

२६४६ विष्णु चरितामृतम्–(चित्र काव्य) मूल २–००

२६४७ विष्णु भक्ति कल्पलता–(पुरुषोत्तम) सटीका १–००

२६४८ विष्णुविलास (रामपाणिवाद) विष्णुप्रिया व्या. ३–५०

२६४९ वैराग्य शतक–सं० हि० टीका १–००

२६५० वैराग्य शतक–हरदयाल कृत पद्यात्मक भाषा १–५०

२६५१ वैराग्य शतक–वैद्य हरिदास हि० टी० सचित्र ६–००

२६५२ शंकर जीवनाख्यानम्–पं० क्षमाराव २–००

२६५३ शक्ति साधन–डा० जे० बी० चौधरी १–००

२६५४ शतकत्रयादि सुभाषित संग्रह–कौशाम्बी स० १२–५०

२६५५ शतरंज कुतूहल ०–६२

२६५६ शम्भुचर्योपदेश–पं० महालिंग शास्त्री ०–२५

२६५७ शाहेन्द्रविलास–श्रीधर वेंकटेश ३–२५

२६५८ शिवपरिण्य–कृष्णराजानक कृत संस्कृत छाया ५–२५

२६५९ शिवलीलार्णव–(महाकाव्य) नीलकण्ठदीक्षित ३–२५

२६६० शिवशतक–रामपाणिवाद (स्तोत्र ग्रंथ) ०–३७

२६६१ शिशुपालवध–मल्लिनाथी सं.टी. संपूर्ण ६–०० ७–००

२६६२ शिशुपालवध–वल्लभदेवकृत सं० व्याख्या सहित ३–०

२६६३ शिशुपालवध–मल्लिनाथ सर्वङ्कषा १–९ सर्ग ३–००

२६६४ शिशुपालवध–मल्लिनाथ व्याख्या १–८ सर्ग २–२५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

२६६५ शिशुपालवध—(माघ) मल्लिनाथ १—२ सर्ग १—००
२६६६ शिशुपालवध मल्लिनाथ तथा मणिप्रभा हि.टी. ८—००
२६६७ शिशुपालवध—सं० हि० टीका १ से ६ सर्ग २—००
२६६८ शिशुपालवध—(माघ) सुधा हिन्दी १—२ सर्ग १—२५
२६६९ शिशुपालवध—(माघ)—अभिनव राजलक्ष्मी, मल्लिनाथ तथा भाषा टीका १—२ सर्ग २—००
२६७० शिशुपालवध—(माघ) १—२ सर्ग सं०हि०टी० १—००
२६७१ शिशुपालवध—हिन्दी अनुवाद सहित सम्पूर्ण श्री रामप्रताप शास्त्री ८—००
२६७२ शृंगारतिलक—(कालिदास) मूल ०—६, ०—१३
२६७३ शृंगार मंजरी—(अकबरशाह) मूल तेलुगु एवं संस्कृत छाया के लक्षण और व्याख्या का हिन्दी २—५०
२६७४ शृंगारादि नवरस निरूपण—भा० टी० ०—६२
२६७५ शृङ्गारहारावली—श्री हर्ष विरचिता २—७५
२६७६ श्रद्धाभरण—(काव्य) स्वोपज्ञ टिप्पणी ०—५०
२६७७ श्येनकूकाव्य—कृष्णकीर विरचित ३—००
२६७८ श्रीकण्ठचरित—श्रीमंखकवि जोनराज कृत टीका ४—५०
२६७९ श्री दक्चीन्द्र विलास—शंकर सुब्रह्मण्य शास्त्री ०—५०
२६८० श्री वेंकटेशकाव्यकलाप—सटीक ४—००
२६८१ सभ्यालंकरण—गोविन्दजित कृत ३—००
२६८२ संस्कृत प्रतिभा—प्रथम उन्मेष—प्रथम विलास २—००
२६८३ सावित्री—मूलश्लोक तथा अंग्रेजी कविता २—००
२६८४ सहृदयानन्द काव्य—कृष्णानन्द विरचित ०—८७
२६८५ स .यमातृका—क्षेमेन्द्रकृत मूल ०—८७
२६८६ सर्व-देव-विलास—डा० राघवन द्वारा संपादित ५—००
२६८७ स्तवमाला—(रूपदेव) जीवदेव कृत भाष्य समेत ३—००
२६८८ स्तुति मणिमाला—शंकरशास्त्री मूल २—००
२६८९ स्यानन्दूपुर वर्णन प्रबन्ध—(राजवर्मदेव) २—५०
२६९० साम्ब पञ्चाशिका—सव्याख्या १—१९
२६९१ साम्ब पचाशिका—क्षेमराज कृत टीका ०—५०
२६९२ साम्बपचाशिका—भा० टीका स्वामी ईश्वर रूप ०—५०
२६९३ सूरजन चरित—(चन्द्रशेखर कवि) डा० चौधरी ८—०
२६९४ सुरजनचरित—हिन्दी भाषानुवाद डा०चन्द्रधर ८—००
२६९५ सुरथोत्सव (सोमेश्वरदेव) मूल १—१५
२६९६ सेतु बन्ध—(प्रवर सेन) सटीका ५—००
२६९७ सेतुबन्धु—केवल हिन्दी अनुवाद ४—५०
२६९८ सौन्दर्य लहरी—लक्ष्मीधर, सौभाग्यवर्धनी, अरुण आमोदिनी व्याख्या समेत अपूर्ण ३—७५
२६९९ सौन्दर्य लहरी—लक्ष्मीधर व्या. भावनोपनिषतभास्कर-राज भाष्य देवी पञ्चस्तवी यन्त्र सहित ३—७५
२७०० सुन्दर लहरी—शंकराचार्य ०—५०
२७०१ सौन्दरानन्द काव्य—(अश्वघोष) हिन्दी अनु० ३—००
२७०२ सौन्दरानन्द काव्य—डा० हरप्रसाद संपादित ३—००
२७०३ संस्कृत काव्यधारा—श्रीराहुलसांकृ०—संस्कृत १५—००
२७०४ हंसदूत (वामन भट बाण) डा० चौधरी २—५०
२७०५ हंस विलास—हंस मिट विरचित मूल ८—००
२७०६ हंस संदेश (वेदान्तदेशिक) १-२निश्वास सव्या० ०—२६
२७०७ हंस संदेश—सव्याख्या ०—५६
२७०८ हरचरित चिन्तामणि—(राजानक श्रीजयरथ) ३—००
२७०९ हरिचरित—(परमेश्वर विरचित) सव्याख्या ७—५०
२७१० हरिद्वादशाक्षरी स्तोत्र—(चित्रकाव्य) भा० टी० १—०
२७११ हरिश्चन्द्रोपाख्यान—लघु दीपक टीका १—२५
२७१२ त्रिवेणिका—(आशाधार) ०—४४
२७१३ त्रिवेणिका—(आशाधर भट) पं० कालिकाप्रसाद कृत विस्तृत भूमिका तथा पं० कृष्णमणि टि० २—००

सुभाषित

२७१४ कालिदासीय सुभाषित—हिं० टी० सहित
२७१४क समयोचितपद्यमालिका—प्रासंगिक श्लोक १—००
२७१५ समयोचित पद्यरत्नमालिका ०—७५
२७१६ सुभाषितरत्नकोष विद्याकर अमरीका ३१—५०
२७१७ सुभाषित रत्न भाण्डागार—विविध काव्य अलंकार नाटक कथा पुराणादि से उद्धृत स्थान निर्देश समेत परिवर्द्धित नारायण राम आचार्य १२—००
२७१८ सुभाषितरत्न सुधाभाण्डागार— १०—००
२७१९ सुभाषित रत्न संदोह—(अमित गति) मूल १—५०
२७२० सुभाषितत्रिशति—भर्तृहरि प्रणीत शतकत्रय रामचन्द्र बुधेन्द्र कृत सद्रस्य भानन्दिनीव्याख्या समेत २—५०
२७२१ सुक्ति सुन्दर—(सुन्दरदेव) डा० चौधरी २—००
२७२२ सूक्ति-सुधा—भाषा टीका ०—२५
२७२३ सूक्ति संग्रह—(राक्षस कवि) मूल ०—१३
२७२४ सूक्ति रत्नहार—मूल २—३७
२७२५ सूक्ति मुक्तावलि—जल्हण कृत १५—००
२७२६ सूक्तिमुक्तावली अथवा हरिहर सुभाषित ७—५०
२७२७ संस्कृतसूक्तिसागर—नारायणस्वामि हि०टी० २१—००
२७२८ हरिहर सुभाषित—हरिहरकृत मूल ०—७५
२७२९ द्रविडार्यासुभाषित सप्तति—महालिंगशास्त्री १—००

गद्य काव्य

२७३० अवन्तिसुन्दरी कथासार ३—५०
२७३१ अवन्ति सुन्दरी—आचार्य दण्डिन ४—५०
२७३२ उत्कीर्णलेखाञ्जलि—पांचशिलालेख भा०टी० ०—७५
२७३३ ऋजुलघ्वी:मालतीमाधवकथा— २—५०
२७३४ कथापञ्चम्—पं० क्षमाराव १—००
२७३५ कथामुक्तावली (१५ लघुकथा) पं० क्षमाराव ४—५०
२७३६ कादम्बरी—(बाण) सं० मूल पी०एल० वैद्य १२—५०.
२७३७ कादम्बरी—संस्कृत तथा हिन्दीटीका सहित संपूर्ण ७—०
२७३८ कादम्बरी कथामुखम्—कादम्बरीकला संस्कृत टीका और हिन्दी अनुवाद प्रो० रामसिया ३—७५
२७३९ कादम्बरी—भानुचन्द्र सिद्धचन्द्र सं० व्याख्या ३५—९०
२७४० कादम्बरी—पूर्वार्द्ध हरिदास टीका, बंगानुवाद १२—५०
२७४१ कादम्बरी—संस्कृत हिन्दी टीका पूर्वार्द्ध काशी १२—५०
२७४२ कादम्बरी—कथा मुखपर्यन्त सं० हिन्दी टीका ३—७५
२७४३ कादम्बरी सं०हि० टीका जाबाल्याश्रमपर्यन्त ३—००
२७४४ कादम्बरी—सम्पूर्ण हिन्दी ऋषीश्वरनाथकृत ५—००
२७४५ कादम्बरी—एक अध्ययन (हिन्दी में) डा० वासुदेव शरण अग्रवाल कृत १३—७५
२७४६ शुकसप्तति संपूर्ण १०—००
२७४७ कालिदासीय नाटक कथामञ्जरी—मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशी तथा शाकुन्तला का गद्यविवर्तन २—५०
२७४८ कार्तवीर्यविजयप्रबन्ध—आश्विन श्रीरामवर्मप्रणीत ०—३७
२७४९ काव्यसमुदय—वेंकटरमण पदार्थबोधिनी व्याख्या २—५०
२७५० काव्यमञ्जूषा—नाम रत्नावली गद्य काव्य १—५०
२७५१ काव्यानुशीलन निबन्धों का संग्रह ४—५०
२७५२ काव्यप्रबन्ध—काव्यपदार्थविवृत्ति १—५०
२७५३ कुचेलोपाख्यान—अजामिलोपाख्यान ०—३१
२७५४ चन्द्रापीड कथा—अनन्ताचार्य विरचित १—००
२७५५ जातकमाला—आर्यशूरविरचितसंपूर्णअमरीका ३६—००

CC-0 In Public Domain. (Kirtikant) Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

२७५६ जातकमाला—परीक्षापदयोगिमूल २—०० हि० टीका
पूर्व भाग ३—००
२७५७ तिलकमञ्जरी—धनपालविरचित ४—५०
२७५८ तिलकमञ्जरी—धनपालविरचितशान्त्याचार्य प्रणीत
समेत ३ भाग में १८—००
२७५९ दशकुमारचरित (दण्डिन) पददीपिकापदचन्द्रिका
भूषण लघु दीपिका आदि चार टीका बंबई ३—५०
२७६० दशकुमारचरित (दण्डिन)—पददीपिका व्याख्या २—७५
२७६१ दशकुमारचरित—जीवानन्दकृत सं० टीकासहित ३—१३
२७६२ दशकुमारचरित—मनोरमा संस्कृत टीका सहित २—५०
२७६३ दशकुमारचरित संस्कृत हिन्दी टीका स० संपूर्ण ५—५०
२७६४ दशकुमारचरित—संस्कृत हिन्दी टीका—(पूर्व पीठिका,
प्रथम अष्टम् उच्छ्वास) रु० २—० पूर्वपीठिका
१—२५ अपहारवर्म चरित पर्यन्त ३—००
२७६५ दशकुमारचरित—सरल हिन्दी पं० निरंजनदेव ५—५०
२७६६ दशकुमार कथासार—अप्पयामात्य २—००
२७६७ दरिद्राणां हृदयम् अथवा राजधर्मः ०—३७
२७६८ द्वात्रिंशत पुत्तलिका—सिंहासन बत्तीसी संस्कृत १—८७
२७६९ धर्मोपदेश माला—विवरण कथा ९—७५
२७७० नाटक कथा संग्रह— १—००
२७७१ प्रकीर्णप्रबंधसंस्कृत में-पं. रामावतारशर्मा कृत ११—००
२७७२ पुरातनप्रबन्ध संग्रह—ऐतिहासिक ७—००
२७७३ प्रबन्ध कोष—राजशेखर सूरि प्रणीत ६—००
२७७४ प्रबन्ध चिन्तामणि—मेरुतुङ्गाचार्य कृत मूल ६—००
२७७५ प्रबन्धचिन्तामणि—केवलहिन्दी डा० हजारीप्रसाद ६—०
२७७६ भास कथासार—महालिङ्ग शास्त्री २ भाग ३—००
२७७७ भोज चरित्र—(बल्लाल) मद्रास १—१३
२७७८ भोज प्रबन्ध—बल्लाल विरचित मूल ०—६५
२७७९ भोज प्रबन्ध—जीवानंद कृत संस्कृत व्या० सहित १—८७
२७८० भोज प्रबन्ध—'रा[illegible]श्री' भाषाटीका १—५०
२७८१ भोज प्रबन्ध—सरल संस्कृत टीका अन्वय, कोष सुबोध
हिन्दी तथा अंग्रेजी अनुवाद सहित प्रो० जगदीश
लाल शास्त्री ३—७५
२७८२ भोज और कालिदास—हिन्दी ३—००
२७८३ मत्स्यावतार प्रबन्ध—नारायण भट मूल ०—३७
२७८४ मन्दार मञ्जरी—विश्वेश्वर कृत सटीक ४—००

२७८५ [illegible]
२७८६ माधवानल काम कन्दला प्रबन्ध १२—००
२७८७ मुद्रा राक्षस पूर्वसंकथनक—अनन्तशर्मा १—७५
२७८८ मुद्राराक्षस नाटक कथा—महादेव विरचित २—७५
२७८९ बल्लाल चारित्र आनंद भट मूलमात्र १—५०
२७९० वासवदत्ता—(सुबन्धु) जीवानन्द सटीक १—७५
२७९१ वासवदत्ता—संस्कृत तथा हिन्दी टीका ४—००
२७९२ वासवदत्ता—कथा संग्रह आर० वी० शर्मा ०—८१
२७९३ विद्वच्चरित पञ्चकम्—श्रीनारायण खिस्ते १—००
२७९४ विद्वद्विभूति—के० रामचन्द्र झा १—२५
२७९५ विश्रुत चरित—(दशकुमार) संस्कृत हिन्दी टीका १—०
२७९६ विश्रुत चरित संस्कृत हिन्दीव्याख्या सुधीरकुमार १—२५
२७९७ वेताल पञ्चविंशति कथा—सुरेन्द्रनाथ शास्त्री १—२५
२७९८ वेताल पञ्चविंशति—जीवानन्द कृत सटीक २—५०
२७९९ वेतालपञ्चविंशति—जम्भल कथादत्त विरचित ३—५०
२८०० शिवराज विजय—(अम्बिकादत्त व्यास) वैजयन्ती
टीका तथा द्वितीय सर्गान्त भा० टी० संपूर्ण ६—५०
२८०१ शिवराजविजय—संस्कृत तथा हिन्दी १—४ २—२५
२८०२ शिवराजविजय—(१—८ निश्वास) वैजयन्ती ३—५०
२८०३ शिलालेख ललन्तिका—मथुरा नाथ शास्त्री ०—७५
२८०४ [illegible]कमार्गोपदेश—संस्कृत, हिन्दी टीका परिशिष्टादि २—०
२८०५ श्रीवत्सपीदरनाटककथावली—वेंकटरमणाचार्यसं० २—७५
२८०६ संस्कृत कथासंग्रह—तृतीय भाग डी० के० राजगुरु १—१३
२८०७ संस्कृत कथाहार—अंग्रेजी नोट्स सहित ०—६९
२८०८ संस्कृत कुसुमाञ्जलि—अपेक्षित शब्दार्थ व्याकरण
सहित सं० प्रो० हंसराज २—००
२८०९ संस्कृत गद्य पद्य संग्रह—बृहस्पति शास्त्री संकलित १—०
२८१० संस्कृत गद्यमंजरी—पं० चन्द्रशेखर पांडे संकलित २—२५
२८११ संस्कृत मुक्तावली—प्रो० रमेशचन्द्र रस्तोगी १—५०
२८१२ संस्कृत रत्नावली—पं० मुकुन्द शास्त्री खिस्ते १—५०
२८१३ संस्कृत रत्नावली प्रवेशिका—कुंजी ३—००
२८१४ संस्कृत साहित्य वीथिका—सुरेन्द्रनाथ शास्त्री २—५०
२८१५ समस्या समज्या—भागवताचार्य स्वामिकृत २—०
२८१६ समुद्र संगम दारा शिकोह कृत १२—००
२८१७ शारदवती सुषमा—(काशीराजकीयसंस्कृतमहाविद्यालय
पत्रिका) विशिष्टांक १९४२, १९४३, १९४५ ९—०

२८१८ स्थविरावली चरितम्—परिशिष्ट पर्व श्री हेमचन्द्र ५—०
२८१९ हर्ष चरित—(बाण भट) शंकर कृत संकेत टीका ३—०
२८२० हर्षचरित—संस्कृत तथा हिन्दी टीका सहित संपूर्ण ६—०
२८२१ हर्षचरित—जीवानंद कृत संस्कृत टीका सहित ६—२५
२८२२ हर्षचरित—प्रथम उच्छ्वास संस्कृत हिन्दी टीका १—२५
२८२३ हर्षचरित—चतुर्थ उच्छ्वास संस्कृत हिंदी टीका १—५०
२८२४ हर्षचरित १—८ उच्छ्वास भाषानुवाद मात्र दो भाग
सूर्यनारायण चौधरी ५—००
२८२५ हर्षचरित एक सांस्कृतिक—अध्ययन डा० वासुदेवशरण
कृत हिन्दी ९—५०
२८२६ हर्षचरितसार—(बाण भट) वी० अनन्ताचार्य ०—६२
२८२७ हर्षचरित सार—तरङ्गिणी हिन्दी रूपान्तर ०—५०

अलङ्कार

२८२८ अकबरशाह शाहि शृङ्गार दर्पण—पद्मसुन्दर २—००
२८२९ अलंकार कौमुदी—एस० एन० शास्त्री २—२५
२८३० अलंकार कौस्तुभ—कविकर्णपूर कृत दो भाग १२—००
२८३१ अलंकारप्रदीप—आचार्य विश्वेश्वर ०—५०
२८३२ अलङ्कार मंजूषा—भट देव शंकर विरचित ४—००
२८३३ अलङ्कार मणिहार—श्रीकृष्णब्रह्मतंत्रपरकालस्वामीप्रणीत
२, ३, ४ भाग ८—२५
२८३४ अलंकार महोदधि—(नरेन्द्र प्रभ सूरि) १०—००
२८३५ अलंकार मुक्तावली—श्री विश्वेश्वर ०—७५
२८३६ अलंकार रत्नाकर—कवि शोभाकर मिश्र प्रणीत ३—७५
२८३७ अलंकार शेखर—(केशव मिश्र) काशी १—००
२८३८ अलंकार संग्रह—अमृतानन्द योगि कृत १६—००
२८३९ अलंकार सर्वस्व—राजानकरुय्यक जयरथटीका २—५०
२८४० अलंकारसारमंजरी—भाषाविवृत्ति सहित खिस्ते ०—५०
२८४१ अलंकारसूत्र—राजानक श्री रुय्यकवृत्ति अलंकार सर्वस्व
व्याख्या तथा समुद्रबन्ध कृत व्याख्या ५—००
२८४२ अलंकृतिमणिमाला—(मानचित्र) १—२५
२८४३ उज्ज्वल नीलमणि (रूप गोस्वामि) लोचन, रोचन
तथा आनंद चन्द्रिका टीका सहित ५—००
२८४४ एकदिन में कवि—विश्वेश्वरदयालु ०—२५
२८४५ कर्णभूषण—गंगानन्द कवि १—००
२८४६ कविकल्पलता—(देवेश्वर) दो भाग अपूर्ण १—५०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

२८४७ काव्य चन्द्रकला—छंद, अलं० बोधकसरलभाषा १—००
२८४८ काव्य दर्पण—राज चूड़ामणि कृत १ से ६ ३—५०
२८४९ काव्य दीपिका—संस्कृत तथा हिन्दी टीका सहित २—०
२८५० काव्यदीपिका—(कान्तिचन्द्रसंकलित) जीवानंद १—६२
२८५१ काव्यदीपिका—अष्टम शिखामात्र भा० टी० ०—७५
२८५२ काव्यदीपिका—अष्टमशिखा—भोलाशंकर व्यास १—२५
२८५३ काव्यडाकिनी—गंगानन्द काव्यदोष निरूपण ०—३३
२८५४ काव्य निर्णय—भिखारीदास भाषा छन्दों में ३—००
२८५५ काव्य परीक्षा—(वत्सलाञ्छन) स्वकृतवृत्ति सहित ८—०
२८५६ काव्य प्रकाश—उद्योत तथा प्रदीप टीका समेत ९—२५
२८५७ काव्य प्रकाश—(मम्मट) सम्प्रदाय प्रकाशिनी तथा साहित्य चूड़ामणि टीका समेत हरिहर शास्त्री संपादित २ भाग
२८५८ काव्य प्रकाश—गोकुलनाथ (प्रथमोल्लास) १—००
२८५९ काव्य प्रकाश—संकेत टीका समेत ४—७५
२८६० काव्य प्रकाश—वामनाचार्य कृत बाल बोधिनी १२—००
२८६१ काव्य प्रकाश—महेश प्रणीत आदर्श व्याख्या १८—००
२८६२ काव्यप्रकाश—नागेश्वरी सं० टीका ६—००
२८६३ काव्य प्रकाश—दीपिकाटीका (१ से ४) ०—८७
२८६४ काव्य प्रकाश—भा० टी० आचार्य विश्वेश्वर यन्त्रस्थ
२८६५ काव्यप्रकाश—हिन्दी व्याख्या डा० सत्यव्रत सिंह १०—०
२८६६ काव्य प्रकाश रहस्य २—००
२८६७ काव्यप्रकाश प्रश्नोत्तरी—पं० साधुराम शास्त्री १—५०
२८६८ काव्यलक्षणम्—काव्यादर्शपरामिधं—रत्नश्री ज्ञानकृतया रत्नश्रियाटीकया समलंकृता १५—००
२८६९ काव्यप्रदीप—गोविन्दप्रणीत वैद्यनाथ व्याख्या ३—००
२८७० काव्यमीमांसा—(राजशेखर) अंग्रेजी भूमिका ४—००
२८७१ काव्यमीमांसा—(१—४) सं० हिन्दी टीका ०—७५
२८७२ काव्यमीमांसा—(राजशेखर) भाषाटीकासंपूर्ण ९—५०
२८७३ काव्यविलास—चिरंजीव भटाचार्य ०—५६
२८७४ काव्यादर्श—भा० टी० २—००
२८७५ काव्यादर्श—संस्कृत हिन्दी टीका ६—५०
२८७६ काव्यानुशासन—वाग्भट विरचित स्वकृत टीका १—०
२८७७ काव्यानुशासन—(श्री हेमचन्द्र) अलंकार चूड़ामणि तथा विवेक सहित पाठान्तर, विस्तृत अंग्रेजी भूमिका आदि २ भाग में ६—५०
२८७८ काव्यानुशासन—श्री हेमचन्द्रप्रणीत स्वकृतटीका ४—५०
२८७९ काव्यालंकार—(भामह) पं० बटुकनाथ ३—००
२८८० काव्यालंकार—रुद्रटप्रणीत नमि साधु कृत २—५०
२८८१ काव्यालङ्कारसंग्रह—(उद्भट) लघुवृत्ति सहित १—००
२८८२ काव्यालंकार-सार-संग्रह—उद्भट भट्ट इन्दुराज कृत लघुवृत्ति अंग्रेजी भूमिका, २—५०
२८८३ काव्यालंकार सार संग्रह—उद्भट विवेक व्याख्या ४—०
२८८४ काव्यालंकार सूत्र—वामन विरचित स्वीय वृत्ति १—२५
२८८५ काव्यालंकार सूत्र वृत्ति—कामधेनु व्याख्या १—८७
२८८६ काव्यालंकार सूत्र वृत्ति—(वामन) कामधेनु टिप्पणी पञ्चम अधिकरण पर्यन्त २—५०
२८८७ काव्यालंकार सूत्र—(वामन) हिन्दी व्याख्या आचार्य विश्वेश्वर १२—००
२८८८ कुवलयानन्दचन्द्रिकाचकोर—जग्गवेंकटाचार्य ७—५०
२८८९ कुवलयानन्द—डा० भोलाशंकर हिन्दी टीका ९—५०
२८९० कुवलयानन्द (अप्पयदीक्षित) सं० व्याख्या समेत ३—०
२८९१ कुवलयानन्दकारिका—आशाधरभट प्रणीत सटीक १—०
२८९२ कुवलयावलि—रत्नपञ्चालिका १—७५
२८९३ गोदवर्म यशोभूषण—(अरुणगिरि) ०—७५
२८९४ चन्द्रालोक (जयदेव)—राकागम व्याख्या २—००
२८९५ चन्द्रालोक—पौर्णमासी, संस्कृत हिन्दी टीका २—५०
२८९६ चन्द्रालोक—बुधरञ्जन संस्कृत व्याख्या सहित १—१३
२८९७ चन्द्रालोक (जयदेव)—वैद्यनाथ रमा सं० व्या० १—००
२८९८ चन्द्रालोक (जयदेव) —पं० गौरीनाथ कृत संस्कृत हिन्दी टीका २—००
२८९९ चंद्रालोकरहस्य प्रश्नोत्तरी १—२५
२९०० दशरूपक (धनंजय)—धनिक कृत अवलोक व्या० १—२५
२९०१ दश रूपकम्—धनिक व्या. तथा तामिल अनु. ४—००
२९०२ दश रूपक—हिन्दी व्याख्या डा० त्रिगुणायत ५—५०
२९०३ दशरूपक—डा० भोलाशंकर कृत हिन्दी व्याख्या ५—०
२९०४ ध्वन्यालोक—अभिनवगुप्त कृत लोचन तथा रश्मि नामक विस्तृत हिन्दी व्याख्या सहित—प्रथम उद्योत—श्री आशालता ५—००
२९०५ ध्वन्यालोक (आनन्द वर्धन) दीधिति व्याख्या तथा हिन्दी अनुवाद संपूर्ण ८—००
२९०६ ध्वन्यालोक—१—२ उद्योत अलखदेवकृत स.हि. २—५०
२९०७ ध्वन्यालोक—लोचन तथा म० म० कुप्पु स्वामीकृत व्याख्या प्रथम भाग ९—००
२९०८ ध्वन्यालोक रहस्य (प्रश्नोत्तरी)—शोभित मिश्र १—५०
२९०९ ध्वन्यालोक सार—पुरुषोत्तम शर्मा १—२५
२९१० चित्रमीमांसा—(अप्पय दीक्षित) तथा चित्र मीमांसा खंडन जगन्नाथ पं० १—५०
२९११ नञ्जराज यशोभूषण (अभिनव कालिदास)—भूमिका परिशिष्टादि विभूषित ८—००
२९१२ प्रतापरुद्रीय (विद्यानाथ)— रत्नापण व्याख्या ४—००
२९१३ भारतीयसाहित्यशास्त्र (हि.) बलदेवउपाध्याय १८—०
२९१४ रसगङ्गाधर—(जगन्नाथ पंडित) 'चन्द्रिका' संस्कृत हिन्दी व्याख्या संपूर्ण १८—००
२९१५ रसगंगाधरमर्मप्रकाशमर्मोद्घाटनजग्गुवेंकटाचार्य २—५०
२९१६ रसगंगाधर—हिन्दी अनुवाद तीन भाग में पं० पुरुषोत्तम चतुर्वेदी कृत २१—००
२९१७ रसगंगाधर—रहस्य मदन मोहन झा कृत ०—७५
२९१८ रस चन्द्रिकाश्री विश्वेश्वर पांडेय कृत १—००
२९१९ रस तरंगिणी—भानुमिश्र हिन्दी २—५०
२९२० रस प्रदीप—प्रभाकर भट ०—५६
२९२१ रस मञ्जरी—सुरभि व्याख्या तथा भा० टी० ५—००
२९२२ रसरत्न प्रदीपिका—अल्लराज कृत ३—००
२९२३ रस विलास—(भूदेव शुक्ल) अंग्रेजी भूमिका ५—००
२९२४ रससार—(भट वादीन्द्र) किरणावली टीका ०—५६
२९२५ रूपक परिशुद्धि—ताताचार्य शिरोमणि २—००
२९२६ वक्रोक्ति जीवित—आचार्य विश्वेश्वर हि.टी. १६—००
२९२७ वाग्भटालङ्कार—मुरलीधर हिन्दी टीका २—५०
२९२८ वाग्भटालंकार—संस्कृत हिन्दी टीका काशी २—००
२९२९ वाणी भूषण—(दामोदर मिश्र) मूल ०—७५
२९३० श्रृङ्गार प्रकाश—(भोजदेव) १-२ पी० सुब्रह्मण्य १—७५
२९३१ श्रृङ्गार प्रकाश—भोजदेव १-८ प्रकाशात्मक २५—००
२९३२ श्रृङ्गार प्रकाश—२२, २३, २४ प्रकाशात्मक ४—००
२९३३ साहित्यदर्पण—केवल छटा अध्याय सं. हि. टी. ३—०
२९३४ साहित्य दर्पण—(विश्वनाथ) लक्ष्मी टीका १२—००
२९३५ साहित्य दर्पण—(विश्वनाथ) हरिदास टी. १२—५०
२९३६ साहित्यदर्पण—१,२तथा १० परि. (श्रीकाणे) १०—००
२९३७ साहित्य दर्पण—जीवानन्द कृत संस्कृत व्याख्या ७—००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

२९३८ साहित्य दर्पण—[illegible] आशय को ठीक २ समझा देने वाली विस्तृत हिन्दी व्या. 'विमला' सहित 'साहित्याचार्य पं० शालिग्राम जी शास्त्री कृत संपूर्ण कपड़े की जिल्द १०—००

२९३९ साहित्य दर्पण—डा० सत्यव्रत कृत १२—५०

२९४० साहित्य दर्पण प्रश्नोत्तरी १—००

२९४१ साहित्य निबन्ध— १—००

२९४२ साहित्य मीमांसा—मूल १—१९

२९४३ साहित्य विमर्श—सोमेश्वर शर्मा कृत २—५०

२९४४ साहित्य सार—(सर्वेश्वर कवि) २—२५

२९४५ साहित्य सार—सर्वेश्वर अंग्रेजी भूमिका १—१३

२९४६ साहित्य सार—अच्युतराय कृत तथा व्याख्या ४—५०

चम्पू

२९४७ आनन्द कन्द चम्पू—मित्र मिश्र १—७५

२९४८ आनन्दरङ्गविजय चम्पू—श्रीनिवास कविकृत ४—०

२९४९ आनन्द वृन्दावन चंपू—दुष्प्राप्य

२९५० उत्तर रामचरित्र चम्पू (वेंकटाध्वरि) २—००

२९५१ कवि मनोरञ्जक चम्पू—सीताराम सूरि १—७५

२९५२ कुमार सम्भव चम्पू (शरभोजी महाराज) १—१३

२९५३ चम्पू भारत—नारायण सूरि व्याख्या २—००

२९५४ चम्पू भारत—रामचन्द्र बुधेन्द्र व्याख्या ७—००

२९५५ चम्पू भारत—संस्कृत हिन्दी टीका सहित काशी ८—००

२९५६ चम्पू रामायण रामचन्द्रकृत साहित्यमञ्जूषा व्या. ६—०

२९५७ चम्पू रामायण—जीवानन्द व्याख्या जीर्ण २—५०

२९५८ चंपू रामायण—(भोजराज) रामचन्द्र बुधेन्द्र विरचित साहित्य मञ्जूषिका व्याख्या तथा लक्ष्मण सूरि विरचित युद्धकाण्ड सहित ६—००

२९५९ चम्पू रामायण—प्रकाश संस्कृत हिन्दी टीका ६—००

२९६० चोल चम्पू—विरुपाक्ष कविकृत १—१३

२९६१ द्रौपदी परिणय—चक्र कविकृत ०—८७

२९६२ नलचम्पू (त्रिविक्रम) चण्डपाल कृत विषमपद ३—००

२९६३ निम्बादित्य दशश्लोकी—(हरिव्यास देव) भाष्य ०—५०

२९६४ नीलकण्ठविजय—चम्पू (नीलकंठ दीक्षित) १—००

२९६५ नृगमोक्ष प्रबन्ध—(चंपू) नारायण भट ०—८७

२९६६ पारिजात हरण चम्पू—शेष कृष्ण कृत ०—७५

२९६८ भागीरथ चम्पू—(अच्युत शर्मा) मूल २—००

२९६९ भारतीय सिद्धान्तादेश—श्री दुर्गाप्रसाद द्विवेदी ०—३७

२९७० मन्दारमन्द—(श्रीकृष्ण) माधुर्यरंजनी व्याख्या २—००

२९७१ रामानुज चंपू—(रामानुजाचार्य) सं० टीका ३—००

२९७२ वीरभद्र चंपू—पद्मनाभ मिश्र २—५०

२९७३ श्रीनिवास बिलास चंपू—(वेंकटेश कवि) १—२५

छन्द

२९७४ छन्द कौमुदी—सोदाहरण हिन्दी भाषा टीका ०—३७

२९७५ छंद शास्त्र—(पिङ्गलाचार्य) हलायुध विरचित संजीवनी व्याख्या, वृत्ति समेत ३—५०

२९७६ छंद शास्त्र—सटीक कलकत्ता जीवानंद ३—७५

२९७७ छंदोमंजरी—सटीक कलकत्ता २—००

२९७८ छंदोमंजरी—संस्कृत हिन्दी टीका सहित २—००

२९७९ छन्दो मंजरी—वृत्त रत्नाकर सहित १—५०

२९८० छन्दोमन्दाकिनी—गुरुप्रसाद शास्त्री कृत ०—१९

२९८१ छन्दोविभ्मण्डन—स्वामी चण्डनदास जी ३—५०

२९८२ छन्दोविज्ञानम्—काव्यचन्द्रकलान्तर्गत ०—३७

२९८३ जगद्विजय छन्द— ३—२५

२९८४ जयदामन—(संस्कृत छंद काव्य संग्रह—जयदेव छंद, जयकीर्तिछंदोनुशासन, केदार वृत्तरत्नाकर, हेमचंद्र छंदानुशासन आदि) १०—००

२९८५ जनाश्रयी—छंदोविचिति १—१३

२९८६ जनाश्रयी छन्दो विचिति ३—००

२९८७ पिङ्गल छन्दसूत्र—(वैदिकछंदप्रकरणांत) भा.टी. ०—७५

२९८८ प्राकृत पैङ्गलम्—पिङ्गल विरचित दुष्प्राप्य

२९८९ वाग्वल्लभ—(दुःख भंजन) संस्कृत टीका २—५०

२९९० वृत्त रत्नाकर—मणिमयी हिन्दी टीका ०—५०

२९९१ वृत्त रत्नाकर—(केदार) पञ्चिका सं० व्याख्या २—००

२९९२ वृत्त रत्नाकर—हिन्दी टीका चरणदास शास्त्री २—५०

२९९३ वृत्तरत्नाकर नारायणी संस्कृत तथा हिन्दी टीका ३—०

२९९४ वृत्तरत्नाकर—संस्कृत तथा हिन्दी टीका १—५०

२९९५ वृत्तरत्नावली—वेंकटेश—सं. व्या. अं. अनु सहित ४—००

२९९६ वृत्तवार्तिक—रामपाणिवाद १—७५

२९९७ वृत्ति वार्तिक—अप्पय दीक्षित ०—३७

२९९८ वृत्तिदीपिका—मौनिश्रीकृष्ण भट विरचित २—००

२९९९ वृत्ति दीपिका—श्रीकृष्ण भट प्रणीत ०—६

३००० श्रुत बोध—संस्कृत हिन्दी टीका पं० गोपीनाथ ०—६२

३००१ श्रुतबोध—(कालिदास) आशुबोधिनी व्या ०—७५

३००२ श्रुतबोध—(कालिदास) विमला संस्कृत टीका ०—३७

३००३ श्रुतबोध—वृत्तरत्नाकर संस्कृत व्याख्या ०—८७

३००४ सभाष्य रत्नमंजूषा—(पिंगल) हरिदामोदर २—००

भाण

३००५ मुकुन्दानन्द भाण—काशीपति मूल ०—७५

३००६ रस सदन भाण—युवराज कवि मूल १—००

३००७ शृङ्गारतिलक भाण—(रामभद्र दीक्षित) मूल ०—५०

३००८ शृङ्गार भूषण—वामन भट बाण मूल ०—३७

३००९ शृङ्गार सर्वस्व भाण—नल्ला कवि मूल ०—६२

३०१० शृङ्गार सुधाकर भाण—आश्विन रामवर्म मूल ०—५०

नाटक

३०११ अद्भुत दर्पण—महादेव कवि १—००

३०१२ अनर्घ राघव—(मुरारि) चिनति कृत व्याख्या ३—००

३०१३ अनर्घ राघव—(मुरारिमिश्र) जीवानंद व्याख्या ३—१३

३०१४ अभिनयदर्पण—अंग्रेजी अनुवाद सहित १०—००

३०१५ अभिनव नाट्य शास्त्र—हिन्दी सीताराम चतुर्वेदी १५—०

३०१६ अभिज्ञानशाकुन्तला—डा० रिशाल द्वारा अनराका ३१—५०

३०१७ अभिज्ञानशाकुन्तल—(कालिदास) सुबोधिनी सं० ३—००

३०१८ अभिज्ञान शाकुन्तल—राघव भट अर्थद्योतनिका ४—५०

३०१९ अभिज्ञानशाकुन्तल—श्रीनिवासराघवभट टीका. ४—५०

३०२० अभिज्ञान शाकुन्तल—हरिदासटीका, बंगानुवाद ५—००

३०२१ अभिज्ञान शाकुन्तल सं. तथा हि. टीका—खिस्ते ६—००

३०२२ अभिज्ञान शाकुन्तल—किशोरकेलि सं० हि. टी. ६—०

३०२३ अभिज्ञान शाकुन्तल—अभिनवराजलक्ष्मी सं. हि. ६—०

३०२४ अभिज्ञान शाकुन्तल—'मनोरमा' भाषाटीका २—५०

३०२५ अभिज्ञान शाकुन्तल गुर्जरअनुवाद सहित ६—००

३०२६ अभिज्ञान शाकुन्तल—केवल हिन्दी ३—००

३०२७ अभिज्ञान शाकुन्तल—हि० टी० ना० कपिलदेव ६—००

३०२८ अभिज्ञान शाकुन्तल—रि० हि० टी० ना० अ० वर्जित ६—५०

३०२९ अमृतोदय—गोकुलनाथ संपादित ०—७५

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

३०३० आनंद सुन्दरी–घनश्याम विरचित सटीक भटनाथ कृत व्याख्या सहित ५–००
३०३१ आश्चर्य चूडमणि–(शक्ति भद्र) सव्याख्या १–५०
३०३२ उत्तररामचरित–भवभूति मूलमात्र बेलवेलकर ३–००
३०३३ उत्तर रामचरित–वीरराघव सं० टीका बंबई २–५०
३०३४ उत्तर रामचरित–संस्कृत हिन्दी टीका २–५०
३०३५ उत्तर रामचरित–चन्द्रकला विद्योतिनी सं. हि. ४–५०
३०३६ उन्मत्त राघव–(भास्कर कवि) ०–५०
३०३७ उन्मत्त राघव–विरुपाक्षदेव २–७५
३०३८ उरुभंगम् हिन्दी टीका सहित ०–५०
३०३९ उद्गात्रदशाननम्–महालिङ्गशास्त्री विरचित ४–००
३०४० कंस वध–शेष कृष्ण–मूलमात्र ०–७५
३०४१ कमलिनी कालहंस–राजचूडामणिकृत ०–८७
३०४२ कर्णसुन्दरी–(बिल्हण) १–२५
३०४३ कर्पूर मंजरी–(राजशेखर) सं०छाया वासुदेव २–५०
३०४४ कर्पूरमंजरी–जीवानंद संस्कृत व्याख्या ०–९४
३०४५ कर्पूरमंजरी–संस्कृत हिन्दी व्याख्या २–५०
३०४६ कर्ण कुतूहल–महाकवि भोलानाथ विरचित १–५०
३०४७ कुन्दमाला–दिङनाग प्रणीत सं. हिन्दी टीका ३–५०
३०४८ कुवलयावली–(रत्नपञ्चालिका) सिंह भूपाल १–७५
३०४९ कृष्णमोहन नाटक–ताडपत्रीकर विरचित ३–७५
३०५० गांधीविजय–नाटक–म. म. मथुराप्रसाददीक्षित ०–५०
३०५१ गान्धर्व विवाह–नाटक–(मिथिला भाषा) १–००
३०५२ चण्डकौशिक–आर्य क्षेमीश्वरी कृत–सव्याख्या १–५६
३०५३ चण्डताण्डव–(हसन) जीवन भट्टाचार्य ०–५०
३०५४ चन्द्रलेखा–सट्टक–रुद्रदासकृत प्राकृत ८–००
३०५५ चारुदत्त–सव्याख्या १–२५
३०५६ चैतन्य चन्द्रोदय–संस्कृत टीका–दुष्प्राप्य
३०५७ चैतन्य चन्द्रोदय–कवि कर्णपूर विरचित ३–५०
३०५८ जीवानंद–नाटक–आनंदराय मखि–मूल १–५०
३०५९ जीवानन्द नाटक–रसायन व्या० ३–००
३०६० जीवानन्द नाटक–संस्कृत टीका मदरास ३०–००
३०६१ जीवानन्द नाटक–हिन्दी टीका सहित ४–००
३०६२ जीवनमुक्ति कल्याणम्–नलाध्वरि १–५०
३०६३ डमरुकम्–(घनश्याम पंडित–) प्रणीत प्रहसन ०–६२
३०६४ तापसवत्सराज नाटकम्–श्री मटरु प्रणीत २–५०

०–३७
३०६५ दूताङ्गद–(सुभट कवि) १–००
३०६६ दूताङ्गद नाटकम्–संस्कृत हिन्दी टीका ०–३७
३०६७ धनंजय विजय–(काञ्चनाचार्य) व्याख्या १–००
३०६८ नल चरित्र नाटक–नीलकंठ दीक्षित २–५०
३०६९ नलदमयन्ती–कालिपद २–२५
३०७० नलविलास–रामचन्द्र सूरि विरचित १–१३
३०७१ नागानंद–(श्रीहर्ष) सटिप्पण मद्रास
३०७२ नागानंद–हिन्दी अनुवाद, व्याकरण, कोष, अन्वयादि सहित–प्रो० ओमप्रकाश–रामप्रकाश–कृष्णकुमार तथा सत्यपाल कृत ५–००
३०७३ नागानंद नाटक–सं० हिन्दी टीका पं० बल्देव ३–००
३०७४ नागानंद–मूल तथा तिब्बती भाषा में १५–००
३०७५ नागानंद नाटक–अंग्रेजी हिन्दी अनु० साधुराम ५–००
३०७६ नागानंद–केवल भाषा ०–९४
३०७७ नागानंद का सरल अध्ययन–सुधीरकुमार २–००
३०७८ नाट्यशास्त्र–(भरतमुनि) अभिनव गुप्त विरचित विवृत्ति, ३ भाग २७ अध्याय तक ५०–००
३०७९ नाट्यशास्त्र–१-२ अ. भा. टी. पं०रामगोविंद ०–६२
३०८० नाट्यशास्त्र (१–३) हि. अनु. डा०भोलानाथ २–७५
३०८१ नाट्यशास्त्रसंग्रह–प्रथम भाग– १६–००
३०८२ पंचरात्र–संस्कृत–हिन्दी २–२५
३०८३ पारिजातहरण नाटकम्–उमापति उपाध्यायकृत ५–००
३०८४ पार्वती परिणय–(बाण भट्ट) रामकृष्ण संशो. ०–५०
३०८५ पार्वती परिणय–बाणभट्ट श्रीकृष्ण सूरि विरचित भूमिका टिप्पणी समेत ०–८७
३०८६ प्रतिमा नाटक–डा० सत्यव्रतकृत संस्कृत हिन्दी २–००
३०८७ प्रतिमा–भासप्रणीत–हिन्दी, अंग्रेजी अनु. सहित ३–५०
३०८८ प्रतिज्ञा यौगंधरायन–सं. हिन्दी अनुवादसहित २–००
३०८९ प्रबोधचन्द्रोदय (कृष्णमिश्र) चंद्रिका तथा प्रकाश २–००
३०९० प्रबोध चन्द्रोदय गोविन्दामृत का नाटकाभरण २–५०
३०९१ प्रबोध चन्द्रोदय–संस्कृत हिन्दी टीका समेत २–५०
३०९२ प्रशांत रत्नाकर–कालीपद तर्काचार्य २–००
३०९३ प्रसन्न राघव—(जयदेव) मूल १–२५
३०९४ प्रसन्न राघव–हिंदी संस्कृत टीका रामचंद्र काशी ३–००
३०९५ प्रसन्न राघव–संस्कृत हिन्दी व्याख्या श्रीशपराज ४–००
३०९६–प्रतिराजसूयम्–नाटकम्–श्रीमहालिङ्गशास्त्रिप्रणीत ६–०

३०९७ प्रसन्न हनुमन्नाटक–विश्वेश्वर दयालु वैद्य २–००
३०९८ प्रियदर्शिका–(श्रीहर्ष) संस्कृत टीका श्रीकृष्णमूर्ति १–१९
३०९९ प्रियदर्शिका–(श्रीहर्ष) प्रकाश संस्कृत हि० टी० २–००
३१०० प्रिय दर्शिका—(श्रीहर्ष) हिन्दी रूपान्तर ०–६२
३१०१ प्रेक्षणकत्रयी–विजयांका–विकटनितम्बा अवन्तिसुन्दरी डा. राघवन कृत
२–००
३१०२ बङ्गीय प्रताप—हरिदास
३१०३ बाल मार्तण्ड विजय–देवराज कवि प्रणीत २–७५
३१०४ बाल रामभरतम्–(बालराम वर्म नाट्यग्रंथ ३–००
३१०५ बाल रामायण–जीवानन्द व्याख्या सहित ३–७५
३१०६ भक्तसुदर्शन–सचित्र म.म.पं. मथुराप्रसाद २–५०
३१०७ भगवदज्जुकम्–बोधायन ०–५०
३१०८ भर्तृहरि निर्वेद–(हरिहरोपाध्याय) मूल ०–३१
३१०९ भर्तृहरिनिर्वेद नाटक–हिन्दी अनुवाद सहित १–००
३११० भारतविजय नाटक–म. म. पं. मथुराप्रसाद कृत हिन्दी टीका सहित सचित्र श्रेष्ठ राष्ट्रीय नाटक २–५०
३१११ भासनाटक चक्रम्–भास के १३ नाटक मूल १७–५०
३११२ भीमपराक्रम—शतानन्द १–१३
३११३ मदनकेतु चरित–(प्रहसन) रामपाणि वाद ०–८७
३११४ मध्यम व्यायोग–(भास) अंग्रेजी भूमिका १–१३
३११५ मध्यमव्यायोग–हिन्दी टीका सहित १–००
३११६ मनोरञ्जन नाटक–अनन्तदेव कृत ००–५०
३११७ मल्लिका मारुत प्रकरण–दण्डि विरचित सव्या. ३–००
३११८ महावीरचरित–(भवभूति) वीरराघवकृतटीका २–५०
३११९ महावीर चरित–जीवानन्द व्याख्या २–५०
३१२० महावीरचरित–संस्कृत हिन्दी टीका सहित ४–००
३१२१ मालती माधव–त्रिपुरारि जगद्धर टीका ३–५०
३१२२ मालती माधव–(भवभूति) रसमंजरी व्याख्या ५–६२
३१२३ मालती माधव–हरिदास सटीक ५–००
३१२४ मालती माधव–संस्कृत हिंदी टीका शेषराज शास्त्री ५–०
३१२५ मालविकाग्निमित्र–(कालिदास) कुमारगिरि व्या. १–२५
३१२६ मालविकाग्निमित्र–सारार्थदीपिका सहृदय तिलक १–२५
३१२७ मालविकाग्नि मित्र—अप्पा शास्त्री सं०व्याख्या ३–००
३१२८ मालविकाग्निमित्र–संस्कृत हिन्दी टीका ३–००
३१२९ मिवार प्रताप–(नाटक) वियोग वैभव २–००
३१३० मुद्राराक्षस–(विशाखदत्त) जीवानन्द व्याख्या २–५०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

३१३१ मुद्राराक्षस—संस्कृत हिन्दी टीका २–२५
३१३२ मुद्राराक्षस—संस्कृत हिन्दी टीका ब्रह्मानन्द शुक्ल २–५०
३१३३ मुकुन्दलीलामृत नाटक—प. विश्वेश्वरदयाल वैद्य २–००
३१३४ मृगांकलेखा—नाटिका (विश्वनाथ देव) ०–५०
३१३५ मृच्छकटिक—(शूद्रक) पृथ्वीधर कृत व्याख्या. ३–२५
३१३६ मृच्छकटिक—(शूद्रक) जीवानन्द संस्कृत व्याख्या ४–०
३१३७ मृच्छकटिक संस्कृत हिन्दी टीका ब्रह्मानन्द ६–००
३१३८ मृच्छकटिक—संस्कृत हिन्दी टीका महाप्रभुलाल ६–००
३१३९ शूद्रक—राजा तथा कवि (वासिष्ठी पुत्र श्रीपुलुमावि) विवेचनात्मक साहित्यिक अध्ययन—श्रीचन्द्रबली पाण्डेय ४–५०
३१४० यज्ञफल—जीवराम कालिदास शास्त्री मं. ५–०
३१४१ रतिमन्मथ—(जगन्नाथ पंडित) २–००
३१४२ रतिविजय—रामस्वामी शास्त्री ०–३१
३१४३ रत्नावली नाटिका—(श्री हर्ष) प्रभा व्याख्या २–००
३१४४ रत्नावलि—संस्कृत हिन्दी टीका ३–००
३१४५ रत्नावलि—जीवानन्द संस्कृत व्याख्या ०–६२
३१४६ रत्नावली—केवल भाषा ०–६२
३१४७ रत्नावलि नाटिका—भाषा टीका पं. रामेश्वर १–७५
३१४८ रत्नेश्वर प्रसाद नाटक—गुरुरामकवि १–२५
३१४९ राजविजय नाटक—डा० आर. सी. मजूमदार सं. २–०
३१५० रुक्मिणी परिणय—राम वर्मन ०–७५
३१५१ लीलावती विधि—रामपाणिवाद एकांकी संस्कृत ०–६२
३१५२ विक्रमोर्वशी—(कालिदास) रंगनाथ सं० टीका १–७५
३१५३ विक्रमोर्वशी—जीवानंद कृत संस्कृत व्याख्या १–२५
३१५४ विक्रमोर्वशीयम्—कल्पलता व्याख्या समेत ३–००
३१५५ विक्रमोर्वशी—(कालिदास) प्रकाश संस्कृत हि.टी. ३–०
३१५६ विक्रमोर्वशीयम्—अंग्रेजी नोट्स तथा संस्कृत व्या–२–००
३१५७ विदग्धमाधव—(रूप गोस्वामी) सटीक २–००
३१५८ विद्धशाल भञ्जिका—राजशेखर जीवानंद व्या. १–०
३१५९ विद्यापरिणय—आनन्दराय मखि मल ०–७५
३१६० विश्वमोहन नाटक—श्री. ना. ताडपत्रीकर ३–७५
३१६१ वीणावासवदत्ता—प्राचीन संस्कृत नाटक ०–६९
३१६२ वीरपृथ्वीराज विजय नाटक म.म. मथुराप्रसाद १–२५
३१६३ वृषभानुजा—मथुरादास प्रणीत ०–७५
३१६४ वेणीसंहार—भट नारायणजगद्धरकृत टि. आदि १–५०
३१६५ वेणीसंहार—(भट्टनारायण) [illegible] व्याख्या [illegible]
३१६६ वेणीसंहार—लक्ष्मण सूरिकृत चूडामणिजगद्धर टि.२–७५
३१६७ वेणीसंहार—भट नारायण सं. हिन्दी टीका ३–००
३१६८ शंकर विजय—म. म. पं. मथुराप्र. जी दी. विरचित १–०
३१६९ संकल्पसूर्योदयनाटक—सं. व्याख्या समेत ४–००
३१७० संकल्प सूर्योदय—वेंकटनाथ प्रभाविलास प्रभा.४५–००
३१७१ संस्कृत नाटक—ए. बी. कीथ प्रणीत का सरल हिंदी अनुवाद यन्त्रस्थ
३१७२ सरस्वती नाटिका—श्री सदाशिव दीक्षित ०–५०
३१७३ सामवत नाटक—(अम्बिकादत्त) वैजयन्ती व्या.२–५०
३१७४ सुभद्रापरिणय—(छाया नाटक) व्यासरामदेव वि०–३१
३१७५ सुभद्रा हरण—माधव भट (मूल) ०–५०
३१७६ सेवन्तिकापरिणय नाटक—श्री चोक्कनाथ विर.२–८१
३१७७ सौगन्धिकाहरण—विश्वनाथ कवि (मूल) ०–५०
३१७८ स्वप्नवासवदत्तम—(भास) पुरुषोत्तम शास्त्री २–५०
३१७९ स्वप्नवासवदत्तम्—(भास) संस्कृत हिंदी टीका २–५०
३१८० स्वप्नवासवदत्त का सरल अध्ययन—(प्रश्नोत्तर) २–००
३१८१ हनुमन्नाटकम्—संस्कृत व्याख्या २–५०
३१८२ हनुमाननाटक—हिन्दी टीका ससहित २–५०
३१८३ हास्यार्णवप्रहसन—जगदीश्वर भटाचार्य) सटीक ०–८१

कोश

३१८४ अर्धमागधी कोष—अर्धमागधी संस्कृत, गुजराती, हिंदी ५ जिल्दों में सम्पूर्ण दुष्प्राप्य
३१८५ अनेकार्थ ध्वनिमञ्जरी—द्विकाकोश एकाक्षरकोश ०–१३
३१८६ अनेकार्थ तिलक—(महीप विरचित) मधुकर सं. ६–००
३१८७ अनेकार्थ मञ्जरी और नाम माला— ०–४४
३१८८ अनेकार्थ संग्रह—श्री हेमचन्द्र प्रणीत मूलकाशी ३–००
३१८९ अभिधान चिन्तामणि कोश—चन्द्रोदयाभिगुर्जर भाषा टीका सहित विजय कस्तूर सूरि संपूर्ण १०–००
३१९० अभिधान चिन्तामणि—कोषमूल ४–५०
३१९१ अभिधान राजेन्द्रकोष—संपूर्ण बडी बडी ७ जिल्दों में अर्धमागधी श्री विजयराजेन्द्र सूरि प्रणीत जैन इन्साइक्लोपीडिया २५०–००
३१९२ अमरकोष—मूल संपूर्ण १ रु०, १–५०
३१९३ अमरकोष—मूल स्थूलाक्षर बंबई शब्दकोषसहित १–५०
३१९४ अमरकोष—संक्षिप्त माहेश्वरी टीका ३–००
३१९५ अमरकोष—प. शक्तिधर शास्त्रिकृत रसालाख्य व्याख्या सहित लखनऊ ३–५०
३१९६ अमरकोष—नामचन्द्रिका व्याख्या सटीक त्रिकाण्डकोष, हारावली द्विरूपकोश, एकाक्षरी कोशसहित ८–००
३१९७ अमरकोष—हिन्दी टीका संपूर्ण बंबई ५–००
३१९८ अमरकोष—भाषाटीका गुरुप्रसाद गुटका २–००
३१९९ अमरकोश—मणिप्रभा हिंदी टीका सम्पूर्ण ६–००
३२०० अमरकोष—प्रथमकांड भाषाटीका ०–३१
३२०१ अमरकोष—मणिप्रभा हिंदी टीका प्रथमकांड ०–७५
३२०२ अमर टीका कामधेनु—तिब्बती भाषा
३२०४ अवधीकोष—रामाज्ञा द्विवेदी ७–५०
३२०५ आख्यात चन्द्रिका नाम क्रियाकोष—श्रीभट्ट मल १–५०
३२०६ आङ्गल भारतीयप्रशासन शब्दकोष—डा० रघुवीर १५–०
३२०७ आङ्गल—भारतीय पक्षि नामावलि रघुवीरकृत १५–०
३२०८ आङ्गल भारतीय महाकोष—डा. रघुवीर २५–०
३२०९ आदर्श हिंदी—संस्कृत कोश रामसरूपशास्त्री १२–५०
३२१० आधुनिककथा कोष—भोलानाथ तिवारी ३–००
३२११ अंग्रेजी-संस्कृत कोष—डा. मोनियर विलियम्स ४५–००
३२१२ उपनिषद्वाक्यमहाकोष १६–००
३२१३ उर्दू हिन्दी कोश—श्रीरामचन्द्र वर्मा ४–५०
३२१४ एकार्थ नाममाला—द्वयाक्षरी नाममाला सौभारीत्र.४–०
३२१५ काश्मीरशब्दामृत—ईश्वरकौलकृत २ भाग ५–००
३२१६ कोशावतंसः—पूर्वार्द्ध शि. आ. खोडेकर संपा. २–००
३२१७ खनिज अभिज्ञान—डा० रघुवीर ५–००
३२१८ गणितीय कोश—(गणितीय परिभाषा तथा गणितीय शब्दावली) डा० व्रजमोहन ९–००
३२१९ गो-ज्ञान-कोश—प्राचीनखंड वैदिक पं.सातवलेकर ६–००
३२२० ज्ञानशब्दकोष—मुकुन्दीलाल श्रीवास्तवकृत हिंदी १२–०
३२२१ चिकित्सा विज्ञान कोश—सेनगुप्ता ७–५०
३२२२ जीव रसायन कोश—हिन्दी—श्रीव्रजकिशोर ६–००
३२२३ तर्कशास्त्र पारिभाषिक शब्दावली १–००
३२२४ तिब्बती संस्कृत कोश—डा. लोकेशचंद्रकृत दूसरा भाग
३२२५ देशीनाममाला—श्रीहेमचन्द्रप्रणीत पिशेल ४–५०
३२२६ देशीनाममाला—मुरलीधर संपादित कलकत्ता ७–५०
३२२७ नानार्थमञ्जरी—राघव विरचित कृष्णामूर्ति १५–००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

३२२८ नानार्थरत्नमाला—दण्डाधिनाथविरचित १५—००
३२२९ नानार्थ संग्रह—अजयपाल १—७५
३२३० नाममाला—धनञ्जयविरचित सभाष्य ३—५०
३२३१ नाममाला—धनञ्जयविरचित हिन्दी टीकासहित ०—६२
३२३२ नाममालिका—भोजसंग्रहीत इ. दत्तात्रेयकुलकर्णीस. ६—०
३२३३ नालन्दाकरेंट डिक्शनरी—अंग्रेजी हिन्दी १५—००
३२३४ नालन्दा विशाल शब्द सागर—(हिन्दी से हिन्दी) शब्द संख्या १,५०,००० १५—००
३२३५ पर्याय मुक्तावली ६—००
३२३६ पाइयसद्द-महण्णव—प्राकृत हिंदीकोष हरगोविंददास ७५-०
३२३७ पारिभाषिक शब्दकोष—अंग्रेजी गुजराती ४—००
३२३८ प्रयक्षशारीर कोष ८—००
३२३९ प्रामाणिक हिन्दी कोष—श्रीरामचन्द्र वर्मा १२—५०
३२४० प्रारंभिक आङ्गल भारतीय—वैज्ञानिक शब्दकोश ४—७५
३२४१ बिजनेस डायरेक्टरी—हिन्दी १२—५०
३२४२ बृहत् हिन्दीकोष—हिन्दी से हिन्दी २५—००
३२४३ भारतीय राजनीति कोष—कालिदास खंड ८—००
३२४४ भार्गव अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश बड़ा १०—० छोटा ४—००
३२४५ भार्गव हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोष बड़ा १०—०
३२४६ भार्गव हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश—छोटा ४—०
३२४७ भारतीय भूमिति—चित्रों के लिए हिन्दी शब्द १—००
३२४८ भाषाशब्दकोष—डा० रमाशंकर शुक्ल रसाल १२—००
३२४९ भूतत्व-विज्ञान कोष अंग्रेजी-हिन्दी २—५०
३२५० मङ्गोल—संस्कृत डिक्शनरी—डा. रघुबीर ५०—००
३२५१ महाराष्ट्र शब्दकोश—विभाग १—७ ७०—००
३२५२ महाराष्ट्र वाक् संप्रदाय कोष—२ भाग ३५—००
३२५३ मानस शब्द सागर—रामचरित मानस में शब्द स्थल निर्देशात्मक कोश श्रीबद्रीदास अग्रवाल २०—००
३२५४ मेडिकल पाकेट डिक्शनरी—अंग्रेजी-हिन्दी-उर्दू-बँगला—एस० भटाचार्य १०—००
३२५५ मेदिनीकोष—मेदिनीकर कृत मूल ३—००
३२५६ रामगुलाम शब्दकोष ५—००
३२५७ वैदिकपदानुक्रमकोष ९ भाग छपे हैं बाकी यन्त्र. १८०—००
३२५८ वाणिज्य शब्दकोष—डा० रघुबीर २—००
३२५९ विद्यार्थी कोष—(हिन्दी) श्रीदामोदरस्वरूप गुप्त ३—००
३२६० विश्वप्रकाश कोष—संस्कृत ३—००
३२६१ विशेषामृतम्—त्र्यम्बक मिश्र विरचित १—००
३२६२ स्टूडेंट प्रेक्टिकल संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी २—५०
३२६३ संस्कृत जर्मन डिक्शनरी—बोटलिंग ५००—००
३२६४ संस्कृत-अंग्रेजी डिक्शनरी—आप्टे कृत बड़ी नवीन संशोधित संस्करण—३ जिल्दों में १२५—००
३२६५ स्टूडेन्ट प्रेक्टिकल डिक्शनरी इंगलिश-संस्कृत १—५०
३२६६ व्रजभाषा सूरकोश—१से५ भाग डा. दीनदयालु १५—००
३२६७ शब्द कल्पद्रुम—राजा राधाकान्त देव विरचित संपूर्ण ५ बड़ी जिल्दों में—
३२६८ शब्द भेद प्रकाश—(शब्द द्वैध कोश एकाक्षरकोश) ०—२५
३२६९ शब्दरत्न समन्वय कोश— १५—००
३२७० शब्द-सागर (संस्कृत-अंग्रेजी) —जीवानंद ३०—००
३२७१ शारदीयाख्यान नाममाला—हर्षकीर्ति प्रणीत ५—००
३२७२ शास्त्रीय परिभाषा कोश— श्री या. रा. दाते तथा श्री चि. ग. कर्वे संपादित मराठी ४०—००
३२७३ शाश्वत कोश—अनेकार्थ समुच्चय २—५०
३२७४ शिवकोष—शिवदत्त मिश्र प्रणीत आर.जी.हर्ष सं. १२—०
३२७५ श्रीकोष—(हिन्दी संस्कृत कोश) पं. केदारनाथ १—२५
३२७६ संस्कृत-शब्दार्थ कौस्तुभ—संस्कृत हिन्दी १५—००
३२७७ संस्कृत इंगलिशडिक्शनरी—मोनियर विलि. १००—८०
३२७८ समाचार पत्र शब्द-कोष—(अंग्रेजी हिन्दी) १—७५
३२७९ सरकारी हिन्दी शब्दकोष—(अंग्रेजी-हिन्दी) ४—००
३२८० संस्कृत-अंग्रेजी डिक्शनरी-आप्टे कृत विद्यार्थी सं. २०—००
३२८१ शब्दरत्नप्रदीप—प्राचीन कोष २—००
३२८२ हिंदी बंगला कोष—गोपालचन्द्र चक्रवर्ती ६—५०
३२८३ हिन्दी मुहावरा कोष— ३—००
३२८४ हिंदी राष्ट्रभाषा कोश—श्रीविश्वेश्वरनारायण १४—००
३२८५ हिन्दी संस्कृत शब्दकोश—(छात्रोपयोगी) १—५०
३२८६ हिन्दी पर्याय वाची कोश—श्रीकृष्णशुक्ल विशारद ३—०
३२८७ त्रिकाण्ड शेष—सार्थचन्द्रिका व्याख्या समेत ५—००

पाञ्चरात्र आगम

३२८८ अनिरुद्ध संहिता—दिव्यसंहिता के अन्तर्गत ५—००
३२८९ आगम प्रामाण्य—यमुनाचार्य स्वामी प्रणीत १—२५
३२९० पाञ्चरात्र महोपनिषद—उत्सव संग्रह ५—००
३२९१ पारमेश्वर संहिता—(पाञ्चरात्र) १५—००
३२९२ पौष्कर संहिता—सम्पत्कुमार रामानुज मुनि सं. ५—००
३२९३ बृहद् ब्रह्म संहिता—(नारद पाञ्चरात्रान्तर्गत) २—७५
३२९४ महोत्सव प्रयोग—(पाञ्चरात्र) रङ्ग भट्टारक ३—००
३२९५ लक्ष्मी तन्त्र—पाञ्चरात्र आगम् ३०—००
३२९६ समूर्तार्चनाधिकरण—अत्रिसंहिता रघुनाथ चक्रवर्ती २—०
३२९७ हयशीर्ष पञ्चरात्रम्—२ भाग में भूतोशचंद्र सरकार द्वारा सम्पादित २४—००

नीति

३२९८ अक्षय नीति सुधाकर— ५—००
३२९९ अभिलषितार्थ चिन्तामणि—सोमेश्वरदेवकृत २—००
३३०० ईसब नीति कथा—२ भाग संस्कृत १—६२
३३०१ उद्योग प्रारब्ध विचार—(हिन्दी) २—५०
३३०२ कहावत कल्पद्रुम—(हिन्दी) १—२५
३३०३ कामन्दक नीति—सं. टीका प्रथमभाग पूना ४—००
३३०४ कामन्दकीय नीति सार—हिन्दी टीका सहित २—००
३३०५ कौटिल्यार्थशास्त्र—गणपतिशास्त्री टीका ३ भाग ३—२५
३३०६ कौटिल्य अर्थ शास्त्र—हिन्दी टीका सहित यन्त्रस्थ
३३०७ कौटिल्य अर्थ शास्त्र—मूल यन्त्रस्थ
३३०८ चाणक्य नीति—व्यवहार सार संग्रह ०—५०
३३०९ चाणक्य नीति—भाषा टीका ०—६२
३३१० चाणक्य शतक—जीवानन्द ०—३१
३३११ चाणक्यसूत्र—(प्रथमोध्याय) संस्कृत हिंदीटीका ०—४४
३३१२ दण्ड नीति—केशव पण्डित कृत ४—५०
३३१३ दम्पत्ति वाक्य विलास—दोहा भा. टी. १—७५
३३१४ धर्म चौर्य रसायन—गोपाल योगीन्द्र २—२५
३३१५ धौम्य निति—भाषा टीका ०—३७
३३१६ नीति कल्पतरु—व्यासदास क्षेमेन्द्र ५—००
३३१७ नीति तत्व वीर भाव—चिदानन्द ४—५०
३३१८ नीति प्रकाशिका—वैशम्पायन कृत तथा विवृति ४—१३
३३१९ नीति मञ्जरी—सभाष्य-आद्विवेद विरचित ४—५०
३३२० नीति श्रृङ्गार वैराग्य शतक—भर्तृहरि हिंदीटीका १—०
३३२१ नीतिशतक—भर्तृहरि संस्कृत टीका १—०, १—७५
३३२२ नीति शतक—संस्कृत हिन्दी टीका सहित १—००
३३२३ नीति शतक—विस्तृत हिन्दी टीका सहित हरिदास ५—०
३३२४ पञ्चतन्त्र—मूल काशी २—०, बम्बई ३—००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

३३२५ पंचतन्त्र—जीवानन्द कृतसंस्कृत व्या. सहित

३३२६ पंचतन्त्र—सटीक बम्बई ५—२५

३३२७ पंचतन्त्र—भाषा टीका बम्बई ५—५०

३३२८ पंचतन्त्र—मित्रसंप्राप्ति—हिंदी टीका ०—७५

३३२९ पंचतन्त्र—डा. एजर्टन द्वारा संपादित २—५०

३३३० पंचतन्त्र—संस्कृत हिंदी टीका गुरुप्रसाद ६—००

३३३१ पंचतन्त्र भाषा टीका ४—००

३३३२ पंचतन्त्र—केवल भाषा डा. मोतीचन्द्र कृत ४—५०

३३३३ पंचतन्त्र—केवल हिंदी सत्यकाम विद्यालंकार ३—५०

३३३४ पंच तन्त्र—काकोलूकीयम् संस्कृत हिंदी टीका स. १—२५

३३३५ पंचतन्त्र—(मित्रभेद) संस्कृत टीका १—०

३३३६ पंचतन्त्र—(मित्रभेद) भाषा टीका २—५०

३३३७ पञ्चतन्त्र—अपरीक्षितकारक संस्कृत हिंदीटीका ०—७५

३३३८ बुद्ध भूषण—शंभु विरचित १—५०

३३३९ पुरुष परीक्षा—भाषा टीका २—६२

३३४० रत्न समुच्चय— ०—३७

३३४१ राजनीति रत्नाकर—चण्डेश्वर विरचित— ५—००

३३४२ विदुर नीति—सटीक ०—५०

३३४३ विदुर नीति—संस्कृत-हिन्दी टीका २—००

३३४४ विदुर नीति " " १—००

३३४५ विदुर प्रजागर—भाषा ०—६२

३३४६ वैराग्य शतक—हरदयाल कृत पद्यानुवाद १—५०

३३४७ वैराग्य शतक " " १—२५

३३४८ वैराग्य शतक—सं. टीका, हि. टीका ०—८७

३३४९ वैराग्य शतक—संस्कृत टीका ०—५०

३३५० वैराग्य शतक—हरिदास भाषा टीका सचित्र ६—००

३३५१ शतक त्रय—भर्तृहरि संस्कृत टीका पूना २—२५

३३५२ शतक त्रयम्—(दक्षिणात्य वचनानुसार) कोसंबी ६—००

३३५३ शतक त्रयम्—गोपीनाथकृत हिंदी तथा अंग्रेजी ७—००

३३५४ शतक त्रयादि सुभाषित संग्रह— १२—५०

३३५५ शुक्रनीति—भाषा टीका ४—५०

३३५६ श्रृङ्गार शतक—भर्तृहरि सटीक ०—५०

३३५७ श्रृङ्गार शतक—सचित्र हरिदास—हिन्दी टीका ४—५०

३३५८ सरस्वती विलास—व्यवहारकाण्ड—श्रीप्रताप रुद्र २—५०

३३५९ साम्राज्य लक्ष्मी पीठिका—वासुदेव शास्त्री ८—५०

३३६० सुभाषित त्रिशती—(भर्तृहरि कृत शतक त्रयम)

३३६१ हितोपदेश—मूल १—०० बम्बई १—५०

३३६२ हितोपदेश—जीवानन्द सं० टीका ३—१२

३३६३ हितोपदेश—भाषा टीका १—५०

३३६४ हितोपदेश—गुरुप्रसाद स. हिन्दी टीका ३—००

३३६५ हितोपदेश मित्र लाभ—संस्कृत तथा हिन्दी टीका प. विश्वनाथ कथासार, श्लोक सूचि सहित १—००

३३६६ हितोपदेश—पं० रामेश्वरभट कृत हिं० टी० ३—७५

शिल्पशास्त्र

३३६७ अपराजित पृच्छा—भुवनदेवाचार्य विरचित २०—००

३३६८ काश्यप शिल्प—महेश्वर विरचित ५—२५

३३६९ प्रसाद मंडन—राधावल्लभ १—००

३३७० प्रसाद मंडनम् १०—००

३३७१ बुद्ध प्रतिमालक्षण—सम्यक् संबुद्ध भाषित प्रतिमा लक्षण विवरणी टीका ०—६२

३३७२ भारतीय वास्तु शास्त्र—(वास्तु विद्या तथा पुर निवेश) नराधिप महाराज भोजदेव विरचित समराङ्गण सूत्रधार के आधार पर—लेखक डा० द्विजेन्द्रनाथ ८—५०

३३७३ भारतीय वास्तु शास्त्र—प्रतिमा विज्ञान एवं प्र. वि. की पृष्ठभूमि पूजा परम्परा लेखक —डा. द्विजेन्द्रनाथ शुक्ल १५—००

३३७४ वास्तुविद्या—लघु विवृति व्याख्या समेत १—२५

३३७५ विश्वकर्मप्रकाश—हिन्दी टीकासहित खुला पत्रा ३—५०

३३७६ विश्वकर्मा वस्तु शास्त्रम्—के. वासुदेव शास्त्री स. १६—०

३३७७ शैव समुच्चय—विमर्शिनी सहित शंकर प्रणीत ४—५०

३३७८ शिल्परत्न—श्री कुमार प्रणीत केवल उत्तरार्द्ध ३—५०

३३७९ हयशीर्ष पञ्चरात्र दो भाग में २४—००

सङ्गीत

३३८० कुचेलोपाख्यान—अजामिलोपाख्यान श्रीरामवर्म ०—३१

३३८१ क्रमिक पुस्तक मालिका—(हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति) (हिन्दी) प. विष्णुनारायण भातखंडे कृत मराठी पुस्तक का हिन्दी रूपान्तर १ से ६ भाग ४५—००

३३८२ ताम्बूल मञ्जरी— ५—६९

३३८३ नृत्यरत्नकोष—कुम्भकर्ण नृपति विरचित ३—७५

३३८४ नृत्य संग्रह—डा. प्रियबालाशाह द्वारा संपादित १—७५

३३८५ मुद्राविचारप्रकरणम्— १—३२

३३८६ मेल राग मालिका—वैद्यनाथ ९—००

३३८७ संग्रह चूडामणि—गोविन्दाचार्य कृत १५—००

३३८८ सङ्गीत कृतयः १—२५

३३८९ संगीत चूडामणि—नृत्य ६—५०

३३९० संगीत मालिका—मुहम्मदशाहकृत अंग्रेजी भूमिका ५—००

३३९१ संगीत पारिजात—(श्री अहोबल) भाषा टीका ४—००

३३९२ संगीत दर्पण—हिन्दी टीका सहित २—००

३३९३ संगीत दर्पण—चतुर दामोदर प्रणीत ३—२५

३३९४ संगीत रत्नाकर—श्री शार्ङ्गदेव प्रणीत चतुर कल्लिनाथ विरचित कलानिधि तथा सिंह भूपाल विरचित संगीत सुधाकर टीका समेत ४ भाग में ९०—००

३३९५ संगीत शास्त्र—वासुदेव शास्त्री हिन्दी ६—५०

३३९६ संगीत सार संग्रह—घनश्यामदास विरचित ७—५०

३३९७ स्वरमेल कला निधि—(राम मात्य कृत) हिन्दी १—००

३३९८ रागरत्नाकर—भाषा ७—००

३३९९ रागविबोध—सोमनाथ स्वोपज्ञ व्याख्या सहित १५—००

३४०० रागतत्वविबोध—श्रीनिवास विरचित ४—००

स्तोत्र

३४०१ अन्नपूर्णा स्तोत्र— ०—१२

३४०२ अपराजिता स्तोत्र ०—१९, ०—१९

३४०३ अपामार्जनस्तोत्र— ०—२२

३४०४ आदित्यहृदय—मोटाअक्षर ०—३७

३४०५ आदित्यहृदय—छोटाअक्षर ०—१२

३४०६ आदित्यहृदय—नवग्रह सहित ०—०९

३४०७ आदित्यहृदय—भाषा टीका ०—४४

३४०८ आपदुद्धारकबटुकभैरवस्तोत्र ०—१२

३४०९ आरतीसंग्रह—भाषा ०—१९

३४१० आलवन्दारस्तोत्र ०—१२, ०—०६

३४११ ऋणमोचन मंगलस्तोत्र ०—०९

३४१२ इन्द्राक्षीस्तोत्र ०—१२

३४१३ ककारादि कृष्ण सहस्रनाम १—००

३४१४ कमलनेत्र स्तोत्र—भाषा ०—०९

३४१५ कर्पूर स्तोत्र स. हिन्दी टीका ०—३१

CC-0 In Public Domain. Kirtilal Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

२४१६ कालीकवच स्तोत्र ०—९, ०—१२
३४१७ कालिकासहस्रनाम ०—५०
३४१८ कुब्जिकास्तोत्र ०—१९
३४१९ गंगालहरी—मूल ०—१२
३४२० गंगालहरी—पीयूषलहरी सं० टीका ०—५०, ०—४४
३४२१ गंगालहरी—भाषा टीका ०—१९
३४२२ गजेन्द्रमोक्ष—भाषा टीका ०—२५
३४२३ गणपतिस्तोत्र—गणेशमहिम्न ०—१९
३४२४ गणेशकवच ०—१२
३४२५ गणेशमहिम्न स्तोत्र ०—०९
३४२६ गणेशसहस्रनामावली ०—२५
३४२७ गणेश सहस्रनाम—सटीक १—२५
३४२८ गणेशसहस्रनाम—मूल ०—२५
३४२९ गणेश सरस्वती स्तोत्र ०—१२
३४३० गणेशाष्टक ०—०६
३४३१ गायत्री रामायण ०—०६
३४३२ गायत्री सहस्रनाम—नामावली ०—५०
३४३३ गोपाल सहस्रनाम—मूल ०—३७, ०—०५, ०—७१
३४३४ गोपाल सहस्र नाम—भा० टी० ०—५०
३४३५ गोपाल सहस्रनामावली ०—५०
३४३६ चर्पटपजरी ०—१२
३४३७ दत्तात्रयस्तोत्र ०—१२, ०—१९
३४३८ देवीकवच—भा० टी० ०—१६
३४३९ देवी सहस्रनामावली ०—२५
३४४० देव्यापराधक्षमापनस्तोत्र ०—१२
३४४१ पूर्वीपुष्पांजली स्तोत्र ०—१२, ०—०६
३४४२ दुर्गाकवच ०—०९
३४४३ नर्मदाष्टक ०—०६
३४४५ नवग्रह स्तोत्र विष्णुपंजर ०—०६
३४४५ नवग्रहस्तोत्र—बड़ा बम्बई ०—६२
३४४६ नवग्रहस्तोत्र—यन्त्रमन्त्र कवच आदि सहित ०—७५
३४४७ नारायण कवच ०—१२, ०—१९, ०—२५
३४४८ नारायण वर्म ०—३१
३४४९ नृसिंह कवच ०—१२
३४५० प्रत्यंगिरास्तोत्र ०—१६
३४५१ पुरुषोत्तम सहस्रनाम ०—३१

३४५२ पञ्चमुखी हनुमान कवच ०—१९
३४५३ बद्रीनारायण स्तोत्र ०—१९
३४५४ बगुलामुखी स्तोत्र ०—१३
३४५५ बटुकभैरव सहस्रनामस्तोत्र ना० ०—५०
३४५६ ब्रह्मज्ञानावली ०—०६
३४५७ बृहत्स्तोत्ररत्नाकर—मोटा अक्षर काशी ३—००
३४५८ .... बम्बई ३—५०
३४५९ बृहत्स्तोत्ररत्नाकर सचित्र गुटका केवल दूसरा भाग ३—०
३४६० बृहत्स्तोत्ररत्नाकर गुटका बबई १—७५
३४६१ बृहत्स्तोत्ररत्नहार बबई ६—००
३४६२ भवानी सहस्रनाम ०—५०
३४६३ भवानी मानसिक पूजन ०—१२
३४६४ भैरवसहस्रनाम ०—२२
३४६५ महाकालशनिमृत्युंजय ०—१२
३४६६ महामृत्युजय जपविधि ०—२५
३४६७ ,, ,, प्रकाश ०—६२
३४६८ मृत्युञ्जय स्तोत्र ०—१२
३४६९ महाविद्यास्तोत्र ०—९, ०—१२
३४७० महालक्ष्मीस्तोत्र ०—९, ०—१२
३४७१ महालक्ष्म्यष्टक ०—०६
३४७२ महिम्नस्तोत्र ०—१२
३४७३ महिम्नस्तोत्र—मधुसूदनी टीका ०—६२
३४७४ मृतसंजीवनी जपविधि ०—१६
३४७५ यमुनाष्टक ०—०६
३४७६ राम सहस्रनाम ०—१६
३४७७ रामस्तवराज मूल ०—१९
३४७८ ,, भाषाटीका ०—३७
३४७९ रामरक्षास्तोत्र ०—०९
३४८० रामनामसहस्रनाम स्तोत्र ०—१३
३४८१ ललितासहस्रनाम स्तोत्र ०—५०
३४८२ ,, सटीक २—५०
३४८३ ,, नामावली-सहित ०—६९
३४८४ लक्ष्मीनारायण हृदय ०—३१, ०—५०
३४८५ विष्णु सहस्रनाम मूल ०—०९, ०—५०, ०—४४
३४८६ ,, भाषा टीका ०—३१
३४८७ ,, शंकरभाष्य भाषा टीका ०—८७

३४८८ ,, नामावली ०—३७
३४८९ ,, भगवद्गुणदर्पणभाष्य ८—५०
३४९० शनिस्तोत्र ०—०९
३४८९ शिवकवच ०—२५
३४९० शिवसहस्रनाम मूल ०—३१
३४९१ शिवस्तोत्र ०—०९
३४९२ शिवताण्डव स्तोत्र ०—१२
३४९३ शिवताण्डव भाषा टीका ०—१९
३४९४ शिवमहिम्न स्तोत्र मूल ०—१२, ०—१९
३४९५ ,, ,, भाषाटीका १०—१९
३४९६ ,, ,, भा०टी०—स्वा० प्रकाशानन्द ०—५७
३४९७ शिवसहस्रनामावली ०—३७
३४९८ शिवस्तोत्रावली—सटीक ३—७०
३५०० शीतलाष्टक ०—०९
३५०१ संतानगोपालस्तोत्र ०—०९, ०—२५
३५०२ स्तवमाला सभाष्य ३—००
३५०३ स्तोत्ररत्नावली हि. टी. ०—५०
३५०४ ,, रामानुज दो भाग ६—००
३५०५ सर्वदेवस्तोत्र ०—१२
३५०६ सरस्वती स्तोत्र ०—२५
३५०७ सिद्ध सरस्वती स्तोत्र ०—१२
३५०८ सूर्यद्वादशस्तवी ०—१६

अच्युत ग्रन्थमाला

३५०९ भगवन्नामकौमुदी—श्रीलक्ष्मीधर, अनन्तदेव सं० ०—७५
३५१० शुल्बसूत्र—(कात्यायनश्रौत का परिशिष्ट अंश) म. म. पं. विद्याधर गौड़ वि०स० सं० वृत्ति ०—३७
३५११ कात्यायन श्रौतसूत्र—पं. विद्याधर गौड़ कृत सरलसस्कृत वृत्ति सहित ८—००
३५१२ प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणि—सदानन्द व्यासकृत स्वोपज्ञ स. व्याख्या सहित दो भाग ५—००
३५१३ भक्तिरसामृतसिन्धु—श्रीरूपगोस्वामीप्रणीत श्रीजय गोस्वामीकृत सं. टीका ४—००
३५१४ तिथ्यर्क—तिथियों के निर्णय पर अपूर्व ग्रन्थ श्रीदिवाकर विरचित २—००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

३५१५ परमार्थसार—सटीक—श्रीपतञ्जलि कृत
३५१६ प्रमपत्तन—श्री रसिकोत्तमकृत तथा अद्भुत प्रणीत टीका सहित १—२५
३५१७ शतपथ ब्राह्मण—माध्यन्दिन सम्पूर्ण मूलमात्र-अनुक्रमणिका सहित ३ भाग स्थूलाक्षर ११—००
३५१८ काशीकेदारमाहात्म्य—ब्रह्मवैवर्तपुराणान्तर्गत-हिन्दी टीका सहित ३—००
३५१९ सिद्धान्तबिन्दु—श्रीमधुसूदन सरस्वती विरचित—भाषानुवाद सहित २—७५
३५२० प्रकरणपञ्चक—श्री शंकराचार्य के आत्मबोध, प्रौढ़ानुभूति, तत्वोपदेश हि. अनु. ०—७५
३५२१ ब्रह्मसूत्र—शंकरभाष्य-रत्नप्रभा भाषानुवाद केवल तीसरा भाग मिलता है ५—५०
३५२२ विवरण प्रमेय संग्रह—श्रीविद्यारण्यमुनि विरचित तथा हिन्दी अनुवाद सहित ६—००
३५२३ वेदान्तसिद्धान्तकल्पवल्ली—श्री सदाशिवेन्द्र सरस्वती विरचित भाषा टीका ०—७५
३५२४ बृहदारण्यकवार्तिकसार—दो भागों में। श्रीविद्यारण्यमुनि विरचित हिन्दी टीका १२—००
परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए केवल प्रमेय परीक्षान्त भाग पृथक ३—००
३५२५ अच्युतलेखमाला—महात्माओं तथा विद्वानों के सुन्दर लेख हिन्दी में २—००
३५२६ भगवद्गीता—श्रीशंकरानन्द विरचित शंकरानन्दी संस्कृत टीका सहित तथा श्रीभोलेबाबाकृत हिन्दी अनुवाद सहित नया संस्करण ८—००
३५२७ षट्सन्दर्भ—तत्त्वसन्दर्भ—व्याख्याद्वयोपेतः १—५०
३५२८ योगवासिष्ठ—पांच भागों में सम्पूर्ण—सरल हिंदी अनुवाद सहित ४८—००
पृथक भी मिलते हैं द्वितीय १०) तृतीय १०) चतुर्थ १०) पंचम— ८—००
३५२९ भागवतएकादशस्कन्ध—प्रत्येक पद का हिन्दी अनुवाद तथा भावानुवाद २ भाग ६—५०
३५३० नैष्कर्म्यसिद्धि—श्री सुरेश्वराचार्य विरचित हिन्दी अनुवाद सहित १—७५
३५३१ शिवस्तुति—श्री गोकुलनाथ विरचित संस्कृत तथा हिंदी अनुवाद सहित
३५३२ सिद्धान्तलेशसंग्रह—हिन्दी अनुवाद सहित ६—००

दर्शन

३५३३ दर्शन का प्रयोजन—डा० भगवानदास ३—५०
३५३४ दर्शन और चिंतन—पं० सुखलाल जी
३५३५ दर्शन सर्वस्व २—५०
३५३६ पश्चिमी दर्शन—डा० दिवानचन्द ४—००
३५३७ भारतीय तत्वविद्या—पं० सुखलालजी ३—५०
३५३८ भारतीय तत्वज्ञान की रूपरेखा—प्राणशंकर शुक्ल ३—५०
३५३९ भारतीय दर्शन—डा० उमेश मिश्र हिन्दी ८—००
३५४० भारतीय दर्शन—प्रो० बलदेव उपाध्याय १०—००
३५४१ भारतीय दर्शन परिचय—(न्याय-वैशेषिक) प्रो० हरिमोहन झा दो भाग २०—००
३५४२ भारतीय दर्शनशास्त्र—न्याय वैशेषिक डा० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री ३—००
३५४३ भारतीय दर्शनशास्त्र का इतिहास—डा० देवराज ६—५०
३५४४ भारतीय दर्शन-दत्त तथा चटर्जी की अंग्रेजी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद १०—००
३५४५ यूरोपीय दर्शन—श्रीरामावतार शर्मा ३—२५
३५४६ राजनीति और दर्शन—विश्वनाथ प्रसाद १४—००
३५४७ वैदिक दर्शन—डा० फतेसिंह ५—००
३५४८ षड्दर्शनसमुच्चय—लघुवृत्तिसमेत काशी २—००
३५४९ षड्दर्शन समुच्चय—श्री हरिभद्र सूरि सटीक ३—००
३५५० सर्वदर्शन कौमुदी—माधवसरस्वती १—२५
३५५१ सर्वदर्शनसंग्रह—सायणाचार्य मूल ४—००
३५५२ सर्वदर्शनसंग्रह-अभ्यंकरकृत संस्कृत व्या. सहित १५—००
३५५३ सर्वदर्शनसंग्रह—भाषा टीका सहित ५—००

संस्कृत साहित्य का इतिहास

३५५४ कालीदास—हिन्दी—पं. चन्द्रबली पांडेयकृत—कालीदास के जीवन तथा उनकी कृतियों का आलोचनात्मक विवेचन ७—५०
३५५५ कालीदास—हिन्दी प्रो० मिराशी ४—५०
३५५६ संस्कृत कविदर्शन—डा० भोलाशंकर हिंदी ६—००
३५५७ संस्कृत नाटक—कीथ की अंग्रेजी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद यन्त्रस्थ
३५५८ संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास—संस्कृत में पं० विश्वनाथ भारद्वाज २—००
३५५९ संस्कृत साहित्य का इतिहास—प्रो० बलदेव उपाध्याय ७—५०
३५६० संस्कृत साहित्य का इतिहास—पोद्दार ४—००
३५६१ संस्कृत साहित्य का इतिहास—मूल लेखक वरदाचार्य—अनुवादक डा० कपिलदेव ४—५०
३५६२ संस्कृत साहित्य का इतिहास—ए० बी० कीथ की अंग्रेजी पुस्तक का सरल हिन्दी अनुवाद डा. मंगलदेव कृत—प्रमाणिक इतिहास २०—००
३५६३ संस्कृत साहित्य का इतिहास सुधीरकुमार ४—५०
३५६४ संस्कृत साहित्य की रूपरेखा—चन्द्रशेखर पांडेय ५—२५
३५६५ संस्कृत साहित्य विमर्श—समस्त संस्कृत वाङ्मय का इतिवृत्तरूप संदर्भ) संस्कृत में श्री द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री कृत १६—००
३५६६ संस्कृत वाङ्मय—पं० बलदेव १—२५
३५६७ सारस्वतालोक १—२५
३५६८ शूद्रक हिन्दी में—पंडित चन्द्रबलि पाण्डेय कृत मृच्छकटिक के रचयिता शूद्रक का आलोचनात्मक इतिहास ४—५०
३५६९ वैदिक साहित्य—पं० रामगोविन्द त्रिवेदी ६—००
३५७० वैदिक साहित्य और संस्कृति—पं० बलदेव ७—००

जैन

३५७१ अकलंकग्रन्थत्रय—(भट्ट अकलंक) स्वोपज्ञ विवृति लघीयस्त्रयम्- न्यायविनिश्चय प्रमाणसंग्रह ८—५०
३५७२ अंगविज्जा—(प्राकृत) मुनिश्री पुण्यविजय जी द्वारा संपादित तथा डा० मोतीचन्दकृत अंग्रेजी भूमिका तथा डा. वासुदेव शरण अग्रवाल कृत हिन्दी भूमिका २१—००
३५७३ अंजनापवनंजयनाटक—सुभद्रानाटिका ३—२५
३५७४ अर्धमागधी कोश—संपूर्ण मुनिरत्नचन्द्र जी कृत ५ भाग में दुष्प्राप्य
३५७५ अनेकान्तजयपताका—श्री हरिभद्र सूरि स्वकृत तथा मुनिचन्द्रीय विवरण दो भाग २८—००
३५७६ अनेकार्थ साहित्य संग्रह—प्रथम भाग —२००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

३५७७ अनेकान्तवाद–पं० सुखलाल जी ०–७५
३५७८ अन्तगडाणुत्तरोववाईयदसाओ–मोदी ४–००
३५७९ अन्तर्निरीक्षण–पं० सुखलाल जी ०–३७
३५८० अपभ्रंश व्याकरण ४–५०
३५८१ अपरिग्रहदर्शन–मुनिअमरचन्द जी २–००
३५८२ अमरवाणी–अमरमुनि २–२५
३५८३ अमरभारती–(मुनिअमरचन्द जी) ३–००
३५८४ अलंकार महोदधि–श्री नरेन्द्रसूरि १०–००
३५८५ अस्तेयदर्शन–मुनि अमरचन्द जी १–५०
३५८६ अष्टक प्रकरण–(श्री हरिभद्र सूरि) ०–७५
३५८७ अर्हन्नीति–हेमचन्द्राचार्य १–५०
३५८८ अहिंसा की साधना–काका कालेलकर ०–२५
३५८९ अहिंसादर्शन–मुनि अमरचन्द जी ४–५०
३५९० अध्यात्मकल्पद्रुम–(श्री सुन्दर सूरि) गुजराती
विवेचन सहित कापड़िया ६–२५
३५९१ आगमयुग का अनेकान्तवाद–श्री दलसुखभा ई०–५०
३५९२ आचार्य श्री विजयवल्लभ सूरि स्मारकग्रन्थ १७–५०
३५९३ आत्ममीमांसा–श्री दलसुखभाई
३५९३क आत्मसिद्धि—श्री राजचन्द्र जी २–००
३५९४ आधुनिक जैन कवि–श्री रमारानी ३–७५
३५९५ आनंदघन जीनो पदो–अर्थ सहित कापडिया ७–५०
३५९६ आप्तपरीक्षा–विद्यानन्द विरचित हिन्दी टीका ८–००
३५९७ आप्तमीमांसा–(स्वा.समन्तभद्र) हिन्दी टीका १–००
३५९८ आदि पुराण (महापुराण) दो भाग २०–००
३५९९ उज्ज्वल वाणी–द्वितीय भाग २–२५
३६०० उत्तर पुरोण १०–००
३६०१ उत्तराध्ययन सूत्र-मूल-वाडेकर सं० २–००
३६०२ उपासक आनंद–मुनि अमरचन्द जी ३–००
३६०३ कथा कोष प्रकरण–सिंघी जैन सीरीज १०–५०
३६०४ कन्नड़ प्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थसूचि १३–००
३६०५ करकण्डचरित–अपभ्रंश–(मु. कनकामर) ८–००
३६०६ करलक्खण–सामुद्रिक हिं० टीका ०–७५
३६०७ कविकल्पद्रुम–हर्षकुलगणि १–००
३६०८ कसायपाहुड सुत्त–चूर्णि सानुवाद २०–००
३६०९ काव्यानुशासन–(श्री हेमचन्द्र) स्वोपज्ञ वृत्ति ४–५०
३६१० काव्यानुशासन–महाकवि वाग्भट १–२५

३६११ कुन्दकुन्दाचार्यके तीनरत्न–पंचास्तिकाय, प्रवचनसार, २–००
समयसार १०–००
३६१२ कुमार पालचरित संग्रह
३६१३ कुमार पालचरित–प्राकृत द्वयाश्रय काव्य (श्री
हेमचन्द्र) सटीक तथा प्राकृत व्याकरण सहित ६–०
३६१४ कुम्मापुत्त चरिअं–अभ्यंकर १–२५
३६१५ कुवलय माला–डा० उपाध्येय संपादित १५–५०
३६१६ केवल ज्ञान प्रश्न चूडामणि–ज्योतिष ४–००
३६१७ खरतरगच्छबृहद गुर्वावलि ७–००
३६१८ खारवेल के शिलालेख १–००
३६१९ गणधरवाद–(आचार्य जिनभद्र) गुजराती अनु. १०–०
३६२१ गुजरात का जैन धर्म–मुनि जिनविजय ०–७५
३६२२ ज्ञानपीठ पूजांजलि–डा० उपाध्याय ४–००
३६२३ ज्ञानबिन्दु प्रकरण–(श्री यशोविजय) ५–००
३६२४ ज्ञानपंचमीकहा–महेश्वर सूरि विरचित ७–२५
३६२५ ज्ञाताधर्मकथाङ्ग–दो भाग १५–००
३६२६ चन्द्रप्रभचरित्र–श्री वीरनन्दि २–००
३६२७ चार तीर्थंकर–पं० सुखलाल जी २–००
३६२८ चौलुक्य कुमार पाल–हिन्दी ४–००
३६२९ जंबुदीव पण्णत्ति संगहो—
३६२९ जम्बुस्वामि चरित–अध्यात्म कमलमार्तण्ड २–५०
३६३१ जम्बू चरिअं–मु. जिनविजय संपादित ८–५०
३६३२ जयन्तविजय–श्री अभय देव १–५०
३६३३ जयपाहुड –जैन ज्योतिष
३६३४ जिनचतुर्विंशतिका स्तोत्र ०–५०
३६३५ जिनदत्ताख्यानद्वय–प्राकृत भाषा २–५०
३६३६ जिनरत्नकोष–(जैनग्रन्थ सूची) १२–५०
३६३७ जिन सहस्रनाम–स्वोपज्ञविवृत्ति –हिं० अनु० ४–००
३६३८ जीवन्धर चम्पु— ८–००
३६३९ जीवन की पांखें–मुनिअमरचन्द ३–५०
३६४० जीवन के चलचित्र–मुनि अमरचन्द २–००
३६४१ जीवन में स्याद्वाद–चंद्रशंकर ०–७५
३६४२ जीवन दर्शन–मुनि श्री अमरचन्द जी ४–००
३६४३ जैन आगम साहित्य में गुजरात–गुजराती ५–६२.
३६४४ जैन आगम–दलसुखभाई ०–६२
३६४५ जैनेन्द्र महावृत्ति–(श्री देवनन्दि) जैनेन्द्र व्याकरण

की टीका श्री अभयनन्दि १५–००
३६४६ जैनग्रन्थप्रशस्तिसंग्रह प्रथम भाग ४–००
३६४७ जैन ग्रन्थ और ग्रन्थकार–फतेचंद बेलानी १–५०
३६४८ जैन जागरण के अग्रदूत–गोयलीय ५–००
३६४९ जैन तर्कभाषा (श्री यशोविजय) सव्याख्या ३–००
३६५० जैन तत्त्वज्ञान–पं० सुखलाल जी ०–२५
३६५१ जैनत्व की झांकी–मुनि अमरचन्द जी १–००
३६५२ जैन दर्शन–श्री न्यायविजय जी ४–००
३६५३ जैन दर्शन–प्रो० महेन्द्रकुमार ७–००
३६५४ जैन दार्शनिक साहित्य के विकास की रूपरेखा ०–२५
३६५५ जैन दार्शनिक साहित्य का सिंहावलोकन ०–६२
३६५६ जैन दार्शनिक संस्कृति पर एक विहंगमदृष्टि ०–७५
३६५७ जैन दृष्टि योग–कापडिया गुजराती २–५०
३६५८ जैनधर्म अणि वाङ्मय–मराठी १–७५
३६५९ जैन धर्म का प्राण–श्री सुखलाल जी ०–३७
३६६० जैन धर्म और वैदिक धर्म मीमांसा ०–५०
३६६१ जैन धर्म परिचय–कामता प्रसाद ०–२५
३६६२ जैन धर्म सिन्धु–प्रतिक्रमण–चत्यंवदनादि ६–००
३६६३ जैन पुस्तक प्रशस्ति संग्रह–प्रथम भाग १०–००
३६६४ जैन यन्त्रावली–विधि सहित ५–००
३६६५ जैनशासन–पं० सुमेरचन्द ३–००
३६६६ जैन सम्प्रदाय शिक्षा–श्रीपालचन्द भाषा ६–००
३६६७ जैन साहित्य और इतिहास–श्रीनाथूराम प्रेमी ६–००
३६६८ जैन साहित्य की प्रगति–पं० सुखलाल जी ०–५०
३६६९ जैन स्तोत्रसमुच्चय–१२२ स्तोत्र २–००
३६७० जैन संस्कृति का हृदय–पं० सुखलाल जी ०–२५
३६७१ जैनस्तुति १–२५
३६७२ जैनशिलालेख संग्रह–३ भाग २७–२५
३६७३ जैसलमेर की चित्रसमृद्धि–३५ चित्र २५–००
३६७४ तिलकमंजरी–धनपाल (गद्यकाव्य) ४–००
३६७५ तिलकमंजरी–सटीक ३ भाग १८–००
३६७६ तिलोयपण्णति–दो भाग यतिवृषभाचार्य ३२–००
३६७७ तत्वार्थाधिगमसूत्र–हिन्दी अनुवाद ३–००
३६७८ तत्वार्थराजवार्तिक–अकलंकदेव दो भाग २४–००
३६७९ तत्वार्थवृत्ति–श्रुतसागर सूरि १६–००
३६८० तत्वार्थश्लोकवार्तिकालंकार–श्रीविद्यानन्दि ५४–००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

३६८१ तत्वार्थसूत्र—पं० सुखलाल जी कृत हिन्दी विवेचना ५—५०
३६८२ तत्वार्थ सूत्र हिन्दी विवेचन पं० फूलचन्द ५—००
३६८३ तत्वार्थ सूत्र—भास्करानंद सुखबोध व्या० २—७५
३६८४ तत्वार्थ विसूत्रि प्रकाशिका—विजयलावण्य सूरि ४—५०
३६८५ दशवैकालिक सूत्र—मूलपाठ ०—५०
३६८६ दिग्विजय महाकाव्य—मेघविजय ८—००
३६८७ देशीनाममाला—श्री हेमचन्द्राचार्य पूना ४—५०
३६८८ देशीनाममाला—कलकत्ता ७—५०
३६८९ द्वादशारनयचक्र—(श्रीमल्लदेव) सटीक १२—७५
३६९० धर्म और समाज—पं० सुखलाल जी १—५०
३६९१ धर्मदीपिका—श्री मंगलविजय जी ४—००
३६९२ धर्मबिन्दु—श्री हरिभद्रसूरि सटीक ४—००
३६९३ धर्माभ्युदय महाकाव्य—उदयप्रभसूरि ८—५०
३६९४ धर्मोपदेश माला—जयसिंह सूरि ९—७५
३६९५ धर्मशर्माभ्युदय—हिन्दी टीका ३—००
३६९६ धर्मशर्माभ्युदय—श्री चन्द्रकवि १—५०
३६९७ धातुरत्नाकर—मुनि लावण्यविजय जी
३६९८ नयरहस्य प्रकरण—श्रीयशोविजय ३—००
३६९९ नलदमयन्ती रास—महीराज ४—२५
३७०० नलकहा—सोमप्रभाचार्य ३—००
३७०१ नलायनम् (कुबेर पुराण) ९—००
३७०२ न्यायकुमुदचन्द्र—(प्रभाचन्द्राचार्य) दो भाग १६—४०
३७०३ न्यायदीपिका—हिन्दी टीका सहित ५—००
३७०४ न्यायावतार (सिद्धसेन दिवाकर) हिन्दी टी० ५—००
३७०५ न्यायावतार वार्तिक—वृत्ति—श्री शान्तिसूरि १६—५०
३७०६ न्यायविनिश्चय विवरण—दो भाग वादिराजसूरि ३०—०
३७०७ णायकुमारचरिउ—पुष्पदन्त ८—००
३७०८ नाममाला—सभाष्य—(धनंजय) सटीक ३—५०
३७०९ णायधम्म कहाओ—(९, १६) अंग्रेजी अनुवाद ३—५०
३७१० णाय धम्म कहाओ—सटिप्पण ७—५०
३७११ निर्ग्रन्थ सम्प्रदाय—पं० सुखलाल जी १—००
३७१२ निरयावलियो—गोपानी—चोकसी ३—००
३७१३ नम्मिदूत काव्य १—५०
३७१४ नेमिनिर्वाण काव्य—वाग्भट १—२५
३७१५ निशीथ सूत्र—चार भाग
३७१६ पउमचरिउ—तीन भाग ९—००

३७१८ पउमचरिअ (विमलसूरि) १—४ ३—५०
३७१९ पउमचरिऊ—(स्वयंभू) अपभ्रंश दो भाग २३—००
३७२० पद्मचरित—रविषेणाचार्य ५—५०
३७२१ पद्मपुराण—तीन भाग में ३०—००
३७२२ पद्मानन्दमहाकाव्य—श्री अमरचन्द्र १६—००
३७२३ परीक्षा मुखसूत्र—(माणिक्यनंदि) वृति समेत २—००
३७२४ पाइ-सद्द-महण्णवो—प्राकृत—हिन्दीकोष ७५—००
३७२५ पाइ (प्राकृत) भाषा और साहित्य गुजराती ६—००
३७२६ पाण्डवपुराण—शुभचन्द्राचार्य १२—००
३७२७ पुरातन प्रबन्धसंग्रह (ऐतिहासिक) ७—००
३७२८ पुरुषार्थसिद्धयुपाय—हिन्दी सहित २—००
३७२९ पुरुदेवचंपु—अर्हद्दास ००—७५
३७३० पुराण सारसंग्रह दो भाग —श्री गुलाबचन्द्र ४—००
३७३१ पुरातन जैन वाक्य सूचि— १५—००
३७३२ पंचसंग्रह—अमितगति ०—९४
३७३३ पंचसुतम् १—२५
३७३४ प्रकाश की ओर—मुनि अमरचन्द ३—००
३७३५ प्रद्युम्नचरित्र—महासेनाचार्य ०—५६
३७३६ प्रबन्धकोष—राजशेखर सूरि ७—००
३७३७ प्रबन्ध चिन्तामणि—भाषान्तर ६—००
३७३८ प्रभावक चरित्र—प्रभाचन्द्राचार्य ३—००
३७३९ प्रभावक चरित्र—सिंघी जैन सीरीज ७—००
३७४० प्रमेयरत्नालंकार—चारुकीर्ति ३—२५
३७४१ प्रमेयकमल मार्तण्ड—प्रभाचन्द्र ८—००
३७४२ प्रशमरतिप्रकरण—हिन्दी टीका सहित ६—००
३७४३ प्राकृत व्याकरण—त्रिविक्रम १०—००
३७४४ पृथ्वीचन्द्र चरित—सत्यराजगणि १—५०
३७४५ बंभदत्तो—अंग्रेजी अनुवाद सहित २—००
३७४६ ब्रह्मचर्यदर्शन—मुनि अमरचन्द २—००
३७४७ भगवतीसूत्र—पंचदशगोशालकाख्यशतक २—५०
३७४८ भट्टारक सम्प्रदाय ८—००
३७४९ भद्रबाहुसंहिता—ज्योतिष बम्बई ५—७५
३७५० भद्रबाहुसंहिता—ज्योतिष काशी ८—००
३७५१ भव्यजनकण्ठाभरण—अर्हद्दास १—२५
३७५२ भानुचन्द्रगणिचरित —(सिद्धिचन्द्र) ८—००
३७५३ भारत के प्राचीन जैनतीर्थ २—००

३७५४ भावसंग्रहादि—देवसेन २—५०
३७५५ भैरवपद्मावती कल्प ३०—००
३७५६ मदनपराजय—हिन्दी सारसहित ८—००
३७५७ महाचमत्कारिक बीशायन्त्र ५—००
३७५८ महापुराण—उत्तर पुराण १०—००
३७५९ महापुराण—आआदिपुराण दो भाग २०—००
३७६० महापुराण—पुष्पदंताचार्य अपभ्रंश ३ भाग ३०—००
३७६१ महाबन्ध—महाधवल—भगवन्त भुतबलि बिरचित हिन्दी अनुवाद सहित ७८—००
३७६२ महावीर—दलसुख भाई ०—२५
३७६३ महावीर वाणी—पं० बेचरदास २—२५
३७६४ महावीर चरित्र—प्राकृत प्रसन्न चंद्राचार्य ८—००
३७६५ मुदित कुमुदचन्द्र प्रकरण ०—५०
३७६६ मंगलमंत्र णमोकार—अनुचिन्तन २—००
३७६७ मंत्राधिराज चिन्तामणि १०—००
३७६८ युक्त्यनुशासन—(समन्तभद्र) हिन्दी टीका १—५०
३७६९ योगशतक—श्री हरिभद्रसूरि ३—५०
३७७० योगशास्त्र—(श्री हेमचन्द्र) गुजराती सहित २—५०
३७७१ रत्नकरंड श्रावकाचार—सदासुख ९—००
३७७२ रत्नकरण्डक श्रावकाचार भा० टी० २—२५
३७७३ राजर्षि कुमारपाल ०—५०
३७७४ रामायण—पुष्पदन्त—अपभ्रंश २—७५
३७७५ लाटी संहिता—राजमल्ल ०—५०
३७७६ लीलावई—(कौतुहल कवि) सवृत्ति १५—००
३७७७ वर्धमान काव्य—अनूपमिश्र हिन्दी ६—००
३७७८ वसुदेवहिन्डी (संघदास) प्रथम भाग
३७७९ वसुनन्दि श्रावकाचार—भा० टी० ५—००
३७८० वस्तुपाल का विद्यामण्डल ०—५०
३७८१ व्रततिथि निर्णय—आचार्य सिंहनन्दी ३—००
३७८२ विचारों के नये मोड़—मुनि अमरचन्द ३—००
३७८३ विवागसुय—चोकसी—मोदी ३—००
३७८४ विधि मर्ग प्रपा ६—००
३७८५ विविध तीर्थ कल्प—जिनप्रभसूरि ६—००
३७८६ विश्वसमस्या और व्रत विचार ०—२५
३७८७ विषापहार स्तोत्र ०—६२
३७८८ वैशाली—शास्त्रीय तथा ऐतिहासिक आधार पर

CC-0.In Public Domain. KirtikantSharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भगवान् महावीर की जन्मभूमि—श्री विजयेन्द्र सूरि २—५०
३७८९ शान्तिनाथ चरित्र—अजितप्रभाचार्य अपूर्ण ३—०
३७९० श्रमणसूत्र—मुनि श्री अमरचन्द जी ५—५०
३७९१ श्रावकधर्म—उज्ज्वलकुमारी २—००
३७९२ श्रमणसंस्कृति की रूपरेखा ५—००
३७९३ शीलदूत ०—२५
३७९४ षड्दर्शन समुच्चय—हरिभद्रसूरि ३—००
३७९५ श्रीमद्राजचन्द्रजी हिन्दी १०—००
३७९६ षष्टि शतक—नेमिचन्द्र भंडारी ५—००
३७९७ संगीतिका—मुनि श्री अमरचन्द जी ५—००
३७९८ सत्यदर्शन—मुनि अमरचन्द २—५०
३७९९ सम्मति तर्क प्रकरण—सिद्धसेनदिवाकर ५ भाग
३८०० सभाष्यरत्नमंजूषा—छंदज्ञान २—००
३८०१ समराइच्चकहा—पढ़मोभवो ३—००
३८०२ समराइच्च कहा (छन्द) ४—००
३८०३ सर्वार्थ सिद्धि—(पूज्यपाद) भा० टी० १२—००
३८०४ स्थविरावली चरित्र—परिशिष्टपर्व ५—००
३८०५ स्याद्वादमंजरी—मल्लिषेण—श्री हेमचन्द्र कृत टीका सहित श्रीध्रुव संपादित ११—००
३८०६ सामायिकसूत्र—भा० टी० मुनि अमरचन्द ३—५०
३८०७ सिद्धिविनिश्चय टीका दो भाग ३०—००
३८०८ सिद्धहेमदीपिका—प्रकाश २—६२
३८०९ सिद्धहेमशब्दानुशासन ०—३१
३८१० सिद्धहेमशब्दानुशासन—श्री हेमचन्द्राचार्य सटीक
३८११ सिद्धान्तसमीक्षा ४—००
३८१२ सुबोधवाणी प्रकाश—मु० न्यायविजयजी १०—००
३८१३ हरिवंशपुराण—अपभ्रंश २—७५
३८१४ हिन्दी जैन साहित्य परिशीलन ५—००
३८१५ हिन्दी जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास २—००
३८१६ त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र हिन्दी पर्व १—२ ५—००

बौध

३८१७ अंगुत्तरनिकाय—पालित्रिपिटक नं० १५—१६—१७ तीन भाग में सादा १५—०० कपड़े की जिल्द २२—५०
३८१८ अट्ठसालिनी—डा० बापत संपादित ८—००
३८१९ अभिधर्मकोश—(वसुबन्धु) परिशिष्ट १२—००
३८२० अभिधर्म कोश—आचार्य नरेन्द्रदेव ४—००
३८२१ अभिधर्मामृत—(घोषक) सटिप्पण ६—००
३८२२ अभिधर्म समुच्चय—(असंग) विशदविवेचना ०—२५
३८२३ अम्बट्ठसुत्त (वर्णव्यवस्था) ६—००
३८२४ बालीद्वीप ग्रन्थ
३८२५ बोधिचर्यावतार—(शांतिदेव) हि.टी. सहित १०—००
३८२६ बौधधर्मदर्शन—आचार्य नरेन्द्रदेव हिन्दी १७—००
३८२७ बौध धर्म के २५०० वर्ष—डा० बापत ३—००
३८२८ बौधचर्याविधि—पाली—हिन्दी ००—३७
३८२९ बौध संस्कृति— १२—००
३८३० बौधचर्यापद्धति—हिन्दी १—५०
३८३१ बौधदर्शनमीमांसा—हिन्दी प्रो० बलदेव ६—००
३८३२ बौधशिशुबोध—हिन्दी ००—२५
३८३३ बौद्धागमार्थ संग्रह—डा० पी० एल० वैद्य २०—००
३८३४ बुध-अर्चना-पद्य ०—१९
३८३५ बुद्ध और बौध साधक—भरतसिंह उपा० १—५०
३८३६ बुधयोगी के पत्र—भि. धर्मरक्षित १—००
३८३७ बुधवचन—हिन्दी टीका सहित ०—७५
३८३८ बुद्धचरित—(अश्वघोष) हिन्दी अनुवाद सहित प्रथम भाग ३—०० दूसरा केवल हिंदी १—५०
३८३९ बुद्ध चरितावली—जीवन सम्बन्धी ५६ चित्रों का पद्यों में परिचय कुमारी विद्याकृत ०—७५
३८४० बुद्धचरितावली—ग्राम्यगीतों में १—५०
३८४१ बुधचर्या—जीवनी तथा उपदेश हिन्दी ८—००
३८४२ बुद्धकीर्तन—सरल हिन्दी पद्य २—५०
३८४३ बुद्धवाणी—हिन्दी—वियोगी हरि १—००
३८४४ भगवान-बुध-आनंद कौसल्यायन ०—१३
३८४५ भगवान बुद्ध की शिक्षा ०—३७
३८४६ भगवान हमारे गौतम बुद्ध ०—०६
३८४७ चर्यापिटक—डा० विमलाचरण सं० ५—००
३८४८ चर्यापिटक—हिन्दी टीका सहित १—२५
३८४९ चर्यागीति कोष— १५—००
३८५० चित्तविशुद्धिप्रकरण—(आर्यदेव) ५—००
३८५१ चुल्लवग्ग—पालित्रिपिटक नं० २ सादा ५—०० कपड़े की जिल्द ७—५०
३८५२ धम्मपद—शब्द दोहा चौपाई
३८५३ धम्मपद—पालि संस्कृत छाया—हिन्दी अनु० ०—३६ १—५०
३८५४ धम्मपद—पाली—हिन्दी अनुवाद कथाओं सहित २—५०
३८५५ धम्मपद—विनोबाजी २—००
३८५६ धम्मसंगणि (अभिधम्मपिटक) ५—००
३८५७ धर्मोत्तरप्रदीप—न्यायबिन्दु टीका ७—५०
३८५८ दीघनिकाय—पालि त्रिपिटक नं०४,५—६ तीन भाग में सादा १५—०० कपड़े की जिल्द २२—५०
५—००
३८५९ दीघनिकाय—पाली देवनागरी दो भाग ८—००
३८६० दीघनिकाय—हिन्दी अनुवाद १—८७
३८६१ हेतुतत्वोपदेश—(जितारि) बौद्धन्याय
३८६२ हेतुबिन्दु टीका—(अर्चट)
३८६३ इतिवुत्तक, सुत्तनिपात—पालि त्रिपिटक नं. १९ सादा ५—०० कपड़े की जिल्द ७—५०
३८६४ इति वुतक—हिन्दी अनुवाद सहित ०—७५
३८६५ जातिभेद और बुद्ध-हिन्दी ०—५०
३८६६ जातककथा—हिन्दी अनुवाद २—५०
३८६७ जातक-कथा—संदोह पाली ३—००
३८६८ जातकट्ठ कथा—प्रथम भाग ९—००
३८६९ जातक—आनंद कौसल्यायन हिन्दी ६ भाग ५—००
३८७० जातकमाला—आर्यशूरकृत अमरीका ३१—५०
३८७१ जातकमाला—पं० बटुकनाथ २—२५
३८७२ जातकमाला—हिन्दी टीका सहित (१—२०) ३—००
३८७३ जातक संग्रह—पाली—शब्दकोश १—२५
३८७४ करतलरत्न—आचार्य भावविवेक ५—००
३८७५ कुशीनगर का इतिहास—हिन्दी २—५०
३८७६ खुद्दक पाठ— ०—२५
३८७७ खुद्दक पाठ, धम्मपद, उदान-पालि त्रिपिटक नं० १८ सादा ५—०० कपड़े की जिल्द ७—५०
३८७७क गिलगित बौध ग्रन्थावली—फोटो में एक भाग २५—००
३८७८ राष्ट्रपालपरिपृच्छा १२—००
३८७९ मध्यान्त विभागसूत्र—भाष्यटीका—(स्थिरमति) भाष्य व्याख्यासहित १२—००
३८८० मज्झिमनिकाय—पालित्रिपिटक नं. ९—१०—११ तीन भागमें सादा १५—०० कपड़े की जिल्द २२—५०
३८८१ मज्झिमनिकाय— हिन्दी अनुवाद ८—००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

३८८३ महावग्गो—पाली (दो भाग) ७-००
३८८४ महावग्ग—पालित्रिपिटक नं० १ सादा ५-००
कपड़े की जिल्द ७-५०
३८८५ महायान—हिन्दी—भ. शान्ति भिक्षु ३-००
३८८६ महायानविंशक ५-००
३८८७ मिलिन्द पञ्हो—पाली ३-००
३८८८ मिलिन्द पञ्हो—पाली तथा सरल हिन्दी अनुवाद सहित भिक्षु जगदीश कश्यपजी कृत यन्त्रस्थ
३८८९ नारायण परिपृच्छा—संस्कृत-तिब्बती ०-७५
३८९० नवदीक्षित बौद्ध—राहुल जी ०-१५
३८९१ निदानकथा—हिन्दी अनुवाद सहित १-२५
३८९२ निदानकथा—जातकट्ठकथा—पाली १-६२
३८९३ निष्पन्न योगावलि—अभयाकर गुप्त १०-००
३८९४ नैरात्म परिपृच्छा २-००
३८९५ न्यायबिन्दु—धर्मकीर्ति—न्यायबिन्दु टीका भा. टी. ५-००
३८९६ न्यायबिन्दु टीका—धर्मोत्तराचार्य टीका २-२५
३८९७ परिवार—पालित्रिपिटक नं० ८ सादा ५-०० कपड़े की जिल्द ७-५०
३८९८ पुञ्जमधु— २-५०
३८९९ पाचित्तिय—पालित्रिपिटक नं० ७ सादा ५-०० कपड़े की जिल्द ७-५०
३९०० पालि—धातुरूपावली— १-२५
३९०१ पाराजिक—पालित्रिपिटक नं० ३ सादा ५-०० कपड़े की जिल्द ७-५०
३९०२ पालि जातकावली—संस्कृत छाया सहित २-५०
३९०३ पालिप्रबोध—आद्यादत्त ठाकुर २-२५
३९०४ पालि प्राकृत व्याकरण—म० म० मथुराप्रसाद १-५०
३९०५ पालिसद्दरूपावली ०-२५
३९०६ पालीसाहित्यका इतिहास-भरतसिंह उपाध्याय १०-००
३९०७ पालिव्याकरण—भिक्षुधर्मरक्षित २-२५
३९०८ पातिमोक्ख (भिक्खु तथा भिक्खुणी) १-००
३९०९ पातिमोक्खसूत्र—भूलसर्वास्तिवाद ५-००
३९१० प्रज्ञापारमिता (अष्ट साहस्रिका, अभिसमयालंकारालोक व्याख्या) १२-००
३९११ पालि त्रिपिटक—देवनागरी संस्करण—भारतवर्ष में होगा। २० भाग छप चुके हैं। हर एक भाग सादा की कीमत ५-००, सजिल्द ७-५०
३९१२ प्रमाण वार्तिक भाष्य अथवा वार्तिकालंकार—(प्रज्ञाकरगुप्त) सव्याख्यया अनुक्रमणिका सहित १७-००
३९१३ प्रमाणवार्तिक—स्वोपज्ञवृत्ति कर्णगोमि टीका ३०-००
३९१४ पूर्णिमा—बुद्ध श्रद्धांजलियां ०-६२
३९१५ रत्नकीर्ति निबन्धावली ४-००
३९१६ रत्नगोत्र विभाग—महायानोत्तर तंत्र ८-००
३९१७ सच्चसंगहो—हिन्दी १-२५
३९१८ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र १८-००
३९१९ सौगत सिद्धान्तसार संग्रह हिन्दी ५-००
३९२० शार्दूल कर्णावदान १०-००
३९२१ संयुक्तनिकाय—पालित्रिपिटक नं० १२, १३, १४ सादा १५-०० कपड़े की जिल्द २२-५०
३९२२ संयुक्त निकाय—(सुत्त पिटक) दो भाग हिन्दी १३-००
३९२३ शतसाहस्रिका प्रज्ञापारमिता १४-२५
३९२४ शिक्षा समुच्चय—शान्तिदेव विरचित ३५-००
३९२५ श्रद्धा के फूल—कु० विद्यावती ०-३७
३९२६ सुत्त निपात —हिन्दी टीका सहित २-५०
३९२७ सुत्तनिपात—हिन्दी टीका (प्रथम) १-००
३९२८ सुत्तनिपात—मराठी टीका डा० बापत ५-००
३९२९ तर्कभाषा—(मोक्षाकर गुप्त) सटीक ४-००
३९३० तथागत का प्रथम उपदेश ०-२५
३९३१ तेलकटाहगाथा—हिन्दी टीका सहित ०-३७
३९३२ थेरगाथा—हिन्दी पद्यान्तर ३-००
३९३३ थेरगाथ—पालीमूल १-५०
३९३४ उदान—हिन्दी अनुवाद १-२५
३९३५ उत्तर प्रदेश में बौद्धधर्म का विकास हिन्दी ६-००
३९३६ वार्तिकालंकार—(प्रज्ञाकरगुप्त) ५-००
३९३७ विमान वत्थु, पेतावत्थु-पालित्रिपिटक नं० २० सादा ५-०० कपड़े की जिल्द ७-५०
३९३८ विग्रह व्यावर्तनी—नागार्जुन स्वोपज्ञवृत्ति ५-००
३९३९ विनयपिटक—हिन्दी अनुवाद ८-००
३९४० विशुद्धिमग्ग—बुद्धघोष चरित्र विरचित १६-००
३९४१ विशुद्धिमार्ग—हिन्दी अनुवाद दो भाग १८-००
३९४३ ज्ञानप्रस्थान शास्त्र १२-००

ज्योतिष

३९४४ अंकविद्या—गोपेशकुमार ओझा हिन्दी ३-००
३९४५ अंगविज्जा—प्राकृत भाषा में—मु. पुण्यविजय जीसं. २१-०
३९४६ अर्घ मार्तण्ड—राज ज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभ जी कुराली वालों की अभूत पूर्ण पुस्तक दूसरा संस्करण विशेष परिवर्द्धित-यन्त्रस्थ
३९४७ अर्घ प्रकाश—भा० टी० ०-६०
३९४८ अखण्ड त्रिकालज्ञ ज्योतिष—भगवानदास भाषा ४-००
३९४९ अखण्ड भाग्योदयदर्पण „ „ ३-००
३९५० अयनांशनिर्णय—केतकर
३९५१ अवकहडाचक्र—भाषा टीका ०-३१
३९५२ अहिबल चक्र—हिन्दी टीका सहित ०-२५
३९५३ आर्यभटीयम्—सभाष्य ३ भाग ७-००
३९५४ आर्यभटीयम् परमादीश्वराचार्य विरचित भटदीपिका व्याख्या डा० कर्ण सम्पादित १८-००
३९५५ आर्यासिद्धान्त—(भटोत्पल) सटीक ०-५०
३९५६ आशुबोध ज्योतिष ०-३७
३९५७ एक दिन में ज्योतिषी—दो भाग २-००
३९५८ उपपत्तीन्दुशेखर—शिरोमणि परिष्कार १०-००
३९५९ करणकुतूहल —(भास्कराचार्य) सव्याख्या १-२५
३९६० करण कौस्तुभ—कृष्णदैवज्ञ ०-७५
३९६१ करणपद्धति—मूल ०-३१
३९६२ करण प्रकाश—ब्रह्मदेव विरचित १-५०
३९६३ करलक्षण—सामुद्रिक—भाषाटीका ०-७५
३९६४ कर्मविपाक—नक्षत्र चरणगत भा० टी० ३-००
३९६५ कुटकारशिरोमणि—(देवराज) सं. व्याख्या १-००
३९६६ कुण्डलीदर्पण—हिन्दी—अनूपमिश्र १-५०
३९६७ कुण्डलीशिक्षक—पं० हरदेव ०-३७
३९६८ केतकी ग्रहगणित—केतकर परिमलभाष्य १५-००
३९६९ केवल ज्ञानप्रश्न चूडामणि—हिन्दी टीका सहित ४-००
३९७० केरल तत्त्व प्रश्नसंग्रह—भाषाटीका ०-५०
३९७१ केरल प्रश्न संग्रह—भाषा टीका ०-५०
३९७२ केरलीयजातक—हिन्दी ०-५०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

३९७३	केरलीय प्रश्नरत्न–भाषा टीका	१–००
३९७४	केशवीय जातक पद्धति–भाषा टीका	२–७५
३९७५	खण्डखाद्यक–	२–५०
३९७६	खण्डखाद्यक–(ब्रह्मगुप्ताचार्य) टीका	३–५०
३९७७	खटे कौतुक–भाषाटीका	०–१९
३९७८	गणक तरंगिणी–सुधाकर द्विवेदी	१–७५
३९७९	गणित का इतिहास–सुधाकर द्विवेदी हिन्दी	२–५०
३९८०	गणित सिद्धान्तकौमुदी	०–८७
३९८१	गणितकौमुदी–दो भाग में भाषा	२–००
३९८२	गणित सोपान	०–३७
३९८३	गणितकौमुदी–(नारायणपंडित) दोभाग संस्कृत	
३९८४	गणित चन्द्रिका–पं० सीताराम	०–६२
३९८५	गणित तिलक–(श्रीपति) सं० व्याख्या	६–००
३९८६	गणित सरित्सेतु	
३९८७	गर्गजातक–भाषाटीका	०–३१
३९८८	गर्गमनोरमा–भाषाटीका	०–१९, ०–२२
३९८९	गोल प्रकाश–चन्द्रशेखर झा	१–२५
३९९०	गोलतत्त्व प्रकाशिका–भाषाटीका	१–७५
३९९१	गोलीयरेखागणित–मीठालाल	१–२५
३९९२	गोलपरिभाषा–पं० सीताराम	०–२५
३९९३	गोलदीपिका—श्री परमेश्वर	
३९९४	गोलद्वयप्रश्न विमर्श–केतकर	१०–००
३९९५	गोलपरिभाषा–सविवृत्ति	०–१९
३९९६	गोलाध्याय–भास्कराचार्य दो भाग पूना	८–७५
३९९७	गौरीजातक–भाषा टीका	०–२५
३९९८	ग्रहगणित–केतकर	८–००
३९९९	ग्रहगोचर–भाषाटीका	०–२५
४०००	ग्रहगणिताध्याय–भास्कराचार्य दो भाग	६–५०
४००१	ग्रहणफलदर्पण–भा० टी०	१–००
४००२	ग्रहचार निबन्धन–श्रीहरिदत्त	१–१२
४००३	ग्रहफलदर्पण–भाषा टीका	१–५०
४००४	ग्रहरत्नभूषण–रामेश्वरदत्त	०–६२
४००५	ग्रहलाघव–सं० टीका तथा हिन्दी टीका	३–५०
४००६	ग्रहलाघव–भा० टी० बम्बई	३–५०
४००७	ग्रहलाघवकरण–मल्लारी–विश्वनाथ–सुधाकरी	५–०
४००८	ग्रहलाघवसारिणी	१–७५
४००९	गृहनिर्माण व्यवस्था	०–६२
४०१०	चन्द्रवाक्यानि–वररुचि	३–००
४०११	चन्द्रसारिणी–डा० गोरखप्रसाद	२–००
४०१२	चमत्कार चिन्तामणि–भाषाटीका	०–५०
४०१३	चमत्कार ज्योतिष	१–२५
४०१४	चलनकलन–चतुर्थाध्याय तक सं०	१–५०
४०१५	चलनकलन (१–६) सुधाकर द्विवेदी	२–५०
४०१६	चलनकलन प्रश्नोत्तर विवरण–अच्युतानन्द	०–७५
४०१७	चलराशिकलन–सुधाकर द्विवेदी २ भाग	०–००
४०१८	चापीयत्रिकोणगणित–अच्युतानन्द	१–५०
४०१९	जयपाहुड–निमित्त शास्त्र–प्राकृत	६–६०
४०२०	जन्मपत्री के फार्म (तीन का सेट)	०–१९
४०२१	जन्मपत्रदीपक–भाषा टीका	१–२५
४०२२	जन्मपत्रव्यवस्था–भाषा टीका	०–७५
४०२३	जन्मांग नक्षत्रदीपिका–लक्ष्मीनारायण	१–५०
४०२४	जातकतत्त्वम्–भाषा टीका	यंत्रस्थ
४०२५	जातक चन्द्रिका–भाषाटीका	१–१५
४०२६	जातक पद्धति–भाषा टीका	२–७५
४०२७	जातक पारिजात–संस्कृत तथा हिंदी टीका	१२–००
४०२८	जातक पद्धति उदाहरण–डा० चौधरी	१०–००
४०२९	जातक शिरोमणि–भाषा टीका	३–५०
४०३०	जातक संग्रह–भाषा टीका	५–००
४०३१	जातक सारदीप–(नृसिंहदैवज्ञ) सविवृत्ति	१५–७५
४०३२	जातकाभरण–भाषाटीका काशी	४–००
४०३३	जातकाभरण–भाषाटीका बम्बई	
४०३४	जातकालंकार–संस्कृत तथा हिन्दी टीका	१–०, ०–७५
४०३५	जातकालंकार–भा० टी०	०–६५
४०३६	जैमिनीय पद्यामृत–पं० दुर्गाप्रसाद	१–५०
४०३७	जैमिनीय सूत्र–संस्कृत हिन्दी टीका	२–००
४०३८	जैमिनीय सूत्र भाषा टीका	१–२५
४०३९	ज्योतिर्गणितम्–केतकर विरचित	३०–००
४०४०	ज्योतिनिबन्ध–शिवराज विरचित	६–००
४०४१	ज्योतिषकल्पद्रुम–हिन्दी	२–६२
४०४२	ज्योतिषचन्द्रार्क–संस्कृत टीका	३–००
४०४३	ज्योतिष चमत्कार–पं० जगदीशचन्द्र	३–६३
४०४४	ज्योतिषतत्त्वविवेक निबन्ध–भाषा टीका	२–५०
४०४५	ज्योतिष प्रबोध–गणेशदत्त	०–३७
४०४६	ज्योतिषतत्त्वसुधार्णव–भाषा टीका	७–००
४०४७	ज्योतिषरत्नमाला—	१२–००
४०४८	ज्योतिष वेदांगम्–सुधाकर द्विवेदी	२–००
४०४९	ज्योतिष विज्ञान–विशुद्धानन्द	६–००
४०५०	ज्योतिषश्यामसंग्रह–भाषा टीका	६–००
४०५१	ज्योतिषसर्वसंग्रह–भाषा टीका	२–००
४०५२	ज्योतिषसार–भाषा टीका बम्बई	३–००
४०५३	ज्योतिष सिद्धान्तसंग्रह–संस्कृत	३–००
४०५४	ज्योतिषशास्त्रसोपान–पं० सीताराम	२–००
४०५५	ज्योतिस्तत्त्व–भाषा टीका दो भाग	५०–००
४०५६	तत्त्वप्रदीप जातक : भाषा टीका	०–२५
४०५७	ताजिकनीलकंठी–सं० हि० पं० सीताराम	३–५०
४०५८	ताजिकनीलकंठी–जलदगंजना सं० तथा हिन्दी	४–५०
४०५९	ताजिकनीलकंठी–सं० टीका खुला	२–००
४०६०	ताजिक नीलकंठी–भाषा टीका बम्बई	३–५०
४०६१	ताजिक भूषण–भाषा टीका	१–००
४०६२	ताजिक नीलकंठी–संस्कृत टीका	२–२५
४०६३	ताजिक संग्रह–भाषा टीका	०–७५
४०६४	तिथि चिन्तामणि–भाषा टीका	०–५०
४०६५	तथिचिन्तामणि–गणेशदैवज्ञ	०–८७
४०६६	तिलविचार–हिन्दी	१–००
४०६७	तेजीमन्दी विचार–हिन्दी रतलाम	१–५०
४०६८	त्रिकोणमिति	६–००
४०६९	दयाविलास–महन्तदयाराम जी	४–००
४०७०	दशाफलदर्पण–संस्कृत	४–००
४०७१	दीपिका–शुद्धदीपिका–भाषा टीका	३–५०
४०७२	दीर्घवृत्तलक्षण–सुधाकर द्विवेदी	१–५०
४०७३	देवकेरलम्–चन्द्रकलानाडी–३ भाग में	२३–७५
४०७४	दैवज्ञ कामधेनु–संस्कृत	४–५०
४०७५	दैवज्ञवल्लभ–भाषा टीका	००–८८
४०७६	दैवज्ञविनोद–पं० मणीराम	५–२५
४०७७	दैवज्ञाभरणम्–संस्कृत	६–२५
४०७८	द्वात्रिंशद्योगावलीजातक–भा० टी०	०–१२
४०७९	धराचक्र–भाषा टीका	०–३९
४०८०	धराभ्रम–सुधाकर द्विवेदी	०–५०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४०८१ नरपतिजयचर्या—सं० टीका
४०८२ नरपतिजयचर्या—स्वरोदय २—००
४०८३ नष्टजन्मांगदीपिका—पंचांगदीपिका ०—३१
४०८४ नारदीय संहिता—मूल १—००
४०८५ नारदीयसंहिता —भाषाटीका ३—५०
४०८६ नन्दिदत्त पंचविंशतिका— ०—१३
४०८७ नेपच्युन—हिन्दी ०—५०
४०८८ पंचांग—अयनांश—निर्णय २—००
४०८९ पंचस्वरा—सुबोधिनी सं० १—७५
४०९० पंचांगपद्धति—बाबूनंदन ०—३७
४०९१ पंचांगमंजूषा—भाषा टीका ०—७५
४०९२ पंचांगविज्ञान—भाषाटीका ०—५०
४०९३ पंचांगभास्कर २—००
४०९४ पल्लीमार्गप्रदीपिका—वर्षदीपक भाषाटीका २—२५
४०९५ पल्लीमार्गप्रदीपिका वर्षदीपकांच—महादेव शर्मा ३—००
४०९६ पद्मकोश—भाषा टीका ०—३७
४०९७ परवलयक्षेत्र—मुरलीधर ०—५०
४०९८ परमसिद्धान्त ज्योतिष—प्रेमवल्लभ ७—००
४०९९ परीक्षा चक्रावलीभाषाटीका ०—५०
४१०० परीक्षा विचार—हिन्दी ०—१२
४१०१ पल्लीपतनकारिका ०—१२
४१०२ प्रतिभाबोधक—सटीक ०—७५
४१०३ प्रश्नचण्डेश्वर—भाषा टीका १—२५
४१०४ प्रश्नज्ञानप्रदीप—भाषा टीका १—५०
४१०५ प्रश्नभूषण—संस्कृत हिन्दी टीका ०—७५
४१०६ प्रश्नवैष्णव—मूल ०—५०
४१०७ प्रश्न वैष्णव—भाषा टीका १—५०
४१०८ प्रश्न शिरोमणि—भाषा टीका ३—५०
४१०९ प्रश्नांकचूड़ामणि ०—१२
४११० प्रस्तारचक्र—भाषाटीका ०—१२
४१११ प्राथमिक अङ्कगणित—रामबहोरी १—००
४११२ फलित संग्रह—रामयत्न भाषाटीका १—००
४११३ बालबोध ज्योतिष—भाषा टीका १—५०
४११४ बालबोध ज्योतिषसार संग्रह भा० टी० १—२५
४११५ बीजगणित—संस्कृत—हिन्दी टीका ८—००
४११६ बीजवासना—सोपपत्तिक बीजगणित ०—६२

४११८ बृहज्जातक—भाषा टीका ३—००
४११९ बृहज्जातक—दशाध्यायी सटीक १—५०
४१२० बृहज्ज्योतिषसार—भाषा टीका ४—५०
४१२१ बृहत्पाराशरहोरा—हिन्दी टीका काशी १५—००
४१२२ बृहत्पाराशरहोरा—बम्बई १२—००
४१२३ बृहत्संहिता—वाराहीसंहिता मूल ३—००
४१२४ बृहत्संहिता भाषा टीका काशी ९—००
४१२५ बृहदसिद्धखेटी—राजाराम १—७५
४१२६ बृहत्—होडाचक्रविवरण—भाषाटीका ०—५०
४१२७ बृहदवकहडाचक्र भा० टी० बंबई ०—८७
४१२८ बृहदवनजातक—भाषाटीका २—५०
४१२९ बृहदयावनोक्त स्त्रीजातक —भाषाटीका ०—८७
४१३० भद्रबाहुसंहिता—मूलमात्र ५—७५
४१३१ भविष्यफलभास्कर—भाषाटीका ३—५०
४१३२ भाग्यरहस्य—हिन्दी १—५०
४१३३ भाग्यप्रबोध ०—५०
४१३४ भाग्यरेखा निरूपण ०—५०
४१३५ भारतीय कुण्डली विज्ञान—हिन्दी ४—५०
४१३६ भारतीय ज्योतिष—नेमिचन्द्र हिन्दी ६—००
४१३७ भारतीय ज्योतिष—(दीक्षित) मराठी का हिन्दी अनुवाद ८—००
४१३८ भारतीय ज्योतिष का इतिहास—गोरखप्रसाद ४—००
४१३९ भार्गवनाडिका—संस्कृत ६—००
४१४० भावकुतूहल—भाषाटीका ३—००
४१४१ भावप्रकाश—भाषा टीका १—२५
४१४२ भावफलाध्याय—भाषा टीका ०—२५
४१४३ भास्करीयबीजगणित—नवांकुरव्याख्या ३—००
४१४४ भुवनदीपक—सं० हिन्दी टीका ०—७५
४१४५ भूमण्डलीयसूर्यग्रहगणित—केतकर ३—००
४१४६ भृगुसंहिता—मथुरा का छापा इसकी सत्यता असत्यता पर हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं ५०—००
४१४७ भृगुसंहिता—योगावली खंड संस्कृत ५—२५
४१४८ भृगुसंहिता पद्धति—नवग्रह जन्मांग कुण्डली नवीन रचना १०—००
४१४९ मकरन्दसारणी— ाषा टीका २—००

४१५० मनुष्यजातक—सव्याख्या २—००
४१५१ मयूरचित्रकम्—वराहमिहिर ०—५०
४१५२ महाभास्करीयम् (भास्कराचार्य) सव्याख्या २—००
४१५३ महाभास्करीयम्—गोविन्दभास्य, परमेश्वरव्या' ११—०
४१५४ मेघमाला—भड्डली ०—५०
४१५५ मेलापक व्यवस्था ०—१९
४१५६ मानसागरी—भाषा टीका काशी ७—००
४१५७ मानसागरी—भाषा टीका बम्बई ६—००
४१५८ मुहूर्तकल्पद्रुम—विट्ठलदीक्षित ०—७५
४१५९ मुहूर्त गणपति—भाषा टीका ५—००
४१६० मुहूर्त चिन्तामणि—प्रमिताक्षरा सं० टी० ३—००
४१६१ मुहूर्त चिन्तामणि—पीयूषधारा ५—००
४१६२ मुहूर्त चिन्तामणि—भाषा टीका काशी ३—००
४१६३ मुहूर्तचिन्तामणि—भाषा टीका बम्बई २—५०
४१६४ मुहूर्तदीपक—सव्याख्या ०—५०
४१६५ मुहूर्त प्रकाश—भाषा टीका ३—५०
४१६६ मुहूर्तमंजरी—भाषा टीका ०—६२
४१६७ मुहूर्तमार्तण्ड—भाषा टीका ३—००
४१६८ मुहूर्तसंग्रहदर्पण—भाषा टीका ३—५०
४१६९ यन्त्रचिन्तामणि—भा० टी० १—३७
४१७० यन्त्रराज—यन्त्रशिरोमणि (महेन्द्र) २—००
४१७१ याजुषज्योतिष—सुधाकर द्विवेदी २—५०
४१७२ योगायुर्दाय ०—२५
४१७३ योगिनी जातक—भाषा टीका ०—३१
४१७४ रणदीपक—(कुमारगणक) ०—३१
४१७५ रत्नगर्भाचक्र—भाषाटीका ०—१९
४१७६ रत्नदीपिका—लक्ष्मीनारायण १—००
४१७७ रत्नदीपिका—रत्नशास्त्र प्राचीन २—२५
४१७८ रत्नोद्योत भाषाटीका ०—७५
४१७९ रमलगुलजार—केवल हिन्दी ४—००
४१८० रमलनवरत्न—भाषा टीका २—००
४१८१ रमलमार्तण्ड—हिन्दी ०—६३
४१८२ रमलरहस्य ९—००
४१८३ रमलशास्त्र—बचाणप्रसाद २—००
४१८४ रविसिद्धान्तमञ्जरी—मथुरानाथ शर्मा ०—७५
४१८५ राशिगोलस्फुटनीति— २—००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४१८६	रेखागणित—११—१२ अध्याय	०—३५
४१८७	रेखागणित १—४ अध्याय	१—७५
४१८८	रेखागणित—५—६ अध्याय	०—३७
४१८९	रेखागणित (जगन्नाथ) दो भाग में	२१—००
४१९०	लग्नचन्द्रिका—भाषाटीका	२—००
४१९१	लग्नप्रदीप—प्रथम भाग	०—३१
४१९२	लग्नरत्नाकर—भाषाटीका	०—३७
४१९३	लग्नवाराही—भाषा टीका	०—१२
४१९४	लघुजातक—सं० हिन्दी टीका	१—५०
४१९५	लघुजातक—भाषा टीका	१—००
४१९६	लघुपाराशरी—मध्य पाराशरी भा० टी०	१—२५
४१९७	लघुपाराशरी—भा० टी०	०—५६
४१९८	लघुभास्करीय—(भास्कराचार्य) सटीक	२—००
४१९९	लघुभास्करीय—शंकर विवरण	१—८८
४२००	लघुमानस—परमेश्वर व्याख्या	०—८७
४२०१	लघुसंग्रह—भाषाटीका	१—५०
४२०२	लीलावती—विवरण व्याख्या दो भाग	४—७५
४२०३	लीलावती—भा० टी० पं० सीताराम	३—००
४२०४	व्यापार चमत्कार—रतिराम	५—००
४२०५	वनमाला—भाषा टीका	०—२५
४२०६	वरवधूनक्षत्र मेलापक—श्रीनिवास	३—२५
४२०७	वर्षदीपकपत्रीमार्गप्रदीपिका भाषाटीका	३—००
४२०८	वर्षफलचन्द्रिका	२—००
४२०९	वर्षपद्धति—मूलमात्र	२—००
४२१०	वर्षयोगसमूह—भा० टी०	१—२५
४२११	वाशिष्ठसंहिता (वृद्धवासिष्ठ)	३—५०
४२१२	वाराहीसंहिता (बृहत्संहिता) भा० टी०	९—००
४२१३	वास्तवचन्द्रश‍ृङ्गोन्नतिसाधनम्	१—५०
४२१४	वास्तुमुक्तावली—भाष टीका	०—७५
४२१५	वास्तुरत्नावली—सं० हिं० दोनों टीका	२—५०
४२१६	वास्तुराजवल्लभ—भाषा टीका	२—५०
४२१७	वास्तुसारिणी—भाषाटीका	३—००
४२१८	विद्यामाधवीयम्	
४२१९	विमण्डलवक्रविचार	२—००
४२२०	विवाहपटल	०—५०
४२२१	विवाहवृन्दावन—सं० हिं० टीका	२—५०
४२२२	विश्वकर्मप्रकाश—भाषा टीका	२—५०
४२२३	विश्वकर्मविद्याप्रकाश	०—६२
४२२४	विश्वहितम्—मथुरानाथ	१—५०
४२२५	विंशोत्तरीदशा—रामनरेश प्रसाद	१—५०
४२२६	वेदाङ्गज्योतिषम्—सव्याख्या	१—५०
४२२७	वृन्दावली—भा० टी०	०—५०
४२२८	वैजयन्ती पंचांगगणित—केतकर	१—००
४२२९	शकुनविचार	०—२५
४२३०	शनिविचार हिन्दी	०—७५
४२३१	शम्भुहोराप्रकाश—भाषाटीका	४—५०
४२३२	शिवजातक—भाषाटीका	०—१२
४२३३	शिशुबोध—भाषाटीका	०—६२
४२३४	शीघ्रबोध—भाषाटीका	१—००
४२३५	शुद्धिदीपिका—भाषा टीका	०—५०
४२३६	षट्पंचाशिका —सं० हिं० टीका	०—५०
४२३७	संग्रामविजयोदय—संस्कृत	२—५०
४२३८	सन्ततिसमयविचार—हिन्दी	१—००
४२३९	संवत्सरनिर्णय	०—८८
४२४०	संकेतनिधि—सं०हिन्दी टीका	३—५०
४२४१	समरसार—सं० हिन्दी टीका	१—७५
४२४२	सरलत्रिकोणमिति—बापूदेव	४—५०
४२४३	सरलत्रिकोणमिति—बलदेवमिश्र	३—००
४२४४	सरल रेखागणित—१—२ अध्याय	१—००
४२४५	सर्वतोभद्रचक्र—अर्घकाण्ड	३—००
४२४६	सर्वतोभद्रचक्र—भाषा टीका	१—५०
४२४७	सर्वार्थचिन्तामणि—भाषा टीका	९—००
४२४८	सर्वसंग्रह—भाषा टीका	४—५०
४२४९	सामुद्रिक दर्पण—हिन्दी	१—००
४२५०	सामुद्रिकदीपिका—हिन्दी दो भाग	१२—६२
४२५१	सामुद्रिकरहस्य—भाषाटीका	३—००
४२५२	सामुद्रिकशास्त्र भाषा टीका	३—००
४२५३	सारावली—भाषा टीका सफेद	९—००
४२५४	सारावली—भाषाटीका रफ	८—००
४२५५	सिद्धान्ततत्त्वविवेक—कमलाकर	५—००
४२५६	सिद्धान्तदैवज्ञविनोद—सं० हिन्दी टीका	५—२५
४२५७	सिद्धान्त शिरोमणि—मध्यमाधिकारान्त	३—००
४२५८	सिद्धान्तशिरोमणि—(भास्कराचार्य) वासनाभाष्य	६—००
४२५९	सिद्धान्त शिरोमणि—प्रभा-वासना प्रथमभाग	५—००
४२६०	सिद्धान्तशिरोमणि—ग्रहगणिताध्याय—वासनाभाष्य—शिरोमणिप्रकाश दो भाग	६—५०
४२६१	सिद्धान्त शिरोमणि—गोलाध्याय-वासना भाष्य—मरीचि व्याख्या दो भाग	८—३७
४२६२	सिद्धान्तशेखर—(श्रीपति) सव्याख्या दो भाग	२४—३७
४२६३	सुगम ज्योतिष प्रवेशिका—गोपेश्वर	५—००
४२६४	सिद्धान्त सार्वभौम—मुनीश्वर दो भाग	२—५०
४२६५	सुलभविषय विज्ञान	०—६२
४२६६	सूर्यसारिणी—डा० गोरखप्रसाद	२—००
४२६७	सूर्यसिद्धान्त—तत्त्वामृत भाष्य	४—००
४२६८	सूर्यसिद्धान्त सं० हिं० टीका	५—००
४२६९	सारायंत्राद्यतिथिगणितम् —केतकर	१—००
४२७०	स्त्रीजातक—हिन्दी टीका बड़ा	२—५०
४२७१	स्त्रीजातक—भा० टी० काशी	१—२५
४२७२	हर्षल—हिन्दी	०—५०
४२७३	हस्तपरीक्षा—हिन्दी पामिस्ट्री रतलाम	६—५०
४२७४	हस्तरेखाविज्ञान	३—००
४२७५	हस्तरेखाविज्ञान—	८—००
४२७६	हस्तसामुद्रिक शास्त्र	६—००
४२७७	हायनचन्द्रोदय भा० टी०	०—५०
४२७८	हायनफलरत्न—भाषा टीका	०—५०
४२७९	हायनरत्न—मूलतुला पत्रा	३—५०
४२८०	हायनबोध—भाषाटीका	०—६२
४२८१	हायनभास्कर—भाषा टीका	१—००
४२८२	हिन्दु गणितशास्त्र का इतिहास	३—००
४२८३	होराशास्त्र—वाहमिहिर—सटीक	२५—००
४२८४	हनुमान ज्योतिष—भाषा टीका	०—६२
४२८५	हस्तरेखाविज्ञान	८—००

चिकित्सा

४२८६	अंग्रेजी हिन्दी मेडिकल डिक्शनरी भटाचार्य	१०—००
४२८७	अंड तथा अंत्रवृद्धिचिकित्सा—कृष्णप्रसाद	०—३७
४२८८	अगदतन्त्र—रमानाथ द्विवेदी	०—३५
४२८९	अगदतन्त्र—प्रथम भाग महाविष	३—००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

...—द्वितीय भाग उपलब्ध ५—००
४२९१ अचार चटनी और मुरब्बा— २—..
२९२ अचूक चिकित्सा के प्रयोग—जानकीशरण २—५०
२९३ अजीर्णतिमिरभास्कर—हिन्दी ०—६२
९४ अजीर्णमंजरी—हिन्दी टीका ०—४४
९५ अञ्जननिदान—मूल ०—१९
९६ „ „ हिन्दी टीका १—००
९७ „ „ १—१२
९८ अनुभूतयोगावली १—३०
९९ अनुपान कल्पतरु—पं० जगन्नाथप्रसाद २—५०
०० अनुपानदर्पण—हिन्दी टीका २—२५
०१ अनुपानविधि—श्यामसुन्दर ०—५०
०२ अनुभूतयोग—दो भाग में २—००
०३ अनुभूतयोगचिन्तामणि—दो भाग डा. गणपतिसिंह ८—२५
३०४ अनुभूतयोग प्रकाश—गणपति सिंह ६—२५
३०५ अपना इलाज आप करो—हिन्दी ०—६२
३०६ अपूर्वचिकित्सा विधान—महेन्द्रनाथ ६—००
३०७ अभिधान मंजरी—भिषगार्य संस्कृत २—००
४३०८ अभिनव नेत्र-चिकित्सा विज्ञान—नव्य नेत्र चिकित्सा सहित—ले० पं० विश्वनाथ द्विवेदी शास्त्री १०—००
४३०९ अभिनव प्रसूति तंत्र—दामोदर गौड़ संस्कृत १२—००
४३१० अभिनव प्राकृतिक चिकित्सा—मुखर्जी ४—००
४३११ अभिनव बूटीदर्पण—(सचित्र) १०—००
४३१२ अभिनव विकृति विज्ञान—रघुवीर २२—००
४३१३ अ० शरीर क्रियाविज्ञान—प्रियव्रतशर्मा ७—५०
..१४ अभिनव शव छेद विज्ञान—हिन्दी १५—००
अमरविद्या—गणपति सिंह ३—००
अमृतसागर बम्बई ९—००
..७ अमृत सागर—लखनऊ ७—००
अरिष्ठक (रीठा) गुणविधान ०—५०
..९ अर्क (आक) गुण विधान—हिन्दी १—५०
..० अर्क प्रकाश—रावण १—७५
..१ अर्क प्रकाश—रावण भाषा टीका ३—००
..२२ अर्शरोग चिकित्सा—हिन्दी ०—५०
..२३ अश्व शास्त्रम्—संस्कृत (नकुल) १२—००
..२४ अष्टांगसंग्रह—निदान स्थान सटीक ३—००

४३२५ अष्टांगसंग्रह—शारीरस्थान सटीक
४३२६ अष्टांग संग्रह—(सूत्र स्थान) छांगाणी भा. टी. ८—००
४३२७ अष्टांग संग्रह—अत्रिदेव प्रथम भाग हिन्दी ११—००
४३२८ अष्टांगहृदय—गुजराती अनुवाद [१२—००
४३२९ अष्टांगहृदय—मूल मोटा अक्षर ५—००
४३३० अश्व वैद्यक (जयदत्त) संस्कृत १—८७
४३३१ अष्टांगहृदय—वाक्यप्रदीपिका सं० व्या० प्रथमभाग ३—०
४३३२ अष्टांगहृदय—उत्तरस्थान—केरली संस्कृत व्याख्या ७—०
४३३३ अष्टांगहृदय—उत्तरतन्त्र—शिवदाससेन सं० व्या. ४—००
४३३४ अष्टांगहृदय—सूत्रस्थान शिवशर्माकृत हि० टी० ७—००
४३३५ अष्टांगहृदय—मूलगुटका काशी ४—००
४३३६ अष्टांगहृदय—हिन्दी टीका सहित १५—००
४३३७ अष्टांगहृदय—दासपंडितसंस्कृत व्या. दो भागमें १०—००
४३३८ आत्मसर्वस्व ५—२५
४३३९ आदर्श आहार—डा० एस० सी० दास १—००
४३४० आदर्श भोजन—श्रीकेदारनाथ १—२५
४३४१ आदियास्त्र अर्थात रतिशास्त्र— १—५०
४३४२ आधुनिक एलोपैथिक गाइड—बंसल ८—५०
४३४३ आधुनिक चिकित्सा विज्ञान—आशानंद दो भाग २०—००
४३४४ आनन्द कंद—मूल संस्कृत ११—५०
४३४५ आपके बच्चे की खुराक—सुरेन्द्रनाथ ३—३७
४३४६ आम्रगण विधान—डा० गणपति सिंह १—२५
४३४७ आयर्वेदिक घरेलू चिकित्सा १—२५
४३४८ आयुर्वेद चिन्तामणि—(निघण्टु) ४—५०
४३४९ आयुर्वेदादर्श संग्रह—दामोदर शर्मा २—००
४३५० आयुर्वेद परिचय—स्वा० शिवानन्द ०—९४
४३५१ आयुर्वेद प्रकाश—(१म भाग) प्रो० सोमदेवकृत सं० तथा हिन्दी टीका ५—००
४३५२ आयुर्वेद प्रश्नोत्तरी ३—००
४३५३ आयुवद प्रदीप—राजकुमार द्विवेदी १०—००
४३५४ आयुर्वेदमहोदधि (अन्नपानविधि) सुषेणकृतसं० १—३७
४३५५ आयुर्वेद में मूत्रोत्पत्ति की कल्पना ०—१२
४३५६ आयुर्वेद चिकित्सा सागर ३—००
४३५७ आयुर्वेद पत्रों का इतिहास ०—४४
४३५८ आयुर्वेद विज्ञान—डा० कमला प्रसाद ३—५०
४३५९ आयुर्वेद विज्ञानसार—हिंदी टीका १—५०

आयुर्वेद शास्त्र का इतिहास—वैद्य सूरमचन्द ८—००
४३६१ आयुर्वेदिक सफल सूचीवेध इन्जेक्शन्स—ले० वैद्य प्रकाशचन्द्रजैन—देशी जड़ी बूटियों तथा चूने वाले द्रव्यों प्रवाल, मुक्ता प्रभृति पर एक अनुसन्धानात्मक कार्य ५—००
४३६२ आयुर्वेदीय औषधि विज्ञान २—००
४३६३ आयुर्वेद का इतिहास—अत्रिदेव ३—५०
४३६४ आयुर्वेदसार संग्रह हिन्दी—चिकित्सा, औषध निर्माण, अनुपान, पथ्यापथ्य ७—००
४३६५ आसव विज्ञान—ले० हरिशरनानन्द १—५०
४३६६ आयुर्वेद सुषेणसंहिता—हिन्दी टीका २—००
४३६७ आयुर्वेद सूत्र—योगानन्द कृत स० व्या० २—७५
४३६८ आदर्श एलोपैथिक मैटेरिया मेडिका ११—००
४३६९ आयुर्वेदीय हितोपदेश— २—५०
४३७० आरोग्य विज्ञान—डा० लक्ष्मीनारायण २—००
४३७१ आयुर्वेद सूत्र—पं० रामप्रसाद कृत ०—८७
४३७२ आयुर्वेदिक इंजेक्शन चिकित्सा—श्यामसुन्दर २—५०
४३७३ आयुर्वेद औषधगुणधर्मशास्त्र—भस्में गंगाधर १—५०
४३७४ आयुर्वेदीय औषध संशोधन—धामणकर १—००
४३७५ आयुर्वेदीय क्रिया शरीर—रणजीतराय ११—००
४३७६ आयुर्वेदीय पदार्थ विज्ञान—रणजीतराय ६—००
४३७७ आयुर्वेदीय परिभाषा— १—२५
४३७८ आयुर्वेदीय परिभाषा—हिन्दी ०—६२
४३७९ आयुर्वेदीय व्याधिविज्ञान—वै० यादवजी ८—५०
४३८० आयुर्वेदीय विश्वकोष—दूसरा तथा ३रा भाग ३०—००
४३८१ आर्गेनन—हिन्दी, डा० सुरेशप्रसाद ४—००
४३८२ आर्गेनन—(भटाचार्य) होमियो ४—००
४३८३ आरोग्य की कुंजी—महात्मा गांधी ०—५०
४३८४ आरोग्य चिन्तामणि—दामोदर कृत मूल ९—००
४३८५ आरोग्यशास्त्र—भावे २—००
४३८६ आरोग्यप्रकाश—श्रीरामनारायण २—२५
४३८७ आरोग्य मन्दिर—हिन्दी १—००
४३८८ आरोग्य लेखांजलि—केदारनाथ १—००
४३८९ आरोग्य विधान—जगन्नाथप्रसाद ७—००
४३९० आरोग्य शिक्षा—पं० मुरलीधर हिंदी ०—७५
४३९१ आसन चिकित्सा—डा० हरिकिशन ४—५०

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४१८६	रेखागणित–११–१२ अध्याय	०–७५
४१८७	रेखागणित १–४ अध्याय	१–७५
४१८८	रेखागणित–५–६ अध्याय	०–३७
४१८९	रेखागणित (जगन्नाथ) दो भाग में	२१–००
४१९०	लग्नचन्द्रिका–भाषाटीका	२–००
४१९१	लग्नप्रदीप–प्रथम भाग	०–३१
४१९२	लग्नरत्नाकर–भाषाटीका	०–३७
४१९३	लग्नवाराही–भाषा टीका	०–१२
४१९४	लघुजातक–सं०हिन्दी टीका	१–५०
४१९५	लघुजातक–भाषा टीका	१–००
४१९६	लघुपाराशरी–मध्य पाराशरी भा० टी०	१–२५
४१९७	लघुपाराशरी–भा० टी०	०–५६
४१९८	लघुभास्करीय–(भास्कराचार्य) सटीक	२–००
४१९९	लघुभास्करीय–शंकर विवरण	१–८८
४२००	लघुमानस–परमेश्वर व्याख्या	०–८७
४२०१	लघुसंग्रह–भाषाटीका	१–५०
४२०२	लीलावती–विवरण व्याख्या दो भाग	४–७५
४२०३	लीलावती–भा० टी० पं० सीताराम	३–००
४२०४	व्यापार चमत्कार–रतिराम	५–००
४२०५	वनमाला–भाषा टीका	०–२५
४२०६	वरवधूनक्षत्र मेलापक–श्रीनिवास	३–२५
४२०७	वर्षदीपकपत्रीमार्गप्रदीपिका भाषाटीका	३–००
४२०८	वर्षफलचन्द्रिका	२–००
४२०९	वर्षपद्धति–मूलमात्र	२–००
४२१०	वर्षयोगसमूह–भा० टी०	१–२५
४२११	वाशिष्ठसंहिता (वृद्धवासिष्ठ)	३–५०
४२१२	वाराहीसंहिता (बृहत्संहिता) भा० टी०	९–००
४२१३	वास्तवचन्द्रश्रृङ्गोन्नतिसाधनम्	१–५०
४२१४	वास्तुमुक्तावली–भाष टीका	०–७५
४२१५	वास्तुरत्नावली–सं० हिं० दोनों टीका	२–५०
४२१६	वास्तुराजवल्लभ–भाषा टीका	२–५०
४२१७	वास्तुसारिणी–भाषाटीका	३–००
४२१८	विद्यामाधवीयम्	
४२१९	विमण्डलचक्रविचार	२–००
४२२०	विवाहपटल	०–५०
४२२१	विवाहवृन्दावन–सं० हिं० टीका	२–५०
४२२२	विश्वकर्मप्रकाश–भाषा टीका	२–५०
४२२३	विश्वकर्मविद्याप्रकाश	०–६२
४२२४	विश्वहितम्–मथुरानाथ	१–५०
४२२५	विंशोत्तरीदशा–रामनरेश प्रसाद	१–५०
४२२६	वेदाङ्गज्योतिषम्–सव्याख्या	१–५०
४२२७	वृन्दावली–भा० टी०	०–५०
४२२८	वैजयन्ती पंचांगगणित–केतकर	१–००
४२२९	शकुनविचार	०–२५
४२३०	शनिविचार हिन्दी	०–७५
४२३१	शम्भुहोराप्रकाश–भाषाटीका	४–५०
४२३२	शिवजातक–भाषाटीका	०–१२
४२३३	शिशुबोध–भाषाटीका	०–६२
४२३४	शीघ्रबोध–भाषाटीका	१–००
४२३५	शुद्धिदीपिका–भाषा टीका	०–५०
४२३६	षटपंचाशिका –सं० हि० टीका	०–५०
४२३७	संग्रामविजयोदय–संस्कृत	२–५०
४२३८	सन्ततिसमयविचार–हिन्दी	१–००
४२३९	संवत्सरनिर्णय	०–८८
४२४०	संकेतनिधि–सं०हिन्दी टीका	३–५०
४२४१	समरसार–सं० हिन्दी टीका	१–७५
४२४२	सरलत्रिकोणमिति–बापूदेव	४–५०
४२४३	सरलत्रिकोणमिति–बलदेवमिश्र	३–००
४२४४	सरल रेखागणित–१–२ अध्याय	१–००
४२४५	सर्वतोभद्रचक्र–अर्घकाण्ड	३–००
४२४६	सर्वतोभद्रचक्र–भाषा टीका	१–५०
४२४७	सर्वार्थचिन्तामणि–भाषा टीका	६–००
४२४८	सर्वसंग्रह–भाषा टीका	४–५०
४२४९	सामुद्रिक दर्पण–हिन्दी	१–००
४२५०	सामुद्रिक दीपिका–हिन्दी दो भाग	१२–६२
४२५१	सामुद्रिकरहस्य–भाषाटीका	३–००
४२५२	सामुद्रिकशास्त्र भाषा टीका	३–००
४२५३	सारावली–भाषा टीका सफेद	९–००
४२५४	सारावली–भाषाटीका रफ	८–००
४२५५	सिद्धान्ततत्त्वविवेक–कमलाकर	५–००
४२५६	सिद्धान्तदैवज्ञविनोद–सं० हिन्दी टीका	५–२५
४२५७	सिद्धान्त शिरोमणि–मध्यमाधिकारान्त	३–००
४२५८	सिद्धान्तशिरोमणि–(भास्कराचार्य) वासनाभाष्य	६–
४२५९	सिद्धान्त शिरोमणि–प्रभा–वासना प्रथमभाग	५–०
४२६०	सिद्धान्तशिरोमणि–ग्रहगणिताध्याय–वासनाभाष्य–शिरोमणिप्रकाश दो भाग	६–५
४२६१	सिद्धान्त शिरोमणि–गोलाध्याय–वासना भाष्य–मरीचि व्याख्या दो भाग	८–
४२६२	सिद्धान्तशेखर–(श्रीपति) सव्याख्या दो भाग	२४–
४२६३	सुगम ज्योतिष प्रवेशिका–गोपेश्वर	५–०
४२६४	सिद्धान्त सार्वभौम–मुनीश्वर दो भाग	२–५
४२६५	सुलभविषय विज्ञान	०–६
४२६६	सूर्यसारिणी–डा० गोरखप्रसाद	२–०
४२६७	सूर्यसिद्धान्त–तत्त्वामृत भाष्य	४–०
४२६८	सूर्यसिद्धान्त सं० हिं० टीका	५–०
४२६९	सारार्थत्राहतिथिगणितम् –केतकर	१–०
४२७०	स्त्रीजातक–हिन्दी टीका बड़ा	२–५
४२७१	स्त्रीजातक–भा० टी० काशी	१–२
४२७२	हर्षल–हिन्दी	०–५
४२७३	हस्तपरीक्षा–हिन्दी पामिस्ट्री रतलाम	६–५
४२७४	हस्तरेखाविज्ञान	३–००
४२७५	हस्तरेखाविज्ञान–	८–००
४२७६	हस्तसामुद्रिक शास्त्र	६–००
४२७७	हायनचन्द्रोदय भा० टी०	०–५०
४२७८	हायनफलरत्न–भाषा टीका	०–५०
४२७९	हायनरत्न–मूलखुला पत्रा	३–५०
४२८०	हायनबोध–भाषाटीका	०–६
४२८१	हायनभास्कर–भाषा टीका	१–००
४२८२	हिन्दु गणितशास्त्र का इतिहास	३–००
४२८३	होराशास्त्र–वाहमिहिर–सटीक	२५–००
४२८४	हनुमान ज्योतिष–भाषा टीका	०–६
४२८५	हस्तरेखाविज्ञान	८–००

चिकित्सा

४२८६	अंग्रेजी हिन्दी मेडिकल डिक्शनरी भटाचार्य	१०–००
४२८७	अंड तथा अंत्रवृद्धिचिकित्सा–कृष्णप्रसाद	०–३७
४२८८	अगदतन्त्र–रमानाथ द्विवेदी	०–७५
४२८९	अगदतन्त्र–प्रथम भाग महाविष	३–००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अगदतन्त्र–द्वितीय भाग उपविष ५–०० ... आयुर्वेद शास्त्र का इतिहास–वैद्य सूरमचन्द ८–००

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४२९०	अगदतन्त्र–द्वितीय भाग उपविष	५–००
४२९१	अचार चटनी और मुरब्बा–	२–५०
४२९२	अचूक चिकित्सा के प्रयोग–जानकीशरण	२–५०
४२९३	अजीर्णतिमिरभास्कर–हिन्दी	०–६२
४२९४	अजीर्णमंजरी–हिन्दी टीका	०–४४
४२९५	अञ्जननिदान–मूल	०–१९
४२९६	,, ,, हिन्दी टीका	१–००
४२९७	,, ,,	१–१२
४२९८	अनुभूतयोगावली	१–३०
४२९९	अनुपान कल्पतरु–पं० जगन्नाथप्रसाद	२–५०
४३००	अनुपानदर्पण–हिन्दी टीका	२–२५
४३०१	अनुपानविधि–श्यामसुन्दर	०–५०
४३०२	अनुभूतयोग–दो भाग में	२–००
४३०३	अनुभूतयोगचिन्तामणि–दो भाग डा. गणपतिसिंह	८–२५
४३०४	अनुभूतयोग प्रकाश–गणपति सिंह	६–२५
४३०५	अपना इलाज आप करो–हिन्दी	०–६२
४३०६	अपूर्वचिकित्सा विधान–महेन्द्रनाथ	६–००
४३०७	अभिधान मंजरी–भिषगार्य संस्कृत	२–००
४३०८	अभिनव नेत्र-चिकित्सा विज्ञान–नव्य नेत्र चिकित्सा सहित–ले० पं० विश्वनाथ द्विवेदी शास्त्री	१०–००
४३०९	अभिनव प्रसूति तंत्र–दामोदर गौड़ संस्कृत	१२–००
४३१०	अभिनव प्राकृतिक चिकित्सा–मुखर्जी	४–००
४३११	अभिनव बूटीदर्पण–(सचित्र)	१०–००
४३१२	अभिनव विकृति विज्ञान–रघुवीर	२२–००
४३१३	अ० शरीर क्रियाविज्ञान–प्रियव्रतशर्मा	७–५०
…१४	अभिनव शवच्छेद विज्ञान–हिन्दी	१५–००
	अमरविद्या–गणपति सिंह	३–००
	अमृतसागर बम्बई	९–००
…७	अमृत सागर–लखनऊ	७–००
	अरिष्ठक (रीठा) गुणविधान	०–५०
…९	अर्क (आक) गुण विधान–हिन्दी	१–५०
…०	अर्क प्रकाश–रावण	१–७५
	अर्क प्रकाश–रावण भाषा टीका	३–००
…२	अर्शरोग चिकित्सा–हिन्दी	०–५०
…३	अश्व शास्त्रम्–संस्कृत (नकुल)	१२–००
…२४	अष्टांगसंग्रह–निदान स्थान सटीक	३–००
४३२५	अष्टांगसंग्रह–शरीरस्थान सटीक	[illegible]
४३२६	अष्टांग संग्रह–(सूत्र स्थान) छांगाणी भा. टी.	८–००
४३२७	अष्टांग संग्रह–अत्रिदेव प्रथम भाग हिन्दी	११–००
४३२८	अष्टांगहृदय–गुजराती अनुवाद	१२–००
४३२९	अष्टांगहृदय–मूल मोटा अक्षर	५–००
४३३०	अश्व वैद्यक (जयदत्त) संस्कृत	१–८७
४३३१	अष्टांगहृदय–वाक्यप्रदीपिका सं० व्या० प्रथमभाग	३–०
४३३२	अष्टांगहृदय–उत्तरस्थान–केरली संस्कृत व्याख्या	७–०
४३३३	अष्टांगहृदय–उत्तरतन्त्र–शिवदाससेन सं० व्या.	४–००
४३३४	अष्टांगहृदय–सूत्रस्थान शिवशर्माकृत हि० टी०	७–००
४३३५	अष्टांगहृदय–मूलगुटका काशी	४–००
४३३६	अष्टांगहृदय–हिन्दी टीका सहित	१५–००
४३३७	अष्टांगहृदय–दासपंडितसंस्कृत व्या. दो भागमें	१०–००
४३३८	आत्मसर्वस्व	५–२५
४३३९	आदर्श आहार–डा० एस० सी० दास	१–००
४३४०	आदर्श भोजन–श्रीकेदारनाथ	१–२५
४३४१	आदिशास्त्र अर्थात रतिशास्त्र–	१–५०
४३४२	आधुनिक एलोपैथिक गाइड–बंसल	८–५०
४३४३	आधुनिक चिकित्सा विज्ञान–आशानंद दो भाग	२०–००
४३४४	आनद कंद–मूल संस्कृत	११–५०
४३४५	आपके बच्चे की खुराक–सुरेन्द्रनाथ	३–३७
४३४६	आभ्रगण विधान–डा० गणपति सिंह	१–२५
४३४७	आयुर्वेदिक घरेलू चिकित्सा	१–२५
४३४८	आयुर्वेद चिन्तामणि–(निघण्टु)	४–५०
४३४९	आयुर्वेदादर्श संग्रह—दामोदर शर्मा	२–००
४३५०	आयुर्वेद परिचय–स्वा० शिवानन्द	०–९४
४३५१	आयुर्वेद प्रकाश–(१म भाग) प्रो० सोमदेवकृत सं० तथा हिन्दी टीका	५–००
४३५२	आयुर्वेद प्रश्नोत्तरी	३–००
४३५३	आयुवद प्रदीप–राजकुमार द्विवेदी	१०–००
४३५४	आयुर्वेदमहोदधि (अन्नपानविधि) सुषेणकृतसं०	१–३७
४३५५	आयुर्वेद में मूत्रोत्पत्ति की कल्पना	०–१२
४३५६	आयुर्वेद चिकित्सा सागर	३–००
४३५७	आयुर्वेद पत्रों का इतिहास	०–४४
४३५८	आयुर्वेद विज्ञान–डा० कमला प्रसाद	३–५०
४३५९	आयुर्वेद विज्ञानसार–हिंदी टीका	१–५०
४३६०	आयुर्वेद शास्त्र का इतिहास–वैद्य सूरमचन्द	८–००
४३६१	आयुर्वेदिक सफल सूचीवेध इन्जेक्शन्स— ले० वैद्य प्रकाशचन्द्रजैन–देशी जड़ी बूटियों तथा चूने वाले द्रव्यों प्रवाल, मुक्ता प्रभृति पर एक अनुसन्धानात्मक कार्य	५–००
४३६२	आयुर्वेदीय औषधि विज्ञान	२–००
४३६३	आयुर्वेद का इतिहास–अत्रिदेव	३–५०
४३६४	आयुर्वेदसार संग्रह हिन्दी–चिकित्सा, औषध निर्माण, अनुपान, पथ्यापथ्य	७–००
४३६५	आसव विज्ञान–ले० हरिशरनानन्द	१–५०
४३६६	आयुर्वेद सुषेणसंहिता–हिन्दी टीका	२–००
४३६७	आयुर्वेद सूत्र–योगानन्द कृत स० व्या०	२–७५
४३६८	आदर्श एलोपैथिक मैटेरिया मेडिका	११–००
४३६९	आयुर्वेदीय हितोपदेश–	२–५०
४३७०	आरोग्य विज्ञान–डा० लक्ष्मीनारायण	२–००
४३७१	आयुर्वेद सूत्र–पं० रामप्रसाद कृत	०–८७
४३७२	आयुर्वेदिक इंजेक्शन चिकित्सा–श्यामसुन्दर	२–५०
४३७३	आयुर्वेद औषधगुणधर्मशास्त्र–भस्में गंगाधर	१–५०
४३७४	आयुर्वेदीय औषध संशोधन–धामणकर	१–००
४३७५	आयुर्वेदीय क्रिया शरीर–रणजीतराय	११–००
४३७६	आयुर्वेदीय पदार्थ विज्ञान–रणजीतराय	६–००
४३७७	आयुर्वेदीय परिभाषा–	१–२५
४३७८	आयुर्वेदीय परिभाषा–हिन्दी	०–६२
४३७९	आयुर्वेदीय व्याधिविज्ञान–वै० यादवजी	८–५०
४३८०	आयुर्वेदीय विश्वकोष–दूसरा तथा ३रा भाग	३०–००
४३८१	आर्गेनन–हिन्दी, डा० सुरेशप्रसाद	४–००
४३८२	आर्गेनन–(भटाचार्य) होमियो	४–००
४३८३	आरोग्य की कुंजी–महात्मा गांधी	०–५०
४३८४	आरोग्य चिन्तामणि–दामोदर कृत मूल	९–००
४३८५	आरोग्यशास्त्र–भावे	२–००
४३८६	आरोग्यप्रकाश–श्रीरामनारायण	२–२५
४३८७	आरोग्य मन्दिर–हिन्दी	१–००
४३८८	आरोग्य लेखांजलि–केदारनाथ	१–००
४३८९	आरोग्य विधान–जगन्नाथप्रसाद	७–००
४३९०	आरोग्य शिक्षा–पं० मुरलीधर हिंदी	०–७५
४३९१	आसन चिकित्सा–डा० हरिकिशन	४–५०

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४१८६	रेखागणित–११–१२ अध्याय	०–७५
४१८७	रेखागणित १–४ अध्याय	१–७५
४१८८	रेखागणित–५–६ अध्याय	०–३७
४१८९	रेखागणित (जगन्नाथ) दो भाग में	२१–००
४१९०	लग्नचन्द्रिका–भाषाटीका	२–००
४१९१	लग्नप्रदीप–प्रथम भाग	०–३१
४१९२	लग्नरत्नाकर–भाषाटीका	०–३७
४१९३	लग्नवाराही–भाषा टीका	०–१२
४१९४	लघुजातक–सं०हिन्दी टीका	१–५०
४१९५	लघुजातक–भाषा टीका	१–००
४१९६	लघुपाराशरी–मध्य पाराशरी भा० टी०	१–२५
४१९७	लघुपाराशरी–भा० टी०	०–५६
४१९८	लघुभास्करीय–(भास्कराचार्य) सटीक	२–००
४१९९	लघुभास्करीय–शंकर विवरण	१–८८
४२००	लघुमानस–परमेश्वर व्याख्या	०–८७
४२०१	लघुसंग्रह–भाषाटीका	१–५०
४२०२	लीलावती–विवरण व्याख्या दो भाग	४–७५
४२०३	लीलावती–भा० टी० पं० सीताराम	३–००
४२०४	व्यापार चमत्कार–रतिराम	५–००
४२०५	वनमाला–भाषा टीका	०–२५
४२०६	वरवधूनक्षत्र मेलापक–श्रीनिवास	३–२५
४२०७	वर्षदीपकपत्रीमार्गप्रदीपिका भाषाटीका	३–००
४२०८	वर्षफलचन्द्रिका	२–००
४२०९	वर्षपद्धति–मूलमात्र	२–००
४२१०	वर्षयोगसमूह–भा० टी०	१–२५
४२११	वासिष्ठसंहिता (वृद्धवासिष्ठ)	३–५०
४२१२	वाराहीसंहिता (बृहत्संहिता) भा० टी०	९–००
४२१३	वास्तवचन्द्रशृङ्गोन्नतिसाधनम्	१–५०
४२१४	वास्तुमुक्तावली–भाष टीका	०–७५
४२१५	वास्तुरत्नावली–सं० हिं० दोनों टीका	२–५०
४२१६	वास्तुराजवल्लभ–भाषा टीका	२–५०
४२१७	वास्तुसारिणी–भाषाटीका	३–००
४२१८	विद्यामाधवीयम्	
४२१९	विमण्डलवक्रविचार	२–००
४२२०	विवाहपटल	०–५०
४२२१	विवाहवृन्दावन–सं० हिं० टीका	२–५०
४२२२	विश्वकर्मप्रकाश–भाषा टीका	२–५०
४२२३	विश्वकर्मविद्याप्रकाश	०–६२
४२२४	विश्वहितम्–मथुरानाथ	१–५०
४२२५	विंशोत्तरीदशा–रामनरेश प्रसाद	१–५०
४२२६	वेदाङ्गज्योतिषम्–सव्याख्या	१–५०
४२२७	वृन्दावली–भा० टी०	०–५०
४२२८	वैजयन्ती पंचांगगणित–केतकर	१–००
४२२९	शकुनविचार	०–२५
४२३०	शनिविचार हिन्दी	०–७५
४२३१	शम्भुहोराप्रकाश–भाषाटीका	४–५०
४२३२	शिवजातक–भाषाटीका	०–१२
४२३३	शिशुबोध–भाषाटीका	०–६२
४२३४	शीघ्रबोध–भाषाटीका	१–००
४२३५	शुद्धिदीपिका–भाषा टीका	०–५०
४२३६	षट्पंचाशिका –सं० हिं० टीका	०–५०
४२३७	संग्रामविजयोदय–संस्कृत	२–५०
४२३८	सन्ततिसमयविचार–हिन्दी	१–००
४२३९	संवत्सरनिर्णय	०–८८
४२४०	संकेतनिधि–सं०हिन्दी टीका	३–५०
४२४१	समरसार–सं० हिन्दी टीका	१–७५
४२४२	सरलत्रिकोणमिति–बापूदेव	४–५०
४२४३	सरलत्रिकोणमिति–बलदेवमिश्र	३–००
४२४४	सरल रेखागणित–१–२ अध्याय	१–००
४२४५	सर्वतोभद्रचक्र–अर्घकाण्ड	३–००
४२४६	सर्वतोभद्रचक्र–भाषा टीका	१–५०
४२४७	सर्वार्थचिन्तामणि–भाषा टीका	६–००
४२४८	सर्वसंग्रह–भाषा टीका	४–५०
४२४९	सामुद्रिक दर्पण–हिन्दी	१–००
४२५०	सामुद्रिक दीपिका–हिन्दी दो भाग	१२–६२
४२५१	सामुद्रिकरहस्य–भाषाटीका	३–००
४२५२	सामुद्रिकशास्त्र भाषा टीका	३–००
४२५३	सारावली–भाषा टीका सफेद	९–००
४२५४	सारावली–भाषाटीका रफ	८–००
४२५५	सिद्धान्ततत्त्वविवेक–कमलाकर	५–००
४२५६	सिद्धान्तदैवज्ञविनोद–सं० हिन्दी टीका	५–२५
४२५७	सिद्धान्त शिरोमणि–मध्यमाधिकारान्त	३–००
४२५८	सिद्धान्तशिरोमणि–(भास्कराचार्य) वासनाभाष्य	६–००
४२५९	सिद्धान्त शिरोमणि–प्रभा-वासना प्रथमभाग	५–००
४२६०	सिद्धान्तशिरोमणि–ग्रहगणिताध्याय–वासनाभाष्य–शिरोमणिप्रकाश दो भाग	६–५०
४२६१	सिद्धान्त शिरोमणि–गोलाध्याय-वासना भाष्य–मरीचि व्याख्या दो भाग	८–७५
४२६२	सिद्धान्तशेखर–(श्रीपति) सव्याख्या दो भाग	२४–३७
४२६३	सुगम ज्योतिष प्रवेशिका–गोपेश्वर	५–००
४२६४	सिद्धान्त सार्वभौम–मुनीश्वर दो भाग	२–५०
४२६५	सुलभविषय विज्ञान	०–६०
४२६६	सूर्यसारिणी–डा० गोरखप्रसाद	२–००
४२६७	सूर्यसिद्धान्त–तत्त्वामृत भाष्य	४–००
४२६८	सूर्यसिद्धान्त सं० हिं० टीका	५–००
४२६९	सारायंत्राद्यतिथिगणितम् –केतकर	१–००
४२७०	स्त्रीजातक–हिन्दी टीका बड़ा	२–५०
४२७१	स्त्रीजातक–भा० टी० काशी	१–२५
४२७२	हर्षल–हिन्दी	०–५०
४२७३	हस्तपरीक्षा–हिन्दी पामिस्ट्री रतलाम	६–५०
४२७४	हस्तरेखाविज्ञान	३–००
४२७५	हस्तरेखाविज्ञान–	८–००
४२७६	हस्तसामुद्रिक शास्त्र	६–००
४२७७	हायनचन्द्रोदय भा० टी०	०–५०
४२७८	हायनफलरत्न–भाषा टीका	०–५०
४२७९	हायनरत्न–मूलखुला पत्रा	३–५०
४२८०	हायनबोध–भाषाटीका	०–६२
४२८१	हायनभास्कर–भाषा टीका	१–००
४२८२	हिन्दु गणितशास्त्र का इतिहास	३–००
४२८३	होराशास्त्र–वाहमिहिर–सटीक	२५–००
४२८४	हनुमान ज्योतिष–भाषा टीका	०–६२
४२८५	हस्तरेखाविज्ञान	८–००

चिकित्सा

४२८६	अंग्रेजी हिन्दी मेडिकल डिक्शनरी भट्टाचार्य	१०–००
४२८७	अंड तथा अंत्रवृद्धिचिकित्सा–कृष्णप्रसाद	०–३७
४२८८	अगदतन्त्र–रमानाथ द्विवेदी	०–७५
४२८९	अगदतन्त्र–प्रथम भाग महाविष	३–००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

...० अगदतन्त्र–द्वितीय भाग उपविष ५–०० | ४३२९ अष्टांगसंग्रह–शरीरस्थान सटीक ... | ... आयुर्वेद शास्त्र का इतिहास–वैद्य सूरमचन्द ८–००

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४२९० अगदतन्त्र—द्वितीय भाग उपविष ५—००
४२९१ अचार चटनी और मुरब्बा— २—५०
४२९२ अचूक चिकित्सा के प्रयोग—जानकीशरण २—५०
४२९३ अजीर्णतिमिरभास्कर—हिन्दी ०—६२
४२९४ अजीर्णमंजरी—हिन्दी टीका ०—४४
४२९५ अञ्जननिदान—मूल ०—१९
४२९६ " " हिन्दी टीका १—००
४२९७ " " १—१२
४२९८ अनुभूतयोगावली १—३०
४२९९ अनुपान कल्पतरु—पं० जगन्नाथप्रसाद २—५०
४३०० अनुपानदर्पण—हिन्दी टीका २—२५
४३०१ अनुपानविधि—श्यामसुन्दर ०—५०
४३०२ अनुभूतयोग—दो भाग में २—००
४३०३ अनुभूतयोगचिन्तामणि—दो भाग डा. गणपतिसिंह ८—२५
४३०४ अनुभूतयोग प्रकाश—गणपति सिंह ६—२५
४३०५ अपना इलाज आप करो—हिन्दी ०—६२
४३०६ अपूर्वचिकित्सा विधान—महेन्द्रनाथ ६—००
४३०७ अभिधान मंजरी—भिषगार्य संस्कृत २—००
४३०८ अभिनव नेत्र-चिकित्सा विज्ञान—नव्य नेत्र चिकित्सा सहित—ले० पं० विश्वनाथ द्विवेदी शास्त्री १०—००
४३०९ अभिनव प्रसूति तंत्र—दामोदर गौड़ संस्कृत १२—००
४३१० अभिनव प्राकृतिक चिकित्सा—मुखर्जी ४—००
४३११ अभिनव बूटीदर्पण—(सचित्र) १०—००
४३१२ अभिनव विकृति विज्ञान—रघुवीर २२—००
४३१३ अ० शरीर क्रियाविज्ञान—प्रियव्रतशर्मा ७—५०
...४ अभिनव शवच्छेद विज्ञान—हिन्दी १५—००
अमरविद्या—गणपति सिंह ३—००
अमृतसागर बम्बई ९—००
...७ अमृत सागर—लखनऊ ७—००
अरिष्ठक (रीठा) गुणविधान ०—५०
...९ अर्क (आक) गुण विधान—हिन्दी १—५०
...० अर्क प्रकाश—रावण १—७५
...१ अर्क प्रकाश—रावण भाषा टीका ३—००
...२ अर्शरोग चिकित्सा—हिन्दी ०—५०
...२३ अश्व शास्त्रम्—संस्कृत (नकुल) १२—००
...२४ अष्टांगसंग्रह—निदान स्थान सटीक ३—००

४३२५ अष्टांगसंग्रह—शारीरस्थान सटीक ३—००
४३२६ अष्टांग संग्रह—(सूत्र स्थान) छांगाणी भा. टी. ८—००
४३२७ अष्टांग संग्रह—अत्रिदेव प्रथम भाग हिन्दी ११—००
४३२८ अष्टांगहृदय—गुजराती अनुवाद १२—००
४३२९ अष्टांगहृदय—मूल मोटा अक्षर ५—००
४३३० अश्व वैद्यक (जयदत्त) संस्कृत १—८७
४३३१ अष्टांगहृदय—वाक्यप्रदीपिका सं० व्या० प्रथमभाग ३—०
४३३२ अष्टांगहृदय—उत्तरस्थान—केरली संस्कृत व्याख्या ७—०
४३३३ अष्टांगहृदय—उत्तरतन्त्र—शिवदाससेन सं० व्या. ४—००
४३३४ अष्टांगहृदय—सूत्रस्थान शिवशशर्माकृत हि० टी० ७—००
४३३५ अष्टांगहृदय—मूलगुटका काशी ४—००
४३३६ अष्टांगहृदय—हिन्दी टीका सहित १५—००
४३३७ अष्टांगहृदय—दासपंडितसंस्कृत व्या. दो भागमें १०—००
४३३८ आत्मसर्वस्व ५—२५
४३३९ आदर्श आहार—डा० एस० सी० दास १—००
४३४० आदर्श भोजन—श्रीकेदारनाथ १—२५
४३४१ आदिशास्त्र अर्थात रतिशास्त्र— १—५०
४३४२ आधुनिक एलोपैथिक गाइड—बंसल ८—५०
४३४३ आधुनिक चिकित्सा विज्ञान—आशानंद दो भाग २०—००
४३४४ आनंद कंद—मूल संस्कृत ११—५०
४३४५ आपके बच्चे की खुराक—सुरेन्द्रनाथ ३—३७
४३४६ आम्रगुण विधान—डा० गणपति सिंह १—२५
४३४७ आयुर्वेदिक घरेलू चिकित्सा १—२५
४३४८ आयुर्वेद चिन्तामणि—(निघण्टु) ४—५०
४३४९ आयुर्वेदादर्श संग्रह—दामोदर शर्मा २—००
४३५० आयुर्वेद परिचय—स्वा० शिवानन्द ०—९४
४३५१ आयुर्वेद प्रकाश—(१म भाग) प्रो० सोमदेवकृत सं० तथा हिन्दी टीका ५—००
४३५२ आयुर्वेद प्रश्नोत्तरी ३—००
४३५३ आयुर्वेद प्रदीप—राजकुमार द्विवेदी १०—००
४३५४ आयुर्वेदमहोदधि (अन्नपानविधि) सुषेणकृतसं० १—३७
४३५५ आयुर्वेद में मन्त्रोत्पत्ति की कल्पना ०—१२
४३५६ आयुर्वेद चिकित्सा सागर ३—००
४३५७ आयुर्वेद पत्रों का इतिहास ०—४४
४३५८ आयुर्वेद विज्ञान—डा० कमला प्रसाद ३—५०
४३५९ आयुर्वेद विज्ञानसार—हिंदी टीका १—५०

४३६० आयुर्वेद शास्त्र का इतिहास—वैद्य सूरमचन्द ८—००
४३६१ आयुर्वेदिक सफल सूचीवेध इन्जेक्शन्स—ले० वैद्य प्रकाशचन्द्रजैन—देशी जड़ी बूटियों तथा चूने वाले द्रव्यों प्रवाल, मुक्ता प्रभृति पर एक अनुसन्धानात्मक कार्य ५—००
४३६२ आयुर्वेदीय औषधि विज्ञान २—००
४३६३ आयुर्वेद का इतिहास—अत्रिदेव ३—५०
४३६४ आयुर्वेदसार संग्रह हिन्दी—चिकित्सा, औषध निर्माण, अनुपान, पथ्यापथ्य ७—००
४३६५ आसव विज्ञान—ले० हरिशरनानन्द १—५०
४३६६ आयुर्वेद सुषेणसंहिता—हिन्दी टीका २—००
४३६७ आयुर्वेद सूत्र—योगानन्द कृत स० व्या० २—७५
४३६८ आदर्श एलोपैथिक मैटेरिया मेडिका ११—००
४३६९ आयुर्वेदीय हितोपदेश— २—५०
४३७० आरोग्य विज्ञान—डा० लक्ष्मीनारायण २—००
४३७१ आयुर्वेद सूत्र—पं० रामप्रसाद कृत ०—८७
४३७२ आयुर्वेदिक इंजेक्शन चिकित्सा—श्यामसुन्दर २—५०
४३७३ आयुर्वेद औषधगुणधर्मशास्त्र—भस्में गंगाधर १—५०
४३७४ आयुर्वेदीय औषध संशोधन—धामणकर १—००
४३७५ आयुर्वेदीय क्रिया शरीर—रणजीतराय ११—००
४३७६ आयुर्वेदीय पदार्थ विज्ञान—रणजीतराय ६—००
४३७७ आयुर्वेदीय परिभाषा— १—२५
४३७८ आयुर्वेदीय परिभाषा—हिन्दी ०—६२
४३७९ आयुर्वेदीय व्याधिविज्ञान—वै० यादवजी ८—५०
४३८० आयुर्वेदीय विश्वकोष—दूसरा तथा ३रा भाग ३०—००
४३८१ आर्गेनन—हिन्दी, डा० सुरेशप्रसाद ४—००
४३८२ आर्गेनन—(भटाचार्य) होमियो ४—००
४३८३ आरोग्य की कुंजी—महात्मा गांधी ०—५०
४३८४ आरोग्य चिन्तामणि—दामोदर कृत मूल ९—००
४३८५ आरोग्यशास्त्र—भावे २—००
४३८६ आरोग्यप्रकाश—श्रीरामनारायण २—२५
४३८७ आरोग्य मन्दिर—हिन्दी १—००
४३८८ आरोग्य लेखांजलि—केदारनाथ १—००
४३८९ आरोग्य विधान—जगन्नाथप्रसाद ७—००
४३९० आरोग्य शिक्षा—पं० मुरलीधर हिंदी ०—७५
४३९१ आसन चिकित्सा—डा० हरिकिशन ४—५०

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४३९२ आसवारिष्ट संग्रह–हिन्दी १–७५
४३९३ आहार–श्रीरामरक्ष पाठक ५–००
४३९४ आहार–लक्ष्मीनारायण शर्मा १–५०
४३९५ आहारसूत्रावली–केदारनाथ ०–५०
४३९६ औषधियों का भण्डार— १०–००
४३९७ इन्फलुएन्जा—जगन्नाथ ०–५६
४३९८ इंजेक्शन बुक–बंसल २–००
४३९९ इंजेक्शन–डा० सुरेशप्रसाद १०–००
४४०० इंजेक्शन तत्त्व प्रदीप–गणपतिसिंह ५–००
४४०१ इन्द्रायणगुणविधान–हिन्दी ०–५०
४४०२ इलाजुलगुर्बा–यूनानी इलाज ३–५०
४४०३ उपचारपद्धति और पथ्य–रवीन्द्र ०–३७
४४०४ उपदंश चिकित्सा–गणेशदत्त १–००
४४०५ उपदंशविज्ञान–पं० बालकराम १–००
४४०६ उपदंशतिमिरनाशक ०–३०
४४०७ उपवास से लाभ–विट्ठलदास हिंदी १–५०
४४०८ ऊर्ध्वांग चिकित्सा–ले० श्री जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल चार भागों में
४४०९ ऋद्धिखंड व.दिखंड–मूल, नित्यनाथ ४–००
४४१० एकऔषधिगुण विधान–गणपति सिंह १–८७
४४११ एकौषधिचिकित्सा ४–००
४४१२ एनाटमी–(शरीर ज्ञान) राघववल्लभ ५–००
४४१३ एनीमा और कैथेटर–डा० सुरेशप्रसाद ०–३७
४४१४ एलोपैथिक गाईड–ले० डा० रामनाथ वर्मा, ऐसी उपयोगी पुस्तक एलोपैथिक संबन्धी आज तक नहीं छपी। यही कारण है कि यह इसका पांचवा संस्करण भी प्रायः समाप्त है। परिवर्धित संस्करण १०–००
४४१५ एलोपैथिक चिकित्सा–डा० रामनाथ १२–००
४४१६ एलोपैथिक योगरत्नाकर– ,, १३–००
४४१७ एलोपैथिक निघंटु–अर्थात् एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका–ले० डा० रामनाथ वर्मा परिवर्द्धित चतुर्थसंस्करण १२–००
४४१८ एलोपैथिक औषधि संग्रह–ले० पं० जगन्नाथशास्त्री ६–०
४४१९ एलोपैथिक सारसंग्रह–ओंकारदत्त १०–००
४४२० एलोपैथिक चिकित्सा–सुरेशप्रसाद १०–००
४४२१ एलोपैथिक पाकेट गाईड–डा० सुरेश ३–००
४४२२ एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका–शिवदयाल १२–००
४४२३ एलोपैथिक पेटेंट चिकित्सा १–५०
४४२४ एलोपैथिक पेटेन्ट मेडिसिन–अयोध्यानाथ पाठक ३–२५
४४२५ एलोपैथिक पेटेन्ट प्रस्काईबर–रमानाथ ६–०
४४२६ एलोपैथिक प्रैक्टिस–भवानीप्रसाद ७–५०
४४२७ एलोपैथिक मिक्सचर–राजकुमार २–००
४४२८ एलोपैथिक सफल औषधियां ३–००
४४२९ एलेन्स के नोट्स–होमियो–भट्टाचार्य ५–००
४४३० औपसर्गिक रोग–ले० डा० घाणेकर २०–००
४४३१ औषधिक्रिया–भाषाटीका सहित १–१२
४४३२ औषधिगुणधर्म विवेचन–कालेडा बोगला का अजिल्द ३ रु० सजिल्द ४–५०
४४३३ औषध गुणधर्म विज्ञान–हरिशरणानन्द १–००
४४३४ औषधिविज्ञान–ले० धर्मदत्त १–५०
४४३५ कल्पपचक प्रयोग ०–३०
४४३६ कर्णरोग विज्ञान–जगन्नाथ २–००
४४३७ कूपीपक्वरसनिर्माण–हरिशरणानन्द ५–००
४४३८ कफपरीक्षा (कफ की परीक्षा पद्धतियों का वर्णन) डा० रमेशचन्द्र वर्मा कृत १–२५
४४३९ कब्ज–(कारण और निवारण) महावीर प्रसाद पोद्दार सादा १–०० जिल्द २–००
४४४० कब्ज या कोष्ठबद्धता–बालेश्वर सिंह १–००
४४४१ कब्ज से मलावरोध–महेन्द्रनाथ ०–५०
४४४२ कब्जकोष्ठबद्धता— ०–७५
४४४३ कम्पाउण्डर्ज–द्वारकाप्रसाद ३–००
४४४४ कराबादीन कादरी–यूनानी ५–००
४४४५ कराबादीन् शिफाई–यूनानी २–००
४४४६ करिकल्पलता–छन्दोबद्ध, हाथियों की चिकित्सा ३–२५
४४४७ कल्याणकारक–श्री उग्रदित्याचार्य कृत १०–००
४४४८ कषाय कल्पना विज्ञान १–५०
४४४९ कामकला के भेद–चतुरसेन शास्त्री ५–००
४४५० काम कुतूहल–हि० टी० ०–६२
४४५१ कामरत्न–नित्यनाथ हिन्दी टीका ५–००
४४५२ कामविज्ञान–जगन्नाथ प्रसाद १–२५
४४५३ कामसूत्र–वात्स्यायन प्रणीत यशोधरकृत जयमंगला संस्कृत व्याख्या तथा पं० माधवाचार्य कृत मूल तथा संस्कृत टीका दोनों का हिन्दी २०–००
४४५४ कामसूत्र–हिन्दी ३–००
४४५५ क्या खूब डिबिया–(जर्राहीयोग) ०–८७
४४५६ क्लीनिकल मेडिसिन–एम. बी. बी. एस. तथा उसकी समकक्ष श्रेणियों के छात्रों को पूर्वी और पाश्चात्य निदान और चिकित्सा प्रणाली का सम्यक ज्ञान कराने वाला हि० भा० में पहला और अद्वितीय ग्रन्थ अत्रिदेव गुप्त द्वारा, दो हजार पृष्ठ के लगभग संपूर्ण २ भाग २५–००
४४५७ क्वाथमणिमाला–हिन्दी टीका १–५०
४४५८ कालज्ञान–हि० टी० ०–५०
४४५९ काश्यप संहिता–वृहद्जीवकीय १०–००
४४६० काश्यप संहिता–(बृ०) भा० टी० १६–००
४४६१ किशोर रक्षा और ब्रह्मचर्य— ०–५०
४४६२ कीकर गुणविधान– ०–५०
४४६३ कुचुमारतन्त्र–हिन्दी टीका ०–५०
४४६४ कुमारतन्त्र–यामिनीभूषण संस्कृत २–००
४४६५ कुमारतन्त्र हिन्दी टीका ०–३५
४४६६ कुल्लियात–हकीम दलजीतसिंह १–२५
४४६७ कूट मुद्गर ०–२५
४४६८ कैण्ट मेटेरियामेडिका होमियो–भट्टाचार्य २४–००
४४६९ केन्सर रोग चिकित्सा–प्रभाकर चटो० ६–००
४४७० केलिकुतूहल–मूल संस्कृत ले० म. म. पं० मथुरा प्रसाद दीक्षितकृत संस्कृत में २–००
४४७१ केवल भोजन द्वारा स्वास्थ्य १–२५
४४७२ कोकसार–वैद्यक नारायण प्रसाद ५–००
४४७३ कोकसार–आनन्दकृत १–००
४४७४ कौमार नृत्य–रघुवीरशरण ८–००
४४७५ खर्पर जगन्नाथ ०–३०
४४७६ खूबचन्द चिकित्सा–हिन्दी अनुवाद १–५०
४४७७ गंगयतिनिदान–सरल हिन्दी में निदान विषय बड़ी सरलता से समझाया है। हर रोग का निदान दिया है जिसे अनजान भी समझ सकता है ६–००
४४७८ गर्भस्थशिशु की कहानी २–००
४४७९ गर्भसूत्र ३–००
४४८० गृहस्थ सूत्र ६–००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४४८१ गार्हस्थ्य शास्त्र—लक्ष्मीधर २—५०
४४८२ गावों में औषधरत्न—प्रथम २—००
द्वितीय ३—५० तृतीय ४—५०
४४८३ गणविज्ञान—पं० जगन्नाथप्रसाद २—५०
४४८४ गुणों की पिटारी —परमानन्द २—००
४४८५ गुल्मयोगरत्नावली—डा० गणपति वर्मा २—५०
४४८६ गुरुत्रगण विकास—(आरोग्यप्रकाश) १—००
४४८७ गृहवास्तु चिकित्सा—किशोरीदत्त १—००
४४८८ गृहविज्ञान—व्यावहारिक प्रयोग ०—५०
४४८९ ग्रन्थि और ग्रन्थि प्रणाली के रोग—श्रीमहेन्द्रनाथहि. १—००
४४९० ग्राम्य चिकित्सा—श्री केदारनाथ ०—६२
४४९१ ग्रामीणों का स्वास्थ्य—केदारनाथ १—००
४४९२ घर का वैद्य—अमोलकचन्द्र शुक्ल ६—००
४४९३ घर का वैद्य छोटा ०—३५
४४९४ घरेलू चिकित्सा— १—५०
४४९५ घरेलू डाक्टर—चार डाक्टरों द्वारा ४—००
४४९६ घरेलू सस्ती दवायें—हिन्दी ३—००
४४९७ घरेलू इलाज ०—५०
४४९८ घावचिकित्सा—श्यामसुन्दर हो० १—००
४४९९ घृत गुण विधान—हिन्दी ०—५०
४५०० चक्रदत्त—(चक्रपाणिविरचित) शिवदासकृत
संस्कृत टीका सहित ६—२५
४५०१ चक्रदत्त हिन्दी टीका काशी १०—००
४५०२ चक्रदत्त—भा० टी० बम्बई ७—००
४५०३ चर्याचन्द्रोदय—हिन्दी टीका ४—२५
४५०४ चरक संहिता का निर्माणकाल १—५०
४५०५ चरकसंहिता—अग्निवेश मूल काशी ६—००
४५०६ चरक—मूल बंबई ७—००
४५०७ चरकसंहिता—आयुर्वेद दीपिका तथा जल्पकल्पतरु
संस्कृत टीका सहित ३ भागों में सम्पूर्ण २८—००
४५०८ चरकसंहिता—चक्रपाणिकृत आयुर्वेददीपिकाबंबई २२—०
४५०९ चरकसंहिता—आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेव विद्यालंकार
कृत सुविस्तृत विवेचनात्मक सरल हिंदी अनुवाद
सम्पूर्ण दो बढ़िया जिल्दों में—इससे बढ़कर सरल
हिन्दी अनुवाद आजतक नहीं छपा। ६ संस्करण ३०-००
४५१० चरकसंहिता—मूल एवं हिंदी, अंग्रेजी और गुजराती
परिशिष्ट आदि सहित ६ भाग ७५—००
४५११ चरक संहिता का अनुशीलन २—००
४५१२ चरक मुनि—पं० सोमदेव ०—५०
४५१३ चारुचिकित्सा—भाषा उत्तरार्द्ध ३—००
४५१४ चिकित्सा कलिका—तीसटाचार्य २—००
४५१५ चिकित्सा पद्धति युगलकिशोर १—२५
४५१६ चिकित्सा रत्न ५—५०
४५१७ चिकित्सा चन्द्रोदय—ले० हरिदास वैद्य सम्पूर्ण
चिकित्सा सात भाग ४८—००
४५१८ चिकित्सातत्वप्रदीप—दो भाग १७—००
४५१९ चिकित्सा तिलक—(सूत्रस्थान) श्रीनिवास ९—२५
४५१९क चिकित्सामंजरी—रघनाथ पंडित ५—००
४५२० चिकित्साधातुसार—हिन्दी ०—६०
४५२१ चिकित्सा ज्ञान संग्रह—डा० राधावल्लभ ५—००
४५२२ चिकित्सा भास्कर प्रथम २—००
४५२३ चिकित्सांजन—हिन्दी १—१२
४५२४ चूर्ण भाण्डार— १—२५
४५२५ जननेन्द्रिय के रोग—ले० भट्टाचार्य १—५०
४५२६ जन्मनिरोध—सचित्र ६—००
४५२७ जनस्वास्थ्य विज्ञान ४—००
४५२८ जलचिकित्सा—राधावल्लभचन्द्र ५—००
४५२९ जलचिकित्सा विज्ञान देवराज २—५०
४५३० ज्वरचिकित्सा—श्रीमहेन्द्रनाथ २—७५
४५३१ ज्वरतिमिरनाशक—भाषा टीका १—७५
४५३२ ज्वरमीमांसा—ले० श्रीहरिशरणानन्द १—५०
४५३३ ज्वर-विवेचन अर्थात् ज्वरनिदान चिकित्सा आयु-
र्वेदीय लाक्षणिक चिकित्सा ग्रन्थ पं० लीलाधर १०—००
४५३४ ज्वरविज्ञान—(हि०) ३—००
४५३५ ज्वरचिकित्सा—अयोध्यानाथ २—००
४५३६ जीने की कला—श्री विट्ठलदास १—५०
४५३७ जीवनतत्त्व—(हि०) श्री महेन्द्रनाथ १—५०
४५३८ जीवितविमर्श—ले० हरिश्चन्द्र १—२५
४५३९ जीवरसायनकोश—व्रजकिशोर ६—००
४५४० जीवाणुविज्ञान—ले० डा० वाणकर १०—००
४५४१ जुकाम—ले० श्री महेन्द्रनाथ (हि०) १—७५
४५४२ जीवन का आनन्द दो भाग ५—००
४५४३ टोटका विज्ञान—केदारनाथ (हि०) ०—३७
४५४४ टोटका अमोलकचन्द ०—७५
४५४५ डाक्टरी गाइड—कविराज प्रेमनारायण ४—००
४५४६ डाक्टरी चिकित्सार्णव बड़ा—(एलोपैथी तथा
होमियो) (हि०) ४—५०
४५४७ डाक्टरी चिकित्सासार १—२५
४५४८ डाक्टरी नुस्खे— २—५०
४५४९ डाक्टरी ज्ञान का मैटेरियामेडिका ८—००
४५५० ढोरों का इलाज
४५५१ तंत्रयुक्तिविचार—मूलसंस्कृत ०—७५
४५५२ तंत्रसार संग्रह (विषनारायणीय) १५—२५
४५५३ तपेदिक—श्री महेन्द्रनाथ ४—००
४५५४ तत्कालफल प्रदप्रयोग—चन्द्रशेखर १—५०
४५५५ तैलचिकित्सा—कानपुर ०—६२
४५५६ तात्कालिक चिकित्सा—शिवदयाल १—२५
४५५७ तापमान—राजकुमार ०—२५
४५५८ तीन महामारी—प्लेग, चेचक, हैजा (हि०) ले०
डा० वर्मा होमियो १—५०
४५५९ तीमारदारी—श्रीवास्तव ०—७५
४५६० तुवर और चालमोग्रा— ०—७५
४५६१ तुलसी चिकित्सा विधान— ०—३६
४५६२ तुलसी—श्री रमेश वेदी २—००
४५६३ तुलसी केदारनाथ पाठक ०—१२
४५६४ तुलसी विज्ञान—सरल भाषा ०—५०
४५६५ तैलसंग्रह—विश्वनाथ २—००
४५६६ थर्मामीटर—हिन्दी ०—२५
४५६७ दन्तविज्ञान (हि०) पं० गोपीनाथ ०—३७
४५६८ दमा, श्वास, कफ, खांसी ०—५०
४५६९ द्रव्यगुण—चक्रपाणि हिन्दी टीका २—००
४५७० द्रव्यगुण संजूषाप्रथम २—००
४५७१ द्रव्यगुणविज्ञान—ले० आचार्य यादवजी त्रिकमजी
पूर्वार्द्ध (द्रव्यगुण-रस-विपाक-वीर्य-प्रभाव
विज्ञानात्मक) ३—५०
४५७२ द्रव्यगुणविज्ञान—ले० आचार्य श्रीयादवजी उत्तरार्द्ध
का औषधद्रव्यविज्ञानीयनामक द्वितीय खंड १२—००

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४५७३ द्रव्यगुण विज्ञान—प्रियव्रत १८-००

४५७४ द्रव्यगुणशतक—हिन्दी ०-६२

४५७५ द्रव्य-विज्ञान—पं० जगन्नाथ १-२५

४५७६ द्रव्यसंग्रह विज्ञान—जगन्नाथ १-२५

४५७७ दवा का भूत

४५७८ दशमूल—रूपलाल ०-५०

४५७९ दांतों का डाक्टर या वैद्य २-५०

४५८० दिल्लगनचिकित्सा— ०-७५

४५८१ दीर्घजीवन—विश्वेश्वरदयालु ०-५०

४५८२ दुग्धचिकित्सा—महेन्द्रनाथ ४-००

४५८३ दुग्धचिकित्सा—छोटेलाल गांधी ०-३१

४५८४ दुग्धगुण विधान—हिन्दी १-००

४५८५ दूध से सर्व रोगों क इलाज ०-७५

४५८६ देहाती अनुभूत योग संग्रह— १२-००

४५८७ देहाती इलाज—श्री रमेशवेदी १-००

४५८८ देहाती प्राकृतिक चिकित्सा सार ६-००

४५८९ देहातियों की तन्दुरुस्ती—केदारनाथ ०-७५

४५९० देहाती प्राकृतिक चिकित्सा अमोलक ५-००

४५९१ दैनन्दिनी रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा ४-००

४५९२ दैनिक प्रयोगावली गंगाशरण ३-५०

४५९३ दोष कारणत्व मीमांसा—श्रीप्रियव्रत १-००

४५९४ धतूरागुण विधान— ०-७५

४५९५ धन्वन्तरि परिचय—रघुबीरशरण २-५०

४५९६ धन्वन्तरि पूजाकथादर्शन ०-७५

४५९७ धन्वन्तरी यकृत प्लीहारोगांक २-००

४५९८ धन्वन्तरि के विशेषांक—

१ कल्प एवं पंचकर्म ४-००

२ गुप्तसिद्ध योगांक के तीन भाग १०-००

३ पुरुष रोगांक ६-००

४ बाल रोगांक ६-००

५ भैषज्य कल्पनांक ६-००

६ संक्रामक रोगांक ४-००

७ सिद्धचिकित्सांक ४-००

८ इंजेक्शन विज्ञानांक ४-००

९ चिकित्सा समन्वयांक ६-००

१० चरकचिकित्सांक ८-५०

११ प्रसूति विज्ञानांक ८-५०

४५९९ धात्री विज्ञान २-५०

४६०० धातुरोग और इसका इलाज—महेन्द्रनाथ १-५०

४६०१ नपुंसकचिकित्सा व यौवन गुप्तरहस्य ३-००

४६०२ नपुंसक चिकित्सा—हिन्दी टीका ०-६०

४६०३ नपुंसकामृतार्णव—हि० टी० २-५०

४६०४ नमक—विश्वेश्वरदयाल ०-६२

४६०५ नवपरिभाषा—उपेन्द्रनाथदास १-७५

४६०६ नवीन चिकित्साविज्ञान—लुईकुने ५-००

४६०७ नवीन प्राकृतचिकित्सा—हीरालाल ३-५०

४६०८ नवीन प्रा० चि० प्रणाली—केदारनाथ गुप्त ६-००

४६०९ नव्यजन स्वास्थ्यविज्ञान—ले०—डाक्टर मुकुन्द स्वरूप वर्मा। स्वास्थ्य विज्ञान विषय पर नवीनतम तथा अपटूडेट ग्रन्थ। अनेकों चित्र देकर हर विषयको बड़ी सरलता से समझाया है। विद्यार्थियों को तो इस विषय को समझने के लिये अद्वितीय पुस्तक है।

४६१० नव्यरोगनिदान माधवनिदान परि० ०-७५

४६११ न्युमोनिया प्रकाश—देवकरण ०-३७

४६१२ नागरसर्वस्व—(पद्मश्री) हिन्दी टीका ४-२५

४६१३ नाड़ीरहस्य—अयोध्यानाथ ०-७५

४६१४ नाड़ीचक्रम् मूल तथा तामिल ३-५०

४६१५ नाड़ी तत्त्व दर्शन—नाड़ी विज्ञान की रहस्यपूर्ण प्रामाणिक पुस्तक—ले० श्री सत्यदेववशिष्ठ ५-००

४६१६ नाड़ीदर्पण—भाषाटीका १-००

४६१७ नाड़ीदर्शन—श्रीवैद्य ताराशङ्करजी कृत आधुनिकतम आविष्कारों सहित सचित्र अत्युपयोगी २-५०

४६१८ नाड़ी परीक्षा—हिन्दी टीका ०-३१

४६१९ नाड़ी विज्ञान—जीवानंद १-२५

४६२० नाड़ीविज्ञान—(कणादविरचित) हिं० ०-२५

४६२१ नाड़ी ज्ञानतरंगिणी—अनुपानतरंगिणी २-००

४६२२ नाड़ीज्ञानदर्पण—हिन्दी टीका ०-५०

४६२३ नारी की यौन समस्याए २-००

४६२४ नासारोगविज्ञान—जगन्नाथ २-००

४६२५ निघंटु विज्ञाण—मखजन उल मुफरदात ०-००

४६२६ निघंटु कल्पद्रुम—सुदर्शनलाल १०-००

४६२७ निघंटु शिरोमणि—जगन्नाथ १-५०

४६२८ निम्बगुणविधान—गणपतिसिंह ०-३५

४६२९ नित्योपयोगी चूर्ण संग्रह १-२५

४६३० नित्योपयोगी क्वाथसंग्रह १-२५

४६३१ नीम के उपयोग १-००

४६३२ नीम—बकायन रमेशवेदी २-००

४६३३ नीमगुणविधान—अब्दुल्ला ०-३८

४६३४ नीम चिकित्सा ०-६२

४६३५ नेत्ररक्षा—नेत्ररोग चिकित्सा १-००

४६३६ नेत्ररोगविज्ञान—यादवजी हंसराज १५-००

४६३७ नेत्ररोग विज्ञान—आ० विश्वनाथ १०-००

४६३८ नेत्ररोग विज्ञान—शिवदयाल ८-००

४६३९ नेत्रसुधार—डा० अग्रवाल ४-००

४६४० नेत्ररोगविज्ञान—साठ्ये २३-००

४६४१ नेत्ररोगचिकित्सा ०-७५

४६४२ नैसर्गिक आरोग्य २-००

४६४३ न्यायवैद्यक-व्यवहारायुर्वेदविषतंत्र-अत्रिदेवगुप्त ४-००

४६४४ पंचकर्म विधान—जगन्नाथ ०-७५

४६४५ पंचभूत विज्ञान—उपेन्द्रनाथ दास ३-००

४६४६ पंचसायक—ज्योतीश्वराचार्य १-००

४६४७ पंचसायक—हिं० टीका ३-५०

४६४८ पथ्यापथ्य—(विश्वनाथ) हिं० टी० २-००

४६४९ पथ्यापथ्यनिर्णय—हिन्दी टीका खूबचन्द ०-७५

४६५० पथ्यापथ्यनिरूपण—जगन्नाथ ०-७५

४६५१ पदार्थविज्ञान—ले० रामरक्ष पाठक ३-५०

४६५२ पदार्थविज्ञान—बलवन्त शर्मा ४-००

४६५३ पदार्थ विज्ञान—जगन्नाथ प्रसाद १-२५

४६५४ पदार्थविज्ञान—गुणविज्ञान—जगन्नाथ २-५०

४६५५ पंद्रह मिनट में स्वस्थ बनो—हिन्दी १-६२

४६५६ पर्यायमुक्तावली—श्रीहरिचरण सेन ५-५०

४६५७ पर्यायरत्नमाला—श्रीमाधवकर ६-००

४६५८ परिभाषा प्रबन्ध—जगन्नाथ प्रसाद २-५०

४६५९ परीक्षित प्रयोग—दो भाग २-००

४६६० पलाण्डुगुणविधान—हिन्दी ०-५०

४६६१ प्लीहा रोगचिकित्सा—ले० ज्ञानचन्द ०-२५

४६६२ प्लीहा के रोग और उनकी चिकित्सा ०-३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४६६३ पशुचिकित्सा— ४-००, ३-००
४६६४ पशुचिकित्सा २-००
४६६५ पशुओं का घरेलू तथा डाक्टरी इलाज ६-००
४६६६ पशुचिकित्सा विज्ञान—डा० राजेन्द्रसिंह १-८७
४६६७ पशुपालक विज्ञान—राजेन्द्रसिंह १-८७
४६६८ पशु संक्रामक रोग चिकित्सा—डा० राजेन्द्रप्रसाद ३-००
४६६९ पशुओं का इलाज— ०-५०
४६७० पाकप्रदीप और पुष्टि प्रकाश १-१२
४६७१ पाकविलास—हिन्दी १-००
४६७२ पाकविज्ञान—ऋषिकुमार ३-००
४६७३ पाकदर्पण भोज १-५०
४६७४ पाकावली ग्रन्थ—मूल ०-६२
४६७५ पाचन प्रणाली के रोग—महेन्द्रनाथ २-२५
४६७६ पायोरिया चिकित्सा—दाऊदयाल १-००
४६७७ पाश्चात्य द्रव्यगुण-विज्ञान—मैटेरिया मेडिका श्री राम सुशीलसिंह कृत २ भागों में ४२-००
४६७८ पीपल गुणविधान—अब्दुल्ला ०-५०
४६७९ पुराने रोगों की गृह चिकित्सा— ४-००
४६८० पुरुष-रोग—दाऊदयाल १-००
४६८१ पुरुष रोग चिकित्सा—चन्द्रशेखर ३-५०
४६८२ पुरुष विज्ञान—जगन्नाथ ७-००
४६८३ पुरुष गुप्त रोग चिकित्सा—ऋषीकुमार १-२५
४६८४ पुरुषों के गुप्त रोग और इलाज १-००
४६८५ पेठा—श्री रमेश वेदी ०-७५
४६८६ पेटेन्ट प्रेस्काइबर—डा० रमानाथ ६-००
४६८७ पेटेण्ट अदवियात—बंसल ६-००
४६८८ पैसे पैसे के चुटकुले—ले० गणपतिसिंह ३-००
४६८९ पौराणिक वनस्पतियां—केदारनाथ १-००
४६९० प्रत्यक्ष औषधि-निर्माण—श्री विश्वनाथ ३-००
४६९१ प्रत्यक्ष शरीर संस्कृत—१-२ भाग १७-५०
४६९२ प्रत्यक्ष शरीर—गणनाथसेन हिन्दी २रा भाग ८-७५
४६९३ प्रत्यक्ष शरीर कोष—श्री सेन गुप्त ८-००
४६९४ प्रति संस्कृतनिदान चिकित्सा—संस्कृत १-००
४६९५ प्रमाणविज्ञान—पं० जगन्नाथ प्रसाद २-५०
४६९६ प्रमेह और अर्श रोग— १-२५
४६९७ प्रलाप कंठाभरण १-५०
४६९८ प्रमेह भास्कर—वैद्य किशोरी दत्त ०-१६
४६९९ प्रमेहविवेचन—श्रीमहेन्द्रनाथ हिं० २-००
४७०० प्रयोग पुष्पावली महावीरप्रसाद १-२५
४७०१ प्रयोगमंजूषा १-००
४७०२ प्रसवविद्या—कान्तिनारायण मिश्र ५-००
४७०३ प्रसूतितन्त्र—डा० रामदयाल कपूर ५-००
४७०४ प्रसूतितन्त्र—यामिनीभूषण राय संस्कृत १-२५
४७०५ प्रसूतितंत्र—गोखले ३-५०
४७०६ प्रसूति विज्ञान—रमानाथ द्विवेदी ९-००
४७०७ प्राकृत ज्वर राधावल्लभ ०-२५
४७०८ प्राकृतिक पशु चिकित्सा— ०-७५
४७०९ प्राकृतिक चिकित्सा—केदारनाथ गुप्त ४-००
४७१० प्राकृतिक चिकित्सा—डा० कुलरंजन ४-००
४७११ प्राकृतिकचिकित्सा—हिं० रामनारायण ०-७५
४७१२ प्राकृतिक चिकित्सा प्रश्नोत्तरी ०-६२
४७१३ प्राकृतिक जीवन की ओर—विट्ठलदास ३-००
४७१४ प्राकृतिक शिशु चिकित्सा २-००
४७१५ प्राणिज औषधि—शंकरदाजी हिं० ०-३१
४७१६ प्रारम्भिक उपचार—गणेशदत्त १-००
४७१७ प्रारंभिक उद्भिद्शास्त्र (वनस्पति) बलवन्तसिंह ४-५०
४७१८ प्रारंभिक जीवविज्ञान—सन्तप्रसाद ३-५०
४७१९ प्रारम्भिक भौतिकी—निहालकरण ८-००
४७२० प्रारम्भिक रसायन—फूलदेवसहाय ४-५०
४७२१ प्रारम्भिक स्वास्थ्य ०-३७
४७२२ फल संरक्षण—डा० गोरखप्रसाद २-५०
४७२३ फलसंरक्षण विज्ञान—युगलकिशोर १-००
४३२४ फलाहार चिकित्सा—श्री महेन्द्रनाथ २-७५
४७२५ फलों द्वारा अनुभूत चिकित्सा—गणपतिसिंह ३-२५
४७२६ फलों द्वारा चिकित्सा २-००
४७२७ फिटकरी— ०-३७
४७२८ फिटकरी गुण विधान—ले० अब्दुल्ला १-५०
४७२९ फेफड़ों की परीक्षा, रोग, चिकित्सा-शिवचरण ५-००
४७३० फुफ्फुस सन्निपात चिकित्सा—हनुमान प्रसाद २-६९
४७३१ बच्चों के रोगों का इलाज ०-७५
४७३२ बच्चों की रक्षा—लुई कुने हिंदी ०-३७
४७३३ बवासीर और उसकी चिकित्सा ०-९४
४७३४ बच्चों के रोग और उनका इलाज—महेन्द्रनाथ २-००
४७३५ बबुल चिकित्साविधान— ०-३७
४७३६ बबूल गुणविधान—मु० अब्दुल्ला ०-२५
४७३७ बरगद—रमेश बेदी ०-७५
४७३८ बस्तिशालाका प्रवेश ०-३७
४७३९ बायोकेमिक चिकित्सा—सुरेश प्रसाद ४-००
४७४० बायोकेमिक चिकित्सा—भटाचार्य ६-५०
४७४१ बायोकेमिक पाकेट गाइड—डा० सुरेशप्रसाद हिं० १-०
४७४२ बालतन्त्र—(कल्याण वैद्य विरचित) २-५०
४७४३ बालरोग चिकित्सा १-००
४७४४ बालरोग चिकित्सा—पं० महावीर १-००
४७४५ बालरोग चिकित्सा—ऋषीकुमार ०-७५
४७४६ बोपदेव शतक ०-८७
४७४७ ब्रह्मचर्य सन्देश—सत्यव्रत हिं० ४-५०
४७४८ ब्रह्मचर्य जीवन है—स्वा० शिवानन्द १-५०
४७४९ ब्रह्मचर्य महात्मा गांधी २ भाग १-७५
४७५० बृहत् आसवारिष्ट संग्रह दो भाग ७-००
४७५१ बृहद् बूटी प्रचार वैद्यक २-५०
४७५२ बृहन्निघंटुरत्नाकर हिं० टी० प्रथम भाग ८-५०
४७५३ ,, ,, चतुर्थ भाग ८-००
४७५४ , ,, पंचम भाग १६-००
४७५५ ,, ,, छठा भाग १२-००
४७५६ ,, ,, ७-८ भाग शालिग्राम निघण्ट भूषण
४७५७ बृहद् बूटी प्रचार वैद्यक २-५०
४७५८ बृहद्योग तरंगिणी त्रिमल्लभट्ट १६-२५
४७५९ बृहत्पाकसंग्रह—कृष्णप्रसाद ४-००
४७६० बृहत् रसराज सुन्दर हिन्दी १२-००
४७६१ बृहद् इंजेक्शन चिकित्सा—रामविचार ६-००
४७६२ भस्मविज्ञान—हरिशरनानद १०-००
४७६३ भेलसंहिता—मूल १०-००
४७६४ भारतभैषज्यरत्नाकर केवल ४-५ भाग २०-००
४७६५ भारतीय औषधावली—सुरेशप्रसाद १-५०
४७६६ भारतीय जड़ी-बूटी डा० गनपतसिंह ५-५०
४७६७ भारतीय जीवाणुविज्ञान—रघुवीरशरण १-५०
४७६८ भारतीय रस पद्धति—अत्रिदेव १-५०
४७६९ भारतीय जनता का स्वास्थ्य और आयुर्वेद ०-५०

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४७७० भारतीय वनौषधि सचित्र बँगला २२-००
४७७१ भावप्रकाश-पं० लालचन्दजी कृत अद्वितीय हिंदी टीका, विशेष वक्तव्य तथा यूनानी निघण्टु १६-००
४७७२ भावप्रकाशनिघण्टु-सटिप्पण मूल १-५०
४७७३ भावप्रकाशनिघण्टु-आचार्य श्रीविश्वनाथजी द्विवेदी कृत ललितार्थकरी अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी टीका सहित परिवर्धित तृतीया-वृत्ति ७-००
४७७४ भावप्रकाश-मूलस्थूलाक्षर ८-००
४७७५ भावप्रकाश-मूलपूर्वार्द्ध ३) मध्यमोत्तर ७-००
४७७६ भूलोक में अमृत ०-५०
४७७७ भेषजलक्षणसंग्रह-भट्टाचार्य २५-००
४७७८ भेषजविज्ञान-(होमियो) भट्टाचार्य ३-००
४७७९ भैषज्यकल्पना-ले० श्री अत्रिदेव गुप्त १-७५
४७८० भैषज्यकल्पना विज्ञान ५-००
४७८१ भैषज्यरत्नावली-मूलमात्र संस्कृत ४-००
४७८२ भैषज्यरत्नावली-विनोदलाल सटीक १०-००
४७८३ भैषज्यरत्नावली-अनेक ग्रन्थों के सिद्धहस्त टीकाकार सुप्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेवजी विद्यालंकार कृत अत्यन्त सरल तथा सब गूढ़ अर्थों को खोलने वाली हिन्दी टीका सहित जितने योग इस संस्करण में हैं उतने आज तक किसी संस्करण में नहीं छपे। छठा संस्करण बहुत परिवर्तित होकर ग्लेज कागज पर छपा है १०-५०
४७८४ भैषजसार-ले० डा० सुरेशप्रसाद २-००
४७८५ भैषज्यसारसंग्रह-कविराज हरस्वरूप १५-००
४७८६ भोजन और स्वास्थ्य पर गांधी प्रयोग
४७८७ भोजन क्यों और कैसे ?-सुरेन्द्र ४-००
४७८८ भोजन विधि-रोग और पथ्यापथ्य-केदारनाथ २-००
४७८९ भोजन ही अमृत है-ले० श्री महेन्द्रनाथ १-७५
४७९० मकरध्वज ०-६२
४७९१ मखजन उल मुफरदात-यूनानी हिन्दी २-००
४७९२ मट्ठा उसके गुण तथा उपयोग— १-००
४७९३ मट्ठा या छाछ १-००
४७९४ मदनपाल निघंटु-भाषा टीका बंबई ५-००
४७९५ मधु के उपयोग-केदारनाथ १-००
४७९६ मधुचिकित्सा-ले० रामचन्द्र ०-३१
४७९७ मधुगुणविधान-डा० गणपति सिंह १-५०
४७९८ मधुमेह-ले० श्री परशुराम शास्त्री हिं० १-००
४७९९ मधु चिकित्सा विधान- ०-५०
४८०० मरहम बनाना १-२५
४८०१ मधुमेह चिकित्सा-ले० श्री महेन्द्रनाथ ०-३७
४८०२ मन्थरज्वरविज्ञान-श्री हरिशरणानंद २-००
४८०३ मन्थरज्वर चिकित्सा-हरिवल्लभ २-००
४८०४ मर्मविज्ञान-ले० श्रीरामरक्षपाठक ३-५०
४८०५ मल-मूत्र रक्तादि परीक्षा-एलोपैथिक ढंग- २-५०
४८०६ मलावरोध-युगलकिशोर १-२५
४८०७ मलेरिया-श्री मनमोहन धूप-मलेरिया पर इससे बढ़कर कोई पुस्तक नहीं छपी (एलोपैथिक) २-२५
४८०८ मलेरिया और कालाजार चिकित्सा १-७५
४८०९ मलेरिया मोतीझरा-युगलकिशोर १-००
४८१० मवेशियों की घरेलू चिकित्सा ०-७५
४८११ महामारी विवेचन-हिन्दी टीका सहित ०-६०
४८१२ महिला रोग चिकित्सांक २-००
४८१३ माडर्न मेडिकल ट्रीटमेंट-डा० एम० एल० गुजराल हिन्दी अनुवाद एलोपैथिक चिकित्सा २०-००
४८१४ माधव निदान-सटिप्पण १-५०
४८१५ माधवनिदान-सुधालहरी १-५०
४८१६ माधव परिशिष्ट ०-७५
४८१७ माधवनिदान-मधुकोष आतंकदर्पण ८-५०
४८१८ माधवनिदान-मधुकोष आतंकदर्पण ७-००
४८१९ माधवनिदान-मधुकोष सं० टीका तथा मल और मधुकोष का हिन्दी अनुवाद सहित पं० दीनानाथ कृत संपूर्ण तथा प्रश्नपत्र सहित ३ भाग १८-००
४८२० माधवनिदान-मधुकोष तथा विद्योतनी हिन्दी १३-००
४८२१ माधवनिदान-माधवी हिन्दी टी० २-५०
४८२२ माधवनिदान-पं० लालचन्द हिन्दी ४-५०
४८२३ माधव निदान-मधुकोष मनोरमा हिन्दी ६-००
४८२४ माधवनिदान-पं० दत्तराम चौबे ५-००
४८२५ मानवशरीर रहस्य-डा० मुकुन्दस्वरूप प्रथम ३-५०
४८२६ मानवशरीर रहस्य-दूसरा भाग ४-५०
४८२७ मानवसंतति प्रसूतिशास्त्र-बलवन्त सिंह कृत १-७५
४८२८ मानसरोगविज्ञान-ले० डा० बालकृष्ण ५-५०
४८२९ मानसिक चिकित्सा-ले० काकजीराम ४-०८
४८३० मानसिक रोगविज्ञान-श्री जगन्नाथ ४-००
४८३१ मानसिक ब्रह्मचर्य तथा कर्मयोग-फकीरचन्द १२-००
४८३२ मिक्सचर (एलोपैथिक)-डा० सुरेशप्रसाद २-२५
४८३३ मिर्च-ले० रमेशवेदी हिन्दी १-००
४८३४ मिट्टी सब रोगों की रामबाण दवा ०-६५
४८३५ मिडवाइफरी बसन्तीरानी ३-५०
४८३६ मीजान तिब्ब-सर्वाङ्ग चिकित्सा ३-५०
४८३७ मुखरोग विज्ञान-श्री जगन्नाथ २-५०
४८३८ मूत्र के रोग-डा० घाणेकर ६-००
४८३९ मूत्रपरीक्षा-भट्टाचार्य (होमियो) १-५०
४८४० मूत्रविज्ञान-डा० बालानन्द १-५०
४८४१ मयविनोद-श्रीमेघमुनिप्रणीत-सरल हिन्दी में। हर बीमारी का शर्तिया सरल इलाज - दवाइयां भी वह जो आसानी से बाजार में मिल सकें ६-००
४८४२ मैं तन्दुरुस्त हूं या बीमार-ले० डा० लूईकूने हिन्दी ०-५०
४८४३ मैं निरोगी हूं या रोगी लूई कूने ०-३६
४८४४ मोटापा दूर करने के उपाय-रामनारायण मिश्र १-००
४८४५ यकृत और प्लीहा के रोग-हिन्दी पं. विश्वेश्वर ०-५०
४८४६ यकृत के रोग और उनकी चिकित्सा २-००
४८४७ यूनानी चिकित्सा विधि-अर्थात् यूनानी का फार्माकोपिया लेखक हकीम मन्साराम। हर रोग के लिये यूनानी इलाज किस प्रकार करना चाहिये उसी का पूरा तरीका दिया है किस हालत में कौन दवाई देनी। शरीर परिचय सहित हिंदी ५-००
४८४८ यूनानी चिकित्साविज्ञान-डा० दलजीत सिंह ८-५०
४८४९ यूनानी चिकित्सासागर-लेखक हकीम मन्साराम— इसमें यूनानी के प्रायः सभी आजमायें हुए नुस्खे दिये हैं। जिस रोग पर काम आते हैं वह भी लिखा है। उनके बनाने के तरीके भी लिखे हैं। हर प्रकार के अर्क, शर्बत, माजून, चटनी इत्यादि कोई भी चीज छूटी नहीं अर्थात् यूनानी में जो भी जानने योग्य नुस्खा है इसमें सब दिया है १०-०
४८५० यूनानीद्रव्य गुणविज्ञान-दलजीतसिंह २२-००
४८५१ यूनानी शब्दकोष-फारसी से हिन्दी ०-३७
४८५२ यूनानीसिद्धयोगसंग्रह-श्री दलजीत सिंह २-५०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४८५३ यूनानी चिकित्सा सागर–हकीम दलजीत सिंह ४-००
४८५४ योग चिकित्सा–अत्रिदेव गुप्त ३-५०
४८५५ योग चिकित्सा और सुगम चिकित्सा ०-५०
४८५६ योगचिन्तामणि–हिन्दी टीका सहित ४-००
४८५७ योगतरंगिणी (त्रिमल्लभट्ट कृत) ६-००
४८५८ योगरत्न समुच्चय–मूल संस्कृत २ भाग में १५-००
४८५९ योग रत्नाकर–मूल संस्कृत ६-००
४८६० योगरत्नाकर भा० टी० १८-००
४८६१ योगशतक ०-६०
४८६२ यौनमनोविकार–डा० सुरेन्द्रनाथ १-७५
४८६३ यौवन के गुप्त रहस्य— ३-००
४८६४ रक्त के रोग–ले० डा० घाणेकर १०-००
४८६५ रक्त विक्षेपक ब्लडप्रेशर ०-७५
४८६६ रतिमंजरी–हिन्दी टीका सहित ०-३७
४८६७ रतिरत्न प्रदीपिका–मूल ०-७५
४८६८ रतिरहस्य–श्रीकोक्कोक विरचित सं० ३-००
४८६९ रतिरहस्य–हिन्दी टीका ५-००
४८७० रसचिकित्सा–प्रभाकर चटोपाध्याय ६-००
४८७१ रसचिन्तामणि–हिन्दी टीका सहित ३-५०
४८७२ रसजलनिधि–(भूदेव मुकर्जी) अंग्रेजी अनुवाद ३ ७-५०
४८७३ रसतन्त्रसार व सिद्धयोग संग्रह— कालेडा बोगला वालों का प्रथम भाग ९-००
४८७४ ,, ,, दूसरा भाग ६-००
४८७५ रसतरंगिणी–लाहौर के सुप्रसिद्ध कविराज नरेन्द्र नाथ के आदेशानुसार प्राणाचार्य श्री सदानन्द जी विरचित तथा श्री पं० हरिदत्तजी कृत संस्कृत टीका तथा कविराज श्री धर्मानन्दजी कृत रसविज्ञान नामक सरल हिन्दी टीका सहित। पुस्तक कितनी उपयोगी है इसी से सिद्ध है कि यह इसका पांचवा संस्करण सफेद कागज पर छपा है। इसमें केवल अनुभूत प्रयोग ही लिखे हैं सभी जगह पाठ्यग्रन्थ है १०-००
४८७६ रतिरत्नप्रदीपिका भा० टी० २-५०
४८७७ रसहृदयतन्त्र–भाषा टीका ५-००
४८७८ रस भस्मों की सेवन विधि ०-५०
४८७९ रसप्रदीप–हिन्दी टीका सहित ०-५०

४८८० रसरत्नसमुच्चय–[illegible]
४८८१ रसरत्नसमुच्चय–की सरलार्थ संस्कृत टीका ३-७५
४८८२ रसरत्नसमुच्चय–जीवानन्द सटीक १०-००
४८८३ रसरत्नसमुच्चय–हि० टी० अंबिकादत्त १०-००
४८८४ रसरत्नसमुच्चय–शंकरदयालु भाषा टीका १०-००
४८८५ रसरत्नाकर–भाषापद्य १-००
४८८६ रसराजमहोदधि–सम्पूर्ण पांचों भाग बंबई ८-००
४८८७ रसादिपरिज्ञान–जगन्नाथ प्रसाद २-००
४८८८ रसव्यंजनप्रकाश–भगवानदास कृत १-१२
४८८९ रसाध्याय–संस्कृत टीका सहित ०-६२
४८९० रसामृत–ले० वै० यादवजी त्रिकमजी आचार्य। आचार्य जी का यह जीवनपर्यन्त का रसशास्त्र सम्बन्धी अनुभव है। हिन्दी टीका सहित। यह ग्रन्थ विद्यार्थियों को रसशास्त्र के पाठ्य-ग्रन्थ के रूप में तथा चिकित्सकों को भस्म, पिष्टि, रसयोग आदि के ठीक निर्माण में उपयुक्तमार्गदर्शक हो इस दृष्टि से लिखा गया है। अभी अभी हाल में प्रकाशित हुआ है ५-००
४८९१ रसायनखंड–नित्यनाथसिद्ध कृत मूल ०-५०
४८९२ रसायनतन्त्र–हिन्दी टीका ०-२५
४८९३ रसायनसंहिता–हिन्दी टीका १-००
४८९४ रसायनसार–ले० श्यामसुन्दराचार्य ८-००
४८९५ रसार्णव–नाम रसतन्त्र–सटिप्पण २-००
४८९६ रसायन और वाजीकरण १-२५
४८९७ रसेन्द्रचिन्तामणि–(ढुंढुकनाथ) हिन्दी टीका ३-५०
४८९८ रसेन्द्रपुराण–पं० रामप्रसाद कृत ७-००
४८९९ रसेन्द्रभास्कर–हिन्दी टीका सहित २-५०
४९०० रसेंद्रसारसंग्रह—सटिप्पण १-५०
४९०१ रसेन्द्रसारसंग्रह–संस्कृत टीका ५-००
४९०२ रसेंद्रसार संग्रह भा. टी. रामप्रसाद ६-००
४९०३ रसेन्द्रसारसंग्रह–विस्तृत हिन्दी घनानन्द पन्त ११-००
४९०४ रसेन्द्रसारसंग्रह–रसायनी भाषाटीका ३-००
४९०५ रसेन्द्रसारसंग्रह–रसचन्द्रिका भा० टी० ६-००
४९०६ रसेन्द्रसारसंग्रह–जीवानन्द सं० टीका ३-१२
४९०७ राजकीय औषध योग संग्रह– ७-००
४९०८ राजनिघंटु–नरहरि कृत संस्कृत टीका ३-१२

राजनिघंटु संहिता–धन्वन्तरीयनिघंटु ९-५०
४९१० राजयक्ष्मा–ले० विश्वेश्वरदयालु ०-५०
४९११ राजवल्लभनिघंटु–हिन्दी टीका २-५०
४९१२ राजमृगांक–नटराज २-७५
४९१३ रामविनोद–भाषा बंबई २-५०
४९१४ राष्ट्रीयचिकित्सा–सिद्धयोगसंग्रह १-५०
४९१५ रिलेशनशिप–ले० डा० श्यामसुंदर २-००
४९१६ रीठा गुणविज्ञान ०-५०
४९१७ रेपर्टरी–दवा चुनने के लिए भट्टाचार्य ११-००
४९१८ रोगनामावली–कोष वैद्यकीय मान तौल ३-५०
४९१९ रोगनिवारण–डा० शिवनाथ १४-००
४९२० रोग परिचय–डा० शिवनाथ खन्ना १२-७५
४९२१ रोगविनिश्चय ३-००
४९२२ रोगी सुश्रूषा–महेन्द्रनाथ २-५०
४९२३ रोगी की सेवा और पथ्य–डा० सुरेश ३-००
४९२४ रोगी परीक्षाविधि–श्री प्रियव्रत ६-००
४९२५ रोगी परीक्षा–शिवनाथ ६-००
४९२६ रोगों की अचूक चिकित्सा–जानकीशरण ७-००
४९२७ रोगों की सरल चिकित्सा–विट्ठलदास ३-००
४९२८ रोगी मृत्यु विज्ञान–पं० मथुराप्रसाद १-५०
४९२९ लवंगगुण विधान–डा० गणपतिसिंह ०-२५
४९३० लवणगुण विधान ०-२५
४९३१ लहसुन-प्याज–ले० श्री रामेशवेदी २-५०
४९३२ लक्ष्मीमोदतरङ्गिणी–गणेशदत्त २-००
४९३३ वंगसेन–हिन्दी टीका सहित १८-००
४९३४ वटिका चिकित्सा ०-६२
४९३५ वनौषधि चन्द्रोदय–१० भाग ४०-००
४९३६ वनौषधि दर्शिका–बलवन्तसिंह २-५०
४९३७ वर्मा एलोपैथिक चिकित्सा–घर बैठे डाक्टरी ज्ञान कराने वाली अपूर्व पुस्तक। ४०० रोगों का सफल निदान और सिद्ध चिकित्सा। वैद्यों हकीमों के लिये भी समान उपयोगी। डा० रामनाथ वर्मा की प्रशंसितकृति १२-००
४९३८ बसवराजीयम्–पूर्वार्द्ध उत्तरार्द्ध भाषा ८-५०
४९३९ वस्तपरीक्षा–(हि०) भट्टाचार्य २-००
४९४० वात्स्यायन के योग–केदारनाथ पाठक ०-७५

 मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहर नगर, (पो० बा० १५८६) दिल्ली

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४९४१ विवाहित जीवन में यौन सम्प्रयोग ४–००
४९४२ विषचिकित्सादर्पण–हिन्दी ०–५०
४९४३ विषतन्त्र यामिनी भूषण ३–००
४९४४ विषतन्त्रचिकित्सा प्रकाश–हि० टी० १–७५
४९४५ विषविज्ञान–अगदतन्त्र १–७५
४९४६ विषयचिकित्सांक ४–००
९४७ वीरसिंहावलोक–मूलसंस्कृत ३–५०
९४८ व्रणबन्धन–टंडन ४–००
९५० वृन्दमाधव–सिद्धयोग कण्ठदत्तकृत संस्कृत व्या० १०–००
५१ वृन्दवैद्यक–(वृन्द प्रणीत) हिन्दी टीका ७–००
५२ वृषकल्पद्रुम अथात् पशुचिकित्सा– ३–३७
५३ वृक्ष विज्ञान ५–००
५४ वृक्ष विज्ञान चिकित्सा २–२५
५५ वेद तथा जीवाणुविज्ञान १–००
४९५६ वेदों में वैद्यक ज्ञान ०–१९
४९५७ वैद्यकीय सुभाषितावली–डा० महेता २–००
९५८ वैद्यकलाधर–हिन्दी-निदान १–५०
९५९ वैद्यक परिभाषा प्रदीप–भा०टी०बंबई२–००, १–५०
९६० वैद्यक परिभाषा प्रदीप जीवानन्द सं० १–२५
९६१ वैद्यकरसराजमहोदधि–सम्पूर्ण ८–००
९६२ वैद्यक शब्दकोष–विश्वेश्वरदयालु ०–२५
९६३ वैद्यकौस्तुभ–श्रीमेवाराममिश्र सं० २–००
९६४ वैद्यचन्द्रोदय–त्रिमल्लभट कृत हिन्दी १–००
९६५ वैद्यजीवन–(लोलिंबराज) हिंदी टीका १–२५,
९६६ वैद्य जीवन–संस्कृत तथा हिन्दी टीका बम्बई २–५०
९६७ वैद्यमनोत्सव–हिंदी (नैनसुख) ०–५०
९६८ वैद्यरहस्य–(विद्यापति) हिन्दी टीका ५–००
९६९ वैद्यवल्लभ–हस्तिरुचिकृत, भाषा टीका १–००
७० वैद्यविनोदसंहिता–शंकरभट ३–२५
७१ वैद्य–सहचर–श्रीविश्वनाथ द्विवेदी १–००
७२ वैद्य बाबा का बस्ता १–२५
७३ वैदिक चिकत्सा—सातवलेकर १–५०
७४ वैद्यमनोरमा धाराकल्प–हिन्दी टीका १–७५
७५ व्रणोपचारपद्धति–महावीरप्रसाद ०–५०
७६ व्रणशोथविमर्श ३–००
७७ व्यायाम और शारीरिक विकास २–५०

४९७८ व्यवहारायुर्वेद विषविज्ञान–युगलकिशोर ४–५०
४९७९ व्यवहारायुर्वेद–कृष्णबलवन्त ३–५०
४९८० व्यवहारायुर्वेद विषतन्त्र (न्यायवैद्यक) अत्रिदेव ४–००
४९८१ व्याधि-निग्रहप्रशस्तौषधसंग्रह—मूल १–२५
४९८२ व्याधिविज्ञान–डा० आशानन्द। रोगों के ज्ञान के लिये अत्युत्तम ग्रन्थ है। अनेकों चित्र सहित प्रथम भाग छठा संस्करण १०–००, दूसरा भाग ९–००
४९८३ शर्बत संग्रह १–५०
४९८४ शर्बत का व्यापार १–००
४९८५ शरभेन्द्र वैद्यरत्नावली १०–६२,
४९८६ शरीर प्रदीपिका–डा० मुकुन्दस्वरूप ५–००
४९८७ शरीरविद्या–बंगला में रुद्रकुमार कृत १२–००
४९८८ शरीरविज्ञान तात्कालिक चिकित्सा–केदारनाथ १–००
४९८९ शरीर परिचय १–५०
४९९० शल्य प्रदीपिका–डा० मकुन्दस्वरूप कृत–सर्जरी अर्थात् शल्य चिकित्सा पर डाक्टर साहिब का यह नवीनतम तथा सविस्तृत पुस्तक है। अनेकों चित्र देकर समझाया गया है। चीर-फाड़ करने के लिए यह अद्वितीय पुस्तक है। शल्य चिकित्सा को समझने के लिए इससे बढ़ कर पुस्तक आज तक नहीं छपी–७५० पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य कपड़े की जिल्द सहित केवल १२–५० है।
४९९१ शहद–रमेश वेदी हिन्दी ३–००
४९९२ शहद के गुण और उपयोग–महेन्द्रनाथ ०–७५
४९९३ शार्ङ्गधर संहितामूल अंजन निदान सहित गुटका २–००
४९९४ शार्ङ्गधर संहिता–दो सं० व्याख्या ८–००
४९९५ शार्ङ्गधर संहिता–दीपिका सं० ३–७५
४९९६ शार्ङ्गधर संहिता–रामप्रसाद हिं० टी० ६–००
४९९७ शार्ङ्गधर संहिता–श्यामा हिन्दी टीका ४–००
४९९८ शार्ङ्गधर संहिता–भाषाटीका ६–००
४९९९ शार्ङ्गधर संहिता–पं० दुर्गादत्त १०–००
५००० शाल्यतन्त्र में रोगी परीक्षा–देशपांडे ७–००
५००१ शालिहोत्र–संस्कृत भोजविरचित ८–००
५००२ शालिहोत्र–बड़ा सचित्र बम्बई ५–२५
५००३ शालाक्यतन्त्र–श्रीरमानाथ द्विवेदी ९–००

५००४ शालिग्रामौषधि शब्दसागर–आयुर्वेदीय शब्दकोष ८–५०
५००५ शिफाउल अमराज–यूनानी दो भाग ३–५०
५००६ शिरोरोग विज्ञान–पं० जगन्नाथ ४–००
५००७ शिवनाथसागर हिन्दी–डा० शिवनाथ ७–००
५००८ शिलाजीत विज्ञान ०–७५
५००९ शिशुपालन–बलवन्तसिंह १–७५
५०१० शिशुपालन ०–५०
५०११ शीतला परिहार २–५०
५०१२ शुभसन्ततियोगप्रकाश–हिन्दी टीका २–५०
५०१३ शुस्लर साहब की बारह दवाइयां ३–००
५०१४ श्वासरोग चिकित्सा–गोकुलप्रसाद ०–३७
५९०५ संक्रामक पशु रोगचिकित्सा–डा० राजेन्द्रप्रसाद ३–००
५०१५ संक्रामक रोग विज्ञान १–००
५०१६ सचित्र इंजेक्शन विज्ञान ५–००
५०१७ संतरा गुणविधान–हिन्दी ०–३७
५०१८ सचित्र नेत्र रोग विज्ञान–डा० शिवदयाल ८–००
५०१९ सचित्र वनस्पति गुणादर्श–द्वितीय भाग १५–००
५०२० सचित्रलघुद्रव्यगुणादर्श ३–५०
५०२१ संततिनिरोध–कब, क्यों और कैसे डा० सुरेन्द्रनाथ २–००
५०२२ संतानशास्त्र–पं० गणेशदत्त ५–००
५०२३ सर्दी जुकाम खांसी–डा० अल्तेकर ०–७५
५०२४ सन्यासी चिकित्सा शास्त्र–अथवा साधू की चुटकी ५–००
५०२५ सर्पविषविज्ञान १–२५
५०२६ सरलचिकित्सा–गोयल ३–००
५०२७ सरलरोग विज्ञान–श्रीरवीन्द्र ५–००
५०२८ सरलचिकित्साविज्ञान ३–२५
५०२९ सरलविषविज्ञान–युगलकिशोर हिं० १–७५
५०३० सव्यवहारायुर्वेदीयमृत्यु विज्ञान–गणेशदत्त ८–००
५०३१ संस्कारविधि विमर्श–श्रीअत्रिदेवगुप्त–चिकित्सा ३–००
५०३२ संस्कृत रत्नाकरस्य आयुर्वेदाङ्क ७–००
५०३३ संक्षिप्त औषधपरिचय–हिन्दी ०–५०
५०३४ संक्षिप्त पारिवारिक चिकित्सा ३–२५
५०३५ संक्षिप्तशल्यविज्ञान–डा० मुकुन्दस्वरूप हिन्दी ८–००
५०३६ संक्षिप्त दोषधातु मल विज्ञान— ३–००
५०३७ संज्ञापंचकविमर्श–संस्कृत
५०३८ सिद्धपरीक्षा–पद्धति–प्रथमखण्ड कालेडा बोगला ६–००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

५०३९ सिद्धप्रयोग दो भाग—विश्वेश्वर १—५०
५०४० सिद्ध भैषज्यमणिमाला—सटिप्पण ६—५०
५०४१ सिद्धभैषज्यसंग्रह—युगलकिशोर गुप्त ८—००
५०४२ सिद्धमृत्युञ्जययोग—५३ सिद्धप्रयोग १—००
५०४३ सिद्धयोगसंग्रह—आचार्य यादव जी त्रिकमजी २—७५
५०४४ सिद्धरसायन—मोरे वैद्यरत्न हि० ५—००
५०४५ स्वयं चिकित्सा—प्रभुदयाल ०—७५
५०४६ सिद्धान्तनिदान—(गणनाथ सेन) संस्कृत प्रथम ५—५०
५०४७ सिद्धौषधिप्रकाश—पं० बालमुकुन्दवैद्यशास्त्री हि० १—५०
५०४८ सुलभचिकित्सा सागर—प्रथम भाग सदानन्द २—२५
५०४९ सुश्रुत संहिता—उत्तरतंत्र भाषाटीका बंबई १०—००
५०५० सुश्रुत संहिता—डल्हण संस्कृत टीका १५—००
५०५१ सुश्रुतसंहिता—मूल-शस्त्र परिचायक परिशिष्ट १०—००
५०५२ सुश्रुतसंहिता—सूत्रस्थान—भानुमति संस्कृतटीका ४—००
५०५३ सुश्रुतसंहिता—कविराज श्री अत्रिदेवगुप्त कृत हिन्दी अनुवाद तथा पं० लालचंदजी कृत परिवर्द्धित १५—००
५०५४ सुश्रुतसंहिता—(शारीरस्थान) डा० जे० डी० शर्माकृत विवेचनात्मक तथा पाश्चात्यमत से तुलनात्मक अति विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित सचित्र ५—००
५०५५ सुश्रुतसंहिता—केवल शारीरस्थान—डा० घाणेकर ८—००
५०५६ सुश्रुत—सूत्र—निदान—डा० घाणेकर १०—००
५०५७ सुश्रुतसंहिता—सूत्रस्थान, नया सं० डा० घाणेकर ९—००
५०५८ सुश्रुत दो भाग गुजराती टीका ३०—००
५०५९ सूचीवेध —राजकुमार १—५०
५०६० सूर्यभेदन व्यायाम ०—७५
५०६१ सूचीवेधविज्ञान—आचार्य श्री रमेशचन्द्र। इंजेक्शन के ऊपर इससे सरल तथा उपयोगी ग्रन्थ आज तक नहीं छपा। १००० से ऊपर इंजेक्शन परिवर्धित तथा संशोधित संस्करण ७—५०
५०६२ सूर्यकिरणचिकित्सा—हीरालाल २—२५
५०६३ सूर्य नमस्कार—औध के चीफ १—००
५०६४ सूर्यरश्मिचिकित्सा (अर्थात् सूर्यकिरण चिकित्सा) १—०
५०६५ सूर्य चिकित्सा ०—३७
५०६६ सोजाक चिकित्सा—पं० गणेशदत्त ०—५०
५०६७ स्टैथस्कोप नाड़ी परीक्षा—जोशी ०—७५
५०६८ स्वास्थ्य शिक्षा—हरनामदास १—५०

५०७० सोंठ—श्री रमेशवेदी हिन्दी १—५०
५०७१ सौश्रुती—रामनाथ द्विवेदी ८—५०
५०७२ सौ रोगों का सरल इलाज १—७५
५०७३ सौ रोगों का सफल इलाज १—५०
५०७४ स्टैथेस्कोपविज्ञान—रामविचार पाण्डेय १—००
५०७५ स्टैथस्कोपविज्ञान—डा० श्यामसुन्दर १—००
५०७६ स्नानचिकित्सा—ले० श्री रवीन्द्रनाथ ०—५०
५०७७ स्वप्नदोषरक्षक—हिन्दी इन्द्र विरचित ०—५०
५०७८ स्वप्नदोषविज्ञान—सरल हिन्दी २—००
५०७९ स्वास्थ्य विज्ञान—अजमेर १—२५
५०८० स्वयं चिकित्सक—डा० राधावल्लभ ३—००
५०८१ स्वर्णक्षीरी गुणविधान—ले० गणपति ०—७५
५०८२ स्वस्थवृत्त समुच्चय—राजेश्वरदत्त हिन्दी टीका ६—५०
५०८३ स्वादिष्ट चिकित्सांक २—००
५०८४ स्वाभाविक भोजन—युगलकिशोर ०—७५
५०८५ स्वास्थ्य और जल चिकित्सा—केदारनाथ २—००
५०८६ स्वास्थ्य और व्यायाम—केदारनाथ २—००
५०८७ स्वास्थ्य और सद्वृत्त—ले० श्री अत्रिदेव २—००
५०८८ स्वास्थ्य के लिये शाक तरकारियां—महेन्द्रनाथ २—००
५०८९ स्वास्थ्य कैसे पाया?—विट्ठलदास १—५०
५०९० स्वास्थ्यप्रदीपिका—डा० मुकुन्दस्वरूप १—५०
५०९१ स्वास्थ्यरक्षा—ले० श्री हरिदास वैद्य ५—००
५०९२ स्वास्थ्य विज्ञान—ले० डा० घाणेकर ७—५०
५०९३ स्वास्थ्य संहिता—श्रीनानकचन्द हि० २—५०
५०९४ स्वास्थ्य शिक्षा पाठावली—घाणेकर ०—७४
५०९५ स्त्रियों का स्वास्थ्य और रोग—ले० श्री अत्रिदेव गुप्त—युवतियों के जानने योग्य ३—००
५०९६ स्त्रीचिकित्सा—हिन्दी टीका सहित ०—६०
५०९७ स्त्रीरोग विज्ञान—डा० रमानाथ ३—००
५०९८ स्त्री रोग चिकित्सा— १—२५
५०९९ स्त्रीरोग चिकित्सा—भट्टाचार्य हो० ४—२५
५१०० स्त्रीरोगचिकित्सा—श्री विश्वेश्वर १—२५
५१०१ स्त्रीरोगचिकित्सा—शर्माकृत, सचित्र (होमियो) ४—५०
५१०२ स्त्रीरोग चिकित्सा—दाऊदयाल १—००
५१०३ स्त्री रोगों की गृह चिकित्सा—कुलंजन २—५०

...नीपुरुष संजीवन ०—८०
५१०५ हम सौ वर्ष कैसे जियें!—केदारनाथ २—००
५१०६ हमारा भोजन—ले० श्री महेन्द्रनाथ ४—००
५१०७ हमारे बच्चे—ले० श्री महेन्द्रनाथ १—७५
५१०८ हमारे भोजन की समस्या—रामअवध १—५०
५१०९ हमारे भोजन की समस्या—अत्रिदेव १—७५
५११० हमारे शरीर की रचना—ले० श्री त्रिलोकीनाथ वर्मा केवल प्रथम भाग १०—१२
५१११ हमें क्या खाना चाहिए ०—५०
५११२ हरमेखला—माहुक विरचित संस्कृतटीका दो भाग २—३७
५११३ हरिधारित ग्रन्थरत्न—श्री वासुदेव हिंदी ०—३७
५११४ हल्दी—हिन्दी ०—३७ तथा १—००
५११५ हस्त्यायुर्वेद—पालकाप्य मुनि विरचित ११—००
५११६ हंसराजनिदान—हिन्दी टीका सहित २—००
५११७ हारीतस्यादिनिघंटु ६—००
५११८ हारीत संहिता—हिन्दी टीका ८—५०
५११९ हिकमतप्रकाश—संस्कृत टीका सहित ३—००
५१२० हितोपदेश वैद्यक—श्रीकण्ठकृत हिन्दी ३—००
५१२१ हिन्दीमेटेरिया मेडिका दूसरा भाग (होमियो) १—५०
५१२२ हृदय परीक्षा—डा० रमेशचन्द्र वर्मा कृत, आधुनिक प्रणालियों से हृदय परीक्षा को सरलतम रूप में समझाने वाली, सचित्र उपयोगी पुस्तक स्टेथस्कोप का प्रयोग चुटकी बजाते आ जायगा। २—००
५१२३ हृदय विज्ञान ०—३७
५१२४ हृत्क्रियाव्याधिविज्ञान ०—७५
५१२५ हैजा चिकित्सा—डा० श्यामसुन्दर १—००
५१२६ हैजा चिकित्सा ०—७५
५१२७ हैजा चिकित्सा—भट्टाचार्य २—००
५१२८ होमियोगृह चिकित्सा २—२५
५१२९ होमियो मेटेरिया मेडिका ३—५०
५१३० होमियो इंजेक्शन चिकित्सा—ले० डा० सुरेशप्र. १—७५
५१३१ होमियो कम्पेरेटिव प्रिंस मेटेरिया मेडिका— ९—००
५१३२ होमियो चिकित्सा विज्ञान—श्यामसुन्दर ३—५०
५१३३ होमियो टाइफाइड चिकित्सा— ०—७५
५१३४ होमियो थाइसिस चिकित्सा— ०—७५
५१३५ होमियो निमोनिया चिकित्सा— ०—७५

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

६	होमियो पशु चिकित्सा-डा० गंगाधर	२-१२
७	होमियो पाकेट गाइड-सुरेश प्रसाद	१-००
८	होमियोपैथिक चिकित्सा-हिन्दी ८-००,	२-५०
९	होमियोपैथिक चिकित्सा विज्ञान-बालकृष्ण	१०-००
०	होमियोपैथिक इंजेक्शन गाईड	५-००
१	होमियोपैथिक चिकित्सा सिद्धान्त-बालकृष्ण	३-५०
२	होमियोपैथिक नुस्खा-श्यामसुन्दर	१-५०
३	होमियोपैथक पारिवारिक चिकित्सा	०-९०
४	होमियोपैथिक सारसंग्रह—	१-००
५	होमियो पारिवारिक चिकित्सा-भट्टाचार्य	१०-०
	क्षारनिर्माण विज्ञान-हरिशरणानन्द	०-७५
	त्रिदोषतत्त्वविमर्श-रामरक्ष पाठक	२-६२
८	त्रिदोषमीमांसा-लै० हरिशरणानन्द	२-५०
९	त्रिदोषालोक-विश्वनाथ द्विवेदी	२-००

		३-२५
५१५०	त्रिफला-लै० श्री रमेशवेदी	२-५०
५१५१	त्रिशतिवैद्यक-सं० हिं० टीका	

गुण तथा उपयोगी सीरीज—रामस्नेही

५१५२	दूध	२-००
५१५३	आक	२-५०
५१५४	फिटकरी	२-५०
५१५५	नीम	१-२५
५१५६	रीठा	०-८७
५१५७	धतूरा	१-१२
५१५८	बबूल	०-८७
५१५९	प्याज	०-७५
५१६०	घृत	०-८६
५१६१	पीपल	०-७५
५१६२	अरण्ड	१-२५
५१६३	बादाम	०-७५
५१६४	बरगद	०-८७
५१६५	धनिया	०-५०
५१६६	मेंहदी	०-७५
५१६७	गियाबांसा	१-२५
५१६८	नीबू	०-७५
५१६९	नमक	०-५०
५१७०	सत्यानाशी	०-७५
५१७१	गडूंबा (इंद्रायण)	
५१७२	सौंफ	१-२५
५१७३	गाजर	०-६२
५१७४	दही	२-५०
५१७५	प्लांडु	०-७५
५१७६	हल्दी	०-८७
५१७७	मूली	०-७५
५१७८	तरबूज	०-६२
५१७९	सन्तरा	०-५०
५१८०	सेव	०-५०
५१८१	सिरस	१-१२
५१८२	कौडी	०-७५
५१८३	तम्बाकू	१-२५
५१८४	कद्दू	०-६२
५१८५	त्रिफला	१-५०
५१		
५१८७		
५१८८	मधु	२-५०
५१८९	गुलाब-अमो	१-००
५१९०	धीगवार	२-५०
५१९१	आम के गुण	१-५०
५१९२	मिर्च	०-६२
५१९३	अंगूर	०-७५
५१९४	तुलसी	२-५०
५१९५	शहतूत	१-५०
५१९६	मट्ठा (छाछ)	०-७५
५१९७	ढाक अमोल	०-७५
५१९८	कदली-स्वर्णक्षीरी	

हिन्दी के एलोपैथिक (डाक्टरी) चिकित्सा साहित्य को अनोखी भेंट

सचित्र

पाश्चात्य द्रव्य गुण विज्ञान अर्थात् मिटीरियामेडिका

ख्यातनामा चिकित्सक और

लेखक—डा० रामसुशीलसिंह

द्वारा लिखित नित्य काम आने वाले मूल्यवान् ग्रन्थ का द्वितीय भाग छप कर तैयार है। अपनी प्रति के लिए अभी आर्डर दे दीजिए।

दूसरा भाग लगभग २००० पृष्ठ में समाप्त हुआ है। कोई भी जानने योग्य ऐसी बात नहीं जो इसमें न आई हो। अपटुडेट अनुसंधान के साथ। हर चिकित्सक के पास यह होनी चाहिये।

प्रथम भाग १२)
दूसरा भाग ३०)

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहरनगर, (पो० बा १५८६), दिल्ली-६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

क्लीनिकल मेडिसिन

पोस्ट ग्रैजुएट के छात्रों को रोग निदान और चिकित्सा का विषय पढ़ाने के लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी में यही पहला और अद्वितीय ग्रन्थ है।

सम्पादक—किंग जार्ज मेडिकल कालेज, लखनऊ के रीडर डा० हरिश्चन्द्र बर्मा, एम० बी० बी० एस०

लेखक—चिकित्सा संसार के ख्यातनामा लेखक और व्याख्याता श्री अत्रिदेव गुप्त (काशी विश्वविद्यालय)

विद्वान् लेखक ने पाश्चात्य चिकित्सा-शास्त्र की प्रसिद्ध पुस्तक डॅवल की क्लीनिकल मेडीसिन, मजूमदार की बेड साइड मेडीसिन और चेम्बरलेन की क्लीनिकल मेडीसिन के आधार पर इस उपादेय ग्रन्थ की रचना की है, साथ ही साथ आयुर्वेदीय संहिताओं से तुलनात्मक और बहुमूल्य उद्धरण दे दिये हैं जिससे एक ही ग्रन्थ से रोग का निदान और पाश्चात्य तथा आयुर्वेद पद्धति से उनकी चिकित्सा का ज्ञान हो जाता है।

प्रत्येक रोग के लिए चुने हुए डाक्टरी और देशी नुस्खों की उपस्थिति ने ग्रन्थ का महत्त्व और भी बढ़ा दिया है। ग्रन्थ की पाण्डुलिपि जब भारतीय जनता के हृदय सम्राट् राजर्षि श्री पुरुषोत्तमदास जी टण्डन को दिखाई गई थी, तब उन्होंने इसका महत्त्व और इसकी उपयोगिता समझी थी और आज्ञा दी थी कि इसे तुरन्त प्रकाशित कर दिया जाय।

राजस्थान सरकार के भूतपूर्व डिप्टी डायरेक्टर आफ आयुर्वेद एवं वर्तमान ...ल में राजकुमार आयुर्वेद कालेज इन्दौर के प्रिंसिपल कविराज श्री प्रतापसिंह ... ग्रन्थ के कुछ छपे हुए फार्म देखकर अत्यन्त प्रभावित हुए थे और कह गये थे कि ...सके छपे हुए फार्म हमें बराबर भेजने चाहिए जिससे हम आज से ही विद्यार्थियों ...ो इसका लाभ देना प्रारम्भ कर दें।

ग्रन्थ की भाषा सरल पारिभाषिक शब्दों के अर्थ सुगम तथा स्पष्ट और शैली तुलनात्मक है। ग्रन्थ पर उत्तर प्रदेश की सरकार ने पुरस्कार दिया है सुन्दर छपाई, बढ़िया कागज, मूल्य प्रथम भाग १२॥) द्वितीय भाग १२॥)।

राष्ट्रभाषा के भण्डार की दो उत्तम निधियां

डा० रामनाथ वर्मा की नवीनतम मार्गदर्शक पुस्तक

वर्मा एलोपैथिक योगरत्नाकर

पृष्ठ संख्या ७०० से अधिक, पक्की जिल्द, बढ़िया कागज, मोनोटाइप की छपाई। मूल्य १२)

डा० रामनाथ वर्मा की पुस्तकों से आशातीत लाभ उठानेवाले महानुभावों के लिये यह योग रत्नाकर एक अमूल्य निधि है। आधुनिक ढंग से लिखी हुई सर्वसाधारण तथा हर एक वैद्य हकीम के लिए उपयोगी डाक्टरी चिकित्सा पद्धति की एक ऐसी पुस्तक जो इस चिकित्सा पद्धति की यथावत् गति का ज्ञान करा सके—प्रस्तुत करके डा० साहब ने एक बड़ी भारी कमी की पूर्ति कर दी है। हिन्दी में आज तक ऐसी पुस्तक नहीं थी जो डाक्टरी चिकित्सा के योगों का सम्यक्, सरल और सुलभ ज्ञान करा सके। इन सभी बातों का विचार रखते हुए 'वर्मा एलोपैथिक योगरत्नाकर' में अब तक के प्रचलित, लोकप्रिय और आविष्कृत सभी एलोपैथिक योगों का समावेश हुआ है। हर रोगों की चिकित्सा के लिए लगभग ३००० योगों के संग्रह के साथ-साथ प्रमुख रोग की सूचीवेध चिकित्सा (इंजेक्शन) भी दी गई है। इस एक पुस्तक में ही विशाल डाक्टरी चिकित्सा में नित्य प्रयोग आने वाले आधुनिक चिकित्सा प्रणाली के समस्त नुस्खों, योगों पेटेण्टस, साधारण औषधियों तथा इंजेक्शनों का संग्रह है सर्वोपयोगी इस ग्रन्थ की उपादेयता डा० साहब के अन्य लोकप्रिय ग्रन्थों के आधार पर सहज सिद्ध है। जिस प्रकार आयुर्वेद के नुस्खों के लिए भैषज्य रत्नावली प्रसिद्ध है और किसी भी वैद्य का भैषज्य रत्नावली पुस्तक के बिना गुजर नहीं हो सकती उसी प्रकार एलोपैथी (डाक्टरी) चिकित्सा करने वालों के लिए यह वर्मा एलोपैथिक योगरत्नाकर भी अत्यन्त उपयोगी है। इसके बिना डाक्टरी चिकित्सा करने वालों का काम नहीं चल सकता। यह संस्करण हाथों हाथ बिक जाने की निश्चित संभावना है।

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहरनगर, (पो० बा० १५८६), दिल्ली-६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

निदान और चिकित्सा के दो लोकप्रिय साधन

लेखक—अनेक ग्रंथों के रचियता, अनुभवी विद्वान् और चिकित्सक कविराज डा० आशानन्द पंचरत्न, आयुर्वेदाचार्य, एम० बी० बी० एस०, रिटायर्ड बी० एम० एस० एक्स एच० एम० एस०, रिटायर्ड प्रिंसिपल पोद्दार मेडिकल (गवर्नमेंट) कालेज बम्बई तथा गवर्नमेंट आयुर्वेदिक यूनानी तिब्बी कालेज हैदराबाद, भूतपूर्व आचार्य श्री मद्दयानंद आयुर्वेदिक कालेज लाहौर

व्याधि-विज्ञान

परिवर्द्धित तथा संशोधित चतुर्थ संस्करण, पृष्ठ संख्या लगभग ११०० अनेक सादे तथा रंगीन चित्रों सहित। बढ़िया मोनोटाइप की छपाई तथा पक्की कपड़े की जिल्द। मूल्य प्रथम भाग १०), द्वितीय भाग ९)।

निदान विषयक यह अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ उक्त डा० साहिब के अनेकों वर्षों के अनुभव का फल है। इससे पाश्चात्य निदान का भी ज्ञान होगा और वैद्य बन्धुओं को यह भी ज्ञात होगा कि सफलता पूर्वक आयुर्वेद मतानुसार चिकित्सा किस प्रकार की जा सकती है। इसीलिए संक्षिप्त आयुर्वेद और पाश्चात्य चिकित्सा भी लिख दी गई है। पुस्तक कितनी उपादेय है यह इसी से पता लगता है कि अनेकों विद्यालयों के पाठ्यक्रम में चली आ रही है और लेखक को दो पारितोषिक तथा स्वर्णपदक मिल चुके हैं।

ग्रन्थ के पहले ६ अध्यायों में रोग, पोषण संस्थान, श्वास संस्थान, रक्त व रक्त वाहक संस्थान एवं मूत्र आदि की परीक्षा का विषय विस्तार के साथ समझाया गया है। इसके उपरान्त सूक्ष्म जंतुओं और उनके संक्रमण पर विचार किया गया है। और फिर निम्नलिखित रोगों का ब्योरेवार वर्णन किया गया है—ज्वर, संक्रमण की विशेष अवस्था, सन्तप्त ज्वर, दुष्टाहार जन्य संक्रमण रोग, पीड़िकायुक्त ज्वर, श्वास मार्ग की संक्रामक व्याधियां, क्षयरोग, वातसस्थानों के सक्रामकरोग, स्थानिक-संक्रामकरोग, स्थानिक संसर्गिकरोग, कुष्ट, सूक्ष्मप्रणालियों द्वारा उत्पन्न होने वाले रोग, अंशुघात, मधुमेह तथा विटामिन और उसके अभाव से उत्पन्न रोग। द्वितीय भाग में अन्नमार्ग, उदर कला, यकृत रक्त, हृदय, श्वास, वृक्काय प्रणाली विहीन ग्रन्थियों के रोगों एवं वात व्याधि का वर्णन है।

आधुनिक चिकित्सा-विज्ञान

(एलोपैथिक तथा आयुर्वैदिक)

इस पुस्तक में चिकित्सा सम्बन्धी विषयों का तुलनात्मक रूप से अति उत्तम वर्णन है। नवीनतम डाक्टरी औषधियों का जिनमें सब प्रकार के एतावत् (अप-टू-डेट) आविष्कृत रोगाणु सूदन (एन्टी-बायटिक्स) औषधियों और इन्जेक्शनों का हेतु पूर्वक समावेश किया गया है साथ ही साथ उन सब आयुर्वेदिक औषधियों का जो उपयोगी सिद्ध हुई है, वर्णन भी हेतु बता कर दिया गया है। पुस्तक दो भागों में विभक्त है—पहले भाग में संक्रमण (इन्फेक्शन) की नवीनतम चिकित्सा और हाल तक की विज्ञान रोगाणु सूदन औषधियों का विस्तृत वर्णन है— उनकी मात्रा, प्रयोग विधि, उपयोग तथा उनसे उत्पन्न होनेवाली हानियों तथा उनका प्रतिकार विस्तार के साथ बताया गया है। इसी भाग में सब प्रकार के संक्रामक ज्वरों को अति सरल रूप से हेतु देते हुए दर्शाया गया है। उदर कृमि रोग, अंशुघात, मधुमेह, वात रक्त तथा विटामिन के अभाव से उत्पन्न होने वाले (डिफेसेंसी डिजीजेस) रोगों का तथा उनकी चिकित्सा का उल्लेख है। सब प्रकार की विटामिन के गुण भी बताये गए हैं। अंत में रोगों में प्रयुक्त होने वाले आहार, प्रलेप और पुलटिस आदि निर्दिष्ट हैं। पृष्ठ संख्या ४५६ मूल्य १०)

दूसरा भाग छप कर तैयार है। उसमें आमाशय, अन्न, उदर कला, यकृत, प्लीहा, रक्त, हृदय, रक्तवाहिनी रोग, वृक्क, प्रणाली विहीन ग्रन्थियों के रोग और वात व्याधियों की चिकित्सा का वर्णन है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में जितनी प्रोप्राइटरी (पेटेंट) औषधियां है उनको भी हर रोग के साथ-साथ, मात्रा सहित बताया गया है। डाक्टरों और वैद्यों को समान रूप से उपयोगी ऐसी पुस्तक अब तक नहीं छपी। नवीन आयुर्वेदिक कालेजों के स्नातकों और विद्यार्थियों एवं नवीन चिकित्सा को समझने की चेष्टा करने वाले प्राचीन वैद्यों के लिए सर्वोत्तम ग्रन्थ। मूल्य १०)

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहरनगर, (पो० बा० १५८६), दिल्ली-६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री मार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय में जन्मपत्र, वर्षफल, टेवे आदि बड़े परिश्रम से बनाये जाते हैं। जन्मपत्र में आयु, संतान, स्त्री, धन, व्यापार, नौकरी, शरीर का दुःख सुख, भाग्योदयादि का पूरा-पूरा विचार शास्त्रानुसार किया जाता है। इसी प्रकार वर्षफल भी बनाए जाते हैं। बाहर से प्रश्न पूछने वालों को पत्र लिखते समय ठीक-ठीक वक्त और अपना जन्मदिन, संवत् या उमर अन्दाज तथा पेशा लिख भेजना चाहिये। जन्मपत्री टेवा आदि बनवाने के लिये जन्मस्थान (जिला) अवश्य लिखना चाहिये। जन्म पत्र की फीस ७) रु० से २५०) रु० तक। वर्षफल २॥) रु० से २५) रु० तक। टेवा २॥) रु०। शुद्ध विवाह मुहूर्त्त प्रश्न और ग्रह-मेलाप (कुण्डली मिलान) प्रत्येक की फीस २।) रु०। भारत के बाहर द्वीपान्तरों (अफ्रीका, चीन, बर्मा जापान अमरीका आदि) में पैदा हुए बालकों के शुद्ध इष्ट और केवल लग्न कुण्डली बनाने की फीस ७) रु०। आयुर्निर्णय (अंशायुर्गणित मारकेश रोग विचारादि) २५) रु० से १००) रु० तक। प्रत्येक कार्य की आधी फीस पेशगी ली जाती है। बाहर से कार्य भेजने वाले पत्र के साथ ही आधी फीस भेज दें। आधी फीस पेशगी आए बिना कार्यारंभ नहीं होता। पत्र-व्यवहार जहां तक हो सके हिन्दी राष्ट्र भाषा में होना चाहिए। उर्दू में पत्र लिखने से उत्तर देर में मिलेगा। बैरंग पत्र वापिस किये जाते हैं। उत्तर के लिए टिकट या जवाबी पत्र भेजना जरूरी है। हर कष्ट का उपाय भी बताया जाता है। विवादास्पद विषय की शास्त्रीय व्यवस्था की फीस ५।) रु०

मनीआर्डर करते समय कूपन पर अपना कार्य तथा पूरा पता अवश्य लिखना चाहिए।

व्यापार के चान्स-अनुभवसिद्ध एक तरफ के पक्के चांस कभी-कभी आते हैं। प्राचीन ढंग से तेजी मंदी पूरी नहीं मिलती, प्रत्येक वर्ष में आने वाले सोना, चांदी, बाजरा, गेहूं रूई के २१४ चांस पूछना हो तो पेशगी ११) रु० भेजिये और लाभ में से दशमांश भेजने की प्रतिज्ञा कीजिये।

नोट—जो सज्जन हम से प्रत्यक्ष मिलना चाहें तो वह जवाबी कार्ड भेज कर मिलने की तारीख निश्चित कर लेवें। 'कुराली' के लिए लुधियाना अम्बाला के मध्य सरहिन्द जंकशन से गाड़ी बदलनी पड़ती है। प्रत्यक्ष मिलने का समय—ग्रीष्म में ८ से ११ तक, मध्याह्नोत्तर ३ से ६ तक। शीतकाल में १० बजे से शाम को ४ बजे तक। बाहर से अकेले आकर शांत चित्त से एक ही प्रश्न करें। हमारा ज्योतिष कार्यालय (मार्तण्ड भवन) रेलवे स्टेशन के पास है। निवेदक—मैनेजर पंडित श्रीकृष्ण शर्मा पांडेय शास्त्री।

पता—राजज्यौतिषी पं० मुकुन्दवल्लभ ज्योतिषाचार्य

अध्यक्ष—श्रीमार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली (पूर्वी पंजाब)

...ण्ड अंजन

इस बड़े परिश्रम और बहुमूल्य औषधियों जड़ी बूटियों से निर्माण किये गये दिव्य अंजन के रोजाना सेवन से कोई मोतिया बिन्द आदि रोग नहीं हो सकता। यहां तक कि १०० वर्ष की वृद्धावस्था में भी नेत्रों की तेजस्विता युवावस्था की तरह स्थिर रहती है। पानी जाना, चकाचौंध, खारिश, धुन्ध, गुबार, कम दीखना तथा दूर की वस्तु न दीखना आदि सब नेत्र रोगों के लिये यह चमत्कारी दिव्यौषधि देवता के वरदान स्वरूप सिद्ध हो चुकी है। लिखने पढ़ने का विशेष रूप से काम करने वाले विद्यार्थी, क्लर्क, मुनीम आदिकों के लिए और स्टुडियो व बिजलीके अधिक प्रकाश तथा अधिक सिनेमा देखने से जिन की आंखें कमजोर हो गई हों उनके लिये तो विशेष रूप से इसका दैनिक सेवन करना चाहिए। याद रक्खो! दो दो आने की बाजारू सुर्मे की शीशियों से आपकी दृष्टि स्थिर नहीं रह सकती। ऐनका-भ्यासी सज्जन, जिनका नम्बर बढ़ता जाता हो, इस अंजन का सेवन कर अनुभव करें, नम्बर नहीं बढ़ेगा। संसार में रह कर सुख से जीवन व्यतीत करना चाहते हों तो इस अंजन को अपना सदैव का साथी बना लीजिए। आंखों की ज्योति के साथ ही जीवन है। पैसे का लोभ छोड़ यह सुर्मा सेवन करें।

१ तोला की शीशी का मूल्य ७), ६ माशे की शीशी का मूल्य ३॥), पैकिंग, डाक खर्च अलग लगेगा। पूर्ण सेवन विधि शीशी के साथ मिलेगी।

मोतिया नाशी—मोतिये की पहली स्टेज, आंख के आगे मक्खी आदि दीखना दूर होकर आंखे ठीक होती हैं मूल्य फी शीशी १।)

अठराहा मार्तण्ड—जिन स्त्रियों के प्यारे बच्चे होकर मर जाते हों उनको यह दिव्यौषधि गर्भ होने पर शीघ्र सेवन करने से बच्चे शर्तिया निरोग स्वस्थ एवं दीर्घायु उत्पन्न होंगे। कीमत १०) इस औषधि के साथ अठराहे का सिद्ध यंत्र भी भेजा जाता है जो अपना अचूक प्रभाव रखता है।

पुंसवनी

इस ईश्वर प्रदत्त प्रभाव युक्त दिव्यौषधी को गर्भ के तीसरे मास के प्रारम्भ में सेवन करने से पुत्र ही उत्पन्न होता है। मूल्य ५) डाक व्यय पृथक्।

निर्माता—एच० आर० वैद्य

मिलने का पता—मैनेजर श्री मार्तण्ड कार्यालय

मु० पो० कुराली (अम्बाला)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदास कृत

रामायण पर विजया व्याख्या

मानस-राजहंस पं० विजयानन्द जी त्रिपाठी की जीवन-व्यापी साधना का मधुर फल

कविकुल-कमल-दिवाकर गोस्वामी तुलसीदास जी की रामायण इतनी सरल है कि साधारण मति का एक बालक भी उसे आनन्द के साथ पढ़ सकता है परन्तु उसके मार्मिक रहस्य इतने गंभीर हैं कि उनका सही अर्थ समझने में बड़ों-बड़ों की बुद्धि चकरा जाती है। प्राचीन एवं नवीन शास्त्री और विद्याओं के दिग्गज विद्वान्, काशीवासी मानसराजहंस पं० विजयानन्द जी त्रिपाठी ने ५० वर्ष के गंभीर मनन और अध्ययन के उपरान्त मानस के सब रहस्यों को अपनी टीका और विजया-व्याख्या में स्पष्ट कर दिया है। माने हुए संतों और पण्डितों ने 'मानस राजहंस' जी की इस व्याख्या को देखकर कहा है कि रामायण की ऐसी मार्मिक गहरी और सही व्याख्या आज तक नहीं हुई—ऐसी व्याख्या मानस राजहंस जैसा कोई अवतारी पुरुष ही कर सकता था।

ग्रन्थ में मानस राजहंस जी ने प्रत्येक चौपाई और प्रत्येक दोहे का गद्य में अर्थ करने के उपरांत अपनी मार्मिक व्याख्या दी है। व्याख्या की भाषा इतनी सरल और सुबोध है कि साधारण ज्ञान रखने वाला व्यक्ति भी उसे आसानी से समझ सकता है और भारतीय-ज्ञान का ज्ञाता हो सकता है।

ग्रन्थ बड़े साइज के २००० पृष्ठों में सुन्दर अक्षरों में छपा है परन्तु सुविधा के लिए तीन खण्डों में बांटा गया है। ऊपर कपड़े की पक्की जिल्दें बँधाई गई हैं। सातों काण्डों पर सात मनोरम तिरंगे चित्र हैं। गोस्वामी जी का प्रामाणिक चित्र भी बड़ी खोज के साथ छापा गया है। ग्रन्थ इतना लोकप्रिय हुआ है कि कई उत्सुक सज्जन तो जिल्द बंधने की प्रतीक्षा भी नहीं कर सके, खुले फरमे ही उठा ले गये हैं।

रामचरित मानस के प्रेमी पाठक, प्रचारक और कथावाचक महानुभाव इस दुर्लभ ग्रन्थ को जितनी जल्दी हो सके प्राप्त कर लें। मूल्य प्रचार की दृष्टि से केवल ३०) है।

अर्घ-मार्तण्ड

(तेजी मन्दी का अनुपम ग्रन्थ)

पञ्चाङ्गकर्ता

राजज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभ जी कृत

इस ग्रन्थरत्न में रूई, सूत, वस्त्र, शेयर, ऊन, सोना, चाँदी, तांबा, लोहा आदि धातु तथा गुड़, खांड, रसकस, इलायची, कालीमिर्च, मसाला, मूंगफली, करयाना, जवाहरात, घृत, तिल तेल, सरसों, बाजरा, अलसी, गेहूँ, चावल, खल्ली, बिनोला, लकड़ी, रंग, आदि प्रत्येक वस्तु की तेजी मंदी के उत्तम अचूक सुनहरे चांसों के योग सरल हिन्दी भाषा में दिल खोल कर लिखे गये हैं। जिन योगों को हजारों रुपये खर्च करने पर भी ज्योतिषी लोग नहीं बतलाते थे वे सब तेजी मंदी के अनुभव सिद्ध गुप्त भेद २५ वर्ष की जांच के बाद लिखे गये हैं। ऐसा ग्रंथ अन्यत्र संसार की किसी भाषा में भी नहीं मिलेगा। यदि आप धन कमाकर लक्षाधीश बनना चाहें तो इसे मंगाकर देखने में देरी न करें। ग्रंथ के अन्त में सर्वोपकारार्थ लक्ष्मी प्राप्ति के सिद्ध प्रयोग भी लिख दिए हैं जिनके करने से निर्भाग्य निर्धन भी लक्ष्मीयुक्त (धनीमानी) होकर सर्वसुख ऐश्वर्य की जिन्दगी भोग सकता है। व्यापारियों का तो यह जीवन ही है। ऐसे अनुपम ग्रंथ को अविश्वास करके न मंगाना दुर्भाग्य ही होता है। व्यापार में हानि उठाये हुए गरीब व्यापारी भी यदि इस ग्रन्थ को गौर से विचारेंगे तो वह भी कभी न कभी अपना घाटा पूरा कर ही लेंगे इसमें संदेह नहीं। यह सदैव काम आने वाली पुस्तक बढ़िया कागज तथा कपड़े की पक्की जिल्द सहित तैयार हुई है। और हिंदी तथा उर्दू में छपी है मूल्य प्रत्येक का १०) रुपये। यह पृष्ठों का मूल्य नहीं गुण की भेंट मात्र है। इस पुस्तक से अनेकों व्यापारियों ने लाभ उठाकर धन्यवाद भेजे हैं और बहुत सज्जनों ने इनाम देकर ग्रन्थ लेखक को सम्मानित भी किया है। ८।६।५४ को श्रीकृष्णभारतीय गुप्त धमोरा से लिखते हैं, "आप के लिखे गये योग तेजी मंदी के ९५ प्रतिशत सही हैं. 'अर्घ मार्तण्ड' वास्तव में अमूल्य निधि है।" इत्यादि अनकों पत्र प्राप्त हैं। अब थोड़ी प्रतियां शेष बची हैं, मंगाने की शीघ्रता करें।

मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहरनगर, पो० बा० १५८६, दिल्ली (फोन नं. २९९००)

शाखायें—(१) नेपालीखपरा पो० बा० ७५ वाराणसी। (२) बांकीपुर--पटना

प्रकाशक—सुन्दरलाल जैन, ... मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली। मुद्रक—शान्तिलाल जैन, श्री जैनेन्द्र प्रे... नगर, दिल्ली

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection